

वर = स्वीकार करना
 वस = रहना
 सद = नष्ट होना, जाना
 भा = जानना
 पत = गिरना
 इ = जाना

दा = देना
 कर = करना

८. 'वि' उपसर्ग निम्न अर्थों में प्रयुक्त होता है—

कम्प = कांपना
 दल = तोड़ना
 चर = चलना
 किर = विखेरना
 भज = भाग करना
 सु = भुनाना
 की = खरीदना
 जट = उलझाना
 कर = करना
 सर = स्मरण करना
 पच = पकाना
 रज्ज = राग करना
 रम = मीठा करना
 तर = तैरना
 नी = ले जाना
 लिख = लिखना
 वत्त = होना
 वण्ण = प्रशंसा करना

संवरति = ढकता है
 संवसति = साथ रहता है
 संसीदति = डूब जाता है
 संजानाति = पहचानता है
 संघिपति = जमा होता है
 समेति = मिलना, आपस में मेल खाना, सहमत होना
 समादियति = ग्रहण करता है
 सङ्खरियति = तैयार करवाता है

विकम्पति = अत्यन्त कांपता है
 विदालेति = नष्ट भ्रष्ट कर देता है
 विचरति = इधर उधर घूमता है
 विष्पकिरति = चारों ओर विखेर डालता है
 विभजति = अच्छी तरह व्याख्या करता है
 विस्सुत = विख्यात
 विकिणाति = ब्रेचता है
 विजटेति = मुलभाता है
 विकरोति = विकृत करता है
 विसरति = भूल जाता है
 विपचति = फल देता है
 विरज्जति = विरक्त होता है
 विरमति = ढकता है
 वितरति = बाँटता है
 विनेति = शिक्षा देता है
 विलिखति = जोतता है
 विवट्टति = पीछे घुमाता है
 विवण्णति = निन्दा करता है

फलि महाव्याकरण

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
च		चन्दिमसुरिया ..	२८०
		चपलता ..	२०३
चक्खुमा अन्धिता होन्ति	८२	चम्पेय्यको ..	२६२
चक्खुसोतं ..	२७८	चम्मना ..	१००
चक्खुस्सं ..	२६०	चम्मनि ..	१००
चक्खुं उदपादि ..	२२६	चम्मे ..	१००
चक्खुं सुञ्जं अत्तेन वा अत्तनि- येन वा ..	२०५	चम्मेन ..	१००
चङ्कमति ..	१८६	चयनीय ..	१५१
चतस्सन्नं ..	१६७	चयो ..	२२०
चतस्सो ..	१६७	चलनं ..	२०२
चतस्सो बालिकायो ..	१५९	चागो ..	२००
चत्तारि ..	१६८	चाजयति ..	२१०
चत्तारि फलानि ..	१५९	चाजापयति ..	२१०
चत्तारीसं सतं ..	१७३	चाजापेति ..	२१०
चत्तारो ..	१६७, २२२	चाजेति ..	२१०
चत्तालीसो ..	१७५	चातुम्महाराजिका ..	२६३
चतुक्कपञ्चक्रं ..	२७८	चापल्लं ..	२०४
चतुत्थ ..	१७५	चापल्यं ..	२०४
चतुद्दस ..	१६८	चापिको ..	२४५
चतुद्दसन्नं ..	१६६	चिकमिसति ..	२३३
चतुप्पथं ..	२७६	चिकिच्छति ..	१८७
चतुरन्नं ..	१६६	चिच्छेद ..	२३३
चतुरस्सो ..	२८५	चिण्णवा ..	१४७
चतुरो ..	१६८	चिण्णो ..	१४७
चतुरो बालका ..	१५९	चित्तो ..	१४४
चन्दत्तं ..	२०३	चित्तग ..	२७०
चन्दनगन्धो ..	२७३	चित्तजं ..	२७२
		चित्तो ..	२४५

	पृष्ठ संख्या	
पन्नरस ..	१६८, १६९	परायति=पलायति
पन्तेवासी ..	२७५	परिघो=पलिघो ..
पपच्च ..	१८५, १८६	परिचरिया ..
पपच्चित्थ ..	६४	परितो ..
पपचिरे ..	६४	परिपव्वतं वस्सि देवो, परिपव्वता
पपच्चु ..	१८५, १८६	परि पाटलिपुत्तस्मा वुट्ठो देवो
पपण्णो ..	२७०	परियज्जेतो ..
पपत्तितपण्णो ..	२७०	परिलाहो ..
पव्वज्जा ..	२०२	परिसति ..
पव्वतं अनु जलति अनलो	१३६	परिसाय ..
पव्वतं अभि जलति अनलो	१३६	परोसतं ..
पव्वतं पति परि जलति अनलो	१३६	परोसहस्सं ..
पव्वतायति ..	२३६	पलिघो ..
पव्वते तिट्ठति ..	३८	पल्लविता लता ..
पव्वतेय्यो ..	२६२	पवासिको ..
पव्वत्याहं ..	२२४	पवेक्खति ..
पमज्जनं ..	१५२	पसत्थं ..
पमज्जितव्वं ..	१५२	पसुत्तं भवता (भावे)
पमज्जित्तुं ..	१५२	पसुत्ता वालिका ..
पयस्सी ..	१९५	पसुत्तो भवं (कत्तुं) ..
पय्येसना ..	२२४	पसुत्तो बालको ..
परकियो ..	२५८	पस्सति ..
परचित्तविदुनी ..	२४१	पस्सति नो ..
परत्थ ..	२१६	पस्सति वो ..
परत्त ..	२१६	पस्सतो ..
परन्तपो ...	२३६	पस्सेय्यं तं वस्ससत्तं अरोगं
परमगवो ..	२८५	पस्सितव्वं फलं ..
परस्स पदं ..	२३६	पस्सितव्वा नदी ..

प्रकाशकीय निवेदन

हिन्दी पाठकों के सम्मुख आज 'पालि-महाव्याकरण' उपस्थित करते हुए हमें बड़ा हर्ष हो रहा है । आज तक किसी भी भारतीय भाषा में इतना पूर्ण, और साथ ही साथ सरल, पालि-व्याकरण प्रकाशित नहीं हुआ । मेरा विश्वास है कि विद्यार्थी तथा विद्वानों को इस पुस्तक से बड़ी सहायता मिलेगी ।

महाबोधि सभा ने अभी तक त्रिपिटक के कई मुख्य मुख्य ग्रन्थों का हिन्दी-अनुवाद प्रकाशित किया है, जिससे हिन्दी पाठकों को पालि-साहित्य की विभूति का परिचय मिला है । किंतु, अनुवाद मूल ग्रन्थों का स्थान नहीं ले सकते । बौद्ध साहित्य के गम्भीर अध्ययन के लिए मूल ग्रन्थों का अवलोकन करना नितान्त आवश्यक है । इस 'व्याकरण' की सहायता से अब यह आसान हो जायगा । भिक्षु जगदीश काश्यप, एम० ए० ने इस महान कार्य को करके हम सबों को अनु-ग्रहीत किया है ।

इस पुस्तक के प्रकाशन में व्यय अधिक हुआ है, जिसका भार मैं आप विद्यानु-रागी महानुभावों की सहायता के भरोसे पर ही वहन कर रहा हूँ । अभी तक जो दान प्राप्त हुआ है उसका व्योरा निम्न प्रकार है :—

Mr. Rajah Hewavitarnce, Colombo	..	50/-
Mr. P. D. Richard, Kitulgala.	..	25/-
Mr. T. J. Samarakone, Matara	..	25/-
Mr. W. James Sinno, Bisowela.	..	10/-
Collected by Mr. D. M. Kiri Banda, Ram-		
bukkana	10/-
Ceylon Pilgrim Party, December, 1939.	..	41/-
Mr. P. Jayatilaka, Colombo	30/-
Mr. H. M. Gunasekara, Colombo	..	20/-
Mrs. J. P. Ratnayaka, Wadduwa	10/-
Mrs. J. H. Perera, Wadduwa	10/-

(४)

Mr. & Mrs. Wijayakoon, Colombo ..	30/-
Small amounts.	42/12/-

निवेदक

ब्रह्मचारी देवप्रिय वलिसिंह, बी० ए०

मन्त्री

महाबोधि सभा, सारनाथ

नमो तस्स भगवतो श्ररहतो सम्मासम्बुद्धस्स

पा लि-म हा व्या क र ण

लेखक

भिन्नु जगदीश काश्यप

महाबोधि सभा, सारनाथ
वनारस

मुद्रक
जे० के० शर्मा
इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस
इलाहाबाद

प्रथम संस्करण
१९४० ई०

प्रकाशक
महामोधि सभा, सारनाथ
वनारस

समर्पण

जिन्होंने बड़े स्नेह से मा के समान मेरा लालन-पालन
किया, जिनकी प्रेरणा से 'तारा' को पढ़ाने के
लिए हिन्दी में पालि-व्याकरण लिखने
का संकल्प हुआ, उन्हीं दिव-
गत 'उपासिका' की
स्मृति में ।

भूमिका

पालि-व्याकरणों में 'मोगल्लान' अत्यन्त पूर्ण और प्रौढ़ है। इसी के सारे सूत्रों को मैं ने इस तरह सजा कर सरल भाषा में समझाने का प्रयत्न किया है, कि क्रमशः प्रवेश कर व्याकरण पर पूरा अधिकार प्राप्त कर लिया जा सके।

पुस्तक के बृहत् आकार को देख कर ऐसा न समझ लें, कि इसका स्टैण्डर्ड बहुत ऊँचा है, और यह स्कूल-कालेज के विद्यार्थियों के काम की चीज नहीं है। मूल-पुस्तक केवल २८६ पृष्ठों में समाप्त हो जाती है; और, उस में भी आधी से अधिक पाद-टिप्पणियाँ हैं। स्कूल-कालेज के विद्यार्थी इन पाद-टिप्पणियों को छोड़ कर ऊपर ही ऊपर मज्जे में पढ़ सकते हैं, जो उनके स्टैण्डर्ड के विलकुल अनुकूल है। साथ ही साथ, जो कुछ गहराई से अध्ययन करना चाहते हैं, वे पाद-टिप्पणियों को भी देख सकते हैं।

प्रत्येक 'पाठ' के अन्त में एक अभ्यास दे दिया गया है, जो विद्यार्थियों के लिए बड़ा उपयोगी होगा। अभ्यास की भाषा तथा शैली को त्रिपिटक से अधिक से अधिक निकट रखने का प्रयत्न किया है। पुस्तक के अन्त में, विद्यार्थियों की सहायता के लिए, अभ्यासों के लिए संकेत भी दे दिए हैं।



श्री ब्रह्मचारी देवप्रिय वर्तिसिंह, मंत्री, महाबोधि सभा, ने पुस्तक के प्रकाशन का भार ग्रहण कर बड़ा उत्साहित किया है।

मित्रवर श्री तपस्वी जी ने आदि से अन्त तक पुस्तक लिखने, अभ्यास बनाने, तथा 'वस्तु-कथा' लिखने में बड़ी ही सहायता की।

हमारे श्रद्धेय नाना, पण्डित अयोध्या प्रसाद, वैदिक रिसर्च स्कालर, तथा राहुल जी ने अनेक सलाहें दी हैं।

परम पूज्य भाई आनन्द कौशल्यायन जी ने प्रूफ देख कर तथा भाषा में जहाँ तहाँ संशोधन कर बड़ी सहायता की है।

श्री भवानी शरण, साहित्यरत्न, मारकण्डेय शुक्ल, और जगन्नाथ प्रसाद जायसवाल प्रभृति हमारी शिष्य-मण्डली ने सूची तथा अनुक्रमणिका तैयार करने में काफी परिश्रम किया है ।

सभी को इस उपकार के लिए मैं हृदय से धन्यवाद देता हूँ ।

भिक्षु जगदीश काश्यप

सारनाथ

२६-४-४०

वस्तु-कथा

पालि-व्याकरण की वस्तु-कथा

पहला खण्ड

बुद्धत्व लाभ करने के बाद से भगवान् ४५ साल तक कोसी-कुर्खेत्र तथा हिमाचल-विन्ध्य के भीतर घूम-घूम कर अपने धर्म का प्रचार करते रहे । साधारण से साधारण मनुष्य से लेकर उस समय के बड़े से बड़े राजकुमार तक अपना सर्वस्व त्याग भगवान् के संघ में सम्मिलित हुए । जिस प्रकार सभी दिशाओं से नाना नदियाँ वह कर आती हैं, और समुद्र में एक हो जाती हैं, उसी तरह नाना प्रान्त के, नाना जाति के, नाना मत के, तथा नाना गोत्र के कुलपुत्र, परम शान्त निर्वाण के उद्देश्य से भगवान् के संघ में आ, एक हो कर विहार करते थे ।

भगवान् जहाँ कहीं भी चारिका करते थे, वड़ी-बड़ी संख्या में उनकी शिष्य-मण्डली साथ रहती थी । तत्कालीन मगधराज विम्बिसार ने भी भगवान् के धर्म को स्वीकार कर लिया था, और वड़ी श्रद्धा से बुद्ध तथा संघ के निमित्त एक सुरम्य विहार बनवा दिया था; जो 'वेळ्ळवनाराम' नाम से प्रसिद्ध हुआ । श्रावस्ती के विख्यात श्रेष्ठी अनायपिण्डक ने भी उसी तरह, बुद्ध तथा संघ के लिए श्रावस्ती से कुछ हट कर एक रम्य स्थान में जेतवनाराम बनवाया था । इस तरह, बुद्ध तथा संघ के एक सिरे से दूसरे सिरे तक घूमने से सारा उत्तर भारत एक हो रहा था ।

बुद्ध का धर्मोपदेश करने का तरीका अत्यन्त सरल था । तैयारी और आडम्बर के बिना ही, जहाँ कहीं जब कभी उचित अवसर आता था, बुद्ध अत्यन्त सरल भाषा में, अत्यन्त सरल ढंग से गम्भीर तथा लोकोत्तर धर्मोपदेश करते थे । उनके शिष्य उन उपदेशों को कण्ठ कर लिया करते थे । जब किसी भिक्षु को कुछ शंका होती थी तो वह बुद्ध के पास जाता था और अपनी शंका निवारण कर लेता था ।

बुद्ध के सारे उपदेश मौखिक ही हुए थे। उन्होंने अपने उपदेशों को लिख रखने की कभी कोई बात कही हो इसका उल्लेख नहीं आता है। बुद्ध का अभिप्राय था कि उनका धर्म केवल कुछ पण्डित लोगों या भिक्षुओं की ही चीज हो कर न रहे। वे चाहते थे कि उनके धर्म का संदेश सूरज की किरण की तरह, भोपड़ी से लेकर प्रासाद तक समान रूप से व्याप्त हो।

मागधी

इस अभिप्राय से, सारे मध्य मण्डल में उस समय जो भाषा सामान्य रूप से बोली जाती थी, उसी में बुद्ध ने समस्त उपदेश दिए। ऊपर कहा जा चुका है कि, बुद्ध के संघ में उत्तर भारत के सभी प्रदेशों के, सभी वर्गों के कुलपुत्र प्रव्रजित हो सम्मिलित हुए थे। मगध के भी, वैशाली के भी, मिथिला के भी, काशी के भी, कोशल के भी, राजकुल के भी, श्रेण्ठी कुल के भी, शूद्र कुल के भी, सब भिक्षु समान रूप से एक साथ रहते थे। यह निश्चय है कि भिन्न-भिन्न प्रान्त और समाज के अनुसार उनकी अपनी-अपनी बोली भी भिन्न-भिन्न रही होगी; किंतु, सभी साथ रहने पर साधारण भाषा मागधी का ही प्रयोग करते थे। आज-कल भी, यदि एक मगही, एक भोजपुरी, एक अवधी, तथा एक मैथिल एक जगह मिलें तो आपस में हिन्दी का ही प्रयोग करेंगे—मगही, या भोजपुरी का नहीं। हाँ, इतना अवश्य होगा कि, मगही की हिन्दी में कुछ न कुछ मगहिपन, और भोजपुरी की हिन्दी में कुछ न कुछ भोजपुरीपन रहेगा ही। ठीक उसी तरह, भिक्षुसंघ में सामान्य रूप से एक भाषा मागधी का व्यवहार होने पर भी, भिन्न-भिन्न प्रान्त के भिक्षु उसमें अपनी अपनी पुट लगा ही देते थे। यही कारण है कि पालि के 'नाम' तथा 'घातु' के रूपों में हम इतनी भिन्नता पाते हैं।

'कार्य' शब्द के लिए 'कय्य' तथा 'करिय' भी; 'आर्य' शब्द के लिए 'अय्य' तथा 'अरिय' भी रूप मिलते हैं। 'ह्रस्व' शब्द के लिए 'रस्स'; किंतु 'ह्रद' शब्द के लिए 'रहदो' रूप मिलता है। 'रश्मि' शब्द के लिए 'रस्मि'; किंतु, 'अस्मि' के लिए 'अम्हि' हो जाता है।

इन विभिन्नताओं को देखने से, यह बात दृढ़ होती है कि इसका कारण भिक्षुओं का भिन्न भिन्न प्रान्तों से आकर एक साथ रहना ही था। मागधी भाषा का पूरा

विकास भिक्षु-संघ में ही हुआ। यह भापा सारे मध्य-मण्डल की एक जीवित अन्तर्प्रान्तीय भापा थी, जिसे सभ्य समुदाय बड़े गौरव से बोलता था।

यही भापा मगध सम्राटों की राज्य-भापा बनी, क्योंकि मगध राज्य के विस्तार के बाद ऐसी ही व्यापक भापा की आवश्यकता थी। राज-भापा होने से इस भापा का सम्मान और भी बढ़ गया; तथा मगध-राज्य की भापा होने के कारण इसका नाम भी 'मागधी' पड़ा।

यह 'मागधी भापा' मगध की खास अपनी भापा न थी; किन्तु सारे मध्य-मण्डल में बोली जाने वाली वह भापा थी जिसे मगध-सम्राटों ने अधिक उपयोगी देख कर अपनी राज-भापा बनाया था। हाँ, इतना तो जरूर हुआ कि मगध की राज-भापा बनने के बाद इस पर 'मगध' की अपनी बोली की काफी छाप पड़ गई।

इसी मागधी भापा को बुद्ध ने धर्म-प्रचार का सर्वोत्तम माध्यम समझ, इसी में अपने सारे उपदेश दिए।

चुल्लवग्ग ५ § ६।१ में एक कथा आती है, जिससे साफ प्रकट होता है कि 'मागधी-भापा' अपनाने में बुद्ध का क्या प्रयोजन था:—

अपनी अपनी भापा में धर्म सीखने की आज्ञा

“उस समय यमेळ यमेळते-कुल नामक ब्राह्मण जाति के सुन्दर (=कल्याण) वचन वाले, सुन्दर वचन बोलने वाले दो भाई भिक्षु थे। वे जहाँ भगवान् थे वहाँ गए, जाकर भगवान् को अभिवादन कर एक और बैठे। एक और बैठे उन भिक्षुओं ने भगवान् से कहा—

“भन्ते ! इस समय नाना नाम, गोत्र, जाति, कुल के (पुरुष) प्रव्रजित होते हैं। वह अपनी भापा में बुद्ध वचन को (कह कर उसे) दूषित करते हैं। अच्छा हो भन्ते ! हम बुद्ध-वचन को छन्द^१ में बना दें।

“भगवान् ने फटकारा—भिक्षुओ ! यह अयुक्त है, अनुचित है....। भिक्षुओ ! न यह अप्रसन्नो (=श्रद्धा रहितों) को प्रसन्न करने के लिए है, न प्रसन्नो की (श्रद्धा को) और बढ़ाने के लिए है; वल्कि भिक्षुओ ! यह अप्रसन्नो

^१ वैदिक छन्द में—अटुकया।

को और भी अप्रसन्न करने के लिए है, और प्रसन्नों (=श्रद्धालुओं) में से भी किसी-किसी की श्रद्धा को उल्टा करने वाला है ।

“फटकार कर धार्मिक कथा कह भगवान् ने भिक्षुओं को संवोधित किया—

“भिक्षुओ ! बुद्ध-वचन को छन्द^१ में न करना चाहिए। जो करेगा उसे ‘दुष्कृत’ अपराध लगेगा ।

“भिक्षुओ ! अनुमति देता हूँ अपनी भाषा में बुद्ध-वचन सीखने को।”

बुद्धघोषाचार्य ने अपनी अट्टकथा में ‘सकाय निरुत्तिया’ का अर्थ ‘मागधी भाषा में’ किया है। किंतु, स्थल को देख कर साफ़ प्रकट होता है कि यहां बुद्ध की इच्छा ‘अपनी-अपनी भाषा में धर्म सीखने की अनुमति’ देने की ही है। बुद्ध-संघ में बड़े-बड़े पण्डित से लेकर निरक्षर लोग तक—जिन किन्हीं को निर्वाण को उच्च प्रेरणा मिली—सम्मिलित थे। हो सकता है कि उनमें कुछ अपढ़ लोग बुद्ध ‘मागधी’ न बोल कर अपनी-अपनी प्रान्तीय बोली बोलते रहे हों। आज कल भी कितने ठेठ मगही या भोजपुरी दूसरे प्रान्त में जाने पर, या पढ़े लिखे लोगों के समाज में भी अपनी ही बोली बोलते हैं। उन दो शिक्षित ब्राह्मण भिक्षुओं को अपनी अपनी भाषा में बुद्ध-वचन कहना स्वाभाविक तौर पर बुरा जान पड़ा, इसी लिए उनने बुद्ध-वचनको वैदिक-छन्दों में करने का प्रस्ताव रखा। किंतु, बुद्ध तो अपनी शिक्षा को सरल से सरल और सुबोध से सुबोध बना कर जनता को देना चाहते थे। उनने उस प्रस्ताव को अस्वीकार किया, और अपनी-अपनी भाषा में धर्म सीखने की अनुमति दी ।

पालि

अब प्रश्न होता है कि, इस भाषा का नाम पालि कैसे पड़ा ? किसी भी ग्रन्थ में ‘मागधी भाषा’ के लिए ‘पालि’ नाम का व्यवहार नहीं हुआ है। मोग्गल्लानं व्याकरण का आदि श्लोक है:—

सिद्धमिद्धगुणं साधु नमस्सित्वा तथागतं

सधम्मसङ्घं भासिस्सं मा ग र्धं स द्द ल व्व ल णं ।

^१ वैदिक छन्द में—अट्टकथा ।

^२ “अनुजानामि भिक्खवे, सकाय निरुत्तिया बुद्धवचनं परियापुणितुं।”

यहाँ भी ग्रन्थ का नाम 'भागध शब्द लक्षण' बताया है—'पालि-शब्द लक्षण' नहीं।

'पालि' शब्द का प्रयोग केवल मूल त्रिपिटक के लिए आता है; जैसे—दीघ निकाय पालि, उदान पालि, इत्यादि। "पालिमत्तं इध आनीतं, नत्थि अट्टकथा इध" = यहाँ केवल पालि लाई गई है, यहाँ अर्थकथा नहीं है; "नेव पालियं न अट्टकथायं दिस्सति" = न तो पालि में और न अर्थकथा ही में यह देखा जाता है; "इमित्था पन पालिया एवमत्थो वेदितव्वो" = इस पालि का यह अर्थ समझना चाहिए—इत्यादि वाक्यों के देखने से साफ मालूम होता है कि 'पालि' शब्द का प्रयोग मूल त्रिपिटक के लिए होता था।

धीरे धीरे उक्त भाषा का ही नाम—जिस में बुद्ध-वचन सुरक्षित था—'पालि' हो गया जान पड़ता है।

जब 'भागधी भाषा' का नाम 'पालि भाषा' हो गया, तब लोगों ने इसके विषय में तरह-तरह की हास्यास्पद कल्पनाएँ करनी आरम्भ कर दी जैसे—पालि भाषा पाटलिपुत्र की भाषा थी; इसलिए इसका नाम 'पाटलि भाषा' पड़ा; 'पाटलि भाषा' ही धीरे-धीरे विगड़ कर 'पालि भाषा' कही जाने लगी। कुछ लोगों ने 'पालि भाषा' की व्युत्पत्ति 'पल्लि भाषा' से करने की कोशिश की; पल्लि भाषा, अर्थात् गाँव की भाषा : इत्यादि

यह स्मरण रखना चाहिए कि 'पालि' शब्द कभी भी भाषा के लिए नहीं आया है। भाषा के लिए सदैव 'भागधी' नाम ही आता है।

पालि = पंक्ति

आचार्य भोग्ल्लान तथा दूसरे वैयाकरण भी 'पालि' शब्द को 'पा' धातु से परे ण्वादि का 'लि' प्रत्यय लगा कर सिद्ध करते हैं, और उसका अर्थ पंक्ति तथा श्रेणी बताते हैं।

इसी अर्थ को ले कर, मान्य श्री विद्युशेपर शास्त्री प्रभृति कुछ विद्वानों का मत है कि 'पालि' का अर्थ 'मूल ग्रन्थ की पंक्ति' है। आज कल भी, पण्डितों को जब किसी मूल ग्रन्थ का हवाला देना होता है तो भट्ट कह देते हैं—पंक्ति में भी यह बात इस तरह है। ऐसा लोग अक्सर कहते देखे जाते हैं—गोसाई जी की पाँत में ऐसा है।

किंतु, यह सिद्धान्त युक्ति-युक्त प्रतीत नहीं होता।

(१) इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता कि राजगृह में संगीति हो जाने के बाद 'दीघनिकाय', 'मज्झिम निकाय' आदि मूल ग्रन्थ लिखे गए हों। वल्कि, भिक्षुओं में ऐसी परिपाटी थी कि वे सारे निकाय के निकाय को कण्ठ कर लेते थे। जो भिक्षु दीघनिकाय को याद कर लेता था उसे दीघ भाणक अर्थात् 'दीघ-निकाय सुनाने वाला' कहते थे। इसी तरह, मज्झिम-भाणक, अंगुत्तर-भाणक आदि हुआ करते थे। त्रिपिटक के सभी ग्रन्थ जो 'भाणवारों' में विभक्त किए गए हैं, उनका उद्देश्य यही था कि उतना हिस्सा एक बार याद कर सुनाना चाहिए।

ऐसी हालत में, सम्भव नहीं है कि इन ग्रन्थों के साथ लगने वाला शब्द 'पालि' पंक्ति के अर्थ में प्रयुक्त हुआ हो। 'पंक्ति' का प्रयोग केवल उसी ग्रन्थ के साथ होना समझ में आता है जो लिखित हो। जो ग्रन्थ केवल सुना सुनाया जाता है उसके विषय में 'पंक्ति' शब्द का व्यवहार करना जँचता नहीं है।

(२) 'पालि' साहित्य में, कहीं भी 'पालि' शब्द 'ग्रन्थ की पंक्ति' के अर्थ में प्रयुक्त नहीं हुआ है। यह ध्यान देने लायक बात है कि मूल त्रिपिटक के ग्रन्थों के अन्दर कहीं 'पालि' शब्द का प्रयोग नहीं देखा जाता है। हाँ, ग्रन्थ के नाम के साथ 'पालि' शब्द लगा दिया जाता है—जैसे, उदान पालि, पाचित्तिय पालि आदि। अब, यदि 'पालि' का अर्थ 'पंक्ति' लें तो 'उदान-पंक्ति', पाराजिक-पंक्ति आदि शब्दों का कोई अर्थ ही नहीं निकलता है।

(३) यदि 'पालि' शब्द का अर्थ 'पंक्ति' होता तो उसे बहुवचन में भी प्रयुक्त होना चाहिए था; जैसे—'उदानस्स पालीसु' = उदान ग्रन्थ की पंक्तियों में, इत्यादि। किंतु, सभी जगह, 'उदान पालियं' ऐसा एक वचनान्त ही पाठ आता है।

तब, 'पालि' का क्या अर्थ है

त्रिपिटक के मूल ग्रन्थों में जगह-जगह पर बुद्ध-देशना = बुद्ध-उपदेश = बुद्ध-वचन के अर्थ में 'धम्म-परियाय' शब्द का पाठ मिलता है। जैसे:—

“परियाय”

(फ) “तस्मात्तिह त्वं आनन्द ! इमं धम्म-परियायं अत्थ जालन्ति पि नं धारेहि अनुत्तरो संगामविजयो ति पि नं धारेहि ।

दीघनिकाय; ब्रह्मजाल सूत्र

अर्थात्—आनन्द ! इस ‘धम्म-परियाय’ (=मेरे उपदेश) को अर्थजाल भी समझो अलौकिक संग्रामविजय भी समझो ।”

(ख) “एवं वुत्ते मुण्डो राजा आयस्मन्तं नारदं एतदवोच—को नु खो अयं भन्ते ! धम्मपरियायो ति ?

“सोकसल्लहरणो नाम अयं महाराज धम्मपरियायो ति ।

“तग्घ भन्ते ! सोकसल्लहरणो, तग्घ भन्ते ! सोकसल्लहरणो—इमं हि मे भन्ते धम्मपरियायं सुत्वा सोकसल्लं पहीनन्ति ।

अंगुत्तर निकाय

(P. T. S. III. 62)

अर्थात्—ऐसा कहने पर मुण्ड राजा ने आयुष्मान् नारद को कहा, “भन्ते ! इस ‘धम्मपरियाय’ (=धर्म देशना=सूत्र) का क्या नाम है ?

महाराज ! इस ‘धम्मपरियाय’ का नाम ‘शोकशल्यहरण’ है ।

भन्ते ! ठीक है, ठीक है, यह ‘शोकशल्य’ हरण ही है । भन्ते ! इस ‘धम्म-परियाय’ को सुन कर ‘शोकशल्य’ प्रहीण हो गया ।”

ऊपर के उद्धरणों से यह साफ मालूम होता है कि ‘परियाय’ का अर्थ बुद्धोप-देश=सूत्र है ।

पलियाय

अशोक ने भी, इसी अर्थ में अपने धर्म-लेख में इस शब्द का प्रयोग किया है ।
जैसे:—

भद्रू शिला लेख

पियदसि लाजा मागधं संघं अभिवादनं आदा, अपावाधतं च फासु-विहालतं चा । विदितं वे भन्ते आवतके हमा बुधसि धम्मसि संघसीति

गलवे च पसादे च ए केचि भंते भगवता बुधेन भासिते सवे से सुभासिते वा ए चु खो भंते हमियाये दिसेया देवं सधंमे चिलठितीके होसतीति अलहामि हकं तं वतवे । इमानि भंते धं म-प लि या या नि विनयसमुक्से, अलियवसानि, अनागतभयानि, मुनिगाथा, मोनेयसूते, उपतिसपसिने ए चा लाहुलोवादे मुसावादं अधिगिच्य भगवता बुधेन भासिते । एतान भंते धं म-प लि या या नि इच्छामि । किं ति बहुके भिखुपाये च भिखुनिये चा अभिखिनं सुनयु चा उपधालेयेयु चा । हेवं हेवा उपासका चा उपासिका चा एतेनि भंते इमं लिखापयामि अभिहेतं म जानंताति ।

ऊपर के मूल शिला-लेख का पालि-रूपान्तर इस प्रकार होगा:—

पियदसो राजा मागधं संघं अभिवादनं ग्राह, अप्पावाधतं च फासुधिहारतं च । विदितं वो भन्ते ! यावतको अम्महाकं बुद्धास्मि, धम्मस्मि संघास्मि गारवो च पसादो च । यो कोचि भन्ते ! भगवता बुद्धेन भासितो (धम्मपलियायो), सब्बो सो सुभासितो एव । यो तु खो भन्ते अम्महेहि देसेय्यो, हेवं सद्धम्मो चिरट्टितिको हेस्सतीति, अरहामि अहं तं वत्तवे ।

इमानि भन्ते ! धम्म-पलियायानि :—विनय-समुक्खसो, अरियवंसा, अनागतभयानि, मुनिगाथा, मोनेय्यसुत्तं, उपतिस्स-पसिनो (पञ्चो), ये च राहुलोवादे मुसावादं अधिक्खिच्च ।

भगवता बुद्धेन भासितो (धम्मपलियायो) ।

एतानि भन्ते ! धम्म-पलियायानि इच्छामि किं ति बहुका भिक्खवो भिक्खुनियो च अभिक्खणं सुनेय्युं च उपघारेय्युं च; हेवं हेव उपासका च उपासिका च । एतेन भन्ते ! इमं लेखापयामि अभिहेतं मे जानन्तु ति ।

अर्थात्—प्रियदर्शी (=हितकामी) राजा मगध के संघ को अभिवादन करता है, तथा उनका कुशल-मंगल चाहता है । भन्ते ! आप को मालूम ही है कि बुद्ध, धर्म, तथा संघ के प्रति मेरे हृदय में कितना आदर और श्रद्धा है । भन्ते ! भगवान् ने जो कुछ कहा है सभी सुन्दर ही कहा है । भन्ते ! जो कुछ मुझे कहना है उसे कहता हूँ, जिससे सद्धर्म चिरस्थायी हो ।

भन्ते ! ये धम्म-पलियाय हैं:—

१. विनय समुत्कर्ष, २. आर्यवंश, ३. अनागत भय, ४. मुनिगाथा, ५. मोनेय्य

सूत्र, ६. उपतिष्य-प्रश्न, और ७. 'राहुलोवाद' सूत्र में भगवान् ने जो मृपावाद के विषय में उपदेश दिया है भन्ते ! मैं चाहता हूँ कि सभी भिक्षु, भिक्षुणियाँ, उपासक तथा उपासिकायें इन्हें सदा सुनें और पालन करें। भन्ते ! इसी लिए मैं यह लेख लिखवा रहा हूँ—ऐसा समझें।

पालियाय=पालि

इससे साफ़ प्रकट होता है कि बुद्ध-वचन के अर्थ में ही 'परियाय=पलियाय' शब्द का प्रयोग किया गया है।

पालि भाषा में बहुधा परि या 'पटि' उपसर्ग का दीर्घ हो कर 'पारि' या 'पाटि' हो जाता है। जैसे:—

परि+लेट्यकं=पारिलेट्यकं

पटि+कङ्खा=पाटिकङ्खा

पटि+भोगो=पाटि भोगो इत्यादि

इसी तरह, 'पलियाय' शब्द का रूप धीरे-धीरे 'पालियाय' हो गया। बाद में, इसी शब्द का लघु-रूप 'पालि' हो गया; और इसका अर्थ हुआ 'बुद्धवचन'।

'दीघनिकाय-पालि', 'उदानपालि', 'पाञ्चित्तिय-पालि' आदि कहने से यह मतलब है कि ये ग्रन्थ 'बुद्धवचन' हैं। 'पालि' का अर्थ 'बुद्धवचन' होने से, यह शब्द केवल मूल त्रिपिटक ग्रन्थों के लिए ही प्रयुक्त हुआ है, अट्टकथा के लिए नहीं।

मागधी भाषा के आधार पर बुद्ध की अपनी शैली को छाप लग कर पालि भाषा का विकास हुआ। पीछे, जनता में त्रिपिटक के साथ-साथ पालि भाषा का खूब प्रचार हुआ।

ए. वेरियेडल कीय महोदय लिखते हैं:—

The speech of the Buddha, which is assumed to be reproduced in the canon, was doubtless the educated lingua franca which had been devised for the needs of the intercourse of learned men in India.

'Ceylon Daily News', May 1939.

अर्थात्—बुद्ध-भाषा, जो त्रिपिटक में आती है, निस्सन्देह शिक्षित समाज

की बोलचाल की भाषा थी; जिसका गठन भारत के शिक्षित समुदाय के व्यवहार की आवश्यकता की दृष्टि से ही हुआ था ।

रायस डेविड्स और गांडेगर दोनों विद्वान् इस से बिलकुल सहमत हैं ।

लंका में जब त्रिपिटक के साथ 'पालि' शब्द पहुँचा, उस समय 'परियाय = पलियाय = पालियाय' से इसका सम्बन्ध छूट चुका था, और लोगों को यह एक पृथक् नया शब्द मालूम हुआ । वैयाकरणों ने इसका अर्थ 'पा = रक्खणे' धातु से करना प्रारम्भ किया । जैसे:—“पा—पालेति रक्खतीति पालि = पंक्ति^१ ।”



^१ 'पंक्ति' का अर्थ यहाँ 'श्रेणी' है । खींच-खाँच कर इसका अर्थ 'ग्रन्थ-पंक्ति' भी किया जा सकता है ।

दूसरा खण्ड

पालि और वैदिक भाषा

वैदिक भाषा बोलचाल की भाषा थी। वैदिक काल में आर्यों का जहाँ जहाँ प्रसार हुआ सभी जगह यह भाषा गई। उस समय, भाषा ने व्याकरण की बेड़ी नहीं पहनी थी। बोलने के समय लोगों को गलती हो जाने का डर नहीं लगा रहता था। भावों की अधिक से अधिक अभिव्यञ्जना ही भाषा का अभिप्राय था। यही जीती जागती भाषा का प्रथम लक्षण होता है।

भाषा की स्वतंत्रता

जैसे जैसे आर्य लोग आगे बढ़ते गए इस भाषा का विस्तार होता गया। फलतः, नियम में बाँध रखने वाले एक व्याकरण के अभाव में—भाषा में तरह तरह के नये रूप धड़ल्ले से आने लगे। 'भवति' को कोई 'भवाति' कोई 'भवत्' कोई 'भवात्'; जिसको जैसा मन होता था, बोलता था। अर्थ समझा देना भर उनका प्रयोजन था। वैसे ही, कोई पष्ठी के स्थान में चतुर्थी का, तो कोई चतुर्थी के स्थान में पष्ठी का व्यवहार करता था।

वैदिक भाषा की स्वतंत्रता तथा व्यापकता दिखाते हुए पाणिनि सूत्रों के भाष्यकार पतञ्जलि लिखते हैं:—

व्यत्ययो बहुलम् ३।१। ८५। योग-विभागः कर्त्तव्यः। छन्दसि विषये सर्वे विधयो भवन्तीति। सुपां व्यत्ययः। तिङां व्यत्ययः। वर्ण-व्यत्ययः। लिङ्ग-व्यत्ययः। पुरुष-व्यत्ययः। काल-व्यत्ययः। आत्मनेपद-व्यत्ययः। परस्मैपद-व्यत्ययः इति।

सुयाम् व्यत्ययः—...दक्षिणायाः—दक्षिणस्याम् इति प्राप्ते। तिङां व्यत्ययः...तक्षति—तक्षन्ति इति प्राप्ते।

वर्णव्यत्ययः—... शुभितम्...—शुधितम् इति प्राप्ते । लिङ्गव्यत्ययः—
 मधो—मधुनः इति प्राप्ते । पुरुषव्यत्ययः—... वि यू या—वि यू यात्
 इति प्राप्ते । कालव्यत्ययः—... इवः सोमेन य क्ष्य मा णे न—यष्टेता
 इति प्राप्ते । आत्मनेपद व्यत्ययः—... इच्छते—इच्छति इति प्राप्ते ।
 परस्मैपद व्यत्ययः—... यु ध्य ति—युध्यते इति प्राप्ते ।

नाम-विभक्तियों का, क्रिया-विभक्तियों का, वर्णों का, लिङ्गों का, पुरुषों का,
 काल का, आत्मनेपद का, तथा परस्मैपद का व्यत्यय (=उल्टा-पुल्टा) होता है ।
 सुप्-तिङ्-उपग्रह-लिङ्ग-नराणां काल-हल्-अच्-स्वर-कर्त्तृ-यङां च । व्य-
 त्यय मिच्छति शास्त्र-कृद् एपां सोपि च सिध्यति वाहुलकेन ॥१॥

(महा भाष्य)

नाम-विभक्ति, क्रिया-विभक्ति, उपग्रह, लिङ्ग, पुरुष, काल, व्यञ्जन, स्वर,
 वैदिक स्वर (Accent), कर्त्तृ (कारकादि एवं वाच्यादि), यङन्त इत्यादि
 का व्यत्यय, (उल्टा-पुल्टा, व्यतिक्रम) होना पाणिनि-आदि व्याकरण-शास्त्रकार
 निर्देश करते हैं । वह व्यत्यय भी कहाँ और कैसे होगा इसका कोई नियम
 नहीं है ।

नाम-विभक्तियों के प्रयोग में स्वच्छन्दता

वैदिक भाषा में नाम-विभक्तियों के प्रयोग में कितनी स्वतंत्रता थी उसका
 पता हमें 'महाभाष्य' से मिलता है :—

सुपां सुलुक्पूर्वसवर्णाच्छेयाडाड्यायाजालः ७१३९ सुपां च सुपो भव-
 न्तीति वक्तव्यम् ॥ तिङां च तिङो भवन्तीति वक्तव्यम् ॥ इयाडियाजी
 कारणामुपसंख्यानम् ॥ आड्याजयारां चोपसंख्यानं कर्तव्यम् ॥

नाम-विभक्तियों के स्थान में सु^१ (प्रथमा), लुक् (भक्ति-लोप), पूर्व-सवर्ण

^१ सु शब्द को आदेश कहने का अभिप्राय यह है, कि सु प्रत्यय आदेश होने पर अन्य नाम-विभक्तियाँ नहीं होंगी । यह सब 'व्यत्ययो बहुलम्' इसके अनुसार भी व्यत्यय से सिद्ध हो सकता है । (कैट) ।

(पूर्व-सवर्ण-दीर्घ), आ, आत् शे, या, डा, ड्या, या आल् [शे=ए। या, याच्, ड्या=या। डा, आल्, आ, (आत्)=आ] इन प्रत्ययों का आदेश होता है।¹ नाम-विभक्तियोंमें व्यत्यय होने के उदाहरण—

ऋजवः सन्तु पन्थाः (पन्थानः)। परमे व्योमन् (व्योमनि)। लोहिते चर्मन् (चर्मणि)। आर्द्रे चर्मन् (चर्मणि)। धीती (धीत्या), मती (मत्या)। या सुरथा रथी-तमा द्विविस्पृशा अश्विना (यौ सुरथौ द्विविस्पृशौ अश्विनौ)। नताद् ब्राह्मणम् (नतंब्राह्मणम्)। यादेव (यमेव) विद्म तात्त्वा (तंत्वा)। युप्मे। (युष्मासु)। अस्मे (अस्मभ्यम्) इन्द्रावृहस्पती। उरुया (उरुणा), धृष्णुया (धृष्णुना) नाभा (नाभौ) प्रथिव्याः। साधुया (साधु)। वसन्ता यजेत (वसन्ते यजेत)।

उर्विया (उरुणा), दार्विया (दारुणा), सुचेत्रिया (सुचेत्रिणा-इति)। सुगात्रिया (सुगात्रेण)। दृतिं नशुक्लं सरसी शयानम् (सप्तमी एक वचन के स्थान में ईकार का आदेश)।

प्र वाहवा (वाहुना)। स्वप्रया (स्वप्नेन)। नावया (नावा)।

(महाभाष्य—सिद्धान्त-कौमुदी)

काल तथा लकार की स्वच्छन्दता

वैदिक भाषा में काल तथा लकार के प्रयोग में बड़ा अनियम था। एक-एक क्रिया-पद के लिए कितने अधिक रूप व्यवहृत होते थे, उसे देख कर माया चकरा जाता है। जैसे:—

¹इया, डियाच्, (इया, डियाच्=इया), ईकार भी आदेश होते हैं।

तृतीया एक वचन में अयाच्, अयार (=अया) भी आदेश होते हैं।

(महाभाष्य)

छन्दसि लुङ्-लङ्-लिटः । ३।४।६

धात्वर्थानां सम्बन्धे सर्वकालेषु एते वास्युः ।

लुङ्-लङ्-लिट् का प्रयोग सभी काल में हो सकता है ।

देवो देवेभि आगमत् (आगच्छतु) ।

अद्य ममार (म्रियते) ।

लिङ्-अर्थे लेट् ३।४।७ उपवादःऽऽशङ्कयोश्च ३।४।८ लेट् । सिव्-बहुलं
लेटि ३।१।३।४ सिव्-बहुल णिद्-वक्तव्यः । इतश्च लोपः परस्मैपदेषु ३।४।६।७
लेटोऽङ्-आटौ ३।४।६।४ आगमौ स्तः स उत्तमस्य ३।४।९८ । लोपो वा
स्यात् ।

लेट् का धातुरूप

प्रथम पुरुष एक वचन में

भवति, भवाति । भवत्, भवात् । भवते, भवाते । भविपति, भाविपति ।
भविपत्, भाविपत् । भविपाति, भाविपाति । भविपात्, भाविपात् ।
भविपते, भाविपते, भविपाते, भाविपाते ।

इस तरह, प्रथम तथा मध्यम पुरुष में ५४।५४ रूप, एवं उत्तम पुरुष में २७ +
१२ (व, म) कुल १४७ रूप होंगे ।

पताति विद्युत् (विद्युत् पतेत्) । प्रियःसूर्ये प्रियो अग्ना भवाति
(भवेत्) ।

लेट् लकार (Subjunctive mood) ऋग्वेद और अथर्व-वेद में बहुतायत
से आता है । विधि लिङ् (optative) की अपेक्षा यह तिगुणा अथवा चारगुणा
अधिक प्रयुक्त हुआ है ।

निमित्तार्थक प्रत्यय

निमित्तार्थक (तुं-प्रत्यय प्रत्यय के स्थान में) वैदिक भाषा में विभिन्न
प्रत्यय पाये जाते हैं, परन्तु संस्कृत भाषा में केवल तुं-प्रत्यय का प्रयोग
होता है ।

निमित्तार्थक प्रत्यय

तुमर्थक प्रत्यय	वैदिक उदाहरण ^१	ऋक तथा यजुर्वेद में प्रत्यय-प्रयोग-संख्या ^२
तुं	कर्त्तुं, गन्तुं, दातुं	२६
से ^३ , असे ^३	चक्षसे, जीवसे, वक्षे	१८३
ध्यै ^३ , अध्यै ^३	पृणध्यै, पिवध्यै, यजध्यै	१०१
अः ^३ तोः ^३	निमिपः, गन्तोः, हन्तोः, कर्त्तोः, विलिखः	३३
अं ^३	शुभं, प्रतिघां, समिधं	७२
ए ^३	दृशे, भुवे, परादे, ग्रभे	३४८
तये	पीतवे, सातये,	३३६
वने, मने	आमणे, दावने, विद्मने	५२
त्यै	इत्यै	४
तवे ^३ , तवै ^३	कर्त्तवे, गन्तवे दातवे, मन्तवै, पातवै, दातवै,	२८४
अये	चित्तये युद्धये	५५
इ, सनि	दृशि, वुधि, नेपणि, अभिभूपणि, गृणीपणि	२८

^१ 'A.A. Macdonell's Vedic Grammar for Students' से उद्धृत ।

^२ 'E.V. Arnold's Historical Vedic Grammar' से संकलित ।

^३ तुमर्थे से-सेन्-असे-असेन्-कसे-कसेन्-अध्यै-अध्यैन्-कध्यै-कध्यैन्-शध्यै-शध्यैन्-तवै-तवेड्-तवेनः ३।४।९.....३।४।१३

(अष्टाध्यायी)

कृत्य

उसी तरह, 'कृत्य' प्रत्यय भी वैदिक भाषा में 'तव', 'केन', 'केन्य', 'त्वेन' यह चार व्यवहृत होते थे। जैसे :—

कृत्यार्थे तव-केन-केन्य-त्वेनः ३।४।१४ न म्लेच्छित्तवै (=न म्लेच्छित्तव्यम्)। अवगाहे (अवगाहितव्यम्, अवगाढ्यम्)। 'दिदृक्षेण्यः' (=द्रष्टव्यः)। कर्त्तव्यम् (=कृत्यम्)। अवचक्षे (=अवख्यातव्यम्)।

प्रयोगों की विभिन्नता का कारण

ऊपर के उदाहरणों में हमने जो वैदिक भाषा में स्वच्छन्दता, अनियमितता, तथा प्रयोगों की विभिन्नता देखी है, उसका कारण भाषा बोलने वालों के प्रान्त तथा समाज की विपमता ही हो सकती है। यों तो कहने के लिए आज हम कह देते हैं कि बिहार तथा युक्तप्रान्त की भाषा हिन्दी है; किन्तु, यदि इन प्रान्तों की भिन्न भिन्न जगहों की सच्ची बोलचाल की भाषाओं को देखें, तो उसके अनेक रूप मिलेंगे। एक ही शब्द के उच्चारण के कई भेद मिलेंगे। 'में जाता हूँ', इसी एक वाक्य के रूप मगध में 'हम जा ही', मिथिला में 'हम जाई छी', तथा भोजपुर में 'हम जात वानी, जातानि, जातानि' आदि होंगे। भाषा मूलतः एक ही है, किन्तु प्रान्त तथा समाज के भेद से उसके इतने रूप हो गए। ठीक उसी तरह, वैदिक भाषा मूलतः एक होने पर भी, प्रान्त-भेद से उसमें इतने व्यत्यय, तथा एकार्थक विभिन्न प्रत्यय दीखते हैं।

व्याकरण से मँजी 'खड़ी बोली' की तरह उस समय कोई एक भाषा नहीं बनी थी; अतः, सभी तरह के प्रयोग भाषा में मिलते जाते थे। धीरे धीरे एक एक प्रत्यय के लिए—जैसे हमने अभी ऊपर देखा है—चार चार पाँच पाँच प्रत्यय व्यवहृत होने लगे। सभी के उदाहरण वेद में मिलते हैं।

भाषा में इतनी अधिक विभिन्नता होने का एक और प्रबल कारण रहा। जब आर्य लोग सिन्धु देश में फैल रहे थे, तब उनका समागम वहाँ के मूल-निवासियों से हुआ। एक जगह साथ रहने से उनकी भाषा का प्रभाव वैदिक भाषा पर कुछ न कुछ अवश्य पड़ा; ठीक उसी तरह, जैसे अँगरेजी साहित्य में लाठी, लूट, राजा, जानाना, पर्दा, आदि बहुत शब्द प्रयुक्त होने लगे हैं। यदि अँगरेजी भाषा का

केन्द्र (इंग्लैण्ड) बाहर नहीं होता, तो निश्चय है कि अँगरेजी भाषा का रूप आज बिल्कुल दूसरा ही हो गया होता। वैदिक भाषा का केन्द्र कहीं बाहर नहीं, किन्तु यहीं था; इसलिए इस भाषा पर यहाँ की मूल भाषा का प्रभाव अत्यन्त अधिक पड़ा होगा, जिससे इसमें इतनी विभिन्नता आ गई।

जब बाहर से भारतवर्ष में मुसलमान आए और यहीं रहने लगे, तो उनकी भाषा और यहाँ की भाषा मिल कर एक तीसरी भाषा 'उर्दू' का जन्म हुआ। यदि वही लोग इस देश में बस न जा कर, अपने देश ही से यहाँ का शासन करते, तो एक नई भाषा 'उर्दू' का जन्म न हो कर, उनकी भाषा फ़ारसी ही में संस्कृत के कुछ शब्द आ कर रह जाते, जैसा अँगरेजी में हुआ।

उच्चारण में परिवर्तन

उसी तरह, जब आर्य लोग यहाँ बाहर से आए और यहीं बस गए, तो वैदिक भाषा और यहाँ की मूल भाषाओं के मिलने से कई छोटी मोटी भाषाओं की उत्पत्ति हुई। आर्य लोग विजयी, और यहाँ वाले विजित थे; इसलिए, इन भाषाओं में प्राधान्य वैदिक भाषा का ही रहा। यहाँ वाले वैदिक भाषा के क्लिष्ट शब्दों को सरल तथा मुलायम करके बोलने लगे। 'अग्नि' का 'अग्गि', 'रश्मि' का 'रसि', 'भार्या' का 'भरिया', 'कृत्य' का 'किच्च', 'सिंह' का 'सीह', 'व्याघ्र' का 'व्यग्घ', 'संस्थान' का 'संठान' आदि आदि रूप हो गए। यह विकास किन्हीं खास नियमों के आधार पर नहीं हुआ। जहाँ जिनको जैसा सरल प्रतीत हुआ बोलते गए।

वैदिक भाषा के शब्द किस तरह बदल कर बोले जाने लगे उसके कुछ उदाहरण नीचे दिए जाते हैं।

१. 'ऋ' कहीं-कहीं 'अ' कर दिया गया। जैसे:—
कृतं—कतं। घृतं—घतं। ऋक्षः—अच्छो। नृत्यं—नच्चं।
२. 'ऋ' कहीं-कहीं 'इ' कर दिया गया। जैसे:—
ऋणं—इणं। कृत्यं—किच्चं। दृष्टं—दिट्ठं।
३. 'ऋ' कहीं-कहीं 'उ' कर दिया गया। जैसे:—
ऋतु—उतु। ऋजु—उजु। वृष्टि—बुट्टि।

४. 'ऐ' का 'ए', 'इ', तथा 'ई' हो गया। जैसे:—वैमानिकः—वेमानिको।
ऐश्वर्य—

इस्सरियं। प्रैवेद्यं—गीवेद्यं।

५. 'ओ' का 'ओ' तथा 'उ' हो गया। जैसे—

पोरः—पोरो; मौद्गल्लायनः—मोग्गलायनो। श्रीद्वयं—उद्धच्चं;

श्रीदेशिकः—उद्देशिको।

६. 'श' तथा 'प' के बदले 'स' का ही व्यवहार होने लगा। जैसे:—

शिष्यः—सिस्सो। श्रमणः—समणो।

७. शब्द के अन्तस्थित व्यञ्जन को लोप कर देने लगे। जैसे:—

गुणवान्—गुणवा। कश्चित्—कोच्चि। यावत्—याव। तावत्—

ताव।

८. अकारान्त शब्दों से परे विसर्ग का 'ओ', तथा इकारान्त या उकारान्त शब्दों से परे विसर्ग का लोप होने लगा। जैसे:—

देवः—देवो। कः—को। अग्निः—अग्नि। धेनुः—धेनु।

९. विसर्ग से परे यदि स, श, या प हुआ तो विसर्ग के स्थान में 'स' हो गया।

जैसे:—

दुःसह—दुस्सहो। निःशोकः—निस्सोको।

१०. संयुक्त वर्ण से पूर्व दीर्घ स्वर का ह्रस्व हो गया। जैसे:—

मार्दवं—मद्दवं। तीर्थं—तित्थं। धार्मिकः—धम्मिको। शून्यं—सुञ्जं।

११. रेफ का लोप हो गया; तथा रेफ वाले वर्ण का द्वित्व हो गया। जैसे:—

कर्म—कम्मं। निर्जलः—निज्जलो। सर्वः—सव्वो। वर्गः—वग्गो।

१२. 'ह' के साथ रेफ का 'र' हो गया। जैसे:—

तर्हि—तरहि। एतर्हि—एतरहि।

१३. पद के आदि वर्ण में संयुक्त 'र' का लोप हो गया। जैसे:—

कीतः—कीतो। क्रुध्यति—कुज्झति। ग्रामः—गामो। त्रिपिटकं—

त्तिपिटकं। श्रावकः—सावको।

१४. पद के मध्य में किसी व्यञ्जन के साथ संयुक्त 'र' का लोप हो गया, तथा कहीं-कहीं उस व्यञ्जन का द्वित्व हो गया। जैसे:—

प्रक्रमः—पक्कमो । सूत्रं—सुत्तं । समुद्रः—समुद्दो । इन्द्रः—इन्दो ।

१५. 'र्य' का कहीं-कहीं 'रिय' हो गया । जैसे:—

कार्यं—करियं । कदर्यं—कदरियं ।

१६. पद के आदिस्थित 'क्ष' का 'ख' हो गया । जैसे:—

क्षीरं—खीरं । क्षेमः—खेमो ।

१७. पद के मध्य में 'क्ष' का कहीं-कहीं 'क्ख' या 'च्छ' हो गया । जैसे:—

दक्षिणः—दक्खिणो । मोक्षः—मोक्खो । पक्षः—पक्खो । अक्षि—अक्खि,
अक्खि ।

१८. पद के आदिस्थित 'द्य' का 'ज', तथा मध्यस्थित का 'ज्ज' हो गया ।

जैसे:—

द्युतिः—जुति । अद्य—अज्ज । विद्यते—विज्जते ।

१९. पद के आदिस्थित 'ध्य' का 'भ', तथा मध्यस्थित का 'ब्भ' हो गया ।

जैसे:—

ध्यानं—भानं । बुध्यते—बुब्भते ।

२०. पद के आदिस्थित 'त्य' का 'च', तथा मध्यस्थित का 'च्च' हो गया ।

जैसे:—

त्यजति—चजति । प्रत्ययः—पच्चयो । नृत्यं—नच्चं । सत्यं—सच्चं ।

अत्ययः—अच्चयो ।

२१. 'न्य' तथा 'ण्य' का 'ञ्ज' हो गया । जैसे:—

धान्यं—धञ्जं । शून्यं—सुञ्जं । हीरण्यं—हिरञ्जं ।

२२. पद के आदिस्थित 'ज्ञ' का 'ब', तथा मध्यस्थित का 'ब्ज' हो गया ।

जैसे:—

ज्ञातिः—जाति । ज्ञानं—जाणं । संज्ञा—संब्जा । प्रज्ञा—पब्जा ।

२३. 'ष्ट' या 'ष्ठ' के स्थान में 'ट्ट'; 'स्त' के स्थान में 'थ' या 'त्य', या 'त्त'
हो गया । जैसे:—

तुष्टः—तुट्ठो । पष्ठः—छट्ठो । स्तम्भः—थम्भो । हस्ती—हत्थी ।
दुस्तरं—दुत्तरं ।

२४. कुछ गीण परिवर्तनों के उदाहरणः—

स्थूलः—थूलो। स्थानं—ठानं। अस्थि—अट्टि। मत्स्यः—मच्छो। उल्का—
उक्का। जल्पः—जप्पो। फल्गु—फग्गु। ग्लानः—गिलानो। क्लेशः—फिलेसो।
ज्वलति—जलति।

पक्वं—पक्क। अध्वा—अट्टा। ह्रस्वः—रस्सो। जिह्वा—जिव्हा।
स्कन्धः—खन्धो। निष्कमः—निक्खमो। शुक्लं—सुक्खं। पश्चात्—पच्छा।
अप्सरा—अच्छरा। स्पृशति—फुसति। पुष्पं—पुप्फं। देयं—देय्यं। श्रेयः—
सेय्यो। भुक्तं—भुत्तं। सप्त—सत्त। लवण—लोणं। स्नेहः—सिनेहो।
शक्नोति—सक्कोति। चन्द्रमा—चन्दिमा। असूया—उसूया। मातृका—
मेत्तिका। गुरु—गरु। पुरुषः—पुरिसो। कीलः—खीलो। मूकः—मूगो। प्रसेन-
जित्—पसेनदि। प्रति—पट्टि। पृथिवी—पठवी। दहति—डहति।

व्याकरण की आवश्यकता

भिन्न-भिन्न प्रान्त तथा समाज में आ कर विकास का यह प्रवाह फूट कर कई दिशाओं में बहने लगा। कहीं-कहीं वर्णों का लोप हो गया; कहीं-कहीं उनका विपर्यास हो गया; कहीं-कहीं व्यञ्जन-वर्णों के स्थान में स्वर-वर्ण हो गया; कहीं-कहीं कुछ वर्णों का आगम हुआ इत्यादि। इस तरह, यही आगे चल कर पालि तथा प्राकृत भाषाओं के रूप में प्रकट हुआ।

बोल-चाल की भाषा में रूपों की विभिन्नता हृद से ज्यादा बढ़ गई। यहाँ तक, कि समाज को दैनिक व्यवहार में बड़ी कठिनाई पड़ने लगी। लोगों को अनुभव होने लगा कि यदि भाषा की इस उच्छृङ्खलता को रोक कर उसमें कुछ नियमन किया गया, तो कुछ समय के बाद सामाजिक जीवन असंभव हो जायगा। यही 'संस्कृत भाषा' के निर्माण का कारण हुआ।

शब्द-शास्त्र के पण्डितों ने इधर काफी ध्यान दिया; और वे भाषा को काट-छाँट कर हलका तथा उपयोगी बनाने के फेर में पड़ गए। भाषा का व्याकरण बनने लगा। विभिन्न प्रयोगों में से अधिक प्रचलित कुछ एक-दो ही रखे गए, और बाकी छोड़ दिए गए। वैयाकरणों के कई वर्षों तक परिश्रम करते रहने के बाद लगभग ईसा-पूर्व ४०० में (बुद्ध से प्रायः ३५० वर्ष बाद) पाणिनि ने इस शास्त्र को सर्वाङ्ग-

पूर्ण बनाया । भाष्यकार पतञ्जलि, पाणिनि के सूत्र 'भ्वाद्भ्यो धातवः' १।३।१ का भाष्य करते हुए लिखते हैं कि पाणिनि के समय लोगों में—'आणवयति' (=आज्ञा देना), वट्टति (=वर्तमान होना), वड्डयति (=वढ़ना) आदि क्रिया के रूप बोले जाते थे; तथा 'कृषि' के अर्थ में 'कसि', 'दृशि' के अर्थ में 'दसि' का प्रयोग करते थे । व्याकरण के निर्माण के समय इन प्रयोगों को गौण समझ कर छोड़ दिया ।

[यह ध्यान देने लायक बात है कि ये तमाम प्रयोग पालि भाषा में व्यवहृत होने वाले बड़े ही साधारण रूप हैं]

उपयोगी समझ कर, लोगों ने व्याकरणानुकूल बोलने लिखने पर बड़ा जोर दिया । धीरे-धीरे लोगों में यह भाव बड़ा पुष्ट हो गया, और वे व्याकरण के अननुकूल किसी प्रयोग को त्याज्य और हीन समझने लगे । आज तक वह भाव पण्डितों में वैसा ही है । संस्कृत का बड़ा से बड़ा विद्वान भी संस्कृत बोलते समय डरता है कि कहीं व्याकरण की अशुद्धि न हो जाय । यदि कभी कोई अशुद्ध प्रयोग मुंह से निकल जाय तो उसके लिए उसे लज्जित होना पड़ता है ।

संस्कृत भाषा के निर्माण से यह तो लाभ हुआ कि भाषा की उच्छृङ्खलता दूर हो गई, तथा उसमें नियमन आया । किंतु, साथ ही साथ यह भी हुआ कि भाषा बँध कर जकड़ी गई, और कठिन होने तथा प्रगतिशील न होने के कारण बोल-चाल की भाषा न रह सकी । बोल-चाल की भाषा न रहने पर भी इसके सम्मान में कोई अन्तर नहीं हुआ । पण्डित विद्वानों की यही भाषा रही । ग्रन्थ लिखने तथा शिष्ट व्यवहार के लिए पण्डितों ने संस्कृत का ही प्रयोग किया ।

वैदिक, पालि, संस्कृत

देश तथा अवस्था के प्रभाव से वैदिक भाषा की संतान पालि तथा प्राकृत भाषाएँ हुईं । इन भाषाओं में शब्दों के उच्चारण मुलायम तो हुए, किंतु प्रत्ययों के व्यवहार वैसे ही बने रहे । इसके विपरीत, संस्कृत व्याकरण ने वैदिक शब्दों को—मुलायम न होने दे—ज्यों के त्यों ले लिया; किंतु एक ही अर्थ में आने वाले अनेक प्रत्ययों में से केवल प्रचलित एक-दो को छोड़ सभी को रद्द कर दिया ।

वैदिक, पालि, तथा संस्कृत के रूपों का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए निम्न तालिका देखें:—

वैदिक

- व्यत्ययो बहुलम् ३।१।८५
१. सुपां व्यत्ययः। वेद में सुवन्त विभक्तियों के प्रयोग में उलट पलट हो जाया करता है। जैसे:—सप्तमी के स्थान पर पष्ठी का; सप्तमी के स्थान पर प्रथमा का, इत्यादि।
 २. तिङ्गान् व्यत्ययः। वेद में तिङ्गन्त के प्रयोग में उलट पलट हो जाया करता है। जैसे:—“चपालं ये अश्वयूपाय तक्षति।” यहाँ ‘तक्षन्ति’ बहुवचन के स्थान पर एक वचन हो गया है।
 ३. वर्णव्यत्ययः। वेद में किसी वर्ण के स्थान में कभी कभी कोई दूसरा वर्ण चला आता है। जैसे:—“शुभितम्”—शुधितम् इति प्राप्ते। “तमसो गा अद्भुतर”—अधुक्षत् इति प्राप्ते। “गृभार्य”—गृहाण इति प्राप्ते इत्यादि।
 ४. काल व्यत्ययः। वेद में एक काल के स्थान में दूसरे काल का भी कहीं कहीं प्रयोग होता जाता है।

पालि

१. पालि में भी, वेद के समान ही सुवन्त प्रत्ययों का व्यत्यय हो जाता है। जैसे:—“एकं समयं” (=एकस्मि समयस्मि)। “तेन समयेन” (तस्मि समयस्मि)। “अचिरपक्कंतस्स भगवतो” (अचिरपक्कंते भगवति)। “तेलस्स पिवित्वा” (=तेलं पिवित्वा)। “त्तस्स पट्टिसुत्वा” (=तं पट्टिसुत्वा)।
२. पालि में भी वेद के समान ही तिङ्गन्त प्रत्ययों का व्यत्यय हो जाता है। जैसे:—“अस्थि इमास्सि काये केसा लोमा नत्था इत्थादि”। यहाँ ‘सन्ति’ बहुवचन के स्थान पर एक वचन हो गया है।
३. पालि में भी वेद के समान ही वर्णों का व्यत्यय हो जाया करता है। जैसे:—“बुद्धेभि” (=बुद्धेहि)। “डुक्कट” (=डुक्कत्)। “आण” (=आनं)। “पल्लिघो” (=परिघो) इत्यादि।
४. पालि में भी वेद के समान ही अक्सर काल का व्यत्यय देखा जाता है। जैसे:—भूतकाल के अर्थ में—पुरे अधम्मो दिप्पति। “अनेकं जाति संसारं सन्धाविस्स”—भूतकाल के अर्थ में भविष्यकाल। “अति वेलं नमस्सिस्सति”—वर्तमान के अर्थ में भविष्यकाल।

संस्कृत

संस्कृत में ऐसे व्यत्यय नहीं होते हैं; क्योंकि इन व्यत्ययों को रोकने के लिए ही संस्कृत का ब्याकरण निर्माण हुआ था।

वैदिक प्रयोग	पाणिनीय वैदिक प्रक्रिया के सूत्र	वैदिक प्रत्यय	ऋग्वेद-प्रथम-वेद में प्रत्यय-प्रयोग संख्या†	पालि समानता	संस्कृत
१. देवासः	७।१।५०	ऋतुक	१७३८	देवासि । धम्मासि । बुद्धासि ।	प्रथमा बहुवचन का यह रूप है। संस्कृत व्याकरण के निर्माण के समय यह रूप नहीं लिया गया।
२. देवेशिः	७।१।८	एभिः	६२०	देवेशि १* सदा यह रूप होना है।	तृतीया बहुवचन का यह रूप है।
३. गौनाम्	७।१।५७	नाम्	३६	गौर्न । गुलं ।	'गौ' शब्द के पठ्ठी बहुवचनका रूप।
४. पतिना	१।४।६	टा	समान	संस्कृत व्याकरण ने इस प्रयोग को छोड़ दिया।

द्रष्टव्य—शेरष्टन्दसि बहुलम् ६।१।७०। छत्त्वसि नपुंसकस्य पुंवद्भावो वस्तव्यः—इति महाभाष्ये। वैदिक भाषा में नपुंसक लिङ्ग के शब्द का बहुधा पुल्लिङ्ग रूप ही जाता है।

पालि में भी ऐसा होता है। 'फल' शब्द के प्रथमा बहुवचन में 'फला' और 'फलानि' दोनों रूप होते हैं। संस्कृत व्याकरण के निर्माण के समय यह रूप छोड़ दिया गया। ऋग्वेद और अथर्ववेद में ऐसे रूप २५७२ बार प्रयुक्त हुए हैं।

† E. V. Arnold's Historical Vedic Grammar से

* वैदिक प्रक्रिया के सूत्र ३।१।८४ के अनुसार 'हु' के स्थान में 'भ' ही जाता है। जैसे :—गृहाण=गृभयाम्।

पालि में भी ऐसा 'भ-हु' का परिवर्तन होता है। जैसे :—देवेशि=वेशिभि ।

संस्कृत व्याकरण ने ऐसे परिवर्तन को रोक दिया।

विशेष द्रष्टव्यः—चतुर्थ्यर्थे बहुलं छत्त्वसि २।३।६२। पठ्प्रथं चतुर्थीति वाच्यम् (वातिक)। वेद में बहुधा चतुर्थी के अर्थ में पठ्ठी, तथा पठ्ठी के अर्थ में चतुर्थी होती है।

पालि में चतुर्थी तथा पठ्ठी के रूप प्रायः समान रहते हैं। जैसे :—आप्तणस्स धनं वाति। आप्तणस्स सिस्सो। संस्कृत व्याकरण ने इस अवलंबन को रोक दिया।

वैदिक प्रयोग	वैदिक प्रक्रिया के सूत्र	पालि-समानता	संस्कृत
इच्छते	३।१।८५ परस्मैपद व्यत्ययः। 'इच्छति' इति प्राप्ते।	} समान	संस्कृत व्याकरण ने इस व्यत्यय को रोक कर, धातु के पद का निरवयव कर दिया।
युध्यति	" आत्मनेपद व्यत्ययः। 'युध्यते' इति प्राप्ते।		सुणुहि। पालि में यह रूप बड़ा साधारण है।
शृणुधी	६।४।१०२ अनुज्ञा मध्यम पुरुष एक वचन का रूप है। इसी तरह, 'कृधि', 'अपावृधि' इत्यादि।	सुणोथ। "	संस्कृत व्याकरण ने इस प्रयोग को छोड़ दिया।
शृणोत	७।१।४५ अनुज्ञा मध्यम पुरुष बहु-वचन का रूप है।	एमसे। भवामसे।	संस्कृत व्याकरण ने इस प्रयोग को छोड़ दिया।
एमसि	७।१।४६ वर्तमान काल उत्तम पुरुष बहुवचन का रूप है।	बांधि। पालि में यह रूप बड़ा साधारण है।	संस्कृत व्याकरण ने इस प्रयोग को छोड़ दिया।
बधी	७।१।४० लुङ् लकार में उत्तम पुरुष एक वचन का रूप है।	बांधि। वैदिक भाषा श्रीर पालि में यह वड़ी भारी समानता है।	संस्कृत व्याकरण ने इस प्रयोग को छोड़ दिया।
बधी	६।४।७५ लुङ् लकार में उत्तम पुरुष एक वचन का रूप है। इस लकार में धातु के पहले जो 'अ' का आगम होता है, वह वेद में विकल्प से नहीं भी होता है।		

वैदिक प्रयोग	वैदिक प्रक्रिया के सूत्र	पालि-समानता	संस्कृत
वर्धन्तु } वर्धयन्तु }	३।४।१७ वेद में सार्वधातुक तथा सार्वधातुक दोनों ही नियमों के अनुसार धातु-प्रत्यय जोड़े जाते हैं।	वड्ढन्तु } समान वड्ढयन्तु }	संस्कृत व्याकरण ने इस प्रयोग को छोड़ दिया।
दाति } ददाति }	२।४।७५-७६ वेद में द्वित्व होने वाले धातुओं का द्वित्व विकल्प से होता है।	समान	संस्कृत व्याकरण ने द्वित्व न होनेवाले प्रयोग को छोड़ दिया।
भेदति } भरति }	३।१।५५ विकरण व्यत्ययः।	समान	संस्कृत व्याकरण ने 'विकरण व्यत्यय' रोक दिए।
हनति	२।४।७२-७३।	समान	संस्कृत व्याकरण ने इस प्रयोग को छोड़ दिया।

विशेष द्रष्टव्यः—'लुङ्' का प्रयोग ब्राह्मणों में तथा Classical Sanskrit (नवीन निर्मित) संस्कृत में प्रायः लुप्त हो गया, जो सभी जानते ही हैं। वैदिक भाषा में 'लुङ्' का प्रयोग बड़ा साधारण है। 'लुङ्' का प्रयोग ऋग्वेद और अथर्ववेद में ५५.१५ वार हुआ है; जो 'लिट्' तथा 'लृङ्' लकार से भी अधिक है।

E. V. Arnold's Historical Indic Grammar Page 323.

पालि में भी 'लुङ्' (==अज्जतनी=भूत) का प्रयोग वैदिक भाषा ही की तरह प्रचुरता से पाया जाता है। जैसे :—
अहोसि। अकासि। अगच्छि।

नीचे E. V. Arnold के Historical Vedical Grammar से वैदिक-धातु-प्रयोग के आँकड़े दिये गये हैं, जिनसे उनके आपेक्षिक प्रयोग मालूम हो जायेंगे।

क्रिया	ऋक् तथा अथर्व वेद में धातु- प्रयोग-संख्या	विवरण
वर्तमान काल (लट्)	१३४२१	परस्मै पद ६५७६ आत्मने पद ३८४२
भूत काल (लुङ्)	५५१८	पालि में बहुत अधिक प्रयोग है।
" " (लिट्)	७६	पालि में बहुत कम प्रयोग।
भविष्यत् काल (लृट्)	७६५	पालि में भी प्रयोग।
" " (लुट्)	०	पालि में भी नहीं। किंतु संस्कृत में प्रयोग होता है।
सप्तमी	लिङ् (लेट्)	१८१७ ८६२
कालातिपत्ति (लृङ्)	०	पालि, संस्कृत में प्रयोग।
प्रेरणार्थक (आय)	२७१३	पालि में प्रयोग।
" (आप)	१४८	पालि में समान रूप से प्रयोग।
नामधातु	६३८	पालि में प्रयोग।
सनन्त (इच्छार्थक)	४३०	पालि में कम प्रयोग।
यङन्त	५२०	पालि में बहुत कम प्रयोग।
भाव-कर्म वाचक (लुङ् को छोड़कर)	१७७७	पालि में प्रयोग।
निमित्तार्थक	१३४५	पालि में अधिक प्रयोग।
पूर्वकालिक	२२२७	पालि में अधिक प्रयोग।

भूतकालिक क्रियापद के आदि में 'अकार' का आगम ८१४० स्थान पर हुआ है, और १७०४ स्थान पर नहीं हुआ है। पालि तथा प्राकृत में भी अकार का आगम विकल्प से होता है। संस्कृत में ऐसा नहीं है।

वैदिक प्रयोग के उदाहरण	प्रत्यय	किस अर्थ में	वैदिक प्रक्रिया के सूत्र	पालि समानता	संस्कृत
दातवै } दातवै }	तवै } तवै }	निमित्ता- र्थक	३।४।८। वेद में निमित्ता- र्थक श्रीर १४ प्रत्यय हैं। जैसे— से, सेन, असे, असेन, कसे, कसेन, अर्धयं, अर्धयन, कर्धयं, कर्धयन, शर्धयं, शर्धयन, तर्वेन तुं।	वतवै । पालि में 'दातुं' रूप भी होता है। कित्तु, योग प्रत्यय नहीं होते। वेद में निमित्तिार्थक प्रत्ययों की संख्या आश्चर्यजनक अधिक है। भिन्न भिन्न प्रान्तों में ये रूप व्यवहृत होते होंगे।	संस्कृत व्याकरण ने केवल एक 'तुं' प्रत्यय को रख कर बाकी सभी को छोड़ दिया।
परिधाप- यित्वा	त्वा	पूर्वकालिक	७।१।३।८। ल्यप के स्थान में भी 'त्वा' का प्रयोग होता है।	समान। पालि में 'ल्यप' के स्थान में 'त्वा' का प्रयोग बहुत साधारण है।	संस्कृत में ऐसा नहीं होता है।
गत्वाय	त्वाय	"	७।१।४७। 'त्वा' से परे 'य' का आगम होता है।	गत्वान। त्वा से परे 'न' का आगम होता है।	संस्कृत व्याकरण ने इस प्रयोग को छोड़ दिया।
इष्ट्वीन	स्वीन	"	७।१।४८। इष्ट + स्वीन	कात्तन। पालि में 'स्वीन' का 'तुं' हो गया	संस्कृत व्याकरण ने इस प्रयोग को छोड़ दिया।
जन्तित्वन	त्वन	भावार्यक	Macdonell §218। यह प्रत्यय ऋक् श्रीर अथर्व वेद में ३३ बार प्रयुक्त हुआ है।	जायत्तन। त्वन' का 'त्न' हो गया है।	संस्कृत व्याकरण ने इस प्रयोग को छोड़ दिया।

वेद और अशोक-पालि

१. वेद में ह्रस्वान्त क्रिया-पदों का कभी कभी दीर्घ हो जाता है। ६।३।१३५।
जैसे:—विद्वा—विद्मइति प्राप्ते । चक्रा—चक्रइति प्राप्ते ।

विद्वा ते अग्ने त्रेधा त्रयास्मिं
विद्वा ते धाम विभृता पुरुत्रा
विद्वा ते नामं परमं गुहा यद्
विद्वा तमुत्सं यतं आजगंथं ।

ऋ० मं० १० । नू० ४५ । मं० २

अशोक-पालि में भी इसी तरह दीर्घ होता है। जैसे:—

“पियदसि लाजा मागथं संधं अभिवादनं आहा (=आह) । अपा
वाधतं च फासु विहालतं चा”—भाबू शिला-लेख ।

संस्कृत व्याकरण ने इस तरह के प्रयोग छोड़ दिए।

निपातस्य च ६।३।१३६—यह बताता है कि वैदिक भाषा में निपात
का भी दीर्घ हो जाता है। जैसे:—

“एवा (=एव) हि ते”

अशोक-पालि में भी इस तरह निपात का दीर्घ होता है। जैसे:—

“अपावाधतं च फासु विहालतं चा” ।

संस्कृत व्याकरण ने इस तरह निपात का दीर्घ होना रोक दिया।

×

×

×

ऊपर की तालिकाओं को देख कर हम इसका कुछ अनुमान कर सकते हैं,
कि भिन्न-भिन्न प्रान्तों में बोली जाने वाली वैदिक भाषाओं की अगाध विभिन्नताओं
को ले, उनका नियमन करने में संस्कृत व्याकरण बनाने वाले आचार्यों को कितनी
कठिनाई का सामना करना पड़ा होगा। व्याकरण ऐसा होना चाहिए था, कि
जो सरल तथा उपयोगी होने के साथ-साथ तमाम वैदिक प्रयोगों को भी सिद्ध
कर सके।

संस्कृत व्याकरण ने इस कठिनाई का सामना मुख्यतः दो प्रकार से किया:—

१. प्रयोगों की विभिन्नता के विषय में स्पष्ट उल्लेख कर, कि अमुक प्रयोग इस प्रान्त में व्यवहृत होते हैं। जैसे:—

इति प्राचाम्; इति उदीचाम्।

२. धातु-पाठ में सभी धातुओं का संकलन कर, जो कहीं न कहीं प्रयुक्त होते थे। इसी लिए, धातु-पाठ में हम ऐसे धातु अधिक पाते हैं, जिनका उपयोग संस्कृत में बिल्कुल नहीं मिलता।

वेद में ऐसे-ऐसे मन्त्र आते हैं, जो साधारण वैदिक भाषा से बिल्कुल भिन्न भाषा में लिखे मालूम होते हैं। वह अवश्य किसी गौण प्रान्तीय भाषा का उदाहरण हैं, जो साधारण भाषा से बहुत दूर मालूम होती है।

संस्कृत-व्याकरण का ऐसा होना आवश्यक था जो इस प्रकार के सभी प्रयोगों को सिद्ध कर सके।

उदाहरण के लिए, हम नीचे ऋग्वेद के मन्त्र देते हैं, जो देखने में बड़े विलक्षण मालूम होते हैं; किंतु जिन्हें सायणाचार्य ने पाणिनीय व्याकरण से ही सिद्ध किया है।

सृएयेव ज॒र्भरीं तु॒फरीं॑तू नै॒तोशेव॑ तु॒फरीं॑ प॒फ॒रीका॑ ।
 उ॒द॒न्य॒जेव॑ जैम॒ना म॒दे॒रू ता मे॑ ज॒राय॑व॒जरं॑ म॒रायं॑ ॥
 प॒ज्जेव॑ च॒र्चरं॑ जा॒रं म॒रायु॑ क्ष॒त्रे॒वार्थे॑पु॒ तर्त॑रीथ॒ उग्रा॑
 ऋ॒भू ना॑र्प॒त्वर॑म॒ज्रा ख॑र॒ज्रु॒र्वायु॑र्न प॒र्फ॒रत्त्वा॑य॒द्र॒दीर्घा॑

मं० १०।अ० ६।सू० १०६

तीसरा खण्ड

पालि के विकृत रूप

धीरे-धीरे भिन्न-भिन्न प्रान्तों में वहाँ की अपनी बोली का प्रभाव शुद्ध पालि पर पड़ने लगा, और अशोक के काल तक एक ही पालि के अनेक विकृत रूप हो गए। इन्हीं विकृत रूपों को हम अशोक के भिन्न-भिन्न शिला-लेखों में पाते हैं। किसी एक ही लेख के कई पाठों को देखने से स्पष्ट पता चलता है कि वे एक ही भाषा के भिन्न रूप हैं, जो वहाँ-वहाँ की प्रान्तीय बोली के प्रभाव के कारण विकृत हो गई है। किंतु, सभी उन्ने साधारण रूप से समझते होंगे। ठीक वैसे ही, जैसे आज भी मगही, भोजपुरी, मैथली, तथा अवधी आपस में काफी भिन्नता रखती हैं, तो भी सभी की समझ में आ जाती हैं। उदाहरण के लिए, हम अशोक के एक लेख को लें, जो तीन भिन्न-भिन्न स्थानों में मिलता है:—

क

गिरनार का प्रथम शिला-लेख

(पश्चिम)

इयं धंमलिपी देवानं प्रियेन प्रियदसिना राज्ञा लेखापिता । इध न किंचि जीवं आरभित्या प्रजृहितव्यं । न च समाज्ये कतव्यो । बहुकं हि दोसं समाजमिह पसति देवानं प्रियो प्रियदसि राजा । अस्ति पितु एकचा समाजा साधुमता देवानं प्रियस प्रियदसिनो राज्ञो । पुरा महानसमिह देवानं प्रियस प्रियदसिनो राज्ञो अनुदिवसं वहूनि प्राणसतसहस्रानि आरभिसु सूपाथाय । से अज यदा अयं धंमलिपि लिखिता ती एव प्राणा आरभरे सूपाथाय—द्वे मोरा, एको मगो । सोपि मगो न धुवो । एतेपि त्री प्राणा पद्धा न आरभिसठे ।

ख

जौगढ़ में उसी लेख का दूसरा पाठ

(पूर्व)

इयं धम्मलिपि खपिगलसि पवतसि देवानं पियेन लाजिना लिखा-
पिता । हिद् नो किञ्चि जीवं आलभितु पजोहितविये, नापि समाज
कटविये । बहुकं हि दोसं समाजस दखति देवानं पिये पियदसि लाजा ।
अथि चु एकतिया समाजा साधुमता देवानं पियस पियदसिने लाजिने ।
पुलुवं महानससि देवानं पियस पियदसिने लाजिने अनुदिवसं वहूनि पान-
सत सहसानि आलभियिसु सुपठाये । से अज अदा इयं धंमलिपी लिखिता
तिनि येव पानानि आलभियंति—दुवे मजुला एक मिगे । से पि चु मिगे
नो धुवं । एतानि पि चु तिनि पानानि पछा नो आलभियिसंति ।

ग

मनसेहर में उसी लेख का तीसरा पाठ

(उत्तर)

अयि धमदिपि देवन प्रियेन प्रियदरिणि राजिन लिखपित । हिद् नो
किचि जिवे आरभितु प्रयुहोतविये । नो पिच समज कटविय । बहुक हि
दोप समजस देवनं प्रिये प्रियदर्शि रज देखति । अस्ति पिचु एकतिय
समज साधुमत देवनं प्रियस प्रियदर्शिने राजिने । पुर महनससि देवनं
प्रियस प्रियदर्शिस राजिने अनुदिवसं वहूनि प्राणशत-सहसानि आर-
भिसु सुपथये । से इदनि यद् अपि धमदिपि लिखित तद् तिनि येव
प्रणनि आरभिसंति—दुवे मजर एके मिगे । से पि चु मिगे नो ध्रुवं । एतनि
पि चु तिनि प्रणनि पच नो आरभिसंति ।

पालि और गाथा-संस्कृत

(पालि भाषा से बिल्कुल मिलती-जुलती, संस्कृत का कुछ स्वरूप लिए एक
सुन्दर भाषा में लिखे 'महावस्तु', 'ललित विस्तर' आदि अनेक ग्रन्थ प्राप्त होते

हैं, जिनके विषय तथा रंग-रङ्ग त्रिपिटक के ही हैं। त्रिपिटक की प्राचीनता तथा मौलिकता का प्रभाव इन ग्रन्थों पर भी वैसा ही है। त्रिपिटक के कितने सूत्र तथा गाया इन ग्रन्थों में हूवहू वैसे ही मिलते हैं। केवल, उनकी भाषा पर थोड़ा संस्कृत का रंग चढ़ा है। इस भाषा को 'गाया संस्कृत' कहते हैं।)

गाया-संस्कृत का उदाहरण निम्न पदों में देखिए, जो पालि धम्मपद से एकदम मिलते हैं:—

सहस्र मपि वाचानां अर्थपदसंहिता ।
एका अर्थवती श्रेया यां श्रुत्वा उपशाम्यति ॥
यो शतानि सहस्राणां संग्रामे मनुजा जये ।
यो चैकं जये आत्मानं स वै संग्रामजित् वरः ॥
यत्किंचिद्विष्टं च हुतं च लोके,
संवत्सरं यजति पुण्यप्रेक्षी ।
सर्वं पि तं न चतुर्भागमेति,
अभिवादनं उज्जुगतेषु श्रेयं ॥

(‘पेरिस’ से प्रकाशित) महावस्तु, पृष्ठ-४३४-४३५

इन्हीं गायाओं का पालि धम्मपद में निम्न प्रकार पाठ है:—

सहस्तनपि चे वाचा अनत्यपदसंहिता
एकं अत्यपदं सेय्यो यं सुत्वा उपसम्मति ॥८१
यो सहस्सं सहस्सेन सङ्गमे मानुसे जिने
एकं च जेय्यमत्तानं स वे सङ्गमजुत्तमो ॥८४
यं किंचि विदुं च हुतं च लोके
संवच्छरं यजेय पुञ्जपेक्खो ।
सव्वम्मि तं न चतुभागमेति,
अभिवादना उज्जुगतेसु सेय्यो ॥८६

पालि और अर्धभागधी

जैन धर्म के ग्रन्थ अर्धभागधी में लिखे हैं, अतः उसे जैन-भागधी भी कहते हैं। जैन-भागधी त्रिपिटक पालि से भाषा और शैली दोनों में घनिष्ठ समानता रखती है।

किसी जैन सूत्र को देखने से मालूम पड़ता है, कि इसमें वही शैली वर्ती गई है जो पालि सूत्रों में है। उदाहरण के लिए:—

मूल

१. सुयं मे, आवुसं ! तेण भगवया एवं अक्खायं । इहं एगेसिं नो सन्ना भवति । एवं एगेसिं नो नातं भवति । तं जहा:—“के अहं आसी ? के वा इत्थो चुए पेत्ता भविस्सामि ?”

(आचारंग-सुत्ते—सत्थ परिन्ना)

२. ततो णं सक्के देविन्दे देवराया सणियं सणियं जान-विमाणं पट्टवेइ । पट्टवेत्ता सणियं सणियं जान-विमाणात्थो पच्चोतरति । पच्चोतरित्ता जेनेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छति । तेणेव उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आदाहिणं पदाहिणं कारेति । कारेत्ता वन्दति, नमस्सति ।

३. ततो णं समणस्स भगवत्थो महावीरस्स एतेणं विहारेणं विहर-माणस्स वारस वासा वित्तिक्कन्ता । तेरसमस थ वासस्स परियाए वत्तमाणस्स !.....साल-रुक्खस्स अदूर-सामन्ते,..... निव्वारेणे कसिणे पडिपुणे निरावरणे अनुत्तरे समुपन्ने ।

४. से भगवं अरहा जिणे जाए सव्वन्न सव्वभाव-दरिसी सव्वदेव-मणुयासुरस्स लोयस्स पज्जाये जाणती । तं जहा:—आगतिं, गतिं, ठित्तिं, चवणं, उववायं, आवि-कम्मं, रहोकम्मं जाणमाणे पासमाणे एवं विहरइ ।

(आचारंग-सुत्ते—भावना)

५. तहा विमुक्खस्स परिन्नाचारिणो ।
 धितीमतो दुक्ख-खमस्स भिक्खुणो ॥
 विसुज्झती जंसि मलं पुरे कडं ।
 समीरियं रूपमलं व जोतिणा ॥१॥
 इमम्मि लोए परतो थ दोसु वि ।
 न विज्जती बन्धणं जस्स किंचि वि ॥

सेहु निरालम्ब्ये अप्पतिट्टित्ते ।

कल्ल-कली-भाव-पहं विमुच्चइ ॥२॥

(आचारंग-सुत्ते—विमुत्ती)

मूलकी पांलि-छाया

१. सुतं मे (मया), आवुत्तो ! तेन भगवता एवं श्रक्खार्तं । इह एकेसं नो सज्जा भवति । एवं एकेसं नो जातं भवति । तं यथा :—“को अहं आसिं ? को वा इतो चुतो पेच्चा भविस्सामि ?

(आचारंग-सुत्ते—सत्यपरिज्जा)

२. ततो णं सपको देविन्दो देवराजा सनिकं सनिकं यान-विमानं पट्टुपेत्ति । पट्टुपेत्त्वा, सनिकं सनिकं यान-विमानतो पच्चोत्तरति । पच्चोत्तरित्वा, पेनेव समणो भगवं महावीरो, तेनेव उपागच्छति । तेनेव उपागच्छित्वा समणं भगवन्तं महावीरं तिकखत्तुं आदाहिणं पदाहिणं (पदक्खिणं) कारेत्ति । कारेत्त्वा वंदति, नमस्सति ।

३. ततो णं संमणस्स भगवतो महावीरस्स एतेन विहारेण विहरमानस्स, वारस्स वस्सा वितिकन्ता । तेरसमस्स च वस्सस्स परिआयो वत्तमान—साल-ख्वस्स श्रद्धर-त्तामन्ते, निव्वाणं कसिणं परिपुण्णं निरावरणं अनुत्तरं समुत्तं ।

४. सो भगवं श्ररहा जिनो जातो, सव्वञ्जू सव्वभाव-दस्सी सव्व-देव-मनुज-श्रसुरस्स लोकस्स पज्जाय जानाति । तं यथा :—‘आर्गतिं, र्गतिं, ठिंतिं, चवनं, उपपादं, आविकम्मं, रहोकम्मं जानमानो पस्समानो एवं विहरति ।

(आचारंग-सुत्ते—भावना ।)

५. तथा विमुत्तस्स परिज्ज-चारिणो ।

धीतिमतो दुक्ख-खमस्स भिक्खुनो ॥

विमुज्झति र्यास्मि (येन) मलं पुरे कतं ।

समीरितं रूप-मलं व जोतिना ॥१॥

- अड़तीस -

इमस्मिं लोके परतो च द्वेषु पि ।
न विज्जति बन्धनं यस्स किं चि पि ॥
सो हि निरालम्बने अप्पतिट्ठिते ।
कथं-कथी-भाव-पहं विमुच्चति ॥२॥

(आचारंग-सुत्ते--विमुत्ति)

चौथा खण्ड

साहित्य

बुद्ध के अपने सारे उपदेश मौखिक ही थे। उनके शिष्य उन उपदेशों को याद कर लेते थे। जब किसी को कुछ शंका होती थी तो स्वयं बुद्ध के पास जा कर उसका निवारण कर लेता था।

त्रिपिटक

बुद्ध के महापरिनिर्वाण प्राप्त कर लेने पर महाकाश्यप, आनन्द आदि उनके प्रमुख शिष्यों ने आपस में तै किया कि सभी बड़े-बड़े स्थविर भिक्षुओं की एक सभा बुलाई जाय और भगवान् के सारे उपदेशों का संग्रह कर लिया जाय। उस सभा के लिए पाँच सौ अर्हत् स्थविर चुने गए। सभा के लिए राजगृह की सप्तपर्णी गुहा ठीक की गई। प्रथम मास में स्थान की मरम्मत आदि सारी तैयारियाँ कर ली गई; और दूसरे मास में बैठक शुरू हुई। यही बैठक प्रथम संगीति के नाम से प्रसिद्ध है। सौ वर्ष बाद वैशाली में इसी तरह की दूसरी, और अशोक की प्रेरणा से पाटलिपुत्र में तीसरी संगीति हुई।

भगवान् के सारे उपदेश संग्रह कर लिए गए। इस संग्रह का नाम 'त्रिपिटक', अर्थात् तीन पिटारी है:—१. सुत्तपिटक, २. विनयपिटक, ३. अब्धिम्मपिटक। जब सम्राट् अशोक के पुत्र कुमार महेन्द्र भिक्षु बन कर प्रचार के उद्देश्य से लंका गए तो उन्होंने वहाँ इसी त्रिपिटक का उपदेश दिया। लंका के विख्यात राजा वट्टगामनी के संरक्षण में त्रिपिटक के सारे ग्रन्थ लिख लिए गए।

लंका, वर्मा, स्याम आदि बौद्ध राष्ट्रों में त्रिपिटक का स्थान सर्वोच्च है। वहाँ इन ग्रन्थों का प्रचार तथा आदर उतना ही अधिक है जितना भारतवर्ष में आज रामायण-महाभारत का है। उन देशों ने त्रिपिटक के मूल पालि-ग्रन्थों को

अपनी-अपनी लिपि में कर लिया है। त्रिपिटक के प्रति वीद्ध राष्ट्रों की श्रद्धा का अन्दाजा तब लगता है, जब हम देखते हैं कि वर्मा के राजा मण्डुम ने महाभारत से तिगुने बड़े त्रिपिटक के सारे ग्रन्थों को पत्थर की पट्टियों पर खुदवा कर सुरक्षित रख दिया है।

पश्चिम देशों में भी आज-कल इन ग्रन्थों का प्रचार खूब हो रहा है। रायस डेविड्स जैसे पालि-विद्वानों की प्रेरणा से लन्दन में एक समिति स्थापित की गई थी, जिसका नाम 'पालि-टेक्स्ट सोसाइटी' है। इस सोसाइटी ने त्रिपिटक के प्रायः सारे ग्रन्थों को रोमन लिपि में प्रकाशित कर दिया है। पालि-भाषा के और भी अनेक ग्रन्थ तथा अंगरेजी अनुवाद मुद्रित कर इस सोसाइटी ने पालि-पाण्डित्य की बड़ी सेवा की है।

आज संसार के प्रायः सभी बड़े-बड़े विश्वविद्यालयों में पालि-भाषा की पढ़ाई होती है। अमेरिका के हरवर्ट विश्वविद्यालय से पालि-ग्रन्थों के मूल तथा अनुवाद का सुन्दर प्रकाशन हो रहा है। हीलेण्ड के विश्वविद्यालय से पालि की एक पाण्डित्यपूर्ण डिक्शनरी निकाली जा रही है। पेरिस, बर्लिन, मास्को आदि सभी विश्वविद्यालयों में पालि भाषा की ऊँचे दर्जे की पढ़ाई है।

भारतवर्ष में, पालि-भाषा की पढ़ाई केवल कलकत्ता तथा बम्बई विश्वविद्यालयों में है। बिहार तथा युक्त-प्रान्त के—ठीक वहाँ जहाँ पालि भाषा का जन्म तथा विकास हुआ—विश्वविद्यालयों में पालि की पढ़ाई नहीं के बराबर है। किमाश्चर्य्य अतः परं !

नव अङ्ग

त्रिपिटक में जगह-जगह पर साहित्य के नव अङ्गों का जिक्र आता है। (१) सूत्र—भगवान् के दिए हुए धार्मिक उपदेश, जो गद्य में संग्रह किए गए हैं। (२) गेय्य—उपदेश जो गद्य-पद्य में संग्रह किए गए हैं। (३) वेय्याकरण—व्याख्या, भाष्य। (४) गाथा—पद-बद्ध संग्रह। (५) उदान—भावातिरेक के कारण सन्तों के मुँह से अनायास निकले वाक्य। (६) इतिवृत्तक—छोटी-छोटी भगवान् की उक्तियों का संग्रह। (७) जातक—भगवान् के पूर्व-जन्म की कथाएँ। (८) अब्भुतधम्म—धार्मिक सिद्धियों का वर्णन। (९) वेदल्ल—प्रश्न-उत्तर के ढंग पर लिखे गए।

इन नव अंगों का जिक्र आने से पता चलता है कि त्रिपिटक के निर्माण के समय यह सारे अंग मौजूद थे। ये सभी नव अङ्ग 'सूत्र पिटक' ही में मिलते हैं।

१. सुत्त पिटक

सूत्र पिटक में पाँच निकाय हैं—१. दीघ निकाय, २. मज्झिम निकाय, ३. संयुत्त निकाय, ४. अङ्गुत्तर निकाय, और ५. खुद्दक निकाय। खुद्दक निकाय में पन्द्रह ग्रन्थ हैं—१. खुद्दक पाठ, २. घम्मपद, ३. उदान, ४. इतिवुत्तक, ५. सुत्तनिपात, ६. विमानवत्थु, ७. पेतवत्थु, ८. थेरीगाथा, ९. थेरीगाथा, १०. जातक, ११. निद्देस, १२. पटिसम्भिदामग, १३. अपदान, १४. बुद्धवंस, १५. चरियापिटक।

सूत्रों की शैली

सूत्र-पिटक के प्रायः सभी सूत्र भगवान् के दिए उपदेश हैं। सारिपुत्र, मोग्गल्लान आदि भगवान् के प्रधान शिष्यों के द्वारा भी उपदिष्ट कुछ सूत्र शामिल कर लिए गए हैं, जिनका अनुमोदन भगवान् ने अंत में कर दिया है। प्रत्येक सूत्र के प्रारम्भ में उस स्थान का नाम दे दिया जाता है, जहाँ भगवान् ने उसका उपदेश दिया; जैसे—“एकं समयं भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे।” घम्मोपदेश शुरु करने के पूर्व, इस बात का सविस्तार वर्णन रहता है कि किस अवसर पर किस सिलसिले में वह उपदेश दिया गया था। उपदेश के समय जो प्रश्नोत्तर होते थे उनका भी पूरा-पूरा हुंवाला मिलता है। उपदेश के अन्त में श्रद्धा से गद्गद हो कर श्रावक जो संतोष प्रकट करता था उसके वारे में भी बड़े सुन्दर वाक्य आते हैं; जैसे—

“अभिकन्तं भो गोतम, अभिकन्तं भो गोतम, सेय्यथापि भो गोतम निक्कु-जितं वा उक्कुज्जेय्य, पतिच्छन्नं वा विवरेय्य, मूळहस्स वा मग्गं आचिकखेय्य, अन्धकारे वा तेलपज्जोतं धारेय्य, चक्खुमन्तो रूपानि दक्खिन्तीति.।

अर्थात्—हे गोतम ! आप ने खूब कहा ! जैसे उल्टे को सीधा कर दे, ढके को खोल दे, भटके को राह दिखा दे, अन्धकार में तेल-प्रदीप जला दे कि आँख वाले रूपों को देख लें.।

कुछ सूत्रों के अन्त में ऐसा भी आता है—“इदमवोच भगवा। अत्तमना ते

वाले सूत्र द्विक निपात में—तथा ग्यारह-ग्यारह धर्म बताने वाले सूत्र एकादस निपात में हैं। जैसे:—

एकक निपात—

नाहं भिक्खवे अञ्जं एकधम्ममिपि समनुपस्सामि, यो एवं महतो अनत्थाय संवत्तति, यदिदं भिक्खवे पापमित्ता। पापमित्ता भिक्खवे महतो अनत्थाय संवत्तति।”

अर्थात्—भिक्षुओ ! मैं किसी भी दूसरी चीज को नहीं देखता हूँ, जो इतनी ज्यादा अनर्थकर हो, जितनी ‘पाप मित्रता’। भिक्षुओ ! पापमित्रता बहुत अनर्थकारी है।

द्विक निपात—

“द्वे मे भिक्खवे, असनिया फलन्तिया न सन्तसन्ति। कतमे द्वे ? भिक्खू च खीणासवो, सीहो च मिगराजा। इमे० खो भिक्खवे, द्वे असनिया फलन्तिया न सन्तसन्तीति।”

अर्थात्—भिक्षुओ ! विजली कड़कने पर दो ही प्राणी चींक नहीं पड़ते हैं। कौन से दो ? क्षीणाश्रव भिक्षु और मृगराज सिंह। भिक्षुओ ! यही दो विजली कड़कने पर चींक नहीं पड़ते।

२. विनय-पिटक

विनय-पिटक में भगवान् की उन शिक्षाओं का संग्रह है जो उन्होंने समय-समय पर संघ-संचालन को नियमित करने के लिए दी थीं। प्रव्रज्या की दीक्षा कैसे देनी चाहिए, शिष्य तथा आचार्य का परस्पर व्यवहार कैसा होना चाहिए, भिक्षुओं को कैसे रहना चाहिए, कैसे भिक्षाटन के लिए गाँव में जाना चाहिए, कैसे उठना-बैठना, खाना-पीना चाहिए, क्या दोष करने से भिक्षु को क्या दण्ड देना चाहिए,

‘क्षीणाश्रव भिक्षु नहीं चींक पड़ता है, क्योंकि उसका ‘अहं-भाव’ बिल्कुल निरुद्ध हुआ रहता है। मृगराज सिंह नहीं चींक पड़ता है, क्योंकि उसका ‘अहं-भाव’ अत्यन्त प्रबल होता है; चींकने के बदले वह और गरज उठता है कि कौन दूसरा उसकी बराबरी करने आ रहा है।

किन-किन चीजों का व्यवहार भिक्षु को विहित है और किन-किन चीजों का निषिद्ध, आदि-आदि दैनिक जीवन की छोटी-छोटी बातों तक के विषय में भगवान् की शिक्षाएँ इस पिटक में मिलती हैं। जैसे राज्य के शासन के लिए 'पेनल कोड' है, वैसे ही संघ-शासन के लिए यह विनय-पिटक है। किस किस अवसर पर तथा परिस्थिति में ये शिक्षाएँ वनीं, रद्द की गईं, या संशोधित की गईं—इसका भी विशद वर्णन किया गया है।

विनय-पिटक में निम्नलिखित ग्रन्थ हैं:—

१. महावग्ग
२. चुल्लवग्ग
३. पाचित्तिय
४. पाराजिक
५. परिवार

प्रकरणों को छोड़, इन ग्रन्थों से केवल मूल शिक्षापदों का भी एक संग्रह कर दिया गया है, जिसका नाम 'पातिमोक्ख' है। भिक्षुओं के लिए उपदिष्ट शिक्षापदों का संग्रह 'भिक्षु-पातिमोक्ख', तथा भिक्षुणियों के लिए उपदिष्ट शिक्षापदों का संग्रह 'भिक्षुनी पातिमोक्ख' कहा जाता है। शिक्षापदों की संख्या कुल २२७ है।

३. अभिघम्म पिटक

अभिघम्म पिटक में सात ग्रन्थ हैं:—

१. घम्मसङ्गणी, २. विभङ्ग, ३. धातुकया, ४. पुगलपञ्जत्ति,
५. कयावत्यु, ६. यमक, ७. पट्टान।

अभिघम्म-पिटक में चित्त, चैतसिक, आदि घर्मों का विशद विश्लेषण किया गया है। विज्ञान क्या है, संस्कार क्या है, वेदना क्या है, संज्ञा क्या है आदि आध्यात्मिक विषयों पर दार्शनिक गवेषणा की गई है, और आश्रवहीन निर्वाण की प्राप्ति का साधन बताया गया है। सूत्र-पिटक में भगवान् ने जो घर्म बताया है उसी का यह दर्शन-शास्त्र है।

त्रिपिटक से अन्य ग्रन्थ

अट्ठकथा :—जैसे, वेदों के अर्थ स्पष्ट करने के लिए सायणाचार्य ने वृहद् भाष्य लिखा है, वैसे ही आचार्य बुद्धघोष तथा दूसरे आचार्यों ने सारे त्रिपिटक पर सुन्दर भाष्य लिखे हैं जिन्हें 'अट्ठकथा' कहते हैं। भिन्न-भिन्न ग्रन्थों की अट्ठकथा के नाम भिन्न-भिन्न हैं। जैसे:—

सूत्रपिटक—दीघनिकाय—सुमङ्गल विलासिनी

मज्झिम निकाय—पपंच सूदिनी

अंगुत्तर निकाय—मनोरथ पूरणी

संयुक्त निकाय—सारत्यपकासिनी

खुद्दक निकाय के ग्रन्थों पर भी अट्ठकथा लिखी है।

विनय-पिटक—समन्तपासादिका

पातिमोक्ख—कङ्खावितरणी

धम्मसंगणी—अट्ठसालिनी

विभङ्ग—सम्मोह विनोदिनी

घातुकथा—घातुकथाप्पकरण अट्ठकथा

पुगलपञ्चत्ति—पकरण-अट्ठकथा

कथावत्यु—कथावत्युप्पकरण अट्ठकथा

यमक—यमकप्पकरण अट्ठकथा

पट्टान—पट्टानप्पकरण अट्ठकथा

बौद्ध देशों में अट्ठकथा को भी उसी गौरव की दृष्टि से देखते हैं जिससे पालि को। अट्ठकथा की भाषा अत्यन्त सुन्दर तथा सरल है। तत्कालीन भारतीय संस्कृति, राजनीति, समाज आदि ऐतिहासिक बातों की खोज के लिए त्रिपिटक तथा अट्ठकथा दोनों में प्रचुर सामग्री है। हमारे गुरुभाई भिक्षु नागार्जुन ने त्रिपिटक-युग की आर्थिक अवस्था पर एक खोज-पूर्ण लेख महाबोधि सभा, सारनाथ से प्रकाशित होने वाले बौद्ध मासिक पत्र 'धर्मदूत' के ३।८ अंक में लिखा है।

विसुद्धिमग्गो :—यह ग्रन्थ भी आचार्य बुद्धघोष द्वारा लिखा गया है। लंका के स्थविरो ने इनकी परीक्षा लेने के लिए इनको संयुक्त निकाय की दो गाथाएँ

दीं, और जन्हीं पर एक ग्रन्थ लिखने के लिए कहा । वे दो गाथाएँ यह थीं—

प्रश्न—अन्तो जटा बहि जटा,
जटाय जटिता पजा ।
तं तं गोतम पुच्छामि,
को इमं विजटये जटन्ति ?

अर्थात्—भीतर भी जटा है, बाहर भी जटा है, जटा से मनुष्य बेतरह जकड़ा हुआ है । अतः, हे गौतम ! मैं आप से पूछता हूँ—कौन इस जटा को सुलभा सकता है ?

भगवान् का उत्तर—

सीले पतिट्टाय नरो सपञ्जो,
चित्तं पञ्जञ्च भावयं,
आतापी निपको भिक्खु
सो इमं विजटये जटन्ति ॥

अर्थात्—शील पर प्रतिष्ठित हो, अपने चित्त के क्लेशों को तपाने वाला, पण्डित भिक्षु चित्त और प्रज्ञा की भावना करते हुए इस जटा को सुलभा सकता है ।

इन्हीं दो गाथाओं पर आचार्य बुद्धघोष ने 'विसुद्धिमग्गो' लिखा है । ग्रन्थ का विषय योगाभ्यास है । योगाभ्यास की तैयारी से ले कर सिद्धि तक की सारी बातें सुन्दर ढंग से समझाई गई हैं । पातञ्जल योग सूत्र में योग विषयक सिद्धान्त भर दिए हैं; अभ्यास कैसे शुरू करना चाहिए और उसे धीरे-धीरे कैसे बढ़ाना चाहिए यह नहीं बताया गया है । 'विसुद्धिमग्गो' प्रथम तैयारी के दिन से ले कर सिद्धि तक गुरु के ऐसा निर्देश करता जाता है ।

बौद्ध देशों में इस ग्रन्थ का सम्मान उतना ही है जितना त्रिपिटक का ।

मिलिन्द पञ्हो :—

बौद्ध धर्म का अध्ययन करने वालों के मन में जिस प्रकार की शंकायें उठती हैं, कुछ बँसी शंकायें आज से कोई डेढ़ हजार वर्ष पहले ग्रीस (यवन देश) के राजा 'मिलिन्द' के मन में उठी थीं । राजा को अपनी बुद्धि का बड़ा अभिमान था । वह अपने समय के विद्वानों से बहुत चकरा देने वाले प्रश्न किया करता था ।

इस ग्रंथ में महा स्थविर 'नागसेन' ने उस राजा के प्रश्नों के मुंहतोड़ उत्तर दिये हैं। सिंहल, वरमा, श्याम आदि बौद्ध देशों में यह ग्रंथ बुद्ध के अपने उपदेशों की तरह मान्य है।

अन्य ग्रन्थ :—पालि भाषा में जितने ग्रन्थ मिलते हैं, सभी का सीधे, या घुमा फिरा कर बौद्ध धर्म से सम्बन्ध है। लंका के इतिहास पर स्थविर महानाम-कृत 'महावंस' नामक एक सुन्दर ग्रन्थ मिलता है, जो पद्य-मय है। लंका के इतिहास के साथ-साथ इसमें भारतवर्ष के इतिहास का भी वह अंश चला आया है, जो बौद्ध सम्राटों से सम्बन्ध रखता है।

काशी, विद्यापीठ से प्रकाशित होने वाली मासिक पत्रिका 'विद्यापीठ' के १९६३ आश्विन पौष-चैत्र अंक में 'पालि वाङ्मय की अनुक्रमिका' शीर्षक एक सुन्दर लेख हमारे ज्येष्ठ गुरुभाई पूज्य भदन्त आनन्द कौसल्यायन जी ने लिखा है। उसमें उनसे पालि वाङ्मय के ग्रन्थों का सुन्दर परिचय दिया है।

पाँचवाँ खण्ड

व्याकरण

(क)

जिस तरह ऐन्द्र, चान्द्र, पाणिनीय, सारस्वत आदि संस्कृत भाषा के सर्वाङ्ग व्याकरण हैं, वैसे ही कच्चान, मोग्गलान, सद्नीति आदि पालि भाषा के सर्वाङ्ग व्याकरण हैं। संज्ञा, परिभाषा, विधि, नियम, अतिदेश, तथा अधिकार—इन छः प्रकार के सूत्रों से जैसे संस्कृत व्याकरण रचे गये हैं, वैसे ही पालि-व्याकरण भी।

पालि सरल तथा उस समय की बोल-चाल की भाषा होने के कारण, उसके व्याकरण में उतने अधिक सूत्र नहीं हैं जितने संस्कृत व्याकरण में। पालि भाषा के कच्चान व्याकरण में ६७५ सूत्र, मोग्गलान में ८१७ सूत्र, तथा सद्नीति में १३६१ सूत्र हैं।

पालि-व्याकरण का क्षेत्र

पालि भाषा, वैदिक भाषा की तरह, जीवित बोलचाल की भाषा थी। वैदिक भाषा के सभी प्रयोगों को पाणिनि ने अपने व्याकरण के सूत्रों में संगृहीत करने का प्रयत्न किया; किंतु जीवित भाषा होने के कारण इतने अधिक अपवाद निकल आते थे कि सूत्र उनको नियम में न ला सके। अतः, 'बहुल', 'नाम-व्यत्यय', 'क्रिया व्यत्यय' करके छोड़ दिया। ठीक उसी तरह, पालि व्याकरण में भी 'क्वचि', 'बहुल', 'वा', तथा 'विभाषा' से अधिक काम लिया गया है। व्याकरण ही अधिक पढ़ कर कोई यदि पालि-भाषा के सभी प्रयोगों से परिचित होना चाहे तो यह सम्भव नहीं।

'सरो लोपो सरे १.२६—इस सूत्र से पर्व स्वर का लोप होता है; जैसे—

सद्वा + इध = सद् + इध = सद्धिध । ठीक उसके बाद आने वाले सूत्र 'परो ष्वच्चि' १.२७ से पर स्वर का लोप होता है; जैसे:—सो + एव = सो'व ।

अब, कोई प्रश्न कर सकता है कि—किन-किन स्थानों में पूर्व स्वर का, और किन-किन स्थानों में पर स्वर का लोप होता है ? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि इसका ज्ञान साहित्य-अवलोकन से होगा । व्याकरण, भाषा के गठन तथा आकृति भर को बताता है । उसमें प्रवेश करने के लिए, साहित्य का अध्ययन अनिवार्य है ।

व्याकरणकार

ऐसा जिक्र आता है कि भगवान् बुद्ध के प्रवान शिष्य महाकच्चान ने भी एक व्याकरण बनाया था; किंतु वह नहीं मिलता है । बोधिसत्त और सव्वगुणाकर नाम के भी दो प्राचीन व्याकरण थे, जो आजकल उपलब्ध नहीं हैं । आज-कल, कच्चान, मोग्गल्लान, और सद्दनीति—इन्हीं तीन व्याकरणों का अधिक प्रचार है । इन तीनों में अधिक प्राचीन 'कच्चान' व्याकरण है, जो शायद लंका ही में लिखा गया था । यह व्याकरण बड़े सरल ढंग से लिखा गया है ।

पालि व्याकरण के कुछ और ग्रन्थों के नाम ये हैं:—रूपसिद्धि । बालावतार । महानिरुत्ति । चूलनिरुत्ति । निरुत्ति पिटक । सम्बन्ध चिन्ता । सद्दसारत्य-जालिनी । कच्चान भेद । सद्दत्य भेद चिन्ता । कारिका । कारिका-वृत्ति । विभ-त्यत्य । गन्धत्यी । वाचकोपदेस । नयलक्षण विभावनी । निरुत्तिसंगह । सद्द-वृत्ति । कारकपुष्प मञ्जरी । गूलत्यदीपनी । मुखमत्तसार । सद्दविन्दु । सद्दकलिका । सद्दविनिच्छिय इत्यादि ।

मोग्गल्लान

मोग्गल्लान व्याकरण आज से प्रायः ७५० वर्ष पहले, प्रथम पराक्रम बाहु के समय लंका में लिखा गया था । व्याकरण-कर्ता मोग्गल्लान महाथेर अपने समय के संघ-राज थे । वे अनुराधपुर के थूपाराम विहार में रहते थे, जहाँ ही सम्भवतः यह व्याकरण लिखा गया होगा । मोग्गल्लान की गिनती पाणिनि, चान्द्र, कात्यायन आदि महान् वैयाकरणों में है ।

पालि-व्याकरणों में, 'मोग्गल्लान' व्याकरण पूर्णता तथा गम्भीरता में श्रेष्ठ है ।

इस व्याकरण का प्रचार लंका और वर्मा दोनों जगह समान रूप से है। मोगल्लान व्याकरण के इर्द-गिर्द आगे चल कर कई ग्रन्थ लिखे गए—जैसे, पियदस्ती महाथेर-कृत 'पद-साधन'; संघराज श्री सारिपुत्र-कृत 'पदावतार'; संघराज संघरक्खित महाथेर-कृत 'सुसहसिद्धि'; 'सम्बन्ध चिन्ता' और 'सारत्यविलासनी'; संघराज वनरत्न महाथेर-कृत 'पयोगसिद्धि'; संघराज श्री राहुल-कृत 'बुद्धिष्ण-सादनी टीका'; और 'पञ्चिका प्रदीप' इत्यादि।

साधारणतः, वैयाकरण सूत्र ही लिख कर छोड़ देते थे; वाद में कोई दूसरा उन पर वृत्ति लिखा करता था। किन्तु, मोगल्लान महा थेर ने स्वयं सूत्र लिख कर उन पर वृत्ति भी लिखी, और फिर उस वृत्ति पर 'पञ्चिका' (=व्याख्या) भी। इसी से मोगल्लान व्याकरण इतना पुष्ट तथा पूर्ण है।

अभी हाल तक 'मोगल्लान व्याकरण सूत्र-वृत्ति' तो मिलता था, किन्तु 'पञ्चिका' लुप्त थी। हमारे दादा-गुरु आचार्य श्री धम्मराम नायक महाथेर ने १८९६ ई० में 'पञ्चिका प्रदीप' का सम्पादन करते हुए भूमिका में लिखा था, "मोगल्लान व्याकरण के अध्ययन करने में जो विद्यार्थियों का उत्साह इतना बढ़ रहा है उसमें 'पञ्चिका' का खो जाना बड़ा वायक हो रहा है।" सौभाग्य से हमारे गुरु परमपूज्य विद्वद्भर श्री धर्मानन्द नायक महास्थविर को ताल-पत्र पर लिखी 'पञ्चिका' की एक पुरानी पुस्तक लंका के किसी विहार में मिल गई। उन्होंने उसे सम्पादित कर विद्यालंकार परिवेण, लंका से प्रकाशित कराया। बड़े परिश्रम से उनमें इसमें गण-पाठ, ष्वादिपाठ (उणादि पाठ) आदि सुन्दर ढंग से दिया है। पालि-व्याकरण का पाण्डित्य-पूर्ण अध्ययन करने के लिए यह ग्रन्थ परम आवश्यक है।

मोगल्लान व्याकरण में इन विशेषताओं को देख कर ही, मैंने अपनी इस पुस्तक में उसीका अनुसरण किया है। हर एक नियम के साथ, उसका सूत्र दे दिया है, तथा सूत्र की संख्या भी लिख दी है।

मोगल्लान व्याकरण के अन्तिम पृष्ठ पर एक गाथा आती है:—

सुत्त-धातु-गणो-ष्वादि
नामलिङ्गानुसासनं ।
यस्तु तिष्ठति जिह्वग्रे
सो व्याकरणकेसरी ॥

अर्थात्—जिसकी जीभ के अग्र भाग पर सूत्र-पाठ, धातु-पाठ, गण-पाठ,

‘ण्वादि-पाठ’, तथा कोप उपस्थित रहता है वही व्याकरण-केशरी है।

‘सूत्र पाठ’, ‘धातु पाठ’, ‘गण पाठ’, तथा ‘ण्वादि पाठ’ हमने पुस्तक के अन्त में दे दिए हैं।

कोप के लिए, सब से उत्तम ग्रन्थ ‘अभिधानपदीपिका’ है जो बम्बई से नागरी अक्षरों में प्रकाशित हो गया है।

(ख)

अआदयो तितालीस वण्णा १.१ :—पालि में ‘अ’ आदि ४३ वर्ण हैं।

दसावो सरा १.२ :—आदि के १० स्वर हैं

अ आ, इ ई, उ ऊ, एँ (ह्रस्व) ए, ओँ (ह्रस्व) ओ।

द्वे द्वे सवण्णा १.३ :—दो दो स्वर सवण्णं कहे जाते हैं।

पुव्वो रस्तो १.४ :—उनके (=सवण्णों के) पूर्व वर्ण ह्रस्व हैं। जैसे:—
अ, इ, उ, एँ, ओँ।

“संयुक्त अक्षर के पूर्व आने वाले ‘ए’ तथा ‘ओ’ ह्रस्व होते हैं।” भोग्गलान परो दीघो १.५ :—उनके (=सवण्णों के) दूसरे वर्ण दीर्घ होते हैं। जैसे:—

आ, ई, ऊ, ए, ओ।

कादयो व्यञ्जना १.६ :—‘क’ आदि ३३ वर्ण व्यञ्जन हैं। जैसे:—

क ख ग घ ङ

च छ ज झ ञ

ट ठ ड ढ ण

त थ द ध न

प फ ब भ म .

य, र, ल, व, स, ह, ळ, अं।

नवीन संस्कृत ने ‘ळ’ वर्ण को छोड़ दिया।

पञ्च पञ्चका वग्गा १.७ :—पाँच-पाँच के पाँच वर्ण हैं। जैसे:—
कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग।

विन्दु निग्गहीतं १.८ :—‘अं’ को निग्गहीत कहते हैं।

पालि महाव्याकरण

विषय-सूची

वस्तु कथा

पहला खण्ड

अपनी अपनी भाषा में धर्म सीखने की आज्ञा				पृष्ठ
'पालि' नाम कैसे पड़ा ?	पाँच
पालि=पडवित्त	छः
परियाय	सात
पालियाय	नव
पालियाय =पालि	नव
				ग्यारह

दूसरा खण्ड

'पालि' और वैदिक भाषा	तेरह
वैदिक भाषा की स्वतंत्रता	तेरह
'नाम-विभक्तियों' के प्रयोग में स्वच्छन्दता	चौदह
काल तथा लकार की स्वच्छन्दता	पंद्रह
निमित्तार्थक प्रत्यय	सोलह
कृत्य	अट्ठारह
प्रयोगों की विभिन्नता का कारण	अट्ठारह
उच्चारण में परिवर्तन	उन्नीस
व्याकरण की आवश्यकता	बाइस
वैदिक, पालि, संस्कृत	तेइस

तालिका	चौबीस
१ व्यत्यय	पन्चीस
२ नाम	छब्बीस
३ क्रिया	उनतीस
४ कृदन्त	तीस
'वेद' और अशोक-पालि	

तीसरा खण्ड

'पालि' के विकृत रूप	तैंतीस
'पालि' और 'गाथा-संस्कृत'	चींतीस
'पालि' और 'अर्ध-मागधी'	पैंतीस

चौथा खण्ड

साहित्य	उनतालीस
त्रिपिटक	चालीस
नव अङ्ग	इकतालीस
सूत्रों की शैली	बयालीस
सूत्रों की भाषा	तैंतालीस
पेथ्यालं	तैंतालीस
पाँच निकाय	चवालीस, पैंतालीस
विनय—अभिघम्म	छियालीस
त्रिपिटक से अन्य ग्रन्थ	

पाँचवाँ खण्ड

व्याकरण	उनचास
'पालि' व्याकरण का क्षेत्र	पचास
व्याकरण-कार	पचास
मोगल्लान	

पहला काण्ड

१ पाठ

नाम-प्रकरण

(पहला भाग—साधारण शब्द)

			पृष्ठ
अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द—'बुद्ध'	२
अकारान्त नपुंसक लिङ्ग शब्द—'फल'	४
इकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द—'मुनि'	५
इकारान्त नपुं० लिङ्ग शब्द—'अट्टि'	६
उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द—'भिक्षु'	७
उकारान्त नपुंसक लिङ्ग शब्द—'आयु'	८
विशेषण	८

२ पाठ

नाम-प्रकरण

(दूसरा भाग—साधारण शब्द)

आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द—'लता'	१३
इकारान्त	१४
ईकारान्त	१५
उकारान्त	१६
ऊकारान्त	१७

३ पाठ

सर्वनाम-प्रकरण

(पहला भाग—साधारण सर्वनाम)

'सर्व' शब्द—पुल्लिङ्ग	२०
-----------------------	----	----	----

				पृष्ठ
				२१
नपुंसक लिङ्ग	२१
स्त्री लिङ्ग	२२
'कि' शब्द—पुल्लिङ्ग	२३
नपुंसक लिङ्ग	२३
स्त्री लिङ्ग	२४
'त-त्य' शब्द—पुल्लिङ्ग	२५
नपुंसक लिङ्ग	२५
स्त्री लिङ्ग	

४ पाठ

विभक्ति-प्रकरण

(पहला भाग—साधारण नियम)

				२६
'पठमा' विभक्ति	२६
'द्वितीया' विभक्ति	३०
'तृतीया' विभक्ति	३०
'चतुर्थी' विभक्ति	३१
'पञ्चमी' विभक्ति	३१
'छट्ठी' विभक्ति	३२
'सप्तमी' विभक्ति	

५ पाठ

अव्यय-प्रकरण

(पहला भाग—साधारण प्रयोग)

				३६
उपसर्ग	३७
निमित्तार्थक	३७
पूर्वकालिक	३७
तद्धितान्त	३७
रुढ़ि	

दूसरा काण्ड

१ पाठ

क्रिया-प्रकरण

(पहला भाग—वर्तमान काल)

				पृष्ठ
गण	४५
'पच' धातु—परस्त्त पद	४६
अत्तनो पद	४७
वर्तमान काल की धातु-रूप-तालिका	५०-५१

२ पाठ

सर्वनाम-प्रकरण

(दूसरा भाग)

'अम्ह' शब्द	५४
'तुम्ह' शब्द	५६
'एत' शब्द—पुल्लिङ्ग	५७
नपुं० लिङ्ग; स्त्री लिङ्ग	५८
'इम' शब्द—पुल्लिङ्ग	५८
नपुं० लिङ्ग; स्त्री लिङ्ग	५९
'अमु' शब्द—पुल्लिङ्ग	६०
नपुं० लिङ्ग; स्त्री लिङ्ग	६१

३ पाठ

क्रिया-प्रकरण

(दूसरा भाग—भविष्यत्काल)

'पच' धातु—परस्त्त पद	६३
अत्तनो पद	६४

भविष्यत्काल में कुछ विशेष क्रियाओं के रूप	६४
भविष्यत्काल की धातु-रूप-तालिका	६७

४ पाठ

नाम-प्रकरण

(तीसरा भाग—विशेष शब्द)

ईकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द—'दण्डी'	७०
,, नपुं० लिङ्ग शब्द—'सुखकारी'	७१
ऊकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द—'सव्वञ्जू'	७२
,, नपुं० लिङ्ग शब्द—'सयम्भू'	७३
ओकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द—'गो'	७३
,, नपुं० लिङ्ग शब्द—'चित्तगो'	७४
शेष अनियमित पुल्लिङ्ग शब्द		
'अत्त'	७५
'ब्रह्म'	७५
'राज'	७६
'पुम'	७८
'सा'	७८
'युव'	७९
'वन्तु-मन्तु' प्रत्ययान्त शब्द—'गुणवन्तु'	८०

५ पाठ

क्रिया-प्रकरण

(तीसरा भाग—परिसमाप्त्यर्थक भूत)

'पच' धातु—परस्सपद	८४
अत्तनोपद	८५
कुछ विशेष धातुओं के रूप	८६
परिसमाप्त्यर्थक भूतकाल की धातु-रूप-तालिका	८८-८९

६ पाठ

नाम-प्रकरण

(चौथा भाग—शेष शब्द)

			पृष्ठ
'न्त-मान' प्रत्ययान्त शब्द	६२
'गच्छन्त' शब्द—पुल्लिङ्ग; नपुं० लिङ्ग	६३
'तु' प्रत्ययान्त शब्द	६४
'दातु' शब्द—पुल्लिङ्ग	६५
'पितु' शब्द—पुल्लिङ्ग	६६
'मातु' शब्द—स्त्रीलिङ्ग	६७
'सत्यु' शब्द—पुल्लिङ्ग	६८
'सत्त' शब्द—पुल्लिङ्ग	६८
'मन' शब्द—नपुंसक लिङ्ग	६९
'कम्म', 'पद', 'कोष', 'दिव' शब्द	१००
'एकच्च', 'अम्मा', 'समा', 'अग्नि', 'इसि', 'दण्डपाणि' शब्द	१०१
'अरियवृत्ति', 'नदी', 'हेतु', 'अम्बु', 'जन्तु' शब्द	१०२

७ पाठ

अव्यय-प्रकरण

(दूसरा भाग—उपसर्ग)

'प' उपसर्ग	१०५
'परा-नि-नी' उपसर्ग	१०६
'उ-दु-त्त' उपसर्ग	१०७
'वि' उपसर्ग	१०८
'अव-अनु' उपसर्ग	१०९
'परि-अभि-अधि' उपसर्ग	११०
'पति' उपसर्ग	१११
'सु-आ-अति-अचि-अप' उपसर्ग	११२
'उप' उपसर्ग	११३

तीसरा काण्ड

१ पाठ

क्रिया-प्रकरण

(चौथा भाग—गण विचार)

	पृष्ठ
१—भ्वादि गण	११५
'भवति'	११५
'घम्मति', 'वज्जति', 'दज्जति', 'गच्छति', 'यच्छति' 'इच्छति', 'अच्छति', 'दिच्छति', 'गच्छरे', 'गमिस्सरे', 'सन्ति', 'सन्तु', 'सिया', 'सन्तो', 'समानो'	११६
'तिट्ठति', 'पिवति', 'डहति', 'अदेन्ति', 'जीयति', 'मीयति', 'जीरति', 'निसीदति', 'उट्ठहति'	११७
'समादियति', 'निक्खमति', 'पस्सति'	११८
२—रुधादि गण	११८
रुधादि गण के कुछ द्रष्टव्य घातु—घेप्पति, गण्हाति, ..	११९
३—दिवादि गण	११९
४—तुदादि गण	१२०
५—ज्यादि गण	१२१
जानाति, नायति	१२१
घुनाति, किणाति	१२२
६—क्यादि गण	१२२
७—स्वादि गण	१२२
सक्कुणोति	१२३
८—तनादि गण	१२३
तनुति, तनुते, कुब्बति, कथिरति, करोति	१२३
कुम्मि, कुम्म, संखरियति, पुरेक्खति	१२४
९—चुरादि गण	१२४

२ पाठ

। क्रिया-प्रकरण

(पांचवां भाग—विधिलिङ्ग, अनुज्ञा)

			पृष्ठ
विधिलिङ्ग—'पच' धातु—परस्सपद	१२८
अत्तनोपद	१२९
'विधि' में कुछ विशेष धातु के रूप	१२९
अनुज्ञा—'पच' धातु—परस्सपद	१३०
अत्तनोपद	१३१
'विधिलिङ्ग' की 'धातु-रूप'-तालिका	१३२
'अनुज्ञा' की 'धातु-रूप'-तालिका	१३३

३ पाठ

विभक्ति-प्रकरण

(दूसरा भाग—शेष नियम)

'पठमा' विभक्ति	१३५
'द्वितीया' विभक्ति	१३५
'तृतीया' विभक्ति	१३७
'पञ्चमी' विभक्ति	१३७
'छद्म' विभक्ति	१३८
'सप्तमी' विभक्ति	१३८

४ पाठ

कृदन्त-प्रकरण

(पहला भाग—निष्ठा)

'क्तवन्तु', 'क्तावी', 'क्त'	१४२
कुछ विशेष धातु के रूप	१४४

५ पाठ

कृदन्त-प्रकरण

(दूसरा भाग—तव्व, तुं, त्वा)

	पृष्ठ
	१५०
'तव्व', 'अनीय', 'घ्यण्'	१५१
कुछ विशेष धातु के रूप	१५२
'तु', 'ताये', 'तवे'	१५३
'तु' प्रत्यय के भिन्न भिन्न प्रयोग-स्थान	१५४
'तून', 'क्त्वान', 'क्त्वा', 'प्य'	

६ पाठ

विशेषण-प्रकरण

	१५७
'गुण-वाचक' विशेषण	१५८
'संख्या-वाचक' विशेषण	
'कृदन्त' विशेषण	१६०
'न्त', 'मान', 'क्त', 'क्तवन्तु', 'तावी'	१६१
'तव्व', 'अनीय', 'य'	
'तद्धितान्त' विशेषण	१६१
'रति', 'रीवतक', 'रित्तक', 'क्तर', 'क्तम', 'ण्य्य'	१६२
'णिक', 'तन', 'इम'	

७ पाठ

सर्वनाम-प्रकरण

(तीसरा भाग—संख्या-वाचक)

	१६४
'एक' शब्द—पुल्लिङ्ग	१६५
नपुं० लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग	१६५
'द्वि' शब्द	१६६
'उभ' शब्द	

	पृष्ठ
'ति' शब्द—तीनों लिङ्ग	१६६
'चतु' शब्द—	१६७
'पञ्च'—'अट्टारस'	१६८
'पञ्च' शब्द	१६९
'एकूनवीसति' शब्द	१६९
'वीसति'—'अट्टनवुति'	१७०-१७२
'एकून सतं' शब्द	१७२
'ड' प्रत्यय	१७३
'सौ' से ऊपर की संख्यायें	१७३
'कति' शब्द	१७४
पूरणवाची शब्द	१७५

चौथा काण्ड

१ पाठ

वाच्य-प्रकरण

कर्तृवाच्य, भाववाच्य	१७८
कर्मवाच्य	१७९
निष्ठा	
'क्तवन्तु', 'क्तावी' (कर्तृवाच्य)	१७९
'क्त' ('कर्तृ', 'कर्म', 'भाव'वाच्य)	१८०
'क्य' प्रत्यय	१८०

२ पाठ

क्रिया-प्रकरण

(छठा भाग—अनद्यतन, परोक्ष, हेतु० भूत)

अनद्यतन भूत	
'पच' धातु—परस्सपद	१८४

				पृष्ठ
अत्तनोपद	१८५
'अनद्यतन भूत' में कुछ विशेष धातु के रूप	१८५
परोक्ष भूत				
'पच' धातु—परस्सपद	१८५
अत्तनोपद	१८६
'परोक्ष भूत' में कुछ विशेष धातु के रूप	१८७
हेतुहेतुमद्भूत				
परस्सपद, अत्तनोपद	१८८
हेतु० भूत में कुछ विशेष धातु के रूप	१८८

३ पाठ

'वाला'-वाचक प्रत्यय

(क)

(कृदन्त-प्रकरण—तीसरा भाग)

'लु', 'णक' प्रत्यय	१९१
'आवी', 'अक', 'णन', 'कू' प्रत्यय	१९२
'अण', 'रु', 'णी' प्रत्यय	१९३

(ख)

(तद्धित-प्रकरण—पहला भाग)

'मन्तु', 'वन्तु', 'इक', 'ई' प्रत्यय	१९४
'स्ती', 'र', 'भ' प्रत्यय	१९५
'अ', 'ण', 'आलु', 'इल' प्रत्यय	१९६
'व', 'वी', 'आमी', 'उवामी', 'ण', 'न' प्रत्यय	१९७
'सो', 'इम', 'इय' प्रत्यय	१९८

४ पाठ

भाववाचक प्रत्यय

(क)

(कृदन्त-प्रकरण—चौथा भाग)

				पृष्ठ
'अ', 'घण' प्रत्यय	२००
'इ', 'अयु', 'क्वि', 'अ', 'ण', 'क्ति', 'क', 'यक्', 'य' प्रत्यय	२०१
'अन' प्रत्यय	२०२
'नि', 'इ', 'कि', 'ति' प्रत्यय	२०३

(ख)

(तद्धित-प्रकरण—दूसरा भाग)

'त्त', 'ता' प्रत्यय	२०३
'त्तन', 'ण्य' प्रत्यय	२०४
'ण्य', 'ण', 'इय', 'णिय' प्रत्यय	२०५
'व्य', 'नण्', 'इम' प्रत्यय	२०६

५ पाठ

क्रिया-प्रकरण

(सातवां भाग—प्रेरणार्थक)

'णि', 'णापि', 'आपि' प्रत्यय	२०६
न्वादि गण	२०६
रुवादि, दिवादि, तुदादि, ज्यादि गण	२११

(ख)

(विभक्ति-प्रकरण—तीसरा भाग)

प्रेरणार्थक नियम	२१२
--------------------------	----	----	----	-----

६ पाठ

अव्यय-प्रकरण

(तीसरा भाग—अव्यय)

(तद्धित प्रकरण—तीसरा भाग)

	पृष्ठ
'तो' प्रत्यय	२१५
'त्र', 'त्य', 'धि' प्रत्यय	२१६
'हि', 'हं', 'दा' प्रत्यय	२१७
'धा', 'धा' प्रत्यय	२१८
'एधा', 'ज्भं', 'क्खत्तुं' प्रत्यय	२१९
'सो', 'चो' प्रत्यय	२२०

पाँचवाँ काण्ड

१ पाठ

सन्धि-प्रकरण

स्वर सन्धि	२२२
व्यञ्जन सन्धि	२२५
निगृहीत सन्धि	२२६

२ पाठ

क्रिया-प्रकरण

(आठवाँ भाग—सन्त)

'ख', 'स', 'छ' प्रत्यय	२३२
द्वित्व करने के नियम	२३३

(१५)

३ पाठ

क्रिया-प्रकरण

(नवां भाग—नाम घातु)

	पृष्ठ
'ईय' प्रत्यय	२३५
'आय' प्रत्यय	२३६
'अस्स' प्रत्यय	२३६
'इ' प्रत्यय	२३७
'आपि' प्रत्यय	२३७

४ पाठ

स्त्री-प्रत्यय

'आ' प्रत्यय	२३६
'ङी' प्रत्यय	२४०
'इनी' प्रत्यय	२४०
'नी' प्रत्यय	२४१
'आनी', 'ऊ', 'ति', 'रिरिय' प्रत्यय	२४२

छठा काण्ड

१ पाठ

(क)

तद्धित-प्रकरण

(चौथा भाग—शेष प्रत्यय)

प्रथमान्त शब्दों से परे आने वाले प्रत्यय	
'ण' प्रत्यय	२४४
'णिक', 'क' प्रत्यय	२४५

	पृष्ठ
'त्तक', 'आवन्तु' प्रत्यय	२४६
'रति', 'रीव', 'रीवतक', 'रित्तक', 'इत', 'मत्त', 'तग्घो' प्रत्यय..	२४७
'ण', 'अय', 'क', 'आकी', 'रतर', 'रतम', 'इस्सिक', 'इय', 'इट्ट'..	२४८
द्वितीयान्त शब्दों से परे आने वाले प्रत्यय	
'ण', 'क', 'णिक' प्रत्यय	२४९
'णिक', 'ल्ल', 'ण्य्य' प्रत्यय	२५०
तृतीयान्त शब्दों से परे आने वाले प्रत्यय	
'ण' प्रत्यय	२५१
'ल', 'इ', 'इम' प्रत्यय	२५२
चतुर्थ्यन्त शब्दों से परे आने वाला प्रत्यय	
'णिक' प्रत्यय	२५३
पञ्चम्यन्त शब्दों से परे आने वाला प्रत्यय	
'णिक' प्रत्यय	२५३

२ पाठ

(ख)

तद्धित-प्रकरण

षष्ठ्यन्त शब्दों से परे आने वाले प्रत्यय	
'ण', 'णान', 'णायन' 'ण्य्य' 'णेर' प्रत्यय	२५४
'ण्य' प्रत्यय	२५५
'णि', 'ञ्जो', 'य', 'इय', 'स्स', 'सण' प्रत्यय	२५६
'ण', 'ण्य', 'णिक' प्रत्यय	२५७
'ण', 'य', 'रेय्यण', 'छ' प्रत्यय	२५८
'अमह', 'रेय्यण', 'तर', 'ण', 'णिक', 'ण्य्य', 'मय', 'स्सण' प्रत्यय	२५९
'कण्ण', 'णिक', 'ता', 'स्स', 'जातिय' प्रत्यय	२६०
सप्तम्यन्त शब्दों से परे आने वाले प्रत्यय	
'ण', 'तन', 'अच्च' प्रत्यय	२६१

'इम', 'कण', 'जेव्य', 'जेव्यक', 'य', 'इय', 'णिक' प्रत्यय	..	२६२
'प्य', 'निय', 'ञ्ज', 'इक', 'णेव्य', अन्य प्रत्यय	..	२६३

३ पाठ

समास-प्रकरण

अव्ययीभाव (असंख्य)	..	२६७
वहुव्रीहि (अञ्जल्य)	..	२६९
वहुव्रीहि समास के कुछ विशेष उदाहरण	..	२७०
तत्पुरुष (अनादि)	..	२७२
तत्पुरुष समास के कुछ विशेष उदाहरण	..	२७३
कर्मधारय (एकाधिकरण)	..	२७४
कर्मधारय समास के कुछ विशेष उदाहरण	..	२७५
क्रियार्थ समास	..	२७६
द्वन्द (क) समाहार	..	२७८
(ख) समाहार—इतरेतर	..	२७९
(ग) इतरेतर	..	२८०

४ पाठ

समासान्त-प्रत्यय

'अ' प्रत्यय	..	२८४
निपात	..	२८५
'त्रि' प्रत्यय	..	२८५
'क' प्रत्यय	..	२८६
'ण्वदि' वृत्ति (उणादि)	..	२८७
पहला परिशिष्ट—सूत्र-पाठ	..	३३७
दूसरा परिशिष्ट—धातु-पाठ	..	३६७
तीसरा परिशिष्ट—गण-पाठ	..	४१५

	पृष्ठ
चौथा परिशिष्ट—समास, स्त्री प्रत्यय, समासान्त प्रत्यय ..	४३१
पाँचवाँ परिशिष्ट—तद्धित	४३६
छठा परिशिष्ट—कृदन्त	४४७
सातवाँ परिशिष्ट—सूत्र-सूची	४५७
आठवाँ परिशिष्ट—ण्वादि वृत्ति में सिद्ध किए गए शब्दों की अनुक्रमणिका	४७३
नवाँ परिशिष्ट—उदाहृत पदों की अनुक्रमणिका ..	५११
अभ्यासों के लिए संकेत	५६७

पालि महाव्याकरण

पहला काण्ड

पहला पाठ

नाम-प्रकरण

(पहला भाग—साधारण शब्द)

§ १. जैसे, हिन्दी में कारक प्रकट करने के लिए, शब्द के आगे 'ने', 'को', 'से', 'के लिए' इत्यादि, कारक के चिन्ह व्यवहृत होते हैं, उसी तरह, पालि में—कारक तथा वचन प्रकट करने के लिए—शब्द से परे 'सिं', 'यो', 'अं' इत्यादि विभक्तियाँ लगती हैं। विभक्तियों के लगने से शब्द के जो रूप बनते हैं, उन्हें 'पद' कहते हैं।

साधारणतः, 'पठमा' विभक्ति कर्ता में, 'दुतिया' कर्म में, 'ततिया' करण में, 'चतुर्थी' सम्प्रदान में, 'पञ्चमी' अपादान में, 'छट्ठी' सम्बन्ध में, 'सप्तमी' अधिकरण में, तथा 'आलपन' सम्बोधन में प्रयुक्त होती हैं।

विभक्तियों के लगने से शब्द के रूप निम्न प्रकार होते हैं:—

§२. अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द^१

बुद्ध

	एक वचन	अनेक वचन
पठमा	बुद्धो ^२ (बुद्धे ^१)	बुद्धा ^३
दु त्तिया	बुद्धं	बुद्धे ^४
त त्तिया	बुद्धेन ^५	बुद्धेहि, ^६ बुद्धेभि ^७
च तुत्थी	बुद्धाय, ^८ बुद्धस्स ^९	बुद्धानं ^{१०}
पञ्चमी	बुद्धा, ^{११} बुद्धम्हा, ^{१२} बुद्धस्मा	बुद्धेहि, बुद्धेभि
छट्ठी	बुद्धस्स	बुद्धानं
सत्तमी	बुद्धे ^{१३} बुद्धन्हि, ^{१४} बुद्धस्मि	बुद्धेसु ^{१५}
आलपन	बुद्ध, ^{१६} बुद्धा ^{१७}	बुद्धा

१. द्वे द्वे काने केसु नामस्मा सियो अं यो नाहि सनं स्माहि सनं स्मि सु २.१—नामसे परे, ये विभक्तियाँ होती हैं। जैसे :—

	एक वचन	अनेक वचन
पठमा } आलपन }	सि (ग)	यो
दु त्तिया	अं	यो
त त्तिया	ना	हि
च तुत्थी	स	नं
पञ्चमी	स्मा	हि
छट्ठी	स	नं
सत्तमी	स्मि	सु

२. सि स्तो २.१११—अकारान्त पुल्लिङ्ग नाम से परे, 'सि' विभक्ति का 'ओ' आदेश हो जाता है। जैसे:—बुद्ध + सि = बुद्ध + ओ = बुद्धो।

३. क्वचे वा २.११२—अकारान्त पुल्लिङ्ग नाम से परे, 'सि' विभक्ति का कहीं कहीं विकल्पसे 'ए' आदेश हो जाता है। जैसे:—
“वनप्पगुम्मे यथा फुस्सितग्गे” ('खुद्दक-पाठ', 'रतन' सूत्र)।

४. अतो योनं टाटे २.४३—अकारान्त नाम से परे, पठमा की 'यो' विभक्ति का 'टा' (= 'आ'), तथा द्रुतिया की 'यो' विभक्ति का 'टे' (= 'ए') आदेश हो जाता है। जैसे:—पठमा:—बुद्ध+यो=बुद्ध+आ=बुद्धा। द्रुतिया:—बुद्ध+यो=बुद्ध+ए=बुद्धे।

५. अतेन २.११०—अकारान्त नाम से परे, 'ना' विभक्ति का 'एन' आदेश हो जाता है। जैसे:—बुद्ध+ना=बुद्ध+एन=बुद्धेन।

६. सु हि स्व स्ते २.१००—'सु' तथा 'हि' विभक्तियों के आने से, नाम के अन्त्य 'अ' का 'ए' हो जाता है। जैसे:—बुद्ध+सु=बुद्धेसु। बुद्ध+हि=बुद्धेहि।

७. स्मा हि स्मिन्नं म्हा भि म्हि २.६६—नाम से परे, 'स्मा', 'हि', तथा 'स्मि' विभक्तियों का, विकल्प से क्रमशः 'म्हा', 'भि', तथा 'म्हि' आदेश हो जाता है। जैसे:—बुद्धम्हा=बुद्धस्मा। बुद्धेहि=बुद्धेभि। बुद्धम्हि=बुद्धस्मि।

८. स स्ताय चतु स्थिया २.४६—'चतुर्थी' में, अकारान्त नाम से परे, 'स' विभक्ति का विकल्प से 'आय' आदेश हो जाता है। जैसे:—बुद्ध+स=बुद्ध+आय=बुद्धाय; बुद्धस्त।

९. सुञ् स स्त २.५३—नाम से परे, 'स' विभक्ति का 'स्स' आदेश हो जाता है। जैसे:—बुद्ध+स=बुद्धस्स।

१०. सुनं हि सु २.६१—'सु', 'नं' तथा 'हि' विभक्तियों के आने से, नाम के अन्त्य स्वर का कहीं कहीं दीर्घ होता है। जैसे:—मुनीसु। मुनीनं; बुद्धानं। अग्गीहि।

११. स्मा स्मिन्नं २.४५—अकारान्त नाम से परे, 'स्मा' तथा 'स्मि' विभक्तियों का विकल्प से क्रमशः 'टा' (= 'आ') तथा 'टे' (= 'ए') आदेश हो जाता है। जैसे:—बुद्ध+स्मा=बुद्ध+आ=बुद्धा; बुद्धस्मा। बुद्ध+स्मि=बुद्ध+ए=बुद्धे; बुद्धास्मि।

१२. ग सीनं २.११६—यदि और कोई दूसरी विधि न की गई हो, तो 'ग' तथा 'सि' विभक्तियों का लोप होता है। जैसे:—

बुद्ध+सि (=ग) =बुद्ध ! दण्डी+सि =दण्डी।

१३. अयूनं वा दोघो २.६१—तीनों लिङ्गों में, अकारान्त, इकारान्त, तथा उकारान्त नाम से परे, 'ग' (=सि) विभक्ति आने पर, नामका अन्त्य स्वर विकल्प से दीर्घ हो जाता है। जैसे:—बुद्ध+ग=बुद्धा; बुद्ध ! हे मुनी; मुनि ! हे भिक्खु; भिक्खु !

शब्दावली:—सुर, असुर, नर, उरग, नाग, यक्ख (=यक्ष), गन्धर्व (=गन्धर्व), किन्नर, मनुस्स, पिसाच्च, पेत, मातङ्ग (=हाथी), तुरङ्ग, वराह, सीह (=सिंह), व्यग्घ (=वाघ), अच्छ (=भालू), कच्छप, सोन (=कुत्ता), आलोक, लोक, निलय, चाग, (=त्याग), योग, वायाम (=व्यायाम), गांम (=गाँव), निगम (=कस्वा), धम्म (=धर्म), संघ, ओघ (=वाढ़), पटिघ (=द्वेष), सारम्म (=भगड़ा), थम्म (=स्तम्भ), पमाद (=प्रमाद), मक्ख (=कजूसी), रक्ख (=वृक्ष), इत्यादि अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द के रूप 'वुद्ध' शब्द के समान होते हैं।

§ ३. अकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द—फल

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठ मा	फल ^{१४}	फला, ^{१५} फलानि ^{१६}
दु ति या	फलं	फले, ^{१५} फलानि ^{१६}
आ ल प न	फल, फला	फलानि

शेष रूप 'वुद्ध' शब्द के समान

शब्दावली—चित्त, पुञ्ज (=पुण्य), पाप, रूप, सोत (=कान), घाण (=घ्राण), सुख, दुक्ख, कारण, दान, सील, धन, भान (=ध्यान), लोचन, मूल,

१४. अं नपुंसके २.११३—नपुंसक लिङ्ग अकारान्त नाम से परे, 'सि' विभक्ति का 'अं' आदेश हो जाता है। जैसे—फल + सि = फलं।

१५. नी नं वा २.४४—नपुंसक लिङ्ग अकारान्त नाम से परे, विकल्प से 'पठमा' के 'नि' का 'टा' (= 'आ'), तथा 'दुतिया' के 'नि' का 'टे' (= 'ए') आदेश हो जाता है। जैसे:—फल + नि = फल + आ = फला। फल + नि = फल + ए = फले।

१६. यो नं नि २.११४—नपुंसक लिङ्ग अकारान्त नाम से परे, 'यो' विभक्ति का 'नि' आदेश हो जाता है। जैसे:—फल + यो = फलानि।

यो लोप नि सु दी घो २.६०—'यो' विभक्ति के लोप होने, अथवा 'नि' परे होने से, नाम का अन्त्य स्वर दीर्घ हो जाता है। जैसे:—मुनि + यो = मुनी। फलानि। अट्ठीनि। आयूनि।

कुल, बल, जाल, मङ्गल, लिङ्ग, मुख, अङ्ग, जल, पुलिन, घञ्ज (=धान), हिरञ्ज (=सोना), अमृत (=अमृत), पटुम (=कमल), पण्ण (=पत्ता), सुसान (=स्मशान), दन, आयुष (=अस्त्रशस्त्र), हृदय (=हृदय), चीवर (=कापाय वस्त्र), वत्थ (=वस्त्र), इन्द्रिय, नयन, वदन, यान (=रथ), ओदन (=भात), सोपान (=सीढ़ी), पाण (=प्राण), भवन, भुवन, तुण्ड (=चोंच), अण्ड, पीठ (=पीढ़ा), मरण, ज्ञाण (=ज्ञान), आरम्भण (=आलम्बन), अरञ्ज (=जंगल), नगर, तगर (=एक सुगन्ध), द्यत (=छाता), छिद् (=छेद), उदक (=पानी), इत्यादि अकारान्त नपुंसक लिङ्ग शब्द के रूप 'फल' शब्द के समान होते हैं।

§ ४. इकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द

मुनि (=साधु)

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठमा	मुनि	मुनी, ^१ मुनयो ^२
दु तिया	मुनि	मुनी, मुनयो
त तिया	मुनिना	मुनीहि, मुनीभि
च तु र्थी	मुनिनो, ^३ मुनिस्त	मुनीनं
पञ्चमी	मुनिना, ^४ मुनिम्हा, मुनिस्मा	मुनीहि, ^५ मुनीभि
छट्ठी	मुनिनो, मुनिस्त	मुनीनं ^६
सप्तमी	मुनिम्हि, मुनिस्मि	मुनिचु, मुनीचु ^७
आलपन	मुनि, मुनी	मुनी, मुनयो

१७. लोपो २.११६—'ङ' (= 'इ', 'ई') तथा 'ल' (= 'उ', 'ऊ') से परे, 'यो' विभक्ति का लोप होजाता है। जैसे:—मुनि + यो = मुनी। अट्ठी। दण्डी। आयु।

१८. योसु भिस्त पुमे २.६५—'यो' विभक्ति आने से, पुल्लिङ्ग शब्द के अन्त्य 'इ' का विकल्प से 'अ' हो जाता है। जैसे:—मुनि + यो = मुनयो।

१९. भला सस्स नो २.८३—'ङ' तथा 'ल' से परे, 'स' विभक्ति का विकल्प से 'नो' आदेश हो जाता है। जैसे:—मुनिनो। दण्डिनो। भिक्खुनो। सयम्भुनो।

शब्दावली—पाणि (=प्राणी), गण्ठ (=गाँठ), मुट्ठ (=मुक्का), कुच्छ (=पेट), सालि (=एक चावल), वीहि (=धान), व्याधि (=रोग), सन्धि (=जोड़), रासि (=राशि), दीपि (=वाघ), इसि (=ऋषि), मणि, धनि, गिरि, रवि, कवि, कपि, असि, मसि (=राख), निधि, विधि, अहि (=साँप), किमि (=कीड़ा), पति, हरि, अरि, कलि (=काला), बलि, जल-निधि, गहपति (=गृहपति), वरमति (=श्रेष्ठ बुद्धि वाला), अधिपति, इत्यादि इकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द के रूप 'मुनि' शब्द के समान होते हैं।

§ ५. इकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द

अट्ठि (=हड्डी)

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठ मा	अट्ठि	अट्ठीनि, ^{२१} अट्ठी ^{२२}
दु ति या	अट्ठि	अट्ठीनि, ^{२२} अट्ठी
आ ल प न	अट्ठि	अट्ठीनि, अट्ठी

शेष रूप 'मुनि' शब्द के समान

२०. ना स्मा स्स २.८४—'म्' (= 'इ', 'ई') तथा 'ल' (= 'उ', 'ऊ') से परे, 'स्मा' विभक्ति का विकल्प से 'ना' आदेश हो जाता है। जैसे:—मुनि + स्मा = मुनिना। दण्डिना, दण्डिस्मा। भिक्खुना, भिक्खुस्मा। सयम्भुना, सयम्भुस्मा।

२१. सु नं हि सु २.६१—'सु', 'नं' तथा 'हि' विभक्तियों के आने से, नाम के अन्त्य स्वर का दीर्घ हो जाता है। जैसे:—मुनीसु। मुनीनं। मुनीहि।

२२. भू ला वा २.११५—नपुंसक लिङ्गमें, 'म्' (= 'इ', 'ई') तथा 'ल' (= 'उ', 'ऊ') से परे, 'यो' विभक्ति का विकल्प से 'नि' आदेश हो जाता है। जैसे:—अट्ठि + यो = अट्ठीनि; अट्ठी। आयूनि; आयू।

लो पो २.११६—'म्' (= 'इ', 'ई') तथा 'ल' (= 'उ', 'ऊ') से परे, 'यो' विभक्ति का विकल्प से लोप हो जाता है। जैसे:—अट्ठी, दण्डी, आयू, अग्गी, भिक्खू।

शब्दावली—इधि (=दही), वारि (=पानी), अक्खि (=आंख), अच्चि (=आंच) आदि इकारान्त नपुंसक लिङ्ग शब्द के रूप 'अट्ठ' शब्द के समान होते हैं।

§ ६. उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द

भिकखु (=भिन्नु)

	एक वचन	अनेक वचन
पठमा	भिकखु	भिकखू, भिकखवो ^{२३} *
द्वितीया	भिकखुं	भिकखू, भिकखवो
तृतीया	भिकखुना	भिकखूहि, भिकखूभि
चतुर्थी	भिकखुनो, भिकखुस्त	भिकखूनं
पञ्चमी	भिकखुना, भिकखुस्मा, भिकखुम्हा	भिकखूहि, भिकखूभि
छट्ठी	भिकखुनो, भिकखुस्त	भिकखूनं
सप्तमी	भिकखुंस्मि, भिकखुंम्हि	भिकखुसु, भिकखुसु
आलपन	भिकखु	भिकखू, भिकखवे, भिकखवो ^{२४} *

शब्दावली—नेदु (=पुल), केतु (=पताका), भानु (=सूर्य), राहु, उच्छु (=ईश), वेनु (=वांस), मच्चु (=मार, मृत्यु), सिन्धु (=समुद्र), मधु, मेरु (=पहाड़), तत्तु (=दात्रु), कारु (=विश्वकर्मा), हेतु, जन्तु, पट्ट, आदि उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द के रूप 'भिकखु' शब्द के समान होते हैं।

२३. ला योनं वो पुमे २.८५—पुल्लिङ्ग 'ल' (=‘उ’, ‘ऊ’) से परे, ‘यो’ विभक्ति का विकल्प से ‘वो’ आदेश होता है। जैसे:—भिकखु + यो = भिकखवो, भिकखू। सयम्भूवो, सयम्भू।

२४. पु मालपने वेवो २.९८—यदि आलपन में ‘यो’ विभक्ति आवे, तो पुल्लिङ्ग उकारान्त शब्द से परे, उसका ‘वे’ तथा ‘वो’ आदेश होता है। जैसे:—हे भिकखवे, भिकखवो !

* वेवो लु लुस्त २.९६—पुल्लिङ्ग उकारान्त शब्द से परे, यदि ‘वे’ या ‘वो’ आवे, तो उसके ‘उ’ का ‘अ’ हो जाता है। जैसे:—भिकखवे, भिकखवो।

§ ७. उकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द

आयु

	ए क व च न	अ ने क वृ च न
प ठ मा	आयु	आयूनि, आयू
दु ति या	आयुं	आयूनि, आयू
आ ल प न	आयु	आयूनि, आयू

शेष रूप 'भिक्षु' शब्द के समान

शब्दावली—चक्खु (=आँख), वसु (=घन), धनु (=तीर), दाह (=लकड़ी), तिपु (=सीसा), मधु, वत्थु (=कहानी), जतु (=लाह), अम्बु (=पानी), अस्सु (=आँसू) आदि उकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द के रूप 'आयु' शब्द के समान होते हैं।

§ ८. विशेषण

विशेष्यमें जो लिङ्ग, विभक्ति, और वचन होते हैं, वही लिङ्ग, विभक्ति, और वचन उसके विशेषणमें भी होते हैं। जैसे :—

लिङ्ग में

पु ल्लि ङ्ग	इ तिथि लि ङ्ग	न पुं स क लि ङ्ग
सुन्दरो बालको	सुन्दरी बालिका	सुन्दरं फलं

विभक्ति में

प ठ मा	सुन्दरो बालको
दु ति या	सुन्दरं बालकं
त ति या	सुन्दरेन बालकेन
च तु त्थी	सुन्दराय बालकाय इत्यादि

वचन में

	ए क व च न	अ ने क व च न
प ठ मा	सुन्दरो बालको	सुन्दरा बालका
दु ति या	सुन्दरं बालकं	सुन्दरे बालके इत्यादि

विशेषण—शब्दावली—अखिल (=सारा), अगाध, अटल, अतीत (=बीता हुआ), अद्भुत (=अद्भुत), अधम (=नीच), अनुत्तर (=सर्वोत्तम), अनुरक्त (=राग में पड़ा हुआ), अन्ध (=अन्धा), अलस (=आलसी), अप्प (=अल्प), अड्ड (=धनी), अज्भक्तिक (=आध्यात्मिक), उगग (=उग्र), उच्च (=ऊँचा), उत्सुक (=उत्सुक), उम्मत्त (=पागल), उण्ह (=गर्म), उजु (=सीधा), एकच्च (=कोई), कटुक (=कड़ुआ), काण (=काना), कन्त (=प्रिय), कुटिल (=टेढ़ा), कपण (=कृपण), गभीर या गम्भीर (=गहरा), गर (=भारी), गोल (=गोला), घोर (=भयङ्कर), चञ्चल, चपल, चार (=सुन्दर), जटिल (=जटाधारी, उलझा), दारुण, दिव्य (=दिव्य), दुग्गम (=दुर्गम), दुव्वल (=दुर्बल), दुक्कर (=दुष्कर), धम्मिक (=धार्मिक), धुत्त (=व्यसनी), नग्ग (=नंगा), नव-नवीन (=नया), निच्च (=नित्य), निसित (=तेज), नूतन (=नया), पक्क (=पका हुआ), पटु (=चालाक), पौराण (=पुराना), पुयु (=फैला हुआ), पेतिक (=पैतृक), पगम्भ (=प्रगल्भ), पहूत (=अधिक), पाकट (=प्रसिद्ध), पिय (=प्रिय), फरुत्त (=कठोर), बधिर (=बहरा), बहु (=बहुत), भत्सर (=चमकोला), भीर (=डरपोक), भुस (=बहुत), मत (=मृत), मनञ्जू (=मनोज्ञ), मलिन, (=मैला), महं (=बड़ा), महग्घ (=कीमती), मूग (=गूंगा), मुदु (=मृदु), रम्म (=रम्य), रत्त (=ह्रस्व), रित्त (=रिक्त), रुण्ण (=रुग्ण), लहु (=हलका), विचक्खण (=होशियार), विचित्त (=विचित्र), विनीत, विसाल, वित्यत्त (=विस्तृत), सन्त (=शान्त), सीतल (=शीतल), चुक्क (=उजला), चुच्चि (=पवित्र), सुभ (=शुभ), सुक्ख (=सूखा), सुञ्ज (=शून्य), सेत (=उजला), सकल (=सभी), सफल, समान, सित (=उजला), सुगम, हट्ठ (=प्रसन्न) इत्यादि विशेषण हैं।

पुल्लिङ्ग में—अकारान्त विशेषण के रूप 'बुद्ध' शब्द के समान, इकारान्त विशेषण के रूप 'मुनि' शब्द के समान, तथा उकारान्त विशेषण के रूप 'भिक्षु' शब्द के समान होंगे। नपुंसक लिङ्ग में—अकारान्त विशेषण के रूप 'फल' शब्द के समान, इकारान्त विशेषण के रूप 'अटिठ' शब्द के समान, तथा उकारान्त विशेषण के रूप 'आयु' शब्द के समान होंगे। जैसे :—

पुल्लिङ्गः—अतीतो भूपो; अतीता भूपा । सुचि कूपो, सुचयो कूपा ।
मुट्टु बालको, मुट्टवो बालका ।

नपुंसकः—अतीतं नगरं, अतीतानि नगरानि । सुचि जलं, सुचीनि जलानि ।
मुट्टु फलं, मुट्टनि फलानि ।

[स्त्रीलिङ्ग विशेषण शब्द के रूप के लिए देखिए—पृ० १५८]

१. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

- (क) बुद्धानं सासनं । बुद्धानं धम्मो । बुद्धस्स सावको । देवानं इन्दो । बुद्धस्स सरणं । धम्मस्स सरणं । सङ्घस्स सरणं । बुद्धो देवानं च मनुस्सानं च नायको । ब्राह्मणानं गामो । बुद्धस्स सावका । सङ्घाय दानं । निव्वाणाय धम्मो । देवानं भानानि । *भानानि*
- (ख) मुनयो बुद्धस्स सावका । भिक्खूनं सङ्घो । इसीनं भानं । अट्ठीनं सघातो । आयुनो खयो । भिक्खुस्स दानं । भाना निव्वाणं । आयुनो संहानि ।
- (ग) बुद्धो विहरति (=विहार करते हैं) । देवा नन्दन्ति (=आनन्द करते हैं) । भिक्खू भायन्ति (=ध्यान करते हैं) । मनुस्सा पसंसन्ति (=प्रशंसा करते हैं) । सक्को देवानं इन्दो बुद्धं नमस्सति (=प्रणाम करता है) । मुनयो वदन्ति (=बोलते हैं) । फलानि पतन्ति (= गिरते हैं) । भिक्खवो सज्भायन्ति (=पाठ करते हैं) ।
- (घ) बुद्धो भिक्खूनं धम्मं देसेति (=उपदेश करते हैं) । देवा बुद्धस्स सरणं गच्छन्ति (=जाते हैं) । बुद्धो धम्मं पकासेति (=प्रकाशित करते हैं) । भिक्खू अरञ्जे भायन्ति (=ध्यान करते हैं) । बुद्धो निव्वाणाय भिक्खूनं धम्मं देसेति (=उपदेश करते हैं) । भिक्खवो सङ्घे वसन्ति (=वास करते हैं) । मुनयो बुद्धं नमस्सन्ति (=प्रणाम करते हैं) । सावका बुद्धस्स सरणं गच्छन्ति (=जाते हैं) । देवा देवे पस्सन्ति (=देखते हैं) । मनुस्सा फलानि खादन्ति (=खाते हैं) । देवा सग्गं गच्छन्ति (=जाते हैं) । भिक्खू भानं भावेन्ति (=भावना करते हैं) । सावका भिक्खुना सह गच्छन्ति (=जाते हैं) ।

२. ऊपर काले अक्षरों में छपे पदों के रूप पठमा, ततिया तथा छट्ठी विभक्ति में लिखिए ।

३. पालि में अनुवाद कीजिए—

बुद्धों का धम्म । देवों का ध्यान । बुद्धों की शरण । भिक्खुओं का नायक । देवों का सङ्घ । ऋषियों का ध्यान । बुद्ध के श्रावकों का ग्राम । भिक्खुओं के

लिए दान । सङ्घ के लिए दान । निर्वाण के लिए बुद्धों का शासन । देवों के लिए बुद्ध का धर्म । ग्राम से ग्राम को । विहार से विहार को । बुद्धों के शासन में लगन (=योग) ।

भिक्षु लोग ध्यान करते हैं (=भायन्ति) । मनुष्य लोग बुद्ध को नमस्कार करते हैं (=नमस्सन्ति) । बुद्ध धर्म को प्रकाशित करते हैं (=पकासति) । ऋषि लोग स्वर्ग के लिए ध्यान करते हैं (=भायन्ति) । मुनि लोग बुद्धों के धर्म की प्रशंसा करते हैं (=पसंसन्ति) । देवता बुद्ध को नमस्कार करते हैं (=नमस्सन्ति) । बुद्ध के साथ भिक्षु लोग जाते हैं (=गच्छन्ति) ।

४. नीचे काले अक्षरों में छपे पदों की विभक्ति बताइए—

ब्राह्मणानं गामा । भिक्खु गामा आगच्छन्ति (=आता है) । देवो देवेहि आगच्छति (=आता है) । भिक्खू देवे पमंसन्ति (=प्रशंसा करते हैं) । भिक्खू विहारे वसन्ति (=वास करते हैं) । मनुस्सा विहारे पस्सन्ति (=देखते हैं) । देवा सग्गा आगच्छन्ति (=आते हैं) । भिक्खू भिक्खू नमस्सन्ति (=प्रणाम करते हैं) । मुनी मुनी पमंसन्ति (=प्रशंसा करते हैं) । भानं भानं वड्ढेति (=वढ़ाता है) । भिक्खूनं दानं देति (=देता है) । भिददूनं भानं ।

५. ऊपर काले अक्षरों में छपे पदों के पठमा तथा दुतिया विभक्ति में रूप लिखिए, और उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए ।

६. निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाइए—

नाम-पदानि—बुद्धो, धम्मं, भिक्खूनं सङ्घे, देवा, देवानं लोकेणु, सावका, मनुस्सानं लोके, सरणं, निच्चाणाय भानं, सग्गाय दानं ।

क्रिया-पदानि—देसेति (=उपदेश करना है), पकासेति (=प्रकाशित करता है), गच्छन्ति (=जाते हैं), करोन्ति (=करते हैं), देन्ति (=देते हैं), भावेति-न्ति (=भावना करना) ।

पहला काण्ड

दूसरा पाठ

नास-प्रकरण

(दूसरा भाग—साधारण शब्द)

५. आकारान्त स्त्रीतिङ् शब्द

लता

ए क व च न		अ ने क व च न
पठ मा	लता ^१	लता, ^२ लतायो
दु ति या	लतं	लता, ^३ लतायो
त ति या	लताय ^१	लताहि, लताभि
च तु त्यी	लताय ^३	लतानं
प ञ्च भी	लताय ^३	लताहि, लताभि
छ्दो	लताय ^३	लतानं

१. ग सी नं २.११६—यदि कोई दूसरी विधि न हो, तो 'ग' तथा 'सि' का लोप हो जाता है। जैसे:—लता + सि = लता। मुनि। दण्डो। भिक्खु। वधू। गो।

२. जन्तु हे त्वी घ पे हि वा २.११७—'जन्तु', 'हेतु', ईकारान्त शब्द, तथा 'घ' (= 'आ') और 'प' (= 'इ', 'ई', 'उ', 'ऊ') से परे, 'यो' विभक्ति का विकल्प से लोप होता है। जैसे—जन्तू, जन्तुयो। हेतू, हेतुयो। दण्डो, दण्डियो। लता, लतायो। रत्ती, रत्तियो। इत्यो, इत्तियो। धेनू, धेनुयो। वधू, वधुयो।

३. घ प ते क स्मि ना दी नं य या २.४७—'घ' (= 'आ') तथा 'प' (= 'इ', 'ई', 'उ', 'ऊ') से परे, 'ना' आदि एकवचन की विभक्तियों का क्रमशः 'य' तथा 'या' आदेश हो जाता है। जैसे:—लताय। रत्तिया। इत्तिया। धेनुया। वधुया।

स त्त मो लतायं, लतायं लतासु
 आ ल प न लते लता, लतायो

शब्दावली—अगता (=अग्रता), अच्छरा (=अप्सरा), अज्जा (=परमज्ञान), अनुदया (=अनुकम्पा), अभिज्जा (=लोभ), अम्मा (=माता), अविज्जा (=अविद्या), आणा (=फरमान), आसा (=इच्छा), ईहा (=चेष्टा), उक्का (=उल्का), उपदा (=वैना), उम्मा (=अतसी), एजा (=कंपन), कच्छा (=कांस), कन्धरा (=कंधा), करका (=ओला), कस्सा (=कस्सा), कुच्छा (=घृणा), कुङ्गा (=ढोंग), गाथा (=श्लोक), चन्दिमा (=चन्द्रमा), छाया जटा, जिगुच्छा (=घृणा), तण्हा (=तृष्णा), दयिता (=प्यारी), नावा (=नौका), पटिपदा (=मार्ग), पिच्छिला (=पछिला), पुच्छा (=हालचाल पूछना), वाहा (=वाहु), ब्रहा (=वृद्धि), मेत्ता (=मित्रता), चुणिसा (=पतोह), सभा, आदि आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप 'लता' के समान होते हैं।

§ १०. इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

रत्ति (=रात्रि)

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठमा	रत्ति	रत्ती, रत्तियो, रत्तयो
दुतिया	रत्ति	रत्ती, रत्तियो, रत्तयो

४. यं २.१०५—'घ' (= 'आ') तथा 'प' ('इ', 'ई', 'उ', 'ऊ') से परे, 'स्मि' विभक्ति का विकल्प से 'यं' आदेश हो जाता है। जैसे:—लतायं, लताय। रत्तियं, रत्तिया। वधुयं, वधुया। सब्बायं, सब्बाय। अमुयं, अमुया।

५. घ ब्रह्मादितो ए २.६२—'घ' (= 'आ') तथा 'ब्रह्म' आदि शब्दों से परे, 'ग' विभक्ति का विकल्प से 'ए' आदेश हो जाता है। जैसे:—हे लते, लता! भो ब्रह्मे, ब्रह्म! भो कत्ते, कत्त! भो इस्से, इस्सि! भो सखे, सख! [देखिए—तीसरा परिशिष्ट]

	एक व च न	अनेक व च न
त ति या	रत्तिया, रत्या ^१	रत्तीहि, रत्तीभि
च तु त्थी	रत्तिया, रत्या	रत्तीनं
पञ्च मी	रत्तिया, रत्या	रत्तीहि, रत्तीभि
छद्ठी	रत्तिया, रत्या	रत्तीनं
सत्त मी	रत्तियं, रत्यं, ^१ रत्या, रत्ति, रत्तो, ^२ रत्तिया	रत्तीसु, रत्तिसु
आलपन	रत्ति	रत्ती, रत्तियो, रत्यो

शब्दावली—युक्ति (=युक्ति), वृत्ति (=खबर), कित्ति (=कीर्ति), मुत्ति (=मुक्ति), तित्ति (=तृप्ति), खन्ति (=सहनशीलता), सन्ति (=शान्ति), सिद्धि, सुद्धि, इद्धि (=ऋद्धि), बुद्धि (=वृद्धि), बुद्धि, बोधि (=ज्ञान), भूमि, जाति, पोति (=प्रीति), नन्दि (=तृष्णा), सन्धि, कोटि (=करोड़), दिद्धि (=मत), वृद्धि (=वृष्टि), बुद्धि (=संतोष), यद्धि (=लाठी), पालि (=पंक्ति), सत्ति (=स्मृति), धूलि, आदि इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द के रूप 'रत्ति' शब्द के समान होते हैं ।

§ ११. ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

इत्थी (=त्थी)

	एक व च न	अनेक व च न
पठमा	इत्थी	इत्थी, इत्थियो
दुत्तिया	इत्थियं, इत्थि ^१	इत्थी, इत्थियो

६. ये पस्तिवणस्स २.११८:—यकार परे हो, तो स्त्रीलिङ्ग नाम के अन्त्य 'इ' तथा 'ई' का विकल्प से लोप होता है । जैसे:—

रत्ति+यो=रत्थो । रत्ति+ना (घपतेर्कम्मि नादीनं यया २.४७)=
रत्ति+या=रत्या । रत्ति+स्मि=(यं २.१०५)=रत्ति+यं=रत्यं ।

७. रत्यादी हि टो स्मिनो २.५७—'रत्ति' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दों से परे, 'स्मि' विभक्ति का विकल्प से 'ओ' आदेश होता है । जैसे:—
रत्ति+स्मि=रत्तो, रत्तियं । आदो, आदिस्मि ।

	ए क व च न	अ ने क व च न
त ति या	इत्थिया	इत्थीहि, इत्थीभि
च तु त्थी	इत्थिया	इत्थीनं
प ञ्च मी	इत्थिया	इत्थीहि, इत्थीभि
छट्ठी	इत्थिया	इत्थीनं
स त्त मी	इत्थियं, इत्थिया	इत्थीसु
आ ल प न	इत्थि	इत्थी, इत्थियो

शब्दावली—नदी, मही (=पृथ्वी), वेतरणी, वापी (=कूंआ), पाटली, कदली, नारी, कुमारी, तरुणी, वारुणी, ब्राह्मणी, सखी, गन्धर्वी (=गन्धर्व स्त्री), किन्नरी, नागी, देवी, यक्षी (=यक्ष स्त्री), अजी (=त्रकरी), मिगी (=मृगी), वानरी, सूकरी, सीही (=सिही), हंसी, कुक्कुटी (=मुर्गी) इत्यादि ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द के रूप 'इत्थी' शब्दके समान होते हैं ।

§ १२. उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

धेनु (=गाय)

	ए क व च न	अ ने क व च न
प ठ मा	धेनु	धेनू, धेनुयो
दु ति या	धेनुं	धेनू, धेनुयो
त ति या	धेनुया	धेनूहि, धेनूभि
च तु त्थी	धेनुया	धेनूनं
प ञ्च मी	धेनुया	धेनूहि, धेनूभि

८. यं पी तो २.७५—स्त्रीलिङ्ग ईकारान्त शब्द से परे, 'अं' विभक्ति का विकल्प से 'यं' आदेश हो जाता है । जैसे:—इत्थी+अं=इत्थियं; इत्थि ।

ए क व च न यो सु अ घो नं २.६६—तीनों लिङ्गों के एक वचन में, तथा 'यो' विभक्ति आने से, 'घ' और ओकारान्त शब्दों को छोड़, दूसरे शब्दों के अन्त्य स्वर का ह्रस्व हो जाता है । जैसे:—दण्डिनं, दण्डि, दण्डिनो, दण्डिना, दण्डिस्मा । इत्थिं, इत्थिया, इत्थियो । वधुं, वधुया, वधुयो । सयम्भुं, सयम्भुना, सयम्भुवो ।

	ए क व च न	अ ने क व च न
छ्ठी	धेनुया	धेनूनं
सत्तमी	धेनुयं, धेनुया	धेनुसु
आलपन	धेनु	धेनू, धेनुयो

शब्दावली—घातु, यागु (=यवागु), कासु (=गड्ढा), ददु (=दाद), कच्छु (=काज), रज्जु (=रस्सी), आदि उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द के रूप 'धेनु' शब्द के समान होते हैं।

§ १३. ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

वधू (=बहू)

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठमा	वधू	वधू, वधुयो
दुतिया	वधुं	वधू, वधुयो
ततिया	वधुया	वधूहि, वधूभि
चतुर्थी	वधुया	वधूनं
पञ्चमी	वधुया	वधूहि, वधूभि
छ्ठी	वधुया	वधूनं
सत्तमी	वधुयं, वधुया	वधूसु
आलपन	वधु	वध, वधुयो

शब्दावली—जम्बू (=जामुन), सरभू (=नदीका नाम, छिपकिली), सुतनू (=सुन्दरी), चमू (=सेना), वामोहू (=स्त्री) इत्यादि ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द के रूप 'वधू' शब्द के समान होते हैं।

२. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

बुद्धानं गाथा । भिक्खूनं सद्धा । मेत्ताय भानं । वाचाय संवरो । छायाय इच्छा । बुद्धस्स पूजा । मनुस्सानं देवता । देवानं परिसा । मनुस्सानं सभा ।

बुद्धानं कथाय विज्जा उप्पज्जति (= उत्पन्न होती है) । बुद्धानं गाथाय सद्धा उप्पज्जति (= उत्पन्न होती है) । गङ्गायं देवतानहायति (= नहाता है) । कञ्जायो बुद्धं नमस्सन्ति (= प्रणाम करते हैं) । इत्थियो देवताय मन्दिरं गच्छन्ति (= जाते हैं) । भिक्खुनी सद्घाय सद्धं नमस्सन्ति (= प्रणाम करती हैं) । गाथासु देवतानं परिसाय कथा विज्जति (= है) । भिक्खवो परिसायं निसीदन्ति (= बैठते हैं) । कञ्जायो भिक्खुनीसु सद्धं संठेपन्ति (= स्थापित करते हैं) । सद्घाय च पञ्जाय च बुद्धस्स पूजा होति । मेत्ताय भावनाय देवानं तुट्ठि होति । पञ्जाय भावनाय विमुत्ति होती । नद्धिया दिसायं धेनू चरन्ति ।

२. ऊपर काले अक्षरों में छपे पदों के दुतिया तथा सत्तमी विभक्ति में रूप लिखिए ।

३. पालि में अनुवाद कीजिए—

देवता की विद्या । प्रज्ञा की इच्छा । मैत्री की भावना । कन्या की श्रद्धा । देवता के लिए माला । भूमि में वास । लड़कियों की श्रद्धा बुद्ध की पूजा में है । पृथ्वी पर छाया है । देवता की पूजा से लोगों (पजा) की श्रद्धा बढ़ती है ।

४. काले अक्षरों में छपे पदों में लिङ्ग, वचन और विभक्तियाँ बताइए—

विज्जाय पञ्जा वड्ढति (= बढ़ती है) । विज्जाय इच्छा पञ्जं वड्ढति (= बढ़ाती है) । भिक्खुनियो कञ्जायो वाचेन्ति (= पढ़ाती हैं) । कञ्जायो मालायो इच्छन्ति (= चाहती हैं) । इत्थियो भिक्खुनिया सह गच्छन्ति (= जाती हैं) । भिक्खुनिया दानं देन्ति (= देते हैं) । भिक्खुनिया धम्मदेसना होति । भिक्खुनिया (भिक्खुनियं) इत्थियो पसन्नायो होन्ति ।

५. निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाइए—

नाम-यदानि—कञ्जायो, भिक्खुनिया गाथं, पीतिया, पालियं, देवता, मेत्ताय, पञ्जाय भावना, विमुत्तिया, पठवियं ।

क्रिया-पदानि—गायन्ति (=गाते हैं) । नच्चन्ति (=नाचते हैं), भासन्ति (=कहते हैं) । भावेति (=भावना करती है) । होति (=होता है) । क्रीळति-न्ति (=खेलना) । लभति-न्ति । पठति-न्ति । निपज्जन्ति (=लेटती हैं) ।

६. (क) अकारान्त पुल्लिङ्ग तथा नपुंसक लिङ्ग शब्दों के रूप में क्या क्या अन्तर हैं ?
- (ख) इकारान्त पुल्लिङ्ग, नपुंसक लिङ्ग, तथा स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप में क्या क्या अन्तर हैं ?
- (ग) उकारान्त पुल्लिङ्ग, नपुंसक लिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप में क्या क्या अन्तर हैं ?
-

पहला काण्ड

तीसरा पाठ

सर्वनाम-प्रकरण

(पहला भाग—साधारण सर्वनाम)

§ १. सब्ब^१ (=सभी)

पुल्लिङ्ग

	एक वचन	अनेक वचन
पठमा	सब्बो	सब्बे ^२
दुतिया	सब्बं	सब्बे
ततिया	सब्बेने	सब्बेहि, सब्बेभि

अपवाद

१. न अञ्जाञ्च नामप्पधाना २.१४१—‘सब्ब’ आदि कोई शब्द यदि नाम के ऐसा प्रयुक्त हो, या अप्रधान हो, तो उसके रूप सर्वनाम शब्द के समान नहीं होंगे। जैसे—ते सब्बा=वे ‘सब्ब’ लोग। ते पियसब्बा=वे सभी के प्रिय (यहाँ ‘सब्ब’ अप्रधान है)। ते अतिसब्बा।

ततियत्थयोगे २.१४२—तृतीयार्थ के योग में, ‘सब्ब’ आदि शब्दों के रूप सर्वनाम शब्द के समान नहीं होते हैं। जैसे—मासेन पुब्बानं—मासपुब्बानं (यहाँ सर्वनाम शब्द के समान ‘पुब्बेसं या पुब्बेसानं’ नहीं हुआ)।

चत्थसमासे २.१४३—द्वन्द्वसमास (=चत्थ) होने पर भी, ‘सब्ब’ आदि शब्दों के रूप सर्वनाम शब्द के समान नहीं होते हैं। जैसे—दक्खिणुत्तरपुब्बानं (यहाँ भी, सर्वनाम शब्द के समान ‘पुब्बेसं’ नहीं हुआ)।

२. योनमेद् २.१४०—अकारान्त ‘सब्ब’ आदि शब्दों से परे, ‘यो’ विभक्ति का ‘ए’ आदेश होता है। जैसे—सब्बे तिट्ठन्ति। सब्बे पत्स।

	ए क व च न	अ ने क व च न
च तु त्यी	सव्वस्स	सव्वेसं, सव्वेसानं ^१
प ञ्च मी	सव्वम्हा, सव्वस्मा	सव्वेहि, सव्वेभि ^१
छ द्दी	सव्वस्स	सव्वेसं, सव्वेसानं
सुत्त मी	सव्वम्हि, सव्वस्मि	सव्वेसु ^१
आ ल प न	सव्व, सव्वा	सव्वे

नपुंसक लिङ्ग

	ए क व च न	अ ने क व च न
प ठ मा	सव्वं	सव्वानि ^१
डु ति या	सव्वं	सव्वे, सव्वानि
आ ल प न	सव्व, सव्वा	सव्वानि

शेष पुल्लिङ्ग के समान

स्त्रीलिङ्ग

	ए क व च न	अ ने क व च न
प ठ मा	सव्वा	सव्वा, सव्वायो
डु ति या	सव्वं	सव्वा, सव्वायो
त ति या	सव्वाय	सव्वाहि, सव्वाभि

वेद् २.१४४—जो 'सव्व' आदि शब्दों से परे 'यो' विभक्ति का 'ए' आदेश किया गया है, वह द्वन्द्व समास होने पर विकल्प से होता है। जैसे—पुव्वुत्तरे; पुव्वुत्तरा ।

३. सव्वादीनं नन्दि च २.१०१—'नं', 'सु', तथा 'हि' विभक्तियों के आने से, अकारान्त 'सव्व' आदि शब्दों के अन्त्य स्वर का 'ए' हो जाता है। जैसे—सव्वेसं । सव्वेसु । सव्वेहि ।

सं सानं २.१०२—'सव्व' आदि शब्दों से परे, 'नं' विभक्ति का 'सं' तथा 'सानं' आदेश हो जाता है। जैसे—सव्वेसं, सव्वेसानं ।

४. सव्वादीहि २.१३६—'सव्व' आदि शब्दों से परे, 'नि' का 'आ' आदेश नहीं होता है। जैसे—सव्व + नि = सव्वानि । पुव्वानि । ['सव्वा' नहीं होगा]

	ए क व च न	अ ने क व च न
च तु त्थी	सव्वस्सा, ^१ सव्वाय	सव्वासं, सव्वासानं
पञ्च मी]	सव्वाय	सव्वाहि, सव्वाभि
छट्ठी]	सव्वस्सा, सव्वाय	सव्वासं, सव्वासानं
सत्त मी	सव्वस्सं, ^१ सव्वायं	सव्वासु
आलपेन	सव्वे	सव्वा, सव्वायो

कतर, कतम, उभय, इतर, अञ्ज, अञ्जतर, तथा अञ्जतम शब्दों के रूप 'सव्व' शब्द के समान होंगे।

§ २. पुव्वादीहि छहि २.१४५—पुव्व (=पहला), पर, अपर, दक्खण (=दक्षिण), उत्तर, तथा अधर (=नीचा), इन छ शब्दों के रूप 'सव्व' शब्द के समान ही होंगे; किंतु, पठमा अनेक वचन में इनके दो दो रूप होंगे। जैसे—पुव्वे, पुव्वा। परे, परा। अपरे, अपरा। दक्खणे, दक्खणा। उत्तरे, उत्तरा। अधरे, अधरा।

§ ३. किं (=कौन)

पुल्लिङ्ग

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठमा	को	के
द्वितीया	कं	के
तृतीया]	केन	केहि, केभि

५. घृपा सस्सं स्सा वा २.१०३—स्त्रीलिङ्ग 'सव्व' आदि शब्दों से परे, 'स' विभक्ति का विकल्प से 'स्सा' आदेश होता है। जैसे—सव्वा + स = सव्वस्सा। सव्वाय।

६. स्मि नो स्सं २.१०४—स्त्रीलिङ्ग 'सव्व' आदि शब्दों से परे, 'स्मि' विभक्ति का विकल्प से 'स्सं' आदेश होता है। जैसे—सव्वस्सं; सव्वायं। अमुस्सं, अमुया।

७. किस्स को सव्वासु २.२००—सभी विभक्तियों में, 'किं' शब्द का 'क' आदेश हो जाता है। जैसे—को, के। का, कायो। कं, कानि।

	एक व च न	अनेक व च न
चतुर्थी	कस्स, किस्स	केसं, केसानं
पञ्चमी	कम्हा, कस्मा, किस्मा	केहि, केभि
छट्ठी	कस्स, किस्स	केसं, केसानं
सप्तमी	कम्हि, किम्हि, कस्मिं, किस्मिं	केसु

नपुंसक लिङ्ग

	एक व च न	अनेक व च न
पठमा	किं, कं	के, कानि
द्वितीया	कि, कं	के, कानि

स्त्रीलिङ्ग

	एक व च न	अनेक व च न
पठमा	का	का, कायो
द्वितीया	कां	का, कायो
तृतीया	काय	काहि, काभि
चतुर्थी	कस्सा, काय	कासं, कासानं
पञ्चमी	काय	काहि, काभि
छट्ठी	कस्सा, काय	कासं, कासानं
सप्तमी	कस्सं, कायं	कासुं

§ ४. 'य' (=जो) शब्द के रूप, तीनों लिङ्गों में, 'क' शब्द के समान ही होते हैं। जैसे:—

पुल्लिङ्ग—यो, ये; यं, ये; येन, येहि येभि; यस्स, येसं येसानं; यम्हा यस्सा, येहि येभि; यस्स, येसं येसानं; यम्हि यस्मिं, येसु।

८. किं कस्मिं सु वा नि त्थियं २.२०१—पुल्लिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग में, 'स' तथा 'स्मिं' विभक्तियों के आने से, 'किं' शब्द का विकल्प से 'किं' आदेश होता है। जैसे—कस्स; किस्स। कस्मिं; किस्मिं।

९. किं मं त्तिसु सहे नपुंसके २.२०२—नपुंसक लिङ्ग में, 'अं' तथा 'सिं' विभक्तियों के साथ, 'किं' शब्द का रूप 'किं' होता है।

नृपंसक—यं, ये यानि; यं, ये यानि—शेष पुल्लिङ्ग के समान ।

स्त्रीलिङ्ग—या, या यायो; यं, या यायो; याय, याहि याभि; यस्सा याय, यासं यासानं; याय, याहि याभि; यस्सा याय, यासं यासानं; यस्सं यायं, यासु ।

§ ५. त, त्य (=वह)

पुल्लिङ्ग

	एक वचन	अनेक वचन
पठमा	सो, स्यो ^{१०}	ते, ने ^{११}
द्वितीया	तं, नं	ते, ने
तृतीया	तेन, नेन	तेहि, नेहि, तेभि, नेभि
चतुर्थी	तस्स, नस्स, अस्स ^{१२}	तेसं, नेसं, तेसानं, नेसानं
पञ्चमी	तम्हा, अम्हा, नम्हा, तस्मा, नस्मा, अस्मा	तेहि, नेहि, तेभि, नेभि
छट्ठी	तस्स, नस्स, अस्स ^{१३}	तेसं, नेसं, तेसानं, नेसानं
सप्तमी	तम्हि, अम्हि, नम्हि, तस्मि, नस्मि, अस्मि	तेसु, नेसु

१०. त्य ते तानं तस्स सो २.१३०—‘सि’ विभक्ति आने से, पुल्लिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग में, ‘त्य’, ‘त’ तथा ‘एत’ शब्दों के तकार का सकार हो जाता है । जैसे—स्यो पुरिसो । स्या इत्थी । सो पुरिसो । सा इत्थी । एत्तो । एत्ता ।

११. त तस्स नो सव्वासु २.१३३—सभी विभक्तियों में, ‘त’ शब्द के तकार का विकल्प से नकार हो जाता है । जैसे—ते ने । तेन नेन । तेहि नेहि ।

१२. ट सस्मा स्मिस्सायस्संस्सास्संम्हाम्हिस्विमस्स च २.१३४—‘स’, ‘स्मा’, ‘स्मि’, ‘स्साय’, ‘स्सं’, ‘स्सा’, ‘सं’, ‘म्हा’, तथा ‘म्हि’ परे हों, तो ‘त’ तथा ‘इम’ शब्दों का विकल्प से ‘अ’ आदेश होता है । जैसे—तस्स, अस्स । तस्मा, अस्मा । तस्मि, अस्मि । तस्साय, अस्साय । तस्सं, अस्सं । तस्सा अस्सा । तासं, आसं । तम्हा, अम्हा । तम्हि, अम्हि ।

इम—इमस्स, अस्स । इमस्सा, अस्सा । इमस्मि, अस्मि । इमिस्साय, अस्साय इत्यादि ।

नपुंसक लिङ्ग

	एक वचन	अनेक वचन
पठमा	तं, नं,	ते, ने, तानि, नानि
दु ति या	तं, नं	ते, ने, तानि, नानि]

शेष पुल्लिङ्ग के समान

स्त्रीलिङ्ग

	एक वचन	अनेक वचन
पठमा	सा, स्या	ता, ना, तायो, नायो
दु ति या	तं, नं	ता, ना, तायो, नायो
त ति या	ताय, नाय, तस्सा, ^{१३} तिस्सा ^{१४}	ताहि, नाहि, ताभि, नाभि
च तु त्यी	तिस्साय, तस्साय ^{१५} अस्साय तिस्सा, तस्सा, ^{१६} ताय	तासं, आसं, तासानं

१३. स्सा वा ते ति मा भू हि २.४८—स्त्रीलिङ्ग 'ता', 'एता', 'इमा', तथा 'अमू' शब्दों से परे, 'ना' आदि एकवचन की विभक्तियों का विकल्प से 'स्सा' आदेश हो जाता है। जैसे—तस्सा कतं। तस्सा दीयते। तस्सा निस्सरणं। तस्सा परिग्गहो। तस्सा पतिट्ठितं। विकल्प से 'ताय' भी होता है।

एतिस्सा। एताय।

इमिस्सा। इमाय।

अमुस्सा। अमुया।

१४. ताय वा २.५५—'स्सं', 'स्सा, तथा 'स्साय' से पूर्व, 'ता' शब्द का विकल्प से 'ति' आदेश हो जाता है। जैसे—तस्सं, तिस्सं। तस्सा, तिस्सा। तिस्साय, तस्साय।

१५. ते ति मा तो सस्स स्सा य २.५६—'ता', 'एता', तथा 'इमा' शब्दों से परे, 'सं' विभक्ति का विकल्प से 'स्साय' आदेश होता है। जैसे—तस्साय, ताय। एतिस्साय, एताय। इमिस्साय, इमाय।

घो स्सं स्सा स्सा यं ति सु २.६५—'स्सं' आदि आने से, 'घ' (= 'आ') ह्रस्व हो जाता है। जैसे—तस्सं, तस्सा, तस्साय, तं, सभतिं, परिस्सतिं।

एक वचन	अनेक वचन
पञ्चमी ताय, नाय, तस्सा	ताहि, नाहि, ताभि, नाभि
छट्ठी तिस्साय, तस्साय, अस्साय	
तिस्सा, तस्सा, अस्सा, ताय	तासं, आसं, तासानं
सप्तमी तिस्सं, तस्सं, अस्सं, तायं, तस्सा, तिस्सा	तासु

§ ६. सर्वनाम २७ हैं—सब्ब (=सर्व), कतर (=कौन), कतम (=कौन), उभय (=दोनों), इतर (=दूसरा), अञ्ज (=अन्य), अञ्जतर (=कोई), अञ्जतम (=अन्यतम), पुब्ब (=पूर्व), पर, अपर, दक्खिण (=दक्षिण), उत्तर, अधर (=अधः), य (=जो), त—स्य (=वह), एत (=यह), इम (=यह), किं (=कौन), एक, उभ, द्वि, ति (=तीन), चतु (=चार), तुम्ह (=तू), अम्ह (मैं) ।

संख्या, अतुल्य, असहाय तथा अन्य (=कोई कोई)—इतने अर्थों में 'एक' शब्द प्रयुक्त होता है । जैसे—एको बालको = एक लड़का । बुद्धो एको व लोके = लोक में बुद्ध अतुल्य हैं । अहं एको व अरञ्जे विहरामि = मैं जंगल में अकेला विहार करता हूँ । एके एवं वदन्ति = कोई कोई लोग ऐसा कहते हैं ।

संख्या के अर्थ में, 'एक' शब्द एकवचन में ही होता है । तीनों लिङ्गों में इसके रूप 'सब्ब' शब्द के समान होते हैं ।

[संख्या वाचक शब्दों के लिए देखिए—पृ० १६४]

३. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

सर्वे सङ्खारा दुक्खा । सर्वे धम्मा अनत्ता सन्ति (=हैं) । सर्वे पाणा दण्डस्स तसन्ति (=डरते हैं) । बुद्धो सर्वानि भानानि जानाति (=जानता है) । सर्वे देवा सग्गे विचरन्ति (=विचरण करते हैं) । सर्व्वायो भिक्खुनियो बुद्धं वन्दन्ति (=प्रणाम करते हैं) । सर्व्वासु दिसासु भिक्खु मेत्तं भावेति (=भावना करता है) ।

केन जाणेन, कस्स भिक्खुस्स, कम्हि ठाने, किं भानं होति ? का भिक्खुनी, काय भावनाय, काय पत्तिया, कायं कुट्टिकायं विहरति (=विहार करती है) ? कानि भानानि भिक्खु लभति (=प्राप्त करता है) ? कानि भानानि भिक्खुस्स होन्ति ? यो सीलं रक्खति सो भानं लभति (=लाभ करता है) । येहि धम्मेहि सम्बोधिया पत्ति होति, ते धम्मा अनुत्तरा होन्ति ।

२. ऊपर काले अक्षरों में छपे पदों के ततिया छट्ठी तथा सत्तमी विभक्ति में रूप लिखिए, और उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए ।

३. पालि में अनुवाद कीजिए—

सर्व मनुष्य मरण-धर्मा हैं (=सन्ति) । सर्व देवता स्वर्ग में विचरण करते हैं (=विचरन्ति) । सभी भिक्षुओं का शरण बुद्ध है (=अत्यि) । जो दान देता है (=देति), वह स्वर्ग को जाता है (=गच्छति) । जिसकी प्रज्ञा नहीं है (=नत्थि), उसकी विद्या अल्प होती है (=होति) । कौन देवता, किस मनुस्स को, किस फल के लिए, किस धर्म का उपदेश करता है (=देसति) ?

३. काले अक्षरों में छपे पदों में लिङ्ग, वचन तथा विभक्तियाँ बताइए—

सर्व्वाय विज्जाय वायामो । सर्व्वाय देवताय विचारो । सर्व्वाय दिसाए भिक्खु मेत्तं भावेति (=भावना करता है) । सर्व्वा देवा सर्व्वा बुद्धे नमस्सन्ति (=प्रणाम करते हैं) । काय विज्जाय काय पञ्चाय पत्ति होति ?

४. निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाइए—

सर्वनाम-प्रदानि—सर्व्वा देवा, सर्व्वा मनुस्से, सर्व्वाणि फलानि, सर्व्वा दारका, सर्व्वाणि पोत्थकानि, सर्व्वासु धम्मेसु ।

क्रिया-पदानि—नमस्सन्ति (=प्रणाम करते हैं), वदन्ति (=बोलते हैं), खादन्ति (=खाते हैं), पठन्ति (=पढ़ते हैं), विहरति (=विहार करता है) ।

५. निम्नलिखित शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए—

सव्वेन सव्वं, सव्वथा सव्वं (=सब प्रकार से) । अञ्जमञ्जं (=एक दूसरे को) । येन भगवा तेन (=जहाँ भगवान थे वहाँ) । तेन, तस्मा (=तिस कारण से) । येन, यस्मा (=जिस कारण से) ।

६. (क) अकारान्त नाम तथा सर्वनाम शब्दों के रूप में क्या २ अन्तर हैं?

(ख) आकारान्त नाम तथा सर्वनाम शब्दों के रूप में क्या २ अन्तर हैं?

पहला काण्ड

चौथा पाठ

विभक्ति-प्रकरण

(पहला भाग—साधारण नियम)

१. पठमा विभक्ति

§ १. पठमात्यमत्ते २.३६—कर्तृवाच्य के कर्ता में, या केवल अर्थ प्रगट करने में, 'पठमा विभक्ति' होती है। जैसे—समणो भायति = धमण ध्यान लगाता है। अग्नि। कञ्जायो। फलानि।

§ २. आमन्तणे २.४०—आमन्त्रण करने के अर्थ में, 'आलपन विभक्ति' होती है। 'आलपन' में भी, 'पठमा' ही की विभक्तियाँ लगती हैं। जैसे—आवुसो सुमन सामणेरे ! रे घुत्ता ! हे कञ्जे ! जे अय्ये !

२. दुतिया विभक्ति

§ ३. कस्मे दुतिया २.२—कर्तृवाच्य के कर्म में 'दुतिया विभक्ति' होती है। जैसे—सूदो ओदनं पचति। सप्पो जने दंसति।

§ ४. कालद्वानमच्चन्तसंयोगे २.३—क्रिया, गुण, तथा द्रव्य के लगातार होने से, समय तथा दूरी वाचक शब्द में 'दुतिया विभक्ति' होती है। जैसे—समय में—सामणेरो मासं विनयं पठति = आमणेरे महीना भर (लगातार) विनय पढ़ता है। दिवसं गेहो सुञ्जो तिट्ठति = दिन भर घर सूना रहता है। मासं गुळधाना = महीने भर गुड़-धान की मिठाई चलती रही।

दूरी में—भच्चो कोसं गच्छति = भृत्य कोस भर जाता है। कोसं कुटिला नदी = कोस भर नदी टेढ़ी-मेढ़ी है। कोसं पव्वतो = कोस भर पहाड़ ही पहाड़ है।

§ ५. 'धि' (= धिक्कार), 'अन्तरा' (= बीच), 'पति' (= प्रति), तथा 'विना' शब्दों के योग में 'दुतिया विभक्ति' होती है। जैसे—

धि अलसं सिस्सं=आलसी शिष्य को धिक्कार है। अन्तरा च राजगहं अन्तरा च नाळन्दं=राजगृह और नालन्दा के बीच। लोका पसन्ना बुद्धं पति=लोग बुद्ध के प्रति बड़ी श्रद्धा रखते हैं। न सिज्भति धम्मो विरियं विना=विना वीर्य के धर्म सफल नहीं होता है।

३. ततिया विभक्ति

§ ६. कत्तु करणेसु ततिया २.१८—भाववाच्य तथा कर्म-वाच्य के कर्ता में, करण कारक में, तथा क्रियाविशेषण में, 'ततिया विभक्ति' होती है।

जैसे—पुरिसेन गम्मति=पुरुष के द्वारा चला जाता है। बालकेन चन्दो विस्सति=बालक के द्वारा चांद देखा जाता है (देखिए—पृ० १७८)।

करणा कारक में—दण्डेन सप्पं पहरति=लाठी से साँप मारता है।

क्रियाविशेषण में—गोत्तेन गोतमो=गोत्र से गौतम है। सुमेधो नाम नामेन=नाम से सुमेघ। इसी तरह—दिसमेन धावति, समेन धावति, द्विदोणेन घञ्जं किणाति, पञ्चकेन पसवो किणाति। इत्यादि

§ ७. सहत्थेन २.१९—साथ होने के अर्थ में 'ततिया विभक्ति' होती है।

जैसे—सिस्सेहि सह=साँझ=समं आगच्छति आचरियो=शिष्यों के साथ आचार्य आता है।

§ ८. तुल्यत्थेन वा ततिया २.४२—तुल्य के अर्थ में 'ततिया विभक्ति' होती है, और छद्ठी भी।

जैसे—आचरियेन सदिसो सिस्सो=आचार्य के सदृश ही शिष्य है। जनकेन तुल्यो पुत्तो=पिता के तुल्य ही पुत्र है। आचरियस्स सदिसो सिस्सो। जनकस्स तुल्यो पुत्तो।

४. चतुत्थी विभक्ति

§ ९. चतुत्थी सम्पदाने २.२६—सम्प्रदान में 'चतुत्थी विभक्ति' होती है।

जैसे—याचकस्स भिक्खं ददाति=भिक्षुमंगे को भिक्ष देता है। ब्राह्मणानं भोजनं ददाति=ब्राह्मणों को भोजन देता है।

§ १०. तादत्थ्ये २.२७—'उसके लिए', इस अर्थ में 'चतुत्थी विभक्ति' होती है।

जैसे—लोकहिताय बुद्धो धम्मं देसेति=लोक के हित के लिए, बुद्ध धर्म का उपदेश करते हैं। न समत्यो दारभरणाय=स्त्री के पालन करने में समर्थ नहीं है। सूदो पाकाय भोजनघरं गच्छति=रसोइया पकाने के लिए भोजन-गृह जा रहा है। मागवकानं अनञ्भायो रच्चति=विद्यार्थियों को अनध्याय अच्छा लगता है। भच्चो अनच्चस्स सतं धारेति=भृत्य अमात्य को सौ रुपए धारता हैं। पापिट्ठस्स (पापिट्ठाय) धम्ममेन किं=पापी को धर्म से क्या दरकार? जीवितं तिणाय अपि न मञ्जति=जीवन को तृण भर भी नहीं समझता है।

५. पञ्चमी विभक्ति

§ ११. पञ्चम्य व धिस्मा २.२८—अवधि-वाचक शब्द में 'पञ्चमी विभक्ति' होती है।

जैसे—गामस्मा गच्छति=गाँव से जाता है। चोरस्मा भायति=चोर से डरता है। चोरस्मा रक्खति=चोर से बचाता है।

६. छठी विभक्ति

§ १२. छट्ठी सम्बन्धे २.४१—सम्बन्ध में 'छट्ठी विभक्ति' होती है।

जैसे—आचरियस्स पुत्तो=आचार्य का पुत्र। गामस्स मनुस्सा=गाँव के मनुष्य। पहरतो पिण्डि द्दाति=मारने वाले की ओर पीठ फेर देता है। दिवस्सस्स तिक्खत्तुं=दिन में तीन बार।

कृदन्त शब्दों के साथ भी बहुधा छट्ठी विभक्ति होती है। जैसे—साधु सम्मतो बहुजनस्स=बहुत लोगों का मान्य। तिट्ठन्ति धम्मस्स जातारो=धर्म के जानने वाले मीजूद हैं।

§ १३. यतो नि द्वा रणं २.३८—जाति, गुण, तथा क्रिया से, जहाँ बहुतों में से एक का निर्धारण किया जाय, वहाँ 'छट्ठी विभक्ति' होती है, और 'सत्तमी' भी।

जैसे—मनुस्सानं, मनुस्सेसु वा खत्तियो सेट्ठो=मनुष्यों में, क्षत्रिय (जाति) श्रेष्ठ है। कण्हा गावीनं, गावीसु वा सम्पन्नखीरतमा=काली गीवों में अधिक दूध देने वाली होती हैं। दानानं, दानेसु वा धम्मदानं सेट्ठं=दानों में, धर्मदान श्रेष्ठ है।

§ ७. सत्तमी विभक्ति

§ १४. सत्तम्या धारे २.३४—क्रिया के आधार में 'सत्तमी विभक्ति' होती है। जैसे—पव्वते तिट्ठति = पर्वत पर रहना है। कुम्भे ओदनं पचति = हांटी में भात पकाता है। आकासे सक्कुणा विचरन्ति = आकाश में पक्षी विचरण करते हैं। तिलेसु तेलं घत्तति = तिल में तेल है।

§ १५. निमित्ते २.३५—निमित्त के अर्थ में 'सत्तमी विभक्ति' होती है। जैसे—अजिनहिं मिगं हज्जति = नम के निमित्त ने मृग को मारता है। मुसावादे पाचित्तियं = मृगा-वाद से 'पाचित्तिय' अपराध होता है।

§ १६. यट्भा वो भा व ल क्ख णं २.३६—जहाँ, एक काम के होने पर दूसरे काम का होना जाना जाना है, वहाँ 'सत्तमी विभक्ति' होती है। जैसे—आचरिये आगते सिस्सा उट्ठहन्ति = ग्रान्ताय के आने पर गिण्य गट्टे हो जाते हैं।

§ १७. छट्ठी चा ना द रे २.३७—ऊपर के ही अर्थ में, यदि अनादर का भाव मालूम हो, तो 'छट्ठी विभक्ति' भी होती है।

जैसे—“आफोटयन्तो गो नेति सिविराजस्स पेक्खतो” = शिविराज के देवते ही देखते, वह उमे पीटते हुए ले जाना है। “मच्चु गच्छति आदाय पेक्खमाने महाजनं” = इतने लोगों के देवते ही देखने, मृत्यु ले कर चली जाती है।

[ऊपर के उदाहरणों में, शिविराज तथा महाजन के प्रति अनादर का भाव प्रगट होता है ।]

४. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिये—

• सक-पह-सुत्तं

एकं समयं भगवा (भगवान्) नगवेसु विहरति इन्द्रसाल-गुहायं । तेन खो पन समयेन, सककस्त देवानं इन्द्रस्त उस्तुक्कं उदपादि (=उत्पन्न हुआ) भगवन्तं दस्तनाय । अय खो (=तव) सकको देवानं इन्द्रो देवेहि तावतिसेहि परिवुतो भगवन्तं दस्तनाय अगमासि (=गया) । पञ्चसिखो पि खो गन्वञ्च-मुत्तो वीणं आदाय (=लेकर) सककस्त अनुचरियं उपागमि (=आया) । अय खो (=तव) सकको इन्द्रसाल-गुहं पविसित्वा (=प्रवेश करके) भगवन्तं अभिवादेत्वा (=प्रणाम करके) एकमन्तं (=एक किनारे) अट्टासि । देवा पि एकमन्तं अट्ठंनु (=छड़े हो गए) । तेन खो पन समयेन, अन्वकारगुहायं आलोको उदपादि (=उत्पन्न हुआ), यया तं देवानं देवानुभावेन ।

अय खो सकको देवानं इन्द्रो भगवन्तस्त घम्म-देसनं सुत्वा (=सुन कर), वेद-पटिलाभं सोमनस्त-पटिलाभं च पत्तो (=प्राप्त कर) भगवन्तं आह—

“अभिजानामि (=याद करता हूँ), भन्ते ! इतो (=इससे) पुव्वे एव-रूपं सोमनस्त-पटिलाभं” ति ।

“भूत-पुव्वं भन्ते ! देवानुर-सङ्गामो अहोसि (=हुआ था) । तस्मि सङ्गामे देवा जिनिनु (=जीत गए), अनुरा पराजिनु (=हार गए) । ‘या च दिव्वा ओजा या च अनुर-ओजा—उभयं एतं देवा परिभुञ्जिस्सन्ती’ति चिन्तेत्वा, (=भोग करेंगे, ऐसा विचार कर) सोमनस्त-पटिलाभो मे जातो । यो खो पन मे भन्ते ! सो वेद-पटिलाभो सोमनस्त-पटिलाभो, सो न निव्विदाय न संबोघाय न निव्वाणाय संबतति । यो खो पन मे अयं भन्ते ! भगवन्तस्त घम्मं सुत्वा, वेद-पटिलाभो सोमनस्त-पटिलाभो, सो एकन्त-निव्विदाय संबोघाय, निव्वाणाय संब-त्ती’ति ।

अय खो सकको देवानं इन्द्रो पाणिना पठवि परामसित्वा (=झ कर) तिक्खत्तुं (=तीन बार) उदानं उदानेसि—

“नमो तस्स भगवतो (=भगवन्तस्स) अरहतो (=अरहन्तस्स) सम्मा-
सम्बुद्धस्सा”ति । इमस्मिं च पन वेव्याकरणास्मिं भञ्जमाने (=कहे जाने पर) सक्कस्स देवानं इन्दस्स धम्म-चक्खु उदपादि (=उत्पन्न हुआ) —‘यं किं चि समुदय-धम्मं सव्वं तं निरोव-धम्मं’ति ।

२. निम्नलिखित वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए; तथा, काले अक्षरों में छपे पदों के कारक बताइए—

कायस्स भेदा, परं मरणा, मुगतिं सगं लोकं उपपज्जति (=उत्पन्न होता है) । भिक्खु रत्तिया पच्छिमं यामं पंच्चुट्टाय (=उठ कर) चङ्कमेन आवरणेहि धम्मेहि चित्तं परिसोधेति (=शुद्ध करता है) । सिक्खापदेसु सिक्खति । सुजाता तस्सा दासिया वचनं सुत्वा (=सुनकर), पुण्णं दासिं सव्वं अलङ्कारं अदासि (=दे दिया) । तस्मिं समये मागे देव-पुत्तो मार-घोसनं घोसापेत्वा (=घोषित करा के) मारवलं आदाय (=लेकर) निक्खमि (=निकल गया) । मारवले पन वोधिमण्डं उपसङ्कमन्ते उपसङ्कमन्ते, (=पास जाते हुए), तेसं एको पि ठातुं नासक्खि (=ठहर नहीं सका) । सुट्ठोदन-पुत्तेन सिद्धत्थेन सदित्तो (=सद्ग्य) अञ्जो पुरिसो नाम नत्थि । जातिया खो सति (=होने पर) जरा-मरणं होति । विञ्जाणे खो सति (=होने पर), नाम-रूपं होति । आसवेहि चित्तं विमुच्चि (=मुक्त हो गया) ।

३. पालि में अनुवाद कीजिए—

भिक्षु लोग एक वन-खण्ड (=वन-सण्ड) में विहार करते थे (=विहरिंसु) । वे भगवान के दर्शन के लिए श्रावस्ती (सावत्थी) गये (=अगमिंसु) । उन के साथ एक परिव्राजक संन्यासी भी गया (=अगमि) ।

जो मनुष्य शील की रक्षा करता है (=रक्खति), वह मर जाने के बाद देह छूट जाने पर स्वर्ग लोक में उत्पन्न होता है (=उप्पज्जति) । उस भगवान् सम्यक् सम्बुद्ध को नमस्कार है । चित्त के आस्रव (मल) क्षय होने पर चित्त विमुक्त हो जाता है (=विमुच्चति) । सद्ग्य को दान देने से, बहुत पुण्य होता है (=बहु पुञ्जं पसवति) । शील से ध्यान उत्पन्न होता है । (=उप्पज्जति) । ध्यान से प्रज्ञा उत्पन्न होती है (=उप्पज्जति) । प्रज्ञा से विमुक्ति होती है (=होति) ।

४. निम्नलिखित पालि-मुहावरों को याद कर लीजिए, तथा उनसे वाक्य बनाइये—

पच्छा-भत्तं = भोजन करने के बाद । पिण्डपातो = भिक्षा । पटिसल्लानं = ध्यान । सम्मोदनीयं कथं साराणीयं वीतिसारेत्वा = कुशल-क्षेम की बातचीत समाप्त करके । पुव्वण्ह-समयं निवासेत्वा = पूर्वाह्न समय पहन कर । पत्त-चीवरं आदाय = पात्र तथा चीवर (कन्या) को लेकर । पिण्डाय पाविसि = भिक्षा के लिए प्रवेश किया । अत्त-मना अभिनन्दि = प्रसन्न होकर अभिनन्दन किया ।

पहला काण्ड

पाँचवाँ पाठ

अव्यय-प्रकरण

(पहला भाग—साधारण प्रयोग)

§ १. अव्यय शब्द सदा 'एक-रूप' रहते हैं। लिङ्ग, वचन, तथा विभक्ति के कारण, उनमें कोई अन्तर नहीं होता है। मोगल्लानाचार्य ने 'अव्यय' का नाम 'असंख्य' रक्खा है; क्योंकि, उसमें संख्या नहीं होती है। "न विज्जते संख्या यस्स तं असंख्यं" मोगलान पञ्जिका ३.२. ।

साधारणतः अव्यय पाँच प्रकार के होते हैं—(१) उपसर्ग, (२) निमित्तार्थक, (३) पूर्वकालिक, (४) तद्धितान्त, और (५) रुढ़ि।

१. उपसर्ग

§ २. उपसर्ग बीस हैं—प, परा, नि, नी, उ, दु, सं, वि, अत्र, अनु, परि, अभि, अधि, पति, सु, आ, अति, अपि, अप, उप। उपसर्ग के लगने पर, क्रिया के अर्थ में कभी तो कुछ विशेषता हो जाती है, कभी भिन्न, और कभी विल्कुल उल्टा ही अर्थ हो जाता है। [देखिए—दूसरा काण्ड, सातवाँ पाठ] जैसे—

जहति = छोड़ता है पजहति = एकदम छोड़ देता है

किरति = विखेरता है विप्किरति = चारों ओर विखेर डालता है

हरति = हरण करता है पहरति = मारता है

गच्छति = जाता है आगच्छति = आता है

१. असंख्ये हि सन्वासं २.१२०—'असंख्य' शब्दों से परे, सभी विभक्तियों का लोप होता है। जैसे—च, वा, एव, एवं।

२. निमित्तार्थक

§ ३. 'यह करने के लिए', इस अर्थ में निमित्तार्थक अव्यय होता है। जैसे—
भोक्तुं गच्छति = भोजन करने के लिए जाता है। कातुं = करने के लिए।
सोतुं = सुनने के लिए। दृष्टुं = देखने के लिये। युञ्जितुं = युद्ध करने के लिए।
वक्तुं = बोलने के लिए। रुञ्जितुं = रोकने के लिए [दिए—पृ० १५२]।

३. पूर्वकालिक

§ ४. 'इस काम को करके', इस अर्थ में पूर्वकालिक अव्यय होता है। जैसे—
विहारं गन्त्वा बुद्धं वन्दति = विहार जा कर बुद्ध को प्रणाम करता है।
कत्वा = करके। सुत्वा = सुन कर। पत्सित्वा = देख कर [दिए—पृ० १५४]।

४. तद्धितान्त

§ ५. नाम तथा सर्वनाम से परे, तद्धित के कुछ प्रत्यय लगने से, अव्यय बन जाता है। जैसे—सब्ब—सर्वव्यत्य = सभी जगह। य—यहि = जहाँ। कि—
कदा = कब। सतं—सततो = सततः [दिए पृ० २१५-२२०]।

५. रुढ़ि

§ ६. रुढ़ि अव्यय प्रधानतः तीन प्रकार के हैं—(क) क्रियाविशेषण,
(ख) संयोजकादि, (ग) विस्मयादिबोधक।

(क) क्रियाविशेषण—कभी कभी क्रियाविशेषण द्वितीया या तृतीया
विभक्ति के एकवचन में रहता है। जैसे—

वेगं गच्छति; वेगेन गच्छति = तेज जा रहा है।

निम्न लिखित अव्यय क्रियाविशेषण की भाँति व्यवहृत होते हैं—

अगतो = सामने

अत्य = यहाँ

अज्ज = आज

अत्यं = विनाश, अदर्शन

अञ्जदत्यु = निश्चय से

अत्र = यहाँ

अतीव = अत्यधिक

अद्वा = निश्चय से

अधुना = इस समय
 अधो = नीचे
 अन्तरा = मध्य में
 अन्तरेण = मध्य में, विना
 अन्तो = मध्य में
 अप्पेव = शायद
 अप्पेव नाम = शायद
 अभिक्खणं = वार वार
 अभिण्हं = वार वार
 अमा = साथ
 अमुत्र = परलोक में
 अलं = वस
 अवस्सं = ज़रूर
 आम = हाँ
 आरका = दूर
 आरा = दूर
 आवि = प्रकट
 इध = यहाँ :
 इंधं = प्रेरणा करना
 इति = ऐसा
 इत्थं = ऐसा
 इदानि = इस समय
 इह = यहाँ
 ईसं = थोड़ा
 उच्चं = ऊँचा
 उद्धं = ऊपर
 उपरि = ऊपर
 एतरहि = अब
 एत्तावता = अब तक

एत्थ = यहाँ
 एव = निश्चय से
 एवं = ऐसे
 एवम्पि = ऐसे भी
 कच्चि = क्या
 कत्थ = कहाँ
 कथं = कैसे
 कथञ्चि = किसी प्रकार
 कदा = कब
 कदाचि = शायद
 कहं = कहाँ
 कामं = निश्चय से
 किं = क्यों
 किञ्चि = कुछ कुछ
 किमु = कैसे
 कित्तावता = कब तक
 कोव = कब तक, कितना
 कुत्थ = कहाँ
 कुदाचनं = कभी
 कुहं = कहाँ
 कुहिञ्चनं = कहीं
 कुत्र = कहाँ
 क्व = कहाँ
 चन = कुछ } अनिश्चय वाचक
 चि = कुछ }
 चिरं = दीर्घकाल
 चिरेण = विलम्ब से
 चिररत्ताय = दीर्घ काल तक
 चिरस्सं = चिरकाल

जातु = कभी, निश्चय से
 तं = उस हेतु से
 तग्ध = निश्चित रूप से
 ततो = उस हेतु से
 तत्थ = वहाँ
 तत्र = वहाँ
 तथरिच = तथैव, वैसे ही
 तथा = वैसे
 तथेव = वैसे ही
 तदा = तब
 तदानि = तब
 तर्हि = वहाँ
 तहं = वहाँ
 ताव = तब तक
 तावता = तब तक
 तिरियं = तिरिछा
 तिरो = छिपा हुआ, उस पार
 तुण्ही = चुप
 तेन = उस हेतु से
 दिट्ठा = प्रसन्नता से, भाग्य से
 दिवा = दिन में
 डुट्ठु = बुरा, बुरी तरह
 दूरा = दूर
 दोतो = रात में
 धुवं = स्थिर, निश्चय
 न = नहीं
 ननु = विरोध सूचक अव्यय, क्यों
 नमो = नमस्कार
 नहि = नहीं

नाना = भिन्न
 नीचं = थोड़ा, नीचा
 नु = शायद, क्यों
 नून = निश्चय से
 नो = नहीं
 पगे = प्रातःकाल
 पतिरूपं = ठीक
 परम्मुत्ता = पीछे की ओर
 परसुवे = परसों
 परितो = चारों ओर
 पसट्ठह = बलात्कार से
 पातु = प्रकट, सामने
 पातो = प्रातःकाल
 पायो = प्रायः
 पुथु = विना
 पुनप्पुनं = बार बार
 पुरतो = सामने
 पुरे = सामने
 पेच्च = परलोक में
 बलवं = प्रबल रूप से
 वहिद्धा = बाहर
 वही = बाहर
 बाहिरा = बाहर
 बाहिरं = बाहर
 मनं = थोड़ा
 मा = नहीं
 मिच्छा = भूठ
 मुधा = वेकार
 मुसा = भूठ

मुहु = वार वार
 यं = जिस कारण से
 यतो = जिस हेतु से
 यत्थ = जिस स्थान पर
 यत्र = जहाँ
 यथत्तं = ऐसा ही
 यथरिव = जैसे, यथैव
 यथा = जैसे
 यथाच्च = जैसे
 यथात्तथं = ऐसा ही
 यथापि = जैसे
 यथाहि = जैसे
 यथैव = जैसे
 यथाहि = जहाँ
 याव = जब तक, जितना
 यावता = जब तक, जितना
 येन = जिस हेतु से
 रत्तं = रात्रि में :
 रहो = गुप्त
 रिते = विना
 लहु = जल्द
 विना = विना
 विय = सदृश
 वे = निश्चय से
 सकिं = एक वार
 सच्छि = प्रत्यक्ष
 सज्जु = शीघ्र, तत्काल
 सदा = सर्वदा

सद्धं = अनुकूल
 सद्धि = साथ
 सनं = सर्वदा
 सनिकं = शीघ्र
 सपदि = शीघ्र, तत्काल
 सव्वतो = चारो ओर
 समन्ततो = चारो ओर
 सनन्ता = चारो ओर
 समं = साथ
 सम्पत्ति = इस समय
 सम्मा = अच्छी तरह
 सयं = स्वयं
 सं = प्रसन्नतापूर्वक
 सह = साथ
 सहसा = अकस्मात्
 स्वे = आगामी कल
 साधु = ठीक
 सामं = स्वयं
 साहु = साधु
 सायं = सायंकाल
 सु = अथवा
 सुट्ठु = अच्छी तरह
 सुवत्थि = कल्याण
 सुवे = कल (आगामी)
 सेय्यथापि = जैसे
 सेय्यथापि नाम = जैसे
 हिय्यो = कल (बीता हुआ)
 हेट्ठा = नीचे

(ख) संयोजकादि

'उद' = किन्तु बुद्धं तरणं गच्छति, उद अञ्जं तरणं ?

'उदाहु' = किन्तु बुद्धं तरणं गच्छति, उदाहु अञ्जं तरणं ?

'किमु' = जीवितकाल्ये पत्ते किमु खीरभोजनं ?

'किमुत' = जीवितकाल्ये पत्ते किमुत खीरभोजनं ?

च = समणो बुद्धं वन्दति च सीलं रक्खति च ।

चे = बुद्धो भवेय्य चे, मारं जेस्सति ।

यदि = यदि बुद्धो भवेय्य, मारं जेस्सति ।

स चे = सचे बुद्धो भवेय्य, मारं जेस्सति ।

(ग) विस्मयादिबोधक

निम्नलिखित विस्मयादि-बोधक अव्यय हैं—अङ्ग = हे। अत्यु = ऐसा हो, ईर्ष्या का निर्देशक। एवं = हाँ। अट्टा = निश्चय से। अम्भो = हे। अरे। अहो = आश्चर्य है। जे = स्त्रियों को सम्बोधन करने में (आजकल गया-पटना जिले में इत्तका रूप 'गे' हो गया है। जैसे गे मैय्या ! गे अय्या ! गे दीदी ! गे दाई !)। धि = विषकार। भो = हे। रे। वे = निश्चय से। साधु = स्वीकार करने के अर्थ में। हंहो = हे। हन्द = प्रेरणा द्योतक। हा = शोक द्योतक। हि = आः। हे = हे।

द्रष्टव्यः—निम्नलिखित अव्ययों का अपना कोई अर्थ नहीं है, किन्तु वे वाक्यालंकार या पादपूर्ति में आते हैं। जैसे—

अस्तु। खो। चे। पन। मग्घे। सुदं। ह

तयो अस्तु धम्मा ज्झिता भवन्ति ! तेन खो पन समयेन ?

५. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

दीपङ्करो नाम जिनो पुरा अहोसि (=थे) । तस्स अपर-भागे कोण्डञ्जो नाम बुद्धो उदपादि (=उत्पन्न हुए) । को नु हासो कि आनन्दो, निच्चं पज्जलिते सति (=होने पर) । यो च पुब्बे पमज्जित्वा (=प्रमाद करके), पच्छा सो न पमज्जति (=प्रमाद करता है); सो इमं लोकं अब्भा मुत्तो चन्दिमा विय पभासेति (=प्रकाशित होता है) । पापं चे पुरिसो कयिरा (=करे), न तं कयिरा (=करे) पुनप्पुनं । पापो पि पस्सति (=देखता है) भद्रं, याव पापं न पच्चति (=फलता है) । यदा च पच्चति (=फलता है) पापं, अथ पापो पापानि पस्सति (=देखता है) । कच्चि ते आवुसो ! खमनीयं ? कच्चि यापनीयं ? कच्चि न किञ्चि दुक्खं ति ? खमनीयं मे आवुसो ! यापनीयं मे आवुसो ! अपि च मे सीसे थोकं दुक्खं ति । लाभा वत मे ! सुलद्धं वत मे ! सत्या च मे भगवा अरहं सम्मा-सम्बुद्धो ति ।

“एवं देवा” ति खो, भिक्खवे ! सारथि विपस्सिस्स कुमारस्स पटिस्सुत्वा (=उत्तर दे कर) भद्धानि यानानि योजापेत्वा (=जुतवा कर) पटि-वेदेसि (=सूचित किया)—“युत्तानि (=जोत लिए गए हैं) खो ते देव ! यानानि, यस्स दानि कालं मञ्जसी” ति (=समभते हैं) । अथ खो विपस्सी कुमारो भद्दं यानं अभिरुहित्वा (=चढ़ कर) भद्देहि यानेहि उय्यान-भूमि निय्यासि (=गये) ।

“अयं पन, सम्म सारथि ! पुरिसो कि कतो, केसा पि’ स्स न यथा अञ्जेसं, कायो पि’ स्स न यथा अञ्जेसं” ति ? ‘एसो खो, देव ! जिण्णो नाम’; न दानि तेन चिरं जीवितव्वं भविस्सती ति (=जीना होगा) ।’

“तेन हि सम्म सारथि ! अलं दानि अज्ज उय्यान-भूमिया, इतो, व अन्ते-पुरं पच्चनियाहीति (=लौटा ले चलो) । धिरत्थु किर भो जाति नाम, यत्र हि नाम जातस्स जरा पञ्जायिस्सतीति (=अनुभव करना पड़ता है) ।

“किन्नु खो सो सम्म सारथि ! महाजन-कायो ति ?” ‘एसो खो, देव ! काल-कतो नामा ति । त्वञ्च देवो मयं च’म्हा सव्वे मरण-धम्मा मरणं अनतीता ति ।

“नहि नून सो ओरको धम्म-विनयो, यत्थ विपस्ती कुमारो पव्वजितो (= प्रव्रजित हुए हैं) । विपस्ती कुमारो पि नाम पव्वजिस्सति, किं अङ्ग पन मयं ति ?” महाजन-कायो विपस्सि बोधिसत्तं अनुपव्वजिसु (= उनके साथ प्रव्रजित हो गए) । ताय सुदं परिस्साय परिवुतो (= घिरा रह) बोधिसत्तो चारिकं चरति (= रमत लगाते थे) ।

“न खो मे'तं पतिहपं, यो'हं आकिण्णो (= भीड़-भड़के में) विहरामि । यन्नूनाहं एको गणस्सा वूपकट्ठो (= अलग) विहरेय्यं ति (= विहार कहें)”—चिन्तेत्वा (= विचार कर), बोधिसत्तो अपरेण समयेण तथरिव विहासि (= विहार करने लगे) । “किच्छं वत अयं लोको आपन्नो जिय्यति च मिय्यति च (= जन्म लेता है और मरता है) । अथ च पन इमस्स दुक्खस्स निस्सरणं नप्प जानाति (= नहीं जानता है) । कुदा त्सु नाम तं पञ्जायिस्सती ति (= जाना जायगा) ?”

अथ खो भगवा कारुञ्जतं पटिच्च बुद्ध-चक्खुना लोकं विलोकेसि (= देखा) । अट्ठा खो भगवा सत्ते सेय्यथापि नाम उप्पलिनियं वा पट्टमिनियं वा पुण्डरीकिनियं वा अप्पेक्कच्चानि उप्पलानि उदके जातानि अन्तोनिमुग्गपोसीनि, अप्पेक्कच्चानि समोदकं ठितानि, अप्पेक्कच्चानि उदका अच्चुग्गम्म ठन्ति अनुपलित्तानि उदकेन । एवमेव खो भगवा अट्ठस (= देखे) सत्ते अप्परजक्खे महारजक्खे ति ।

२. निम्नलिखित अव्ययों के अर्थ लिखिए, और उनको वाक्य में प्रयोग करके दिखाइए—

- (क) चिरस्सं, चिरं, चिरेण, चिररत्ताय
 (ख) कदाचि, ईसं, मनं, चन, चि
 (ग) सह, सद्धिं, समं, अमा
 (घ) त्रिणा, नाना, अन्तरेण, रित्ते, पुयु
 (ङ) सुदं, खो, अस्सु, यग्घ, वे, ह
 (च) यथा, तथा, यथानाम, तथाहि, सेय्यथापि नाम, सेय्यथीदं, एवमेवं, यथरिव, तथरिव, विय
 (छ) आम, साहु, लहु
 (ज) न, नो, अलं, मा

- (ऋ) अघुना, इदानि, दानि, सम्पति
 (ञ) तदानि, तदा, चरहि
 (ट) सायं, अज्ज, सुवे, स्वे, हिय्यो, पातो, पगे
 (ठ) उद्धं, उपरि, हेट्ठा, अघो
 (ड) सन्तिके, सन्धि, आरा, दूरा, आरका
 (ढ) सम्मुखा, परम्मुखा, सं, सामं, सयं, पुरे, अग्गतो, पुरतो
 (ण) सदा, पुनप्पुनं, अभिण्हं, मुहु, अभिक्खणं
-

दूसरा काण्ड

पहला पाठ

क्रिया-प्रकरणा

(पहला भाग—वर्तमान काल)

§ १. क्रिया के अर्थ को प्रकट करने वाले शब्द को धातु (=क्रियत्थ) कहते हैं । जैसे—भू, पठ्, गम्, चञ् इत्यादि ।

रूप बनाने की सुविधा के लिए, सभी धातु ६ श्रेणियों में विभक्त किए गए हैं । प्रत्येक श्रेणी को 'गण' कहते हैं । जैसे—(१) भ्वादि गण, (२) रुधादि गण, (३) दिवादि गण, (४) तुदादि गण, (५) ज्यादि गण, (६) क्यादि गण, (७) स्वादि गण, (८) तनादि गण, और (९) चुरादि गण । [कौन धातु किस गण में है, इसके लिए देखिए—२. परिशिष्ट]

'ति' आदि प्रत्ययों के लगने पर, धातु के रूप में, अपने अपने गण के अनुसार प्रायः कुछ न कुछ परिवर्तन हो जाता है । जैसे—

भ्वादि—पठ—पठति = पढ़ता है । पच—पचति = पकाता है ।

रुधादि—रुध—रुधति = रोकता है । मुच—मुञ्चति = छोड़ता है ।

दिवादि—दिव—दिव्वति = खेलता है । भिद—भिज्जति = टूटता है ।

भा—भायति = ध्यान करता है ।

तुदादि—तुद—तुदति = दुःखता है । लिख—लिखति ।

ज्यादि—जि—जिनाति = जीतता है । जा—जानाति = जानता है ।

क्यादि—की—किणाति = खरीदता है । चु—सुणाति = सुनता है ।

स्वादि—सु—सुणोति = सुनता है । वु—वुणोति = ढक लेता है ।

तनादि—तन—तनोति = फँलाता है । कर—करोति ।

चुरादि—चुर—चोरेति=चोरी करता है। अच्च—अच्चयति=पूजा करता है। [देखिए—तीसरा काण्ड : पहला पाठ]

सभी काल में, धातु के रूप—'परस्स पद' और 'अत्तनो पद'—दो तरह के होते हैं। साधारणतः, किसी भी जगह, विकल्प से परस्स पद या अत्तनो पद के रूप प्रयुक्त हो सकते हैं; किंतु, व्यवहार में अत्तनो पद के रूप बहुत कम देखे जाते हैं।

वर्तमान काल^१

पच (=पकाना)

परस्स पद

	एक वचन	अनेक वचन
पठम पुरिस (वह)	पच्चति	(वे) पच्चन्ति
मज्झिम पुरिस (तू)	पच्चसि	(तुम) पच्चथ
उत्तम पुरिस (मैं)	पच्चामि ^२	(हम) पच्चाम ^३

१. वत्तमाने तिअन्ति, सिथ, मिम; ते अन्ते, से व्हे, ए म्हे ६.१—
वर्तमान काल में, (सभी गण के) धातु से परे ये प्रत्यय आते हैं—

परस्स पद

	एक वचन	अनेक वचन
पठम पुरिस	ति	अन्ति
मज्झिम पुरिस	सि	थ
उत्तम पुरिस	मि	म

अत्तनो पद

	एक वचन	अनेक वचन
पठम पुरिस	ते	अन्ते
मज्झिम पुरिस	से	व्हे
उत्तम पुरिस	ए	म्हे

अत्तनो पद

ए क व च न

अ ने क व च न

पठम पुरिस पचते

पचन्ते

म जिम्म म पुरिस पचसे

पचव्हे

उत्तम पुरिस पचे

पचाम्हे

भ्वादि गण के कुछ धातु—अच्च (अच्चति) = पूजना । अज्ज (अज्जति) = कमाना । अट (अटति) = घूमना । अद (अदति) = खाना । अय (अयति) = वचाना । अस (अत्थि) = होना । इक्ख (इक्खति) = देखना । एस (एसति)

२. हि मि मे स्व स्स ६.५७—‘हि’, ‘मि’ तथा ‘म’ विभक्तियों के परे होने से, पूर्वस्थित अकार का आकार हो जाता है । जैसे—पच + हि = पचाहि । पच + मि = पचामि । पच + म = पचाम ।

३. ‘अस’ धातु के रूप निम्न प्रकार होंगे—

ए क व च न

अ ने क व च न

पठम

*अत्थि

सन्ति†

म जिम्म म

‡असि

अत्थ

उत्तम

§अस्मि, अम्हि

अम्ह, अस्म

*तस्स थो ६.५२—‘अस’ धातु से परे, ‘त’ का ‘थ’ होता है । जैसे—अस + ति = अस + थि = (पररूपमयकारे व्यञ्जने ५.६५—‘य’ को छोड़, कोई दूसरा व्यञ्जन परे हो, तो धातु का अन्त्य व्यञ्जन भी वही हो जाता है) अत्थि = (चतुर्थ्य द्विषेस्वेसं ततियपठमा १.३५—देखिए) अत्थि ।

† न्त मा ना न्ति यि युं स्वा दि लो पो ५.१३०—‘न्त’, ‘मान’, ‘अन्ति’, ‘अन्तु’, ‘ईय’, तथा ‘इयुं’ प्रत्ययों के आने से, ‘अस’ धातु का केवल ‘स’ रह जाता है । जैसे—सन्तो । समानो । अस + अन्ति = सन्ति । सन्तु । सिया । सियुं ।

‡ सि हि स्व ट् ६.५३—‘सि’ तथा ‘हि’ प्रत्ययों के आने से, ‘अस’ धातु का ‘अ’ आदेश हो जाता है । जैसे—

अस + सि = अ + सि = असि । अहि ।

=खोजना । कंख (कंखति) =चाहना । कड्ढ (कड्ढति) =काढ़ना । कन्द
 (कन्दति) =रोना । कम्प (कम्पति) =कांपना । कोळ (कोळति) =खेलना । गम
 (गच्छति, घम्मति) =जाना । चज (चजति) =छोड़ना । जर (जीरति, जीयति)
 =पुराना होना । जल (जलति) =जलना । जि (जयति) =जीतना । जीव
 (जीवति) =जीना । ठा (तिट्ठति) =ठहरना । तर (तरति) =पार करना ।
 दह (दहति, डहति) =जलाना । दंस (दंसति) =डसना । दा^१ (दाति) =
 देना । दिस्स (पस्सति) =देखना । पा (पिवति) =पीना । ब्रू^१ (ब्रवीति, ब्रूति,
 'आह) =बोलना । भू (भवति) =होना ।

४. दा स्स दं वा मि मे स्व द्वि स्ते ६.२२—द्वित्व न होने पर, 'दा' धातु
 का—उससे परे 'मि' तथा 'म' विभक्तियों के आने से—विकल्प से 'दं' आदेश
 हो जाता है । जैसे—दा + मि = दं + मि = दम्मि । दम्म ।

५. ब्रू तो ति स्सी ञ् ६.३६—'ति' प्रत्यय आने से, 'ब्रू' धातु से परे, विकल्प
 से 'ई' का आगम होता है । जैसे—ब्रू + ति = ब्रू + ई + ति = ब्रवीति ।
 ब्रूति ।

यु व ण्णान मे ओ प्प च्च ये ५.८२—प्रत्यय आने से, धातु के अन्त्य 'इ'
 का 'ए', तथा 'उ' का 'ओ' हो जाता है । जैसे—

ब्रू + ति = ब्रू + ई + ति = ब्रवीति ।

ए ओ न म य वा स रे ५.८६—स्वर परे हो, तो पूर्वस्थित 'ए' का 'अय',
 तथा 'ओ' का 'अव' हो जाता है । जैसे—

ब्रू + ति = ब्रू + ई + ति = ब्रव + ई + ति = ब्रवीति

६. त्यन्ती नं टटु ६.२०—'ब्रू' धातु का 'आह' आदेश हो जाता है; और
 उससे परे, 'ति' तथा 'अन्ति' का क्रमशः 'अ' तथा 'उ' आदेश होता है । जैसे—

षु मि मानं वा म्हि म्हा च ६.५४—'अस' धातु से परे, 'मि' तथा 'म'
 विभक्तियों का विकल्प से क्रमशः 'म्हि' तथा 'म्ह' आदेश हो जाता है ; और,
 'अस' धातु का 'अ' रह जाता है । जैसे— अस + मि = अ + मि = अ + म्हि =
 अम्हि; अस्मि । अस + म = अ + म्ह = अम्ह; अस्म ।

ब्रू + ति = आह + ति = आह + अ = आह । ब्रू + अन्ति = आह + अन्ति =
आह + उ = आहु ।

यु व ण्णा न मि ड् व ड् सरे ५.१३६—स्वर परे होने से, धातु के अन्त्य 'इ'
तथा 'उ' का कहीं कहीं क्रमशः 'इय' तथा 'उव' हो जाता है ।

जैसे—वेदि + अ + ति = वेदियति । ब्रू + अन्ति = ब्रुवन्ति ।

वर्तमान काल में नवो गणों के धातु के रूप

धातु	गण	पठम पुरित	
		एक वचन	अनेक वचन
१. भू (=होना)	भ्र्वादि	भवति	भवन्ति
ह्र (=होना)	„	होति	होन्ति
नी (=ले जाना)	„	नेति, नयति	नेन्ति, नयन्ति
या (=जाना)	„	याति	यन्ति
पच (=पकाना)	„	पचति	पचन्ति
२. रुध (=रोकना)	रुधादि	रुन्धति	रुन्धन्ति
३. दिव (=खेलना)	दिवादि	दिव्यति	दिव्यन्ति
भा (=ध्यान करना)	„	भायति	भायन्ति
४. तुद (=पीड़ा देना)	तुदादि	तुदति	तुदन्ति
५. जि (=जीतना)	ज्यादि	जिनाति	जिनन्ति
६. की (=खरीदना)	क्यादि	किणाति	किणन्ति
७. सु (=सुनना)	स्त्रादि	सुणोति	सुणोन्ति
८. तन (=फैलाना)	तनादि	तनोति	तनोन्ति
९. चुर (=चोरी करना)	चुगादि	चोरेति, चोरयति	चोरेन्ति, चोरयन्ति
कथ (=कहना)	„	कथेति, कथयति	कथेन्ति, कथयन्ति
भाप (=जलाना)	„	भापेति, भापयति	भापेन्ति, भापयन्ति

नोट—बहुत से ऐसे धातु हैं, जिनके रूप 'न्त', 'मान' तथा 'ति' आदि जाते हैं। जैसे—गम—घम्मन्तो, घम्मानो, घम्मति। कर—करोति, कथिरति, ५

कैसे होंगे, यह निम्न तालिका से प्रकट होगा—

मज्झिम पुरिस		उत्तम पुरिस	
एक वचन	अनेक वचन	एक वचन	अनेक वचन
भवसि	भवथ	भवामि	भवाम
होसि	होथ	होमि	होम
नेसि, नयसि	नेथ, नयथ	नेमि, नयामि	नेम, नयाम
यासि	याथ	यामि	याम
पचसि	पचथ	पचामि	पचाम
रुन्धसि	रुन्धथ	रुन्धामि	रुन्धाम
दिद्वसि	दिद्वथ	दिद्वामि	दिद्वाम
भायसि	भायथ	भायामि	भायाम
तुदसि	तुदथ	तुदामि	तुदाम
जिनासि	जिनाथ	जिनामि	जिनाम
किणासि	किणाथ	किणामि	किणाम
सुणोसि	सुणोथ	सुणोमि	सुणोम
तनोसि	तनोथ	तनोमि	तनोम
चोरेसि, चोरयसि	चोरेथ, चोरयथ	चोरेमि, चोरयामि	चोरेम, चोरयाम
कथेसि, कथयसि	कथेथ, कथयथ	कथेमि, कथयामि	कथेम, कथयाम
भापेसि, भापयसि	भापेथ, भापयथ,	भापेमि, भापयामि	भापेम, भापयाम

प्रत्ययों के आने से कुछ बदल जाते हैं। कभी कभी उनके विल्कुल नए रूप भी हो चुक्यति, कश्ते इत्यादि। [देखिए—तीसरा काण्ड : पहला पाठ]

६. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

वेरेन वेरानि न सम्मन्ति । वातो दुव्वलं रुक्खं पसहति । पापकारी सोचति । पुञ्जकारी मोदति । पापकारी तप्पति । पुञ्जकारी नन्दति । धीरा निव्वाणं फुसन्ति । भायी विपुलं सुखं पप्पोति । पण्डिता पमादं नुदन्ति । देवा अप्पमादं पसंसन्ति । भानेन पञ्जा परिपूरति । मारो मग्गं न विन्दति । भिक्खु धम्मं विजानाति । वालो मिच्छा मञ्जति । वालस्स डच्छा वड्ढति । बुद्धस्स सावको सक्कारं न अभिनन्दति । सप्पुरिसा सव्वत्थ वजन्ति । पण्डिता कल्याणे मित्ते भजन्ति । विसोकस्स परिळाहो न विज्जति । तापसो अग्गि वने परिचरति । भिक्खु धम्म-पदं भासति । मनो पापस्मि न रमते । सव्वे दण्डस्स तसन्ति । सव्वे मच्चुनो भायन्ति । यो भूतानि विहिंसति सो सुखं न लभते । यो अञ्जं दुस्सति, सो दुक्खं निगच्छति । इदं रूपं भिज्जति । सरीरं जरं उपेति । राजरथा जीरन्ति ।

२. पालि में अनुवाद कीजिए—

भिक्षु निर्वाण चाहता है । लड़के लोग धर्म सुनते हैं । ध्यानी लोग ध्यान करते हैं । हम लोग धर्म जानते हैं । भगवान विहरते हैं । तुम लोग हँस रहे हो । सूर्य चमक रहा है । लड़के किताव पढ़ रहे हैं । अवर से वरी को जीतता है । अक्रोध से क्रोध को जीतता है । धर्म से अधर्म को जीतता है । धर्म से पाप को छोड़ता है । ध्यान में प्रयत्न करता है । दुःख छोड़ता है । बुद्ध में श्रद्धा करता है । मैं धर्म को सुनता हूँ । सङ्घ के शरण जाता हूँ । चैतन्य (= सति) को बढ़ाता है । प्रमाद को छोड़ता हूँ । प्रश्न पूछता हूँ । ब्रह्मा आते हैं । तू भगवान को नमस्कार करता है । भगवान धर्म-चक्र घमाते हैं (पवत्तेति) । बुद्ध देवताओं को धर्म उपदेश करते हैं । ब्राह्मण लोग पाप नहीं करते हैं । सज्जन कुशल धर्मों का संग्रह करते हैं (उपसम्पादेन्ति) । स्वर्ग को चले जाते हैं । बुद्ध निर्वाण प्राप्त करते हैं (निव्वायति) । श्रावक लोग रोते हैं, चिल्लाते हैं, कलपते हैं । बुद्ध की पूजा करते हैं । मरते हैं । स्वर्ग को चले जाते हैं ।

३. निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाइए—

नाम-पदानि—गहपति, वन-सण्डो, रुक्खो, फलं, गामो, दारको, तापसो, तपं ।

क्रिया-पदानि—पटिवसति-न्ति, चरति-न्ति, पतति-पतन्ति, आरोहति-न्ति, खादति-न्ति । [जैसे, रुक्मा फलानि पतन्ति । दारका रुक्मं आरोहन्ति । गहपतयो गामे पटिवसन्ति ।]

४. निम्नलिखित क्रिया-पदों से वाक्य बनाइए—

विहरति=प्रजा तथा चैतन्य की भावना में रहता है, विचरता है ।

उपसङ्गमति=पास जाता है ।

अभिवादेति=प्रणाम करता है ।

निसीदति=बैठता है ।

सम्मोदति=कुशल क्षेम पूछता है ।

वीक्षितारेति=व्यतीत करता है ।

अधिवासेति=स्वीकार करता है ।

समादियति=ग्रहण करता है ।

वट्टति=(उचित) होता है ।

संवत्तति=(समर्थ) होता है ।

पटिपज्जति=लग जाता है ।

पच्चस्सुगाति=जवाब देता है ।

पटिभाति (मं)=मुझे भान होता है ।

दूसरा काण्ड

दूसरा पाठ

सर्वनाम-प्रकरण

(दूसरा भाग)

‘अम्ह’ (=मैं) और ‘तुम्ह’ (=तू) शब्दों के रूप, तीनों लिङ्गों में, एक ही समान होते हैं। जैसे—अहं बुद्धपियो नाम माणवको। अहं धम्मदिन्ना नाम माणविका। त्वं मम पियो भाता। त्वं मम पिया नारी इत्यादि।

§ ७. अम्ह (=मैं)

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	अहं ^१	मयं, अस्मा, अम्हे ^२ , नो ^३
दुतिया	मं, ममं ^३	अम्हं, अम्हाकं, अम्हे, ^४ नो
ततिया	मया, ^५ मे ^६	अम्हेहि, अम्हेभि, नो
चतुत्थी	मम, ^७ मय्हं, अम्हं, ममं, ^८ मे	अस्माकं अम्हाकं, ^९ अम्हं, अम्हे, नो
पञ्चमी	मया ^५	अम्हेहि, अम्हेभि
छट्ठी	मम, मय्हं, अम्हं, ममं, मे	अम्हाकं, अम्हं, ^९ अम्हे, नो
सप्तमी	मयि ^{१०}	अस्मासु ^{११} अम्हेसु

१. सिम्हहं २.२१३—‘सि’ विभक्ति के साथ, ‘अम्ह’ शब्द का रूप ‘अहं’ होता है।

२. मयमस्माम्हस्स २.२११—‘यो’ विभक्ति के साथ, ‘अम्ह’ शब्द के रूप ‘मयं, अस्मा, अम्हे’ होते हैं।

३. योनं हिस्वपञ्चम्या वोनो २.२३५—पठमा, दुतिया, ततिया, चतुत्थी तथा छट्ठी के बहुवचन में, ‘अम्ह’ शब्द का लघुरूप ‘नो’, तथा ‘तुम्ह’ शब्द का ‘वो’ होता है।

अपादादो पदतेकवाक्ये २.२३४—किसी गाथा के पाद के आदि में लघुरूप का प्रयोग नहीं होता है। वाक्य में, किसी पद के बाद ही, (अर्थात्, वाक्य के आदि में नहीं) ये रूप प्रयुक्त हो सकते हैं। जैसे—

तिष्ठ्य वो । तिष्ठाम नो । पस्तति वो—वह तुमको देखता है । पस्तति नो—वह हम लोगों को देखता है । दीयते वो—तुम लोगों को दिया जाता है । दीयते नो । धनं वो—तुम लोगों का धन है । धनं नो । कतं वो—तुम लोगों के द्वारा किया गया है । कतं नो ।

ते मे नासे २.२३६—‘ना’ तथा ‘स’ विभक्तियों के साथ, ‘अम्ह’ शब्द का लघुरूप ‘भि’, तथा ‘तुम्ह’ शब्द का ‘ति’ होता है। जैसे—

कतं ते—तेरे द्वारा किया गया है । कतं मे । दीयते ते—तुम्हें दिया जा रहा है । दीयते मे । धनं ते—धन तेरा है । धनं मे ।

अन्वादेशे २.२३७—एक वार ‘अम्ह’ या ‘तुम्ह’ शब्द का प्रयोग कर, उसे उसी सिलसिले में (=अन्वादेश में) फिर भी कहना हो, तो लघुरूप का ही प्रयोग होता है। जैसे—गामो तुम्हं परिग्गहो, अथ जनपदो वो परिग्गहो—गाँव तुम्हारी मिलकियत है, और जनपद भी तुम्हारी मिलकियत है।

सपुत्रा पठमन्ता वा २.२३८—यदि पूर्व में कोई प्रथमान्त शब्द विद्यमान हो, तो अन्वादेश में प्रयुक्त ‘अम्ह’ या ‘तुम्ह’ शब्दों का लघुरूप विकल्प से होता है। जैसे—गामे पटो अम्हाकं, अयो नगरे कम्बलो नो—अयो नगरे कम्बलो अम्हाकं—गाँव में हम लोगों के लिए कपड़ा है, और नगर में कम्बल ।

नचवाहाहेवयोगे २.२३९—‘न’, ‘च’, ‘वा’, ‘हा’, ‘हि’, तथा ‘एव’ शब्दों के योग में, ये लघुरूप नहीं होते हैं। जैसे—गामो तव च परिग्गहो ।

दस्तनत्थेनालोचने २.२४०—‘आलोचन’ शब्द को छोड़, दूसरे दर्शनार्थ शब्दों के योग में लघुरूप नहीं होते हैं। जैसे—गामो तुम्हे—अम्हे उद्दिस्तागतो—गाँव तुम्हें—हमें देखने आया है ।

आलोचन शब्द के साथ लघुरूप होता है—गामो वो—नो आलोचेति ।

आमन्तणं पुत्रमसन्तं व २.२४१—सम्बोधन के बाद, ‘तुम्ह’ या ‘अम्ह’ शब्दों का प्रयोग, ‘अन्वादेश’ नहीं समझा जाता है। अतः, वहाँ लघुरूप नहीं होता है। जैसे—देवदत्त ! तव परिग्गहो ।

§ ८. तुम्ह (=त्)

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठ मा	त्वं, तुवं ^{१२}	तुम्हे, वो
डु ति या	तं, तवं, तुवं, त्वं	तुम्हं तुम्हाकं, तुम्हे, वो

बहु सु वा २.२४३—बहुत जगह, विकल्प से लघुरूप होता भी है। जैसे—
ब्राह्मणा गुणवन्तो ! तुम्हाकं परिग्गहो—वो परिग्गहो ।

४. अम्हि तं मं तवं ममं २.२२६—‘अं’ विभक्ति के साथ, ‘अम्ह’ शब्द के रूप ‘मं, ममं’, तथा ‘तुम्ह’ शब्द के रूप ‘तं, तवं’ होते हैं ।

५. डु ति ये यो म्हि च २.२३३—‘डुतिया’ में, ‘यो’ विभक्ति के साथ, ‘अम्ह’ शब्द के रूप ‘अम्हं, अम्हाकं, अम्हे’, तथा ‘तुम्ह’ शब्द के रूप ‘तुम्हं, तुम्हाकं, तुम्हे’ होते हैं ।

६. ना स्मा सु त या म या २.२३०—‘ना’ तथा ‘स्मा’ विभक्तियों के साथ, ‘अम्ह’ शब्द का रूप ‘मया’, तथा ‘तुम्ह’ शब्द का रूप ‘तया’ हो जाता है ।

७. त व म स तु य्हं म य्हं से २.२३१—‘स’ विभक्ति के साथ, ‘अम्ह’ शब्द के रूप ‘मम, मय्हं’, तथा ‘तुम्ह’ शब्द के रूप ‘तव, तुय्हं’ होते हैं ।

८. नं से स्व स्मा कं म मं २.२१२—‘नं’ तथा ‘स’ विभक्तियों के साथ, ‘अम्ह’ शब्द के रूप क्रमशः ‘अस्माकं, अम्हाकं; तथा ममं, मम’ होंगे ।

९. ङं डा कं नम्हि २.२३२—‘नं’ विभक्ति के साथ, ‘अम्ह’ शब्द के रूप ‘अम्हं, अम्हाकं’, तथा ‘तुम्ह’ शब्द के रूप ‘तुम्हं, तुम्हाकं’ होते हैं ।

१०. स्मि म्हि तु म्हा म्हां नं त यि म यि २.२२८—‘स्मि’ विभक्ति के साथ, ‘अम्ह’ शब्द का रूप ‘मयि’, तथा ‘तुम्ह’ शब्द का रूप ‘तयि’ होता है ।

११. सु म्हा म्ह स्सा स्मा २.२०५—‘सु’ विभक्ति आने से, ‘अम्ह’ शब्द का विकल्प से ‘अस्मा’ आदेश होता है। जैसे—अस्मासु। अम्हेसु। ‘भत्तिरस्मासु सा तव’।

१२. तुम्ह स्स तुवं त्व म्हि च २.२१४—‘सि’ तथा ‘अं’ विभक्तियों के साथ, ‘तुम्ह’ शब्द के रूप ‘त्वं, तुवं’ होते हैं ।

त ति या	त्वया, ^{१३} तया, ते	तुम्हेहि, तुम्हेभि, वो
च तु त्यौ	तव, तुम्हं, तुम्हं, ते	तुम्हाकं, तुम्हे, वो
पञ्च मी	त्वया, तया, त्वम्हा ^{१४}	तुम्हेहि, तुम्हेभि
छ द्ठी	तव, तुम्हं, तुम्हं, ते	तुम्हाकं, तुम्हे, वो
स त्त मी	त्वयि, तयि	तुम्हेसु

§ ६. एत (=यह)

पुल्लिङ्ग

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठ मा	एतो	एते
द्वु ति या	एतं, एनं ^{१५}	एते, एने
त ति या	एतेन	एतेहि, एतेभि
च तु त्यौ	एतस्स	एतेसं, एतेसानं
पञ्च मी	एतम्हा, एतस्मा	एतेहि, एतेभि
छ द्ठी	एतस्स	एतेसं, एतेसानं
स त्त मी	एतम्हि, एतस्मि	एतेसु

१३. तयातयीनं त्व वा तस्स २.२१५—‘तुम्ह’ शब्द के रूप ‘तया’ तथा ‘तयि’ के तकार का विकल्प से ‘त्व’ हो जाता है। जैसे—त्वया, तया। त्वयि, तयि।

१४. स्माम्हि त्वम्हा २.२१६—‘स्मा’ विभक्ति के साथ, ‘तुम्ह’ शब्द का रूप विकल्प से ‘त्वम्हा’ होता है।

१५. इमेतानमेनान्वादेसे द्वुतियायं २.१६६—‘द्वुतिया’ विभक्ति में, ‘इम’ तथा ‘एत’ शब्दों का, कथितानुकथित होने से, ‘एन’ आदेश हो जाता है। जैसे—इमं भिक्खुं विनयमज्जापय, अयो एनं धम्ममज्जापय। इमे भिक्खू विनयमज्जापय, अयो एने धम्ममज्जापय। एतं भिक्खुं विनयमज्जापय, अयो एनं धम्ममज्जापय। एते भिक्खू विनयमज्जापय अयो एने धम्ममज्जापय।

नपुंसक लिङ्ग

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठ मा	एत्तं	एते, एतानि
डु ति या	एत्तं	एते, एतानि

शेष पुल्लिङ्ग के समान

स्त्रीलिङ्ग

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठ मा	एसा	एता, एतायो
डु ति या	एत्तं	एता, एतायो
त ति या	एताय	एताहि, एताभि
च तु त्थी	एतिस्साय, " एतिस्सा, " एताय	एतासं, एतासानं
पञ्च मी	एताय	एताहि, एताभि
छट्ठी	एतिस्साय, एतिस्सा, एताय	एतासं, एतासानं
सत्त मी	एतिस्सं, " एतस्सं, एतासं	एतासु

§ १०. इम (= यह)

पुल्लिङ्ग

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठ मा	अयं ^{१७}	इमे
डु ति या	इमं	इमे

१६. स्सं स्सा स्सा ये स्वि त्त रे कञ्जे ति मा न मि २.५४—'स्सं', 'स्सा' तथा 'स्साय' से पूर्व, 'इतर', 'एक', 'अञ्ज', 'एत' तथा 'इम' शब्दों के अन्त्य स्वर का 'इ' होता है। जैसे—

इतरिस्सं, इतरिस्सा । एकिस्सं, एकिस्सा । अञ्जिस्सं, अञ्जिस्सा । एतिस्सं, एतिस्सा, एतिस्साय । इमिस्सं, इमिस्सा, इमिस्साय ।

१७. सि म्ह न पुंस क स्सा यं २.१२६—पुल्लिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग में 'सि'

	ए क व च न	अ ने क व च न
त ति या	अनेन, ^{१८} इमिना	एहि, ^{१९} एभि, इमेहि, इमेभि
चतुर्थी	अस्स, इमस्स	एसं, ^{१९} एसानं, इमेसं, इमेसानं
पञ्चमी	अस्मा, इमस्मा, इमम्हा	एहि, एभि, इमेहि, इमेभि
छट्ठी	अस्स, इमस्स	एसं, एसानं, इमेसं, इमेसानं
सप्तमी	अस्मिं, इमम्हि, इमस्मिं	एसु, इमेसु

नपुंसक लिङ्ग

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठमा	इदं, ^{१९} इमं	इमे, इमानि
द्वितीया	इदं, इमं	इमे, इमानि

शेष पुल्लिङ्ग के समान

स्त्रीलिङ्ग

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठमा	अयं ^{१९}	इमा, इमायो
द्वितीया	इमं	इमा, इमायो

विभक्ति के साथ, 'इम' शब्द का रूप 'अयं' होता है। जैसे—अयं पुरिसो। अयं इत्यो।

१८. ना म्हे नि मि २.१२८—पुल्लिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग में, 'ना' विभक्ति आने से, 'इम' शब्द का 'अन' तथा 'इमि' आदेश हो जाता है। जैसे—अनेन। इमिना।

१९. इ म स्ता नित्थियं टे २.१२७—'सु', 'नं' तथा 'हि' विभक्तियों के आने से, पुल्लिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग में, 'इम' शब्द का विकल्प से 'ए' आदेश होता है। जैसे—एसु, इमेसु। एसं, इमेसं। एहि, इमेहि।

२०. इ म स्सि दं वा २.२०३—'अं' तथा 'सि' विभक्तियों के साथ, 'इम' शब्द का रूप विकल्प से 'इदं' होता है।

	ए क व च न	अ ने क व च न
त ति या	इमाय	इमाहि, इमाभि
च तु त्थी	अस्ताय, अस्ता, इमिस्ताय, इमिस्ता, इमाय	इमासं, इमासानं
प ञ्च मी	इमाय	इमाहि, इमाभि
छ ट्ठी	अस्ताय, अस्ता, इमिस्ताय, इमिस्ता, इमाय	इमासं, इमासानं
स त्त मी	अस्तं, इमिस्तं, इमायं	इमासु

§ ११. अमु (=वह)

पुल्लिङ्ग

	ए क व च न	अ ने क व च न
प ठ मा	असु, ^{११} अमुको	अमू, ^{१२} अमुयो
दु ति या	अमुं	अमू, अमुयो
त ति या	अमुना	अमूहि, अमूभि
च तु त्थी	अमुस्तं ^{१३}	अमूसं, अमूसानं
प ञ्च मी	अमुना, अमुन्हा, अमुस्मा	अमूहि, अमूभि
छ ट्ठी	अमुस्त	अमूसं, अमूसानं
स त्त मी	अमुम्हि, अमुस्मिं	अमूसु

२१. म स्ता मु स्त २.१३१—पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग में, 'सि' विभक्ति आने से, 'अमु' शब्द के 'म' का 'स' हो जाता है। जैसे—असु पुरिसो। असु इत्यी।

के वा २.१३२—'क' का आगम होने से भी, 'अमु' शब्द के 'म' का विकल्प से 'स' हो जाता है। जैसे—असुको, अमुको। असुका, अमुका। असुकं, अमुकं। असुकानि, अमुकानि।

२२. लो पो मु स्मा २.८८—पुल्लिङ्ग में, 'अमु' शब्द से परे, 'यो' विभक्ति का लोप हो जाता है। जैसे—अमू पुरिसा आगच्छन्ति। अमू पुरिसे पस्त।

२३. न नो स स्स २.८९—'अमु' शब्द से परे, 'स' विभक्ति का 'नो' आदेश नहीं होता है। जैसे—अमुस्स ['अमुनो' नहीं होगा]।

नपुंसक लिङ्ग

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठ मा	अद्ं ^{१६} , अमुं	अमू, अमूनि
डु ति या	अद्ं ^{१६} , अमुं	अमू, अमूनि
शेष पुल्लिङ्ग के समान		

स्त्रीलिङ्ग

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठ मा	अमु, अमु	अमू, अमुयो
डु ति या	अमुं	अमू, अमुयो
त ति या	अमुया	अमूहि, अमूनि
च तु त्यी	अमुस्ता, अमुया	अमूत्तं, अमूस्तानं
प ङ्च मी	अमुया	अमूहि, अमूनि
छ ट्ठी	अमुस्ता, अमुया	अमूत्तं, अमूस्तानं
स त्त मी	अमुत्तं, अमुयं	अमूसु

२४. अमुस्ता द्ं २.२०४—नपुंसक लिङ्ग में, 'अं' तथा 'त्ति' विभक्तियों के साथ, 'अमु' शब्द का रूप विकल्प से 'अद्ं' हो जाता है ।

७. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

अम्हे बुद्धं सरणं गच्छाम। अम्हाकं बुद्धो, अम्हाकं धम्मो; अम्हाकं सङ्घो। तुम्हे कल्याणे मित्ते भजथ। इमे, धम्मा होन्ति। इमस्स भिक्खुनो इमं अप्पमाद-फलं होति। तुम्हे एवं आजानाथ। तुम्हेहि कुलेसु चारित्तं न आपज्जितव्वं। इमेहि अङ्गेहि समन्नागतो भद्रो होति। एतं अत्थं विजानाति। एतदवोच (एतं—अवोच)। अयं भिक्खु अमुस्मिं अरञ्जे विहरति। इमिस्सा भिक्खुत्तिया अमूहि भिक्खुनीहि सिद्धिं सयनासनो अत्थि। अदुं कम्मं, अमूनि कम्मानी च, सव्वानि तानि पहात्तव्वानि। अमुया पञ्जाय एसो विपाको होति। असु भिक्खु, असु सामणरो च, अदुं अरञ्जं गच्छन्ति। असु गहपतानी अदुं कम्मं करोति। इमेसानं धम्मानं अयं विपाको होति। अम्हे च तुम्हे च, अदुं अरञ्जं गत्त्वा, एताय भावनाय, विहरथ। अम्हाकं च तुम्हाकं च चित्तं, इमस्मिं अमुस्मिं वा भान्ने पत्तिट्ठापेतुं वट्टति।

२. पालि में अनुवाद कीजिए—

हम लोग प्राण नहीं मारते हैं। तुम लोगों के आचरण को हमारे आचार्य (आचरियो) पसन्द करते हैं। हमारी किताब तुम्हारे घर में है। इन भिक्षुओं का विहार उन मनुष्यों के ग्राम में है। बुद्ध इन भिक्षुओं से पूजित हैं। हमारा बुद्ध, हमारा धर्म, हमारा संघ है। उन ब्राह्मणों के द्वारा बुद्ध के वे सब धर्म-उपदेश (धम्मदेसनायो) सुने गए हैं (सुतायो)। उनका धर्म तथा हमारा धर्म एक ही है। किसका धर्म अच्छा है? बुद्धों का शासन ही हमारा धर्म है। सब बुद्धों का एक ही धर्म होता है। इन धर्मों का एक ही निदान होता है।

३. निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाइए—

सव्वनाम-पदानि—अम्हाकं, तुम्हाकं, अम्हेहि, तुम्हेहि, एसो, इमानि, असु, अदुं, इमिस्सा, इमासु, अमूसानं, एतानि।

नाम-पदानि—पोत्थकं, गामो, पुत्तो, रक्खो, दारको, दारिका, धम्मो।

धातु—पठ=पढ़ना, गम=जाना, आ+रुह=चढ़ना, ओ+रुह=उतरना।

४. निम्नलिखित उदाहरणों में, 'ते', 'वो', 'नो' का प्रयोग क्यों नहीं होता ?

अम्हाकं भगवा अम्हे च तुम्हे च धम्मं देसेति अम्हाक मेव हिताय सुखाय।
अम्हाकं हि भगवा सत्या धम्म-राजा।

दूसरा काण्ड

तीसरा पाठ

क्रिया-प्रकरण

(दूसरा भाग—भविष्यत्काल)

परस्सपद

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठ म पुरि स	पचिस्सति ^१	पचिस्सन्ति
म जिह्म म पुरि स	पचिस्ससि	पचिस्सथ
उत्त म पुरि स	पचिस्सामि	पचिस्साम

१. भ वि स्स ति स्तति स्सन्ति, स्ससि स्सथ, स्सामि स्साम; स्सते स्सन्ते, स्ससे स्सव्हे, स्सं स्साम्हे ६.२—भविष्यत्काल में, धातु से परे ये प्रत्यय होते हैं। जैसे—पचिस्सति, पचिस्सन्ति इत्यादि।

ना मे ग र हा वि म्ह ये सु ६.३—यदि निन्दा या विस्मय के अर्थ में 'नाम' शब्द प्रयुक्त हो, तो भी धातु से परे ये प्रत्यय होते हैं। जैसे—निन्दा में—“इमे हि नाम कल्याणघम्मा पटिजानिस्सन्ति” = ये अपने को बड़ा कल्याण-कर धर्म वाले बताते हैं ! “न हि नाम भिक्खवे ! तस्स भोघपुरिसस्स पाणेषु अनुद्दया भविस्सति” भिक्षुओ ! उस निकम्मे आदमी को जीवों के प्रति तनिक भी दया नहीं है ! “कथं हि नाम सो भिक्खवे ! भोघपुरिसो सव्वमत्तिकामयं कुट्टिकं करिस्सति” = भिक्षुओ ! वह निकम्मा आदमी, विलकुल मिट्टी की कुट्टिया क्यों बनाता है ! “तत्थ नाम त्वं भोघपुरिस ! मया विरागाय धम्मे देसिते सरागाय चेत्तेस्ससि” = अरे निकम्मा आदमी ! जो मैं विराग के लिए धर्म का उपदेश करता हूँ, उसे तू राग वाला समझता है !

अत्तनोपद

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठम पुरिस	पचिस्सते	पचिस्सन्ते
मज्झिम पुरिस	पचिस्ससे	पचिस्सन्हे
उत्तम पुरिस	पचिस्सं	पचिस्साम्हे

§ २. भविष्यत्काल में कुछ विशेष धातुओं के रूप—कर—करिस्सति; काहति^१। हा—हायिस्सति; हाहति^२। लभ—लभिस्सति, लच्छति^३। भुज—भुज्जिस्सति;

विस्मय में—अच्छरियं ! अन्धो नाम पञ्चतं आरोहिस्सति = आश्चर्य है, अन्धा भी पर्वत पर चढ़ आया !

२. अ ई स्स आ दी नं व्यञ्जन स्सिञ् ६.३५—धातु से परे, परोक्ष भूत, परिसमाप्त्यर्थक भूत, हेतुहेतुमद्भूत, तथा भविष्यत्काल में, व्यञ्जन-विभक्ति से पूर्व, विकल्प से 'इ' का आगम होता है। जैसे—पपचित्थ, पपचिरे। अपचित्थ, अपचिम्हा। अपचिस्सा, अपचिस्संसु। पचिस्सति, पचिस्सन्ति।

३. हा स्स चा ह ड् स्से न ६.२५—हेतुहेतुमद्भूत तथा भविष्यत्काल में, अपने विकरण 'ओ' के साथ 'कर' धातु, तथा 'हा' धातु के अन्त्य वर्ण का, 'स्स' के साथ, विकल्प से 'आह' आदेश हो जाता है। जैसे—अकाहा, अकरिस्सा। काहति, करिस्सति। अहाहा, अहायिस्सा। हाहति, हायिस्सति।

४. ल भ व स च्छि द भि द रु दानं च्छि ड् ६.२६—हेतुहेतुमद्भूत तथा भविष्यत्काल में, 'लभ' आदि धातुओं के अन्त्य वर्ण का, 'स्स' के साथ, विकल्प से 'च्छिड्' आदेश हो जाता है। जैसे—लभ—अलच्छा, अलभिस्सा; लच्छति, लभिस्सति। वस—अवच्छा, अवसिस्सा; वच्छति, वसिस्सति। छिद—अच्छेच्छा, अच्छिन्दिस्सा; छेच्छति, छिन्दिस्सति। भिद—अभेच्छा, अभिन्दिस्सा; भेच्छति, भिन्दिस्सति। रुद—अरुच्छा, अरोदिस्सा; रुच्छति, रोदिस्सति।

दूसरी जगहों पर भी, 'छिद' धातु के अन्त्य वर्ण का विकल्प से 'छ्' आदेश होता है—अच्छेच्छं (साधारण भूत, पठम पुरिस, अनेक वचन), अच्छिन्दिंसु।

दूसरे धातु के साथ भी कभी कभी—गच्छं, गच्छिस्सं।

भोक्वति' । हु—हेस्सति, हेँहिस्सति, होहिस्सति' । सक—सक्खिस्सति, सक्कु-
णित्स्सति' । सु—सोस्सति, सुणित्स्सति' । जा—जास्सति, जानिस्सति' ।
इ—एस्सति, एहिति' । हन—हञ्छेति, हनिस्सति । पटिहंखति, पटिहनिस्सति' ।

५. भुज मु च व च वि सानं क्लङ् ६.२७—'स्स' के साथ, 'भुज' आदि
धातुओं के अन्त्य वर्ण का, विकल्प से 'क्ख' आदेश होता है । जैसे—

भुज—अभोक्खा, अभुञ्जिस्सा : भोक्खति, भुञ्जिस्सति । मुच—अमोक्खा,
अमुञ्चिस्सा : मोक्खति, -मुञ्चिस्सति । वच—अवक्खा, अवचिस्सा : वक्खति,
वचिस्सति । पा—विस—पावेक्खा, पाविसिस्सा : पवेक्खति, पविसिस्सति ।

'विस' धातु के अन्त्य वर्ण का, अन्यत्र भी विकल्प से 'क्ख' होता है जैसे—
पावेक्ख, पाविसि [परिसमाप्त्यर्थक भूत—पठम पुरिस, एकवचन] ।

६. हु स्स हे हेहि होही स्स च्चा दो ६.३१—भविष्यत्काल में, 'हू' धातु
का 'हे', 'हेहि', तथा 'होहि' आदेश हो जाता है । जैसे—हेस्सति, हेहिस्सति,
होहिस्सति ।

७. स्से वा ६.५६—हेतुहेतुमद्भूत तथा भविष्यत्काल में, 'सक' धातु से परे,
उसके विकरण 'क्णा' का विकल्प से 'ख' आदेश हो जाता है । जैसे—

सक्खिस्सा, सक्कुणित्सा : सक्खिस्सति, सक्कुणित्स्सति ।

८. ते सु सुतो क्णो क्णानं रोट् ६.६०—परिसमाप्त्यर्थक भूत, हेतुहेतु-
मद्भूत, तथा भविष्यत्काल में, 'सु' धातु से परे, उसके विकरण 'क्णो' तथा 'क्णा'
का विकल्प से 'रोट्' आदेश हो जाता है । जैसे—अस्सोसि, असुणि । अस्सोस्सा,
असुणित्सा । सोस्सति, सुणित्स्सति ।

९. ई स्स च्चा दि सु क्णा लोपो ६.६४—परिसमाप्त्यर्थक भूत तथा
भविष्यत्काल में, 'जा' धातु से परे, उसके विकरण 'क्णा' का विकल्प से लोप हो
जाता है । जैसे—अञ्जासि, अजानि । जस्सति, जानिस्सति ।

१०. ए ति स्सा ६.६६—'ई' धातु से परे, 'स्स' का विकल्प से 'हि' आदेश हो
जाता है । जैसे—एहिति; एस्सति ।

११. ह ना छे खा ६.६७—'हन' धातु से परे, 'स्स' का विकल्प से 'छे' तथा
'ख' आदेश हो जाता है । जैसे—हञ्छेम, हनिस्साम । पटिहंखामि, पटिहनिस्सामि ।

हा—हाहति, जहिस्सति^{१३} । दक्ख—दक्खति, दक्खिस्सति^{१३} । गम—गमिस्सन्ति, गमिस्सन्ते, गमिस्सरे^{१४} । अस—भविस्सति^{१५} ।

१३. हा तो ह ६.६८—‘हा’ धातु से परे, ‘स्स’ का विकल्प से ‘ह’ आदेश हो जाता है । जैसे—हाहति; जहिस्सति ।

१३. दक्ख ख हेहि होही हि लोपो ६.६९—‘दक्ख’, ‘ख’, ‘हेहि’, तथा ‘होहि’ आदेश होने पर, उससे परे, ‘स्स’ का विकल्प से लोप हो जाता है । जैसे—दक्खति, दक्खिस्सति । सक्खति, सक्खिस्सति । हेहिति, हेहिस्सति । होहिति, होहिस्सति ।

१४. गुरुपुब्बा रस्सा रे न्ते न्ती नं ६.७४—गुरु-पूर्व ह्रस्व स्वर से परे, ‘न्ते’ तथा ‘न्ति’ प्रत्ययों का विकल्प से ‘रे’ आदेश हो जाता है । जैसे—गम + अन्ति = गच्छन्ति, गच्छरे । गम + अन्ते = गच्छन्ते, गच्छरे । गमिस्सरे ।

१५. अआस्स आ दि सु ५.१२९—परोक्ष-भूत, अनद्यतन-भूत, हेतुहेतुमद्भूत तथा भविष्यत्काल में, ‘अस’ धातु का ‘भू’ आदेश हो जाता है । जैसे—

अस—वभूव (परोक्ष) । अभवा (अनद्यतन) । अभविस्सा (हेतुहेतुमद्भूत) । भविस्सति (भविष्यत्काल) ।

भविष्यत्काल में, नवो गणों के धातु के रूप कैसे होंगे, यह निम्न तालिका से प्रकट होगा :—

धातु	गण	पठम पुरिस		सञ्ज्ञम पुरिस		उत्तम पुरिस	
		एक वचन	अनेक वचन	एक वचन	अनेक वचन	एक वचन	अनेक वचन
१. भू	भ्वादि	भविस्सति	भविस्सन्ति	भविस्ससि	भविस्सथ	भविस्सामि	भविस्साम
२. ह	"	हेस्सति, हेहिस्सति, होहिस्सति	हेस्सन्ति, हेहिस्सन्ति, होहिस्सन्ति	हेस्ससि	हेस्सथ०	हेस्सामि०	हेस्साम०
३. नी	"	नेस्सति	नेस्सन्ति	नेस्ससि	नेस्सथ	नेस्सामि	नेस्साम
४. या	"	यास्सति	यास्सन्ति	यास्ससि	यास्सथ	यास्सामि	यास्साम
५. पच	"	पचिस्सति	पचिस्सन्ति	पचिस्ससि	पचिस्सथ	पचिस्सामि	पचिस्साम
६. रुध	रुधादि	रुन्धिस्सति	रुन्धिस्सन्ति	रुन्धिस्ससि	रुन्धिस्सथ	रुन्धिस्सामि	रुन्धिस्साम
७. विच	दिवादि	दिन्धिस्सति	दिन्धिस्सन्ति	दिन्धिस्ससि	दिन्धिस्सथ	दिन्धिस्सामि	दिन्धिस्साम
८. आ	"	आधिस्सति	आधिस्सन्ति	आधिस्ससि	आधिस्सथ	आधिस्सामि	आधिस्साम
९. तुद	तुदादि	तुदिस्सति	तुदिस्सन्ति	तुदिस्ससि	तुदिस्सथ	तुदिस्सामि	तुदिस्साम
१०. जि	ज्यादि	जिन्धिस्सति	जिन्धिस्सन्ति	जिन्धिस्ससि	जिन्धिस्सथ	जिन्धिस्सामि	जिन्धिस्साम
११. की	क्यादि	किन्धिस्सति	किन्धिस्सन्ति	किन्धिस्ससि	किन्धिस्सथ	किन्धिस्सामि	किन्धिस्साम
१२. सु	स्वादि	सुणिस्सति	सुणिस्सन्ति	सुणिस्ससि	सुणिस्सथ	सुणिस्सामि	सुणिस्साम
१३. तन	तनादि	तनिस्सति	तनिस्सन्ति	तनिस्ससि	तनिस्सथ	तनिस्सामि	तनिस्साम
१४. चुर	चुरादि	चोरेस्सति, चोरधिस्सति	चोरेस्सन्ति	चोरेस्ससि०	चोरेस्सथ०	चोरेस्सामि०	चोरेस्साम०
कथ	"	कथधिस्सति	कथधिस्सन्ति	कथधिस्ससि	कथधिस्सथ	कथधिस्सामि	कथधिस्साम
आप	"	आपेस्सति	आपेस्सन्ति	आपेस्ससि	आपेस्सथ	आपेस्सामि	आपेस्साम

८. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

बुद्धं सरणं गमिस्सामि । धम्मं सरणं गच्छिस्सति । सङ्घं सरणं गमिस्सथ । भ्रानं भावेस्सामि । पञ्चं भावेस्सन्ति । काये उदयं च वयं च पस्सिस्सामि । निव्वाणं सच्छिकरिस्सामि । अनागते (= भविष्यत्काल में) बुद्धो भविस्सामि । अञ्जे' पि बुद्ध-धम्मा भविस्सरे (भविस्सन्ति) । संबोधि पापुणिस्सति । भिक्खु सुखं विहरिस्सति । तथागतो न चिरं परिनिव्वायिस्सति । पानीयं पिविस्सामि । गत्तानि सीतं करिस्सति । निव्वाणस्स मग्गो हेहिति । सम्मुखा हेस्साम । गहकारक ! त्वं पुन गेहं न काहसि । सब्बे सत्ता मरिस्सन्ति । सब्बे पाणा मरिस्सन्ति । अयं कायो अचिरं पठवि अधिसेस्सति । सच्चं भणिस्सामि । न कुञ्जिस्सामि । अक्कोधेन कोधं जिनिस्सामि । असाधुं साधुना जेस्सामि । सुचरितं धम्मं चरिस्सामि, दुच्चरितं न चरिस्सामि । यो धम्मं चरिस्सति सो सुखं सेस्सति, अस्मि लोके च परमिह च । मुनी मारस्स वन्धना मोक्खन्ति । सद्धं लभिस्सथ । अविज्जाय वन्धनं छिन्दिस्सामि ।

२. पालि में अनुवाद कीजिए—

बुद्ध की शरण जाता हूँ । बालक लोग सङ्घ की शरण जाते हैं । स्वर्ग लोक में (सगं लोकं) उत्पन्न हूँगा । धम्म-चक्क को घुमाऊँगा (पवत्तिस्सामि) । सङ्घ को दान दूँगे (दस्साम=दज्जिस्साम) । भिक्खु वन में ध्यान करेगा । वन में जाऊँगा । बुद्ध को नमस्कार करूँगा । पाप को छोड़ूँगा । त्रिपिटक (तिपिटकं) पढ़ूँगा । बुद्धों के धर्म को जानूँगा । बुद्ध में चित्त प्रसन्न रखूँगा (पसादेस्सामि) । तथागत की पूजा करूँगा । भिक्खु लोग एकान्तवास (पन्त-सयनासनं) करेंगे (कप्पेस्सन्ति) । ग्राम को जाएँगा । धम्मोपदेश (धम्म-देसना) सुनेगा । धम्म-ग्रन्थ पढ़ूँगा । बालक लोग सूर्य को देखेंगे । पण्डित लोग धम्म को जानेंगे । मूर्ख (वाला) लोग न देखेंगे, न जानेंगे । ब्राह्मण लोग धम्म-दान देंगे । ब्राह्मण लोग तपस्या करेंगे । ब्राह्मण लोग क्रोध नहीं करेंगे, चोरी नहीं करेंगे, तपस्या करेंगे, ध्यान करेंगे ।

३. निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाइए—

नाम-पदानि—घनं, दानं, कपणो, माता, भाता, माणवको ।

धातु—लभ, पच, हस, भास, चल, कस (—खेती: करना), दा ।

४. निम्नलिखित धातुओं के भविष्यत्काल, प्रथम पुंस्य, दोनों वचन में रूप लिखिए—

गम, हर, कर, भू, हृ, दित्स, भुज, वद, सर, मर, सु (सुनना), भ्रा (भायति), मन ।

दूसरा काण्ड

चौथा पाठ

नाम-प्रकरण

(तीसरा भाग—विशेष शब्द)

§ १४. ईकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द

दण्डी (=सन्यासी)

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठमा	दण्डी ^१	दण्डी, दण्डिनो ^२
द्वुतिया	दण्डिनं, ^३ दण्डिं	दण्डी, दण्डिनो*, दण्डिने ^३
ततिया	दण्डिना	दण्डीहि, दण्डीभि

१. सि स्मिं ना न पुं स क स्त २.६८—'सि' विभक्ति आने से, नपुंसक लिंग को छोड़, दूसरे शब्दों के अन्त्य स्वर का ह्रस्व नहीं होता है। जैसे—दण्डी, इत्थी, सयम्भू, वधू।

[नपुंसक लिङ्ग शब्दों के अन्त्य स्वर का ह्रस्व हो जाता है। जैसे—सुखकारि, सयम्भु]

२. यो नं नो ने पु मे २.७७—पुल्लिङ्ग ईकारान्त शब्द से परे, विकल्प से 'पठमा' के 'यो' का 'नो', तथा 'द्वुतिया' के 'यो' का 'ने' आदेश हो जाता है। जैसे—दण्डिनो, दण्डिने, दण्डी।

३. नं भी तो २.७६—पुल्लिङ्ग ईकारान्त शब्द से परे, 'अ' विभक्ति का विकल्प से 'नं' आदेश हो जाता है। जैसे—दण्डिनं, दण्डिं।

*नो २.७८—विकल्प से, 'द्वुतिया' में भी, 'यो' का 'नो' होता है। जैसे—दण्डिनो पस्त्।

	ए क व च न	अ ने क व च न
च तु त्थी	दण्डिनो, दण्डित्स	दण्डीनं
पञ्च मी	दण्डिना, दण्डित्मा, दण्डिम्हा	दण्डीहि, दण्डीभि
छट्ठी	दण्डिनो, दण्डित्स	दण्डीनं
सत्त मी	दण्डिनि, दण्डिम्हि, दण्डिस्मिं	दण्डित्तु, दण्डीसु
आ ल प न	दण्डि, दण्डी	दण्डी, दण्डिनो

‘दण्डी’ शब्द का अर्थ है ‘दण्ड वाला’। इसी तरह, दूसरे शब्दों के साथ भी ‘ई’ प्रत्यय लगा देने से, ‘उसका वाला’ अर्थ हो जाता है। इस तरह बने, तथा दूसरे भी सभी ईकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के रूप ‘दण्डी’ के समान होते हैं। जैसे—

करो (=हाथी), कानी, कुट्ठी (=कुष्ठ रोग वाला), कुसली, गणी (=गण वाला), चक्रो (=चक्र वाला), चागी (=त्याग करने वाला), जटो (=जटा वाला), ज्ञाणी (=ज्ञानी), दन्तो (=हाथी), दाठो (=दाघ), दीघजीवी (=दीर्घ जीवी), धम्मवादी (=धर्मवादी), धम्मी (=धर्मी), पक्खी (=पांख वाला=पक्षी), पापकारी, बलो (=बल वाला), भागी (=भाग वाला), भोगी (=भोग करने वाला), मालो (=माला बनाने वाला), मूसली (=वलराम=मूसल धारण करने वाला), योगी, वम्मी (=बल्लर वाला=सिपाही), संघी (=संघ वाला), सामी (=स्वामी), सिखी (=शिखा वाला=भोर), सीघयायी (=शीघ्र जाने वाला), सुखी (=सुख से रहने वाला) इत्यादि।

§ १५. ईकारान्त नपुंसक लिङ्ग शब्द

सुखकारी (=सुख देने वाला)

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठ मा	सुखकारि	सुखकारीनि, सुखकारी

४. स्मि नो नि २.७६—ईकारान्त शब्द से परे, ‘स्मिं’ विभक्ति का विकल्प से ‘नि’ आदेश होता है। जैसे—दण्डिनि, दण्डिस्मिं।

५. गो वा २.६७—तीनों लिङ्गों में, ‘ग’ विभक्ति आने से, ‘घ’ तथा ओकारान्त

	ए क व च न	अ ने क व च न
दु ति या	सुखकारिं	सुखकारीनि, सुखकारी
आ ल प न	सुखकारि	सुखकारीनि, सुखकारी

शेष 'दण्डी' शब्द के समान

§ १६. ऊकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द

सव्वञ्जू (=सर्वज्ञ)

	ए क व च न	अ ने क व च न
प ठ मा	सव्वञ्जू	सव्वञ्जू, सव्वञ्जुनो ^४
दु ति या	सव्वञ्जुं	सव्वञ्जू, सव्वञ्जुनो
त ति या	सव्वञ्जुना	सव्वञ्जूहिं, सव्वञ्जूभि
च तु त्यी	सव्वञ्जुनो, सव्वञ्जुस्स	सव्वञ्जूनं
प ञ्च मी	सव्वञ्जुना, सव्वञ्जुस्सा, सव्वञ्जुम्हा	सव्वञ्जूहिं, सव्वञ्जूभि
छ द्ठी	सव्वञ्जुनो, सव्वञ्जुस्स	सव्वञ्जूनं
स त्त मी	सव्वञ्जुम्हिं, सव्वञ्जुस्सिं	सव्वञ्जुसु
आ ल प न	सव्वञ्जू	सव्वञ्जू, सव्वञ्जुनो

शब्दावली—मग्गञ्जू (=मार्गज्ञ), धम्मञ्जू (=धर्मज्ञ), अत्यञ्जू (=अर्थज्ञ), कालञ्जू (=कालज्ञ), रत्तञ्जू (=पुराना परिचित), मत्तञ्जू (=मात्रा को जानने वाला), कतञ्जू (=कृतज्ञ), तत्तञ्जू (=तत्त्वज्ञ), विदू (=जानने वाला), वेदगू (=वेदनाश्रों के पार जाने वाला, अर्हत्), पारगू (=पार जाने वाला), इत्यादि ऊकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के रूप 'सव्वञ्जू' शब्द के समान होंगे।

शब्दों को छोड़, दूसरे शब्दों के अन्त्य स्वर का विकल्प से ह्रस्व होता है। जैसे—दण्ण्ड, दण्डी। इत्थि, इत्थी। वधु, वधू। सयम्भु, सयम्भू।

६. कू तो २.८७—'कू' प्रत्ययान्त शब्दों [देखिए—पृ० १६२.] से परे, पुल्लिङ्ग में—'थो' विभक्ति का विकल्प से 'नो' आदेश—होता है। जैसे—सव्वञ्जुनो, सव्वञ्जू। विदुनो, विदू।

§ १७. ऊकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द

सयम्भू (= त्वयम्भू)

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठमा	सयम्भु	सयम्भ, सयम्भुनि
द्वितीया	सयम्भुं	सयम्भू, सयम्भुनि
आलपन	सयम्भु	सयम्भू, सयम्भुनि

शेष 'सव्वञ्जू' शब्द के समान

§ १८. ओकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द

गो (= वैल)

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठमा	गो	गावो, गवो ^०
द्वितीया	गावुं, गावं, गवं	गावो, गवो
तृतीया	गावेन, गवेन, गावा, गवा ^०	गोहि, गोभि

७. गोस्ता गसि हिनं चु गाव गवा २.६६—'ग', 'सि', 'हि' तथा 'नं' विभक्तियों को छोड़, दूसरी विभक्तियों के आने से, 'गो' शब्द का 'गाव' तथा 'गव' आदेश हो जाता है। जैसे—गो + यो = गावो, गवो। गो + ना = गावेन, गवेन। गो + स = गावस्त, गवस्त। गो + स्मा = गावस्मा, गवस्मा। गो + स्मि = गावे, गवे।

८. गावु म्हि २.७४—'अं' विभक्ति आने से, 'गो' शब्द का विकल्प से 'गावु' आदेश होता है। जैसे—गो + अं = गावुं। गावं, गवं।

९. उभ गो हि टो २.१७२—'उभ' तथा 'गो' शब्दों से परे, 'यो' विभक्ति का 'ओ' आदेश होता है। जैसे—उभ + यो = उभो। गो + यो = गावो।

१०. नास्ता २.७३—'गो' शब्द से परे, 'ना' विभक्ति का विकल्प से 'आ' आदेश होता है। जैसे—गो + ना = गावा, गवा। गावेन, गवेन।

	ए क व च न	अ ने क व च न
च तु त्थी	गावस्स, गवस्स, गवं ^{११}	गवं, गुन्नं, ^{१२} गोनं
प ङ्च मी	गवा, गावा, ^{१०} गावस्मा, गावम्हा ^{१०} , गवस्मा, गवम्हा	गोहि, गोभि
छ ट्ठी	गावस्स, गवस्स, ^९ गवं ^{११}	गवं, गुन्नं, ^{१२} गोनं
स ल मी	गावे, गदे, ^९ गावम्हि, गवम्हि, गावस्मिं, गवस्मिं	गावेसु, गवेसु, ^{११} गोसु
आ ल प न	गो	गावो, गवो

पालि भाषा में, एकारान्त शब्द नहीं मिलते हैं। ओकारान्त शब्द भी, 'गो' को छोड़ कर और नहीं मिलते हैं।

स्त्रीलिङ्ग में भी, 'गो' शब्द के रूप पुल्लिङ्ग के ही समान होते हैं।

§ १६. ओकारान्त नपुंसक लिङ्ग शब्द

चित्तगो (=विचित्र गौवों वाला)

	ए क व च न	अ ने क व च न
प ठ मा	चित्तगु	चित्तगू, चित्तगूनि
डु ति या	चित्तगुं	चित्तगू, चित्तगूनि
आ ल प न	चित्तगु	चित्तगू, चित्तगूनि

शेष 'आयु' शब्द के समान

११. गवं से न २.७१—'स' विभक्ति के साथ, 'गो' शब्द का रूप विकल्प से 'गवं' होता है। जैसे—गो + स = गवं।

१२. गुन्नं च नंना २.७२—'नं' विभक्ति के साथ, 'गो' शब्द के रूप विकल्प से 'गुन्नं' तथा 'गवं' होते हैं। जैसे—गो + नं = गुन्नं, गवं। गोनं।

१३. सुम्हि वा २.७०—'सु' विभक्ति आने से, 'गो' शब्द का विकल्प से 'गाव' तथा 'गव' आदेश हो जाता है। जैसे—गो + सु = गावेसु, गवेसु, गोसु।

‘गो’ शब्द के स्थान में, सभी विभक्तियों में, विकल्प से ‘गोण’
 २. आदेश हो जाता है; और उसके रूप पुल्लिङ्ग अकारान्त ‘बुद्ध’ शब्द के समान
 होते हैं।

शेष अनियमित पुल्लिङ्ग शब्द

§ २०. अत्त (=आत्मा)

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठमा	अत्ता	अत्ता, अत्तानो
द्वुति या	अत्तानं, अत्तं	अत्तानो, अत्ते
तृति या	अत्तेन, अत्तना	अत्तेहि, अत्तेभि, अत्तनेहि, अत्तनेभि ^{१४}
चतुर्थी	अत्तनो, ^{१५} अत्तस्स	अत्तानं
पञ्चमी	अत्तना, ^{१६} अत्तस्मा, अत्तम्हा	अत्तेहि, अत्तेभि, अत्तनेहि, अत्तनेभि ^{१४}
छठ्ठी	अत्तनो, ^{१५} अत्तस्स	अत्तानं
सप्तमी	अत्तनि, अत्तस्मि, अत्तम्हि, अत्ते	अत्तनेसु, ^{१४} अत्तेसु
आलपन	अत्त, अत्ता	अत्ता, अत्तानो

§ २१. ब्रह्म (=ब्रह्मा)

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठमा	ब्रह्मा	ब्रह्मा, ब्रह्मानो
द्वुति या	ब्रह्माणं, ब्रह्मं	ब्रह्मानो

१४. सु हि सु नक् २.१६७—‘सु’ तथा ‘हि’ विभक्तियों के आने से, ‘अत्त’
 तथा ‘आतुम’ शब्दों का विकल्प से क्रमशः ‘अत्तन’ तथा ‘आतुमन’ आदेश हो जाता
 है। जैसे—अत्त + सु = अत्तनेसु, अत्तेसु। आतुमनेसु, आतुनेसु। अत्तनेहि, अत्तेहि।
 आतुमनेहि, आतुमेहि।

कभी कभी, दूसरी जगह भी, ‘न’ का आगम होता है। जैसे—वेरिनेसु =
 वरी लोगों में।

१५. नोत्ता तु मा २.१६६—‘अत्त’ तथा ‘आतुम’ शब्दों से परे, ‘त्त’ विभक्ति

ए क व च न	अ ने क व च न
त ति या ब्रह्मना, ब्रह्मुना ^{१६}	ब्रह्मोहि, ब्रह्मोभि, ब्रह्महि, ब्रह्मभि
च तु त्यो ब्रह्मनो, ^{१७} ब्रह्मस्स	ब्रह्मानं, ब्रह्मनं ^{१८}
प ङ्च मी ब्रह्मना, ब्रह्मुना ^{१९}	ब्रह्मोहि, ब्रह्मोभि, ब्रह्महि, ब्रह्मभि
छ द्ठी ब्रह्मनो, ^{२०} ब्रह्मस्स	ब्रह्मानं, ब्रह्मनं ^{२१}
स त्त मी ब्रह्मे, ब्रह्मनि, ब्रह्मास्मि, ब्रह्महि	ब्रह्मोसु
आ ल प न ब्रह्मे	ब्रह्मा, ब्रह्मानो

§ २२. राज (=राजा)

ए क व च न	अ ने क व च न
प ठ मा राजा ^{२२}	राजा, राजानो ^{२३}
डु ति या राजानं, ^{२४} राजं	राजानो ^{२५}

का विकल्प से 'नो' होता है। जैसे—अत्तनो, अत्तस्स । आतुमनो, आतुमस्स ।

१६. ब्रह्म स्सु वा २.१६२—नाम्हि २.१६३—'स', 'नं', तथा 'ना' विभक्तियों के आने से, 'ब्रह्म' शब्द का विकल्प से 'ब्रह्म' आदेश हो जाता है। जैसे—

ब्रह्मनो । ब्रह्मनं । ब्रह्मुना ।

१७. स्मा स्स ना ब्रह्मा च २.१६८—'ब्रह्म', 'अत्त', तथा 'आतुम' शब्दों से परे, 'स्मा' विभक्ति का 'ना' आदेश हो जाता है। जैसे—ब्रह्म + स्मा = ब्रह्मुना । अत्तना । आतुमना ।

१८. राजा दि यु वा दि त्वा २.१६६—'राज' आदि, तथा 'युव' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दों से परे, 'सि' विभक्ति का 'आ' आदेश होता है। जैसे—

राज + सि = राजा । युवा ।

१९. यो न मानो २.१६८—'राज' आदि, तथा 'युव' आदि शब्दों से परे, 'यो' विभक्ति का विकल्प से 'आन' आदेश हो जाता है। जैसे—

राज + यो = राजानो । युवानो ।

२०. वा ह्मा न इ २.१६७—'अं' विभक्ति आने पर, 'राज' आदि, तथा 'युव'

ए क व च न

अ ने क व च न

त ति या रञ्जा,^{११} राजेन, राजिना^{१२}राजेहि, राजूहि, राजेभि, राजूभि^{१३}च तु त्यो रञ्जो, रञ्जस्त, राजिनो, राजस्त^{१४}रञ्जं,^{१५} राजूनं, राजानंपञ्चमी रञ्जा,^{१६} राजम्हा, राजस्मा

राजेहि, राजेभि, राजूहि, राजूभि

छट्ठी रञ्जो, रञ्जस्त, राजिनो, राजस्त^{१७}रञ्जं,^{१८} राजूनं,^{१९} राजानं^{२०}सप्तमी रञ्जे, राजिनि,^{२१} राजस्मि, राजम्हिराजूसु,^{२२} राजेसु

आलपन राज, राजा

राजानो, राजा

आदि शब्दों का विकल्प से क्रमशः 'राजान' तथा 'युवान' आदेश हो जाता है ।
जैसे—

राज + अं = राजानं । युवानं ।

२१. नास्मासु रञ्जा २.२२४—'ना' तथा 'स्मा' विभक्तियों के साथ, 'राज' शब्द का रूप 'रञ्जा' होता है ।

२२. राजस्ति नाम्हि २.१२५—'ना' विभक्ति आने से, 'राज' शब्द का विकल्प से 'राजि' आदेश हो जाता है । जैसे—राजिना ।

२३. सुनं हि सु २.१२६—'सु', 'नं', तथा 'हि' विभक्तियों के आने से, 'राज' शब्द का विकल्प से 'राजू' आदेश हो जाता है । जैसे—

राजूसु । राजूनं । राजूहि ।

२४. रञ्जो रञ्जस्त राजिनो से २.२२५—'स' विभक्ति के साथ, 'राज' शब्द के रूप 'रञ्जो, रञ्जस्त, राजिनो' होते हैं ।

२५. राजस्त रञ्जं २.२२३—'नं' विभक्ति के साथ, 'राज' शब्द का रूप 'रञ्जं' होता है ।

२६. स्मिम्हि रञ्जे राजिनि २.२२६—'स्मिं' विभक्ति के साथ, 'राज' शब्द के रूप 'रञ्जे, राजिनि' होते हैं ।

द्रष्टव्य—सभासे वा २.२२७—'राज' शब्द के साथ समास होने पर, ऊपर कहे गए आदेश विकल्प से होते हैं । जैसे—

कासिरञ्जा, कासिराजेन । कासिरञ्जा, कासिराजस्मा । कासिरञ्जो, कासिराजस्त । कासिरञ्जे, कासिराजे ।

§ २३. पुम (=मनुष्य)

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठ मा	पुमा, पुमो	पुमो, पुमानो
द्वु ति या .	पुमानं, पुमं	पुमानो, पुमाने, पुमे
त ति या	पुमाना, पुमुना ^{३०} , पुमेन ^{३०}	पुमानेहि, पुमानेभि, पुमेहि, पुमेभि
च तु त्थी	पुमुनो, ^{३०} पुमस्स	पुमानं
पञ्च मी	पुमाना, पुमुना, ^{३०} पुमा, पुमस्मा, पुमस्हा	पुमानेहि, पुमेहि, पुमानेभि, पुमेभि
छट्ठी	पुमुनो, ^{३०} पुमस्स	पुमानं
सत्त मी	पुमाने, ^{३१} पुमे, पुमस्मिं, पुमस्मिह	पुमासु, पुमानेसु, पुमेसु ^{३१}
आलप न	पुमं, ^{३१} पुम	पुमानो, पुमा

§ २४. सा (=कृत्ता)

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठ मा	सा	सा, सानो
द्वु ति या	सं, सानं ^{३२}	से, साने

२७. पुमकम्म थामद्धानं वा सस्मासु च २.१६४—‘स’, ‘स्मा’ तथा ‘ना’ विभक्तियों के आने से, ‘पुम’, ‘कम्म’ (=कर्म), ‘थाम’ (=धैर्य), तथा ‘अद्ध’ (=मार्ग) शब्दों के अन्त्य स्वर का विकल्प से ‘उ’ हो जाता है। जैसे—पुमुनो, पुमुना। कम्मनुनो, कम्मनुना। थामुनो, थामुना। अद्धुनो, अद्धुना।

२८. नास्मि २.१८७—‘पुम’ शब्द से परे, ‘ना’ विभक्ति आने से ये रूप बनते हैं—पुमाना। पुमेन।

२९. पुमा २.१८६—‘पुम’ शब्द से परे, ‘स्मिं’ विभक्ति का विकल्प से ‘ने’ आदेश होता है। जैसे—पुमाने, पुमे।

३०. सुस्हा च २.१८८—‘पुम’ शब्द से परे ‘सु’ विभक्ति आने से, ये रूप बनते हैं—पुमानेसु, पुमेसु, पुमासु।

३१. गस्सं २.१८९—‘पुम’ शब्द से परे, ‘ग’ विभक्ति का विकल्प से ‘अं’ आदेश हो जाता है। जैसे—पुमं। पुम।

	ए क व च न	अ ने क व च न
त ति या	सेन, साना	सेहि, सेभि, सानेहि, सानेभि
च तु त्यो	सस्त, साय, सानस्त ^{१३}	सानं
पञ्च मी	सा, सत्मा, सम्हा, साना	सेहि, सेभि, सानेहि, सानेभि
छ् द्ठी	सस्त, सानस्त ^{१३}	सानं
स त्त मी	से, सस्मिं, सन्धि, साने	सासु
आ ल प न	स, सान	सा, सानो

§ २५. युव (=युवक)

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठ मा	युवा	युवा, युवानो, ^{१४} युवाना
दु ति या	युवानं, युवं	युवाने, ^{१४} युवे
त ति या	युवाना, युवानेन, युवेन	युवानेहि, युवानेभि, युवेहि, युवेभि
च तु त्यो	युवानस्त, युवस्त, युविनो ^{१५}	युवानानं, युवानं
पञ्च मी	युवाना, ^{१५} युवानत्मा, युवानम्हा	युवानेहि, ^{१५} युवानेभि, युवेहि, युवेभि
छ् द्ठी	युवानस्त, युवस्त, युविनो ^{१५}	युवानानं, युवानं
स त्त मी	युवाने, ^{१५} युवानस्मिं, युवस्मिं	युवानेसु, ^{१५} युवासु, युवेसु
	युवानन्धि, युवन्धि, युवे	
आ ल प न	युव, युवा, युवाना, युवान	युवानो, युवाना

‘मघव’ (=इन्द्र) शब्द के रूप भी ‘युव’ के समान होंगे ।

३२. सा स्तं से चानङ् २.१६०—‘अं’, ‘स’ तथा ‘ग’ विभक्तियों के आने से, ‘सा’ शब्द का ‘सान’ आदेश हो जाता है । जैसे—सानं । सानस्त । भो सान !

३३. योनं नोने वा २.१८३—‘युव’ आदि शब्दों से परे, ‘यो’ विभक्तियों का विकल्प से क्रमशः ‘नो’ तथा ‘ने’ आदेश होता है । जैसे—युवानो । युवाने ।

३४. युवा सस्मिनो २.१६५—‘युव’ शब्द से परे, ‘स’ विभक्ति का विकल्प से ‘इनो’ आदेश होता है । जैसे—युविनो; युवस्तः ।

३५. स्मास्मिन्नाने २.१८२—‘युव’ आदि शब्दों से परे, ‘स्मा’ तथा ‘स्मिं’

§ २६. 'वन्तु' और 'मन्तु' प्रत्ययान्त शब्द

'वाला' के अर्थ में, नाम के आगे 'वन्तु' और 'मन्तु' प्रत्यय लगते हैं। अकारान्त या आकारान्त शब्दों के आगे 'वन्तु', तथा भिन्न-स्वरान्त शब्दों के आगे 'मन्तु' प्रत्यय लगते हैं। जैसे—गुणवन्तु = गुण वाला। गतिमन्तु = गतिवाला

पुलिङ्ग

गुणवन्तु (=गुणवाला)

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठमा	गुणवा ^{१०}	गुणवन्तो, ^{१८} गुणवन्ता ^{१९}
द्वुति या	गुणवन्तं ^{११}	गुणवन्ते ^{१२}
तति या	गुणवता, गुणवन्तेन ^{१३}	गुणवन्तेहि, गुणवन्तेभि ^{१४}

विभक्तियों का क्रमशः 'ना' तथा 'ने' आदेश होता है। युव + स्मा = युवाना। युव + स्मि = युवाने।

३६. युवादीनं सु हि स्वानङ् २.१८०—'सु' तथा 'हि' विभक्तियों के आने से, 'युव' आदि शब्दों के अन्त्य स्वर का 'आन' आदेश होता है। जैसे—युव + सु = युवानेसु। युव + हि = युवानेहि।

नो नाने स्वा २.१८१—'नो', 'ना' तथा 'ने' से पूर्व, 'युव' आदि शब्दों के अन्त्य स्वर का 'आ' होता है। जैसे—युवानो, युवाना, युवाने।

३७. न्तु स्स २.१५३—'सि' विभक्ति आने से, 'न्तु' का 'आ' आदेश हो जाता है। जैसे—गुणवा।

३८. न्त न्तूनं न्तो यो म्हि पठमे २.२१७—'पठमा' के अनेक वचन में, 'न्त' तथा 'न्तु' का विकल्प से—विभक्ति के साथ—'न्तो' हो जाता है। जैसे—गुणवन्तो, गुणवन्ता। गच्छन्तो, गच्छन्ता।

३९. द्वा दो न्तु स्स २.६३—'यो' आदि विभक्तियाँ आने से, 'न्तु' का 'न्त' हो जाता है। जैसे—गुणवन्तु + यो = गुणवन्त + यो = (अतो योनं टाटे २.४३) गुणवन्ता, गुणवन्ते। गुणवन्तं। गुणवन्तेन इत्यादि।

	ए क व च न	अ ने क व च न
प्र तु त्यी	गुणवतो, गुणवन्तस्स ^{१८}	गुणवतं, गुणवन्तानं ^{१९}
प ङ्च मी	गुणवता, गुणवन्तस्मा, गुणवन्तम्हा ^{२०}	गुणवन्तेहि, गुणवन्तेभि
छ ट्ठी	गुणवतो, गुणवन्तस्स	गुणवतं, गुणवन्तानं
स त मी	गुणवति, गुणवन्ते, गुणवन्तस्मि ^{२१}	गुणवन्तेसु ^{२२}
	गुणवन्तम्हि	
आ ल प न	गुणवं, गुणव, गुणवा ^{२३}	गुणवन्तो, गुणवन्ता ^{२४}

शब्दावली—कुलवन्तु (=अच्छा कुल वाला), धनवन्तु (=धन वाला), पञ्जवन्तु (=प्रजा वाला), फलवन्तु (=फल वाला), बलवन्तु (=बल वाला), भगवन्तु (=तेज वाला), मघवन्तु (=इन्द्र), यशवन्तु (=यश वाला), सीलवन्तु (=शीलवान्), सुतवन्तु (=श्रुतवान्), हिमवन्तु (=हिमालय)—कस्मिन्तु (=कालिमा-युक्त), कस्मिन्तु (कृपि वाला=कृपक), केतुमन्तु (=केतुवाला), गतिमन्तु (=गति वाला), चक्रुमन्तु (=आँसू वाला), जुतिमन्तु (=चमक वाला), धीतिमन्तु (=धृतिमान्), बुद्धिमन्तु (=बुद्धिमान्), बन्धुमन्तु (=बन्धुओं वाला), भानुमन्तु (=प्रकाश वाला), मतिमन्तु (=मतिमान्), सतिमन्तु (=स्मृतियुक्त), सिरीमन्तु (=श्री सम्पन्न), सुचिमन्तु

४०. तो ता तिता सस्मा स्मिना सु २.२१६—'न्त' तथा 'न्तु' का—'स', 'स्मा', 'स्मिं' तथा 'ना' विभक्तियों के साथ, विकल्प से क्रमशः 'तो', 'ता', 'ति' तथा 'ता' हो जाता है। जैसे—गुणवन्तु + स = गुणवतो। गच्छतो। गुणवन्तु + ना = गुणवता। गच्छता। गुणवन्तु + स्मा = गुणवता। गच्छता। गुणवन्तु + स्मिं = गुणवति। गच्छति।

४१. तं नम्हि २.२१८—'न्त' तथा 'न्तु' का, 'नं' विभक्ति से साथ, विकल्प से 'तं' आदेश हो जाता है। जैसे—गुणवन्तु + नं = गुणवतं। गच्छतं।

४२. टटा अं ने २.२२०—आलपन एक वचन में, विभक्ति के साथ, 'न्त' तथा 'न्तु' का 'अ', 'आ' तथा 'अं' आदेश हो जाता है। जैसे—भो गुणव, गुणवा, गुणवं। भो गच्छ, गच्छा, गच्छं।

(=पवित्रता वाला), हिमवन्तु^१ (=हिमालय), हेतुमन्तु (=हेतु वाला) इत्यादि 'वन्तु', 'क्तवन्तु' तथा 'मन्तु' प्रत्ययान्त शब्द के रूप 'गुणवन्तु' के समान होंगे।

§ २७. 'वन्तु' और 'मन्तु' प्रत्ययान्त शब्द के रूप, नपुंसक लिङ्ग में भी, वैसे ही होंगे जैसे पुल्लिङ्ग में। केवल, पठमा एकवचन में, 'गुणवं' तथा 'गुणवन्तं' ऐसे दो रूप होंगे; तथा पठमा और दुतिया के अनेक वचन में 'गुणवन्तानि' ऐसा भी एक रूप होगा।^२

स्त्रीलिङ्ग में, 'वन्तु' का 'वती' तथा 'वन्ती'; और 'मन्तु' का 'मती' तथा 'मन्ती' हो जाता है। जैसे—गुणवती—गुणवन्ती; सिरीमती, सिरीमन्ती। इनके रूप ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग 'इत्थी' शब्द के समान होंगे (देखिए—पृ० २४०)।

§ २८. न्त स्स च ट वं से २.६४—'अं' तथा 'स' विभक्तियों के आने से, 'न्त' तथा 'न्तु' का बहुधा 'अं' हो जाता है। जैसे—

“यं यं हि राज भजति, सतं वा यदि वा असं” —यहाँ, असन्त + अं = 'असं' हुआ है।

“किञ्चानि कुब्बस्स करेय्य किच्चं” —यहाँ, कुब्बन्त + स = 'कुब्बस्स' हुआ है।

“हिमवं व पव्वतं” —यहाँ, हिमवन्तु + अं = 'हिमवं' हुआ है।

“सुजातिमन्तो पि अजातिमस्स” —यहाँ, अजातिमन्तु + स = 'अजातिमस्स' हुआ है।

कहीं कहीं, दूसरी विभक्तियों के आने से भी—

“चक्खुमा अन्धिता होन्ति” —यहाँ, चक्खुमन्तु + यो = चक्खुमा। “वग्गु-मुदातीरिया पन भिक्खू वण्णवा होन्ति” —यहाँ, वण्णवन्तु + यो = वण्णवा।

४३. हिमवतो वा ओ २.१५५—'सि' विभक्ति आने से, 'हिमवन्तु' शब्द के अन्त्य स्वर का विकल्प से 'ओ' आदेश होता है। जैसे—हिमवन्तो। हिमवा।

४४. अं ङं नपुंसके २.१५४—'सि' विभक्ति आने से, नपुंसक लिङ्ग में, 'न्तु' का 'अं' तथा 'न्तं' हो जाता है। जैसे—गुणवं कुलं, गुणवन्तं कुलं।

६. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क) निच्चं भायिनो धीरा निव्वाणं फुसन्ति । उट्टानवतो सतिमतो धम्म-जीविनो अप्पमत्तस्स यत्तो अभिवड्ढति । यो भिक्खु मेत्ता-विहारो बुद्ध-सासने पसन्नो, सो सन्तं सुखं पदं अधिगच्छति । यो भिक्खु अत्तना अत्तानं चोदयति, अत्तना अत्तं पटिवासेति, सो सतिमा भिक्खु सुखं विहाहिसि (विहरिस्सति) ।

(ख) अत्ता हि अत्तनो नाथो, अत्ता हि अत्तनो गति ।

तस्मा सञ्जमयेत्तानं, अस्सं भद्रं व वाणिजो ॥१॥

भगवतो धम्मो विञ्जूहि वेदितव्वो । सव्वञ्जुनो भगवतो सम्मा-सम्बुद्धस्स सावका अरहन्तो होन्ति । ब्रम्हुना याचितो सन्तो भगवा धम्म-चक्कं पवत्तेसि । यो को चि भायी काये कायानुपस्सी विहरित, सो आतापी सम्पजानो सतिमा होति ।

(ग) राजानो राजूहि सद्धि सन्थव कारिनो होन्ति । गुणवन्तो सव्वञ्जुनो सत्थुनो सासन-करा ति । गुणवन्ते साने' पि पुमानो ममायन्ति । सानो सेहि सद्धि सन्थवं न करोन्ति । एस सभावो सानं सासु । पुमानो पुमेहि (पुमानेहि) सद्धि मेत्तायन्ति । एस धम्मता पुमानं पुमानेसु । युवानानमेव युवानो युवानेहि सद्धि कीळन्ति, युवानेस्वे व (युवानेसु एव) पसीदन्ति । लाभाल्याय कम्मं करोन्तो अभिपस्सत्ता होन्ति ।

२. ऊपर के काले अक्षरों में छपे शब्दों के रूप ड्रुतिया तथा सत्तमी विभक्ति में लिखिए; और उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए ।

३. पालि में अनुवाद कीजिए—

सर्वज्ञ बुद्धों को ब्रह्मा भी नमस्कार करता है, राजा लोग भी वन्दना करते हैं । गुणवान पुरुष से कौन मेल (सन्थवं) करना नहीं चाहेगा ? आप ही अपना मालिक है, अपने को (अत्तानं) छोड़कर दूसरा कौन मालिक होगा ?

दूसरा काण्ड

पाँचवाँ पाठ

क्रिया-प्रकरण

(तीसरा भाग—परिसमाप्त्यर्थक भूत)

परस्स पद

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठ म पुरि स	अपची, ^३ पची, अपचि, ^३ पचि	अपचुं, पचुं, अपचिसु, ^५ अप- चंसु, पचंसु ^५ पचिसु ^५
म जिभ म पुरि स	अपचो, पचो, अपचि, पचि ^५	अपचित्थ, अपचुत्थ ^५ , पचित्थ, पचुत्थ ^५
उ त्त म पुरि स	अपाचि, पचि ^५	अपचिम्हा ^५ , पचिम्हा ^५ अपचिम्हा, पचिम्हा, अपचुम्हा, ^५ पचुम्हा ^५

१. भूते इ उं, ओत्थ, ईम्हा; आऊ, से व्हं, अम्हे ६.४—परिसमाप्त हो जाने के अर्थ में, धातु से परे ये प्रत्यय होते हैं। जैसे—पची पचुं, पचो पचित्थ, पचि पचिम्हा इत्यादि।

मा यो ने ई आ आ दि ६.१३—'मा' (=नहीं) शब्द के योग में, विकल्प से परिसमाप्त्यर्थक भूत तथा अनद्यतन-भूत होते हैं। जैसे—मास्तु पुनपि एवरूपम-कासि—वह फिर भी ऐसा न करे। मा भवं अगमा वनं—आप वन मत जायें।

२. आ ई स्ता दि स्व ङ् वा ६.१५—अनद्यत-भूत, परिसमाप्त्यर्थक भूत, तथा हेतुहेतुमद्भूत में, धातु से पूर्व विकल्प से 'अ' का आगम होता है। जैसे—अपचा, पचा (अनद्यत)। अपची, पची (परि० भूत)। अपचिस्ता, पचिस्ता (हेतु०)।

अत्तनो पद

ए क व च न	अ ने क व च न
पठ म पु रि स अपचा, पचा, अपचित्य ^०	अपचू, पचू
म जिभ म पु रि स अपचसे, पचसे	अपचव्हं, पचव्हं
उ त्त म पु रि स अपचं, अपच, पचं, पच	अपचमहे, पचमहे

३. आ ई ऊ म्हा स्ता स्स म्हां नं वा ६.३३—'आ, ई, ऊ, म्हा, स्ता, स्सम्हा'—इनका विकल्प से ह्रस्व हो जाता है। जैसे—अपचा, अपच। अपची, अपचि। अपचू, अपचु। अपचिम्हा, अपचिम्ह। अपचिस्सा, अपचिस्स। अपचिस्सम्हा, अपचिस्सम्ह।

म्हा त्या न मु ज् ६.४५—'म्हा' तथा 'त्य' प्रत्ययों से पूर्व, विकल्प से 'उ' का आगम होता है। जैसे—अपचिम्हा, अपचुम्हा। अपचित्य, अपचुत्य।

४. इं स्स च सि ज् ६.४६—'इं' 'म्हा', तथा 'त्य' प्रत्ययों के आने से, धातु से परे कहीं कहीं, विकल्प से 'सि' का आगम होता है। जैसे—

कर + इं = कर + सि + इं = अकांसि अकरिं। अकासिम्हा, अकरिम्हा। अकासित्य, अकरित्य।

५. उं स्सि त्वं सु ६.३६—'उं' प्रत्यय का, विकल्प से 'इंसु' तथा 'अंसु' आदेश होता है। जैसे—अपांसु, अपचंसु।

६. ओ स्स अ इ त्य त्यो ६.४२—'ओ' प्रत्यय का, विकल्प से 'अ', 'इ', 'त्य' तथा 'त्यो' आदेश होता है। जैसे—त्वं अपच, अपचि, अपचित्य, अपचित्यो, अपचो।

सि. ६.४३—'ओ' प्रत्यय का कहीं कहीं विकल्प से 'सि' आदेश हो जाता है। जैसे—भू + ओ = अहोसि अभुवो।

७. ए प्या थ स्से अ आ ई थानं ओ अ अं त्य त्यो व्हो क् ६.३८—'एप्याथ' आदि प्रत्ययों के बाद, क्रमशः 'ओ' आदि होता है। जैसे—तुम्हे पचेप्याथो, पचेप्याथ। त्वं अपचिस्स, अपचिस्से। अहं अपचं, अपच। सो अपचित्य, अपचा। सो अपचित्यो, अपची। तुम्हे पचयव्हो, पचय।

§ ३. परिसमाप्त्यर्थक भूतकाल में कुछ विशेष धातुओं के रूप—

वच—अवोच^१ । कर—अकासि^१ । हर—अहासि^१ । गम—अगा^{११} ।
 डंस—अडञ्छि^{१२} । कुस—अक्कोच्चि^{१३} । नि—नेसुं^{१४} । सु—अस्तोसुं^{१५} ।
 हु—अहेसुं^{१६} । दा—अदासि, अदा^१ । अस—आसि^{१६} । सक—असक्खि^{१७} ।
 लभ—अलभत्य^{१८} ।

८. ईआ दो वच स्तोम् ६.२१—'ई' आदि प्रत्ययों के आने से, 'वच' धातु का 'वोच' आदेश हो जाता है । जैसे—वच + ई = वोच + इ = अवोच ।

९. का ईआ दि सु ६.२४—'ई' आदि प्रत्ययों के आने से, विकल्प से 'कर' धातु का 'का' आदेश हो जाता है । जैसे—अकासि, अका । अकरि ।

दी घा ई स्स ६.४४—दीर्घ स्वर से परे, 'ई' प्रत्यय का विकल्प से 'सि' आदेश हो जाता है । जैसे—अकासि, अका । अदासि, अदा ।

१०. आ ईआ दि सु हरस्सा ६.२८—परिसमाप्त्यर्थक भूत तथा अनद्यतन भूत में, 'हर' धातु का विकल्प से 'हा' आदेश हो जाता है । जैसे—हर + ई = अहासि, अहरि । अहा, अहरा ।

११. ग मि स्स ६.२९—परिसमाप्त्यर्थक भूत तथा अनद्यतन भूत में, 'गम' धातु का विकल्प से 'गा' आदेश हो जाता है । जैसे—गम + ई = अगा, अगमि । अगा अगमा ।

१२. डंस स्स च च्छड् ६.३०—परिसमाप्त्यर्थक भूत तथा अनद्यतन भूत में, 'गम' तथा 'डंस' धातुओं का विकल्प से क्रमशः 'गञ्छ' तथा 'डञ्छ' आदेश हो जाता है । जैसे—अगञ्छि, अगच्चि । अडञ्छि, अडंसि ।

१३. कुस रुहे हि स्स छि ६.३४—'कुस' तथा 'रुह' धातु से परे, 'ई' का विकल्प से 'छि' आदेश हो जाता है । जैसे—कुस + ई = अक्कोच्चि, अक्कोसि । अभिरुच्चि, अभिरुहि ।

१४. ए ओ ता सुं ६.४०—आदिष्ट 'ए' तथा 'ओ' से परे, 'उं' विभक्ति का विकल्प से 'सुं' आदेश होता है । जैसे—नि + उं = ने + उं = नेसुं, नयिसु । अस्तोसुं, असुं ।

१५. हुतो रेसुं ६.४१—'हु' धातु से परे, 'उं' प्रत्यय का विकल्प से 'रेसुं' आदेश होता है। जैसे—हु + उं = अहेसुं, अहउं।

१६. ईआ दो दीघो ६.५६—परिसमाप्त्यर्थक भूत में, 'अस' धातु का 'आस' आदेश हो जाता है। जैसे—

आसि,	आसुं
आसि,	आसित्य
आसि,	आसिन्हा

१७. सका णास्स ख इआ दो ६.५८—परिसमाप्त्यर्थक भूत में, 'सक' धातु से परे, उसके विकरण 'क्णा' का 'ख' आदेश होता है। जैसे—असक्खि, असक्खिसु।

तेसु सुतो क्णो क्णानं रोट् ६.६०—'ई' आदि विभक्तियों के, तथा 'स्स' के आने से, 'सु' धातु से परे, उसके विकरण 'क्णो' तथा 'क्णा' का 'रोट्' आदेश हो जाता है। जैसे—अस्सोसि, असुणि। अस्सोस्सा, असुणिस्सा। सोस्सति, सुणिस्सति।

१८. लभा इं ईनं यं या वा ६.७३—'लभ' धातु से परे, 'इं' तथा 'ई' का विकल्प से क्रमशः 'यं' तथा 'य' हो जाता है। जैसे—अहं अलत्यं, अलभि। सो अलत्य, अलभि।

परिसमाप्त्यर्थक भूतकाल में नवों गणों के धातु के

धातु	गण	पठम पुरिस		सञ्जिभम
		एक वचन	अनेक वचन	एक वचन
१. भू	भ्वादि	अभवि, भवि, अभवी, भवी	अभवुं, भवुं, अभविसुं, भविसु, अभवंसु, भवंसु	अभवो, भवो, अभवि, भवि
हृ	"	अहोसि, अहु	अहेसुं	अहोसि
नी	"	नयि	नयिसु	नयि
या	"	यायि	यायिसु	यायि
पच	"	अपचि	अपचुं	अपचो
२. रुध	रुधादि	अरुन्धि, रुन्धि	अरुन्धिसु, रुन्धिसु	अरुन्धि, रुन्धि,
३. दिव	दिवादि	अदिव्वि, दिव्वि	अदिव्विसु, दिव्विसु	अदिव्वि, दिव्वि
भा	"	अभायि, भायि	अभायिसु, भायिसु	अभायो
४. तुद्	तुदादि	अतुदि, तुदि	अतुदुं, तुदुं, अतुदिसु, तुदिसु, अतुदंसु, तुदंसु	अतुदो, तुदो, अतुदि, तुदि
५. जि	ज्यादि	अजिनि, जिनि	जिनिसु, अजिनिसु	अजिनि, जिनि
६. की	क्यादि	अकिणि, किणि	अकिणिसु, किणिसु	अकिणि, किणि
७. सु	स्वादि	सुणि, अस्तोसि	सुणिसु	सुणि
८. तन	तनादि	तनि	तनिसु	तनि
९. चुर	चुरादि	अचोरयि, चोरयि	चोरयिसु	चोरयि
कथ	"	कथयि	कथयिसु	कथयि
भप	"	भापयि	भापयिसु	भापयि

रूप कैसे होंगे, यह निम्न तालिका से प्रकट होगा :—

पुरिस	उत्तम पुरिस	
अनेक वचन	एक वचन	अनेक वचन
अभवित्य, भवित्य, अभ- वृत्य, भवृत्य अहोसित्य नयित्य यायित्य अपचित्य	अभविं, भविं अहोसिं नयिं यायिं अपचिं	अभविम्ह, भविम्ह, अभ- विम्हा, भविम्हा, अभवुम्हा, भवुम्हा अहोसिम्हा नयिम्हा यायिम्हा अपचिम्ह
अरुन्धित्य, रुन्धित्य अदिद्वित्य, दिद्वित्य अभायित्य, भायित्य	अरुन्धिं, रुन्धिं अदिद्विं, दिद्विं अभायिं, भायिं	अरुन्धिम्हा, रुन्धिम्हा अदिद्विम्हा, दिद्विम्हा अभायिम्हा, भायिम्हा
अतुदित्य, तुदित्य	अतुदिं, तुदिं	अतुदिम्हा
अजिनित्य, जिनित्य	अजिनिं, जिनिं	अजिनिम्हा
अकिणित्य, किणित्य सुणित्य तनित्य चोरयित्य कथयित्य भापयित्य	अकिणिं, किणिं सुणिं तनिं चोरयिं कथयिं भापयिं	अकिणिम्ह, किणिम्ह सुणिम्हा तनिम्हा चोरयिम्हा कथयिम्हा भापयिम्हा

१०. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

महामाया' पि देवी दस मासे कुच्छिना बोधि-सत्तं परिहरि । आति-घरं गन्तु-कामा महाराजस्स आरोचेसि । राजा 'साधू' ति सम्पटिच्छि । कपिलवत्थुतो याव देवदह-नगरा मग्गं समं कारेसि । उभय-नगर-वासीनं' पि लुम्बिनी-वनं नाम मङ्गल-साल-वनं अहोसि । देवी साल-वनं पाविसि । सा साल-साखं गण्हि । तावदेव च'स्सा कम्मज-वाता चालिसु । अथ'स्सा साणिं परिक्विप्पिसु । महाजनी-पटिक्कमि । महाब्राह्मणो सुवण्ण-जालेन बोधि-सत्तं सम्पटिच्छिसु । देविया पुरतो ठपेत्वा, 'अत्तमना, देवि ! होहि । महेसक्खो ते पुत्तो उप्पन्नो' ति आहंसु । बोधि-सत्तो धम्मागसनतो धम्म-कथिको विय निक्खमि । दस पि दिसा अनुदिसा विलोकेसि । उत्तरायं दिसायं सत्तपद-वीतिहारेण अगमासि । ततो सत्तम-पदे अट्ठसि । 'अग्गो' हमस्मि लोकस्सा'ति आदिकं आसिं वाचं निच्छारेसि । सीहनादं नदि ।

२. ऊपर काले अक्षरों में छपे क्रियापदों के रूप 'मज्झिम पुरिस' तथा 'उत्तम पुरिस' में लिखिए ।

३. पालि में अनुवाद कीजिए—

बोधिसत्त्व प्रकट हुए । सात पग चले । ब्रह्मा लोग आए । देवता लोग आए । सब लोगों ने नमस्कार किया । सब प्रसन्न हुए । विपुल आलोक हुआ । बोधि-सत्त्व ने सिंह-नाद किया । देवों ने कहा । देवताओं ने उसको देखा ।

कुमार अपने उद्यान-भूमि में गए । दुःखित मनुष्य को देखा । सारथि को बुलाया । सारथि रथ को उधर ही ले गया । बोधि-सत्त्व घर से निकला । कापाय वस्त्र पहन लिया । घर से वेघर हो प्रव्रजित हुआ । बहुत लोगों ने सुना ।

बोधिसत्त्व ने तपस्या की । अकेला होकर (ऊपकट्ठो) विहार किया, ध्यान किया । उसके चित्त में वितर्क उत्पन्न हुआ । धर्म-चक्षु उत्पन्न हुआ । बुद्ध ने धर्म-चक्र चलाया ।

४. निम्नलिखित धातुओं के रूप भूतकाल में लिखिए—

खाद् (=खाना) । घट् (=प्रयत्न करना) । आ चिक्ख् (=कहना) ।

जल् (=जलना) । दा (=देना) । पा (=पीना) । सु (=सुनना) । हा (=
त्याग करना) । कर् (=करना) । सक् (=सकना) । मा (=जानना) । युज्
(=मिलना=लग जाना), हु (=होना) । गम् (=जाना) । भा
(=ध्यान करना) ।

५. निम्नलिखित नामपद तथा धातुओं से वाक्य बनाइए—

नाम-पदानि—दारका, फलानि, अग्नि, पापानि, भिक्खू, मुनयो, पठनं,
गमनं, भावना, भानानि ।

धातु-सदा—खाद् । डह । वि+नुद् (=हटाना) । भा (=ध्यान करना) ।
कर् । ह ।

दूसरा काण्ड

छठा पाठ

नाम-प्रकरण

(चौथा भाग—शेष शब्द)

§ २६. 'न्त' तथा 'मान' प्रत्ययान्त शब्द

न्तो कत्तरि वत्तमाने ५.६४—वर्तमान काल में, 'करता हुआ' इस अर्थ में, धातु से परे 'न्त' प्रत्यय लगता है। जैसे—तिट्ठन्तो, गच्छन्तो—खड़ा होता हुआ, जाता हुआ। 'न्त' प्रत्ययान्त शब्द कर्त्ता का विशेषण होता है।

मानो ५.६५—वर्तमान काल में, 'न्त' के स्थान में 'मान' प्रत्यय भी आता है। जैसे—तिट्ठमानो, गच्छमानो—खड़ा होता हुआ, जाता हुआ। 'मान' प्रत्ययान्त शब्द भी कर्त्ता का विशेषण होता है।

ते स्स पुब्बाना गते ५.६७—भविष्यत्काल में, 'न्त' और 'मान' प्रत्ययों से पूर्व, 'स्स' का आगम होता है। जैसे—हसिस्सन्तो, हसिस्समानो वा सो इध आगमिस्सति—हँसते हुए वह यहाँ आवेगा।

मानस्स मस्स ५.१६२—कहीं कहीं, धातु से परे, 'मान' प्रत्यय के 'म' का लोप होता है। जैसे—कराणो—करते हुए।

'मान' प्रत्ययान्त शब्द के रूप, पुल्लिङ्ग में 'बुद्ध' शब्द के समान, नपुंसक लिंग में 'फल' शब्द के समान, तथा स्त्रीलिङ्ग में 'लता' शब्द के समान होते हैं।

पुल्लिङ्ग में, 'न्त' प्रत्ययान्त शब्द के रूप निम्न प्रकार होते हैं—

गच्छन्त (=जाता हुआ)

पुंलिङ्ग

एक वचन	अनेक वचन
पठमा गच्छं, गच्छन्तो	गच्छन्तो, गच्छन्ता
दुतिया गच्छन्तं	गच्छन्ते
ततिया गच्छता, गच्छन्तेन	गच्छन्तेहि, गच्छन्तेभि
चतुर्थी गच्छतो, गच्छन्तस्स	गच्छतं, गच्छन्तानं
पञ्चमी गच्छता, गच्छन्तम्हा, गच्छन्तस्मा	गच्छन्तेहि, गच्छन्तेभि
छठ्ठी गच्छतो, गच्छन्तस्स	गच्छतं, गच्छन्तानं
सप्तमी गच्छति, गच्छन्तस्मिं, गच्छन्तम्हि,	गच्छन्तेसु
गच्छन्ते	
आलपन गच्छं, गच्छ, गच्छा	गच्छन्तो, गच्छन्ता

नपुंसक लिङ्ग

एक वचन	अनेक वचन
पठमा गच्छं, गच्छन्तं	गच्छन्ता, गच्छन्तानि, गच्छन्ति
दुतिया गच्छन्तं	गच्छन्ते, गच्छन्तानि, गच्छन्ति
आलपन गच्छं, गच्छन्त	गच्छन्ता, गच्छन्तानि, गच्छन्ति

शेष पुल्लिङ्ग के समान

§ ३०. 'न्त' तथा 'मान' प्रत्ययों के लगने से, धातु के साथ अपने गण का विकरण भी युक्त होता है। जैसे—

भ्वादि गण—अचन्त (=पूजा करता हुआ), अज्जन्त (=कमाता हुआ),
अटन्त (=धमता हुआ), अदन्त (=खाता हुआ), कम्पन्त (=कांपता हुआ),

१. न्त स्तं २.१५०—'सि' विभक्ति आने से, 'न्त' का विकल्प से 'अं' आदेश होता है। जैसे—गच्छन्त + सि = गच्छं । गच्छन्तो ।

कीलन्त (=खेलता हुआ), गज्जन्त (=गरजता हुआ), चजन्त (=छोड़ता हुआ), चरन्त (=चलता हुआ), जीवन्त (=जीता हुआ), तिट्ठन्त (=खड़ा होता हुआ), भवं^३ (=आप), सन्त^३ ।

रुधादि गण—रुधन्त (=रोकता हुआ), गण्हन्त (=पकड़ता हुआ), भुज्जन्त (=खाता हुआ), सिञ्चन्त (=सींचता हुआ) ।

दिवादि गण—कुज्भन्त (=क्रोध करता हुआ), युज्भन्त (=युद्ध करता हुआ), चुस्सन्त (=सूखता हुआ) इत्यादि ।

§ ३१. महन्तारहन्तानं टा वा २.१५२—‘सि’ विभक्ति आने से, ‘महन्त’ तथा ‘अरहन्त’ शब्दों के ‘न्त’ का विकल्प से ‘आ’ आदेश हो जाता है । जैसे—महन्त + सि = महा, महं । अरहा (=अहंत्), अरहं ।

§ ३२. ‘तु’ प्रत्ययान्त शब्द

कत्तरि ल्लुणका ५.३३—‘करने वाला’ इस अर्थ में, धातु से परे ‘तु’ तथा ‘णक’ प्रत्यय होते हैं । जैसे—दातु = देने वाला । दायक = देने वाला । ‘तु’ तथा ‘णक’ प्रत्ययान्त शब्द कर्ता का विशेषण होता है । [देखिए—पृ० १६१]

‘णक’ प्रत्ययान्त शब्द के रूप, पुल्लिङ्ग में ‘बुद्ध’ शब्द के समान, नपुंसकलिङ्ग में ‘फल’ शब्द के समान, श्रीर स्त्रीलिङ्ग में ‘लता’ शब्द के समान होंगे ।

‘तु’ प्रत्ययान्त शब्द के रूप निम्न प्रकार होंगे—

२. भूतो २.१५१—‘सि’ विभक्ति आने से, ‘भू’ धातु से परे ‘न्त’ प्रत्यय का नित्य ‘अं’ आदेश होता है ।

जैसे—भवं । [‘भवन्त’ नहीं होगा]

भवतो वा भोन्तो गयो नासे २.१४८—‘ग’, ‘यो’, ‘ना’ तथा ‘स’ विभक्तियों के आने से, ‘भवन्त’ शब्द का विकल्प से ‘भोन्त’ आदेश हो जाता है । जैसे—भोन्त, भवं । भोन्तो, भवन्तो । भोता, भवता । भोतो, भवतो ।

३. सतो सव्भे २.१४७—भकार से पूर्व, ‘सन्त’ शब्द का ‘सव्भ’ आदेश हो जाता है । जैसे—

सन्त + भि = सव्विभ ।

दातु (=दाता)

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठमा	दाता ^१	दातारो ^१
द्वुतिया	दातारं	दातारे, दातारो
ततिया	दातारा	दातारेहि, दातारेभि, दातूहि, दातूभि
चतुर्थी	दातु, ^१ दातुनो, दातुस्स	दातारानं, दातानं ^१

४. लुपितादीनमा सिम्हि २.५६—'सि' विभक्ति आने से, 'लु' प्रत्ययान्त तथा 'पिता' आदि शब्दों के अन्त्य स्वर का 'आ' हो जाता है। जैसे—दातु + सि = दाता। कता। पिता।

'पिता' आदि शब्द ये हैं—पितु, मातु, भातु, धीतु, दुहितु, जामातु, नत्तु, होतु, पोतु।

५. लुपितादीनमसे २.१६४—'स' को छोड़, दूसरी विभक्तियों के आने से, 'लु' प्रत्ययान्त तथा 'पिता' आदि शब्दों के अन्त्य स्वर का 'आर' आदेश होता है। जैसे—दातु + यो = दातारो। पितरो। दातारं; पितरं। दातारा; पितरा। दातरि; पितरि।

आरडस्मा २.१७३—'आर' आदेश होने के बाद, 'यो' विभक्ति का 'ओ' आदेश होता है। जैसे—दातु + यो = दातारो। सखारो। पितरो।

टोटे वा २.१७४—'आर' आदेश होने के बाद, 'द्वुतिया' के 'यो' का 'ओ' तथा 'ए' आदेश होता है। जैसे—दातारो, दातारे। सखारो, सखारे।

टानास्मानं २.१७५—'आर' आदेश होने के बाद, 'ना' तथा 'स्मा' का कहीं कहीं 'आ' आदेश होता है। जैसे—दातु + ना, स्मा = दातारा।

टिस्मिनो २.१७६—'आर' आदेश होने के बाद, 'स्मिं' विभक्ति का 'इ' आदेश होता है। जैसे—दातरि, पितरि।

रस्ता रड् २.१७८—'स्मि' विभक्ति आने से, 'आर' का ह्रस्व हो जाता है। जैसे—दातरि, नत्तरि।

६. सलोपो २.१६७—'लु' प्रत्ययान्त तथा 'पिता' आदि शब्दों से परे, विकल्प से 'स' विभक्ति का लोप होता है। जैसे—दातु + स = दातु। पितु।

	ए क व च न	अ ने क व च न
पञ्चमी	दातारा	दातारेहि, दातारेभि, दातूहि, दातूभि ^१
छद्मी	दातु, दातुनो, दातुस्स	दातारानं, दातानं
सत्तमी	दातरि	दातारेसु, दातुसु ^२
आलपन	दात, दाता ^३	दातारो

इसी तरह, वत्तु (=वक्ता), भत्तु (=भर्ता), नेत्तु (=नेता), सोतु (=श्रोता), ज्ञातु (=ज्ञाता), जेतु (=जेता), छेतु (=छेदने वाला), कत्तु (=कर्त्ता), बोद्धु (=जानने वाला) इत्यादि शब्दों के रूप भी होंगे।

§ ३३. पितु (=पिता)

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठमा	पिता	पित्तरो ^१
द्वितीया	पितरं	पितरे, पितरो

७. न भिह् वा २.१६५—'न' विभक्ति आने से, 'ल्लु' प्रत्ययान्त तथा 'पिता' आदि शब्दों के अन्त्य स्वर का विकल्प से 'आर' होता है। जैसे—दातारानं, दातानं। पितरानं, पितुन्नं।

आ २.१६६—'न' विभक्ति आने से, 'ल्लु' प्रत्ययान्त तथा 'पिता' आदि शब्दों के अन्त्य स्वर का विकल्प से 'आ' होता है। जैसे—दातानं, दातूनं। पितानं, पितुन्नं।

८. सु हि स्वार्द्ध २.१६८—'सु' तथा 'हि' विभक्तियों के आने से, 'ल्लु' प्रत्ययान्त तथा 'पिता' आदि शब्दों के अन्त्य स्वर का विकल्प से 'आर' आदेश होता है। जैसे—दातारेसु, दातुसु। पितरेसु, पितुसु। दातारेहि, दातूहि। पितरेहि, पितूहि।

९. गे अ च २.६०—आलपन एक वचन (=१) में, 'ल्लु' प्रत्ययान्त तथा 'पिता' आदि शब्दों के अन्त्य स्वर का 'अ' तथा 'आ' आदेश होता है। जैसे—भो दात, दाता। भो पित, पिता।

एक वचन	अनेक वचन
पुत्रति या पितरा	पितरेहि, पितरेभि, पितूहि, पितूभि
चतुर्थी पितु, पितुनो, पितुस्त	पितरानं, पितानं, पितूनं
पञ्चमी पितर्रा	पितरेहि, पितरेभि, पितूहि, पितूभि
छद्मी पितु, पितुनो, पितुस्त	पितरानं, पितानं, पितूनं
सप्तमी पितरि	पितरेसु, पितूसु
आलपन पित, पिता	पितरो

'भातु' (=भाई), जामातु (=दामाद) शब्द के रूप भी 'पितु' शब्द के समान होते हैं।

§ ३४. मातु (=माता)

एक वचन	अनेक वचन
पठमा माता	मातरो
द्वितीया मातरं	मातरे, मातरो
तृतीया मातुया	मातरेहि, मातरेभि
चतुर्थी मातुया	मातरानं, मातानं, मातूनं
पञ्चमी मातुया	मातरेहि, मातरेभि
छद्मी मातुया	मातरानं, मातानं, मातूनं
सप्तमी मातरि	मातरेसु, मातुसु
आलपन मात, माता	मातरो

धीतु (=बेटी), दुहितु (=पतोहू) आदि स्त्रीलिङ्ग शब्द के रूप 'मातु' शब्द के समान होते हैं।

१०: पितादीनमनत्वादीनं २-१७६—'नत्तु' आदि शब्दों को छोड़, 'पिता' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दों के अन्त्य स्वर का, सभी विभक्तियों में, 'अर' आदेश होता है। जैसे—पितरो, पितरं।

§ ३५. सत्थु (= शास्ता, बुद्ध)

पुल्लिङ्ग

ए क व च न	अ ने क व च न
पठ मा सत्या	सत्या, सत्थारो
डु ति या सत्थारं, सत्थरं	सत्थारो, सत्थारे
त ति या सत्थरा, सत्थारा, सत्थुना	सत्थारेहि, सत्थारेभि
च तु त्थी सत्थु, सत्थुनो, सत्थुस्स	सत्थारानं, सत्थानं, सत्थूनं
प ञ्च मी सत्थरा, सत्थारा, सत्थुना	सत्थारेहि, सत्थारेभि
छ द्ढी सत्थु, सत्थुनो, सत्थुस्स	सत्थारानं, सत्थानं, सत्थूनं
स त्त मी सत्थरि	सत्थारेसु, सत्थूसु
आ ल प न सत्थ, सत्या	सत्या, सत्थारो

§ ३६. सख (= मित्र)

पुल्लिङ्ग

ए क व च न	अ ने क व च न
पठ मा सखा	सखायो, सखानो, सखिनो, सखा ^{११}
डु ति या सखानं, सखं, सखारं, सखायं	”
त ति या सखिना ^{१२}	सखेहि, सखेभि, सखारेहि, सखारेभि
च तु त्थी सखिनो, सखिस्स	सखीनं, ^{१३} सखारानं, सखानं

११. आ यो नो च सखा २.१५६—‘सख’ शब्द से परे, ‘यो’ विभक्ति का विकल्प से ‘आयो’, ‘नो’ तथा ‘आनो’ आदेश होता है। जैसे—सख+यो=सखायो। सखिनो। सखानो। सखा।

१२. नो ना से खि २.१६१—‘नो’, ‘ना’, तथा ‘स’ विभक्तियों के आने से, ‘सख’ शब्द का ‘सखि’ आदेश होता है। जैसे—सखिनो। सखिना। सखिस्स।

१३. स्मानं सु वा २.१६२—‘स्मा’ तथा ‘नं’ विभक्तियों के आने से, ‘सख’ शब्द का विकल्प से ‘सखि’ आदेश होता है। जैसे—सखिस्मा, सखस्मा। सखीनं, सखानं।

	ए क व च न	अ ने क व च न
पञ्चमी	सखिनां, सखारा, सखारस्मा, सखिस्मा, सखस्मा	सखेहि, सखेभि, सखारेहि, सखारेभि
छट्ठी	सखिनो, सखिस्त	सखीनं, सखारानं, सखानं
सप्तमी	सखे ^{१४}	सखारेसु, ^{१५} सखेसु
आलपन	सख, सखा, सखि, सखे	सखानो, सखिनो, सखा

§ ३७. वत्तहा सनन्नं नोनानं २.१६१—'वत्तह' (=वृत्तह) शब्द के रूप, छट्ठी एक वचन में 'वत्तहानो', तथा अनेक वचन में 'वत्तहानानं' होते हैं।

§ ३८. मन

(नपुंसक लिङ्ग)

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठमा	मनो	मना, मनानि
द्वितीया	मनं, मनो	मने, मनानि
तृतीया	मनसा, मनेन	मनेहि, मनेभि
चतुर्थी	मनसो, मनस्त	मनानं
पञ्चमी	मनसा, मनस्मा, मनम्हा	मनेहि, मनेभि
छट्ठी	मनसो, मनस्त	मनानं
सप्तमी	मनसि, मने, मनम्हि, मनस्मि	मनेसु
आलपन	मन, मना	मनानि

१४. टे स्मि नो २.१६०—'सख' शब्द से परे, 'स्मि' विभक्ति का 'ए' आदेश होता है। जैसे—सख + स्मि = सखे।

१५. यो त्वं हि सु. चारङ् २.१६३—'यो', 'सु', 'अं', 'हि', 'सु', 'स्मा' तथा 'नं' विभक्तियों के आने से, 'सख' शब्द का विकल्प से 'सखार' आदेश हो जाता है। जैसे—

सखारो, सखायो । सखारेसु, सखेसु । सखारं, सखं । सखारेहि, सखेहि ।
सखारा, सखारस्मा । सखारानं, सखानं ।

मन, तम, तप, तेज, सिर, उर, वच, अोज, रज, यस, पय—इन शब्दों के रूप 'मन' शब्द के समान होंगे ।

म ना दी हि स्मि सं ना स्मानं सि सो ओ सा सा २.१४६—'मन' आदि शब्दों से परे, 'स्मि, स, अं, ना, तथा स्मा' विभक्तियों का, विकल्प से क्रमशः 'सि, सो, ओ, सा, सा' आदेश हो जाता है । जैसे—मनसि, मनस्मि । मनसो, मनस्स । मनो, मनं । मनसा, मनेन । मनसा, मनस्मा ।

§ ३९. कम्म (= कर्म) .

क म्मा दि तो २.८१—'कम्म' आदि शब्दों से परे, 'स्मि' विभक्ति का विकल्प से 'नि' आदेश हो जाता है । जैसे—कम्मनि, कम्मे । चम्मनि, चम्मे ।

ना स्से नो २.८२—'कम्म' आदि शब्दों से परे, 'ना' विभक्ति का विकल्प से 'एन' आदेश हो जाता है । जैसे—कम्मेन, कम्मना । चम्मेन, चम्मना ।

§ ४०. पद (= पैर)

प दा दी हि सि २.१०७—'पद' आदि शब्दों से परे, 'स्मि' विभक्ति का विकल्प से 'सि' आदेश होता है । जैसे—पद + स्मि = पदसि, पदस्मि ।

ना स्स सा २.१०८—'पद' आदि शब्दों से परे, 'ना' विभक्ति का विकल्प से 'सा' आदेश होता है । जैसे—पद + ना = पदसा, पदेन ।

§ ४१. कोघ (= क्रोध)

को घा दी हि २.१०९—'कोघ' आदि शब्दों से परे, 'ना' विभक्ति का विकल्प से 'सा' आदेश होता है । जैसे—कोघ + ना = कोघसा, कोघेन ।

§ ४२. दिव (= स्वर्ग) .

दि वां दि तो २.१७७—'दिव' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दों से परे, 'स्मि' विभक्ति का 'इ' आदेश होता है । जैसे—

दिव + स्मि = दिवि । भुवि ।

§ ४३. एकच्च (= कोई)

- ४ एक च्चा दी ह तो २.१३७—अकारान्त 'एकच्च' आदि शब्दों से परे, 'यो' विभक्ति का 'ए' आदेश हो जाता है। जैसे—एकच्च + यो = एकच्चे = कोई कोई।
 न नि स्त टा २.१३८—'एकच्च' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दों से परे, 'नि' विभक्ति का 'आ' नहीं होता है। जैसे—एकच्चानि।

§ ४४. अम्मा (=माँ)

- ना म्मा दी हि २.६३—'अम्मा' आदि शब्दों से परे, 'ग' का 'ए' आदेश नहीं होता है। जैसे—भोति अम्मा। भोति अम्मा। भोति अम्वा।
 र स्तो वा २.६४—'ग' विभक्ति आने से, 'अम्मा' आदि शब्दों के अन्त्य स्वर का विकल्प से ह्रस्व हो जाता है। जैसे—भोति अम्म, अम्मा।

§ ४५. सभा

- ति स भा प रि सा य २.१०६—'सभा' तथा 'परिसा' शब्दों से परे, 'स्मि' विभक्ति का विकल्प से 'ति' आदेश हो जाता है। जैसे—सभाति, सभाय।
 परिसाति, परिसाय।

§ ४६. अग्नि (=आग)

- सि स्ता ग्नि तो नि २.१४६—'अग्नि' शब्द से परे, 'सि' विभक्ति का विकल्प से 'नि' आदेश हो जाता है। जैसे—अग्नि + सि = अग्निनि। अग्नि।

§ ४७. इसि (=अपि)

- टे सि स्ति सि स्ता २.१३५—'इसि' शब्द से परे, 'सि' विभक्ति का विकल्प से 'ए' आदेश हो जाता है। जैसे—इसे, इति।
 डु ति य स्त यो स्त २.१३६—'इसि' शब्द से परे, 'दुतिया' के 'यो' का विकल्प से 'ए' आदेश होता है। जैसे—'समणे ब्राह्मणे वन्दे सम्पन्नचरणे इसे।

§ ४८. दण्डपाणि (अन्यार्थ समास)

- इ तो अञ्ज त्थे पु मे २.१८४—अन्यार्थ समास (=बहुव्रीहि) हो, तो

इकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द से परे, 'पठमा' के 'यो' का नो, तथा 'दुतिया' के 'यो' का 'ने' आदेश हो जाता है। जैसे—इण्डपाणिनो (पठमा), दण्डपाणिने (दुतिया)। विकल्प से—इण्डपाणयो।

§ ४९. अरियवुत्ति (अन्यार्थ समास)

ने स्मि नो क्व चि २.१८५—अन्यार्थ समास हो, तो इकारान्त नाम से परे, कहीं कहीं 'स्मि' विभक्ति का विकल्प से 'ने' आदेश हो जाता है। जैसे—अरियवुत्ति + स्मि = अरियवुत्तिने = आर्य वृत्ति वाले में। विकल्प से—अरियवुत्तिम्हि।
“कतञ्जुम्हि च पोसम्हि सीलवन्ते अरियवुत्तिने”

§ ५०. नदी

नज्जा योस्वाम् २.१६६—'यो' विभक्तियों के आने से, 'नदी' शब्द से परे 'आ' का आगम होता है। जैसे—नदी + यो = नदी + आ + यो = (यवा सरे १.३०.) नद्या + यो = (तवग्गवरणानं ये चवग्गवयवा १.४८.) नज्जा + यो = (वगलसेहि ते १.४९.) नज्जा + यो = नज्जायो। नदियो।

§ ५१. हेतु

योम्हि वा क्व चि २.९७—'यो' विभक्ति आने से, कहीं कहीं विकल्प से पुल्लिङ्ग उकारान्त शब्द के 'उ' का 'अ' हो जाता है। जैसे—हेतु + यो = हेतयो। कुरयो।

§ ५२. अम्बु (= पानी)

अम्बवा दी हि २.८०—'अम्बु' आदि शब्दों से परे, 'स्मि' विभक्ति का विकल्प से 'नि' आदेश होता है। जैसे—फलं पतति अम्बुनि = फल पानी में गिरता है। पदुमं यथा पंसुनि आतपे कत्तं = मानो कमल का फूल धूप में धूल पर फेंक दिया गया हो।

§ ५३. जन्तु

५. जन्त्वा वि तो नो च २.८६—पुल्लिङ्ग 'जन्तु' शब्द से परे, 'यो' विभक्ति का विकल्प से 'नो' तथा 'वो' आदेश होता है। जैसे—जन्तुनो, जन्तवो, जन्तुयो।

११. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क) भगवा एतदवोचः—जानतो अहं, भिक्खवे ! पस्सतो आसवानं खयं वदामि, नो अजानतो नो अपस्सतो। अयोनिस्सो मनसि-करोतो आसवा उप्पज्जन्ति। योनिस्सो मनसि-करोतो आसवा पहीयन्ति। भगवा हि जानं जानाति, पस्सं पस्सति। सत्या देव-मनुस्सानं बुद्धो भगवा ति। मातु पितु च उपट्ठानं करोन्तो दारका मङ्गलं लभन्ति। भिक्खु नज्जा तीरे विहरति।

* काले अक्षरों में छपे क्रिया-पदों से 'न्तु' तथा 'मान' प्रत्ययान्त पद बनाइए, और उनका वाक्य में प्रयोग करके दिखाइए।

(ख) पितरानं होतु वा मातरानं होतु वा भातरानं होतु वा, मातुन्नं धीतरेहि पितुन्नं पुत्तेहि मातरो पि पितरो पि भातरो पि पट्टिजगित्त्वा। मातरानं धीतूनं भत्तारो। पितरानं जातूनं भातरो। धम्मस्स दातारो, पदातारो, तण्हाय छेतारो, भार-स्स जेतारो भगवन्तो अरहन्ता नमस्सित्त्वा (प्रणाम करने के योग्य हैं)।

* ऊपर काले अक्षरों में छपे पदों के दुतिया तथा सत्तमी विभक्ति में रूप लिखिए।

३. निम्न लिखित वाक्यों को याद कर लीजिए—

करोन्तो पि कुरुमानो पि करानो पि कुव्वन्तो पि कुशलं कम्मं एव कातव्वं। चरन्तेन वा चरता वा चरमानेन वा चरानेन वा भिक्खुना धम्मं एव चरितव्वं। पितरा वा, मातरा वा, भातरेहि वा, भगिनीहि वा सद्धिं विहारं (बौद्ध-मन्दिर) गच्छमानो अहं भायमाने च भावेन्ते च भिक्खू पस्सामि।

४. नीचे काले अक्षरों में छपे पदों के सरल रूप लिखिए—

(जैसे—नज्जा=नदिया। सखारेहि=सखेहि)

न जच्चा होति ब्राह्मणो। सखारानं नज्जं ओकासं ददन्तो पक्कामि। मातरा च पितरा च सद्धिं विहारं गच्छति। रज्जे रज्जं कारेन्ते मागधे अजात-सत्तुस्मि, भगवा परिनिव्वायि।

५. पालि में अनुवाद कीजिए—

भगवान के धर्म को सुनते हुए भिक्षु लोग चुपचाप (तुण्ही) बैठे रहे । नदी में स्नान करने वाले मनुष्यों को भय होता है । भगवान देखते हुए देखते हैं, जानते हुए जानते हैं । भगवान श्रावकों के चित्त को जानते हुए धर्म-देसना करते हैं । फल खाने वाले लड़कों में यही मेरे साथ आने वाला लड़का पढ़ने वाला है । सूर्य को नमस्कार करते हुए मनुष्यों की आँखें बन्द हैं । भात (भोजन) पकाते हुए मेरा हाथ जल गया । लिखते हुए उसका चित्त विरक्त हो गया ।

दूसरा काण्ड

सातवाँ पाठ

अव्यय-प्रकरण

(दूसरा भाग—उपसर्ग)

§ ७. उपसर्ग वीज हैं। यथा—(१) प, (२) परा, (३) नि, (४) नी, (५) उ, (६) दु, (७) नं, (८) वि, (९) अव, (१०) अनु, (११) परि, (१२) अभि, (१३) अधि, (१४) पति, (१५) सु, (१६) आ, (१७) अति, (१८) अपि, (१९) अप, (२०) उप। धातु के पूर्व उपसर्ग आने से, उसका अर्थ प्रायः बदल जाता है। जैसे—

हरति = हरण करता है

विहरति = विहार करता है

पहरति = प्रहार करता है

संहरति = संहार करता है

आहरति = लाता है। इत्यादि

१. “प” उपसर्ग निम्न अर्थों में प्रयुक्त होता है:—

पत = गिरना

पपतति = सामने गिरता है

नी = लाना

पनेति = सामने लाता है

गह = पकड़ना

पगण्हाति = सामने पकड़ता है

थर = पसारना

पत्थरति = सामने पसारता है

घाव = दौड़ना

पघावति = दौड़ कर आगे निकल जाता है

वज = जाना

पव्वजति = घर से निकल जाता है

सर = गत्यर्थ

पसारेति = फैलाता है

कुप = कुपित होना

पकोपेति = अत्यन्त कुपित होता है

छिन्द = काटना	पच्छिन्दति = काट डालता है
भञ्ज = तोड़ना	पभञ्जति = तोड़-फोड़ देता है
चि = चुनना	पचिनति = ढेर करता है
कीर = विखेरना	पकिण्णति = विखेर देता है
नद = नाद करना	पनदति = शोर करता है
भा = चमकना	पभाति = खूब चमकता है
हा = छोड़ना	पजहति = विलकुल छोड़ देता है
जल = जलना	पज्जलति = प्रज्वलित होता है
जा = जानना	पजानाति = अच्छी तरह जानता है
ठा = खड़ा होना	पट्ठाय = उसके आगे
वत्त = होना	पवत्तति = आगे चलना
	पपुत्त = पुत्र का पुत्र इत्यादि

२. 'परा' उपसर्ग निम्न अर्थों में प्रयुक्त होता है—

जि = जीतना	पराजयति = हरा देता है
भू = होना	पराभवति = हानि को प्राप्त होता है
इ = जाना	पलेति = भागता है
कम = चलना	परक्कमति = पराक्रम करता है
मस = छूना	परामसति = परामर्श करता है ।
	इत्यादि

३ : ४. 'नि'—'नी' उपसर्ग निम्न अर्थों में प्रयुक्त होते हैं—

कम = जाना	निक्खमति = निकलता है
कर = करना	निक्करोति = नीचा दिखाता है
गम = जाना	निग्गच्छति
पत = गिरना	निप्पत्तति
सर = निकलना	निस्सरति
वत्त = होना	निव्वत्तति = सिद्ध होता है
विस = प्रवेश करना	निविसति = विलकुल पैठता है

चि = चुनना	निच्छिनोति = निश्चय करता है
सम = शान्त होना	निसामेति = गौर से सुनना
ठापि = रखना	निट्ठापेति = समाप्त करता है
पद = होना	निपज्जति = सोता है
वा = वहना	निव्याति = बुझ जाता है
तिप = फेकना	निक्खिपति = धरोहर रखता है

५. 'उ' उपसर्ग निम्न अर्थों में प्रयुक्त होता है—

गम = जाना	उगच्छति = ऊपर उठता है
भू = होना	उट्भवति = पैदा होता है ।
सद = जाना, नष्ट करना	{ उस्सादेति = दूर करता है, उठाता है
	{ उस्सापेति = ऊपर उठाता है
सर = खिसकना	उस्सारेति = दूर करता है
लुप = विनाश करना	उल्लुम्पति = बचा लेता है
युज = जोड़ना	उय्युञ्जति = छोड़ कर निकल जाता है
मूल = प्रतिष्ठित होना	उम्मूलेति = जड़ से उखाड़ देता है
भुज = खाना	उट्भुजति = भुक्ता है, बल पूर्वक उठाता है,
ठा = खड़ा होना	उट्ठहति = उठता है
	इत्यादि

६. 'दु' उपसर्ग निम्न अर्थों में प्रयुक्त होता है—

कर = करना	दुक्कर = दुष्कर
गम = जाना	दुग्गत = दुर्गत
	दुग्गन्ध = दुर्गन्ध
	दुच्चरित्त = दुश्चरित्र इत्यादि

७. 'सं' उपसर्ग निम्न अर्थों में प्रयुक्त होता है—

युज = जोड़ना	संयुञ्जति = आपस में मिला देता है
वद = बोलना	संवदति = एक राय होता है

वर = डकना	विवरति = उधारता है
वद = बोलना	विवदति = झगड़ा करता है
सस = साँस लेना	विससति = विश्वास करता है
हर = हरण करना	विहरति = निवास करता है, ध्यानस्थ रहता है

९. 'अव' उपसर्ग निम्न अर्थों में प्रयुक्त होता है—

कम = जाना	अवकमति = निकट आता है
खिप = फेंकना	अवखिपति = नीचे फेंकता है
आ = जानना	अवजानाति = निन्दा करता है, अस्वीकार करता है
मन = जानना	अवमञ्जति = तिरस्कार करता है
सर = चलना	अवसरति = हट जाता है
सज्ज = लगना	अवसज्जति = छोड़ता है

१०. 'अनु' उपसर्ग निम्न अर्थों में प्रयुक्त होता है—

कम्प = कांपना	अनुकम्पति = अनुकम्पा करता है
कर = करना	अनुकरोति = नकल करता है
कम = चलना	अनुक्कमति = पीछा करता है
गम = जाना	अनुगच्छति = पीछे जाता है
गा = गाना	अनुगायति = साथ साथ गाता है
गण्ह = ग्रहण करना	अनुगण्हाति = दया करता है
चर = चलना	अनुचरति = पीछे पीछे चलता है
आ = जानना	अनुजानाति = स्वीकृति देता है
ठ = तड़ा होना	अनुद्वहति = सेवा-उहल करता है, अनुष्ठान करता है
तप = ताप देना	अनुतप्पति = दुःखित होता है
दा = देना	अनुददाति = स्वीकार करता है
नी = ले जाना	अनुनेति = खुसामद करता है
बन्ध = बाँधना	अनुबन्धति = पीछा करता है
भू = होना	अनुभवति = अनुभव करता है

मुद = प्रसन्न होना

वद = बोलना

अनुमोदति = अनुमोदन करता है

अनुवदति = निन्दा करता है

११. 'परि' उपसर्ग निम्न अर्थों में प्रयुक्त होता है—

कत = काटना

कर = करना

परिकन्तति = चारों ओर से काट देता है

परिकरोति = चारों ओर से घेर लेता है,
सेवा-टहल करता है

इक्ख = देखना

चर = चलना

परिक्खति = परीक्षा लेता है

परिचरति = देख-भाल करता है, पूजा करता
है, सेवा करता है

नम = भुक्ना

पत्त = गिरना

भू = होना

भास = कहना

सह = सहना

हर = हरण करना

परिनमति = परिणाम को प्राप्त होता है

परिपतति = विनष्ट होता है

परिभवति = अनादर करता है

परिभासति = निन्दा करता है

परिसहति = हरा देता है, दे मारता है

परिहरति = बचाता है, खवरगोरी करता है

१२. 'अभि' उपसर्ग निम्न अर्थों में प्रयुक्त होता है—

वा = जानना

धाव = दौड़ना

नन्द = प्रसन्न होना

भू = होना

वद = बोलना

सज्ज = लगना

सन्द = बहना

हर = लाना

अभिजानाति = पहचानता है

अभिधावति = किसी ओर दौड़ता है

अभिनन्दति = किसी बात पर प्रसन्न होता है

अभिभवति = हरा कर मालिक वन बैठता है

अभिवदति = अभिवादन करता है

अभिसज्जति = क्रुद्ध होता है

अभिसन्दति = विलकुल भर देता है

अभिहरति = लाता है, या समर्पण करता है

१३. 'अधि' उपसर्ग निम्न अर्थों में प्रयुक्त होता है—

गम = जाना

अधिगच्छति = अधिकार कर लेता है, समझता है

ठ = खड़ा होना	अधिदृहति = अधिष्ठान करता है
पत = गिरना	अधिपतति = गायब हो जाता है
भू = होना	अधिभवति = हरा देता है
वस = रहना	अधिवासेति = प्रतीक्षा करता है, स्वीकार करता है
कर = करना	अधिकरोति = अधिकार करता है ।

१४. 'पति' उपसर्ग निम्न अर्थों में प्रयुक्त होता है—

कर = करना	पटिकरोति = प्रतिकार करता है
कुध = गुस्सा होना	पटिकुञ्भति = बदले में गुस्सा करता है
कम = जाना	पटिकमति = लौटता है
इक्ष = देखना	पटिकक्षति = प्रतीक्षा करता है
स्त्रिप = फेंकना	पटिक्त्रिपति = अस्वीकार करता है
गम = जाना	पटिगच्छति = पीछे छोड़ कर निकल जाता है
आ = जानना	पटिजानाति = स्वीकार करता है, प्रतिज्ञा करता है
धाव = दौड़ना	पटिधावति = भागता है
प + हर = मारना	पटिपहरति = बदले में मारता है
पुच्छ = पूछना	पटिपुच्छति = बदले में पूछता है
वह = डोना	पटिवाहति = रोक रखता है
वुष = जानना	पटिवुञ्भति = जागता है
मुच = छोड़ना	पटिमुञ्चति = बाँधता है
वद = बोलना	पटिवदति = प्रतिवाद करता है
वि + नी = शिक्षा देना	पटिविनेति = दूर कर देता है, दवा देता है
थर = पसारना	पटिसंचरति = सादर स्वागत करता है
सर = चलना	पटिसरति = पीछे भागता है
सिध = सिद्ध होना	पटिसेधति = रोकता है, मना कर देता है
सु = सुनना	पटिस्सुणाति = स्वीकार करता है

१५. 'सु' उपसर्ग निम्न अर्थों में प्रयुक्त होता है—

सुगन्ध	सुकत = सुकृत
सुघर	सुकर
सुचरित	सुकुमार इत्यादि

१६. 'आ' उपसर्ग निम्न अर्थों में प्रयुक्त होता है—

कस = जोतना	आकस्सति = आकर्षण करता है
गम = जाना	आगच्छति = आता है
चि = चुनना	आचिनाति = ढेर लगाता है
दा = देना	आदाति (आददाति) = लेता है
दिस = बताना	आदिसति = आज्ञा देता है
नी = ले जाना	आनेति = ले आता है
पुच्छ = पूछना	आपुच्छति = जाँचता है
वत = होना	आवत्तति = घूम आता है ।

१७. 'अति' उपसर्ग निम्न अर्थों में प्रयुक्त होता है—

कंम = जाना	अतिक्कमति = पार कर जाता है
धाव = दौड़ना	अतिधावति = आगे दौड़ जाता है
पात = गिराना	अतिपातेति = नष्ट करता है
भुज = खाना	अतिभुञ्जति = खूब खा लेता है

१८. 'अपि' उपसर्ग निम्न अर्थों में प्रयुक्त होता है—

घा = धारण करना	अपिघान = ढकना
लप = बात करना	अपिलपेति = डींग हाँकता है

१९. 'अप' उपसर्ग निम्न अर्थों में प्रयुक्त होता है—

इ = जाना	अपेति = हट जाता है
कम = जाना	अपक्कमति = निकल जाता है
गम = जाना	अपगच्छति = चला जाता है

घा = धारण करना	अननिधाति = उतार कर रख देता है
नी = ले जाना	अपनेति = बाहर कर देता है
हर = हरण करना	अपहरति = चोरी करता है
कर = करना	अपफरोति = अपकार करता है
चि = चुनना	अपचायति = सत्कार करता है
ठापि = रखना	अपट्टपेति = अलग रख देता है
नम = झुकना	अपनमति = निकल जाता है
राघ = सिद्ध होना	अपरज्भति = अपराध करता है
वद = बोलना	अपवदति = निन्दा करता है
वह = वहन करना	अपवहति = भगा देता है

२०. 'उप' उपसर्ग निम्न अर्थों में प्रयुक्त होता है—

कर = करना	उपफरोति = उपकार करता है
कम = जाना	उपकमति = चढ़ाई करता है, शुरू करता है
गम = जाना	उपगच्छति = पास में जाता है
चर = चलना	उपचरति = सेवा करता है, व्यवहार में लाता है
ठा = ठहरना	उपट्टहति = सेवा-टहल करता है
घा = दौड़ना	उपघावति = पास में दौड़ जाता है
निसीद = बैठना	उपनिसीदति = पास में बैठता है
सेव = सेवा करना	उपनिसेवति = पीछा करता है
नी = ले जाना	उपनेति = रामीप ले जाता है
रम = झोड़ा करना	उपरमति = हटता है
वस = रहना	उपवसति = पास में रहता है, उपवास करता है
विस = घुसना	उपविसति = पास आता है
इक्त्व = देखना	उपेक्त्वति = उपेक्षा करता है
पद = जाना	उपज्जति = उत्पन्न होता है
पत = गिरना	उप्यति = उड़ता है, ऊपर उठता है

१२. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए:—

- (क) घरम्हा निक्खमित्वा पब्बजि । कथं साराणीयं वीतिसारेत्वा एकमन्तं निसीदि । पठविं परामसित्वा उदानं उदानेसि । विहारे सन्निसिन्नानं सन्नित्तितानं भिक्खूनं पुब्बे-निवास-पटिसंयुत्ता कथा उदपादि । उपसङ्कमित्वा पञ्जत्ते आसने निसीदि । यथा च मे भगवा व्याकरोति, तं साधुकं उग्ग-हेत्वा तुवं आरोचेय्यामि । अट्ट-विमोक्खे अनुलोमं पि पटिलोमं पि समापज्जति, आसवानं च खया चेतोविमुत्ति सयं अभिञ्जा (-य) सच्छिकंत्वा उपसम्पज्ज विहरतीति । अभिजानामि इतो पुब्बे एवं नामधेय्यं (नाम) सुत्वा ति ।
- (ख) पापानि कम्मनि विवज्जयाथ, धम्मानुयोगञ्च अधिट्ठहाथा ति । अच्छरानं गणेन परिवारितो अनेकचित्तं विमानं आरुह् देवता मोदति । अभिक्कन्तेन वण्णेन ओसधी तारका विय दिसा सब्वा ओभासेन्तो तिट्ठसि । पादे पक्खालयित्वान (=धोकर) एकमन्ते उपाविसि, (उत्तरा थेरी) पुब्बजातिं अनुस्सरि, दिब्बचक्खुं विसोधयिं । रत्तिया पच्छिमे यामे तमोक्खन्धं पदालयिं । तेविज्जा (हुत्वा) अथ उट्ठसि कता ते (तथागतस्स) अनुसासनी ति ।
- (ग) जयं वेरं पसवति, दुक्खं सेति पराजितो ।
उपसन्तो सुखं सेति, हित्वा जय-पराजयं ॥ ॥
तुम्हेहि किच्चं आतप्पं, अक्खातारो तथागता ।
पटिपन्ना पमोक्खन्ति, भायिनो मारबन्धना ॥ ॥

२. पालि में अनुवाद कीजिए:—

प्रातःकाल निद्रा से जागता हूँ । उठकर बैठता हूँ । हाथ मुंह धोता हूँ । पैर धो कर बैठ जाता है । तब याद करते हुए, श्वास लेता है (=अस्ससति) । स्मरण रखते (सतोव) श्वास फेंकता है (पस्ससति) । लोक में लोभ को छोड़ कर ध्यान करता है ।

श्रावस्ती में कुछ लड़के डण्डे से साँप मार रहे थे (प+हर) । भगवान् ने उनको उपदेश दिया । शील पालन करने वाला भिक्षु मृत्यु को हरा देता है (परा+जि) । हम लोग कल वहाँ गए थे, आज आ रहे हैं । आनन्द ने भगवान् की टहल की (उप+ठा) । कुमार सिद्धार्थ राज-महल से निकल गए (=नि+कम) ।

तीसरा काण्ड

पहला पाठ

क्रिया-प्रकरण

(चौथा भाग—गण विचार)

१—भ्वादि गण

§ ४. नवों गणों में भ्वादि-गण सबसे बड़ा है। मोगल्लान धातु-पाठ के अनुसार, इस गण में ३०४ धातु हैं। इन धातुओं की सूची में, सर्व प्रथम 'भू' धातु है; अतः इस गण का नाम 'भ्वादि-गण' रखा गया है।

मोगल्लान धातु-पाठ के अन्त में आता है "अमन्तो उच्चारणतो सेसा धात्वत्या"; अर्थात्, जो अकारान्त धातु हैं, उनका अन्त्य 'अ' केवल उच्चारण-सौकर्य के लिए है; धातु को 'अ' से रहित समझना चाहिए। जैसे—पच = पच् ।

§ ५. भ्वादि-गण के कुछ द्रष्टव्य धातु—

भवति

क त्त रि लो ५.१८—कर्तृवाच्य में, 'न्त', 'मान', तथा (परोक्ष भूत को छोड़) 'ति' आदि प्रत्ययों के आने से, धातु से परे 'ल' का आगम होता है। 'ल' का 'अ' रह जाता है। जैसे—

पच + ति = पच + अ + ति = पचति । जि + ति = जे + ति = जे + अ + ति = जयति । भू + ति = भो + ति = भो + अ + ति = भवति ।

यु व ण्णा न भे ओ ष् च्च ये ५.८२—प्रत्यय आने से, धातु के अन्त्य 'इ' का 'ए', तथा 'उ' का 'ओ' हो जाता है। जैसे—नि + त्वं = नेतव्वं । सोतव्वं जि + ति = जे + ति । भू + ति = भो + ति ।

एओनमयवासरे ५.८६—स्वर परे हो, तो पूर्वस्थित 'ए' का 'अय', तथा 'ओ' का 'अव' हो जाता है। जैसे—जि+ति=जे+ति=जे+अ+ति=जयति। भू+ति=भो+ति=भो+अ+ति=भवति।

द्रष्टव्य—लहुस्सुपन्तस्स ५.८३—प्रत्यय आने से, प्रायः धातु के उपान्त 'इ' तथा 'उ' का यथाक्रम 'ए' तथा 'ओ' हो जाता है। जैसे—

सुच+ति=सोचति। जुत—जोतति। रुद—रोदति। मुद—मोदति। सुभ—सोभति। रुच—रोचति। तिज—तेजति=तेज करना। कित—केतति।

घम्मति। वज्जति। दज्जति

गम वद दानं घम्म वज्ज दज्जा ५.१७६—'न्त', 'मान' तथा 'ति' आदि (परोक्ष भूत को छोड़) प्रत्ययों के आने से, विकल्प से 'गम' का 'घम्म', 'वद' का 'वज्ज', तथा 'दा' का 'दज्ज' आदेश होता है। जैसे—घम्मति; घम्मन्तो, गच्छन्तो। वज्जति, वज्जन्तो, वदन्तो। दज्जति, दज्जन्तो, ददन्तो।

गच्छति। यच्छति। इच्छति। अच्छति। दिच्छति

गमयमिसासदिसानं वा च्छइ ५.१७३—'न्त', 'मान', तथा (परोक्ष भूत को छोड़) 'ति' आदि प्रत्ययों के आने से, 'गम', 'यम', 'इस', 'अस', तथा 'दिस' धातुओं का क्रमशः 'गच्छ', 'यच्छ', 'इच्छ', 'अच्छ', तथा 'दिच्छ' आदेश हो जाता है। जैसे—गच्छन्तो, गच्छमानो, गच्छति इत्यादि।

गच्छरे। गमिस्सरे

गुरुषुवा रस्सा रे न्तेन्तीनं ६.७४—गुरुपूर्वं ह्रस्व धातु से परे, 'न्ते' तथा 'न्ति' विभक्तियों का विकल्प से 'रे' आदेश हो जाता है। जैसे—गच्छरे, गच्छन्ति। गच्छरे, गच्छन्ते। गमिस्सरे।

सन्ति, सन्तु, सिया, सन्तो, समानो

न्तमानान्ति यियुं स्वादि लोपो ५.१३०—'न्त', 'मान', 'अन्ति', 'अन्तु', 'इय', तथा 'इयुं' प्रत्ययों के आने से, 'अस' धातु का केवल 'स' रह जाता है। जैसे—अस+न्त=स+न्त=सन्तो। समानो। सन्ति। सन्तु। सिया। सियुं।

तिट्ठति । पिवति

ठा पानं तिट्ठ पि वा ५.१७५—'न्त', 'मान', तथा (परोक्ष भूत को छोड़) 'ति' आदि प्रत्ययों के आने से, 'ठा' धातु का 'तिट्ठ', और 'पा' धातु का 'पिव' आदेश हो जाता है। जैसे—तिट्ठन्तो, तिट्ठमानो, तिट्ठति। पिवन्तो, पिवमानो, पिवति।

डहति

द हस्स दस्स डो ५.१२६—'दह' धातु के 'द' का विकल्प से 'ड' आदेश हो जाता है। जैसे—

दहति; डहति। दाहो; डाहो।

अदेन्ति

त्रि लस्से ५.१६३—'त्रि' तथा 'ल' का, कहीं कहीं 'ए' आदेश हो जाता है। जैसे—अद + ल + अन्ति = अदेन्ति । गह + त्रि + त्वा = गहेत्वा (त्रि व्यञ्जनस्त ५.७०)

जीयति । मीयति

ज र म राण मी य ड् ५.१७४—'न्त', 'मान' तथा (परोक्ष भूत को छोड़) 'ति' आदि प्रत्ययों के आने से, 'जर' तथा 'मर' धातुओं का विकल्प से क्रमशः 'जीय' तथा 'मीय' आदेश होता है। जैसे—

जीयन्तो, जीरन्तो। जीयमानो, जीरमानो। जीयति, जीरति। मीयन्तो, मरन्तो। मीयमानो, मरमानो। मीयति, मरति।

जीरति । निसीदति

ज र स दान मी म् वा ५.१२३—'जर' तथा 'सद' धातुओं के अन्त्य स्वर से परे, कहीं कहीं 'ई' का आगम होता है। जैसे—

जीरणं, जीरति, जीरापेति। निसीदित्वं, निसीदनं, निसीदितुं, निसीदति। कहीं कहीं 'ई' का आगम नहीं भी होता है। जैसे—जरा; निसज्ज।

उट्ठहति

पा दितो ठा स्स वा ठहो ष्व चि ५.१३१—उपसर्ग-पूर्वक 'ठा' धातु का,

कहीं-कहीं विकल्प से 'ठहो' आदेश हो जाता है । जैसे—उट्टहति, सण्ठहति । उत्ति-ट्टति, सन्तिट्टति ।

समादियति

दा स्ति य ड् ५.१३२—उपसर्ग-पूर्वक 'दा' धातु का 'दिय' आदेश हो जाता है । जैसे—सं + आ + दा + ति = समादियति । अनादियित्वा ।

निक्खमति

नि तो क म स्स ५.१३५—'नि' उपसर्ग-पूर्वक 'कम' धातु का, कहीं कहीं 'क्खम' आदेश हो जाता है । जैसे—निक्खमति ।

पस्सति

दि स स्स प स्स, द स्स, द स, द, द क्खा ५.१२४—'दिस' धातु के 'पस्स', 'दस्स', 'दस्', 'द', तथा 'दक्ख' आदेश होते हैं । जैसे—

पस्सति । (कमं) दस्सेति । (भूत) अदस, अदं, अद्दा । दक्खिस्सति (भविष्यत्काल) ।

२-रुधादि गण

§ ६. मं च रुधादीनं ५.१६—'न्त', 'मान', तथा 'ति' आदि (परोक्ष भूत को छोड़) प्रत्ययों के आने से, रुधादि धातु के अन्तिम स्वर से परे 'अं' का आगम होता है । जैसे—

- कत् (कन्तति) = काटना
- गह् (गण्हति) * = पकड़ना
- छिद् (छिन्दति) = छेदना
- वष् (वन्धति) = बाँधना
- भिद् (भिन्दति) = भेदन करना
- भुज् (भुञ्जति) = खाना
- मुच् (मुञ्चति) = छोड़ना
- युज् (युञ्जति) = जोड़ना

- रुघ् (रुन्धति) = रोकना
 लिप् (लिम्पति) = लेपना
 सिच् (सिञ्चति) = सींचना
 हिस् (हिंसति) = हिंसा करना

§ ७. रुधादि गण के कुछ द्रष्टव्य धातु—

घेष्यति

गहस्स घेष्यो ५.१७८—'न्त', 'मान', तथा (परोक्ष भूत को छोड़) 'ति' आदि प्रत्ययों के आने से, 'गह' धातु का 'घेष्य' आदेश हो जाता है। जैसे—
 घेष्यन्तो । घेष्यमानो । घेष्यति ।

*गण्हाति

णो नि ग्ग ही त स्स ५.१७९—'गह' धातु के अन्तिम स्वर से परे, जो 'अ' का आगम होता है, उसका 'ण' आदेश हो जाता है ।

जैसे—गह + ति = गण्हाति । गण्हतव्वं । गण्हतुं । गण्हन्तो ।

३-दिवादि गण

§ ८. दिवादीहि यक् ५.२१—'न्त', 'मान', तथा (परोक्ष भूत को छोड़) 'ति' आदि प्रत्ययों के आने से, 'दिव' आदि धातु से परे, 'य' का आगम होता है। जैसे—

- कुघ (कुज्झति*) = गुस्सा होना
 कुप (कुप्पति) = कोप करना
 गा (गायति) = गाना
 घा (घायति) = सूँघना
 छिद (छिज्जति*) = टूटना
 भा (भायति) = ध्यान करना
 दिव (दिव्वति) = खेलना
 नहा (नहायति) = नहाना
 वुध (वुज्झति*) = समझना
 युव (युज्झति*) = लड़ाई करना

रुच (रुचति) =	अच्छा लगना
लुभ (लुभति*) =	लोभ करना
सम (सम्मति) =	शान्त होना
सिव (सिच्चति) =	सीना
सुध (सुज्जति*) =	शुद्ध होना
सुस (सुस्सति) =	सूखना
हन (हञ्जति)* =	मारना

§ ९. क्व चि विकरणानं ५.१६१—कहीं कहीं विकरण का लोप होता है। जैसे—

हन + ति = हन्ति । विकरण का लोप नहीं होने से—हन + य + ति = हञ्जति ।

उदपद + ई = उदपादि । विकरण का लोप नहीं होने से—उदपद + य + ई = उप्पज्जि ।

४-तुदादि गण

§ १०. तु दा दी हि को ५.२२—'न्त', 'मान', तथा (परोक्ष भूत को छोड़) 'ति' आदि प्रत्ययों के आने से, 'तुद' आदि धातु से परे 'अ' का आगम होता है। प्रत्यय आने से, इस गण के धातु के उपान्त 'इ' या 'उ' का 'ए' या 'ओ' नहीं होता है। जैसे—

वि + किर (विकिरति) = छीटना

खिप (खिपति) = फेंकना

नि + गिर (निगिरति) = निगलना

गिल (गिलति) = निगलना

तुद (तुदति) = पीड़ा करना

* कुष् + ति = कुष् + य + ति = कुध्यति = कुभ्यति (तवग्गवरणानं ये चव गवयला १.४८—देखिए पृ० २२३) = कुभ्भति (वग्ग लसेहि ते १.४९—देखिए पृ० २२४) = कुज्जति (चतुत्थ दुतियेस्वेसं ततियपठमा १.३६—देखिए पृ० २२४)। इसी तरह—युज्जति । लुब्भति । दिज्जति । सुज्जति । हञ्जति । इत्यादि।

नुद (नुदति) =	प्रेरित करना
फुर (फुरति) =	फड़कना
फुस (फुसति) =	छूना
मुस (मुसति) =	चुराना
लिख (लिखति) =	लिखना
विद (विदति) =	जानना
विस (विसति) =	धुसना
सुप (सुपति) =	सोना

५-ज्यादि गण

§ ११. ज्यां दी हि फ्ना ५.२३—'न्त', 'मान', तथा (परोक्ष भूत को छोड़) 'ति' आदि प्रत्ययों के आने से, 'ज्यादि गण' के धातु से परे 'ना' का आगम होता है। प्रत्ययों के आने से, इस गण के धातु के उपान्त 'इ' या 'उ' का 'ए' या 'ओ' नहीं होता है। जैसे—

अस (अस्नाति) =	खाना
चि (चिनाति) =	चुनना
जा (जानाति) =	जानना
धु (धुनाति) =	प्रशंसा करना
धू (धुनाति) =	धुनना
पू (पुनाति) =	पवित्र करना
लू (लुनाति) =	छोटना
सि (सिनाति) =	सीना

§ १२. ज्यादि गण के कुछ द्रष्टव्य धातु—

जानाति, नायति

आस्त् ने जा ५.१२०—'न' परे हो, तो 'जा' धातु का 'जा' आदेश हो जाता है। जैसे—

जानाति । जानितुं । जानन्तो ।

यदि 'न' परे नहीं हो, तो 'जा' का 'जा' नहीं होता है। जैसे—आ + क्त = आतो ।

आस्स सनास्स नायो ति ण्हि ६.६१—'ति' प्रत्यय आने से, 'जा' धातु का विकल्प से अपने विकरण 'ना' के साथ 'नाय' आदेश होता है। जैसे—नायति; जानाति ।

धुनाति, किणाति

णानासु रस्सो ६.३२—'णा' तथा 'ना' विकरण के आने से, धातु के अन्त्य स्वर का ह्रस्व हो जाता है। जैसे—धू + ना + ति = धुनाति । की + णा + ति = किणाति ।

६-क्यादि गण

§ १३. क्या दी हि कणा ५.२४—'न्त', 'मान', तथा (परोक्ष भूत को छोड़) 'ति' आदि प्रत्ययों के आने से, 'क्यादि गण' के धातु से परे, 'णा' का आगम होता है। प्रत्यय आने से, इस गण के धातु के उपान्त 'इ' या 'उ' का 'ए' या 'ओ' नहीं होता है। जैसे—

की	(किणाति) = खरीदना
वि + की	(विकिणाति) = वेचना
गि	(गिणाति) = शब्द करना
वु	(वुणाति) = ढकना
सक	(सक्णाति) = सकना
सू	(सुणाति) = सुनना

७-स्वादि गण

§ १४. स्वा दी हि कणो ५.२५—'न्त', 'मान' तथा (परोक्ष भूत को छोड़) 'ति' आदि प्रत्ययों के आने से, 'स्वादि गण' के धातु से परे, 'णो' का आगम होता है। प्रत्यय आने से ०। जैसे—

सु	(सुणोति) = सुनना
खी	(खिणोति) = क्षय होना
वु	(वुणोति) = ढकना

गि (गिणोति) = शब्द करना

सक (सक्णोति)* = सकना

प + आप (पापुणोति)* = प्राप्त करना

*सक्कुणोति

स का पानं कु क्कु णे ५.१२१—'ण' परे हो, तो 'सक' तथा 'आप' धातुओं के उत्तर, क्रमशः 'कु' तथा 'उ' का आगम होता है। जैसे—सक + णो + ति = सक्कुणोति। पाप + णो + ति = पापुणोति।

८-तनादि गण

§ १५. त ना दि त्वो ५.२६—'न्त', 'मान', तथा (परोक्ष भूत को छोड़) 'ति' आदि प्रत्ययों के आने से, 'तनादि गण' के धातु से परे, 'ओ' का आगम होता है। जैसे—

तन (तनोति) = फँलाना

सक (सक्कोति) = सकना

वन (वनोति) = माँगना

मन (मनोति) = जानना

आप (अप्पोति) = पाना

कर (करोति) = करना

§ १६. तनादि गण के कुछ द्रष्टव्य धातु—

तनुति, तनुते

ओ वि क र ण स्सु प र च्छ व्के ६.७६—'अत्तनो पद' में, 'ओ' विकरण का 'उ' आदेश होता है। जैसे—

तन + ते = तन + ओ + ते = तन + उ + ते = तनुते।

पु व्व च्छ व्के वा क्व चि ६.७७—'परस्सपद' में भी, 'ओ' विकरण का कहीं कहीं विकल्प से 'उ' आदेश होता है। जैसे—

तनुति, तनोति।

कुञ्चति, कयिरति, करोति

क र स्स सो स्स जु व्व कु रु क वि रा ५.१७७—'न्त', 'मान', तथा (परोक्ष

भूत को छोड़) 'ति' आदि प्रत्ययों के आने से, अपने विकरण 'ओ' के साथ, 'कर' धातु के 'कुव्व', 'कुरु' तथा 'कयिर' आदेश हो जाते हैं। जैसे—

कुव्वन्तो, कयिरन्तो, करोन्तो । कुव्वमानो, कुरुमानो, कयिरमानो, कराणो ।
कुव्वति, कयिरति करोति । कुव्वते, कुरुते, कयिरते ।

कुम्मि, कुम्म

करस्स सोस्स कुं ६.२३—'मि' तथा 'म' प्रत्ययों के आने से, 'कर' धातु का, अपने विकरण 'ओ' के साथ, विकल्प से 'कुं' आदेश होता है। जैसे—
कर+मि=कुम्मि । कर+म=कुम्म ।

सङ्खरियति

क रो ति स्स खो ५.१३३—उपसर्ग-पूर्वक 'कर' धातु का, कहीं कहीं 'खर' आदेश हो जाता है। जैसे—सङ्खारो । सङ्खरियति ।

पुरेक्खति

पु र स्सा ५.१३४—'पुर' शब्द पूर्वक 'कर' धातु का, 'क्खर' आदेश हो जाता है। जैसे—पुरेक्खत्वा । पुरेक्खारो । पुरेक्खति ।

६-चुरादि गण

§ १७. चुरादि तो णि ५.१५—'न्त', 'मान', तथा (परोक्ष भूत को छोड़) 'ति' आदि प्रत्ययों के आने से, 'चुर' आदि धातु से परे, 'णि' का आगम होता है। 'णि' का केवल 'इ' रह जाता है; तथा, धातु के उपान्त लघु स्वर की प्रायः वृद्धि होती है। जैसे—

अज्ज (अज्जेति, अज्जयति) = कमाना

ईर (ईरेति, ईरयति) = हिलना

कण्ण (कण्णेति, कण्णयति) = सुनना

कथ (कथेति, कथयति) = कहना

कित्त (कित्तेति, कित्तयति) = कीर्तन करना

गण (गणेति, गणयति) = गिनना

- गन्य (गन्येति, गन्ययति) = गूषणा
 चिन्त (चिन्तेति, चिन्तयति) = विचारना
 चुष्ण (चुष्णेति, चुष्णयति) = चूर चूर करना
 *चुर (चोरेति, चोरयति) = चुराना
 छद् (छद्देति, छद्दयति) = फेरना
 भ्रप (भ्रापेति, भ्रापयति) = जलाना
 पाल (पालेति, पालयति) = भागना
 पिण्ड (पिण्डेति, पिण्डयति) = पिण्ड बनाना
 पुस (पोतेति, पोसयति) = पोसना
 पूज (पूजेति, पूजयति) = पूजा करना
 मन्त (मन्तेति, मन्तयति) = सलाह करना
 तक्क (तक्केति, तक्कयति) = तर्क करना
 तीर (तीरेति, तीरयति) = पूरा करना
 दित्त (देसेति, देसयति) = उपदेश करना
 वन्द (वन्देति, वन्दयति) = वन्दना करना
 वण्ण (वण्णेति, वण्णयति) = तारीफ करना

*क त्ति रि लो ५.१८—इस सूत्र से, 'अ' का आगम हुआ। जैसे—चोरि + अ + ति।

युवण्णानमेओ प्पच्चये ५.८२—इस सूत्र से, चोरे + अ + ति।

एओनमयवा सरे ५.८६—इस सूत्रसे—चोरयति।

परो वञ्चि १.२७—इस सूत्र से—चोरेति। इसी तरह, दूसरे धातुओं का

१३. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए —

भगवन्तं ब्रह्मा याचि । भगवा धम्मचक्रं पवत्तयि । बहून् देव-मनुस्सानं अभिसमयो अहु । भगवा हि सव्वं ददाति । चतु-सच्चं पकासेति । पाणिनं अनुकम्पति । भिक्खू भगवन्तं परिवारेन्ति । पापकारी सोचति । पुञ्जकारी मोदति । भिक्खं गण्हाति ।

दारका भगवन्तं अहसासुं । भिक्खू नगरा निक्खामिसु । दारका उय्याने कीळिसु । सव्वे घम्मा अनत्ताति जानिसु । वाळ्हगिलानो अहोसिं । सिक्खा-पदं समादिथिसु । अक्कोधेन कोधं अजिनिं, असाधुं साधुना अजेसिं । कोधनो मनुस्सो दुब्बलो अहोसिं । सव्वे पाणा जीरिस्सन्ति, मरिस्सन्ति, पुन पि जाधिस्सन्ति । अहं मार-वन्वना मोक्खामि । बुद्धं सरणं गमिस्सामि । घम्मं सुणिस्सामि । पधानं पदहिस्सामि । कम्मट्ठानं गणिहस्सामि । भव-सोतं छिन्दिस्सामि ।

२. ऊपर काले अक्षरों में छुपे क्रियापदों को वर्तमान काल प्रथम पुरुष एक वचन में लिखिए ।

३. निम्न-लिखित क्रियापदों के रूप परिसमाप्त्यर्थक भूत काल में लिखिए—

भवामि । लिखिस्सामि । गमिस्सामि । तिट्ठामि । ददासि । हेस्सति । सन्ति । रुद्धन्ति । छिन्दथ । दिव्वाम । सुणाथ । जिनिस्ससि । जानाम । काहसि । पोसेथ ।

४. पालि में अनुवाद कीजिए —

भगवान् एक सप्ताह बैठे । सारिपुत्त ने भगवान् से पूछा । राजा ने भगवान् को अभिवादन किया, नमस्कार किया दान दिया । लड़कियाँ गा रही थीं । भगवान् को ब्रह्मा ने याचना की । भगवान् ने स्वीकार किया ।

५. निम्न-लिखित क्रिया-पदों का अध्ययन कीजिए—

बुद्धं सरणं गमिस्सन्ति वा गच्छिस्सन्ति वा । घम्मं जानिस्ससि, वा बस्ससि वा । वेदं (हर्षं) सोमनस्सं च लभिस्साम वा लच्छाम वा । निव्वानस्स पत्तिया मग्गो हेहिंति वा हेस्सति वा होहिस्सति वा । दारका भिक्खुं दक्खन्ति वा दक्खन्ति

वा पस्तिस्सन्ति वा । अहं सुणोमि वा सुणामि वा । धम्म-चारी सुखं पापुणाति वा पापुणोति वा पप्पोति वा । भिक्खू समण-किच्चं करोन्ति वा कुब्धन्ति वा कयीरन्ति वा करिस्सन्ति वा; काहन्ति वा काहिन्ति वा । यं धम्मं सुणोमि तं धारयामि । यो भानं भावेति सो सुखं पप्पोति ।

६. पालि में अनुवाद कीजिए—

होता है । खाता है । कहता है । हवा बहती है । भूमि पर बैठता है । धम्म सुनता है । ध्यान करता हूँ । वितर्क को रोकता हूँ । भावना कर सकता हूँ । पुस्तक खरीदता हूँ । मनुष्य बूढ़ा होता है । मैं काम करता हूँ ।

तीसरा काण्ड

दूसरा पाठ

क्रिया-प्रकरण

(पाँचवाँ भाग—विधिलिङ्ग : अनुज्ञा)

विधि (हेतुफल)

परस्स पद

	एक व च न	अनेक व च न
पठम पुरिस	पचे, ३ पचेय्य	पचेय्युं, पचुं ^१
मज्झिम पुरिस	पचे, ३ पचेय्यासि	पचेय्याथ
उत्तम पुरिस	पचे, ३ पचेय्यामि	पचेमु, ३ पचेय्याम, पचेय्यामु ^२

१. हेतु फले स्त्रेय्य, एय्युं, एय्यासि एय्याथ, एय्यामि, एय्याम; एथ एरं, एथो एय्यन्हो, एय्यं एय्याम्हे ६.६—हेतु तथा फल के अर्थ में, धातु से परे, ये प्रत्यय होते हैं। जैसे—

स चे संखारा निच्चा भवेय्युं, न निरुज्जेय्युं—यदि संस्कार नित्य हों, तो निरुद्ध न हों। (यहाँ नित्य होना हेतु है, और न निरुद्ध होना फल।)

पञ्चपत्थना विधिसु ६.६—प्रश्न, प्रार्थना, तथा विधि के अर्थ में, ये प्रत्यय होते हैं। जैसे—

प्रश्न—किमायस्मा विनयम्परियापुणेय्य, उदाहु घम्मं—आयुष्मान् विनय का अध्ययन करेंगे, या धर्म का? गच्छेय्यं वाहं उपोसथं, न वा गच्छेय्यं—मैं उपोसथ को जाऊँ या न जाऊँ?

प्रार्थना—लभेय्याहम्भन्ते! भगवतो सन्तिके पव्वज्जं, लभेय्यं उपसम्पदं—

अत्तनो पद

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठ म पु रि सं	पचेथ	पचेरं
म जिह्म पु रि स	पचेथो	पचेय्य्हो
उत्त म पु रि स	पचेय्यं	पचेय्याह्ये

§ १८. 'विधि' में कुछ विशेष धातु के रूप—

अस—अस्स, सिया^१। ना—जानिया, जानेय्य, जञ्जा^१। कर—कयिरा^१।

भन्ते ! मैं भगवान के पास प्रव्रज्या तथा उपसम्पदा ग्रहण करूँ। पस्तेय्यं तं वस्ससतं अरोगं =उत्ते मैं सौ वर्ष तक नीरोग देखूँ।

विधि—भवं पुञ्जं करेय्यं=आप पुण्य करें। इह भवं भुञ्जेय्य=आप यहाँ खायें। माणवकं भवं अज्जापेय्य=लड़के को आप पढ़ावें।

अनुज्ञा—एवं करेय्यासि=ऐसा करो। गामं त्वं भणे गच्छेय्यासि=हे, तुम गाँव जाओ।

स त्य र हे त्वे य्या दि ६.११—समर्थ होने के अर्थ में भी, धातु से परे ये प्रत्यय होते हैं। जैसे—भवं खलु रज्जं करेय्यं=आप राज्य भी कर सकते हैं।

२. ए य्ये य्या से य्यं त्रं टे ६.७५—'एय्य', 'एय्यासि', तथा 'एय्यं' का विकल्प से 'ए' आदेश होता है। जैसे—पचे, पचेय्य। पचे, पचेय्यासि। पचे, पचेय्यं।

३. ए य्युं ल्लुं ६.४७—'एय्युं' प्रत्यय का विकल्प से 'उं' आदेश होता है। जैसे—पच + एय्युं = पच + उं = पचुं ; पचेय्युं।

४. ए य्या म स्से मु च ६.७८—'एय्याम' का विकल्प से 'एमु' आदेश हो जाता है। जैसे—पचेमु, पचेय्याम, पचेय्यामु।

५. अ त्यि ते य्या दि च्छ त्रं स तु स त थ सं सा म ६.५०—आ दि द्वि त्त मि या इयुं ६.५१—'अस' धातु से परे, इन प्रत्ययों के आने से, उसके रूप निम्न प्रकार होते हैं—

अनुज्ञा

परस्स पद

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठम पुरिस	पचतु	पचन्तु
मज्झिम पुरिस	पच्च, पचाहिं	पचथ
उत्तम पुरिस	पचामि	पचाम

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठम पुरिस	अस्स, सिया	अत्सु, सियुं
मज्झिम पुरिस	अस्स	अत्सथ
उत्तम पुरिस	अस्सं	अत्साम

६. एय्यास्तिचाजा वा ६.६३—'जा' धातु से परे, 'एय्य' का विकल्प से 'इया' तथा 'जा' आदेश हो जाता है। जैसे—जा + एय्य = जानिया, जञ्जा। विकल्प से—जानेय्य।

जाग्धि जं ६.६२—'एय्य' का 'जा' आदेश होने पर, 'जा' धातु का 'जं' आदेश हो जाता है। जैसे—जा + एय्य = जा + जा = जं + जा = जञ्जा।

७. कयिरेय्यस्सेय्युमादीनं ६.७०—'कयिरा' से परे, 'एय्युं' आदि के 'एय्य' का लोप हो जाता है। जैसे—कयिरा + एय्युं = कयिरा + उं = कयिरं। कयिरा + एय्यासि = कयिरा + आसि = कयिरासि। कयिराथ। कयिरामि। कयिराम।

टा ६.७१—'कयिरा' से परे, 'एय्य' का 'आ' आदेश हो जाता है। जैसे—सो कयिरा।

एथस्सा ६.७२—'कयिरा' से परे, 'एथ' का 'आथ' हो जाता है। जैसे—कयिराथ।

८. तु अन्तु, हि थ, मि म; तं अन्तं, स्तु व्हो, ए ग्रामसे ६.१०—प्रश्न, प्रार्थना, तथा विधि में, धातु से परे 'तु' आदि प्रत्यय होते हैं। जैसे—पचतु, पचन्तु इत्यादि।

अत्तनी पद

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठ म पु रि स	पचतं	पचन्तं
म जिम् म पु रि स	पचत्सु	पचव्हो
उ त्त म पु रि स	पचे	पचामसे

प्रश्न में—किन्तु खलु भो व्याकरणं अवीयत्सु—क्या तू व्याकरण पढ़ रहा है ?

प्रार्थना में—वदाहि मे=मुझको दो । जीवतु भवं=आप जीयें ।

विधि में—कटं करोतु भवं=आप चटाई बनावें । पुञ्जं करोतु भवं=

आप पुण्य करें ।

६. हि मि मे स्व स्त ६.५७—'हि', 'मि' तथा 'म' प्रत्ययों से पूर्व, अकार का आकार हो जाता है । जैसे—पचाहि ।

हि स्त तो लो पो ६.४८—अकार से परे, 'हि' का विकल्प से लोप हो जाता है । जैसे—गच्छ, गच्छाहि ।

द्रष्टव्य—अनुज्ञा में—'अस' धातु के रूप इस प्रकार होंगे—

अत्यु	सन्तु
अहि	अत्य
अस्मि	अस्म

सि हि स्व ६.५३—'सि' तथा 'हि' प्रत्ययों के आने से, 'अस' धातु का 'अ' आदेश हो जाता है । जैसे—

अस् + हि = अ + हि = अहि । असि ।

विधिलिङ्ग में नवों गणों के धातु के रूप कैसे होंगे, यह निम्न तालिका से प्रकट होगा :—

धातु	गण	पठम पुरिस		मज्झिम पुरिस		उत्तम पुरिस	
		एक वचन	अनेक वचन	एक वचन	अनेक वचन	एक वचन	अनेक वचन
१. भू	भ्वादि	भवेथ्य, भवे	भवेथ्युं	भवेथ्यासि	भवेथ्याथ	भवेथ्यामि	भवेथ्याम
२. हु	"	हेथ्य	हेथ्युं	हेथ्यासि	हेथ्याथ	हेथ्यामि	हेथ्याम
३. नी	"	नेथ्य	नेथ्युं	नेथ्यासि	नेथ्याथ	नेथ्यामि	नेथ्याम
४. या	"	यायेथ्य	यायेथ्युं	यायेथ्यासि	यायेथ्याथ	यायेथ्यामि	यायेथ्याम
५. पच	"	पचेथ्य, पचे	पचेथ्युं	पचेथ्यासि	पचेथ्याथ	पचेथ्यामि	पचेथ्याम
६. रुध	रुधादि	रुधेथ्य, रुधे	रुधेथ्युं	रुधेथ्यासि	रुधेथ्याथ	रुधेथ्यामि	रुधेथ्याम
७. दिव	दिवादि	दिव्धेथ्य, दिव्धे	दिव्धेथ्युं	दिव्धेथ्यासि	दिव्धेथ्याथ	दिव्धेथ्यामि	दिव्धेथ्याम
८. भ्रा	"	भ्रायेथ्य	भ्रायेथ्युं	भ्रायेथ्यासि	भ्रायेथ्याथ	भ्रायेथ्यामि	भ्रायेथ्याम
९. तुद	तुदादि	तुदेथ्य	तुदेथ्युं	तुदेथ्यासि	तुदेथ्याथ	तुदेथ्यामि	तुदेथ्याम
१०. जि	ज्यादि	जिनेथ्य, जेथ्य	जिनेथ्युं	जिनेथ्यासि	जिनेथ्याथ	जिनेथ्यामि	जिनेथ्याम
११. की	क्यादि	किणेथ्य, किणे	किणेथ्युं	किणेथ्यासि	किणेथ्याथ	किणेथ्यामि	किणेथ्याम
१२. सु	स्वादि	सुणेथ्य, सुणे	सुणेथ्युं	सुणेथ्यासि	सुणेथ्याथ	सुणेथ्यामि	सुणेथ्याम
१३. तन	तनादि	तनेथ्य, तने	तनेथ्युं	तनेथ्यासि	तनेथ्याथ	तनेथ्यामि	तनेथ्याम
१४. चुर	चुरादि	चोरेथ्य,	चोरेथ्युं	चोरेथ्यासि	चोरेथ्याथ	चोरेथ्यामि	चोरेथ्याम
१५. कथ	"	कथेथ्य	कथेथ्युं	कथेथ्यासि	कथेथ्याथ	कथेथ्यामि	कथेथ्याम
१६. रूप	"	रूपेथ्य	रूपेथ्युं	रूपेथ्यासि	रूपेथ्याथ	रूपेथ्यामि	रूपेथ्याम

अनुज्ञा में नवों गणों के धातु के रूप कैसे होंगे, यह निम्न तालिका से प्रकट होगा :—

धातु	गण	पठम पुरिस		मज्जिम पुरिस		उत्तम पुरिस	
		एक वचन	अनेक वचन	एक वचन	अनेक वचन	एक वचन	अनेक वचन
१. भू	भ्वादि	भवतु	भवन्तु	भव, भवाहि	भवथ	भवामि	भवाम
हु	"	होतु	होन्तु	होहि	होथ	होमि	होम
नी	"	नयतु	नयन्तु	नय, नयाहि	नयथ	नयामि	नयाम
या	"	यातु	यातु	याहि	याथ	यामि	याम
पव	"	पचतु	पचन्तु	पच, पचाहि	पचथ	पचामि	पचाम
रथ	रधादि	रथतु	रथन्तु	रथ, रथाहि	रथथ	रथामि	रथाम
दिव	दिवादि	दिव्तु	दिवन्तु	दिव्थ, दिव्वाहि	दिव्थथ	दिव्थामि	दिव्थाम
आ	"	आयतु	आयन्तु	आय, आयाहि	आयथ	आयामि	आयाम
तुव	"	तुवतु	तुवन्तु	तुव, तुवाहि	तुवथ	तुवामि	तुवाम
जि	ज्यादि	जिनातु	जिनन्तु	जिन, जिनाहि	जिनाथ	जिनामि	जिनाम
की	क्यादि	किणातु	किणन्तु	किण, किणाहि	किणथ	किणामि	किणाम
सु	स्वादि	सुणोतु	सुणन्तु	सुण, सुणाहि	सुणोथ	सुणोमि	सुणोम
तन	तनादि	तनोतु	तनोन्तु	तनोहि	तनोथ	तनोमि	तनोम
चुर	चुरादि	चोरेतु	चोरेन्तु	चोरोहि	चोरोथ	चोरेमि	चोरेम
कथ	"	कथेतु	कथेन्तु	कथेहि	कथेथ	कथेमि	कथेम
आप	"	आपेतु	आपेन्तु	आपेहि	आपेथ	आपेमि	आपेम

१४. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क) अत्तानं चे पियं जञ्जा (जानेय्य, जानिया), तं सुरविखतं रक्खेय्य । अत्तानं एव पठमं पटिरूपे निवेसये । ततो परं अञ्जं अनुसासेय्य । एवं सति, पण्डितो न किलिस्सेय्य । अत्ता हि अत्तनो नाथो, कोहि नाथो परो सिया । हीनं धम्मं न सेवेय्य, पमादेन न संवसे (संवसेय्य), कल्याणे मित्ते भजेय्य, मिच्छा-दिट्ठि जहेय्य, लोक-वड्ढनो न सिया । उत्तिट्ठेय्य न प्पमज्जेय्य, सुचरितं धम्मं चरे (चरेय्य) । न भजे पापके मित्ते; कल्याणे मित्ते भजे । दानं चे ददेय्य, (दज्जेय्य, दज्जा वा) सीलसम्पन्नानं पञ्जावन्तानं देय्य । सन्धिरेव समासेय, वालानं (वालेहि वा) सन्धवं न करेय्य (करे, कुव्वेय्य, कुव्वेथ वा) । सरणं चे गच्छेय्य, वुद्धानं सरणं गच्छेय्य । धम्मं चे जानेय्य, खिप्पं पघानं पदहेय्य ।

* ऊपर काले छपे क्रियापदों के रूप 'अनुज्ञा' में लिखिए ।

(ख) चारिकं चरथ, धम्मं देसेय, धम्मं पकासेय । एवं करोहि, एवं ब्रूहि, एवं निसीदाहि । धम्मं सुणाय, साधुकं मनसि-करोथ । तिट्ठ, तिट्ठ । एवं होहि । धि रत्थु ! भगवा धम्मं देसेतु । पटिभातु आयुस्मन्तं एतस्स भासितस्स अत्थो ति । भव-सोतं छिन्दथ । धम्मं धारेतु । कथेतु भवं गोतमो धम्मं ।

* ऊपर काले छपे क्रियापदों के रूप 'विधि लिङ्ग' में लिखिए ।

२. पालि में अनुवाद कीजिए—

(क) बुद्ध की शरण जाओ । धम्म का आचारण करो । पाप मत करो । सच बोलो । धम्म-ग्रन्थों को पढ़ो । भगवान् ही इस बात को कहें, सुगत ही इस कथन का अर्थ समझावें ।

(ख) हम लोग पुस्तक पढ़ें, अथवा उद्यान में जावें? तुम लोग त्रिपिटक पढ़ो । वे लोग जातक पढ़ें, अथवा अट्टकथा । जातक ही पढ़ें । नहीं तो अट्टकथा ही पढ़ें ।

तीसरा काण्ड

तीसरा पाठ

विभक्ति-प्रकरण

(दूसरा भाग—शेष नियम)

१. पठमा विभक्ति

§ १८. पठमात्यमत्ते २.३६—अर्थ-मात्र को प्रकट करने में, किसी नाम से परे, 'पठमा' विभक्ति होती है। जैसे—खुलो।

पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग भी शब्द का अर्थ ही है। जैसे—दोणो। खारी। अल्हकं।

परिमाण (=वचन) भी शब्द का अर्थ ही है। जैसे—मनुस्तो। मनुत्सा। संख्या भी शब्द का अर्थ ही है। जैसे—एको। द्वे। वहवो।

२. दुतिया विभक्ति

§ १९. ध्यादी हि युत्ता २.९—धि (=धिककार), हा (शोक प्रगट करने के अर्थ में), अन्तरा (=बीच में), अन्तरेन (=विना, बीच में), अभितो (=दोनों ओर), परितो (=चारों ओर), सव्वतो (=सभी ओर) तथा, उभयतो (=दोनों ओर) शब्दों के योग में 'दुतिया विभक्ति' होती है।

जैसे—धि अलसं सिस्सं=आलसी शिष्य को धिककार है। हा पुत्तं!=हाय वेटा! अन्तरा च राजगहं, अन्तरा च नाळन्दं=राजगृह और नालन्दा के बीच। भूपं अन्तरेन पासादो न सोभति=राजा के विना प्रासाद शोभा नहीं देता है। तळाकं अभितो—उभयतो दीधा रुक्खा तिट्ठन्ति=तालाव के दोनों ओर, लम्बे लम्बे पेड़ हैं। गामं परितो—सव्वतो पव्वतो=ग्राम के चारों ओर पर्वत है।

§ २०. लक्ख णित्थं भूतवी च्छा स्वभिना २.१०—संकेत करने, इस तरह का बताने, तथा व्याप्त करने के अर्थ में, 'अभि' शब्द के योग में 'द्वितीया विभक्ति' होती है।

जैसे—पव्वतं अभि जलति अनलो = पर्वत की ओर आग जलती है। यञ्जदत्तो पसन्नो बुद्धं अभि = यज्ञदत्त बुद्ध के प्रति श्रद्धा-युक्त है। ख्खं ख्खं अभि तिट्ठति = हर एक वृक्ष के पास ठहरता है।

§ २१. पतिपरीहि भागे च २.११—ऊपर के ही अर्थों में, तथा हिस्ता होने के अर्थ में, 'पति' और 'परि' शब्दों के योग में 'द्वितीया' विभक्ति होती है।

जैसे—पव्वतं पति (=परि) जलति अनलो = पर्वत की ओर आग जलती है। देवदत्तो पसन्नो बुद्धं पति = परि = देवदत्त बुद्ध के प्रति श्रद्धा-युक्त है। ख्खं ख्खं पति (परि) तिट्ठति = हर एक वृक्ष के पास ठहरता है। सो भागो मं पति (=परि) भवति = वह भाग मेरे हिस्से में आता है।

§ २२. अनुना २.१२—ऊपर के ही अर्थों में, 'अनु' शब्द के योग में, 'द्वितीया विभक्ति' होती है।

जैसे—पव्वतं अनु जलति अनलो = पर्वत की ओर आग जलती है। देवदत्तो पसन्नो बुद्धं अनु = देवदत्त बुद्ध के प्रति श्रद्धायुक्त है। ख्खं ख्खं अनु तिट्ठति = हर एक वृक्ष के पास ठहरता है। सो भागो मं अनु भवति = वह भाग मेरे हिस्से में आता है।

§ २३. सहत्थे २.१३—साथ होने के अर्थ में, 'अनु' शब्द के योग में 'द्वितीया विभक्ति' होती है।

जैसे—आचरियं अनु गच्छति तिस्सो = शिष्य आचार्य के साथ साथ जा रहा है।

§ २४. हीनेऽपेन २.१४.१५—उससे कम होने के अर्थ में, 'अनु' तथा 'उप' शब्दों के योग में 'द्वितीया विभक्ति' होती है।

जैसे—अनु उपालित्थेरं विनयघरा = उपालि स्थविर से दूसरे भिक्षु विनय जानने में कम थे। उप उपालित्थेरं विनयघरा।

§ २५. रित्ते दुत्तिया चः विनाञ्जत्र तत्तिया च २.३१.३२—'रित्ते' (=विना), 'विना', तथा 'अञ्जत्र' (=अन्यत्र) शब्दों के योग में 'द्वितीया विभक्ति' होती है।

जैसे—सद्धर्मं रिते अञ्जो को जने रक्खति ? =सद्धर्म के सिवा, अन्य कौन मनुष्यों की रक्षा कर सकता है ? जलं विना रक्खो सुक्खति =जल के विना, पेड़ सूख रहा है । तथागतं अञ्जत्र को अञ्जो लोकनायको ? =तथागत (बुद्ध) को छोड़, दूसरा कौन लोक-गुरु है ?

३. ततिया विभक्ति

§ २६. ल क्ख णे २.२०—लक्षण के अर्थ में, 'ततिया विभक्ति' होती है ।

जैसे—तिदण्डकेन परिव्वाजको वुञ्जति =त्रिदण्ड से परिव्राजक बूझा जाता है । नयनेन काणो =आँख से काना । पादेन खञ्जो =पैर से लंगड़ा ।

§ २७. हे तु म्हि २.२१—हेतु के अर्थ में 'ततिया विभक्ति' होती है ।

जैसे—सो इध अन्नेन वसति =वह यहाँ खाने के उद्देश्य से वास करता है । धम्मेन यत्तो वड्ढति =धर्म से यश बढ़ता है ।

§ २८. वि ना ञ्ज त्र त ति या च २.३२—'विना' तथा 'अञ्जत्र' शब्दों के योग में 'ततिया विभक्ति' होती है ।

जैसे—जलेन विना रक्खो सुक्खति =जल के विना पेड़ सूख रहा है । तथागतं अञ्जत्र को अञ्जो लोकनायको ? =तथागत (=बुद्ध) को छोड़, दूसरा कौन लोकगुरु है ?

§ २९. पु थ ना ना हि २.३३—पुथ (=पृथक्), और नाना (=भिन्न) शब्दों के योग में 'ततिया विभक्ति' होती है ।

जैसे—पुथगेव गामेन सो अररञ्जं अधिवसति =गाँव से पृथक् ही, वह जंगल में रहता है । सोगतधम्मेन नाना तित्थियधम्मो =सुगत (=बुद्ध) के धर्म से भिन्न ही तैथिकों का धर्म है ।

५. पञ्चमी विभक्ति

§ ३०. पञ्चमी णे वा २.२२—ऋण के हेतु में 'पञ्चमी विभक्ति' होती है; और 'ततिया' भी ।

जैसे—सतस्मा बद्धो; सतेन बद्धो =सी रुपए के ऋण से बँधा है ।

§ ३१. गु णे २.२३—पराङ्गभूत हेतु में 'पञ्चमी विभक्ति' होती है । जैसे—

§ ३७. सा मि त्ते धि ना २.१७—स्वामी होने के अर्थ में, 'अधि' शब्द के योग में, सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे—अधि पञ्चालेषु ब्रह्मदत्तो = पाञ्चाल देश पर ब्रह्मदत्त का आधिपत्य है।

§ ३८. आघार की विवक्षा में, सम्प्रदान के स्थान में सप्तमी भी होती है। जैसे—संघे देति = संघ को देता है।

§ ३९. सञ्चा दितो सञ्चा २.२५—हेत्वर्थक शब्दों के योग में, 'सञ्च' आदि शब्दों के साथ सभी विभक्तियाँ होती हैं।

जैसे—को हेतु, कं हेतुं, केन हेतुना, कस्स हेतुस्स, कस्मा हेतुत्मा, कस्स हेतुस्स, कस्मि हेतुस्मि ।

कि कारणं, केन कारणेन इत्यादि ।

कि निमित्तं, केन निमित्तेन इत्यादि ।

कि पयोजनं, केन पयोजनेन इत्यादि ।

१५. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

बुद्धा । बुद्धे । पञ्जा । कञ्जाय । रत्तिया । सव्वस्स । ब्रह्मवतो नाम राजा अहोसि । बुद्धघोसो नाम आचरियो अहोसि । 'बुद्धो बुद्धो' ति सुत्वा सुमेघो तुद्धहट्ठो जातो । निव्व्राणं नाम सव्वेसं संखारानं उपसमो । एवं बुद्धा वदन्ति । पुञ्जानि वड्ढन्ति, पापानि परिहायन्ति ।

बुद्धो धम्मं देसेति । माणवको मासं सज्झायति । भगवा सत्ताहं निसीदि । माणवो कोसं सज्झायति । रुक्खं अनुविज्जोतते चन्दो । गामं गामं अनु वस्सति देवो । अन्तरा च नाळ्ळन्दं अन्तरा च राजगहं । अभितो गामं । उपमा मं पट्टिभाति । एकमन्तं निसीदि । सीघं सीघं गच्छति । फले खादि ।

रुक्खं खग्गेन छिन्दति । बुद्धेन देसितो धम्मो । तिलेहिं खेत्ते वपति । कञ्जाय पच्छा माता गच्छति । केन हेतुना वसति ? अन्नेन वसति । कम्मना (कम्मना) ब्राह्मणो होति । येन भगवा तेन उपसङ्गमिसु । अक्खिना काणो । वण्णेन अभिरूपो । जातिया सत्त-वस्सिको ।

भिक्षुस्स दानं देति । नमो बुद्धस्स । देसेतु, भन्ते ! भगवा धम्मं भिक्षूनं । सग्गाय संवत्तति । अलं मे तेन धनेन । सग्गाय गच्छति । तथा तस्स फासु होति । भोगाय वजति ।

पापा चित्तं निवारति । यस्मा खेमं, ततो भयं । पेमतो जायति सोको । पञ्जाय सुर्गातिं यन्ति । इतो वहिद्धा । अञ्जत्र दुक्खा । उट्ठं पाद-तला अधो केसमत्यका ।

भिक्षुस्स चीवरं किस्स हेतु अल्लं ति ? बुद्धो भगवा पूजितो राजानं (रञ्जं) सुमानितो च । पापस्स अकरणं सुखं । सप्पिस्स पत्तं पूरेत्त्वा गतो । सव्वेसं भिक्षूनं आनन्दो दस्सनीयतमो । सव्वे भायन्ति मच्चुनो (मच्चुना) । पुत्तस्स (पुत्तं) इच्छमानो देवं अच्चति ।

भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने । पसन्नो बुद्धसासने । कदलीसु गजे रक्खन्ति । सम्पटिच्छामि मत्यके (= शिरोधार्यं करता हूँ) । वज्जेसु भय-

दस्सावी । जायमाने बोधिसत्ते अयं लोकघातु संकप्पि । इमस्मिं सति इदं होति ।
दन्तेसु हञ्जते नागो ।

२. ऊपर काले अक्षरों में छपे पदों में कैसी विभक्तियां हैं ?

३. नीचे काले अक्षरों में छपे पदों के कारक बताइए—

(अनियमित विभक्तियों के कुछ उदाहरण)

बुद्धं सरणं गच्छामि । एकं समयं भगवा सावस्थियं विहरति । सो भिक्खु
इतो चुतो सगं लोकं उप्पज्जि । भिक्खुसंघं पिट्ठितो पिट्ठितो अगमासि ।

तेन खो पन समयेन । येन भगवा तेन उपसङ्कमि ।

दुक्खस्स भीतो अहं रुदन्तानं मातापितुन्नं बुद्धसासने पव्वजिं । सब्बे तसन्ति
दण्डस्स ।

उपासका भिक्खूसु अभिवादेन्ति । सङ्घे दिन्नं महप्फलं होति ।

३

तीसरा काण्ड

चौथा पाठ

कृदन्त-प्रकरण

(पहला भाग—निष्ठा)

§ १. कत्तरि भूते क्तवन्तु, क्तावी ५.५५—भूतकाल के अर्थ में, धातु से परे, 'क्तवन्तु' और 'क्तावी' प्रत्यय होते हैं। प्रत्यय लगने से जो रूप बनता है, वह कर्ता के विशेषण के समान व्यवहृत होता है; अतः वह कर्ता के लिङ्ग, वचन, तथा विभक्ति को प्राप्त होता है।

जैसे—वि + जि + क्तवन्तु = विजितवन्तु । वि + जि + क्तावी = विजितावी । इनका अर्थ हुआ—“वह, जिसने विजय पा ली है” ।

§ २. पुल्लिङ्ग, तथा नपुंसकलिङ्ग में 'विजितवन्तु' शब्द के रूप 'गुणवन्तु' के समान, और 'विजितावी' शब्द के रूप 'दण्डी' के समान होंगे ।

स्त्रीलिङ्ग में, 'विजितवन्तु' का रूप 'विजितवती', या 'विजितवन्ती'; तथा 'विजितावी' का रूप 'विजिताविनी' हो जायगा : और, उनके रूप 'इत्थी' शब्द के समान होंगे । जैसे—

पुंलिङ्ग में—विजितवा, विजितावी वा खत्तियो = विजय पा लिया क्षत्रिय । विजितवन्तो, विजिताविनो वा खत्तिया = विजय पा लिए क्षत्रिय लोग । विजितवन्तं, विजिताविनं वा खत्तियं = विजय पा लिए क्षत्रिय को इत्यादि ।

स्त्रीलिङ्ग में—विजितवती, विजितवन्ती, विजिताविनी वा इत्थी = विजय पाई हुई स्त्री इत्यादि ।

§ ३. क्तो भावकम्बे सु ५.५६—भूतकाल के अर्थ में, कर्म और भाव वाच्य में, धातु से परे 'क्त' प्रत्यय होता है । जैसे—कर + क्त = क्तं । वि + जि + क्त = विजितं ।

‘क्त’ प्रत्यय लगने से जो रूप बनता है, वह कर्म का विशेषण होता है। जैसे—
रज्जं विजितं रज्जा=राजा के द्वारा राज जीता गया। रज्जानि विजितानि
रज्जा=राजा के द्वारा राज्य जीते गए। इत्थी विजिता रज्जा=राजा के द्वारा
स्त्री जीती गई। रज्जा विजिते नगरे महाघनं अत्थि=राजा के द्वारा जीते
गए नगर में बहुत घन है।

भाववाच्य में, वह सदा नपुंसक लिंग एक वचन रहता है। जैसे—भया हसितं
=मेरे द्वारा हँसा गया। अस्महेहि हसितं=हम लोगों के द्वारा हँसा गया। त्वया
हसितं। तुम्हेहि हसितं। बालकेन हसितं। कञ्जाय हसितं।

§ ४. क त्ति चारम्भे ५.५७—क्रिया-आरम्भ के अर्थ में, कर्तृवाच्य में भी,
धातु से परे ‘क्त’ प्रत्यय होता है; और यथाप्राप्त कर्म तथा भाव वाच्य में भी। जैसे—
(कर्तृ) पकतो भवं कटं=आप ने चटाई बनाना आरम्भ किया है। (कर्म)
पकतो भोता कटो=आप से चटाई बनाना आरम्भ किया गया है।

(कर्तृ) पशुतो भवं=आप सोए हैं। (भाव) पशुतं भवता=आप के
द्वारा सोया गया।

§ ५. ठास वसत्तिलिस सी रुह ज र ज नी हि ५.५८—कर्तृ, कर्म, और भाव-
तीनों वाच्य में, ‘ठा’ (=ठहरना) इत्यादि धातुओं से परे, ‘क्त’ प्रत्यय होता है।
जैसे—(कर्तृ) उपद्रितो गुरं भवं=आप ने गुरु का उपस्थान (=सेवा-टहल)
किया। (कर्म) उपद्रितो गुरु भोता=आप के द्वारा गुरु उपस्थान किए गए।

§ ६. ग म न त्या क म्म का घा रे च ५.५९—गमनार्थ और अकर्मक धातु से
पर, आधार के अर्थ में भी, कर्ता कर्म और भाव में ‘क्त’ प्रत्यय होता है। जैसे—
(भाव) इदं तेसं यातं। (कर्तृ) इह ते याता। (कर्म) इह तेहि यातं
=यही वह स्थान है, जहाँ वे लोग गए थे इत्यादि।

§ ७. आ हा र त्या ५.६०—भोजनार्थक और पानार्थक धातुओं से परे,
आधार के अर्थ में, ‘क्त’ प्रत्यय होता है। जैसे—

इदं तेसं भुतं, इह तेहि भुतं=यही वह स्थान है, जहाँ उन लोगों ने भोजन
किया था।

§ ८. न ते कानुवन्ध ना ग मे सु ५.८५—वा क्व चि ५.८६—क्त, तथा
क्तवतु प्रत्ययों के आने से, (प्रत्यय में यदि ‘क’ अनुबन्ध हो) धातु के उपान्त ‘अ’, ‘इ’

तथा 'उ' की वृद्धि साधारणतः तो नहीं होती है; किंतु, कहीं कहीं विकल्प से हो भी जाती है। जैसे—

वृद्धि नहीं हुई—चि + क्त = चितो । सुतो । दिट्ठो । पुट्ठो । विजितं ।
वृद्धि विकल्प से हुई—मुदितो, मोदितो । रुदितं, रोदितं ।

§ ६. 'क्तवन्तु', तथा 'क्त' प्रत्ययों के लगने से, कुछ विशेष धातु के रूपः—
'गम'—गतवा, गतं । हन—हतवा, हतं । मन—मतवा, मतं । तन—ततवा, ततं । रम—रतवा, रतं । कर—कतवा, कतं । वच—उत्तवा, उत्तं । वस—उत्थवा उत्थं । वड्ढ—वड्ढवा, वड्ढं । यज—इट्ठवा यिट्ठवा, इट्ठं यिट्ठं ।

१. ग मा द्विरानं लोपो 'न्तस्स' ५.१०६—'क्त्वा' तथा 'क्त्वान' को छोड़, 'क' अनुबन्ध वाले दूसरे प्रत्ययों के आने से, 'गम' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट], तथा रकारान्त धातुओं के अन्त्य वर्ण का लोप होता है। जैसे—

गम + क्त = गतं । खन + क्त = खतं । हन—हतं । मतं । ततं । सञ्जतं । रतं । कर + क्त = कतं ।

[किंतु—गम + क्य + ते = गम्यते । यहाँ 'गम' के मकार का लोप नहीं हुआ; क्योंकि, 'क्य' प्रत्यय में 'क' अनुबन्ध होने पर भी उसके साथ 'तकार' नहीं है ।]

२. व चा दीनं वस्सुट् वा ५.११०—'क्त्वा' तथा 'क्त्वान' को छोड़, 'वच' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] धातुओं के 'व' का विकल्प से 'उ' हो जाता है। जैसे—वच + क्त = वुत्तं, उत्तं । वस + क्त = वुत्थं, उत्थं ।

३. अस्सु ५.१११—'क्त्वा' तथा 'क्त्वान', 'वस' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] धातुओं के अकार का उकार हो जाता है। जैसे—वस + क्त = वुत्थं ।

सास वस संसससा थो ५.१४४—'सास', 'वस', 'संस', तथा 'सस' धातुओं से परे, 'त' का 'थ' हो जाता है। जैसे—सास + क्त = सत्थं । वस + क्त = वुत्थं । पं + संस + क्त = पसत्थं । संस + क्त = सत्थं ।

४. वड्ढस्स वा ५.११२—'क्त्वा' तथा 'क्त्वान', 'वड्ढ' धातु के अकार का विकल्प से उकार होता है। जैसे—वड्ढ + क्त = वड्ढं, वुड्ढं ।

५. यजस्स यस्स टियी ५.११३—'क्त्वा' तथा 'क्त्वान', 'यज' धातु के 'य' का 'इ' तथा 'यि' आदेश होता है। जैसे—यज + क्त = इट्ठं, यिट्ठं ।

ठा^१—ठितवा, ठितं । गा^२—गीतवा, गीतं । पा^३—पीतवा, पीतं । जनि^४—
जातवा, जातं । सास^५—सिट्टवा, सिट्ठं । धा^६—निहितवा, निहितं । तुस^७—
तुट्टवा तुट्ठं । कस^८—किट्टवा कट्टवा, किट्ठं कट्ठं । पुच्छ^९—पुट्टवा, पुट्ठं ।
वुध^{१०}—बुद्धवा, बुद्धं । दह^{११}—दड्ढवा, दड्ढं । वह^{१२}—बुड्ढवा, बुड्ढं । आरुह^{१३}

६. ठा स्ति ५.११४—‘क्त्वा’ तथा०, ‘ठा’ धातु का ‘ठि’ आदेश होता है ।
ठा + क्त = ठितं ।

७. गा पा न मी ५.११५—० ‘गा’ धातु का ‘गी’, तथा ‘पा’ धातु का ‘पी’
आदेश हो जाता है । जैसे—गा + क्त = गीतं । पा + क्त = पीतं ।

८. ज नि स्सा ५.११६—० ‘जनि’ धातु का ‘जान’ आदेश हो जाता है ।
जैसे—जातं ।

९. सा स स्त सि स्वा ५.११७—० ‘सास’ धातु का विकल्प से ‘सिस’ आदेश
हो जाता है । जैसे—सास + क्त = सिट्ठं । सत्यं, सिस्तो, सासियो ।

१०. धा स्स हि ५.१०८—० ‘धा’ धातु का ‘हि’ आदेश हो जाता है ।
जैसे—निहितं, निहितवा ।

११. सानन्तरस्स तस्स ठो ५.१४०—सकारान्त धातु से परे, ‘त’ का
‘ठ’ हो जाता है । जैसे—तुस + क्त = तुट्ठो । तुट्टवा । तुस + तत्त्वं = तुट्टत्वं ।
तुस + क्त = तुट्टि ।

१२. कसस्सिम् च वा ५.१४१—‘कस’ धातु से परे, ‘त’ का ‘ठ’ हो जाता
है । ‘कस’ का विकल्प से ‘किस’ हो जाता है । जैसे—कस + क्त = किट्ठं, कट्ठं ।

१३. पुच्छादितो ५.१४३—‘पुच्छ’ आदि धातुओं से परे, ‘त’ का ‘ठ’ हो
जाता है । जैसे—पुच्छ + क्त = पुट्ठं । भज—भट्ठं । यज—यिट्ठं ।

१४. धो घ ह भे हि ५.१४५—घकारान्त, हकारान्त, तथा भकारान्त धातु
से परे, ‘त’ का ‘ध’ हो जाता है । जैसे—वुध + क्त = बुद्धं । दुह + क्त = दुड्ढं ।
लभ + क्त = लद्धं ।

१५. दहा ढो ५.१४६—‘दह’ धातु से परे, ‘त’ का ‘ढ’ हो जाता है ।
जैसे—दह + क्त = दड्ढो ।

१६. वहस्सुम् च ५.१४७—‘वह’ धातु से परे, ‘त’ का ‘ढ’ हो जाता है ।
‘वह’ का ‘वुह’ हो जाता है । जैसे—वह + क्त = बुड्ढो ।

—आरूहवा, आरूहं। मुह^{१८}—मूहवा, मूहं। भिद^{१९}—भिन्नवा, भिन्नं।
दा^{२०}—दिन्नवा, दिन्नं। किर^{२१}—किण्णवा, किण्णं। तर^{२२}—तिण्णवा, तिण्णं।

१७. रुहादी हि हो ङ च ५.१४८—‘रुह’ आदि धातुओं से परे, ‘त’ का ‘ह’ हो जाता है; धातु के अन्त्य वर्ण का ‘ङ’ हो जाता है। जैसे—आरूह + क्त = आरूह्यहो। गुह + क्त = गुह्यहो। वह + क्त = व्ह्यहो। वह + क्त = वाह्यहो।

वह स्तु स्त ५.१०७—‘क्त्वा’ और ‘नक्त्वा’ को छोड़, तकारादि ‘क’ अनुबन्ध वाला प्रत्यय आने से, ‘वह’ धातु का ‘वूह’ आदेश हो जाता है। जैसे—

वह + क्त = वूह्यहो।

मुह वहानं च ते कानुबन्धे त्वे ५.१०६—‘क्त्वा’ और ‘नक्त्वा’ को छोड़, तकारादि ‘क’ अनुबन्ध वाला प्रत्यय आने से, ‘मुह’, ‘वह’ तथा ‘गुह’ धातुओं के स्वर का दीर्घ होता है। जैसे—गुह + क्त = गूह्यहो। मुह + क्त = मूह्यहो। वह + क्त = वाह्यहो।

१८. मुहा वा ५.१४९—‘मुह’ धातु के साथ विकल्प से होता है। जैसे—मूह्यहो, मुड्यहो।

१९. भि द्वादि तो नो क्त क्त वन्तु नं ५.१५०—‘भिद’ आदि धातुओं से परे ‘क्त’ या ‘क्तवन्तु’ प्रत्यय हो, तो उसके ‘त’ का ‘न’ हो जाता है। जैसे—भिद + क्त = भिद + त = भिद + न = भिन्नो। भिन्नवा। छिन्नो, छिन्नवा। छिन्नो, छिन्नवा। खिन्नो, खिन्नवा। उप्पिन्नो, उप्पिन्नवा। सिन्नो, सिन्नवा। सन्तो, सन्तवा। पीनो, पीनवा। सूनो, सूनवा। दीनो, दीनवा। डीनो, डीनवा। लीनो, लीनवा। लूनो, लूनवा।

२०. दा त्वि न्नो ५.१५१—‘दा’ धातु से परे, ‘क्त’ तथा ‘क्तवन्तु’ प्रत्यय के ‘त’ का ‘इन्न’ हो जाता है। जैसे—दा + क्त = दिन्नो। दिन्नवा।

२१. किरा दी हि णो ५.१५२—‘किर’ आदि धातुओं से परे, ‘क्त’ तथा ‘क्तवन्तु’ प्रत्यय के ‘त’ का ‘ण’ हो जाता है। जैसे—किर + क्त = किण्णो, किण्णवा। पूर + क्त = पुण्णो, पुण्णवा। खीणो, खीणवा।

२२. तरा दी हि रिण्णो ५.१५३—‘तर’ आदि धातुओं से परे, ‘क्त’ तथा ‘क्तवन्तु’ प्रत्यय के ‘त’ का ‘रिण्ण’ हो जाता है। जैसे—तर + क्त = तर +

भञ्ज^{१३}—भग्वा, भगं । सुस^{१४}—सुक्खवा, सुक्खं । पच^{१५}—पक्कवा, पक्कं ।
 मुच^{१६}—मुक्कवा, मुक्कवा, मुक्कं, मुक्कं । धंस^{१७}—धस्तो । तस—त्रस्तो ।

इष्ण=तिष्णो । तिष्णवा । जिष्णो, जिष्णवा । चिष्णो, चिष्णवा ।

२३. गो भञ्जा दी हि ५.१५४—'भञ्ज' आदि धातुओं से परे, 'क्त' तथा 'क्तवन्तु' प्रत्यय के 'त' का 'ग' हो जाता है । जैसे—भञ्ज + क्त = भग्गो । भग्गवा । लग्गो, लग्गवा । निमुग्गो, निमुग्गवा । संविग्गो, संविग्गवा ।

२४. सु सा खो ५.१५५—'सुस' धातु से परे ० 'त' का 'ख' होता है । जैसे—सुस + क्त = सुदखो, सुक्खवा ।

२५. प चा को ५.१५६—'पच' धातु से परे ० 'त' का 'क' होता है । जैसे—पच + क्त = पदको, पक्कवा ।

२६. मु चा वा ५.१५७—'मुच' धातु से परे ० 'त' का विकल्प से 'क' होता है । जैसे—मुक्को, मुक्कवा । मुत्तो, मुत्तवा ।

२७. ध स्तो त्र स्ता ५.१४२—निपात ।

१६. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क) अस्सुतवा पुथुज्जनो सप्पुरिस-धम्मो अविनीतो सब्बं अभिनन्दति । तं किस्स हेतु ? “अपरिञ्चातं तस्सा”ति वदामि । अरहन्तानं (ब्रह्मचरियं) वुसितवन्तानं आसवा खीणा, करणीया कता, भारो ओहितो, सदत्थो अनुप्पत्तो, भवसंयोजना परिकखीणा, होन्ति । तस्मा ते किञ्चि पि नाभिनन्दन्ति । परिञ्चातं तेसं ति वदामि ।

(ख) दिट्ठं, सुतं, मुतं, विञ्जातं—सब्बं अनिच्चतो पच्चवेक्खितब्बं । कतं करणीयं । एवं मे सुतं । वालकेन हसितं । पकतो भवं कटं । उपट्ठितो गुरु भोता । इदं तेसं यातं । इह तेहि भुत्तं । फलानि पक्कानि । मारसेना न विजितवती भायिसु मुनिसु । भगवा सावकेहि पुट्ठे पञ्हे व्याकरोति ।

(ग) यथागारं दुच्छन्नं वुट्ठी समतिविज्झति ।
एवं अभावितं चित्तं रागो समतिविज्झति ॥

(धम्मपद १.१३)

गतद्विनो विसोकस्स विप्पमुत्तस्स सब्बधि ।
सव्वगन्थप्पहीणस्स परिलाहो न विज्जति ॥

(धम्म० ७.१)

सन्तं अस्स मनं होति, सन्तां वाचा च कम्म च ।
सम्मदञ्जविमुत्तस्स उपसन्तस्स तादिनो ॥

(धम्म० ७.७)

२. निम्नलिखित पर्यायों को याद कीजिए, तथा उनसे वाक्य बनाइए—

‘कथित’ के अर्थ में—भासितं, लपितं, वुत्तं, अभिहितं, अख्यातं, उदीरितं, गदितं, भणितं, उदितं, कथितं ।

- ‘ज्ञात’ के अर्थ में—बुद्धं, पटिपन्नं, विदितं, अवगतं, मतं, नातं ।
 ‘पूजित’ के अर्थ में—अपचायितं, अच्चितं, अपचितं, पूजितं ।
 ‘अन्वेषण’ के अर्थ में—मगितं, परियेसितं, गवेसितं, अन्वेसितं ।
 ‘रक्षित’ के अर्थ में—गोपितं, गुप्तं, तातं, गोपायितं, अवितं, रक्खितं ।
 ‘भक्षित’ के अर्थ में—गिलितं, खादितं, भुत्तं, अज्भोहटं, असितं, भक्खितं ।
 ‘क्षुधित’ के अर्थ में—जिघच्छितं, छातं, वुभुक्खितं, खुदितं ।
 ‘आनीत’ के अर्थ में—आहटं, आभतं, आनीतं ।
 ‘नष्ट’ होने के अर्थ में—गलितं, पन्नं, चुतं, घंसितं, भट्टं ।
 ‘छिन्न’ होने के अर्थ में—कन्तितं, संछिन्नं, लूणं, दातं, छिन्नं ।
 ‘कंपित’ होने के अर्थ में—धूतं, आवूतं, चलितं, कम्पितं ।
 ‘आवृत’ होने के अर्थ में—वेठितं, वलयितं, रुद्धं, संबुतं, आवुतं ।
 ‘प्रमुदित’ के अर्थ में—पीतं, हट्टं, मत्तं, तुट्टं, पमुदितं ।

३. निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाइए—

कतानि । किट्ठेसु खेत्तेसु । भिन्नेन रथेन । दिन्नवन्तिया कञ्जाय । आसवेहिं मुत्तवन्तो । आसवेहिं विमुत्तं । सन्तानि इन्द्रियाणि । तस्मि उत्ते । विजिताविनो । विजितवन्ती ।

४. पालि में अनुवाद कीजिए—

राजा के द्वारा जीते गए नगर में बहुत धन है । अहंत् के द्वारा सभी इन्द्रियाँ जीत ली गई हैं । निर्वाण का मार्ग श्रावक के द्वारा देख लिया गया है, जान लिया गया है, साक्षात् कर लिया गया है । पहले के राजा धर्मानुकूल राज्य करते थे । उसे ज्ञान-वक्षु उत्पन्न हुआ । पके हुए फलों को देखो ।

तीसरा काण्ड

पाँचवाँ पाठ

कृदन्त-प्रकरण

(दूसरा भाग—तव्व, तुं, त्वा)

तव्व, अनीय, ध्यण्

§ १०. भावकम्मे सु तव्वानीया ५.२७—भाव-वाच्य और कर्मवाच्य में, धातु से परे, बहुधा 'तव्व' और 'अनीय' प्रत्यय होते हैं। जैसे—

(भाव) मया हसितव्वं, हसनीयं वा—मेरे द्वारा हँसा जाना चाहिए। मया निसीदितव्वं निसीदनीयं वा—मेरे द्वारा बैठा जाना चाहिए।

(कर्म) मया कत्तव्वो, करणीयो वा कटो—मुझे चटाई बनानी चाहिए। मया सोतव्वानि, सवनीयानि वा तानी वचनानि—मुझे वे वचन सुनने चाहिए।

§ ११. ध्यण् ५.२८—ऊपर के हि स्थान में, धातु से परे, बहुधा 'ध्यण्' प्रत्यय आता है। 'ध्यण्' का 'य' रह जाता है। जैसे:—

मया इदं न वाक्यं—मुझे यह नहीं कहना चाहिए। सिस्सेन पुप्फानि चेष्यानि—शिष्य को फूल चुनने चाहिए।

§ १२. आस्से च ५.२९—'ध्यण्' प्रत्यय आने से, धातु के आकार का एकार हो जाता है। जैसे—धनिकेहि दलिद्वानं दानं देय्यं—धनिकों को दरिद्रों को दान

१. कगा चजानं धानुबन्धे ५.६८—'ध' अनुबन्ध वाला प्रत्यय आने से, धातु के अन्त्य 'च' का 'क', तथा 'ज' का 'ग' हो जाता है। जैसे—वच + ध्यण् = वाक्यं। भज + ध्यण् = भाग्यं।

देना चाहिए। अच्छानि जलानि पेय्यानि=साफ जल पीने चाहिए।

§ १३. 'तव्व', 'अनीय', तथा 'ध्यण्' प्रत्ययान्त शब्द विशेषण के समान प्रयुक्त होते हैं। जैसे—

सिनानीयं चुण्णं=वह चूर्ण जिससे स्नान किया जाय। दानीयो ब्राह्मणो=वह ब्राह्मण जिसको दान दिया जाय। उपट्टानीयो सिस्सो=वह शिष्य जिससे उपस्थान (=सेवा-टहल) कराया जाय इत्यादि।

§ १४. यु व ण्णा न मे ओ प्प च्च ये ५.८२—प्रत्यय आने से, इकारान्त और उकारान्त धातुओं के इकार का एकार, तथा उंकार का ओंकार हो जाता है। जैसे—

चि + तव्व = चेतव्वं। चि + अनीय = चयनीयं। चि + ध्यण = चय्यं। सोतव्वं। सवनीयं।

[न ब्रूस्सो ५.९७—'ब्रू' धातु से परे, व्यञ्जनादि प्रत्ययों के आने से, उसके 'ऊ' का 'ओ' नहीं होता है। जैसे—ब्रू + मि = ब्रूमि। स्वरादि प्रत्यय आने से 'ऊ' का 'ओ' हो जाता है। जैसे—ब्रू + इ = अब्रुवि]

§ १५. ल ह्नुस्सु पन्त स्स ५.८३—धातु के लघु उपान्त 'इ' तथा 'उ' का क्रमशः 'ए', तथा 'ओ' हो जाता है। जैसे—

इस + तव्व = एसितव्वं। कुस + तव्व = कोसितव्वं।

§ १६. म नानं निग्ग हीतं ५.९६—मकारान्त तथा नकारान्त धातुओं से उत्तर, यदि 'य' को छोड़ कोई दूसरा व्यञ्जन हो, तो 'म' या 'न' का 'निग्गहीत' (अनुस्वार) हो जाता है। जैसे—गम + तव्व = गं + तव्व = गन्तव्वं। हन + तव्व = हं + तव्व = हन्तव्वं।

§ १७. इन प्रत्ययों के लगने से कुछ विशेष धातु के रूपः—वद + ध्यण = वज्जं। कर + ध्यण = फिच्चं। गुह + ध्यण = गुह्यं। नि + पद + तव्व = निपज्जितव्वं। भिद = भेतव्वं। कर = कातव्वं। नि + सिद = निसीदितव्वं। अस = भवितव्वं।

२. व दा दी हि यो ५.३०—भाव तथा कर्म में, 'वद' आदि धातुओं से परे, बहुधा 'य' का आगम होता है। जैसे—वद = वज्जं = निन्दनीय। मद = मज्जं। गम = गम्मं।

तुं, ताये, तवे

(निमित्तार्थक अव्यय)

§ १८. तुं ताये तवे भावे भविस्सति क्रियायं तदत्यायं ५.६१—
‘इस काम के निमित्त’—इस अर्थ में, धातु से परे ‘तुं’, ‘ताये’, और ‘तवे’
प्रत्यय होते हैं। जैसे—

कातुं गच्छति; कत्ताये गच्छति; कातवे^० गच्छति = करने के लिए जाता है।

३. किच्च घच्च भच्च भव्व लेय्या ५.३१—ये शब्द निपात हैं—कर—
किच्चं। हन—घच्चो। भर—भच्चो = भृत्य। भू—भव्वो = भव्य। लिह—
लेय्यं।

४. गुहादी हि यक् ५.३२—भाव तथा कर्म में, ‘गुह’ आदि धातुओं से परे,
‘य’ का आगम होता है। जैसे—गुह—गुय्हं। दुह—दुय्हं। सिस—सिस्सो।

५. पदादीनं क्वचि ५.६२—‘पद’ आदि धातुओं से परे, कहीं कहीं ‘य’ का
आगम होता है। जैसे—नि + पद + तव्व = निपज्जितव्वं। निपज्जितुं। निप-
ज्जनं। प + मद + तव्व = पमज्जितव्वं। पमज्जितुं। पमज्जनं।

६. पररूपमयकारे व्यञ्जने ५.६५—यदि ‘य’ को छोड़, कोई दूसरा
व्यञ्जन परे हो, तो धातु के अन्त्य व्यञ्जन का पर-रूप हो जाता है। जैसे—
भिद + तव्वं = भेतव्वं।

७. तुं तून तव्वे सु वा ५.११६—‘तुं’, ‘तून’, तथा ‘तव्व’ प्रत्ययों के आने
से, ‘कर’ धातु का विकल्प से ‘कार’ हो जाता है। जैसे—कर + तुं = कातुं, कत्तुं।
कातून, कत्तून। कातव्वं, कत्तव्वं।

८. जरसदानमीम् वा ५.१२३—‘जर’ तथा ‘सद’ धातुओं के अन्तिम
स्वर से परे, विकल्प से ‘ई’ का आगम होता है। जर—जीरणं। जीरति। जीरा-
पेति। जीरितव्वं। निसद—निसीदनं। निसीदितुं। निसीदति। निसीदितव्वं।

९. अत्यादिन्ते स्वत्थिस्स भू ५.१२८—‘ति’ आदि को छोड़, दूसरे
प्रत्ययों के आने से, ‘होने’ के अर्थ में ‘अस’ धातु का ‘भू’ आदेश होता है। जैसे—
अस + तव्वं = भवितव्वं।

§ १६. निम्न स्थानों में 'तुं' प्रत्यय प्रयुक्त होता है—

इच्छति भोक्तुं, कामेति भोक्तुं = भोजन करने की इच्छा करता है

सक्कोति भोक्तुं = भोजन कर सकता है

जानाति भोक्तुं = भोजन करना जानता है

गिलायति भोक्तुं = भोजन के लिए दुःखित होता है

घटते भोक्तुं = भोजन करने की कोशिश करता है

आरभते भोक्तुं = भोजन करना आरम्भ करता है

लभते भोक्तुं = उसे खाने को मिलता है

पक्कमति भोक्तुं = भोजन करना आरम्भ करता है

उत्सहति भोक्तुं = भोजन करने का उत्साह करता है

श्रहति भोक्तुं = भोजन करने के लिए योग्य है

श्रत्थि भोक्तुं, विज्जति भोक्तुं = भोजन का सामान है

कप्पति भोक्तुं = यह चीज भोजन के लिए विहित है

पारयति भोक्तुं = भोजन कर सकता है

पह भोक्तुं = भोजन करने में समर्थ है

परियत्तो भोक्तुं = भोजन करने में समर्थ है

श्रलं भोक्तुं = भोजन करने में समर्थ है

कालो भोक्तुं = भोजन करने का समय है

भोक्तुमनो = भोजन करने के मन वाला

सोतुं सोतो = सुनने के लिए कान

वदुं चक्खु = देखने के लिए आँख

युज्झितुं धनु = युद्ध करने के लिए धनुष

वत्तुं जळो = बोलने में जड़

कत्तुं श्रलसो = करने में आलसी

१०. करस्सा तवे ५.११८—'तवे' प्रत्यय आने से, 'कर' धातु का 'कार' आदेश हो जाता है। जैसे—

कर + तवे = कातवे।

§ २०. मं वा रुघा दीनं ५.६३—‘रुघ’ आदि घातुओं में, अन्तिम स्वर से परे, कहीं कहीं विकल्प से ‘अं’ का आगम होता है। जैसे—
रुन्धितुं; रुज्झितुं।

तून, क्तवान, क्त्वा

(पूर्वकालिक अव्यय)

§ २१. पुब्बे क क तु कानं ५.६३—जिन दो क्रियाओं का एक ही कर्ता होता है, उनमें पहली क्रिया के घातु से परे, विकल्प से ‘तून’, ‘क्तवान’ और ‘क्त्वा’ प्रत्यय होते हैं। जैसे—

सो सुणोति याति च—सो सोतून याति, सो सुत्वान याति, सो सुत्वा याति = वह सुन कर जा रहा है।

§ २२. पटि से धे ‘लं ख लूनं तु न क्त्वा न क्त्वा वा ५.६२—निषेध करने के अर्थ में यदि ‘अलं’ तथा ‘खलु’ शब्द प्रयुक्त हों, तो उनके योग में विकल्प से ये प्रत्यय आते हैं। जैसे—

अलं सोतून, खलु सोतून, अलं सुत्वान, खलु सुत्वान, अलं सुत्वा, खलु सुत्वा, अलं सुतेन, खलु सुतेन = सुनना वेकार है।

प्य

§ २३. प्यो वा त्वा स्स समा से ५.१६४—धातु के साथ समास होने पर, उससे परे, ‘त्वा’ प्रत्यय का विकल्प से ‘प्य’ आदेश हो जाता है। ‘प्य’ का ‘य’ रह जाता है। जैसे—

प्य त्वा

अभिभूय अभिभूयित्वा = तिरस्कार करके

§ २४. तुं या ना ५.१६५—धातु के साथ समास होने पर, उससे परे, ‘त्वा’ प्रत्यय का विकल्प से ‘तुं’ तथा ‘यान’ आदेश होता है। जैसे—

अभिहृदुं, अभिहरित्वा = ला कर

अनुमोदियान, अनुमोदित्वा = अनुमोदन करके

§ २५. ह ना र च्चो ५.१६६—समास होने पर, 'हन' धातु से परे, 'त्वा' का विकल्प से 'रच्च' आदेश होता है। 'रच्च' का 'अच्च' रह जाता है। जैसे—
हन = मारना—आहच्च, आहनित्वा = आघात करके

§ २६. सा सा धि क रा च च रि च्चा ५.१६७—'स', 'अस', तथा 'अधि' पूर्वक 'कर' धातु से परे, 'त्वा' का विकल्प से क्रमशः 'च', 'च', तथा 'रिच्च' आदेश होता है। जैसे—

सक्कच्च, सक्करित्वा = सत्कार करके

असक्कच्च, असक्करित्वा = असत्कार करके

अधिकिच्च, अधिकरित्वा = अधिकार करके

§ २७. इ तो च्चो ५.१६८—'इ' धातु से परे, 'त्वा' का विकल्प से 'च्च' आदेश होता है। जैसे—

इ = जाना—अधिच्च, अधियित्वा = पढ़ कर

समेच्च, समेत्वा = मिल कर

§ २८. दि सा वा न वा स् च ५.१६९—'दिस' (= देखना) धातु से परे, 'त्वा' प्रत्यय आने से, उसका रूप विकल्प से 'दिस्वान' होता है। जैसे—
दिस्वान, दिस्वा, पस्सित्वा = देख कर

१७. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क) कुसलं कातव्वं, अकुसलं जहितव्वं । रमणीयानि अरञ्जानि, यत्थ वीतरागा रमिस्सन्ति । कल्याणमित्तो सेवितव्वो, पापका मित्ता न भजितव्वा । पुप्फानि विय धम्मपदानि चेष्यानि । न हि कदाचि फरुसं वाक्यं । अच्छानि जलानि पेय्यानि । सोतव्वं सवनीयं, कातव्वं करणीयं । वज्जं न कातव्वं । गुय्हं गोपनीयं ।

(ख) कातुं वट्टति । खादितुं कालो । पक्कमितुं न देति । पठितुं आरभि । सुमेघ-पण्डितो इमं अत्थं चिन्तेत्वा, भोग-क्खन्धं विस्सज्जेत्वा, महादानं दत्त्वा, कामे पहाय, नगरतो निक्खमित्त्वा, हिमवन्तं अगमासि । तत्थ धम्मिकं नाम पव्वतं निस्साय अस्समं कत्त्वा, पण्ण-सालं च चङ्कमं च मापेत्त्वा (वनाकर) अभिञ्जावलं आहरितुं साटकं पजहित्त्वा, वाकचीरं (वलकल-चीवर) निवासेत्त्वा इसि-पव्वज्जं पव्वजि ।

२. पालि में अनुवाद कीजिए—

पण्डितों के द्वारा धर्म का आचरण करना चाहिए । अच्छे अच्छे ग्रन्थ सुनने चाहिए । गाने के योग्य गाथाओं को याद कर लो । सूरज को देखने के लिए, पहाड़ पर चढ़ कर पूरव की ओर देखो । खा कर, पी कर, हाथ धोवो । हाथ धोने के लिए कुएँ से पानी लाता हूँ । विहार जाने के लिए, घर जा कर उदान ग्रन्थ ले आवो । स्वर्ग में उत्पन्न होने के लिए, पाप-कर्म करना छोड़ कर पुण्य कर्म करता हूँ ।

तीसरा कारण्ड

छठा पाठ

विशेषण-प्रकरण

§ १. विशेषण चार प्रकार के होते हैं—(१) गुण-वाचक, (२) संख्या-वाचक, (३) कृदन्त, (४) तद्धितान्त । जैसे—

सुन्दरो बालको । एको बालको; पठमो बालको । पठमानो बालको; दिट्ठो बालको; दस्सनीयो बालको । अन्तिमो बालको; कत्तमो बालको; सेट्ठो बालको ।

§ २. विशेषण में, वही लिङ्ग, विभक्ति और वचन होते हैं, जो लिङ्ग, विभक्ति और वचन इसके विशेष्य में हैं । जैसे—

सुन्दरो बालको । सुन्दरी बालिका । सुन्दरं फलं । सुन्दरा बालका, सुन्दरियो बालिकायो, सुन्दरानि फलानि । सुन्दरेन बालकेन, सुन्दरिया बालिकाय, सुन्दरेन फलेन । इत्यादि ।

१. गुण-वाचक

गुण-वाचक विशेषण शब्दों के कुछ उदाहरण ऊपर (पृ० १) दे दिए गए हैं । 'अभिधानम्पदीपिका' से कुछ और उदाहरण नीचे दिए जाते हैं—

सौंदर्य = सोभन, रुचिर, साधु, मनुञ्ज, चारु, सुन्दर, बग्गु, मनोरम, कन्त, हारि, मञ्जु, पेत्तल, भद्द, वाम, कल्याण, मनाप, सुभ । उत्तम = उत्तम, पवर, जेट्ठ, पमुत्त, अनुत्तर, वर, मुख्य, पधान, पामोक्ख, वर, पणीत्त, सेय्य, विसिट्ठ, अरिय, नाग, पुंगव । प्रिय = इट्ठ, सुमग, हज्ज, दयित, वल्लभ, पिय । शून्य = तुच्छ, रिक्त, सुञ्ज, असार, फेग्गु । पवित्र = पूत, पवित्त । निष्कृष्ट = निहीन, हीन, लामक, निकिट्ठ, इत्तर, कुच्छित्त, अघम, गारय्ह । बृहत् = विपुल, विसाल, पुथुल,

पुथु, गहू । मोटा=पीन, थूल, थुल्ल, वठर । सारा=सव्व, समत्त, अखिल, निखिल, सकल, कसिण, समग्ग । प्रचुर=भूरी, पहूत, पचुर, भीय्य, संबहुल, वहू, येभुय्यं, बहुल । अल्प=परित्त, खुद्द, थोक, अप्प । सरल=उजु । तीक्ष्ण=तिण्हं, तिखिणं, तिब्बं । उग्र=चण्ड, उग्ग, खर । गतिशील=चर, जंगम, तस । कर्कश=कुरुर, कठिन, दब्ध, कक्कल । उपयुक्त=पतिरूप । निष्फल=मोघ, निरत्यक । व्यक्त=फुट । असहाय=एकाकी, एकच्च, एक; एकक । सुदक्ष=कतहत्थ, कुसल, पवीण, सिक्खिव, पट्ट, दक्ख, पेसल । विख्यात=व्यात, पतीत, पञ्जात, अभिञ्जात, पथित, सुत, विस्तुत, पसिद्ध, पाकट । धनाढ्य=इम्भ, अड्ड । लोभी=गिद्ध, लुद्ध । क्रोधी=कोधन, रोसन । चमकदार=भस्सर, भास्सर । कृपण=थद्ध, मच्छरी, कपण । दरिद्र=अकिचन, दब्धि, दुग्गत । तोखा=निसित । विस्तृत=विसट, वित्थत । पूजित=अपचायित, महित, पूजित, मानित, अपचित ।

§ ३. पुल्लिङ्ग में, अकारान्त विशेषण के रूप 'बुद्ध' शब्द के समान, इकारान्त के 'मुनि' शब्द के समान, तथा उकारान्त के 'भिक्षु' शब्द के समान होंगे ।

नपुंसक लिङ्ग में, अकारान्त विशेषण के रूप 'फल' शब्द के समान, इकारान्त के 'अट्ठि' शब्द के समान, तथा उकारान्त के 'आयु' शब्द के समान होंगे । जैसे—

पुल्लिङ्ग में—अतीतो भूपो; अतीता भूपा । सुचि कूपो; सुचयो कूपा । मुट्टु वालको; मुट्टवो वालका ।

नपुंसक लिङ्ग में—अतीतं नगरं; अतीतानि नगरानि । सुचि जलं; सुचीनि जलानि । मुट्टु फलं; मुट्टनि फलानि ।

स्त्रीलिङ्ग—विशेषण शब्दों को पुल्लिङ्ग से स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए उनसे परे 'आ', 'ई', आदि कुछ प्रत्यय लगाते हैं । [देखिए—पाँचवाँ काण्ड, चौथा पाठ] जैसे—

आ—अखिला, अधमा, अलसा, कपणा, चञ्चला, चपला, दुब्बला, पिया, बिचित्ता, सफला ।

ई—कुमारी, तरुणी, पञ्चमी, छट्ठी, सत्तमी, तापसी ।

§ ४. इकारान्त तथा उकारान्त विशेषण शब्द प्रायः स्त्रीलिङ्ग में भी ज्यों के त्यों रहते हैं; किंतु, उनके रूप क्रमशः 'रत्ति' तथा 'धेनु' शब्द के समान होते हैं । आकारान्त, तथा ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग विशेषण शब्दों के रूप क्रमशः 'लता' तथा 'इत्थी' शब्द के समान होंगे । जैसे—

दुब्बला इत्थी, दुब्बलायो इत्थियो । कुमारी बालिका, कुमारियो बालिकायो ।
सुचि वापी, सुचियो वापी । मुडु बालिका, मुडुयो बालिकायो ।

२. संख्या-वाचक

§ ५. संख्यावाचक शब्द विशेषण की तरह प्रयुक्त होते हैं; अतः, उनमें प्रायः वही लिङ्ग, विभक्ति और वचन होते हैं जो उनके विशेष्य में हैं। जैसे—

एको बालको । एका बालिका । एकं फलं । तयो बालका । तिस्सो बालिकायो । तीणि फलानि । चतुरो बालका । चतस्सो बालिकायो । चत्तारि फलानि ।

§ ६. 'द्वि' शब्द के रूप तीनों लिङ्गों में एक जैसे होते हैं। 'पञ्च' शब्द से लेकर 'अट्ठारस' तक सभी शब्द के रूप भी तीनों लिङ्गों में एक जैसे होते हैं। जैसे—द्वि, पञ्च बालका । द्वि, पञ्च बालिका ।

§ ७. 'एकूनवीसति' (=उन्नीस) से लेकर 'अट्ठनवुत्ति' (=अट्ठानवे) तक सभी शब्द नित्य स्त्रीलिङ्ग एकवचन रहते हैं। 'अट्ठनवुत्ति' (अट्ठानवे) तक जितने इकारान्त शब्द हैं, उनके रूप 'रत्ति' शब्द के समान; तथा जितने आकारान्त शब्द हैं, उनके रूप 'कञ्जा' शब्द के समान होंगे। जैसे—

विसति मनुस्सा; विसति फलानि; विसति इत्थी । विसति मनुस्से; विसति फलानि । विसति इत्थी । पञ्जासा (=पचास) मनुस्सा; पञ्जासा फलानि; पञ्जासा इत्थी ।

§ ८. 'सत्त' से लेकर 'सत्तसहस्सं' तक, सभी शब्द सदा नपुंसक लिङ्ग एक वचन रहते हैं। जैसे—सत्तं मनुस्सा; सत्तेन मनुस्सेहि; सत्तं इत्थी; सत्तं फलानि ।

[विशेष देखिए—तीसरा काण्ड : सातवाँ पाठ]

§ ९. पूरणवाची शब्द भी विशेषण हैं। जैसे—पठमो बालको; पठमा बालिका; पठमं फलं । [देखिए—पृ० १७५]

३. कृदन्त

§ १०. कुछ कृदन्त शब्द विशेषण के समान व्यवहृत होते हैं। जैसे—

न्त, मान

‘न्त’ प्रत्ययान्त शब्द के रूप, पुल्लिङ्ग तथा नपुंसक लिङ्ग में ‘गच्छन्त’ शब्द के समान होंगे। स्त्रीलिङ्ग में यह ‘गच्छन्ती’ या ‘गच्छती’ हो जायगा; और इसके रूप ‘इत्थी’ शब्द के समान होंगे। जैसे—

पठन्तो बालको । पतन्तं फलं । पठन्ती—पठती बालिका ।

‘मान’ प्रत्ययान्त शब्द के रूप पुल्लिङ्ग में ‘बुद्ध’ शब्द के समान, नपुंसक लिङ्ग में ‘फल’ शब्द के समान, तथा स्त्रीलिङ्ग में ‘कञ्जा’ शब्द के समान होंगे। जैसे—
पठमानो बालको; पतमानं फलं; पठमाना बालिका । [देखिये—पृ० ६२]

क्त, क्तवन्तु, तावी

‘क्त’ प्रत्ययान्त शब्द के रूप, पुल्लिङ्ग में ‘बुद्ध’ शब्द के समान, नपुंसक लिङ्ग में ‘फल’ शब्द के समान, तथा स्त्रीलिङ्ग में ‘लता’ शब्द के समान होते हैं। जैसे—

गतो बालको; गता बालिका; दिदं फलं ।

‘क्तवन्तु’ तथा ‘तावी’ प्रत्ययान्त शब्द कर्ता के विशेषण होते हैं। पुल्लिङ्ग में, ‘क्तवन्तु’ प्रत्ययान्त शब्द के रूप ‘गुणवन्तु’ शब्द के समान, तथा ‘तावी’ प्रत्ययान्त शब्द के रूप ‘दण्डी’ शब्द के समान होते हैं। जैसे—

राजा रञ्जं विजितवा; राजानो रञ्जं विजितवन्तो । राजा रञ्जं विजितावी;
राजानो रञ्जं विजिताविनो ।

नपुंसक लिङ्ग में, ‘क्तवन्तु’ प्रत्ययान्त शब्द के रूप ‘गुणवन्तु’ शब्द के समान, तथा ‘तावी’ प्रत्ययान्त शब्द के रूप ‘सुखकारी’ शब्द के समान होते हैं। जैसे—

पतितवं फलं; पतितवन्तानि फलानि । पतितावि फलं; पतितावीनि फलानि ।

स्त्रीलिङ्ग में, ‘क्तवन्तु’ प्रत्ययान्त शब्द के रूप ‘गुणवन्ती-गुणवती’ शब्द के समान, तथा ‘तावी’ प्रत्ययान्त शब्द के रूप ‘पतिताविनी’-इत्थी शब्द के समान होते हैं। जैसे—

पतितवन्ती—पतितवती धारा; पतितवन्तियो—पतितवतियो धारायो ।
पतिताविनी धारा; पतिताविनियो धारायो ।

[देखिए—पृ० १४२]

तच्च, अनीय, य

‘तच्च’, ‘अनीय’, तथा ‘य’ प्रत्ययान्त शब्द विशेषण के समान प्रयुक्त होते हैं। जैसे—

पस्सितच्चो रक्खो; पस्सितच्चया नदी; पस्सितच्चं फलं । दस्सनीयो रक्खो ।
देव्यो ब्राह्मणो; देव्यं दानं । [दिए—पृ० १५०]

४. तद्धितान्त

११. कुछ तद्धित-प्रत्ययान्त शब्द विशेषण होते हैं। जैसे—

रति, कीवतक, कित्तक

‘कि’ शब्द से परे ये प्रत्यय लगते हैं। जैसे—कति, कीवतकं, कित्तकं ।

‘कति’ शब्द के रूप तीनों लिङ्गों में एक जैसे होते हैं; तथा, वह नित्य अनेक वचनान्त रहता है। जैसे—कति मनुस्सा = कितने मनुष्य? कति फलानि? कति इत्थी? [दिए—पृ० १७४, २४७]

‘कीवतक’ तथा ‘कित्तक’ शब्दों के रूप पुल्लिङ्ग में ‘बुद्ध’ शब्द के समान, नपुंसक लिङ्ग में ‘फल’ शब्द के समान, तथा स्त्रीलिङ्ग में ‘लता’ शब्द के समान होते हैं। जैसे—

कीवतका—कित्तका बालका ? कीवतकानि—कित्तकानि फलानि ? कीव-
तकायो—कित्तकायो इत्थी ?

कतर—कतस

जैसे—कतरो—कतमो देवदत्तो भवतं ?

रोग्य

जैसे—“दक्खिण्यो भगवतो तावकसंधो” = भगवान् का श्रावक-संध

दक्षिणा देने योग्य है।

शिक

जैसे—मानसिको—सारिरिको रोगो—मन-शरीर का रोग । वातिको
 आबाधो—वायु का रोग । सोवगिको धम्मो—जो धम्म स्वर्ग ले जाय ।
 पेटिकं धनं—वपौती धन । अरञ्जिको भिक्खु—जंगल में रहने वाला भिक्षु ।

तन

जैसे—अज्जतनी वुत्ति—आज की खबर । स्वातनी—हिय्यतनी वुत्ति ।

इम

जैसे—मज्झिमो । अन्तिमो ।

१८. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

अत्तना जाति-धम्मो समानो (सन्तो), मरण-धम्मो समानो तेषु धम्मेषु आदीनवं (दोष) विदित्वा योग-क्खेमं निव्वाणं परियेसितव्वं । योगो करणीयो । पधानं पदहितव्वं । आयस्मा त्थो राहुलो भगवन्तं आगच्छन्तं दिस्वान आसनं पञ्जापेसि । भगवा पञ्जत्ते आसने निसज्ज, पादे पक्खालेसि । पच्चवेक्खित्वा पच्चवेक्खित्वा कायेन कम्मं कत्तव्वं वाचाय च मनसा च । मेत्तं भावनं भावयमानस्त (भावयतो) व्यापादो पहीयति । भगवा जानं जानाति, पस्सं पस्सति । दक्खिण्यो भगवतो सावकसंघो । आरञ्जिको भिक्खु मेत्तं भावेति ।

उदितं सुरियं संपस्समानेन आलोकं पि दट्ठव्वं होति । आलोकास्मि भायमानस्त धीन-मिद्धं (आलस्य) पहीनं होति । कतमानि भानानि भावेतव्वानि ? कतरस्मि हत्ये पुप्फं गण्हितव्वं । भुत्ताविना भत्त-संमोदनं कत्तव्वं । अञ्जाताविना धम्मो देसितव्वो ।

२. पालि में अनुवाद कीजिए—

फल खानेवाले को आलस्य नहीं होता है । वन में ध्यान करनेवालों का चित्त शान्त रहता है । किस आँख में पीड़ा है ? किन किन धर्मों को जानना चाहिए ? भगवान् के कहे किन किन भावनाओं को कर सकते हो ? स्वर्ग चाहने वालों को भगवान् के उपदिष्ट धर्मों में श्रद्धा उत्पन्न करना चाहिए । धर्म सुनकर प्रयत्न में जुट जाना चाहिए । प्रयत्न करते हुए विरति को हटाना चाहिए । दुःखितों को देखकर दया करनी चाहिए । प्राण को मारना नहीं चाहिए । सभी सत्त्वों में मैत्रि-भावना करनी चाहिए ।

तीसरा काण्ड

सातवाँ पाठ

सर्वनाम-प्रकरण

(तीसरा भाग—संख्या-वाचक)

संख्या-वाचक शब्द प्रायः विशेषण की तरह प्रयुक्त होते हैं; अतः, उनमें वही लिङ्ग, विभक्ति, और वचन होते हैं जो उनके विशेष्य में हैं।

‘एक’ शब्द की गिनती सर्वनाम शब्दों में की गई है। ‘संख्या’, ‘अतुल्य’, ‘असहाय’, तथा ‘अन्य’—इतने अर्थों में ‘एक’ शब्द प्रयुक्त होता है। संख्या के अर्थ में, ‘एक’ शब्द एक वचन ही में होता है [देखिए—पृ० २६]।

§ १२. एक

पुल्लिङ्ग

	ए क व च न	अ ने क व च न
प ठ मा	एको	एके
दु ति या	एकं	एके
त ति या	एकेन	एकेहि, एकेभि
च तु त्यी	एकस्स	एकेसं, एकेसानं
प ञ्च मी	एकन्हा, एकस्मा	एकेहि, एकेभि
छ ट्ठी	एकस्स	एकेसं, एकेसानं
स त्त मी	एकम्हि, एकास्मि	एकेसु

नपुंसक लिंग

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठ मा	एकं	एके, एकानि
दु ति या	एकं	एके, एकानि

शेष पुल्लिङ्ग के समान

स्त्रीलिंग

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठ मा	एका	एका, एकायी
दु ति या	एकं	एका, एकायी
त ति या	एकाय	एकाभि, एकाहि
च तु त्थी	एकस्सा, एकाय	एकासं, एकासानं
पञ्च मी	एकाय	एकाहि, एकाभि
छट्ठी	एकस्सा, एकाय	एकासं, एकासानं
सत्त मी	एकत्सं, एकायं	एकासु

§ १३. 'द्वि' शब्द सदा अनेक-वचन रहता है; तथा, तीनों लिङ्गों में इसके रूप समान ही होते हैं। जैसे—

	अ ने क व च न
पठ मा	दुवे, द्वे
दु ति या	दुवे, द्वे
त ति या	द्वीहि, द्वीभि
च तु त्थी	द्विसं, द्विसिं ^२
पञ्च मी	द्वीहि, द्वीभि
छट्ठी	द्विसं, द्विसिं ^२
सत्त मी	द्विसु

§ १४. 'उभ' (=दोनों) शब्द भी, सदा अनेक-वचन रहता है; तथा तीनों लिङ्गों में इसके रूप समान ही होते हैं। जैसे—

	अनेक वचन
पठमा	उभो
द्वुति या	उभो
तति या	उभोहि ^१ , उभोभि, उभेहि, उभेभि
चतुत्थी	उभिन्न ^२
पञ्चमी	उभोहि, उभोभि, उभेहि, उभेभि
छट्ठी	उभिन्न ^२
सप्तमी	उभोसु, ^३ उभेसु

§ १५. 'ति' (=तीन) शब्द भी सदा अनेक-वचन रहता है। तीनों लिङ्गों में इसके रूप भिन्न भिन्न होते हैं। जैसे—

	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
पठमा	तयो ^१	तिस्सो ^२	तीणि ^३
द्वुति या	तयो ^१	तिस्सो	तीणि
तति या	तीहि, तीभि	तीहि, तीभि	शेष पुल्लिङ्ग के
चतुत्थी	तिण्णं, तिण्णन्नं ^४	तिस्सन्नं ^५	समान
पञ्चमी	तीहि, तीभि	तीहि, तीभि	
छट्ठी	तिण्णं, तिण्णन्नं	तिस्सन्नं	
सप्तमी	तीसु	तीसु	

१. यो म्हि द्विन्नं दुवे द्वे २.२२१—'यो' विभक्ति के साथ, 'द्वि' शब्द के रूप 'दुवे', तथा 'द्वे' होते हैं।

२. न म्हि नुक् द्वादीनं सत्तरसन्नं २.४६—'द्वि' से लेकर 'अट्टारस' तक, शब्द से परे, 'न' विभक्ति का 'न्न' आदेश हो जाता है। जैसे—द्वि + नं = द्विन्नं। तिन्नं। चतुरन्नं। पञ्चन्नं। छन्नं। सत्तन्नं। अट्टन्नं। नवन्नं। दसन्नं। एकादसन्नं। द्वादसन्नं। तेरसन्नं। चतुद्दसन्नं। पञ्चदसन्नं। सोळसन्नं। सत्तदसन्नं। अट्टादसन्नं।

§ १६. 'चतु' (=चार) शब्द भी सदा अनेकवचन रहता है। तीनों लिङ्गों में इसके रूप भिन्न भिन्न होते हैं। जैसे—

	पु ल्लि ङ्ग	स्त्री लि ङ्ग	न पुंस क लि ङ्ग
पठ मा	चत्तारो, चतुरो*	चतस्तो	चत्तारि
दु ति या	चत्तारो, चतुरो	चतस्तो	चत्तारि
त ति या	चतूहि, चतूभि	चतूहि, चतूभि	चोप पुल्लिङ्ग
च तु त्यी	चतुन्नं	चतस्तन्नं	के समान
पञ्च मी	चतूहि, चतूभि	चतूहि, चतूभि	
छद्दी	चतुन्नं	चतस्तन्नं	
सत्त मी	चतुसु	चतुसु	

दुविन्नं नम्हि वा २.२२२—'नं' विभक्ति के साथ, 'द्वि' शब्द का रूप विकल्प से 'दुविन्नं' होता है।

३. चु हि सु भस्तो २.५८—'सु' तथा 'हि' विभक्तियों के आने से, 'उभ' शब्द का 'उभो' हो जाता है। जैसे—उभोहि। उभोसु।

४. उ भि न्नं २.५२—'उभ' शब्द से परे, 'नं' विभक्ति का 'इन्नं' आदेश होता है। जैसे—उभ + नं = उभिन्नं।

५. पु मे त यो च त्तारो २.२०६—पुल्लिङ्ग में, 'यो' विभक्ति के साथ, 'ति' तथा 'चतु' शब्दों के रूप क्रमशः 'तयो' तथा 'चत्तारो' होते हैं।

६. ण्णं ण्णन्नं ति तो ज्झा २.५१—पुल्लिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग में, 'ति' शब्द से परे, 'नं' विभक्ति का 'ण्णं' तथा 'ण्णन्नं' आदेश हो जाता है। जैसे—ति + नं = तिण्णं, तिण्णन्नं।

७. ति स्तो च त स्तो यो म्हि स द्वि भ स्ती नं २.२०७—स्त्रीलिङ्ग में, 'यो' विभक्ति के साथ, 'ति' तथा 'चतु' शब्दों के रूप क्रमशः 'तिस्तो' तथा 'चतस्तो' होते हैं।

८. न म्हि ति च तु न्न मि त्यि यं ति स्स च त स्सा २.२०६—'नं' विभक्ति आने से, 'ति' तथा 'चतु' शब्दों का क्रमशः 'तिस्स' तथा 'चतुस्स' आदेश हो जाता है। जैसे—तिस्सन्नं। चतस्सन्नं।

§ १७. पञ्च (=पाँच), छ, सत्त (=सात), अट्ठ (=आठ), नव, दस, एकादस^{११}—एकारस (=ग्यारह), बारस*—द्वादस,^{१२} (=बारह), तेरस^{१३}—† तेळस (=तेरह), चुद्दस^{१४}—चोद्दस—चतुद्दस (=चौदह), पञ्चदस^{१५}—पन्नरस (=पन्दरह), सोळस^{१६}—सोरस (=सोलह), अट्ठारस—अट्ठदस^{१७}

९. तीणि चत्तारि नपुंसके २.२०८—नपुंसक में, 'यो' विभक्ति के साथ, 'ति' तथा 'चतु' शब्दों के रूप क्रमशः 'तीणि' तथा 'चत्तारि' होते हैं।

१०. चतुरो वा चतुस्स २.२१०—पुल्लिङ्ग में, 'यो' विभक्ति के साथ, 'चतु' शब्द का रूप विकल्प से 'चतुरो' होता है।

११. एकद्धानमा ३.१०२—'दस' शब्द परे हो, तो 'एक' तथा 'अट्ठ' शब्दों के अन्त्य स्वर का 'आ' होता है। जैसे—एकाद्दस। अट्ठदस।

२ संख्यातो वा ३.१०३—संख्या से परे, 'दस' शब्द के 'द' का विकल्प से 'र' हो जाता है। जैसे—एकारस, एकादस। बारस, द्वादस। पन्नरस, पञ्चदस। सत्तरस, सत्तदस।

* 'पञ्च' का 'पन्न', तथा 'द्वि' का 'वा' आदेश होने पर, उससे परे 'दस' के 'द' का 'र' नित्य होता है। 'चतुद्दस' में 'द' का 'र' नहीं होता है।

१२. आ संख्याया सता दो, नञ्जत्थे ३.११४—अन्यार्थ समास हो, तो 'सत' आदि को छोड़, किसी संख्या के उत्तर पद में रहने से, 'द्वि' का 'द्वा' हो जाता है। जैसे—द्वादस। द्वावीसति। द्वत्तिस।

१३. तिस्से ३.११५—अन्यार्थ समास हो, तो 'सत' आदि को छोड़, किसी संख्या के उत्तर पद में रहने से, 'ति' का 'ते' हो जाता है। जैसे—ति + दस = तेरस। तेवीस। तेत्तिस।

† छतीहि लोच ३.१०४—'छ' तथा 'ति' शब्दों से परे, 'दस' शब्द के 'द' का विकल्प से 'ळ' हो जाता है। जैसे—सोळस, सोरस। तेळस, तेरस।

१४. चतुस्स चुचो दसे ३.१००—'दस' शब्द परे हो, तो 'चतु' शब्द का 'चु' तथा 'चो' आदेश होता है। जैसे—चतुद्दस, चुद्दस, चोद्दस।

१५. वीसतिदसेसु पञ्चस्स पण्णुपन्ना ३.११६—'वीसति' तथा 'दस' शब्द परे हों, तो 'पञ्च' शब्द का विकल्प से क्रमशः 'पण्णु' तथा 'पन्न' आदेश हो

(=अट्टारह) —इतने शब्द सदा अनेकवचन रहते हैं। इनके रूप तीनों लिङ्गों में समान होते हैं। जैसे—

	अनेकवचन
पठमा	पञ्च ^{१७}
द्वुतिया	पञ्च
ततिया	पञ्चहि, ^{१८} पञ्चभि
चतुर्थी	पञ्चन्नं ^{१८}
पञ्चमी	पञ्चहि, पञ्चभि
छट्ठी	पञ्चन्नं
सप्तमी	पञ्चसु ^{१८}

इसी तरह, 'अट्टारस-अट्टादस' तक सभी शब्दों के रूप होंगे।

§ १८. एकूनवीसति (=उन्नीस) से लेकर 'नवुति' (=नव्वे) तक, सभी शब्द नित्य 'स्त्रीलिङ्ग—एकवचन' होते हैं। जैसे—

	एकवचन
पठमा	एकूनवीसति
द्वुतिया	एकूनवीसति
ततिया	एकूनवीसत्रिया

जाता है। जैसे—पण्णुवीसति, पञ्चवीसति। पन्नरस, पञ्चदस।

१६. छस्स सो ३.१०१—'दस' शब्द परे हो, तो उससे पूर्व 'छ' का 'स' हो जाता है। जैसे—सोळस।

१७. ट पञ्चादीहिं चुद्दसहि २.१७१—'पञ्च' से लेकर 'अट्टारस' तक, शब्द से परे 'यो' विभक्ति का 'अ' आदेश होता है। जैसे—पञ्च+यो=पञ्च। दस+यो=दस।

१८. पञ्चादीनं चुद्दसन्नम २.६२—'सु', 'नं', तथा 'हि' विभक्तियों के आने से, 'पञ्च' से लेकर 'अट्टारस' तक, शब्द का अन्त्य स्वर 'अ' होता है। जैसे—पञ्चसु। पञ्चन्नं। पञ्चहि। छसु। छन्नं। छहि।

	ए क व च न
च तु ल्थी	एकूनवीसतिया
पञ्च मी	एकूनवीसतिया
छ द्ठी	एकूनवीसतिया
स त्त मी	एकूनवीसतियं

इसी तरह, निम्न शब्दों के भी रूप होंगे—

२० वीसति	३७ सत्तित्सति
२१ एकवीसति	३८ अट्ठित्सति
२२ द्वेवीसति	३९ एकूनचत्ताळीसति
द्वावीसति	४० चत्ताळीसति
दावीसति	४१ एकचत्ताळीसति
२३ तेवीसति	४२ द्वाचत्ताळीसति ^{१९}
२४ चतुवीसति	द्विचत्ताळीसति
२५ पञ्चवीसति	४३ तेचत्ताळीसति ^{२०}
पण्णुवीसति	तिचत्ताळीसति
पण्णवीसति	४४ चतुचत्ताळीसति
२६ छव्वीसति	चोत्ताळीसति
२७ सत्तवीसति	चुत्ताळीसति
२८ अट्ठवीसति	४५ पञ्चचत्ताळीसति
२९ एकूर्नात्सति	४६ छ्वत्ताळीसति
३० त्सति	४७ सत्तचत्ताळीसति
३१ एकत्सति	४८ अट्ठचत्ताळीसति
३२ द्वत्सति	अट्ठचत्तारीसति
वत्सति	४९ एकूनपञ्जासा
३३ तैत्सति	५० पञ्जासा
३४ चतुत्सति	५१ एकपञ्जासा
३५ पञ्चत्सति	५२ द्वेपञ्जासा
३६ छत्सति	द्विपञ्जासा

५३	तेपञ्जासा	६८	अट्टसद्वि
	तिपञ्जासा	६९	एकूनसत्तति
५४	चतुपञ्जासा	७०	सत्तति
५५	पञ्चपञ्जासा	७१	एकसत्तति
५६	छपञ्जासा	७२	द्वासत्तति
५७	सत्तपञ्जासा		द्विसत्तति
५८	अट्टपञ्जासा	७३	तेसत्तति
५९	एकूनसद्वि		तिसत्तति
६०	सद्वि	७४	चतुसत्तति
६१	एकसद्वि	७५	पञ्चसत्तति
६२	द्वासद्वि,	७६	छसत्तति
	द्वेसद्वि	७७	सत्तसत्तति
	द्विसद्वि	७८	अट्टसत्तति
६३	तेसद्वि	७९	एकूनासीति
	तिसद्वि	८०	असीति
६४	चतुसद्वि	८१	एकासीति
६५	पञ्चसद्वि	८२	द्वेअसीति
६६	छसद्वि		द्वासीति
६७	सत्तसद्वि	८३	तेअसीति

१९. द्वि स्ता च ३.९७—‘चत्तालीस’ आदि शब्द परपद में हो, तो ‘द्वि’ का विकल्प से ‘द्वे’ तथा ‘द्वा’ हो जाता है। जैसे—द्वेचत्तालीस, द्वाचत्तालीस, द्विचत्तालीस। द्वेपञ्जास, द्वापञ्जास, द्विपञ्जास। द्वेसद्वि, द्वासद्वि, द्विसद्वि। द्वेसत्तति, द्वासत्तति, द्विसत्तति। द्वे असीति, द्वासीति, द्वि असीति। द्वेनवुत्ति, द्वानवुत्ति, द्विनवुत्ति।

२०. च त्ता ली सा दो वा ३.९६—‘चत्तालीस’ आदि शब्द परपद में हो, तो ‘ति’ का विकल्प से ‘ते’ हो जाता है जैसे—तेचत्तालीस, तिचत्तालीस। तेपञ्जास, तिपञ्जास। तेसद्वि, तिसद्वि। तेसत्तति, तिसत्तति। तेअसीति, तियासीति, तिअसीति। तेनवुत्ति, तिनवुत्ति।

८४ चतुरासीति	द्वेनवुति
८५ पञ्चासीति	द्विनवुति
८६ छासीति	६३ तेनवुति
८७ सत्तासीति	तिनवुति
८८ अट्टासीति	६४ चतुनवुति
८९ एकूननवुति	६५ पञ्चनवुति
९० नवुति	६६ छन्नवुति
९१ एकनवुति	६७ सत्तनवुति
९२ द्वानवुति	६८ अट्टनवुति

§ १९. 'अट्टनवुति' तक, जितने इकारान्त शब्द हैं, सभी के रूप 'रत्ति' शब्द के समान; तथा जितने आकारान्त शब्द हैं, सभी के रूप 'कञ्जा' शब्द के समान होंगे। स्मरण रहे, कि ये सभी शब्द नित्य स्त्रीलिङ्ग एकवचन होते हैं।

§ २०. 'सतं' (=सी) शब्द नपुंसक लिङ्ग एकवचन होता है। जैसे—

६६ एकूनसतं (=निघ्नानवे)

	ए क व च न
पठमा	एकूनसतं
दुति या	एकूनसतं
तति या]	एकूनसतेन
चतुत्थी	एकूनसतस्स, एकूनसताय
पञ्चमी	एकूनसता, एकूनसतस्मा, एकूनसतम्हा
छट्ठी	एकूनसतस्स
सत्तमी	एकूनसते, एकूनसतम्हि, एकूनसतस्मि

§ २१. 'सतं' शब्द से ले कर 'सतसहस्सं' (=शतसहस्र) शब्द तक, सभी शब्द नपुंसक लिङ्ग एकवचन होते हैं। जैसे—सतं ननुत्सा। सहस्सं कञ्जायो। सतसहस्सं फलानि।

§ २२. 'कोटि', 'पकोटि', 'कोटिप्पकोटि', 'अक्खोहिणी'—इतने शब्द स्त्रीलिङ्ग एकवचन होते हैं। जैसे—कोटि मनुत्सा, कञ्जायो, फलानि वा।

§ २३. उतने उतने का वर्ग जाना जाय, तो इन शब्दों में अनेक वचन भी होता है। जैसे—द्वे वीसंतियो, तीणि सत्तानि, चत्तारि सहस्सानि, तिस्सो कोटियो ।

‘सौ’ से ऊपर की संख्यायें—‘ड’ प्रत्यय

§ २४. संख्या य स च्चु ती सा स द स न्ता धि क स्मि स त सह स्से डो ४.५०—‘इस सौ या हजार में इतना अधिक है’, इस अर्थ में सत्यन्त, उत्पन्त, ईसान्त, आसान्त, तथा दसान्त संख्याओं से परे, ‘ड’ प्रत्यय होता है। जैसे—वीसति अधिका आस्मि सते ‘ति’—वीसं सतं, १ सहस्सं, सतसहस्सं वा । तिसं सतं, एकांसं सतं ।

उत्पन्त—नवुति + ड + सतं = नवुतं सतं । नवुतं सहस्सं । नवुतं सतसहस्सं ।

ईसान्त—चत्तारीसं सतं, सहस्सं, सतसहस्सं वा ।

आसान्त—पञ्जासं सतं, सहस्सं, सतसहस्सं वा ।

दसान्त—एकादसं सतं, सहस्सं, सतसहस्सं वा ।

§ २५. दूसरी संख्याओं के साथ, ‘अधिक’ शब्द का समास होता है। जैसे—एकाधिकं सतं, सहस्सं, सतसहस्सं । द्वयाधिकं सतं । नवाधिकं सतं ।

§ २६. पालि में, सौ के ऊपर की संख्यायें निम्न प्रकार हैं—

सतं	एक पर	२	शून्य
सहस्सं	„	३	„
नहुतं	„	४	„
सतसहस्सं	„	५	„
कोटि	„	७	„
पकोटि	„	१४	„
कोटिप्पकोटि	„	२१	„
(पुन) नहुतं	„	२८	„

२१. डे स ति स्स ति स्स ४.१३६—‘ड’ प्रत्यय आने से, सत्यन्त संख्या-वाचक शब्दों के ‘ति’ का लोप हो जाता है। जैसे—वीसति + ड = वीसं सतं । तिसं सतं ।

निन्नहुतं	एक पर ३५	शून्य
अक्खोहिणी	„ ४२	„
विन्दु	„ ४६	„
अव्वुदं	„ ५६	„
निरव्वुदं	„ ६३	„
अहहं	„ ७०	„
अवतं	„ ७७	„
अटटं	„ ८४	„
लोगन्धिकं	„ ९१	„
उप्पलं	„ ९८	„
कुमुदं	„ १०५	„
पुण्डरीकं	„ ११२	„
पट्टमं	„ ११६	„
कथानं	„ १२६	„
महाकथानं	„ १३३	„
असंखेय्यं	„ १४०	„

कति

§ २७. टि क ति म्हा २.१७०—'कति' (=कितना) शब्द नित्य अनेक वचन होता है। तीनों लिङ्गों में इसके रूप समान होते हैं। जैसे—

	अ ने क व च न
प ठ मा	कति
डु ति या	कति
त ति या	कतीहि, कतीभि
च तु त्यी	कतीनं, कतिन्नं ^{३२}
प ञ्च मी	कतीहि, कतीभि
छ द्ठी	कतीनं, कतिन्नं
स त्त मी	कतीसु

§ २८. पूरण वाची शब्द

	पु ल्लि ज्ञ	स्त्री लि ज्ञ	न पुं सक लि ज्ञ
१	पठमो = पहला	पठमा = पहली	पठमं = पहला
२	द्वितीयो	द्वितीया	द्वितीयं
३	तृतीयो	तृतीया	तृतीयं
४	चतुर्थो	चतुर्थी, चतुर्थ्या	चतुर्थ्यं
	तुरीयो	तुरीया	तुरीयं
५	पञ्चमो ^{११}	पञ्चमी	पञ्चमं
६	छट्ठो ^{१२}	छट्ठा, छट्ठी	छट्ठं
	छट्ठमो	छट्ठमी	छट्ठमं
७	सत्तमो	सत्तमा, सत्तमी	सत्तमं
८	अट्ठमो	अट्ठमा, अट्ठमी	अट्ठमं
९	नवमो	नवमा, नवमी	नवमं
१०	दसमो	दसमा, दसमी	दसमं
११	एकादसो, एकादसमो ^{१३}	एकादसी	एकादसमं
१२	वारसो, वारसमो, द्वादसमो	द्वादसी	वारसमं, द्वादसमं

२२. बहु क ति त्रं २.५०—'बहु' तथा 'कति' शब्दों से परे, 'न' विभक्ति का 'त्रं' आदेश हो जाता है। जैसे—बहुत्रं। कतित्रं।

२३. म पं चा दि क ती हि ४.५२—'पंच' आदि, तथा 'कति' शब्द से परे पूरण के अर्थ में 'म' प्रत्यय होता है। जैसे—पञ्चमो। सत्तमो। अट्ठमो। कतिमो।

२४. छा ट्टु मा ४.५४—पूरण के अर्थ में, 'छ' शब्द से परे 'ट्टु' तथा 'ट्टुम' प्रत्यय होते हैं। जैसे—छट्ठो, छट्ठमो। द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ्य निपात हैं।

२५. त स्स पू र णे का द सा दि तो वा ४.५१—पूरण के अर्थ में, 'एकादस' आदि संख्या से परे, विकल्प से 'ड' प्रत्यय होता है। जैसे—एकादसो, एकादसमो। द्वादसो, द्वादसमो। वीसो, वीसतिमो। तिसो, तिसतिमो। चत्तालीसो। पञ्जासो।

पु ल्लि ङ्ग	स्त्री लि ङ्ग	न पुंत्त क लि ङ्ग
१३ तेरसो, तेरसमो	तेरसी	तेरसमं
१४ चतुद्दसमो	चतुद्दसी, चातुद्दसी	चतुद्दसमं
१५ पञ्चदसमो,	पञ्चदसी	पञ्चदसमं
पण्णरसमो	पण्णरसी	पण्णरसमं
१६ सोळसमो	सोळसी	सोळसमं
१७ सत्तरसमो	सत्तरसी	सत्तरसमं
सत्तदसमो	सत्तदसी	सत्तदसमं
१८ अट्टारसमो	अट्टारसी	अट्टारसमं
अट्टादसमो	अट्टादसी	अट्टादसमं
१९ एकूनवीसतिमो	एकूनवीसतिमा	एकूनवीसतिमं
	एकूनवीसतिमी	

इसके आगे^१ के संख्यावाचक शब्दों के साथ 'म' लगा कर, उसका पूरण बना लेते हैं। जैसे—एकवीसतिमो, तिसतिमो इत्यादि।

§ २६. चतुत्थ त तिया न म इडु इड ति या ३.१०५—'अड्ड' (=अर्ध) शब्द से परे, 'चतुत्थ' तथा 'ततिय' का क्रमशः 'उड्ड' तथा 'तिय' आदेश हो जाता है। जैसे—

अड्डेन चतुत्थो—अड्डुड्डो (=साढ़े तीन)।

अड्डेन ततियो—अड्डतियो (=अढ़ाई)।

§ ३०. दु तिय स्स सह दि य ड्ड दि व ड्डा ४.१०६—'अड्ड' शब्द के साथ, 'दुतिय' का समास होने से, 'दियड्ड' तथा 'दिवड्ड' रूप होते हैं। जैसे—अड्डेन दुतियो—दियड्डो, दिवड्डो (=डेढ़)।

२६. सतादीनमि च ४.५३—पूरण के अर्थ में, 'सत' आदि संख्यावाचक शब्दों से परे, 'म' प्रत्यय होता है; तथा, शब्द के अन्त्य स्वर का इकार हो जाता है। जैसे—सतिमो। सहस्सिमो।

१६. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

एकं समयं, द्वे भिक्षू त्रिणं सञ्जोजनानं खयं पापुणिसु । चत्तारि अरिय-सञ्चानि पञ्जातव्वानि । पञ्च पञ्चका वग्गा पञ्चवीसति (=पण्णवीसति) वण्णा होन्ति । चतूसु (चतुसु) दिसासु । अट्ठसु परिसासु ! सत्तन्नं सति-सम्बो-ज्झङ्गानं भावनं भावेतुं सक्का । नव दारका । दस दारिकायो । एकादस फलानि । चतस्सो अनुपस्सनायो, चत्तारि सम्मप्पघानानि, चत्तारो इट्ठिपादा, पञ्च इन्द्रियाणि, पञ्च बलानि, सत्त बोज्झङ्गा, अट्ठ मग्गोति—सत्तत्तिसति बोधि-पक्खिका घम्मा भावनीया, बहुली करणीया । पठमे कप्पे मनुस्सा दीघायुका भविसु । दुतियायं विभत्तियं 'अम्ह'-सदस्स 'मे' इति रूपं होति । एको देवो, द्वीहि देवपुत्तेहि सद्धि, तीणि अहानि, चतस्सन्नं दिसानं रट्ठेसु विचरन्तो तत्थ पापुणि । वीसति च तिसति च संकलिता पञ्जासति होति । तेपञ्जासा च द्वीत्तसा च समग्गा पञ्चासीति होति ।

२. पालि में अनुवाद कीजिए—

एक नगर में एक राजा रहता था । उसकी तीन रानियाँ थीं । पहली रानी को एक, दूसरी को दो, तथा तीसरी को तीन पुत्र थे । चारों दिशाओं में उसकी कीर्ति फैल गई थी । सातों वृक्षों के फल पके हैं । दस लड़के और ग्यारह लड़कियाँ यहाँ रहती हैं । सौ लड़के । हजार नदियाँ । करोड़ फल ।

चौथा काण्ड

पहला पाठ

वाच्य-प्रकरण

§ १. पालि भाषा में वाच्य तीन हैं—

(१) कर्तृवाच्य, (२) भाववाच्य, (३) कर्मवाच्य ।

१. कर्तृवाच्य

कर्तृवाच्य में, कर्ता में 'पठमा' विभक्ति, और कर्म में (यदि कोई हो तो) 'द्वितीया' विभक्ति होती है। और, क्रिया के पुरुष तथा वचन, कर्ता के पुरुष तथा वचन के समान होते हैं। (देखिए—पृ० २६, ३०) जैसे—

अकर्मक—देवदत्तो हसति=देवदत्त हँसता है। यहाँ 'देवदत्त' कर्ता है; इसलिए, उसमें पठमा विभक्ति है। क्रिया, 'हसति' पठम पुरिस एक वचन है; क्योंकि, कर्ता 'देवदत्तो' भी पठम पुरिस एक वचन है। इसी तरह—बालका हसन्ति। अहं हसामि। मयं हसाम। त्वं हससि। तुम्हें हसथ।

सकर्मक—बालको कुक्कुरं पस्सति। बालको कुक्कुरे पस्सति।

२. भाववाच्य

भाववाच्य में, कर्ता में 'तृतीया' विभक्ति होती है। 'कर्म' होता ही नहीं है; क्योंकि, भाववाच्य केवल अकर्मक धातु से ही बनता है। क्रिया, सदैव 'पठम पुरिस', 'एकवचन' रहती है। विभक्ति लगाने के पहले, धातु से परे, 'क्य' प्रत्यय आता है। 'क्य' का 'य' रह जाता है। (देखिए—पृ० १८०) जैसे—

बालकेन अत्र भूयते=लड़का यहाँ मौजूद है। बालाकेहि अत्र भूयते=लड़के यहाँ मौजूद हैं। मया अत्र भूयते=मैं यहाँ मौजूद हूँ। त्वया अत्र भूयते=तुम

यहाँ मौजूद हो। मया अत्र भूयिस्सते—मैं यहाँ मौजूद रहूँगा। त्वया अत्र भूयि—
तुम यहाँ मौजूद थे। तद्वेहि अत्र भूयेय्य—सबों को यहाँ मौजूद रहना चाहिए।
इत्यादि

३. कर्मवाच्य

कर्मवाच्य में, कर्ता में 'ततिया' विभक्ति, और कर्म में 'पठमा' विभक्ति होती है। क्रिया के पुरुष और वचन, कर्म के पुरुष और वचन के समान होते हैं; तथा, विभक्ति लगाने के पहले, धातु से परे 'क्य' प्रत्यय आता है। 'क्य' का 'य' रह जाता है (देखिए—पृ० १८०)। जैसे—

रञ्जा घनं दीयते—राजा के द्वारा घन दिया जाता है। रञ्जा घनानि दीयन्ति—राजा के द्वारा घन दिए जाते हैं। पितरा त्वं (भक्तुनो) दीयसि—पिता के द्वारा तुम (पति को) दी जा रही हो। पितरा तुम्हे (भक्तुनो) दीयम्हे—पिता के द्वारा तुम लोग (पति को) दी जा रही हो। पितरा अहं (भक्तुनो) दीयामि—पिता के द्वारा मैं (पति को) दी जा रही हूँ। पितरा मयं (पतिनो) दीयाम—पिता के द्वारा हम लोग (पति को) दी जा रही हैं। इत्यादि।

द्रष्टव्य—जिस कर्मवाच्य में कर्तृपद उक्त न हो, तथा उसका वहाँ कोई प्राधान्य भी न हो, उसे "कर्म-कर्तृ वाच्य" कहते हैं। वहाँ, कर्म ही कर्ता के ऐसा जान पड़ता है। जैसे—ओदनं पचति (=मनुस्त्रो ओदनं पचति)।

सौकर्यं तथा संक्षेप के लिए, अन्य कारक भी कर्ता के तौर पर प्रयुक्त होता है। जैसे—असि छिन्दति (=असिना छिन्दति)। थालि पचति (=थालियं पचति) ओदनं पचति।

निष्ठा

क्तवन्तु, क्तावी

(कर्तृवाच्य)

§ २. कर्तृवाच्य में, भूतकालके अर्थ में, धातु से परे 'क्तवन्तु' तथा 'क्तावी' प्रत्यय होते हैं। प्रत्यय लगने से जो रूप बनता है, वह कर्ता का विशेषण होता है। जैसे—

राजा रञ्जं विजितवा—विजितावी । राजानो रञ्जं विजितवन्तो—
विजिताविनो ।

(देखिए—पृ० १४२ : १६०)

क्त

(कर्मवाच्य; भाववाच्य)

कर्म और भाववाच्य में, भूतकाल के अर्थ में, धातु से परे 'क्त' प्रत्यय होता है । प्रत्यय लगने से जो रूप बनता है, वह कर्मवाच्य में कर्म का विशेषण होता है; और भाववाच्य में सदा नपुंसकलिङ्ग एकवचन रहता है । जैसे

कर्म—रञ्जा रञ्जं विजितं; रञ्जा रञ्जानि विजितानि ।

भाव—मया हसितं; अम्हेहि हसितं; त्वया हसितं; तुम्हेहि हसितं; तेन हसितं; तेहि हसितं ।

क्त

(कर्तृवाच्य)

कुछ अवस्थाओं में, कर्तृवाच्य में भी, भूतकाल के अर्थ में धातु से परे 'क्त' प्रत्यय होता है । प्रत्यय लगने से जो रूप बनता है, वह कर्ता का विशेषण होता है । जैसे—
पसुत्तो बालको । पसुत्ता बालिका । गामं बालको गतो । गामं बालिका गता । रुक्खा फलानि पतितानि । (देखिए—पृ० १४२ : १४३ : १६०)

क्य

§ ३. क्यो भा व क स्मे स्व प रो क्खे सु मा न न्त्या दि सु ५.१७—भाव-वाच्य तथा कर्मवाच्य में, 'न्त', 'मान', तथा (परोक्ष भूत को छोड़) 'ति' आदि प्रत्ययों के आने पर, धातु से परे 'क्य' प्रत्यय होता है । 'क्य' का 'य' रह जाता है । जैसे—

ठीयमानं । ठीयते । सूयमानं । सूयते, सूयन्ते, सूयिस्सति इत्यादि ।

§ ४. क्य स्स ६.३७—'क्य' प्रत्यय आने से, धातु से परे विकल्प से 'ई' का आगम होता है । जैसे—

पच + क्य + ति = पच + ई + क्य + ति = पचीयति ।

§ ५. क्य स्स स्से ६.४६—हेतुहेतुमद्भूत तथा भविष्यत्काल में, विकल्प से 'क्य' का लोप होता है । जैसे—

अन्वभविस्सा, अन्वभूयिस्सा । अनुभविस्सति, अनुभूयिस्सति ।

§ ६. अञ्जा दि स्सा स्सी क्ये ५.१३७—'क्य' प्रत्यय आने से, 'ना' आदि को छोड़, दूसरे आकारान्त धातु के आकार का ईकार हो जाता है । जैसे—

ठा + क्य + ते = ठीयते । दा + क्य + ते = दीयते । पा + क्य + ते = पीयते । ['न' आदि—तीसरा परिशिष्ट]

§ ७. तन स्सा वा ५.१३८—'क्य' प्रत्यय आने से, 'तन' धातु का विकल्प से 'ता' आदेश होता है । जैसे—तन + क्य + ते = तायते, (या) तञ्जते ।

§ ८. दी घो स र स्स ५.१३९—'क्य' प्रत्यय आने से, स्वरान्त धातु दीर्घ हो जाता है । जैसे—चि + क्य + ते = चीयते । सु + क्य + ते = सूयते ।

२०. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

- (क) भगवा विहरति । भगवा निसीदति । भगवा समाधिम्हा उट्टाति । भगवा मनसि-करोति । भगवा उदानं उदानेति । ब्राह्मणा भायन्ति । धम्मा पातु-भवन्ति । ब्राह्मणो सहेतु-धम्मं पजानाति ।
- (ख) भगवता विहरीयति । भगवता निसज्जते । भगवता समाधिम्हा उट्ठीयते । भगवता मनसि-करीयति । भगवता उदानं उदानीयति । ब्राह्मणेहि भायते । धम्मेहि पातु-भूयते । ब्राह्मणेहि सहेतु-धम्मो पञ्जायते । देवेहि सक्को पुच्छीयते ।
- (ग) फस्स-पच्चया, वेदना सम्भवति । जाति-पच्चया, जरा-मरणं सम्भवति । तण्हा वड्ढति । असि छिन्दति । थाली पचति । देवो वस्सति ।
- (घ) दीयमानं दानं भिक्खूहि आदीयते । अदिन्नादाना अम्हेहि विरमितव्वं । बुद्धस्स सरणं सावकेहि गच्छीयते । हीयमानेहि अकुशलेहि धम्मेहि, न पुन पच्चा-गच्छीयति । तिट्ठमानेन वा, चरन्तेन वा, निसिन्नेन वा, सायानेन वा भिक्खुना सति अधिट्ठातब्बा, ब्रह्म-विहारेण विहरितव्वं । भुत्ताविना भिक्खुना न पुन भत्तं भुज्जितव्वं ।
- (ङ) ब्रह्मणा याचितो सन्तो, भगवा धम्म-चक्कं पवत्तयि । पञ्हे पुच्छीय-माने वा, धम्मे देसीयमाने वा, बुद्ध-धातुस्मि दस्सीयमाने वा, साधुकं सनिकं सनिकं मनसि करिय्यति सति उपट्ठपेन्तेन भिक्खुना । सुरियो दिस्सति (पस्सीयति, दक्खीयति) । धम्मो पि तथागतेन देसितो दिस्सति चक्खु-मन्तेहि विञ्जूहि ।

२. ऊपर काले अक्षरों में छपे पदों के रूप प्रथम-पुरुष एकवचन में लिखिए; और वाक्यों में उनका प्रयोग करके दिखाइए ।

३. पालि में अनुवाद कीजिए—

- (क) आकाश में सूर्य दिखाई दे रहा है । सूर्य देखते हुए मुझसे प्रकाश भी

देखा गया । धर्म समझते हुए भिक्षु लोगों से लोक-हित कार्य भी हुआ करता है । पालि-व्याकरण पढ़ा भी जाता है, पढ़ाया भी जाता है । पालि-व्याकरण पढ़ा जाना चाहिए, पढ़ा जा कर अच्छी तरह समझ लिया जाना चाहिए ।

(ख) धर्म-दायाद होना चाहिए । धर्म-दायक होना चाहिए । माता-पिता का आज्ञा-पालन करना चाहिए । बुद्धों का शासन मानना चाहिए । तीन वेदों का पारङ्गत (पारगू) होना चाहिए । ब्राह्मण होना चाहिए । ब्राह्मण होने की इच्छा करने वाले मनुष्यों को बुद्ध भगवान् के उपदिष्ट धर्मों को सुनना चाहिए । सुनते हुए अच्छी तरह समझना चाहिए । समझते हुए आचरण करना चाहिए । धर्म ही करना योग्य है । धर्म ही से लोक का कल्याण होता है । कल्याण धर्म सुनते, करते, देखते हुए चित्त श्रास्रवों से मुक्त करना चाहिए ।

४. निम्नलिखित नाम-पद और धातुओं से कर्तृवाच्य तथा कर्मवाच्य में वाक्य बनाइए—

(१)—बुद्धो-धम्मो-देस । (२)—दारको-पोत्यकं-पठ । (३)—कञ्जा-सुरियो-पस्स ।

(४)—भिक्षु-बुद्धो-वन्द । (५)—मुनि-धम्मो-चर । (६)—मनुस्तो-फलं-खाद ।

५. निम्नलिखित कर्तृ-वाच्य वाक्यों का कर्म-वाच्य बनाइए—

ब्रह्मदत्तो रज्जं कारेसि । राम-पण्डितो अनिच्चतं पकासेति । वासुदेवो कंसं हनति । सीता-देवी राम-पण्डितं अनुगच्छति । लक्षण-कुमारो राम-पण्डितं वन्दति । बुद्धो भगवा धम्मं देसेति । भगवा उदानं उदानेसि ।

चौथा काण्ड

दूसरा पाठ

क्रिया-प्रकरण

(छठा भाग—अनद्यतन, परोक्ष, हेतु० भूत)

अनद्यतन भूत^१

जो काम आज से पहले हुआ हो, उसमें किसी धातु के रूप निम्न प्रकार होते हैं—

परस्स पद

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठ म पुरि स	पचा, अपचा, ^२ अपच ^३	अपचु, ^१ अपचू
म जिभ म पुरि स	अपचो ^४	अपचित्थ, अपचुत्थ
उत्त म पुरि स	अपच	अपचुम्हा, अपचिम्हा, अपचिम्ह ^५

१. अनज्जतने आऊ, ओत्थ, अम्हाःत्थत्थुं, सेव्हं, इंम्ह से ६.५—
अनद्यतन अर्थ में, धातु से परे ये प्रत्यय होते हैं ।

मायोगे ईआआदि ६.१३—‘मा’ शब्द के योग में, विकल्प से परिसमाप्त्यर्थक-भूत, तथा अनद्यतन भूत होते हैं । जैसे—

मासु पुनपि एवरूपमकासि । मा भवं अगमा वनं—आप वन मत जायँ ।

२. आ ईस्सादि स्वञ् वा ६.१५—अनद्यतन भूत, परिसमाप्त्यर्थक भूत, तथा हेतुहेतुमद्भूत में, धातु से पूर्व विकल्प से ‘अ’ का आगम होता है । जैसे—
अपचा, पचा ।

३. आ ईऊम्हास्सास्सम्हानं वा ६.३३—‘आ’, ‘ई’, ऊ, म्हा, स्सा, स्सम्हा—इनका विकल्प से ह्रस्व हो जाता है । जैसे—

अतनी पद

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठ म पु रि स	अपचत्य	अपचत्युं
म जिभ म पु रि स	अपचसे	अपचहं
उ त्त म पु रि स	अपचि	अपचाम्हसे

§ १९. अनद्यतन भूतकाल में कुछ विशेष धातुओं के रूप—

वच—अवोच, अवोचु । कर—अका । गम—अगा । गम—अगञ्छा ।

डंस—अडञ्छा । (देखिए—पृ० ८६)

दिस—अद्दस, अद्दा । (देखिए—पृ० ११८)

'परोक्ष भूत

परस्स पद

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठ म पु रि स	पपच	पपचु
म जिभ म पु रि स	पपचे	पपचित्य
उ त्त म पु रि स	पपच	पपचिम्ह

अपचा, अपच । अपची, अपचि । अपचू, अपचु । अपचिम्हा, अपचिम्ह ।
अपचिस्ता, अपचिस्त । अपचिस्तम्हा, अपचिस्तम्ह ।

४. ओ स्त अ इ त्य त्यो ६.४२—'ओ' का विकल्प से 'अ', 'इ', 'त्य' तथा 'त्यो' आदेश होता है । जैसे—

त्वं अपच, अपचि, अपचित्य, अपचित्यो, अपचो ।

५. प रो क्त्वे अउ, ए त्य, अम्ह; त्य रे, त्यो व्हो, इ म्हे ६.६—जो काम आज से पहले हुआ हो, तथा प्रत्यक्ष न हो, उस अर्थ में धातु से परे ये प्रत्यय होते हैं । जैसे—पपच, पपचु इत्यादि ।

परोक्ष = जो अपनी इन्द्रियों से अनुभूत न हो । स्वप्न, उन्माद, तथा विप-

अत्तनो पद

एक वचन]

अनेक वचन

पठम पुरिस पपचित्थ

पपचिरे

मज्झिम पुरिस पपचित्थो

पपचिन्हो

उत्तम पुरिस पपचि

पपचिम्हे

यान्तर में लगे हुए होने की स्थिति में, अपनी इन्द्रियों से अनुभूत क्रिया भी परोक्ष समझी जाती है। इस प्रकार के परोक्ष में, उत्तम-पुरुष में भी परोक्ष-भूत का प्रयोग होता है। जैसे—सुत्तोन्वहं विललाप। मत्तोन्वहं विललाप। अचेतनो हं पठविंयं पपत।

६. परोक्वाय ऊच ५.७०—परोक्ष भूत में भी, प्रथम एक स्वर शब्द रूप का द्वित्व हो जाता है। जैसे—पच + अ = पपच। पच + उ = पपचु। इत्यादि

पाँचवाँ काण्ड-दूसरा पाठ में, द्वित्व होने के जो नियम आए हैं, सभी यहाँ लागू होंगे।

द्वित्व होने वाले धातु

परोक्ष भूत को छोड़, अन्य स्थानों में भी धातु का द्वित्व होता है। जैसे—
 हा—जहाति = छोड़ता है। जल—दहल्लति = खूब प्रज्वलित होता है। कम—
 चङ्कमति = बार वार घूमता है। कित—तिकिच्छति = चिकित्सा करता है।
 धा—ददति। तिज—तितिक्खति = क्षमा करता है। मन—वीमंसति = मीमांसा
 करता है। गुप—जिगुच्छति। दा—इदाति = देता है।

तिज माने हि ख सा ख मा वी मं सा सु ५.१—यदि 'तिज' धातु क्षमा के अर्थ में, और 'मान' धातु मीमांसा करने के अर्थ में हो, तो उनके साथ 'ख' तथा 'स' प्रत्यय होते हैं। जैसे—तिज—तितिक्खति। मान—वीमंसति।

मानस्स वी परस्स च मं ५.८०—'मान' धातु के द्वित्व होने से, पहले भाग का 'वी', तथा दूसरे भाग का 'मं' होता है। जैसे—वीमंसति।

कि ता ति कि च्छा संसये सु छो ५.२—चिकित्सा तथा शंसय करने के अर्थ में, 'कित' धातु से परे 'छ' प्रत्यय होता है। जैसे—तिकिच्छति = चिकित्सा करता है। विचिकिच्छति = संशय करता है।

§ २०. परोक्षभूत में कुछ विशेष धातु के रूप—'ब्रू—आह । भू—वभूव' ।

कि त स्ता सं स ये ति वा ५.८१—संशय से भिन्न, दूसरे अर्थ में 'कित' धातु हो, तो उसके द्वित्व होने पर, पहले 'कि' का विकल्प से 'ति' होता है। जैसे—
तिकिच्छति, चिकिच्छति = चिकित्सा करता है ।

नि न्दा यं गु प व धा व स्स भो च ५.३—निन्दा करने के अर्थ में, 'गुप' तथा 'वध' धातु से परे, 'छ' प्रत्यय होता है; और, 'व' का 'भ' हो जाता है। जैसे—

गुप + छ + ति = जिगुच्छति } निन्दा करता है ।
वध + छ + ति = वीभच्छति }

धा स्स हो ५.१०३—'धा' धातु के द्वित्व होने पर, दूसरे भाग का 'ह' हो जाता है। जैसे—धा + ति = दहति ।

गु पि स्तु स्स ५.७७—द्वित्व होने पर, 'गुप' धातु के प्रथम 'उ' का 'इ' हो जाता है। जैसे—गुप + छ + ति = जिगुच्छति ।

७. अं आ दि स्वा हो ब्रू स्स ६.१६—परोक्ष-भूत में, 'ब्रू' धातु का 'आह' आदेश हो जाता है। जैसे—आह, आहु ।

उ स्सं स्वा हा वा ६.१६—'आह' आदेश हो जाने के बाद, 'उ' प्रत्यय का विकल्प से 'अंसु' आदेश हो जाता है। जैसे—आहंसु, आहु ।

८. भू स्स वु क् ६.१७—परोक्षभूत में, 'भू' धातु से परे, 'व' का आगम होता है। जैसे—

भू + अ = भू + व + अ = वभूव ।

पु व्व स्स अ ६.१८—'भू' धातु के द्वित्व होने से, पूर्व 'भू' का 'भ' हो जाता है। जैसे—भू + अ = भूभू + अ = भभू + अ = वभूव ।

च तु त्य दु ति या नं त ति य प ठ मा ५.७८—द्वित्व होने पर, वर्ग के चतुर्थ, तथा द्वितीय वर्ग का क्रमशः उसी वर्ग का तृतीय तथा प्रथम वर्ण हो जाता है। जैसे—

भू + अ = भभू + अ = वभूव ।

कालातिपत्ति' (हेतुहेतुमद्भूत)

परस्स पद

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठम पुरिस	अपचिस्सा	अपचिस्सं सु
मज्झिम पुरिस	अपचिस्से	अपचिस्सथ
उत्तम पुरिस	अपचिस्सं	अपचिस्साम्हा

अत्तनो पद

	ए क व च न	अ ने क व च न
पठम पुरिस	अपचिस्सथ	अपचिस्सिं सु
मज्झिम पुरिस	अपचिस्ससे	अपचिस्सव्हे
उत्तम पुरिस	अपचिस्सं	अपचिस्साम्हासे

§ २१. हेतुहेतुमद्भूत में कुछ विशेष धातु के रूप—

कर—अकाहा, अकरिस्सा । हा—अहाहा, अहायिस्सा । लभ—अलच्छा, अलभिस्सा । वस—अवच्छा, अवसिस्सा । छिद—अच्छेच्छा, अछिन्दिस्सा । भिद—अभेच्छा, अभिन्दिस्सा । रुद—अरुच्छा, अरोदिस्सा । भुज—अभोक्खा, अभुञ्जिस्सा । मुच—अमोक्खा, अमुञ्चिस्सा । वच—अवक्खा, अवचिस्सा । प+विस—पावेक्खा, पाविसिस्सा । सक—सक्खिस्सा, सक्कुणिस्सा । सु—अस्सोस्सा, असुणिस्सा । अस—अभविस्सा । (देखिए—पृ० ६४-६६)

६. एप्यादो वा तिपत्तियं स्सा स्सं सु, स्से स्स थ, स्सं स्स म्हा; स्स थ स्सि सु, स्स से स्स व्हे, स्सं स्सा म्हा से ६.७—हेतुहेतुमद्भूत में धातु से परे ये प्रत्यय होते हैं ! जैसे—

सच्चे पठमवये पव्वज्जं अलभिस्सा, अरहा अभविस्सा—यदि वह प्रथम आयु में प्रव्रज्या पाए होता, तो अर्हत् हो गया होता ।

२१. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

अहुवा मेव मयं पुव्वे, न नाहुवम्हाति ? अकरा मेव मयं पुव्वे, पापं कम्मं न नाकरम्हा ति ? अलत्थ पव्वजं, अलत्थ उपसंपदं च ।

ब्रह्मा भगवन्तं अयाचय । भगवा तिपाट्टिहीरे (तीसु पाट्टिहारियेसु) वसी अहु । लोक-धातु पकम्पथ । महा ओभासो आसि । सो अगमा । ते अगमु । भगवा एतदवोच । मयं एवं अत्रचम्हा । सो अका । मयं न अकरम्हा । मयं एवं कातुं न दम्हा (अददम्हा) ।

(ख) अतीते मन्वाता नाम चक्कवत्ती राजा वभूव । भूत-पुव्वं जनको नाम राजा वभूव । राम-पण्डितो वनं जगाम ।

(ग) दुक्खस्स अन्तं चे नाभविस्स, निव्वानं नो पञ्जायिस्स । कुशलं कम्मं चे नाकरिस्सं सुख-विपाकं नालभिस्सं । बुद्धस्स सरणं चे नागच्छिस्सम्हा, भानसुखं नानुभविस्सम्हा । पालिया वियाकरणं चे नापठिस्से, तेपिटकं साधुकं ना वुज्झिस्से । दानानि चे नादीयिस्संसु पुञ्ज-विपाका नाभविस्संसु ।

अहं चे पुञ्जानि नाकरिस्सं, सगं लोकं नालभिस्सं । अहं चे तथरिव अभिजानिस्सं, यथरिव भगवा “अनेक-जाति-संसारं सन्धाविस्सं ति” अरुवम्हासि । अहं पि तिस्सो चेव विज्जायो सच्छिक्त्वा अनेकजाति-संसारं न सन्धाविस्सं ।

(घ) चङ्कमे चङ्कमि जिनो । भगवा हि सुवण्ण-वण्णो] सुरियो विय दादल्लति (दहल्लति) । लोलुपा, भोमुहा मनुस्सा सगं लोकं नुप्पज्जन्ति । सिरिसपेहि विभेति ।

२. पालि में अनुवाद कीजिए—

(क) (अनद्यतन भूत का प्रयोग कीजिए—)

भगवान ने भिक्षुओं को देखा । मैंने बुद्ध-मन्दिर देखा । मैं बुद्ध के शरण

गया । इसीलिए तुमको मद्यपान करने नहीं दिया । मैंने वुरा (अकुशल) काम नहीं किया ।

(ख) (परोपस भूत का प्रयोग कीजिए—)

पूर्व काल में विदुर (विचुरो) नामक पण्डित था । युधिष्ठिर (युधिष्ठिलो) नामक राजा था । वामुदेव कृष्ण (वासुदेव-कृष्णो) ने चक्र से कंस को मारा । लक्ष्मण (लक्ष्मण-कुमारो) अपने भाई के साथ वन को गये ।

(ग) फल खाते, तो शरीर हल्का (लहकं) होता । पालि-व्याकरण अच्छी तरह पढ़ते, तो त्रिपिटक को अच्छी प्रकार समझते । उपासक लोग संघ को दान देते, तो संघ की बढ़ती होती । दायक लोग त्रिपिटक के हिन्दी-अनुवाद प्रकाशित कराते, तो बहुत पुण्य होता (प+सू) । त्रिपिटक की भाषा मधुर न होती, तो पढ़ने वाले का चित्त प्रसन्न नहीं होता (प+सद्) । ब्रह्मलोक यदि न होता, तो प्रथम ध्यान का विपाक कैसे अनुभव किया जाता ? पूर्ण जन्म (पुत्रे-निवासो) यदि न होता, तो ध्यानियों को कैसे उसका अनुस्मरण होता ।

चौथा काण्ड

तीसरा पाठ

‘वाला’-वाचक प्रत्यय

(क.)

(कृदन्त प्रकरण—तीसरा भाग)

लु, णक,

§ २६. कत्तरि लुणका ५.३३—‘इस काम को करने वाला,’ इस अर्थ में, धातु से परे ‘लु’ और ‘णक’ प्रत्यय होते हैं। ‘लु’ का ‘लु’, और ‘णक’ का ‘अक’ रह जाता है। (देखिए—पृ० ६४-६६) जैसे—

	लु	णक
दा = देना	दातु (दाता)	दायको ^१ = देने वाला
वच = बोलना	वत्तु (वक्ता)	वाचको = बोलने वाला
नी = ले जाना	नेत्तु (नेता)	नायको = नायक
सु = सुनना	सोतु (सोता)	सावको = सुनने वाला
जि = जीतना	जेतु (जेता)	× = जीतने वाला
छिद = छेदना	छेत्तु (छेत्ता)	छेदको = छेदने वाला

१. आस्ता णा पि ष्हि युक् ५.६१—‘णापि’ को छोड़, अन्य ‘ण’ अनुबन्ध वाला प्रत्यय आने से, आकारान्त धातु से परे ‘य’ का आगम होता है। जैसे—
दा + णक = दायको ।

आवी

§ ३०. आ वी ५.३४—'इस स्वभाव वाला' इस अर्थ में, धातु से परे, बहुवचन 'आवी' प्रत्यय होता है। जैसे—भयदस्सावी = भय देखने वाला, भयशील।

अक

§ ३१. आ सि ता य म को ५.३५—आशीर्वाद का भाव हो, तो धातु से परे 'अक' प्रत्यय होता है। जैसे—

जीवतु इति—जीवको = बहुत दिन जीने वाला

नन्दतु इति—नन्दको = आनन्द से रहने वाला

णन (का 'अन' रह जाता है)

§ ३२. क रा ण नो ५.३६—'कर' धातु से परे, 'णन' प्रत्यय होता है। जैसे—
करोति इति—कारणं = करने वाला

§ ३३. हा तो वी हि काले सु ५.३७—'ग्रीहि' और 'काल' का द्योतक हो, तो 'हा' (= छोड़ना) धातु से परे 'णन' प्रत्यय होता है। जैसे—

हायना = एक प्रकार की ग्रीहि। हायनो = वर्ष।

कू (का 'ऊ' रह जाता है)

§ ३४. वि दा कू ५.३८—'विद' धातु से परे, 'कू' प्रत्यय होता है। जैसे—
विद्व = जानने वाला। लोकविद्व = संसार को जानने वाला।

§ ३५. वि तो ना तो ५.३९—'वि' पूर्वक 'ना' धातु से परे, 'कू' प्रत्यय होता है। जैसे—विञ्जू = विशेष जानने वाला।

§ ३६. क म्मा ५.४०—कर्म से परे 'ना' धातु आवे, तो उक्त अर्थ में उससे परे 'कू' प्रत्यय होता है। जैसे—सर्वं जानाति इति—सर्वञ्जू = सब कुछ जानने वाला। कालञ्जू = काल जानने वाला। वेदञ्जू = वेद जानने वाला।

अण

§ ३७. क्व च ण् ५.४१—कर्म से परे, धातु के बाद कहीं कहीं 'अण' प्रत्यय होता है। 'अण्' का 'अ' रहता है; तथा, धातु के उपान्त स्वर की वृद्धि होती है। जैसे—

कुम्भकारो = कुम्भ को बनाने वाला। सरलादो = सर नामक तृण को काटने वाला। मन्तज्झायो = मन्त्र पढ़ने वाला।

रू

§ ३८. ग मा रू ५.४२—कर्म से परे 'गम' धातु आवे, तो उक्त अर्थ में, उससे परे 'रू' प्रत्यय होता है। 'रू' का 'ऊ' रहता है। जैसे—

वेदगू = वेद में गति रखने वाला। पारगू = पार जाने वाला।

णी

§ ३९. ली ला अ भि क्ल ऊजा व स्स के सु णी ५.५३—शील, आभिक्षण्य (= बार बार होना), और आवश्यक का अर्थ प्रतीत होता हो, तो धातु से परे 'णी' प्रत्यय होता है। 'णी' का 'ई' रहता है; तथा, धातुके उपान्त की वृद्धि होती है। जैसे—

उण्हभोजी = गरम खाने वाला

खीरपायी = बार बार दूध पीने वाला

अवस्सकारी = अवश्य करने वाला

सतन्दायी = सौ देने वाला

§ ४०. था व रि त्तर भ इग्गुर भि डुर भा सुर भ स्स रा ५.५४—ये शब्द निपात हैं। जैसे—

थावर = स्थावर = स्थित रहने वाला। इत्तर = जाने वाला। भेइग्गुर = टूट जाने वाला। भिडुर = नष्ट हो जाने वाला। भासुर, भस्सर = चमकने वाला।

(ख)

(तद्धित प्रकरण—पहला भाग)

मन्तु

§ १. त मे त्य स्स त्यी ति मन्तु ४.७८—'वाला' के अर्थ में, नाम से परे 'मन्तु' प्रत्यय होता है। जैसे—

गौवों वाला देश या पुरुष—गोमा (गोमन्तु)। वैसे ही, गतिमा (गतिमन्तु)= गतिवाला। सतिमा (सतिमन्तु)=स्मृति वाला। आयस्मा^३ (आयस्मन्तु)= आयुष्मान्। [देखिए—पृ० ८०]

वन्तु

§ २. व न्त्व व ण्णा ४.७९—अकार तथा आकार से परे, 'मन्तु' के स्थान में 'वन्तु' होता है। जैसे—

शीलवा (शीलवन्तु)=शील वाला। पञ्जवा (पञ्जवन्तु)=प्रज्ञा वाला।
[देखिये—पृ० ८०]

इक, ई

§ ३. द ण्डा दि त्ति क ई वा ४.८०—'वाला' के अर्थ में, 'दण्ड' आदि शब्दों [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] से परे, कहीं कहीं 'इक' तथा 'ई' प्रत्यय भी होते हैं। जैसे—

दण्ड—इण्डिको, दण्डी, दण्डवा = दण्ड वाला

गन्ध—गन्धिको, गन्धी, गन्धवा = गन्ध वाला

रूप—रूपिको, रूपी, रूपवा = रूप वाला

§ ४. उ त्त मि णे व ध ना इ को—'धन' शब्द से परे, केवल उत्तमर्ण (=ऋण

२. आयुस्तायस् मन्तुम्हि ४.१३४—'मन्तु' प्रत्यय आने से, 'आयु' शब्द का 'आयस्' आदेश हो जाता है। जैसे—अयु + मन्तु = (आयस्मन्तु) आयस्मा।

देने वाला महाजन) के अर्थ में, 'इक' प्रत्यय होता है। जैसे—

धनिको = ऋण देने वाला महाजन।

धनी, धनवा = धन वाला।

§ ५. असन्नित्वात् अत्या—'अत्य' (= अर्थ) शब्द से परे, 'न रहने के अर्थ में' 'इक' तथा 'ई' प्रत्यय होते हैं। जैसे—

अत्यिको, अत्यी = जिसके पास अर्थ नहीं हो; जो उसकी चाह करता है।

अत्यवा = अर्थ वाला।

§ ६. हृत्थदन्ते हि जाति यं—'हृत्थ' तथा 'दन्त' शब्दों से परे, जाति के अर्थ में, 'ई' प्रत्यय होता है। जैसे—हृत्थी = हाथी। दन्ती = हाथी। नहीं तो—हृत्थवा = हाथ वाला। दन्तवा = दाँत वाला।

§ ७. वर्णतो ब्रह्मचारिभ्यः—ब्रह्मचारी के अर्थ में, 'वर्ण' शब्द से परे 'ई' प्रत्यय होता है। जैसे—वर्णी = वर्णी = ब्रह्मचारी। नहीं तो—वर्णवा = वर्णवान् = सुन्दर।

स्ती

§ ८. तपादी हि स्ती ४.८१—'वाला' के अर्थ में, 'तप' आदि शब्दों से परे, 'स्ती' प्रत्यय होता है। जैसे—तपस्ती = तप करने वाला। यसस्ती = यस वाला। तेजस्ती = तेज वाला। मनस्ती = मान वाला। पयस्ती = दूध वाला। [देखिए, तीसरा परिशिष्ट]

र

§ ९. मुखदितो रो ४.८२—'मुख' आदि शब्दों से परे, 'रो' प्रत्यय होता है। [देखिए, तीसरा परिशिष्ट] जैसे—

मुखरो = बहुत बोलने वाला। नुसिरो = छिद्र वाला। ऊसरो = रेत वाला। मधुरो = मीठा। दन्तुरो = निकले दाँत वाला।

भ

§ १०. तुण्ड्यादी हि भो ४.८३—'तुण्डि' आदि [देखिए, तीसरा

परिशिष्ट] शब्दों से परे, 'भो' प्रत्यय होता है । जैसे—

तुण्डभो=चोंच वाला । सालिभो=सालि घान वाला । विकल्प से, 'तुण्डिमा' भी ।

अ

§ ११. सद्वा दित्त्व ४.८४—'सद्वा' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दों से परे, उक्त अर्थ में, विकल्प से 'अ' प्रत्यय होता है । जैसे—

सद्धो=श्रद्धा वाला । पञ्जो=प्रज्ञा वाला । विकल्प से—'पञ्जवा' भी ।

ण

§ १२. णो त्पा ४.८५—'तप' शब्द से परे, 'ण' प्रत्यय होता है । 'ण' का 'अ' रहता है; तथा, उपधा की वृद्धि होती है । जैसे—तापसो=तप करने वाला । स्त्रीलिङ्ग में—तापसी ।

आलु

§ १३. आत्वभिज्झादी हि ४.८६—'अभिज्झा' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दों से परे, 'आलु' प्रत्यय होता है । जैसे—

अभिज्झालु=बड़ा लोभ वाला । सीतालु=शीत न सह सकने वाला । दयालु=दया वाला । क्रोधालु=क्रोध वाला । निद्रालु=बहुत नींद लेने वाला । विकल्प से—दयावा, क्रोधवा भी ।

इल

§ १४. पिच्छादित्त्व लो, ४.८७—'पिच्छ' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दों से परे, विकल्प से 'इल' प्रत्यय होता है । जैसे—

पिच्छिलो, पिच्छवा=पर वाला (=मोर) । फेणिलो, फेणवा=फेन वाला । जटिलो, जटावा=जटा वाला ।

व

§ १५. सीला दितो वो ४.८८—'सील' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दों से परे, विकल्प से 'व' प्रत्यय होता है। जैसे—

सीलवो=शील वाला। केसवो=केश वाला।

अण्णा नि च्चं—'अण्ण' शब्द से परे, नित्य 'व' प्रत्यय होता है। जैसे—
अण्णवो=जल वाला (समुद्र)।

वी

§ १६. मायामेघाहि वी ४.८९—'माया' और 'मेघा' शब्दों से परे, 'वी' प्रत्यय होता है। जैसे—

मायावी=माया वाला। मेघावी=अकल वाला।

आमी, उवामी

§ १७. सिस्सरेआम्युवामी ४.९०—'स' (=स्व) शब्द से परे, 'अधिकार रखने वाले' के अर्थ में, 'आमी' तथा 'उवामी' प्रत्यय होते हैं। जैसे—

सामी, सुवामी=अधिकार रखने वाला।

ण

§ १८. लक्ख्या णो अ च ४.९१—'लक्खी' (=लक्ष्मी) शब्द से परे, 'ण' प्रत्यय होता है। प्रत्यय लगने से, 'लक्खी' शब्द के 'ई' का 'अ' हो जाता है। जैसे—

लक्खणो=लक्ष्मी वाला।

न

§ १९. अङ्गनो कल्याणे ४.९२—कल्याण का द्योतक हो, तो 'अङ्ग' शब्द से परे, 'न' प्रत्यय आता है। जैसे—

अङ्गना=कल्याणकर अङ्गों वाली।

सो

§ २०. सो लोमा ४.६३—'लोम' शब्द से परे, 'स' प्रत्यय होता है। जैसे—लोमसो=रोयें वाला। स्त्रीलिङ्ग में—लोमसा।

इम, इय

§ २१. इमिया ४.६४—'वाला' के अर्थ में, बहुधा 'इम' और 'इय' प्रत्यय होते हैं। जैसे—

पुत्तिमो=पुत्र वाला। कित्तिमो=कीर्ति वाला। पुत्तियो=पुत्र वाला। जटियो=जटा वाला। सेनियो=सेना वाला।

२२. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क) भगवा . हि लोक-नायको लोक-विद् सत्या देव-मनुस्सानं । एकच्चो पाणातिपाती होति, एकच्चो अदिन्नादायी होति, अदिन्नं थय्यसंखातं आदाता होति । एकच्चो कामेसु .मिच्छाचारी होति चारित्तं आपज्जिता । एकच्चो मुसा-वादी होति, संपजान-मुसा भासिता । भगवा हि एवं-रूपानं सत्तानं अज्जासयवसेन पि धम्मं देसिता होति लोकस्स विनेता । ब्रह्मचारी, अनुमत्तेसु वज्जेसु भय-दस्सावी, अक्कोघनो भिक्खु वुद्धस्स सासन-करो नाम होति, धम्मस्स अनुधम्म-चारी ।

(ख) अरञ्ज-विहारिना भिक्खुना सतिमन्तेन भवितव्वं, कायिकं वाचिकं मान-सिकं च कम्मं पच्चवेक्खित्वा पच्चवेक्खित्वा कातव्वं । सतिमा, भय-दस्सावी, लज्जी, मेधावी, कतञ्जू, अकथंकयी, दयालु, अमुखरो भिक्खु धम्मेसु परिपूर-कारी होति सुविञ्जाता, वुद्ध-सासन-करो, धम्मिको ति ।

२. ऊपर काले अक्षरों में छपे पदों का विश्लेषण कीजिए—

जैसे, सुविञ्जाता = सु + वि + जा + ल्तु । सतिमा = सति + मन्तु । धम्मिको = धम्म + इक ।

चौथा काराड

चौथा पाठ

भाव-वाचक प्रत्यय

भाव-वाचक प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं—(१) वातु से परे लगने वाले, (=कृदन्त) और (२) नाम से परे लगने वाले (=तद्धित) । जैसे—गन—गमनं, गति । नचुर—मचुरत्तं, मचुरत्ता ।

(क)

(कृदन्त प्रकरण—चौथा भाग)

अ, घण

§ ४१. भावकारकेषु अ-घण-घ-का ५.४४—भाव के अर्थ में, वातु से परे, बहुवा 'अ' तथा 'घण' प्रत्यय होते हैं । जैसे—

अ—पगहो=पकड़ना । निगहो=निग्रह । वचो=वृत्तना । जयो=जीतना । रचो=आवाज । वचो=बोलना ।

घण्—पाको* =पकना । चाणो* =त्याग । लानो । नाणो । नारो । हारो । आचारो । विचारो । निच्छयो' ।

* देखिए—नृ० १५०. सूत्र ५.२८.

१. नितो विल्ल छो ५.१२२—'नि' उपसर्ग पूर्वक, 'त्रि' वातु का 'डि' आदेश हो जाता है । जैसे—

नि + त्रि + अ = नि + छि + अ =

(सरन्हा द्वे १.३४) निच्छि + अ = (वतुत्पवृत्तियेस्वेत्तं ततियनठना १.३५)

निच्छि + अ = (धुवगानं ए ओ पञ्चये ५.२२) निच्छे + अ = (एओनें ववा सरे ५.२३) निच्छयो ।

इ

§४२. दा घा त्वि ५.४५—‘दा’ तथा ‘घा’ धातुओं से परे, ‘इ’ प्रत्यय होता है। जैसे—

आदि=आदान करना=लेना। निधि=निधान करना=जमा करना।

अथु

§४३. व मा दी हथु ५.४६—‘वम’ आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] धातुओं से परे, ‘अथु’ प्रत्यय होता है। जैसे—

वमथु=वमन करना। वेपथु=कांपना।

क्वि

§४४. क्वि ५.४७क्वि स्स, ५.१५६, क्वि म्हि लो पो न्त व्यञ्जन स्स ५.६४—भाव तथा कारक में, धातु से परे ‘क्वि’ प्रत्यय होता है। ‘क्वि’ प्रत्यय का लोप हो जाता है; उसके स्थान पर कुछ नहीं रहता है। ‘क्वि’ प्रत्यय आने से, धातु के अन्त्य व्यञ्जन का लोप होता है। जैसे—अभिव्वतीति—अभिव्व। सयं भवतीति—सयम्भू। भत्तं गसन्ति गणहन्ति वा एत्य—भत्तगं। सलाकं गणहन्ति एत्याति—सलाकगं। सन्धि भाति—सन्धि। संगम्म भासन्ति एत्याति—सन्धि।

भत्त + गस + क्वि = (‘गस’ धातु के अन्त्य व्यञ्जन ‘स’ का लोप) भत्त + ग = (सरम्हा द्वे १.३४) भत्तगं। स + भास + क्वि + आ = सभा।

क्वि म्हि धो परि प च्च स मो हि ५.१००—‘परि’, ‘पति’, तथा ‘स’ पूर्वक, ‘हन’ धातु से परे ‘क्वि’ प्रत्यय आने से, ‘हन’ धातु का ‘घ’ आदेश हो जाता है। जैसे—

परिह्वञ्जतीति—परिधो। पतिह्वञ्जतीति—पटिधो। आह्वञ्जतीति—अघं = पाप। संहतो इति—सङ्घो। ओह्वञ्जति एतेनाति—ओघो = वाढ़।

अ, ण, क्ति, क, यक्, य

§४५. इ त्यि य म ण क्ति क य क्वा च ५.४६—स्त्रीलिङ्ग में, धातु से परे, बहुधा ‘अ’, ‘ण’, ‘क्ति’, ‘क’, ‘यक्’, तथा ‘य’ प्रत्यय होते हैं। जैसे—

अ—तित्तिक्खा, वीमंसा, जिगुच्छा, वीभच्छा, तिकिच्छा, विचिकिच्छा, पिपासा, ईहा, भिक्खा, आपदा ।

ए—कारा=करना । हारा=हरण करना । तारा=तरण करना धारा=धारण करना ।

क्ति (का 'ति' रह जाता है)—इड्ढि, भित्ति, भत्ति (=भक्ति), भूति, सति (=स्मृति), वड्ढि^३ (=वृद्धि) ।

क—(का 'अ' रह जाता है)—रुजा=पीड़ा देना । मुदा=मोद ।

यक्—(का 'य' रह जाता है)—विज्जा=विद्या । इच्छा । क्रिया ।

य—पव्वज्जा=प्रव्रज्या । परिचरिया=सेवा । जागरिया=जानना ।

मिगया=शिकार खेलना ।

अन—वेदना, वन्दना, उपासना ।

अन

§४६. अनो ५.४८—भाव के अर्थ में, धातु से परे 'अन' प्रत्यय होता है । जैसे—निगूहनं, आळाहनं,^४ गमनं, दानं, सम्पदानं, पानं, असनं, वसनं, अधिकरणं, चलनं, जलनं, कोधनो, कोपनो, मण्डनं, सरणं, भरणं, हरणं ।

§४७. रा नस्त णो ५.१७१—रकारान्त धातु से परे, प्रत्यय के 'न' का 'ण' हो जाता है । जैसे—अरणं, सरणं, भरणं ।

[न न्त मा न त्या दी नं ५.१०२—रकारान्त धातु से परे, 'न्त', 'मान' तथा 'ति' आदि प्रत्ययों के 'न' का 'ण' नहीं होता है । जैसे—करोन्तो । कुरुमानो । करोन्ति]

२. लोपो वड्ढा क्तिस्स ५.१५८—'वड्ढ' धातु से परे, 'क्ति' प्रत्यय के 'त' का लोप हो जाता है । जैसे—वड्ढ + क्ति = वड्ढि ।

३. गुहिस्स सरे ५.१०५—'गुह' धातु से परे स्वर हो, तो उसके 'उ' का दीर्घ हो जाता है । जैसे—नि + गुह + अन = निगूहनं ।

४. अनघणस्वापरोहिळो ५.१२७—'अन' तथा 'घण' प्रत्ययों के आने से, 'आ' तथा 'परि' पूर्वक 'दह' धातु के 'द' का 'ळ' होता है । जैसे—आळाहनं । परिळाहो ।

नि.

§ ४८. जा हा हि नि ५.५०—भाव के अर्थ में, 'जा' तथा 'हा' धातुओं से परे, 'नि' प्रत्यय होता है। जैसे—जानि=खराब होना। हानि=नष्ट होना।

इ, कि, ति

§ ४९. इ कि ति सरूपे ५.५२—धातु के अपने ही अर्थ में, उससे परे 'इ', 'कि' तथा 'ति' प्रत्यय होते हैं। जैसे—

वच=वचि। युध=युधि। पत्र=पत्रति।

(ख)

(तद्धित प्रकरण—दूसरा भाग)

§ २२. तस्त भावकम्प्रेतु त्त, तात्तन, प्य, ण्य, इय, णिय ४.५९—भाव के अर्थ में, नाम शब्दों से परे, बहुधा ये प्रत्यय आते हैं—(१) त्त, (२) ता, (३) त्तन, (४) प्य, (५) ण्य, (६) इय, (७) णिय। जैसे—

१. त्त

नीलस्त भावो—नीलत्तं=नीलत्व
चन्द्रस्त भावो—चन्द्रत्तं=चन्द्रत्व
सुरियस्त भावो—सुरियत्तं=सूर्यत्व
बुद्धस्त भावो—बुद्धत्तं=बुद्धत्व
बहुनो भावो—बहुत्तं=बहुत्व
अनेकस्त भावो—अनेकत्तं=अनेकत्व

२. ता

नीलस्त भावो—नीलता
मनुस्तस्त भावो—मनुस्तता
बुद्धस्त भावो—बुद्धता
चपलस्त भावो—चपलता
सहायस्त भावो—सहायता

३. त्तन

पुथुज्जनस्स भावो—पुथुज्जनत्तनं = पृथक् जनत्व
 वेदनाय भावो—वेदनत्तनं = वेदनात्व
 जायाय भावो—जायत्तनं = स्त्रीत्व
 जारस्स भावो—जारत्तनं = परस्त्री गमन करना

४. ण्य

अलसस्स भावो—अलस्सं^१ = अलस्य
 ब्रह्मनो भावो—ब्रह्मज्जं = ब्राह्मणत्व
 चपलस्स भावो—चापल्यं
 निपुणस्स भावो—नेपुज्जं = नैपुण्य
 पिसुनस्स भावो—पेसुज्जं = चुगलखोरी
 राजस्स भावो—रज्जं = राज्य
 अधिपतिनो भावो—आधिपच्चं^१ = आधिपत्य
 दायदस्स भावो—दायज्जं = दायद्य
 सखिनो भावो—सख्यं = मित्रता
 वणिजस्स भावो—वाणिज्जं = वाणिज्य

५. लोपो वण्णिवण्णानं ४.१३१—'यकार' से आरम्भ होने वाला प्रत्यय परे हो, तो शब्द के अन्त्य 'अ' तथा 'इ' का लोप होता है। जैसे—अलस + ण्य = अलस् + य अलस्यं। अधिपति + ण्य = आधिपत् + य = आधिपत्यं = (तवग्गवरणानं ये चवग्गवयज्जा १.४८) आधिपच्चं।

सरानमादिस्सायुवण्णस्सा ए ओ णानुबन्धे ४.१२४—'ण' अनुबन्ध वाला प्रत्यय आने से, शब्द के आदि में स्थित 'अ', 'इ', तथा 'उ' का यथाक्रम 'आ', 'ए', तथा 'ओ' हो जाता है। जैसे—अलस + ण्य = अलस्सं। चपल + ण्य = चापल्लं। अधिपति + ण्य = आधिपत्यं = आधिपच्चं।

५. शोऽय

सुचिनो भावो—सोचेय्यं = पवित्रता

अधिपतिनो भावो—आधिपतेय्यं = आधिपत्य

६. ण

गुरूनो भावो—गारवं = गौरव

पटुनो भावो—पाटवं = पटुता

उजुनो भावो—अज्जवं = ऋजुता

मुदुनो भावो—मद्वं = मृदुता

७. इय

अधिपतिनो भावो—अधिपतियं = आधिपत्य

पण्डितस्त भावो—पण्डितियं = पाण्डित्य

बहुस्तुतस्त भावो—बहुस्तुतियं = बहुश्रुतता

नग्गस्त भावो—नग्गियं = नग्नता

सूरस्त भावो—सुरियं = सूरता

८. णिय

अलसस्त भावो—आलसियं = आलस्य

कलुसस्त भावो—कालुसियं = कालुष्य

मन्दस्त भावो—मन्दियं = मन्दता

दक्षस्त भावो—इक्षियं = दक्षता

पुरोहितस्त भावो—पोरोहितियं = पौरोहित्य

§ २३. लोपो ४.१२३—कभी कभी, प्रत्ययों का लोप भी देखा जाता है।

जैसे—बुद्धे रतनं पणीतं = बुद्धे रतनत्तं पणीतं। चक्खुं सुञ्जं अत्तेन वा अत्तनियेन

वा = चक्खुं अत्तत्तेन वा अत्तनियत्तेन वा सुञ्जं।

व्य

§ २४. व्य वद्ध दा सा वा ४.६०—भाव के अर्थ में, 'वद्ध' और 'दास' शब्दों से परे, विकल्प से 'व्य' प्रत्यय होता है। जैसे—वद्धव्यं—वद्धता—वँधा हुआ होना। दासव्यं—दासता।

नण्

§ २५. नण् यु वा वो च वस्स ४.६१—भाव के अर्थ में, 'युव' शब्द से परे, विकल्प से 'नण्' प्रत्यय होता है। 'नण्' प्रत्यय लगने से, 'युव' शब्द के 'व' का 'व' हो जाता है। जैसे—योव्वनं—युवत्तं, युवता—जवानी।

इम

§ २६. अण्वा दि त्वि मो ४.६२—भाव के अर्थ में, 'अणु' आदि शब्दों से परे, विकल्प से 'इम' प्रत्यय होता है। जैसे—अणिमा—अणुत्व। लघिमा—लघुत्व। महिमा^१—महत्त्व। कसिमा^१—कृशता। विकल्प से—अणुत्तं, अणुता, लघुत्तं, लघुता इत्यादि भी।

निपात—को स ज्जा ज्ज व पा रि स ज्ज सु ह ज्ज म द्द वा रि स्सा स भा ज्ज्ज्जे थ्ये थ्य वा हु स च्चा ४.१२७—ये शब्द निपात हैं। जैसे—कुसीतस्स भावो कोसज्जं। उज्जुनो भावो—अज्जवं। परिसासु साधु—पारिसज्जो। सुहदयो व—सुहज्जोः सुहज्जस्स भावो—सोहज्जं। मुदुनो भावो—मद्दवं। इसिनो इदं, भावो वा—आरिस्सं। उसभस्स इदं, भावो वा—आसभं। आजानीयस्स भावो, सो एव वा—आजज्जं। थेनस्स भावो, कम्मं वा—थेय्यं। बहुस्सुतस्स भावो—बाहुसच्चं।

६. किस महत्तमिमे कस् महा ४.१३३—'इम' प्रत्यय आने से, 'किस' तथा 'महन्त' शब्दों का, यथाक्रम 'कस्' तथा 'मह' आदेश हो जाता है। जैसे—किस + इम = कसिमा। महन्त + इम = महिमा।

२३. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क) पञ्चाय पटिलाभो सुखो । पापानं अकरणं सुखं । एकस्स चरितं सेय्यो । अरियानं दस्सनं साधु होति । तेसं सन्निवासो सदा सुखो होति । अञ्जेसं वज्जं सुदस्सं होति, अत्तनो पन वज्जं दुद्दसं होति । यो पापानि कम्मनि करोति, सो वेदनं, फरसं, जानि, सरीरस्स भेदनं, गरुक्कं आवाधं, चित्त-वखेपं वा पापुणिस्सति । रागं च दोसं च मोहं च पहाय, निव्वाणं एहिंसि (गमिस्ससि) । इन्द्रिय-गुत्ति, सन्तुट्ठि, पात्तिमोक्खे च संवरो, पटिसन्धार वुत्ति, भिक्खुना सम्पादेत्तव्वा । समथो, दमथो, विपस्सना, सतिया उपट्ठानं, पटिसम्भिदा, वेदानानं सञ्ज्ञानं च निरोधो, विमुत्ति चाति भावेत्तव्वा ।

२. ऊपर काले अक्षरों में छपे शब्दों की व्युत्पत्ति बताइए ।

३. निम्नलिखित शब्दों की व्युत्पत्ति बताइए—

(क) हासो, पीति, चित्ति, तुट्ठि, आनन्दो पमुदा, आमोदा, सन्तोसो, नन्दि पामोज्जं पमोदो ति (सन्तोस-परियाया) ।

(ख) तण्हा, तसिना, एजा, जालिनी, विसत्तिका, छन्दो, जटा, निकन्त्या, सिव्वनी, भवनेत्ति, अभिज्झा, वनयो, वानं, लोभो रागो, मनोरथो, इच्छा, अभिलाभो, काम, आकंखा, रुचि (इच्छा-परियाया) ।

(ग) धी, पञ्जा, वुट्ठि, मेघा, मति, मुत्ति, पञ्जाणं, माणं, विज्जा, योनि, पटिभानं, अमोहो, विपस्सना, सम्मादिट्ठि (पञ्जा-परियाया) । बाहुसच्चं, गारवो, कतञ्चुता, सोवचस्सता ति (मङ्गलानि) । पण्डिच्चं, कोसल्लं, यथाभुच्चं, अज्जवं (भिक्खुना सम्पादेत्तव्वाणि) । साठेय्यं, थेय्यं । पंसुकुलिकत्तं, अब्भोकासिकता । काय-मुट्ठता, काय-कम्म-ञ्चता, काय-यागुञ्चता ।

४. पालि में अनुवाद कीजिए—

(क) बुद्धों की पूजा । देवताओं की अनुस्मृति । पापों का न करना । कुशल

धर्मों का जमा करना । सज्जनों का दर्शन करना । गुरुजनों का सम्मान करना । दुर्जनों का त्याग करना । त्रिपिटक का स्वाध्याय करना । खाने की इच्छा । इन्द्रियों का दमन करना । चित्त का निरोध करना । लड़कों को जमा करना । लकड़ियों को एकत्रित करना । सेना संग्रह करना । भिक्षुओं को प्रणाम करना । भूखों को खिलाना । ब्राह्मणों का सत्कार करना । तृष्णा को छोड़ना । घर छोड़ कर बेघर हो जाना ।

(ख) प्रातःकाल जागना अच्छा है । हाथ मुँह धोना अच्छा है । बुद्ध के अनुस्मरण से चित्त को शुद्ध करना कल्याणकर है । किसी कर्म-स्थान को लेकर ध्यान करना उचित है । मैत्री भावना से सब दिसाओं को व्याप्त करना ब्रह्मविहार है । कुशल धर्मों को बढ़ाना, अकुशल धर्मों को घटाना जरूरी है ।



चौथा काण्ड

पाँचवाँ पाठ

क्रिया-प्रकरण

(सातवाँ भाग—प्रेरणार्थक)

प्रेरणार्थक क्रिया

§ २२. प यो ज क व्या पा रे णा पि च ५.१६—प्रेरणा करने के अर्थ में, धातु से परे, (णि) 'इ', तथा (णापि) 'आपि' प्रत्यय आते हैं। प्रत्यय लगने से, धातु के अन्त्य तथा उपान्त ह्रस्व स्वर की प्रायः वृद्धि हो जाती है। 'अ' की वृद्धि 'आ', 'इ' तथा 'ई' की वृद्धि 'ए', और 'उ' तथा 'ऊ' की वृद्धि 'ओ' है। प्रत्यय लगे हुए धातु के रूप 'चुरादि गण' के समान चलते हैं (देखिए—पृ० १२४-१२५)। जैसे—

धातु	प्रेरणार्थक धातु	रूप
भ्वादि गण—अच्च (=पूजा करना)	अच्चि, अच्चापि (=पूजा कराना)	अच्चेति, अच्चयति अच्चापेति, अच्चापयति
अट (=घूमना)	आटि, आटापि (=घुमवाना)	आटेति, आटयति आटापेति, आटापयति
अद (=खाना)	आदि, आदापि (=खिलाना)	आदेति, आदयति आदापेति, आदापयति
इक्ख (=देखना)	इक्खि, इक्खापि (=दिलाना)	इक्खेति, इक्खयति इक्खापेति, इक्खापयति
कन्द (=रोना)	कन्दि, कन्दापि (=रुलाना)	कन्देति, कन्दयति कन्दापेति, कन्दापयति

धातु	प्रेरणार्थक	धातु रूप
कम्प (=काँपना)	कम्पि, कम्पापि (=काँपाना)	कम्पेति, कम्पयति कम्पापेति, कम्पापयति
चञ्ज (=छोड़ना)	चाजि, चाजापि (=छुड़ाना)	चाजेति, चाजयति चाजापेति, चाजापयति
नी (=ले जाना)	नायि, (=लिवा जाना)	नाययति ^१
पच (=पकाना)	पाचि, पाचापि (=पकवाना)	पाचेति, पाचयति ^१ पाचापेति, पाचापयति
भू (=होना)	भावि, भापि	भावयति ^१ भावेति,
हन (मारना)	घाति (=मरवा देना)	घातेति, घातयति ^१ इत्यादि

१. आ या वा णानुबन्धे ५.६०—'ण' अनुबन्ध वाले स्वरादि प्रत्ययों के आने से, धातु के अन्त्य 'ए' तथा 'ओ' का क्रमशः 'आय' तथा 'आव' हो जाता है। जैसे—

नि + णि + ति = (युवणानमे ओप्पच्चये ५.८२) ने + इ + ति = (प्रस्तुत सूत्र से) नायि + ति = (कत्तरि लो ५.१८) = नायि + अ + ति = नाये + अ + ति = (एओनमयवा सरे ५.८६) नाययति ।

भू + णि + ति = (युवणानमे ओप्पच्चये ५.८२) भो + इ + ति = भावयति

२. अस्सा णानुबन्धे ५.८४—'ण' अनुबन्ध वाले किसी प्रत्यय के आने से, धातु के उपान्त 'अ' का 'आ' हो जाता है। जैसे—पच + णि + ति = पाच + इ + ति = पाचि + ति = (युवणानमेओ प्पच्चये ५.८२) पाचेति ।

पाचे + ति = (कत्तरि लो ५.१८) पाचे + अ + ति = (एओनमयवा सरे ५.८६) पाचयति ।

पच + णापि + ति = पाचापेति (पाचापयति) पच + णक = पाचको ।

णी णाप्यापी हि वा ५.२०—णि, णापि, तथा आपि प्रत्ययान्त धातु से

	धातु	प्रेरणार्थक धातु	रूप
२. रुधादि गण—कत (=काटना)	काति, कातापि (=कटवाना)	कातेति, कातयति कातापेति, कातापयति	छेदेति, छेदयति छेदापेति, छेदापयति
छिद (=छेदना)	छेदि, छेदापि (=छिदवाना)	भोजि, भोजापि (=खिलाना)	भोजेति, भोजयति भोजापेति, भोजापयति
भुज (=खाना)	कोधि, कोषापि (=क्रोध करवाना)	कोचेति, कोषयति कोषापेति, कोषापयति	देवेति, देवयति देवापेति, देवापयति
दिव (=चमकना)	द्वसि, द्वसापि (=द्वेष करना)	द्वसेति, द्वसयति ^१	खेपेति, खेपयति खेपापेति, खेपापयति
४. तुदादि गण—खेप (=फेकना)	नोदि, नोदापि (=प्रेरित कराना)	नोदेति, नोदयति नोदापेति, नोदापयति	लेखेति, लेखयति लेखापेति, लेखापयति
खेप (=फेकना)	लेखि, लेखापि (=लिखाना)	आसेति, आसयति आसापेति, आसापयति	
५. ज्यादि गण—अस (=खाना)	आसि, आसापि (=खिलाना)		

परे, 'ल' प्रत्यय लगा सकते हैं, और नहीं भी। जैसे—पाचि + अ + ति = पाचयति।
पाचि + ति = पाचति। पाचापयति। पाचापेति।

३. ह न स्स धातो णा नु व न्वे ५.६६—'ण' अनुबन्ध वाला प्रत्यय आने से, 'हन' धातु का 'घात' आदेश होता है। जैसे—हन + णि + ति = घातेति, घातयति।

४. णि म्हे दी घो दु स स्स ५.१०४—'णि' प्रत्यय आने से, 'दुस' धातु के उकार का दीर्घ हो जाता है। जैसे—दुस + णि + ति = दूसेति।

इसी तरह, दूसरे गणों के धातु से भी प्रेरणार्थक धातु बनाए जा सकते हैं। प्रेरणार्थक धातु के रूप, चुरादि गण के धातु के समान, सभी काल में होते हैं। प्रेरणार्थक धातु के साथ 'अं', 'ना', 'णो' आदि किसी गण का कोई विकरण नहीं लगता है।

§ २३. णिणापीनं तेसु ५.१६०—प्रेरणार्थक धातु से परे, फिर भी प्रेरणा के अर्थ में कोई प्रत्यय नहीं होते हैं। जैसे—पाचेति ।

ख

(विभक्ति प्रकरण—तीसरा भाग)

§ ४०. ग ति बो धा हा र स हृत्या क म्म क भज्जा दी नं प यो ज्जे २.४—यदि गमनार्थ, बोधार्थ, आहारार्थ, शब्दार्थ, अकर्मक, तथा भज्ज आदि धातु प्रेरणार्थक हों, तो कर्ता में 'द्वितीया विभक्ति' होती है। जैसे—

गमनार्थ—गमयति माणवकं गामं—विद्यार्थी को गाँव ले जाता है। यहाँ, जाने वाला 'माणवक' है, जिसमें 'द्वितीया विभक्ति' लगी है।

बोधार्थ—बोधयति माणवकं धम्मं—विद्यार्थी को धम्म समझाता है। वेदयति माणवकं धम्मं ।

आहारार्थ—भोजयति माणवकं ओदनं, आसयति माणवकं ओदनं—विद्यार्थी को भात खिलाता है।

शब्दार्थ—अज्झापयति माणवकं वेदं—विद्यार्थी को वेद पढ़ाता है।

अकर्मक—आसयति देवदत्तं—देवदत्त को बैठाता है। साययति देवदत्तं—देवदत्त को सुलाता है।

भज्ज (=भूना) आदि—अज्जं भज्जापेति, अज्जं कोट्टापेति, अज्जं सन्थरापेति—दूसरे से भुनवाता है, दूसरे से कुटवाता है, दूसरे से फैलवाता है।

इन स्थानों को छोड़ दूसरी जगह, कर्ता में 'द्वितीया' न होकर 'तृतीया विभक्ति' होती है। जैसे—पाचयति ओदनं देवदत्तेन यज्जदत्तो—यज्जदत्त देवदत्त से भात पकवाता है।

§ ४१. ह रा दी नं वा २.५—प्रेरणार्थक 'हर' (=ले जाना) आदि धातुओं के साथ, कर्ता में 'द्वितीया विभक्ति' होती है, और 'तृतीया' भी। जैसे—हारेति भारं

देवदत्तं देवदत्तेन वा = देवदत्त से भार लिवा जाता है । वस्सयते जनं जनेन वा = आदमी से दिखवाता है । अभिवादयते गुरुं देवदत्तं देवदत्तेन वा = देवदत्त से गुरु को प्रणाम करवाता है ।

§ ४२. न खा दा दी नं २.६—प्रेरणार्थक खाद (= खाना) आदि धातुओं के साथ, कर्ता में 'द्वितीया विभक्ति' नहीं होती है; केवल 'तृतीया विभक्ति' ही होती है । जैसे—

खादयति देवदत्तेनः आदयति देवदत्तेनः सहापयति देवदत्तेन इत्यादि ।

§ ४३. व हि स्सा नि य न्तु के २.७—नियन्ता (= हाँकने वाला) न हो, तो प्रेरणार्थक 'वह' धातु के साथ, कर्ता में 'तृतीया विभक्ति' होती है, 'द्वितीया' नहीं । जैसे—वाहयति भारं देवदत्तेन = देवदत्त से भार ढुलवाता है ।

नियन्ता रहने से, 'द्वितीया विभक्ति' होती है । जैसे—वाहयति भारं बलिवद्दे = बैलों पर भार ढुलवाता है ।

§ ४४. भ क्ख स्सा हिं सा यं २.८—यदि हिंसा नहीं होती हो, तो प्रेरणार्थक 'भक्ख' धातु के साथ, कर्ता में 'तृतीया विभक्ति' होती है, द्वितीया नहीं । जैसे—भक्खयति मोदके देवदत्तेन = देवदत्त को लड्डू खिलाता है ।

हिंसा का भाव आता हो, तो 'द्वितीया विभक्ति' हो सकती है । जैसे—भक्खयति बलिवद्दे सस्सं = बैलों को घान खिला देता है ।

२४. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

भिक्षु पाणं न हनति, न अञ्जेहि घातापेति । अदिन्नं न आदियति, न अञ्जेहि आदापेति । न चोरेति, न अञ्जेहि चोरापेति । पञ्चो सयं पि पुच्छितव्वो, अञ्जेहि पि पुच्छापेतव्वो । विहारं सयं पि गन्तव्वं, अञ्जे पि गच्छापेतव्वं । गत्वा च, गच्छापेत्वा च, धम्मे सावीयमाने धम्मो सयं पि सुणितव्वो अञ्जे पि सावापेतव्वो । एवं सयं पि कथिरमाने, अञ्जे च कारीयमाने (कारापेत्ते) कुशला धम्मा वड्ढन्ति । माता सुसुं पायेति, पुष्पं गाहापेति, तिणं जहापेति, मधुरं वाचं सावेति, अञ्जेहि पि सावापेति । एवमेव भगवा पि वेनेय्ये सावके धम्मामतं पायेति, सीलपुष्पं गण्हापेति, अकुसले धम्मे मुञ्चापेति, सव्वत्थ कल्याणे धम्मे सामं सावयति, पण्डितेहि पि थेरेहि सावापेति च ।

२. पालि में अनुवाद कीजिए—

भगवान् धम्मं सुनाते हैं । भिक्षु लोग विहार बनवाते हैं, बुद्ध-वचन (पालि = धम्म-पलियायो, पेय्यालं) सुनाते हैं, लोक-हित काम करते भी हैं, दूसरों से कराते भी हैं । भिक्षु लोग किसी की निन्दा न स्वयं करते हैं, न दूसरों से कराते हैं । लड़के लोग पढ़ते भी हैं, दूसरों को पढ़ाते भी हैं; अपने साथियों से दूसरों को पढ़वाते भी हैं । ब्राह्मण लोग धम्म को जानते भी हैं, दूसरों को सिखलाते भी हैं । वेदों को पढ़ना भी चाहिए, दूसरों को पढ़ाना भी चाहिए, तीनों वेदों के पारङ्गतों से पढ़वाना भी चाहिए । इसी तरह, बुद्धों के उपदिष्ट धम्म भी स्वयं साक्षात्कार करना भी (सच्छि+कर) चाहिए, अपने साथियों को साक्षात्कार करवाना भी चाहिए, तीनों विद्या जानने वाले महात्माओं से धर्म्मोपदेश करवाना भी चाहिए ।

३. निम्नलिखित वाक्यों को प्रेरणार्थक बनाइए—

बुद्धो धम्मं देसेति । थेरा भानं भावेन्ति । देवो वस्सति । राजा रज्जं कारेति । बुद्धं सरणं गच्छति । बुद्धं नमस्सति । दारका विहारं गच्छन्ति । धम्मं सुणन्ति । थेरे नमस्सन्ति । भिक्षू वनं गमिस्सन्ति, समण-धम्मं कत्वा, पच्छा आगमिस्सन्ति । बुद्धं वन्दाहि, धम्मं सरणं गच्छाहि, सङ्घाय दानानि देहि । भानानि चे भावेय्य, पञ्चा उप्पज्जेय्य । बुद्धं सरणं चे अगमिस्सा, सीलं रक्खिस्सा । धम्मं सोतुं आगच्छन्तु । धम्मं सुत्वा, निव्याथ ।

चौथा काण्ड

छठा पाठ

अव्यय-प्रकरण

(तीसरा भाग—अव्यय)

तद्धित

(तीसरा भाग—तद्धित)

नाम्न तथा सर्वनाम शब्दों से परे, तद्धित के कुछ प्रत्यय आते हैं, जिनके लगने से वे शब्द अव्यय बन जाते हैं। वैसे प्रत्यय चाँदह हैं—(१) तो, (२) त्र, (३) त्य, (४) धि, (५) हिं, (६) हं, (७) दा, (८) या, (९) घा, (१०) ज्झं, (११) एषा, (१२) क्वत्तुं, (१३) त्तो, और (१४) ची।

१. तो

§ २७. तो पञ्चम्या ४.९५—पञ्चमी विभक्ति के अर्थ में, शब्द से परे बहुधा 'तो' प्रत्यय आता है। 'तो' प्रत्यय लगा हुआ शब्द अव्यय होता है। जैसे—गामस्मा गच्छति इति—गामतो गच्छति = गाँव से जाता है।

इ तो ते त्तो कु तो ४.९६—कि	चोरतो भायति = चोर से डरता है
त	कुतो आगच्छति = कहाँ से आता है ?
य	ततो आगच्छति = वहाँ से आता है
इम	यतो आगच्छति = जहाँ से आता है
एत	इतो आगच्छति = यहाँ से आता है
	अतो आगच्छति = यहाँ से आता है

अभ्यादी हि ४.९७—	अभि	अभितो=दोनों ओर
	परि	परितो=चारों ओर
	पच्छा	पच्छतो=पीछे से
	हेट्ठा	हेट्ठतो=नीचे से

आद्यादी हि ४.९८—‘आदि’ प्रभृति शब्दों से परे ‘तो’ प्रत्यय होता है ।
जैसे—

आदि	आदितो=शुरू से
मज्झ	मज्झतो=बीच से
अन्त	अन्ततो=अन्त से
पिट्ठि	पिट्ठितो=पीछे से
पस्स	पस्सतो=वगल से
मुख	मुखतो=सामने से

२. ३. त्र. त्थ

§ २८. सच्चादितो सत्तम्या त्र तथा ४.९९—‘सत्तमी विभक्ति’ के स्थान में, ‘सच्च’ आदि शब्दों से परे, ‘त्र’ तथा ‘त्थ’ प्रत्यय आते हैं। जैसे—

सच्चास्मि	सच्चत्र, सच्चत्थ=सभी में, सभी जगह
यास्मि	यत्र, यत्थ=जिसमें, जहाँ
तास्मि	तत्र, तत्थ=उसमें, वहाँ
पर	परत्र, परत्थ=दूसरी जगह

कत्थेत्थ कुत्रा त्र क्वे हि घ ४.१००—ये शब्द निपात हैं। जैसे—

कस्मि	कत्थ, कुत्र, क्व=कहाँ
एतस्मि	अत्र, एत्थ=यहाँ
अस्मि	इध, इह=यहाँ

४. धि

§ २९. धि सच्चा वा ४.१०१—‘सत्तमी विभक्ति’ के स्थान में, ‘सच्च’ शब्द

से परे, 'धि' प्रत्यय आता है, और 'त्र' तथा 'त्य' भी। जैसे—
सर्वस्मि—सर्वधि, सर्वत्य, सर्वत्र

५. हिं

§ ३०. या हिं ४.१०२—'सत्तमी विभक्ति' के स्थान में, 'य' शब्द से परे 'हिं' प्रत्यय आता है, और 'त्र' भी। जैसे—
यस्मि—यहिं, यत्र=जहां

६. हं

§ ३१. ता हं च ४.१०३—'सत्तमी विभक्ति' के स्थान में, 'त' शब्द से परे, 'हं' प्रत्यय आता है, और 'हिं' तथा 'त्र' भी। जैसे—
तस्मि—तहं, तहिं, तत्र=तहां

§ ३२. कुहिं क हं ४.१०४—'सत्तमी विभक्ति' के स्थान में, 'किं' शब्द से ये अव्यय बनते हैं। जैसे—
कस्मि—कुहिं, कुहं=कहाँ ?
कथं=कैसे ?
कुहिंचन, कुहिञ्चि=कहीं भी

७. दा

§ ३३. सर्व्वेकञ्ज य ते हि काले दा ४.१०५—'सर्व्व', 'एक', 'अञ्ज', 'य', 'त'—इन शब्दों से परे, 'काल' के अर्थ में 'दा' प्रत्यय आता है। जैसे—

सर्व्वस्मि काले	सर्व्वदा=सभी समय
एकस्मि काले	एकदा=एक समय
अञ्जस्मि काले	अञ्जदा=दूसरे समय
यस्मि काले	यदा=जिस समय
तस्मि काले	तदा=उस समय

क दा कु दा स दा धु ने दा नि ४.१०६—ये शब्द निपात हैं। जैसे—

कस्मि काले	कदा, कुदा = किस समय ?
सव्वस्मि काले	सदा = सभी समय
इमस्मि काले	अधुना, इदानि = इस समय

अज्ज सज्जु - अ परज्जु - ए तर हि - क र हा ४.१०७—ये शब्द भी निपात हैं। जैसे—

अस्मि अहनि	अज्ज = आज
समाने अहनि	सज्जु = उसी दिन
अपरस्मि अहनि	अपरज्जु = दूसरे दिन
इमस्मि काले	ए तर हि = इस समय
कस्मि काले	करह = किस समय ?

८. था

§ ३४. सव्वा दी हि प कारे था ४.१०८—'इस प्रकार का' इस अर्थ में, 'सव्व' आदि शब्दों से परे 'था' प्रत्यय होता है। जैसे—

सव्वेन पकारेन	सव्वथा = सभी प्रकार से
येन पकारेन	यथा = जिस प्रकार से
तेन पकारेन	तथा = उस प्रकार से

कथ मि त्थं ४.१०९—ये शब्द निपात हैं। जैसे—

केन पकारेन	कथं = कैसे ?
इमिना पकारेन	इत्थं = इस प्रकार

९. धा

§ ३५. धा संख्या हि ४. ११०—'इस प्रकार का' इस अर्थ में, संख्या वाचक शब्दों से परे 'धा' प्रत्यय होता है। जैसे—

द्वीहि पकारेहि करोति—द्विधा करोति = दो प्रकार से करता है, या दो टुकड़े करता है। इसी तरह, 'एकधा', बहुधा, पञ्चधा इत्यादि।

१०. एधा

§ ३६. द्विती हे धा ४.११२—ऊपर के ही अर्थ में, 'द्वि' तथा 'ति' शब्दों से परे, विकल्प से 'एधा' प्रत्यय होता है। जैसे—

द्वेधा, तेधा। विकल्प से द्विधा, तिधा भी।

११. ज्भं

§ ३७. वे का ज्भं ४.१११—ऊपरके के ही अर्थ में, 'एक' शब्द से परे, विकल्प से 'ज्भं' प्रत्यय होता है। जैसे—

एकज्भं करोति, एकधा करोति=एक प्रकार से करता है।

१२. क्वत्तुं

§ ३८. वार संख्याय क्वत्तुं ४.११४—'इतनी वार' इस अर्थ में, संख्या-वाचक शब्दों से परे, 'क्वत्तुं' प्रत्यय होता है। जैसे—

द्वे वारे भुञ्जति—द्विक्वत्तुं भुञ्जति=दो वार खाता है।

कति म्हा ४.११५—ऊपर के ही अर्थ में, 'कति' शब्द से परे 'क्वत्तुं' प्रत्यय होता है। जैसे—

कति वारे भुञ्जति—कतिक्वत्तुं भुञ्जति=कितनी वार खाता है ?

§ ३९. बहु म्हा धा च पच्चासत्ति यं ४.११६—यदि, वार जल्दी जल्दी हो, तो 'बहु' शब्द से परे 'धा' तथा 'क्वत्तुं' प्रत्यय होते हैं। जैसे—

दिवसस्स बहु वारे भुञ्जति—बहुधा, बहुक्वत्तुं वा भुञ्जति=दिन में वार वार खाता है।

यदि, वार जल्दी जल्दी न हो, तो भी 'क्वत्तुं' प्रत्यय हो सकता है; किन्तु, 'धा' प्रत्यय नहीं। जैसे—'मासस्स बहुक्वत्तुं भुञ्जति'—ऐसा तो हो सकता है, किन्तु 'मासस्स बहुधा भुञ्जति' ऐसा नहीं।

§ ३९. स किं वा ४.११७—'एक वार' इस अर्थ में, विकल्प से 'सकिं' होता है। जैसे—

एकं वारं भुञ्जति—सकिं भुञ्जति=एक वार खाता है। विकल्प से—
एकक्वत्तुं भुञ्जति।

१३. सो

§ ४०. सो वीच्छापकारे सु ४.११८—वीप्सा तथा प्रकार के अर्थ में, शब्द से परे बहुधा 'सो' प्रत्यय होता है। जैसे—

वीप्सा—खण्डसो = खण्ड खण्ड करके। एकेकसो = एक एक करके।

प्रकार—पुथुसो = विस्तार से। सब्बसो = सभी प्रकार।

१४. ची

§ ४१. अ भू त तब्भा वे क रा स भू योगे विकारा ची ४.११९—जो नहीं था, उसके होने के अर्थ में, 'कर', 'अस' तथा 'भू' धातुओं के योग में, विकार-वाचक शब्दों से परे 'ची' प्रत्यय होता है। जैसे—

अधवलं धवलं करोति इति—धवली करोति = जो उजला न था, उसे उजला करता है। धवली सिया = जो उजला न था, वह उजला होवे। धवली भवति = जो उजला न था, वह उजला होता है।

२५. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

“सर्वेण सर्वं, सर्वथा सर्वं, सङ्घारा अनिच्चा, दुक्खा, अनत्ता”ति सर्व्वत्य (सर्व्वधि) भावेतव्वं । कयं, कुहिं, कदा भावेतव्वं ति ? “सर्व्वे सङ्घारा सङ्घता, विपरिणाम-धम्मा, अविज्जा-मच्चया सम्भूता”ति एत्थ, परत्थ, सर्व्वत्य; एकदा पि, अञ्जदा पि, तदानि पि, इदानि पि, सर्व्वदा भावेतव्वं, मनसि-कातव्वं । ततो पट्ठाय । सर्व्वतो संवुतेन भवितव्वं । तिक्खत्तुं उदानं दानेसि । तिक्खत्तुं चतुक्खत्तुं विहारा निक्खमित्वा भावेतव्वानि भानानि भावितानि ।

२. पालि में अनुवाद कीजिए—

(क) बुद्ध को हमेशा, हर जगह, हर तरह से याद करो । एक, दो, तीन बार बुद्ध के शरण जाता हूँ । हर तरह से धर्म को पूरा करना चाहिए । देवता लोग जब बुद्ध के पास आते थे, उस समय बड़ा प्रकाश फैलता था ।

(ख) मेरे मकान के पास । वृक्ष के ऊपर । सूर्य के समान । नदी के दोनों तरफ़ । बालू के नीचे । दिन दोपहर को । रातों रात । लम्बे अरसे के बाद । निरन्तर अभ्यास के कारण । अक्सर पढ़ते रहने से । जैसे ही जैसे । शीघ्र शीघ्र चलने की अपेक्षा । पुण्य करते ही । धीरे धीरे विपाक सामने दिखाई देना । ध्यान करने के लिए, जङ्गल के भीतर पैठना ।

पाँचवाँ काण्ड

पहला पाठ

सन्धि-प्रकरण

१. स्वर सन्धि

§ १. स रो लोपो स रे १.२६—स्वर से परे यदि स्वर हो, तो कभी कभी पूर्व स्वर का लोप हो जाता है। जैसे—

तत्र + इमे = तत्रिमे (तत्र + इमे = तत्र् + इमे = तत्रिमे)

सद्धा + इन्द्रियं = सद्धिन्द्रियं

नो हि + एतं = नो हेतं

भिक्षुनी + श्रोवादो = भिक्षुनोवादो

समेतु + आयस्मा = समेतायस्मा

अभिभू + आयतनं = अभिभायतनं

पुत्ता मे + अत्थि = पुत्ता मत्थि

असन्तो + एत्थ = असन्तेत्थ

§ २. प रो क्व चि १.२७—स्वर से परे यदि स्वर हो, तो कभी कभी पर स्वर का लोप हो जाता है। जैसे—

सो + अपि = (सो + पि) सोपि

सा + एव = साव

यतो + उदकं = यतोदकं

ततो + एव = ततोव

चत्तारो + इमे = चत्तारो मे

ते + अहं = तेहं

वसलो + इति = वसलोति

आकासे + इव = आकासेव

§ ३. न द्वे वा १.२८—स्वर से परे यदि स्वर हो, तो कभी कभी दोनों में से किसी स्वर का लोप नहीं होता है। जैसे—

लता + इव = लता इव

विकल्प से—'लताव', तथा 'लतेव' भी।

§ ४. युवण्णा न मे ओ लुत्ता १.२९—लुप्त हुए स्वर से परे, 'इ' का कभी कभी 'ए', तथा 'उ' का 'ओ' हो जाता है। जैसे—

तस्स + इदं = तस्सु + इदं = तस्सु + एदं = तस्सेदं

वात + ईरितं = वात् + ईरितं = वातेरितं

वाम + उरु = वाम् + उरु = वामोरु

अति + इव = अत् + इव = अतेव

वि + उदकं = व् + उदकं = वोदकं

§ ५. य वा स रे १.३०—'इ' तथा 'उ' से परे यदि स्वर हो, तो कभी कभी उनका क्रमशः 'य' तथा 'व' हो जाता है। जैसे—

वि + आकतो = व्याकतो

इति + अस्स = इत्यस्स = इच्चस्स^१ = इच्चस्स^२

अधि + इणमुत्तो = अधिणमुत्तो = अभिणमुत्तो = अभिण-
मुत्तो = अज्भिणमुत्तो^३

सु + आगतं = त्वागतं

बहु + आवाधो = बह्वावाधो, बह्वावाधो

१. त व ग्ग व र णा नं ये च व ग्ग व य ङ्गा १.४८—तवर्ग, 'व', 'र' तथा 'ण' यदि 'य' से संयुक्त हों, तो उनका क्रमशः चवर्ग, 'व', 'य' तथा 'व' हो जाता है। जैसे—

इत्यस्स = इच्चस्स^१। तथ्यं = तच्छ्यं। यद्येवं = यज्येवं। अध्यत्तं = अभ्यत्तं।

§ ६. एओनं १.३१—'ए' तथा 'ओ' से परे यदि स्वर हो, तो कभी कभी उनका क्रमशः 'य' तथा 'व' हो जाता है। जैसे—

ते + अज्ज = त्यज्ज

सो + अहं = स्वाहं (सो + अहं = स्व + हं = व्यञ्जने दीघ-
रस्सा १.३३. स्वाहं)

मे + अयं = म्यायं

पव्वते + अहं = पव्वत्याहं

§ ७. गो स्ता वड् १.३२—'गो' शब्द से परे कोई स्वर आवे, तो 'गो' शब्द का 'गव' आदेश हो जाता है। जैसे

गो + अस्सं = गव + अस्सं = गव् + अस्सं = गुवास्सं

निम्नलिखित सन्धि निपात हैं—

तथा + एव = तथरिव

यथा + एव = यथरिव

अन्यं = थज्यं । दिव्यं = दिब्बं । पर्येसना = पर्येसना । पोक्खरण्यो = पोक्खरज्य

२. वग्गलसेहि. ते १.४६—वर्गीय वर्ण, 'ल' या 'स' के साथ यदि 'य' संयुक्त हो, तो उसका भी ('य'का भी) वही अक्षर हो जाता है। जैसे—

इज्यस्स = इच्चस्स । तछ्छं = तच्छं । यज्येवं = यज्जेवं । अम्भ्यत्तं = अम्भ-
भत्तं । थज्यं = थज्जं । दिब्बं = दिब्बं । पोक्खरज्यो = पोक्खरज्जो । फल्यते =
फल्लते । अस्यते = अस्सते ।

३. चतुत्थदुतियेस्वे सं ततियपठमा १.३५—यदि किसी वर्ण के दो चतुर्थ या द्वितीय वर्ण संयुक्त हों, तो उनमें पहले का क्रमशः (उसी वर्ण का) तृतीय या प्रथम वर्ण हो जाता है। जैसे—तच्छं = तच्छं । अम्भत्तं = अम्भत्तं ।
अम्भणमुत्तो = अम्भणमुत्तो ।

४. वे वा १.५१—यदि 'ह', 'व' से संयुक्त हो, तो विकल्प से उनका उलट-पलट (= विपर्यास) हो जाता है। जैसे वह्वावाधो = वव्हावाधो ।

[हस्स विपल्लासो १.५०—यदि 'ह', 'य' से संयुक्त हो, तो उनका विपर्यास हो जाता है। जैसे—गुह्हां = गुह्हं]

२. व्यञ्जन-सन्धि

★ § ८. व्यञ्जने दीघ रस्सा १.३३—वाद् में व्यञ्जन हो, तो प्रायः पूर्वस्थित ह्रस्व तथा दीर्घ स्वर का क्रमशः दीर्घ तथा ह्रस्व हो जाता है। जैसे—
तत्र + अयं = (परो वचि, १.२७ इस सूत्र से—तत्र + यं) = तत्रायं ।

मुनि + चरे = मुनी चरे

सम्मा + एव = सम्मदेव

माला + भारी = मालभारी

सम्म + धम्मो = सम्मा धम्मो

खन्ति + परमं = खन्ती परमं

जायति + सोको = जायती सोको

§ ९. सरम्हा द्वे १.३४—स्वर से परे व्यञ्जन हो, तो उसका (=व्यञ्जन का) कभी २ द्वित्व हो जाता है। जैसे—

प + गहो = पग्गहो

दु + कतं = दुक्कतं, दुक्कटं

★ § १०. चतुर्थ्यदुतियेस्वेसं ततियपठमा १.३५—यदि किसी वर्ग के दो चतुर्थ या द्वितीय वर्ण संयुक्त हों, तो उनके पहले का क्रमशः (उसी वर्ग का)

५. वनतरगाचागमा १.४५—स्वर से पूर्व, कहीं कहीं 'व', 'न', 'त', 'र', 'ग', 'म', 'य' तथा 'द' का आगम होता है। जैसे—

सम्मा + एव = सम्मा + देव = सम्मदेव । अत्त + अत्थं = अत्तदत्थं । यथा + इदं = यथयिदं । इध + आहु = इधमाहु । पुथ + एव = पुथगेव । नि + ओजं = निरोजं । तस्मा + इह = तस्मातिह । इतो + आयति = इतोनायति । ति + अङ्गिकं = तिवङ्गिकं ।

६. तथनरानं टठणला १.५२—'त', 'थ', 'न' तथा 'र' का विकल्प से क्रमशः 'ट', 'ठ', 'ण', तथा 'ल' हो जाता है। जैसे—

दुक्कतं = दुक्कटं । अत्थकथा = अट्ठकथा । गहनं = गहणं । परिघो = पलिघो । परायति = पलायति ।

तृतीय या प्रथम वर्ण हो जाता है । जैसे—

नि + घोसो = (सरम्हा द्वे १.३४ इस सूत्र से—निघोसो) = निघोसो

अ + खन्ति = अखन्ति = अखन्ति

सेत + छत्तं = सेतच्छत्तं = सेतच्छत्तं

नि + ठानं = निठानं = निठानं

यस + थ्येरो = यसथ्येरो = यसथ्येरो

अ + फुटं = अपफुटं = अपफुटं

§ ११. वि ति स्से वै वा १.३६—यदि 'इति' शब्द के बाद 'एव' शब्द हो, तो विकल्प से 'इति' का 'इत्व' आदेश हो जाता है । जैसे—

इति + एव = इत्वेव । विकल्प से—इच्चैव ।

§ १२. ए ओ न म व ण्णे १.३७—'ए' तथा 'ओ' के बाद यदि कोई भी वर्ण हो, तो उनका ('ए' तथा 'ओ' का) कहीं कहीं 'अ' हो जाता है । जैसे—

सो + सीलवा = स सीलवा

एसो + धम्मो = एस धम्मो

याचके + आगते = याचकमागते

अकरम्हसे + ते = अकरम्हस ते

एसो + अत्थो = एस अत्थो

अग्गो + अक्खायति = अग्गमक्खायति

३. निग्गहीत सन्धि

§ १३. निग्गहीतं १.३८—कहीं कहीं, निग्गहीत (=अनुस्वार) का आगम होता है । जैसे—

चक्खु + उदपादि = चक्खुं उदपादि

त + खणे = तंखणे

त + सभावो = तंसभावो

अव + सिरो = अवंसिरो

पुरिम + जाति = पुरिमं जाति

यावं + चिध = यावञ्चिध

§ १४. लोपो १.३६—कहीं कहीं, निगृहीत का लोप हो जाता है। जैसे—

सं + रत्तो = सं + रत्तो = (व्यञ्जने दीघरस्सा १.३३) सारत्तो

सं + रागो = सारागो

सं + रम्भो = सारम्भो

बुद्धानं + सासनं = बुद्धान सासनं

एवं + अहं = एवाहं

कथं + अहं = कथाहं

गन्तुं + कामो = गन्तुकामो

§ १५. परसंरस्स १.४०—निगृहीत से परे आने वाले स्वर का कहीं कहीं लोप हो जाता है। जैसे—

त्वं + असि = त्वंसि

बीजं + इव = बीजंव

इदं + अपि = इदमपि

अभिनन्दुं + इति = अभिनन्दुन्ति

किं + इति = किन्ति

किं + इदानि = किन्दानि

अलं + इदानि = अलन्दानि

विकल्प से—त्वमसि, बीजमिव इत्यादि भी।

§ १६. वग्नो वग्नन्तो १.४१—निगृहीत से परे कोई वर्गीय वर्ण रहे, तो विकल्प से उसका (= निगृहीत का) उसी वर्ग का अन्तिम वर्ण हो जाता है। जैसे—

तं + करोति = तङ्करोति

तं + चरति = तञ्चरति

तं + ठानं = तण्ठानं

तं + धनं = तन्धनं

तं + पाति = तम्पाति

§ १७. ये व हि सु ङ्गो १.४२—यदि वाद में 'य', 'एव' तथा 'हि' शब्द हों, तो पूर्वस्थित निग्गहीत का कहीं कहीं 'ङ्ग' हो जाता है । जैसे—

यं + यं एव = यञ्जदेव
 तं + एव = तञ्जेव
 तं + हि = तञ्जिह

§ १८. ये सं स्स १.४३—'य' परे हो, तो पूर्वस्थित 'सं' शब्द के निग्गहीत का 'व' हो जाता है । जैसे—

सं + यमो = सञ्जमो

§ १९. म य दा स रे १.४४—स्वर परे हो, तो कहीं कहीं पूर्वस्थित निग्गहीत का 'म', 'य' तथा 'द' आदेश हो जाता है । जैसे—

तं + अहं = तमहं
 तं + इदं = तयिदं
 तं + अलं = तदलं

द्रष्टव्य

§ २०. छा ळो १.४६—'छ' शब्द से परे आने वाले स्वर का कहीं कहीं 'ळ' हो जाता है । जैसे—

छ + अगं = छळगं
 छ + आयतनं = छळायतनं

§ २१ त द मि ना दी नि १.४७—निम्नलिखित सन्धि निपात हैं—

तं + इमिना = तदमिना
 सकिं + आगामी = सकदागामी
 एकं + इध + अहं = एकमिदाहं
 संविधाय + अवहारो = संविदावहारो
 वारिनो + वाहंको = वलाहको
 जीवन + मूतो = जीमूतो
 छव + सयनं = सुसानं

§ २२. संयोगादि लोपो १.५३—संयोग के आदिभूत अवयव का कहीं-कहीं लोप हो जाता है। जैसे—

पुष्पं + अस्ता = पुष्पंसा। 'अस्' जो आदिभूत अवयव है उसका लोप हो गया।
जायते + अग्नि = जायते गिनि ('अग्' जो आदिभूत अवयव है उसका लोप हो गया)।

२६. अभ्यास

१. सन्धि कोजिएः—

- (क) जिह्वा + इन्द्रियं । मन + इन्द्रियं । महा + ओघो । महा + इच्छो । साधु + आवुसो । मे + अत्थि । कतमो + अस्स । भिक्खुनी + ओवादो । देव + इन्दो ।
- (ख) चत्तारो + इमे । ते + इमे । ते + अपि । भगवा + इति । सो + अहं । छाया + इव । सचे + अज्ज । वेदना + इति । बुद्धो + असि ।
- (ग) तत्र + अयं । बुद्ध + अनुस्सति । देव + अनुभावो । सम्मन्ति + इघ । बहु + उपकारो । बहु + उपायासो । विमुत्ति + इति ।
- (घ) सचे + अहं । साधु + इति । किंसु + इघ । यो + अयं । तथा + उपमं । इतर + इतरो ।
- (ङ) उप + इतो । अव + इच्च । न + उपेति । मे + अयं । ते + अहं । सो + अयं । अनु + एति । को + अत्थो । सो + एव । खो + अहं । सु + आगतं । नतु + एव । वि + आकतो । इति + एव ।
- (च) गच्छामि + अहं । पञ्चहि + अङ्गेहि । वि + अकासि । परि + एसना । परि + ओसानं । दु + अङ्गिकं ।
- (छ) यथा + एव । तथा + एव । अपि + अज्ज । इघ + अहं । तं + एव । एवं + एतं । तं + आहु । धन + एव । तं + अवोच । न + इदं । मा + इदं । लघु + एस्सति । एक + एकस्स । कसा + इव । सम्मा + अञ्जा । सम्मा + अत्थो । सम्मा + अक्खातो । बहु + एव । पुन + एव । चिरं + आयति । अविज्जा + अहोसि । तस्मा + इहा । यस्मा + इह । अज्ज + अगो । राजा + इव । सन्धि + एव ।
- (ज) मुनि + चरे । सम्म + सम्वुद्धो । खन्ति + परमं । जायति + सोको । एसो + घम्मो । दीपं + करो । पभं + करो । सं + लापो । सं + पलापो । सं +

योगो । सं + योजनं । पुव्व + गमा । याव + चिथ । बुद्धानं + सासनं ।
 * देवानं + पियो । सं + रागो ।

(ॐ) एवं + अस्स । इध + अहं । अभि + अञ्जांसि । अति + अन्त । अपि + एव ।
 इति + एव । इति + आदयो । अनु + एति । नि + सरणं । उ + भवो ।
 नि + आसो ।

२. सन्धि विच्छेद कीजिए—

एक मिदाहं । अज्जतग्गे । पगेव । एकासने । कतिपाहच्चयेन । सो पज्ज दिस्सति ।
 पाणुपेतं । स्वागतं । त्याहं । देवानुभावो । सेय्यथापि । यथरिव । मनसाकासि ।
 पुव्वङ्गमा । सेय्यथीदं । इतरीतरेन । अज्जभोगाहित्वा । पच्चन्ते । अब्भोकासिको ।
 अप्पेव नाम । उप्पत्तो । कतावकासो । अन्वेति । जिह्विन्द्रियं । एतदहोसि ।
 सुनीचरे । गच्छामहं । अहञ्जेव । चाहं । चक्कं व । छायाव । भगवाति । इतिपि ।
 परियोसानं । सम्मावायामो । सम्मा-सम्बुद्धो । पञ्चिन्द्रियं । सकदागामी । बुद्धान
 सासनं । देविन्दो । भिक्खुनोवादो । चक्खुं उदपादि । सारत्तो ।

पाँचवाँ काण्ड

दूसरा पाठ

क्रिया-प्रकरण

(आठवाँ भाग—सनन्त)

‘ख’, ‘स’, ‘छ’ प्रत्यय

§ २४. तुंस्मा लोपो चिच्छायं ते ५.४—इच्छा करने के अर्थ में, ‘तुं’-प्रत्ययान्त धातु से परे, बहुधा ‘ख’, ‘स’ और ‘छ’ प्रत्यय होते हैं। इन प्रत्ययों के लगने से, ‘तुं’ प्रत्यय का लोप हो जाता है। जैसे—

‘ख’—भोक्तुं इच्छति इति—बुभुक्खति = भोजन करने की इच्छा करता है।

‘स’—जेतुं इच्छति इति—जिगिसति = जीतने की इच्छा करता है।

‘छ’—घसितुं इच्छति इति—जिघच्छति = खाने की इच्छा करता है।

नोट—यहाँ ‘बुभुक्ख’, ‘जिगिस’, ‘जिघच्छ’ आदि अपने में स्वतंत्र धातु हो गए; जिनके रूप सभी काल में होंगे। जैसे—बुभुक्खति, बुभुक्खिस्सति, बुभुक्खि, बुभुक्खेय्य, बुभुक्खतु इत्यादि।

§ २५. ख छ सान मे क स्स रो दि द्वे ५.६६—‘ख’, ‘छ’, ‘स’, प्रत्ययों के लगने से, धातु के प्रथम एक स्वर-युक्त अंश का द्वित्व हो जाता है। जैसे—
तिज + ख + ति = तितिज + ख + ति = तितिक्खति

§ २६. आ दि स्मा स रा ५.७१—यदि धातु के आदि में ही स्वर हो, तो उसको ले कर एक और स्वर तक द्वित्व होता है। जैसे—अस + स + ति = असिससति = खाने की इच्छा करता है।

§ २७. च तु त्य दु ति यानं त ति य प ठ मा ५.७८—द्वित्व होने पर, पूर्व-स्थित चतुर्थ वर्ण का तृतीय, और द्वितीय का प्रथम हो जाता है। जैसे—

भुज + ख + ति = भुभुज + ख + ति = बुभुज + ख + ति = बुभुक्वति । छिद + अ = चिच्छेद ।

§ २८. क व ग्ग हानं च व ग्ग जा ५.७६—द्वित्व होने पर, पूर्वस्थित कवर्ग का चवर्ग, और 'ह' का 'ज' हो जाता है । जैसे—कम + स + ति = ककम + स + ति = चकम + स + ति = चिकमिसति । हस + स + ति = हहस + स + ति = जहस + स + ति = जिहसिसति ।

§ २९. ख छ से स्व स्सि ५.७६—'ख', 'छ', 'स', प्रत्ययों के आने से, द्वित्व होने पर, पूर्वस्थित अकार का इकार हो जाता है । जैसे—चकम + स + ति = चिकमिसति । जहस + स + ति = जिहसिसति, पिपासति ।

§ ३०. जि व्यञ्जन स्स ५.१७०—व्यञ्जन से शुरु होने वाला कोई प्रत्यय आवे, तो धातु के अन्त्य स्वर का 'इ' आदेश हो जाता है । जैसे—चकम + स + ति = चिकमिसति । जहस + स + ति = जिहसिसति ।

§ ३१. र स्सो पु व्व स्स ५.७४—द्वित्व होने पर, पूर्व स्वर ह्रस्व हो जाता है । जैसे—गाह + स + ति = गागाह + स + ति = जागाह + स + ति = जगाह + स + ति = जिगाहिसति । पाल + स + ति = पापाल + स + ति = पपाल + स + ति = पिपालिसति । ददाति । जहाति ।

लोपो नादि व्यञ्जन स्स ५.७५—द्वित्व होने पर, आदि से भिन्न पूर्व व्यञ्जन का लोप होता है । जैसे—

अस + स + ति = असअस + स + ति = असिसिसति ।

§ ३२. य थि ट्ठं स्यादि नो ५.७३—नाम-धातु में, आदिभूत एक स्वर, या जैसी इच्छा, किसी दूसरे स्वर का द्वित्व कर देते हैं । जैसे—पुपुत्तीयिसति, पुतित्तीयिसति, या पुत्तीयियिसति ।

§ ३३. परस्स घं से ५.१०१—'हन' धातु के द्वित्व होने पर, दूसरे 'ह' का 'घं' आदेश होता है । जैसे—हन + स + ति = हहन + स + ति = जघं + स + ति = जिघंसति ।

§ ३४. जि हरानं गि ५.१०२—'जि' तथा 'हर' धातुओं के द्वित्व होने पर, दूसरे भाग का 'गि' हो जाता है । जैसे—जिगिसति । हर—जिगिसति ।

२७. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

जिघच्छा परमा रोगा ति । जिघच्छु हि दुभुक्खति, सीतं वा उण्हं वा तित्ति-
क्खित्तुं न सक्कोति, धम्मं सुस्सुत्तन्तो पि वीमंसित्तुं समत्थो नाम न होति । दानं
दिच्छन्तेन न किञ्चि जिगुच्छित्त्वं, न दिन्नं जिगंसित्त्वं । अमतं पिवासुना
(पिपासुना) धम्मो वीमंसित्त्वो । गिलाने (विमार) तिकिच्छापेत्वा सगं
जिगंसति ।

२. ऊपर के काले अक्षरों में छपे पदों की व्युत्पत्ति बताइए ।

३. पालि में अनुवाद कीजिए—

(क) खाने की इच्छा से खाता है, पीने की इच्छा से पीता है । मुझे न तो खाने
की इच्छा है न पीने की इच्छा है, केवलमात्र भगवान् के धर्म को सुन कर,
मनन करने की इच्छा है । क्या आप को कुछ कहने की इच्छा है ? नहीं,
अब तो केवल पढ़ने की इच्छा है ।

(ख) मरने की इच्छा । सोने की इच्छा । देखने की इच्छा करता है । जाने
की इच्छा करेगा । बैठने की इच्छा करता है । पढ़ने की इच्छा से ।
विचार करने की इच्छा । भूख प्यास के मारे भागने की इच्छा करता
है । भगवान् को देखने की इच्छा । धर्म सुनने की इच्छा से, विहार
जाने की इच्छा करता है । बुद्ध-धर्म जानने की इच्छा से त्रिपिटक पढ़ने
की इच्छा करता है । काम करने की इच्छा ।

४. निम्नलिखित वाक्य खण्डों के लिए एक पद लिखिए—

(क) खादितुं इच्छति । गन्तुं इच्छिस्सति । सोतुं इच्छामि । पातुं इच्छति । जेतुं
इच्छथ । अत्तुं इच्छेय्यामि । विहरितुं इच्छामि । पठितुं इच्छिसु ।

(ख) गन्तु-कामो । खादितु-कामा । सोतु-कामेन । अत्तु-कामताय । विहरितु-
कामा । जेतु-कामा । पातु-कामानं । सोतु-कामेहि । गन्तु-कामा । पठितु-
कामायो । पचितु-कामासु ।

पाँचवाँ काण्ड

तीसरा पाठ

क्रिया-प्रकरणा

(नवाँ भाग—नाम धातु)

नाम धातु

कभी कभी, हिन्दी में भी संज्ञा या विशेषण के रूप कुछ बदल कर, उनसे क्रिया का काम ले लेते हैं। जैसे—'फूल' से 'फुलाना', 'जूता' से 'जूतियाना', 'गरम' से 'गरमाना', 'चटचट' से 'चटचटाना' इत्यादि। इन्हें नामधातु कहते हैं।

पाली में भी, इसी तरह, संज्ञा (नाम) से क्रिया बनाने के लिए, उनके आगे—

विशेष अर्थ में—पाँच प्रत्यय आते हैं—(१) ईय, (२) आय, (३) अस्त, (४) इ, (५) आपि। इन प्रत्ययों से युक्त होने पर जो रूप बनता है, उसे 'नाम धातु' कहते हैं। स्वतंत्र धातु की तरह, 'नाम धातु' के भी रूप सभी काल में होते हैं।

१. ईय

§ ३५. ईयो क म्मा ५.५—इच्छा करने के अर्थ में, इच्छा के कर्म से परे, 'ईय' प्रत्यय होता है। जैसे—पुत्तं इच्छति—पुत्तीयति=पुत्र की इच्छा करता है। धनीयति=धन की इच्छा करता है।

[ए क त्य ता यं २.१२१—एकार्थी-भाव होने से (=अर्थात् नामधातु, समास और तद्धित में), प्रायः सभी विभक्तियों का लोप होता है। जैसे—पुत्तं + ईय + ति = पुत्त + ई + ति = पुत्तीयति। रज्जो पुरिसो—राजपुरिसो। वसिष्ठस्त

अपचं—वासिष्ठो]

[कहीं कहीं लोप नहीं होता है। जैसे—परन्तपो । भगन्दरो । परस्सपदं । अत्तनोपदं । गवम्पति । देवानम्पियतिस्सो । अन्तेवासी । जनेसुतो । ममत्तं । मामको]

§ ३६. उपमानाच्चा रे ५.६—‘इस जैसा आचरण करता है’, इस अर्थ में उपमान-भूत कर्म से उत्तर ‘ईय’ प्रत्यय होता है। जैसे—पुत्तमिवाचरति—पुत्तीयति सिस्सं=शिष्य को पुत्र की तरह मानता है।

§ ३७. आघारा ५.७—‘इसमें ऐसा आचरण करता है’, इस अर्थ में उपमान के उत्तर ‘ईय’ प्रत्यय होता है। जैसे—कुटियं इव आचरति—कुटीयति पासादे=प्रासाद में इस तरह रहता है, मानों कुटी में। पासादीयति कुटियं=कुटी में इस तरह रहता है, मानों प्रासाद में।

२. आय

§ ३८. कत्तुतायो ५.८—आचरण करने के अर्थ में, कर्ता के उपमान के उत्तर ‘आय’ प्रत्यय होता है। जैसे—पब्बतो इव आचरति—पब्बतायति=पर्वत के ऐसा आचरण करता है।

§ ३९. च्यत्थे ५.९—जो नहीं है उसके हो जाने के अर्थ में, कर्ता से परे, कभी कभी ‘आय’ प्रत्यय होता है। जैसे—अभुसो भुसो भवति इति—भुसायति=जो अधिक नहीं था, वह अधिक हो जाता है। अपटपटो पटपटो भवति इति—पटपटायति=जो पटपट नहीं करता था, वह पटपट करता है। अलोहितो लोहितो भवति इति—लोहितायति=जो लाल नहीं था, वह लाल होता है।

§ ४०. सद्दादीनि करोति ५.१०—शब्द आदि करने के अर्थ में, ‘आय’ प्रत्यय होता है। जैसे—सद्दायति=शब्द करता है। वेरायति=वैर करता है। कलहायति=कलह करता है।

३. अस्स

§ ४१. नमोत्वस्सो ५.११—‘नमो’ करने के अर्थ में, उसके उत्तर ‘अस्स’ प्रत्यय होता है। नमस्सति=नमस्कार करता है।

४. इ .

§ ४२. धात्वत्ये नामस्मा इ ५.१२—नाम-धातु में बहुधा 'इ' प्रत्यय है। जैसे—हृत्थिना अतिक्कमति इति—अतिहृत्थयति = हाथी से आक्रमण करता है। वीणाय उपगायति इति—उपवीणायति = वीणा के साथ गाता है। दल्हं करोति—दल्हयति विनयं। विमुद्धा होति रत्ति—विमुद्धयति = साफ होती है। कुसलं पुच्छति—कुसलयति = कुशल पूछता है।

५. आपि

§ ४३. सच्चादोहापि ५.१२—'सच्च' आदि [देखिए-तीसरा परिशिष्ट] शब्दों से परे, नाम-धातु में 'आपि' प्रत्यय होता है। जैसे—सच्चापेति, सच्चापयति = सत्य सिद्ध करता है। सुखापेति, सुखापयति = सुख करता है। इत्यादि

२८. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क) किं सहायति ? यं धूमायति त मेव सहायति । अथ खो सो पायासो उदके पक्खित्तो चिच्चिटायति, चिट्ठिचिटायति, सन्धूपायति सम्पधूपायति । को समत्थो पव्वतायित्वा समुदायित्तुं, समुदायित्वा पव्वतायित्तुं च ? महामोग्गल्लानो ति । सो अन्तेवासिनो पुत्तीयति । अन्तेवासिनो पि पुत्तायन्ते । भिक्खु चीवरीयति, पत्तीयति, न खो धनीयति । सो मं कुसलयित्वा अतिहत्थयित्तुं पक्कामि ।

(ख) पव्वतायति । समुदायति । धूमायति । दारका पुत्तायन्ति । पुत्तायन्ते दारके अज्झापको पुत्तीयति । पत्तीयन्तानं च वत्थीयन्तानं च भिक्खूनं । चीवरीयमानानं भिक्खुनीनं । पुथुज्जनो वेरायति, थेनेति, सहायति, कलहायति । चित्रयति ।

२. पालि में अनुवाद कीजिए—

अपने पुत्र की इच्छा करता है । अपने धर्म की इच्छा करता है । राजा के समान आचरण करता है । मूर्ख के समान आचरण करता है । पण्डित के समान आचरण करता है । दृढ़ करता है । वैर करता है । शब्द करता है । प्रणाम करता है । सुख, दुख, अनुभव करता है ।

३. (क) इच्छार्थक तथा नाम-धातु में क्या अन्तर है ? उदाहरण देकर समझाइए ।

(ख) प्रेरणार्थक तथा नाम-धातु में क्या भेद है ? उदाहरण देकर समझाइए ।

पाँचवाँ काण्ड

चौथा पाठ

स्त्री प्रत्यय

पुल्लिङ्ग से स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए, शब्द से परे सात प्रत्यय आते हैं—
(१) आ, (२) डी, (३) इनी, (४) नी, (५) आनी, (६) ऊ, और (७) ति

१. आ

इत्थि य मत्वा ३.२६—पुल्लिङ्ग से स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए, अकारान्त शब्द से परे 'आ' प्रत्यय आता है। जैसे—

पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
सुत्तिलो	सुत्तीला
धम्मदिन्नो	धम्मदिन्ना
धनिको	धनिका
सबलो	सबला
वालको	वालिका ^१
कारको	कारिका ^१

१. अघातुस्स के 'स्यादितो घे' स्ति ४.१४२—स्त्री प्रत्यय आने से, अघातु शब्द के 'क' के पहले 'अ' का बहुधा 'इ' होता है। जैसे—

वालक—वालिका । कारक—कारिका ।

२. डी

न दा दि तो डी ३.२७—'नद' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दों से परे 'डी' प्रत्यय आता है। 'डी' का केवल 'ई' रह जाता है। जैसे—

पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
नद	नदी
मिग (=मृग)	मिगी
कुमार	कुमारी
तरुण	तरुणी
वारुण	वारुणी
गोतम	गोतमी

न्त न्तूनं डि म्हि तो वा ३.३६—'डी' प्रत्यय लगने से, 'न्त' तथा 'न्तु' का विकल्प से 'त' आदेश हो जाता है (देखिए—पृ० ८२, १४२, १६०.)। जैसे—

पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
गच्छन्त	गच्छती, गच्छन्ती
गुणवन्तु	गुणवती, गुणवन्ती

भव तो भो तो ३.३७—'डी' प्रत्यय लगने से, 'भवन्त' शब्द का विकल्प से 'भोत' आदेश हो जाता है। जैसे—भोती, भवन्ती।

गो स्सा व ड् ३.३९—'गो' शब्द में 'डी' प्रत्यय लगने से 'गावी' रूप होता है।

पु थु स्स प थ व -पु थ वा ३.४०—'डी' प्रत्यय आने से, 'पुथु' (=पृथु) शब्द का 'पथव' तथा 'पुथव' आदेश हो जाता है। जैसे—पथवी, पुथवी, पठवी।

३. इनी

य क्खा दि तो इ नी च ३.२८—यक्ख (=यक्ष) आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दों से परे, 'इनी' प्रत्यय होता है, और 'डी' भी। जैसे—

पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
यकख	यकखनी, यकखी
नाग	नागिनी, नागी
सीह (=सिंह)	सीहिनी, सीही

आ रा निं का दो हि ३.२६—'आरामिक' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दों से परे 'इनी' प्रत्यय होता है। जैसे—

पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
आरामिको (=आराम में रहने वाला)	आरामिकिनी
राजा	राजिनी
मानुस	मानुसिनी

४. नी

इ-उवण्णेहि नी ३.३०—इकारान्त, ईकारान्त, ऊकारान्त, तथा उकारान्त शब्दों से परे, बहुधा 'नी' प्रत्यय आता है। जैसे—

पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
सदापयतपाणि	सदापयतपाणिनी
दण्डी	दण्डीनी
भिक्षु	भिक्षुनी
खत्तवन्धु	खत्तवन्धुनी
परचित्तविद्	परचित्तविद्नी

ः क्ति म्हा अञ्जत्ये ३.३१—अन्यार्थ (बहुव्रीहि) में, यदि 'क्ति' प्रत्ययान्त शब्द हो, तो उससे परे 'नी' प्रत्यय होता है। जैसे—

सा अहं अहिंसारतिनी—वह में अहिंसा में रति रखने वाली। ताहं उपद्वित्त-सतिनी—वह में उपस्थित स्मृति वाली।

घ र ण्या द यो ३.३२—'घरणी' (=गृहिणी) आदि शब्द निपात-सिद्ध हैं। जैसे—घरणी, पोक्खरणी (=पुष्करणी) इत्यादि।

५. आनी

मातुलादितो आनी भरियायं ३.३३—भार्या होने के अर्थ में 'मातुल' (=मामा) आदि शब्दों से परे, 'आनी' प्रत्यय होता है। जैसे—

पुल्लिङ्ग	उसकी भार्या
मातुल	मातुलानी
वरुण	वरुणानी
गहपति	गहपतानी

६. ऊ

उपमा - संहित - सहित - सञ्जत - सह - साथ - वाम - लक्षण - दितो उरुतो ऊ ३.३४—उपमान, तथा 'संहित' आदि शब्द यदि पूर्व में रहें, तो (स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए) 'उरु' शब्द से परे 'ऊ' प्रत्यय होता है। जैसे—
करभोरु (=करभ के समान जिसकी जाँघ हो), संहितोरु (=मिली हुई जंघों वाली), सहितोरु (=मिली हुई जंघों वाली), सञ्जतोरु (=संयत जंघों वाली), सहोरु (=साथ मिली हुई जंघों वाली), वामोरु (=सुन्दर जंघों वाली), लक्षणोरु (=लक्षित जंघों वाली)।

७. ति

युवा ति ३.३५—स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए, 'युव' (=युवक) शब्द से परे 'ति' प्रत्यय होता है। जैसे—युवति।

रिरिय

करा रिरियो ५.५१—स्त्रीलिङ्ग में, 'कर' धातु से परे, 'रिरिय' प्रत्यय होता है। जैसे—कर+रिरिय=(रानुवन्धेन्त सरादिस्स ४.१३२) क्+इरिय=किरिय।

इत्थियमत्वा ३.२६—इस सूत्र से—किरिया=क्रिया। पालि में 'क्रिया' शब्द निपात है।

२६. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

माता कञ्जायो नज्जं नहापेति । भिक्खुनियो भगवन्तं दस्सन-कामा होन्ति । माणविकायो भिक्खुनी नमस्सन्ति । भोति देवते ! चरहि को एतं जानाति ? गुणवतियो (गुणवन्तियो) इत्थियो महत्तियं परिसायं पि पसंसितायो होन्ति । कञ्जाय धम्मी कया सोतव्वा, मुसाय वाचाय वेरमणी हुत्वा पेमनीया सुभासिता वाचा भासितव्वा । सिया ब्राह्मणी, सिया खत्तिधा, सिया गहपतानी वेस्सा, सिया सुद्धा—सव्वा इत्थियो भानीहि भावनारामेहि जिगुच्छित्तव्वायो ।

२. निम्नलिखित शब्दों का स्त्रीलिङ्ग रूप लिखिए—

(क) गहपति, खत्तियो, ब्राह्मणो । देवो, इन्दो, राजा । पुत्तो, भाता, पिता, मातुलो । भिक्खु, सामणेरो, उपासको, आचरियो, उपज्जायो । यक्खो, नागो, कुमारो, हत्थि, अस्सो, हंसो ।

(ख) गच्छन्तो कुमारो । पस्सन्तो भातरो । खादन्तो दारका । पठन्तो माणवका । भायमाना भिक्खवो । पसन्ना देवा । निसिन्ना ब्राह्मणा ।

३. निम्नलिखित स्त्री-प्रत्ययों के उदाहरण लिखिए—

आ । आनी । इनी । ऊ । डी । नी ।

छठा काण्ड

पहला पाठ

(क)

तद्धित-प्रकरण

(चौथा भाग—शेष प्रत्यय)

प्रथमान्त शब्दों से परे आने वाले प्रत्यय

ण

§ ४२. सा स्त दे व ता पु ण्ण मा सी ४.१३—'वह इसकी देवता या पूर्णमासी है' इस अर्थ में, उस शब्द से परे 'ण' प्रत्यय होता है। 'ण' का 'अ' रह जाता है।
[देखिए—पृ० २५५ : पाद-टिप्पणी] जैसे—

देवता—सुगतो देवता अस्साति—सोगतो=बौद्ध

महिन्दो देवता अस्साति—माहिन्दो=महेन्द्र का उपासक

यमो देवता अस्साति—यामो=यम का उपासक

वरुणो देवता अस्साति=वारुणो=वरुण का उपासक

पूर्णासासी—

फुस्ती पुण्णमासी अस्स मासस्स सम्बन्धिनी इति—फुस्सो मासो=पूस महीना ।

माघी पुण्णमासी अस्स मासस्स सम्बन्धिनी इति—माघो मासो=माघ महीना ।

फग्गुनी पुण्णमासी अस्स मासस्स सम्बन्धिनी इति—फग्गुनो मासो=फागुन महीना ।

इसी तरह—चित्तो = चैत । बेसाखो = वैशाख । जेट्टमूलो = जेठ । आसा-
 ल्हो = असाढ़ । सावणो । पुट्टपादो = भादो । अस्तयुजो = आसिन । कत्तिको =
 कातिक । मागसिरो = मृगशिरा ।

§ ४३. त मि ध त्वि ४.१६—'वह इस जगह पाया जाता है' इस अर्थ में, उस
 शब्द से परे 'ण' प्रत्यय होता है । 'ण' का 'अ' रह जाता है । जैसे—

उदुम्बरा अस्मि देसे सन्ति इति—ओदुम्बरो = जिस जगह गूलर बहुत पाया
 जाय ।

खदरा अस्मि देसे सन्ति इति—खादरो = जिस जगह 'खैर' बहुत पाया जाय ।

वव्वजा अस्मि देसे सन्ति इति—वव्वजो = जिस जगह वव्वज नाम की घास
 पाई जाती है ।

णिक, क

§ ४४. त म स्त सि ष्पं सी लं प ष्यं प हर णं प यो ज नं ४.२७—'यह
 उसका शिल्प, शील, पण्य, अस्त्र या प्रयोजन है' इस अर्थ में, उस शब्द से परे
 'णिक' प्रत्यय होता है । 'णिक' का 'इक' रह जाता है । जैसे—

शिल्प—

वीणा-वादनं सिष्पमस्स—वेणिको = वीणा बजाना जिसका शिल्प है ।
 मोदङ्गिको = मृदङ्ग बजाना जिसका शिल्प है ।

शील—

पंसुकूलधारणं सीलमस्स—पंसुकूलिको = फेके चिथड़े ही धारण करने का
 जिसने शील ग्रहण किया है । तेचीवरिको = तीन चीवर ही धारण करने का
 जिसने शील ग्रहण किया है ।

पर्य—

गन्धो पण्यमस्स—गन्धिको = गन्ध बेचने वाला । तेलिको = तेल बेचने
 वाला ।

अस्त्र—

चापो पहरणमस्स—चापिको = तीर जिसका अस्त्र है । तोमरिको = भाला
 चलाने वाला । मुग्गरिको = मुग्गर चलाने वाला ।

प्रयोजन (=हेतु)

उपधिप्रयोजनमस्स—ओपधिकं=पुनर्जन्म का जो हेतु हो। सातिकं=स्वास्थ्य बनाए रखने का जो हेतु हो।

§ ४५. निन्दा, अज्जात; अप्प, पटि भाग, रस्स, दया, सज्जासु को ४.४०—'निन्दा' आदि अर्थों में, नाम से परे 'क' प्रत्यय होता है। जैसे—

निन्दा—मुण्डको, समणको। अज्जात—कस्सायं अस्सोति—अस्सको। अप्प—तेलकं, घतकं। प्रतिभाग—हत्थि विय—हत्थिको, अस्सको, वलि वट्ठको। ह्रस्व—मानुसको, रुक्खको, पिलव्वको। दया—पुत्तको, वच्छको। संज्ञा—मोरो विय—मोरको।

§ ४६. तमस्स परिमाणं णिको च ४.४१—'यह इसका परिमाण है' इस अर्थ में, शब्द से परे 'णिक' प्रत्यय होता है; और 'क' प्रत्यय भी। जैसे—

दोणो परिमाणमस्स—दोणिको वीहि=द्रोण भर धान। खारसतिको वीहि=सौ खार धान। आसीतिको वयो=अस्सी साल की आयु। पञ्चकं=पाँच का। छक्कं=छः का।

त्तक

§ ४७. यत्ते ते हि त्तको ४.४२—ऊपर के ही अर्थ में, 'य', 'त', तथा 'एत' शब्दों से परे, 'त्तक' प्रत्यय होता है। जैसे—

यं परिमाणमस्स—प्रत्तकं=जितना। तत्तकं=तितना। एत्तकं=इतना।

आवन्तु

§ ४८. सव्वा चावन्तु ४.४३—ऊपर के ही अर्थ में, 'सव्व', 'य', 'त', तथा 'एत' शब्दों से परे, 'आवन्तु' प्रत्यय होता है। जैसे—

१. एतस्सेट् त्तके ४.१४०—'त्तक' प्रत्यय आने से, 'एत' शब्द का 'ए' आदेश हो जाता है। जैसे—एतं परिमाणमस्स—एत+त्तक=ए+त्तक=एत्तकं।

सब्वं परिमाणमस्स—सव्वावन्तं=सभी । यावन्तं=जितना । तावन्तं=तितना । एत्तावन्तं=इतना ।

रति, रीव, रीवतक, रिक्तक

§ ४९. किं स्था र ति-री व-री व त क-रि त्त का ४.४४—ऊपर के ही अर्थ में, 'किं' शब्द से परे, 'रति', 'रीव', 'रीवतक', तथा 'रिक्तक' प्रत्यय होते हैं । जैसे—किं संख्यां परिमाणमेसं—कति, कीव, कीवतकं, कित्तकं=कितने । इनमें 'कीव' शब्द अव्यय है ।

[देखिए—तद्धित परिशिष्ट]

इत

§ ५०. संजातं तारकादित्थितो ४.४५—'यह इसमें उगा (=संजात) है' इस अर्थ में, 'तारक' आदि शब्दों से परे 'इत' प्रत्यय होता है । जैसे—तारका संजाता अस्स—तारकितं गगनं । पुप्फितो खखो=पुष्पित वृक्ष । पल्लविता लता ।

मत्त

§ ५१. माने मत्तो ४.४६—'इतना भर' इस अर्थ में, शब्द से परे 'मत्त' प्रत्यय होता है । जैसे—पलमत्तं=पल भर । हत्थमत्तं=हाथ भर । सतमत्तं=सौ भर । द्रोणमत्तं=द्रोण भर ।

तग्घो

§ ५२. तग्घो चुद्धं ४.४७—ऊपर के ही अर्थ में, यदि ऊँचाई प्रतीत हो, तो शब्द से परे 'तग्घ' प्रत्यय होता है, और 'मत्त' भी । जैसे—जाणुतग्घं, जाणुमत्तं=जांघ भर ऊँचा ।

शा

§ ५३. णो च पुरिसा ४.४८—ऊपर के ही अर्थ में, यदि ऊँचाई प्रतीत हो, तो 'पुरिस' शब्द से परे 'ण' प्रत्यय होता है; और 'मत्त' तथा 'तग्घ' भी। जैसे—
पोरिसं, पुरिसमत्तं, पुरित्ततग्घं = पुरुष भर ऊँचा।

अय

§ ५४. अयु भ द्वि ती हं से ४.४९—अंश का यदि बोध होता हो, तो 'उभ', 'द्वि' तथा 'ति' शब्दों से परे 'अय' प्रत्यय होता है। जैसे—
उभो अंसा अस्स—उभयं = दोनों अंश। द्वयं = दोनों अंश। तयं = तीनों अंश।

क. आकी

§ ५५. ए का का क्य स हा ये ४.५५—'असहाय' के अर्थ में, 'एक' शब्द से परे 'क' तथा 'आकी' प्रत्यय होते हैं। जैसे—
एकको, एकाकी = अकेला = असहाय।

रतर, रतम, इस्सिक, इय, इट्ठ

§ ५३. किं म्हा नि द्धार णे रतर-रतमा ४.५७—बहुतों में से एक का निर्धारण जाना जाय, तो 'किं' शब्द से परे 'रतर' तथा 'रतम' प्रत्यय होते हैं। जैसे—
कतरौ कतमो वा देवदत्तो भवतं = आप लोगों में कौन देवदत्त हैं ?

§ ५४. तर त मि स्सि कि यि द्धा ति स ये ४.६४—अतिशय का अर्थ जाना जाय, तो शब्द से परे 'तर', 'तम', 'इस्सिक', 'इय', तथा 'इट्ठ' प्रत्यय होते हैं। जैसे—
अतिसयेन पापो—पापतरौ, पापतमो, पापिस्सिको, पापियो, पापिट्ठो = अत्यन्त पापी।

जेय्यो, जेट्ठो^१। साधियो, साधिट्ठो^१। नेदियो, नेदिट्ठो। सेय्यो, सेट्ठो^१। कणियो, कणिट्ठो^१। मेधियो, मेधिट्ठो^१।

§ ५५. क्व चि प्य च्च ये ३.६८—प्रत्यय परे हो, तो स्त्रीप्रत्ययान्त शब्द कहीं कहीं पुल्लिङ्ग-रूप ग्रहण करता है। जैसे—अतिसयेन व्यक्ता—व्यक्ततरा, व्यक्ततमा।

द्वितीयान्त शब्दों से परे आने वाले प्रत्यय

ण, क, णिक

§ ५६. त म धी ते तं जानाति क णि का च ४.१४—'उसको अध्ययन करता है, या जानता है', इस अर्थ में शब्द से परे 'ण', 'क' तथा 'णिक' प्रत्यय होते हैं। जैसे—

व्याकरणं अधीते जानाति वा—वेद्याकरणो। छान्दसो—छन्द-शास्त्र को जो अध्ययन करता है, या जानता है। पदको—पद को अध्ययन करने, या जानने वाला। द्वेनधिको—द्विनय को अध्ययन करने, या जानने वाला। सुतन्तिको—सूत्र-पिटक को अध्ययन करने, या जानने वाला।

२. जो बुद्ध स्सि धि ट्ठे सु ४.१३५—'इय' तथा 'इट्ठ' प्रत्ययों के आने से, 'बुद्ध' शब्द का 'ज' आदेश होता है। जैसे—अतिसयेन बुद्धो—जेय्यो, जेट्ठो।

३. वाळ्हन्ति क प सत्थानं सा धने दसा ४.१३६—'इय' तथा 'इट्ठ' प्रत्ययों के आने से, 'वाळ्ह', 'अन्तिक', तथा 'पसत्थ' शब्दों का यथाक्रम 'साध', 'नेद' तथा 'स' आदेश होता है। जैसे—

अतिसयेन वाळ्हो—साधियो, साधिट्ठो। अतिसयेन अन्तिको—नेदियो, नेदिट्ठो। अतिसयेन पसत्थो—सेय्यो, सेट्ठो।

४. क ण् क ना प्य यु वानं ४.१३७—'इय' तथा 'इट्ठ' प्रत्ययों के आने से, अधिक अल्प के अर्थ में, 'युव' शब्द का 'कण्' तथा 'कन' आदेश हो जाता है। जैसे—कणियो, कणिट्ठो। कनियो, कनिट्ठो।

५. लो पो वी मन्तु वन्तूनं ४.१३८—'इय' तथा 'इट्ठ' प्रत्ययों के आने से, 'वी', 'मन्तु' तथा 'वन्तु' प्रत्ययों का लोप हो जाता है। जैसे—

अतिसयेन मेघावी—मेधियो, मेधिट्ठो। अतिसयेन सतिमा—सतियो, सतिट्ठो। अतिसयेन गुणवा—गुणियो, गुणिट्ठो।

णिक

§ ५७. तं हन्त र ह ति ग च्छ तु च्छ ति च र ति ४.२८—‘उसे वध करता है, उसे पाने का योग्य होता है, वहाँ जाता है, वहाँ उच्छन्न करता है, उसका आचरण करता है’—इन अर्थों में, शब्द से परे ‘णिक’ प्रत्यय होता है। जैसे—

पक्खिको, साकुणिको=चिड़ीमार । मायूरिको=मोर मारने वाला । मच्छिको, मेनिको=मछुआ । मागविको, हारिणिको=हरिण मारने वाला व्याधा । सूकरिको=सूअर मारने वाला ।

सतं अरहति इति—सातिकं=सौ रूपये पा सकने वाला । सन्दिट्टिकं=जीते जी देखा जा सकने वाला । एहिपस्सिको=जिसके विषय में यह कहा जा सके कि ‘आवो, इसे देखो’ ।

परदारं गच्छतीति—पारदारिको=परस्त्री-गमन करने वाला । मग्गिको=राह में जाने वाला । पञ्जासयोजनिको=पचास योजन जाने वाला ।

खदरे उच्छति इति—खादरिको=खैर इकट्ठा करने वाला । सामाकिको=सामाक धान बटोरने वाला ।

घम्मं चरति इति=घम्मिको । अघम्मिको ।

ल्ल

§ ५८. त न्नि स्सि ते ल्लो ४.६५—‘उसको आधार मान कर होने वाले’ के अर्थ में, शब्द से परे ‘ल्ल’ प्रत्यय होता है। जैसे—

वेदनिस्सितं—वेदल्लं । दुट्ठुनिस्सितं—दुट्ठुल्लं ।

ण्य

§ ५९. दक्खि णा या र हे ४.७६—‘उसको पाने का योग्य होना’ इस अर्थ में, ‘दक्खिणा’ शब्द से परे ‘ण्य’ प्रत्यय होता है। जैसे—

दक्खिणं अरहती ति—इक्खिण्यो=जो दक्षिणा पाने का योग्य पात्र है ।

[ण्यो तु मन्ता ४.७७—ऊपर के ही अर्थ में, ‘तु’ प्रत्ययान्त होने से, ‘ण्य’

प्रत्यय होता है। जैसे—

घातेतायं वा घातेतुं । पव्वाजेतायं वा पव्वाजेतुं]

तृतीयान्त शब्दों से परे आने वाले प्रत्यय

ण

§ ६०. ण रा गा तेन रत्तं ४.११—‘इस रँग से रंगा हुआ’, इस अर्थ में शब्द से परे ‘ण’ प्रत्यय होता है। [पृ० २५५, पाद टि०] जैसे—

कासावेन रत्तं—कासावं=कापाय रँग से रंगा हुआ। कोसुम्भं=कुसुम के रंग से रंगा हुआ। हालिहं=हल्दी के रंग से रंगा हुआ।

§ ६१. न वल्लत्ते निन्दुयुत्तेन काले ४.१२—यदि इन्दु-युक्त नक्षत्र से कोई काल लक्षित हो, तो उससे परे ‘ण’ प्रत्यय होता है। जैसे—

फुस्ती रत्ति=पूस की रात। फुस्तो अहो=पूस का दिन।

§ ६२. तेन निव्वत्ते ४.१८—‘उसके द्वारा बनाया गया’ इस अर्थ में ‘ण’ प्रत्यय होता है। जैसे—कुसम्बेन निव्वत्तो—कोसम्बी=जो नगरी कुसम्ब ऋषि के द्वारा बसाई गई है। काकन्दी। माकन्दी। सहस्सेन निव्वत्ता साहस्सी—परिखा।

§ ६३. तेन कत्तं, कीत्तं, बद्धं, अभिसं खत्तं, संसद्धं, हत्तं, हन्ति, जित्तं, जयति, दिव्वत्ति, खणत्ति, तरत्ति, चरत्ति, वहत्ति, जीवत्ति ४.२६—‘इससे किया गया है, खरीदा गया है, बाँधा गया है, अभिसंस्कृत किया गया है, लगा है, मारा गया है, मारता है, जीता गया है, जीतता है, खेलता है, खनता है, तरण करता है, आचरण करता है, वहन करता है, जीता है,’—इन अर्थों में, शब्द से परे ‘णिक’ प्रत्यय होता है। जैसे—

कायेन कत्तं—कायिकं=शरीर से किया गया। वाचसिकं=वचन से किया गया। मानसिकं=मन से किया गया। वातेन कतो आवाधो—वातिको=वायु के कारण उत्पन्न रोग।

सतेन कीत्तं—सातिकं=सौ रुपये में खरीदा गया। साहस्सिकं=हजार रुपए में खरीदा गया।

वरत्ताय वद्धो—वारत्तिको—रस्सी से बँधा । आयसिको—लोहे से बँधा हुआ । पासिको—जाल से बँधा हुआ ।

घतेन अभिसङ्खतं संसट्ठं वा—घातिकं—घी से तैयार हुआ, या मिला । गोळिकं—गुड़ से ० । दाधिकं—दही से ० । मारीच्चिकं—मिर्च से ० ।

जालेन हतो हन्तीति वा—जालिको—जाल से मरा हुआ, या मारने वाला । वाळिसिको—बंसी से ० ।

अक्खेहि जितं—अक्खिकं—पासा से जीता गया । अक्खेहि जयति दिव्वति वा—अक्खिको—पासा से जीतने वाला, या खेलने वाला ।

खणित्तिया खणतीति—खाणित्तिको—खन्ती से खनने वाला । कुद्दालिको—कुदाल से खनने वाला ।

उलुम्पेन तरति इति—ओलुम्पिको—वेड़ा से पार करने वाला । गोपुच्छिको—गाय की पूँछ पकड़ कर पार करने वाला । नाविको—नाव से पार करने वाला ।

सकटेन चरतीति—साकटिको—सगड़ के साथ चलने वाला । रथिको—रथ से चलने वाला ।

वन्धेन वहति—वन्धिको—बाँध कर वहन करने वाला । अंसिको—कंधे पर वहन करने वाला । सीसिको—शिर से वहन करने वाला ।

वेतनेन जीवति—वेतनिको—वेतन से जीने वाला । भतिको—मजदूरी से जीने वाला । कयविककयिको—कयविक्रय करके जीने वाला ।

ल, इय

§ ६४. तेन दत्ते लि या ४.५८—‘उससे प्रदत्त है’ इस अर्थ में, शब्द से परे ‘ल’ तथा ‘इय’ प्रत्यय होते हैं। जैसे—

देवेन दत्तो—देवलो, देदियो । ब्रह्मना दत्तो—ब्रह्मलो, ब्रह्मियो । सीवलो, सीवियो । नागलो, नागियो ।

इम

§ ६५. भा वा तेन निव्वत्ते ४.६३—‘उससे तैयार किया गया है’ इस अर्थ में, भाव-वाचक शब्द से परे ‘इम’ प्रत्यय होता है । जैसे—

पाकेन निव्वत्तं—पाकिमं—जो पका कर तैयार किया गया है । सेकेन निव्वत्तं—सेकिमं—जो सींच कर तैयार किया गया है ।

चतुर्थ्यन्त शब्दों से परे आने वाला प्रत्यय

णिक

§ ६६. तस्त्वं संवत्तति ४.३०—'इसके लिए होता है' इस अर्थ में, शब्द से परे 'णिक' प्रत्यय होता है । [पृ० २५५—पाद टिप्पणी] जैसे—

पुनव्मवाय संवत्तति इति—पोनोभविको—जो पुनर्जन्म के लिए कारण हो । स्त्रीलिङ्ग में—पोनोभविका । लोकाय संवत्तति—लोकिको—जो लोक के लिए हो । सगाय संवत्तति—सोवगिको—जो स्वर्ग के लिए हो ।

पञ्चम्यन्त शब्दों से परे आने वाला प्रत्यय

णिक

§ ६७. ततो सम्भूतमागतं ४.३१—'उससे सम्भूत, या आया हुआ' इस अर्थ में, शब्द से परे 'णिक' प्रत्यय होता है । जैसे—

मातितो सम्भूतमागतं वा—मत्तिकं—माँ की ओर से सम्भूत, या आया हुआ । पेतिकं—पिता की ओर से ० ।

'ण्य' 'रियण', 'र्य' प्रत्यय भी उक्त अर्थ में होते हैं । जैसे—

सुरभितो सम्भूतं—सौरभ्यं—सुगन्धि से सम्भूत । थनतो सम्भूतं—थञ्जं—दूध । पितितो सम्भूतो—पैत्तियो । मातियो, मत्तियो, मत्त्वो ।

छठा काण्ड

दूसरा पाठ

(ख)

तद्धित प्रकरण

षष्ठ्यन्त शब्दों से परे आने वाले प्रत्यय

ण^१

§ ६८. णो वा षच्चे ४.१—'उसका अपत्य' इस अर्थ में, शब्द से परे 'ण' प्रत्यय होता है। जैसे—

वसिष्ठस्य अपच्चं—वासिष्ठो, वासेष्ठो, वासिष्ठी—वशिष्ठ के अपत्य
रघुनो अपच्चं—राघवो ।

णान, णायन^१

§ ६९. व च्छा दितो णान णायना ४.२—ऊपर के ही अर्थ में, 'वच्छ' आदि गोत्र वाचक शब्दों से परे, 'णान' तथा 'णायन' प्रत्यय होते हैं। जैसे—

वच्छानो, वच्छायनो—वत्स गोत्र में उत्पन्न। कच्चानो, कच्चायनो—कात्यायन गोत्र में उत्पन्न।

कातियानो। मोगल्लानो, मोगल्लायनो। साकटानो, साकटायनो। कण्हानो, कण्हायनो।

णोर्य, णोर^१

§ ७०. कत्ति का वि ध वा दी हि णे य्य णे रा ४.३—ऊपर के ही अर्थ में

‘कत्तिका’ आदि शब्दों से परे, ‘ण्य्य’ तथा, ‘विधवा’ आदि शब्दों से परे ‘णेर’ प्रत्यय होते हैं। जैसे—

कत्तिकेय्यो=कार्तिकेय । वेनतेय्यो । भागिनेय्यो=भांजा ।

वेधवेरो=विधवा का लड़का । वन्धकेरो=वन्धकी अर्थात् अभिसारिका का पुत्र । नाळिकेरो । सानणेरो ।

एय

§ ७१. ण्य दि च्चा दी हि ४.४—ऊपर के ही अर्थ में, ‘दिति’ आदि शब्दों से परे ‘ण्य’ प्रत्यय होता है। जैसे—

देच्चो=दिति का अपत्य । आदिच्चो=अदिति का अपत्य । कोण्डञ्जो =

१. स रान मा दि स्ता यु व ण्ण स्ता ए ओ णानु व न्धे ४.१२४—‘ण’ अनु-वन्ध वाला प्रत्यय आने से, शब्द के आदिभूत ‘अ’, ‘इ’, तथा ‘उ’ का यथाक्रम ‘आ’, ‘ए’ तथा ‘ओ’ हो जाता है। जैसे—

अदितिया अपच्चं—अदिति + ण्य = (लोपो) वणिणवण्णाभं ४.१३१) आ-दित् + य = आदित्यं = आदिच्चं । रघु + ण = राघवो । विनता + ण्य्य = वेन-तेय्यो । मीन + णिक = मेनिको । उळ्ळुम्पेन तरतति—उळ्ळुम्प + णिक = ओळ्ळु-म्पिको । दुभगस्स भावो—दुभग + ण्य = दोभगं ।

संयोगे क्व चि ४.१२५—‘ण’ अनुवन्ध वाला प्रत्यय आने से, संयुक्त अक्षर से पूर्व ‘अ’, ‘इ’ तथा ‘उ’ का कहीं कहीं यथाक्रम ‘आ’, ‘ए’ तथा ‘ओ’ होता है। जैसे—दितिया अपच्चं—दिति + ण्य = देच्चो । कुण्डनिया अपच्चं—कोण्डञ्जो ।

वहुत स्थानों में यह आदेश नहीं होता है। जैसे—वच्छ + णान = वच्छानो । कत्तिका + ण्य्य = कत्तिकेय्यो । दक्ख + णि = दक्खि ।

उ व ण्ण स्ता व ड् स रे ४.१२६—यदि ‘ण’ अनुवन्ध वाला कोई प्रत्यय आवे, जिसके आदि में स्वर हो, तो नाम के अन्त्य ‘उ’ का ‘अव’ हो जाता है। जैसे—रघु + ण = राघवो ।

म ङ्गे ४.१२६—कहीं कहीं, मध्य में भी स्थित ‘अ’, ‘इ’, तथा ‘उ’ का यथा-क्रम ‘आ’, ‘ए’, तथा ‘ओ’ हो जाता है। जैसे—वसिट्ठस्स अपच्चं—वसिट्ठ + ण = वासेट्ठो ।

कुण्डनि का अपत्य । गग्यो = गर्ग का लड़का । भातव्वो = भाई का लड़का, भतीजा ।

णि

§ ७२. आ णि ४.५—ऊपर के ही अर्थ में, अकारान्त शब्द से परे विकल्प से 'णि' प्रत्यय होता है । जैसे—

दक्खि = दक्ष का अपत्य । दत्ति = दत्त का अपत्य । दोगि = द्रोण का अपत्य । वासवि = वासव का अपत्य । वारुणि = वरुण का अपत्य ।

ञो

§ ७३. राजतो ञ्जो जाति यं ४.६—यदि जाति का अर्थ प्रगट होता हो, तो अपत्य के अर्थ में, 'राज' शब्द से परे 'ञ्ज' प्रत्यय होता है । जैसे—

राजञ्जो = राजा की जाति का ।

य, इय

§ ७४. खत्ता यि या ४.७—यदि जाति का अर्थ प्रगट होता हो, तो अपत्य के अर्थ में, 'खत्त' शब्द से परे 'य' तथा 'इय' प्रत्यय होते हैं । जैसे—

खत्यो, खत्तियो = क्षत्रिय जाति का ।

स्स, सण

§ ७५. मनुतो स्स तण् ४.८—ऊपर के अर्थ में, 'मनु' शब्द से परे, 'स्स' तथा 'सण्' प्रत्यय होते हैं । जैसे—

मनुस्सो, मानुसो । स्त्रीलिङ्ग में—मनुस्सा, मानुसी ।

२. य म्हि गो स्स च ४.१३०—'य' से आरम्भ होने वाला कोई प्रत्यय आवे, तो 'गो' तथा उकारान्त शब्दों के अन्त्य स्वर का 'अव' आदेश हो जाता है । जैसे—गुहं इदं—गो + य = गव + य = (लोपो) वणिवण्णानं ४.१३१) गव्यं । भानुनो अपच्चं—भानु + ण्य = भातव्वो ।

गा

★ § ७६. जनपदनामस्मा लक्ष्मिया रञ्जे च णो ४.९—'वहाँ का क्षत्रिय या राजा' इस अर्थ में, जनपद के नाम से परे 'ण' प्रत्यय होता है। जैसे—
पञ्चालो = पञ्चाल का क्षत्रिय या राजा। कोसलो। मागधो। श्रोककाको।

ण्य

§ ७७. ष्य कुरु सिवी हि ४.१०—अपत्य तथा राजा के अर्थ में, 'कुरु' तथा 'सिवि' शब्दों से परे, 'ण्य' प्रत्यय होता है। जैसे—
कोरव्यो = कुरु का अपत्य, या राजा। सेव्यो।

णो

§ ७८. तत्त विसये देसे ४.१५—'उनके आसपास की जगह' इस अर्थ में, 'ण' प्रत्यय होता है। जैसे—

वसातीनं विसयो देसो—वासातो।

★ § ७९. निवासे तन्नामे ४.१६—'उनके निवास करने की जगह' इस अर्थ में, नाम से परे 'ण' प्रत्यय होता है। जैसे—

सिवीनं निवासो देसो—सेव्यो = जिस जगह शिवी लोग निवास करें।
वासातो = जिस जगह 'वसाती' लोग निवास करें

§ ८०. अद्दूरभवे ४.१७—'उसके पास वाला देश' इस अर्थ में, उस नाम से परे 'ण' प्रत्यय होता है। जैसे—

विदिषाय अद्दूरभवं—वेदिसं = विदिशा के पास ही।

णिक

§ ८१. तस्तिदं ४.३३—'यह इसका है' इस अर्थ में, शब्द से परे 'णिक', 'किय', 'निय', तथा 'क' प्रत्यय होते हैं। जैसे—

संधत्स इदं—सङ्घिकं = जो संध का हो। पुग्गलिकं = जो किसी व्यक्ति-विशेष (=पुद्गल) का हो। सक्यपुत्तिको : सक्यपुत्तियो = जो शाक्यपुत्र का हो। नाथपुत्तिको = जो नाथपुत्र का हो। जेनदत्तिको = जो जैनदत्त का हो।

किय—सकियो = स्वकीय, अपना । परकियो = दूसरे का ।

निय—अत्तनियं = अपना ।

क—सको = अपना । राजकं = राजा का ।

ण

§ ८२. णो ४.३४—‘यह इसका है’ इस अर्थ में, शब्द से परे ‘ण’ प्रत्यय होता है । जैसे—

कच्चायनस्स इदं—कच्चायनं व्याकरणं = कात्यायन का व्याकरण । सोगतं सासनं = सौगत बुद्ध का शासन । माहिसं = भैंसे का दूध, मांस आदि ।

य

§ ८३. गवादी हि यो ४.३५—ऊपर के ही अर्थ में, ‘गो’ आदि शब्दों [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] से परे ‘य’ प्रत्यय होता है । जैसे—

गुत्रं इदं—गव्यं = गाय का (दूध, मांस या कुछ) । कविनो इदं—कव्यं = काव्य ।

रेय्यणा

§ ८४. पि तितो भातरि रेय्यण् ४.३६—‘पितु’ शब्द से परे, उसके भाई के अर्थ में, ‘रेय्यण्’ प्रत्यय होता है । जैसे—

पितुनो भाता—पेत्तेय्यो = चाचा ।

छ

§ ८५. मा तितो च भगिनियं छो ४.३७—‘मातु’ तथा ‘पितु’ शब्दों से परे, उनकी वहन के अर्थ में ‘छ’ प्रत्यय होता है । जैसे—

मातुया भगिनी—मातुच्छा = मौसी । पितुनो भगिनी—पितुच्छा = फूआ ।

३. णिकस्सियो वा ४.१४१—‘णिक’ प्रत्यय का विकल्प से ‘इय’ आदेश हो जाता है । जैसे—सक्यपुत्तस्स अयं—सक्यपुत्तियो, सक्यपुत्तिको ।

आमह

॥ ८६. माता पितुस्वामहो ४.३८—‘मातु’ तथा ‘पितु’ शब्दों से परे, उनके पिता-माता के अर्थ में, ‘आमह’ प्रत्यय होता है। जैसे—

मातुया माता—मातामही=नानी। मातुया पिता—मातामहो=नाना।
पितुनो माता—पितामही=दादी। पितुनो पिता—पितामहो=दादा।

रेय्यण

॥ ८७. हिते रेय्यण् ४.३९—‘उनके हित के लिए’ इस अर्थ में, ‘मातु’ तथा ‘पितु’ शब्दों से परे ‘रेय्यण्’ प्रत्यय होता है। जैसे—

मातुनो हिते—मत्तेय्यो। पितुनो हिते—पैत्तेय्यो।

तर

॥ ८८. वच्छन्तो हि तनुत्ते तरो ४.६—उत्सका छोटा होने के अर्थ में, ‘वच्छ्’ आदि शब्दों से परे ‘तर’ प्रत्यय होता है। जैसे—

वच्छन्तरो=छोटा ब्रह्मड़ा। औक्खन्तरो=छोटा बौल। अस्सन्तरो=खच्चर (आधा घोड़ा, आधा गदहा)।

ण, णिक, णेय्य, मय

॥ ८९. तस्स विकारो वयव्वेणु णणिकण्येय्यमया ४.६६—‘उत्सका विकार या अवयव’ इस अर्थ में, शब्द से परे ‘ण’, ‘णिक’, ‘ण्येय्य’, तथा ‘मय’ प्रत्यय होते हैं। जैसे—

ण—आयत्तं=लोहे का बना। ओडुम्बरं=गूलर का। कामीतं=कदूतर का।

णिक—कप्पात्तिकं=कपास का बना।

ण्येय्य—एण्येय्यं=एणि मृग का। कोसेय्यं=रेवाम का बना।

मय—त्तिणमयं=तृण का। दाहमयं=लकड़ी का बना। मत्तिकामयं=मिट्टी का बना। गोमयं=गोबर।

स्सण

॥ ९०. ज तुतो स्सण् वा ४.६७—ऊपर के ही अर्थ में, ‘जतु’ शब्द से परे,

विकल्प से 'स्सण्' प्रत्यय होता है । जैसे—

जातुनो विकारो—जातुस्सं, जातुमयं=लाह का वना ।

करण, णिक

§ ६१. समूहे क णण णिका ४.६८—'उनका समूह' इस अर्थ में, शब्द से परे 'कण', ण, तथा 'णिक' प्रत्यय होते हैं । जैसे—

करा—राजञ्जकं=राजा की जाति के लोगों का जमाव । मानुस्सकं=आदमियों का जमाव । ओट्टकं=ऊंटों का जमाव । ओरब्भकं=भेड़ों का० । राजकं=राजों का० । राजपुत्तकं=राजपुत्रों का० । हत्थिकं=हाथी का० । धेनुकं=गौवों का० ।

रा—काकं=कौश्रों का जमाव । भिक्खं=भिक्षुओं का० ।

णिक—(केवल प्राणहीन से परे) आपूपिकं=पूए की ढेर । संकुलिकं=रोटी की ढेर ।

ता

§ ६२. ज ना दी हि ता ४.६९—'उनका समूह' इस अर्थ में, 'जन' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दों से परे 'ता' प्रत्यय होता है । जैसे—

जनता=जन-समूह । गजता=गज-समूह । बन्धुता=बन्धु-समूह ।

स्स

§ ६३. च क्ख् वा दि तो स्सो ४.७१—'उसके हित के लिए' इस अर्थ में, 'चक्खु' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दों से परे, 'स्स' प्रत्यय होता है । जैसे—चक्खुनो हितं—चक्खुस्सं । आयुनो हितं—आयुस्सं ।

जातिय

§ ६४. त व्व ति जा ति यो ४.११३—'उस प्रकार का' इस अर्थ में, उस सामान्य वाचक शब्दों से परे 'जातिय' प्रत्यय होता है । जैसे—

पट्टजातियो । मुद्दुजातियो ।

सप्तम्यन्त शब्दों से परे आने वाले प्रत्यय

ण

§ ६५. तत्र भवे ४.२०—'उसमें हुआ' इस अर्थ में, शब्द से परे 'ण' प्रत्यय होता है। जैसे—

उदके भवो—ओदको=जल में उत्पन्न। ओरसो=उरसे उत्पन्न। जानपदो=जनपद में उत्पन्न हुआ। मागधो=मगध में उत्पन्न हुआ। कापिलवत्यदो=कपिलवस्तु में उत्पन्न हुआ। कोसम्बो=कोशाम्बी में उत्पन्न। मनसि भवो—मन + ण=मानसो।

तन

§ ६६. अज्जादीहि तनो ४.२१—ऊपर के ही अर्थ में, 'अज्ज' आदि शब्दों से परे 'तन' प्रत्यय होता है। जैसे—

अज्ज भवो—अज्जतनो=आज दिन हुआ। स्वातनो=कल होने वाला। हिय्यत्तनो=कल हुआ हुआ।

★ § ६७. पुरातो णो च ४.२२—ऊपर के ही अर्थ में, 'पुरा' शब्द से परे, 'ण' प्रत्यय होता है, और 'तन' प्रत्यय भी। जैसे—
पुराणो, पुरातनो=जो बहुत पहले ही चुका है।

अच्च

§ ६८. अमात्वच्चो ४.२३—साथ रहने के अर्थ में, 'अमा' (=साथ) शब्द से परे 'अच्च' प्रत्यय-होता है। जैसे—

अमच्चो=साथ रहने वाला, मंत्री।

४. मनादीनं सक् ४.१२८—'ण' अनुबन्ध वाला प्रत्यय आने से, 'मन' आदि शब्दों से परे 'स' का आगम होता है। जैसे—

मनसि भवं—मानसं। दुम्पनसो भावो—दोमनस्सं। सोमनस्सं।

इम

§ ९६. मज्झा दित्ति मो ४.२४—‘उसमें हुआ’ इस अर्थ में, ‘मज्झा’ आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दों से परे, ‘इम’ प्रत्यय होता है। जैसे—
मज्झिमो = मध्य में हुआ। अन्तिमो = अन्त में हुआ।

कण, णेय्य, णेय्यक, य, इय

§ १००. कण्णे य्य णे य्य क यि या ४.२५—ऊपर के ही अर्थ में, शब्द से परे ‘कण’, ‘णेय्य’, ‘णेय्यक’, ‘य’, तथा ‘इय’ प्रत्यय होते हैं। जैसे—

कण्—कुसिनारायं भवो—कोसिनारको। मागधको। आरञ्जको = जंगल में हुआ।

णेय्य—गङ्गेय्यो = गंगा में हुआ। पव्वतेय्यो = पर्वत पर हुआ। वानेय्यो = वन में हुआ।

णेय्यक—कोलेय्यको = कुल में हुआ। वाराणसेय्यको = बनारस में हुआ। चम्पेय्यको = चम्पा में हुआ।

य—गम्मो = ग्राम्य। दिव्वो = दिव्य।

इय—गामियो = ग्राम्य। उदरियो = उदर में हुआ। दिवियो = स्वर्ग में हुआ। पञ्चालियो = पञ्चाल में हुआ। बोधिपक्खियो = ज्ञान के पक्ष का। लोकियो = लोक में हुआ।

णिक

§ १०१. णिको ४.२६—ऊपर के ही अर्थ में, शब्द से परे ‘णिक’ प्रत्यय होता है। जैसे—

सारदिको = शरत्काल में हुआ। सारदिको दिवसो। सारदिका रत्ति।

§ १०२. तत्थ वसति विदितो भत्तो नियुत्तो ४.३२—‘वहाँ रहता है, वहाँ विदित है, उसमें भक्ति रखता है, वहाँ नियुक्त है’—इन अर्थों में, शब्द से परे ‘णिक’ प्रत्यय होता है। जैसे—

ख्खमूले वसति—ख्खमूलिको = वृक्ष के नीचे रहने वाला। आरञ्जिको = जंगल में रहने वाला। सोसानिको = स्मशान में रहने वाला।

लोके विदितो—लोकिको ।

चतुमहाराजेसु भक्ता—चातुम्महाराजिका=चतुर्महाराजके भक्त ।

द्वारे नियुक्तो—द्वारिको =द्वार पर नियुक्त पहरेदार ।

ण्य

§ १०३. ण्यो तस्य साधु ४.७२—उस विषय में कुशल, योग्य, तथा हितकर होने के अर्थ में, शब्द से परे 'ण्य' प्रत्यय होता है । जैसे—

सभायं साधु—सबभो । परिसायं साधु—वारिसज्जो ।

निय, ञ्ज

§ १०४. कम्मा निय ञ्जा ४.७३—ऊपर के ही अर्थ में, 'कम्म' शब्द से परे 'निय' तथा 'ञ्ज' प्रत्यय होते हैं । जैसे—

कम्मे साधु—कम्मनियं, कम्मञ्जं ।

इक

§ १०५. कथा दि त्वि को ४.७४—ऊपर के ही अर्थ में, 'कथा' आदि शब्दों [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] से परे 'इक' प्रत्यय होता है । जैसे—

कथिको । धम्मकथिको । सङ्गाभिको । पवासिको । उपवासिको ।

ण्य्य

§ १०६. पथा दी हि णेय्यो ४.७५—ऊपर के ही अर्थ में, 'पथ' आदि शब्दों से परे 'ण्य्य' प्रत्यय होता है । जैसे—

पाथेय्यं=पाथेय । सापतेय्यं=घन ।

अन्य प्रत्यय

दि स्सन्त ञ्जे' पि पच्च या ४.१२०—जितने कहे गए हैं, उनसे भिन्न भी प्रत्यय देखे जाते हैं । जैसे—

विविधा +मातरो—विमातरो । तासं पुत्ता—वेमातिका (यहाँ 'रिक्ण्')

प्रत्यय लगा) ।

पर्यं गच्छतीति—पथावी ('आवी' प्रत्यय) ।

इस्सा अस्स अत्थीति—इत्सुकी ('उकी' प्रत्यय) ।

धुरं वहन्तीति—धोरह्हा ('ह्ण' प्रत्यय) ।

स क त्थे ४.१२२—अपने ही अर्थ में भी, शब्द से परे कुछ प्रत्यय देखे जाते हैं । जैसे—हीनको, पोतको, किच्चयं ।

३०. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

- (क) विपस्ती, सिखी, वेस्सभू च भगवन्तो गोत्तेन कोण्डञ्जा अहेसुं । ककुसन्धो, कोणागमनो, कस्सपो च भगवन्तो गोत्तेन कस्सपा अहेसुं । अहं एतरहि (भगवा) गोतमो गोत्तेन । वासिट्ठा, भारद्वाजा, कच्चाना, वच्छायना, कण्हायना, अग्गिबेस्सा, कोसिका, भग्गवा, ब्राह्मणा च खत्तिया च गहपतयो भगवन्तं अभिवन्दन्ति, नमस्सन्ति, पञ्हे पुच्छन्ति । भगवा नेसं पुट्ठे पुट्ठे पञ्हे व्याकरोति ।
- (ख) राजगहिका, मागधिका, कापिलवत्थिका, कोसंबिका गहपतयो भगवन्तं भिक्खु-सङ्घं च उपट्ठहन्ति । सुत्तन्तिका, वेणयिका, आभिधम्मिका भिक्खू सज्जायन्ति । कच्चानो मोग्गलानो च वेय्याकरणिका । पंसुकूलिका तेचीवरिका भिक्खू अन्धोकासिका हुत्वा विहरन्ति । भूते (भूत-काले) अज्जतनी, हिय्यत्तनी परोक्खा विभत्तियो होन्ति ।
- (ग) अय खो राजा मागधो अजात-सत्तु वेदेहि-पुत्तो कोसिनारकानं मल्लानं दूतं पाहेसि । वेत्तालिका लिच्छवी । कापिलवत्थवा सक्या । रामगामका कोलिया । वेठदीपको ब्राह्मणो । पावेय्यका मल्ला दूतं पाहेसुं । दोणो ब्राह्मणो किर भगवतो सरीरानि अट्ठघा समं सुविभत्तं विभजित्वा, तेसं अदासि । अदंसु खो ते दोणस्स ब्राह्मणस्स कुम्भं याचमानस्स कुम्भं ति । पिप्फलिवनिया मोरिया पन अङ्गारं हरिसु ।
- (घ) पितामहो, मातामहो, मज्झिमो, अन्तिमो, पापिट्ठो, सेट्ठो, धम्मिको, मातुच्छा, पितुच्छा, गारवं, अज्जवं, पोरी, सन्दिट्ठिकं, एहिपस्सिकं, पोनी भविको, दक्खिण्यो, आहुनेय्यो, अधिपतेय्यं, देवता, जनता ।
- (ङ) स्वातनाय भत्तं अधिवासेसि । पेतिकं च मत्तिकं च धनं सोगतानं सामणे-रानं च समणानं अत्थाय विसज्जेसि । पायासि राजञ्जो राजदायं ब्रह्मादेय्यं सेतव्यं अज्जावसति । कोसिनारका मल्ला पुरत्थिमेन द्वारेण निक्खामिसु ।

२. ऊपर के काले अक्षरों में छपे शब्दों से वाक्य बनाइए।

३. पालि में अनुवाद कीजिए—

(क) आज का भोजन । कल का दान । गत-कल की पूजा । मगध का राजा । शाक्य कुमार । कपिल-वस्तु के मनुष्य । कुरुदेश का राजा । इसी जन्म में । मन की व्यथा । शरीर की व्याधि । सालाना त्यौहार । वर्षा का वास । पाँच महिने की चारिका । संघ को दान । ध्यान का आनन्द । व्याकरण जानने वालों की सभा । त्रिपिटक की गाथा । वशिष्ठ, भृगु, उदुम्बर गोत्र के ऋषि ।

३. निम्नलिखित प्रत्ययों के कुछ उदाहरण दीजिए—

१. ण, २. णिक, ३. क, ४. त्तक, ५. रति, ६. रीव, ७. रीवत्तक, ८. इत्, ९. तग्घ, १०. काकी, ११. रतर, १२. रतम, १३. इय, १४. इट्ठ, १५. ल्ल, १६. णेय्य, १७. ण्य, १८. ल, १९. णान, २०. णायन ।

४. निम्नलिखित शब्दों में प्रत्यय का निर्देश कीजिए—

सोगतो । वेणिको । समणको । एत्तावन्तु । कति । कीव । पलमत्तं । एकाकी । देवलो । वच्छानो । अज्जतनं । जनता । जातुस्सं । पितामहो । खत्यो । वारुणि । सामणेरो ।

छठा काण्ड

तीसरा पाठ

समास-प्रकरण

त्यादि त्यादिने कत्यं ३.१—स्याद्यन्त शब्द, स्याद्यन्त शब्द के साथ एकार्थ होते हैं। यह, भिन्न अर्थों का एकार्थ हो जाना समास कहा जाता है। समास छः हैं—१ अव्ययीभाव, २ बहुव्रीहि, ३ तत्पुरुष, ४ कर्मधारय, ५ क्रियार्थ और ६ द्वन्द्व। जैसे—

१. अव्ययीभाव (असंख्य)

§ १. असंख्यं विभक्ति सम्पत्ति समीप साकल्य भाव यथापच्छा-
युगपदत्वे ३.२—‘विभक्ति, सम्पत्ति, समीप, साकल्य, अभाव, यथा, पश्चात्,
और युगपद’—इन अर्थों में, अव्यय के साथ समास होता है। जैसे—
विभक्ति—इत्थीनु कथा पवत्ता—अधित्य ।’

१. पुव्वस्मा मादितो २.१२२—अव्ययी भाव समास होने पर, शब्द से परे, प्रायः विभक्तियों का लोप होता है। जैसे—इत्थीनु कथा पवत्ता—अधित्य ।

कहीं कहीं नहीं होता है। जैसे—यथापत्तिया । यथापरिसाय ।

नातो मपञ्चमिया २.१२३—अकारान्त अव्ययीभाव समास से परे, सभी विभक्तियों का लोप नहीं होता है। पञ्चमी को छोड़, दूसरी विभक्तियों के साथ ‘अं’ तो होता है। जैसे—उपकुम्भं=घड़े के पास ।

वा तति या सत्तमीनं २.१२४—अकारान्त अव्ययीभाव समास से परे, तृतीया तथा सप्तमी विभक्ति में भी, विकल्प से ‘अं’ होता है। जैसे—

उपकुम्भेन कतं—उपकुम्भं कतं । उपकुम्भे निवेहि—उपकुम्भं निवेहि ।

सम्पत्ति—सम्पन्नं ब्रह्मं—सब्रह्मं लिच्छवीनं । समिद्धि भिक्खानं—सुभिक्षं ।

समीप—कुम्भस्स समीपं—उपकुम्भं ।

साकल्य—सतिणं अज्झोहरति ।

अभाव—विगता इद्धि सद्धिकानं दुस्सद्धिकं । अभावो मक्खिकानं—निम्म-
क्खिकं । अतिगतानि तिणानि—नित्तिणं ।

यथा—अनुरूपं । अन्वद्धमासं । यथासत्ति ।

पश्चात्—अनुरथं ।

युगपद—सचक्कं ।

§ या वा व घा र णे ३.४—अवधारण (=इतना) के अर्थ में, 'याव' शब्द के साथ समास होता है । जैसे—

यावामत्तं (=जितने) ब्राह्मणे आमन्तय ।

यावजीव =जीवन भर ।

§ २. पथ्य पा व हि ति रो पु रे प च्छा वा पञ्चम्या ३.५—'परि, अप, आ, वहि, तिरो, पुरे, पच्छा', इन शब्दों का पञ्चम्यन्त के साथ समास होता है, और द्वितीयान्त के साथ भी । जैसे—

परिपव्वत्तं वस्सि देवो, परिपव्वता । अपपव्वत्तं वस्सि देवो, अपपव्वता ।
आपाटलिपुत्तं वस्सि देवो, आपाटलिपुत्ता । वहिगामं, वहिगामा । तिरोपव्वत्तं,
तिरोपव्वता । पुरेभत्तं, पुरेभत्ता । पच्छाभत्तं, पच्छाभत्ता ।

§ ३. स मी पा या मे स्वनु ३.६—सामीप्य, तथा आयाम (=विस्तार) के अर्थ में, 'अनु' शब्द के साथ समास होता है । जैसे—

अनुवनं असनि गता । अनुगङ्गं वाराणसी ।

२. यथा न तुल्ये ३.३—'यथा' शब्द, यदि 'तुल्य' के अर्थ में समझा जाय, तो उसके साथ समास नहीं होता है । जैसे—

यथा देवदत्तो तथा यञ्जदत्तो ।

३. अकाले सकल्ये ३.८१—यदि कालवाचक न हो, तो उसी अर्थ में, पूर्वपद के अप्रधान 'सह' शब्द का 'स' हो जाता है । जैसे—सब्रह्मं । सचक्कं निघेहि । सधुरं ।

§ ४. ओ रे प रि प टि पारे म ङ्के हे ट्टु द्वा धो न्तो वा छ ट्टि या ३.८—
 'ओरे, उपरि, पटि, पारे, मङ्के, हेट्टा, उट्ट, अघो, अन्तो'—इन शब्दों का पठ्यन्त
 के साथ समास होता है। जैसे—

गङ्गाय ओरे—ओरेगङ्गं। सिखरस्त उपरि—उपरिसिखरं। पटिसोतं। पारेय-
 मुनं। मङ्केगङ्गं। हेट्टापासादं। उट्टगङ्गं। अवोगङ्गं। अन्तोपासादं।

§ ५. ति ट्टु ग्वा वो नि ३.७—निम्नलिखित समास निपात हैं—

तिट्टन्ति गावो यस्मि काले—तिट्टुगुं कालो। वहन्ति गावो यस्मि काले—
 बहगुं कालो। आयन्ति गावो यस्मि काले—आयतिगवं।

खले यवा यस्मि काले—खलेयवं। लूयमाना यवा यस्मि काले—लूनयवं।
 लूयमानयवं। पातकालं। सायकालं। पातमेघं। सायमेघं। पातमग्नं। सायमग्नं।

§ ६. परस्स संख्या मु ३.६०—संख्यावाचक शब्द उत्तरपद में हो, तो
 'पर' शब्द के अन्य स्वर का 'ओ' हो जाता है। जैसे—परोसतं। परोसहस्सं।

§ ७. तं न पुंस कं ३.६—अव्ययी भाव समास होने से, शब्द नपुंसक
 लिङ्ग होता है;

कमी कमी नहीं भी होता है। जैसे—यथापरिसं, यथापरिसाय=अपनी
 अपनी सभा में।

२. बहुव्रीहि (अञ्जत्य)

§ ८. वानेकञ्जत्ये ३.१७—कमी कमी, अनेक त्याद्यन्त शब्दों का
 समास हो कर, उनसे भिन्न एक अन्यपद का बोध होता है। जैसे—

बहूनि धनानि यस्त सो—बहुधनो। लम्बा कण्ठा यस्त सो—लम्बकण्ठो।
 वजिरं पाणिमिह यस्त सो—वजिरपाणि। मत्ता बहवो मातङ्गा एत्य—मत्तबहु-
 मातङ्गं वनं। आरुह्यो वानरो यं रुक्खं सो—आरुह्यवानरो। जितानि इन्द्रि-
 यानि येन सो—जितिन्द्रियो। दिन्नं भोजनं यस्त सो—दिन्नभोजनो। अपगतं
 काळकं परा सो—अपगतकालको। उपगता दस येसं ते—उपदत्ता। तयोदस
 परिमाणं एसं—तिदत्ता।

दक्खिणस्ता च पुव्वस्ता च दिसाय यदन्तरालं—दक्खिणपुव्वा दिसा। सह
 पुत्तेन आगतो—सपुत्तो। सलोमको=जिसके शरीर पर रोयें हैं। अत्थि खीरं
 यस्ता सा—अत्थिखीरा ब्राह्मणी।

श्रोत्रमुखमिव मुखमस्स—श्रोत्रमुखो=ऊँट के समान जिसका मुँह हो ।
सुवण्णविकारो अलङ्कारो अस्स—सुवण्णालङ्कारो । पपतितं पण्णमस्स—पपतित्तं
पण्णो, पपण्णो । अविज्जमाना पुत्ता अस्स—अविज्जमानपुत्तो । न सन्ति पुत्ता
अस्स—अपुत्तो ।

बहू मालायो एतस्स—बहुमालो^१ पोसो । चित्ता गावो अस्सेति—चित्तगु^१ ।

§ ६. बहुव्रीहि समास के कुछ विशेष उदाहरण—

भवम्पतिट्ठा^१ । गुणवन्तपतिट्ठो^१ । मनोसेट्ठा^१ । कुमारभरिया^१ । सपुत्तो^१ ।

४. घ प स्सा न्त स्सा प्य धा न स्स ३.२४—अन्तभूत अप्रधान “घ”, तथा
“प” का ह्रस्व हो जाता है । जैसे—बहुमालो । निक्कोसम्बि । अतिवामोर ।

५. गो स्सु ३.२५—अन्तभूत अप्रधान ‘गो’ शब्द का ‘गु’ हो जाता है ।

उत्तरपदे ३.५४—उत्तर पद परे हो, तो पूर्वपद में निम्न प्रकार परि-
वर्तन होता है—

६. ट न्त न्तूनं ३.५७—पूर्व पद के ‘न्त’ तथा ‘न्तु’ का कहीं कहीं ‘अ’ हो
जाता है । जैसे—

भवंपतिट्ठा अम्हं—भवन्त + पतिट्ठा = भव + पतिट्ठा = (निगहीतं १.३८)
भवं + पतिट्ठा = (वगगे वगन्तो १.४१) भवम्पतिट्ठा मयं । भगवन्तु + मूलका =
भगवम्मूलका नो धम्मा ।

७. अ ३.५८—पूर्वपद के ‘न्तु’ का कहीं २ ‘न्त’ हो जाता है । जैसे—

गुणवन्ता पतिट्ठा मम सोहं—गुणवन्तु + पतिट्ठा = गुणवन्तपतिट्ठो ।

८. मनाद्यपादीनभोमये च ३.५९—‘मय’ प्रत्यय के साथ, तथा समास के
पूर्वपद में स्थित, ‘मन’ आदि तथा ‘आप’ आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट]
शब्दों के अन्त्य स्वर का ‘ओ’ हो जाता है । जैसे—

मनो सेट्ठा एतेसं इति—मनोसेट्ठा । मनसा निव्वत्ता—मनोमया । रजसो
जल्लं—रजोजल्लं (तत्पुरुष) । रजसो विकारो—रजोमयं । आपेसु गतं—
आपोगतं । आपस्स विकारो—आपोमयं । दिसं दिसं* अनुयन्ति—दिसोदिसं
अनुयन्ति ।

* वी च्छा भि व्वञ्जे सु द्वे १.५४—बार बार होने के अर्थ में, एक शब्द-

सास्सत्थं^{११} । साग्गि^{१२} । सदीणा^{१३} खारी । सोदरियो^{१४} । तन्दोपा^{१५} । दुविधो^{१६} ।
द्विगुणं^{१७} । द्दत्तिक्खत्तुं^{१८} ।

को दो वार कहते हैं । जैसे—ख्खं ख्खं सिञ्चति । गामो गामो रमणीयो ।
गामे गामे पानीयं । दिसं दिसं अनुयन्ति = चारो ओर घूमता है ।

[स्या दि लो पो पु व्व स्ते क स्स १.५५—त्रीप्सा के अर्थ में, 'एक' शब्द के
द्वित्व होने पर, पहले की स्यादि विभक्ति का लोप होता है । जैसे—एकस्स एकस्स—
एकेकस्स]

६. इ त्थि य म्भा सि त्त पु मि त्थी पु मे वे क त्थे ३.६७—यदि उत्तर-पद
समानाधिकरण स्त्रीलिङ्ग हो, तो स्त्रीप्रत्ययान्त पूर्वपद पुल्लिङ्ग का रूप ग्रहण
करता है । जैसे—

कुमारी भरिया यस्स सो—कुमारभरियो । दीघा जड्घा यस्स सो—
दीघजड्घो । युवति जाया यस्स सो—युवजायो ।

१०. सह स्स तो, ज्ज त्थे ३.७८—यदि अन्यपद का बोध होता हो, तो
पूर्वपद 'सह' शब्द का विकल्प से 'स' हो जाता है । जैसे—सह पुत्तेन वत्तमानो
सो—सपुत्तो । सहपुत्तो ।

११. स ज्जा यं ३.७९—संज्ञा उत्तर पद में हो, तो पूर्वपद 'सह' शब्द का
नित्य 'स' होता है । जैसे—सह अस्सत्थेन वत्तति—सास्सत्थं । सपलासं ।

१२. अप च क्खे ३.८०—उत्तर पद यदि अप्रत्यक्ष हो, तो पूर्वपद 'सह'
शब्द का नित्य 'स' होता है । सह अग्गिना विज्जमानो—साग्गि कपोतो,
पिसाचो, वातमण्डलिका ।

१३. ग न्या न्ता धि क्खे ३.८२—यदि उत्तर पद ग्रन्थ-वाचक या आधिक्य-
वाचक हो, तो पूर्वपद 'सह' शब्द का 'स' आदेश होता है । जैसे—सकलं जोतिम-
धीते । समुहुत्तं ।

अधिको दोणो अस्साति—सदीणा खारी ।

१४. उद रे इ ये ३.८४—'इय' के साथ 'उदर' शब्द उत्तर पद में हो, तो
पूर्वपद 'समान' का विकल्प से 'स' होता है । जैसे—सोदरियो । समानोदरियो ।

१५. तं म म ज्ज त्र ३.८९—एक वचन में, पूर्वपद 'तुम्ह' तथा 'अम्ह'

[सच्चादीनां वीतिहारे १.५६—परस्पर व्यवहार करने के अर्थ में, 'सच्च' आदि शब्दों का द्वित्व होता है; तथा, पहले की स्यादि विभक्ति का लोप होता है। जैसे—अञ्जमञ्जत्स भोजका। इतरीतरस्स भोजका]

३. तत्पुरुष (अमादि)

§ १०. अमादि ३.१०—'अं' आदि स्याद्यन्त शब्दों का स्याद्यन्त के साथ समास होता है। जैसे—

गामं गतो—गामगतो। मुहुत्तं सुखं—मुहुत्तसुखं। कुम्भकारो। तन्तवायो। वराहरो।

रञ्जा हतो—राजहतो। असिना छिन्नो—असिच्छिन्नो। पितुना सदित्तो—पितुसदित्तो। पितुसमो। सुखेन सहगतं—सुखसहगतं। दधिना उपसित्तं भोजनं—दधिभोजनं। गुल्लेन मिस्सो ओदनो—गुल्लोदनो।

उरसा गच्छति—उरगो। पादेन पिवति—पादपो।

बुद्धस्स देय्यं—बुद्धदेय्यं। यूपाय दारु—यूपदारु। रजनाय दोणि—रजनदोणि। सवरेहि भयं—सवरभयं। गामस्सा निग्गतो—गामनिग्गतो। मेथुनस्सा अपेतो—मेथुनापेतो।

शब्दों का यथाक्रम 'तं' तथा 'मं' हो जाता है। जैसे—त्वं दीपो एसं—तन्दीपा। तंसरणा। तय्योगो। मन्दीपा। मंसरणा। मय्योगो।

१६. विधादि सु द्विस्स दु ३.६१—'विध' आदि शब्द [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] उत्तर पद में हों, तो पूर्वपद 'द्वि' का 'दु' आदेश होता है। जैसे—द्वे विधा पकारा अस्स—दुविधो। द्वे पट्टा अस्स चीवरस्स—दुपट्टं।

१७. दि गुणादि सु ३.६२—'गुण' आदि शब्द [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] उत्तर पद में हों, तो पूर्वपद 'द्वि' का 'दि' आदेश होता है। जैसे—द्वे गुणा अस्स—दिगुणं। द्विन्नं रत्तीनं समाहारो—दिरत्तं। द्विन्नं गुन्नं समाहारो—दिगु।

१८. तीस्व ३ ६३—'ति' शब्द उत्तर पद में हो, तो पूर्वपद 'द्वि' का 'द्व' होता है। जैसे—द्वे वा तयो वा—द्वत्तयो वारे। द्वत्तिपत्तपूरा—दो या तीन पात्र भर कर।

कम्मा जातं—कम्मजं । चित्तजं ।

रञ्जो पुरुसो—राजपुरिसो । चन्दनगन्धो । नदीसोतो । कञ्जारूपं । काय-
सम्पत्सो । फलरसो ।

§ ११. क्व चैक त्त्ञ्च छ द्वि या ३.२२—पठ्ठी-तत्पुरुष समास कहीं
कहीं नपुंसकलिङ्ग एकवचनान्त होता है । जैसे—

सलभानं छाया—सलभच्छायं^{११} । सकुन्तानं छाया—सकुन्तच्छायं । पासा-
दच्छायं, पासादच्छाया ।

समास होने पर, अमनुष्यों की सभा में नपुंसकलिङ्ग एक वचन होता है ।
जैसे—ब्रह्मसभं । देवसभं । इन्दसभं । यक्खसभं । सरभसभं ।

मनुष्यों की सभा में—खत्तियसभा, राजसभा इत्यादि ।

§ १२. तत्पुरुष समास के कुछ विशेष उदाहरण—

इदप्पच्चया^{१२} । पुल्लिङ्ग^{१३} । सत्थारदस्सनं^{१४} । तम्मूखं^{१५} । उदकुम्भो^{१६} ।
दकसोतं^{१७} ।

१६ स्या दि सु रसो ३.२३—विभक्तियों के आने से, नपुंसक बने शब्द
के अन्त्य स्वर का ह्रस्व होता है । जैसे—

सलभच्छायं, सलभच्छायेन, इत्यादि ।

२०. इ म स्ति दं ३.५५—पूर्वपद 'इम' का 'इदं' आदेश हो जाता है ।
जैसे—

इमाय सम्मा पटिपत्तिया अत्थो—इदमदठो । इमेसं पच्चया—इदप्पच्चया ।

२१. पुं पुमस्स वा ३.५६—पूर्वपद 'पुम' शब्द का विकल्प से 'पुं' आदेश
हो जाता है । जैसे—पुमस्स लिङ्गं—पुंलिङ्गं । पुमलिङ्गं ।

पुं+लिङ्गं=(लोपो १.३६) पु+लिङ्गं=(सरम्हा द्वे १.३४) पुल्लिङ्गं ।

२२. ल्लु पि ता दी न मा र ड् र ड् ३.६३—पूर्वपद 'ल्लु' प्रत्ययान्त, तथा
'पितु' आदि शब्दों के अन्त्य स्वर का विकल्प से यथाक्रम, 'आर' तथा 'अर' हो
जाता है । जैसे—

सत्थुनो दस्सनं—सत्थु+दस्सनं=सत्थारदस्सनं । कत्तुनो निद्देसो—कत्तार-

निद्देसो । माता च पिता च—मातरपितरो (द्वन्द्व समास) ।

४. कर्मधारय (एकाधिकरण)

§ १३. वि से स न मे क त्थे न ३.११—स्याद्यन्त विशेषण का अपने स्याद्यन्त विशेष्य के साथ समास होता है । जैसे—

नीलञ्च तं उप्पलं—नीलुप्पलं । मुनि च सो सीहो चाति—मुनिसीहो ।
सीलमेव धनं—सीलधनं । कण्हसप्पो । लोहितसालि ।

§ १४. नञ् ३.१२—'न' के साथ स्याद्यन्त का समास होता है । जैसे—
न ब्राह्मणो—अब्राह्मणो^{११} । अपुनगेय्या गाथा । अनोकासं^{१२} कारेत्वा ।
अमूलामूलं गत्त्वा । नखो^{१३} । नगो^{१४} ।

विकल्प से—सत्युदस्सनं, कत्तुनिद्वेसो, मातापितरो ।

२३. तच्चादयो वृत्ति मत्ते ३.६६—स्यादि तथा तद्धित में, स्त्रीवाचक 'सच्च' आदि शब्द पुल्लिङ्ग-रूप ग्रहण करते हैं । जैसे—

तस्सा मुखं—तम्ममुखं । तस्सं—तत्र । ताय—ततो । तस्सं वेलायं—तदा ।

२४. कुम्भादिसु वा ३.७२—'कुम्भ' आदि शब्द यदि उत्तर पद में हों, तो पूर्वपद 'उदक' शब्द का विकल्प से 'उद' आदेश हो जाता है । जैसे—उदकस्स कुम्भो—उदकुम्भो, उदककुम्भो । उदकस्स पत्तो—उदपत्तो, उदकपत्तो ।
उदकस्स विन्दु—उदविन्दु, उदकविन्दु ।

२५. सोतादिसू लोपो ३.७३—'सोत' आदि शब्द यदि उत्तर पद में हों, तो पूर्वपद 'उदक' शब्द के 'उ' का लोप हो जाता है । जैसे—उदकस्स सोतो—दकसोतं । उदके रक्खसो—इकरक्खसो ।

२६. ट नञ् स्स ३.७४—पूर्वपद 'नञ्' का 'अ' आदेश होता है । जैसे—
न ब्राह्मणो—अब्राह्मणो ।

२७. अन् सरे ३.७५—उत्तर पद यदि स्वर से आरम्भ होता हो, तो पूर्वपद 'नञ्' का 'अन्' आदेश होता है । जैसे—न ओकासं—अनोकासं । न अक्खातं—अनक्खातं ।

२८. नखादयो ३.७६—'नख' आदि शब्द निपात हैं । इन में पूर्वपद 'नञ्' का 'अ' आदेश नहीं होता है । जैसे—नास्स खमत्थि इति—नखो (= नाखून) । नास्स कुलमत्थि इति—नकुलो (= नेवला) ।

§ १५. कु पा द यो नि च्च भ स्या दि वि धि म्हि ३.१३—'कु', 'प' आदि शब्दों के साथ, स्याद्यन्त शब्दों का समास होता है। जैसे—

कुच्छित्तो ब्राह्मणो—कुब्राह्मणो। कुअन्नं—कदन्नं^{१०}। कु लवणं—कालवणं^{११}। कु पुरिसो कापुरिसो^{१२}। ईसकं उण्हं—कट्टुण्हं। पनायको। अभिसेको। पकरित्वा। पकतं। दुप्पुरिसो। दुक्कतं। सुपुरिसो। सुकतं। अभित्युतं।

पगतो आचरियो—पाचरियो। पन्तेवासी। अतिक्कन्तो मञ्चं—अतिमञ्चो। अतिलाभो। अवकुट्ठं कोकिलाय वनं—अवकोकिलं। अवमयूरं। परिगिलानो अज्जेनाय—परियज्जेनो। निग्गतो कोसम्बिया—निककोसम्बि।

§ १६. कर्मधारय समास के कुछ विशेष उदाहरण—पुथुज्जनो^{१३}। साहं^{१४}। सपक्खो^{१५}। पुब्बन्हो^{१६}।

'नख' आदि शब्द ये हैं—नख, नकुल, नपुंसक, नक्खत्त, नाक।

२९. नगो वा प्पा णि नि ३.७७—अप्राणी-वाचक होने से, विकल्प से 'नग' शब्द निपात होता है। जैसे—नगा रूक्खा। अगा रूक्खा। नगा पव्वता। अगा पव्वता। नग = अचल।

३०. सरे कद् कु स्सु त्तर त्थे ३.१०७—उत्तर पद यदि स्वर से आरम्भ होता हो, तो पूर्वपद 'कु' शब्द का 'कद' आदेश हो जाता है। जैसे—कुअन्नं—कदन्नं। कुअसनं—कदसनं।

३१. काप्प त्थे ३.१०८—अल्प होने के अर्थ में, पूर्वपद 'कु' शब्द का 'का' आदेश होता है। जैसे—अप्पकं लवणं—कालवणं।

३२. पुरिसे वा ३.१०९—'पुरिस' शब्द उत्तर पद में हो, तो पूर्वपद 'कु' का विकल्प से 'का' आदेश होता है। जैसे—कापुरिसो, कुपुरिसो।

३३. जने पुथ स्सु ३.६१—'जन' शब्द यदि उत्तर पद में हो, तो पूर्व पद 'पुथ' शब्द के अन्त्य स्वर का 'उ' हो जाता है। जैसे—अरियेहि पुथगेवायं जनो ति—पुथुज्जनो।

३४. सो छस्सा हायतने वा ३.६२—'अह' (=दिन) या 'आयतन' शब्द उत्तर पद में हो, तो पूर्व पद 'छ' शब्द का विकल्प से 'स' आदेश होता है। जैसे—

छन्नं अहानं समाहारो—साहं, छाहं। छन्नं आयतजानं समाहारो—सळा-

१७. संख्या दि ३.२१—आदि में संख्या-वाचक शब्द हो, तो समाहार-समास नपुंसक-लिगान्त होता है। जैसे—

पञ्चन्नं गुन्नं समाहारो—पञ्चगवं । चतुष्पथं ।

५. क्रियार्थ समास

१८. ची क्रियत्ये हि ३.१४—‘ची’ प्रत्ययान्त शब्द के साथ, क्रियार्थ का समास होता है। जैसे—मीलीनीकरिय ।

१९. भूसनादरानादरेस्वलं सासा ३.१५—भूषण के अर्थ में प्रयुक्त ‘अलं’ शब्द, आदर के अर्थ में प्रयुक्त ‘स’ शब्द, तथा अनादर के अर्थ में प्रयुक्त ‘अस’ शब्द के साथ, क्रियार्थ का समास होता है। [देखिए—पृ० १५५] जैसे—
अलंकरिय । सक्कच्च । असक्कच्च ।

२०. अञ्जे च ३.१६—कुछ दूसरे भी शब्दों के साथ क्रियार्थ का समास होता है। जैसे—

पुरोभूय । तिरोभूय । तिरोकरिय । उरसिकरिय । मनसिकरिय । मज्जेकरिय । तुण्हीभूय ।

२१. री रिक्ख के सु ३.८५—‘री’, ‘रिक्ख’ तथा ‘क’ प्रत्ययों के आने से

यतनं, छुट्ठायतनं ।

३५. समानस्स पक्खादिसु वा ३.८३—‘पक्ख’ आदि शब्द उत्तर पद में हों, तो पूर्वपद ‘समान’ शब्द का विकल्प से ‘स’ आदेश होता है। जैसे—समानो पक्खो—सपक्खो, समानपक्खो । सजोति, समानजोति ।

३६. पुव्वं, अपर, अज्ज, साय मज्जे हि अहस्स अन्हो ३.११०—‘पुव्व’ आदि शब्द [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] यदि पूर्वपद हों, तो उत्तरपद ‘अह’ शब्द का ‘अन्ह’ आदेश होता है। जैसे—

पुव्वो अहो—पुव्वन्हो । अपरन्हो । अज्जन्हो । सायन्हो । मज्जन्हो ।

३७. समानञ्ज भवन्तयादितुपमानादिसा कम्मे री रिक्ख का ५.४३—उपमा के अर्थ में ‘समान’ आदि शब्दों से परे, ‘दिस’ = (दिखाई देना) धातु से परे ‘री’, ‘रिक्ख’, तथा ‘क’ प्रत्यय होते हैं। जैसे—

‘समान’ शब्द का ‘स’ आदेश होता है । जैसे—समानो विय दिस्सति—सरी,^{१८} सरिक्खो, सरिसो ।

§ २२. सव्वादीन मा ३.८६—इन प्रत्ययों के आने से, ‘सव्व’ आदि शब्दों के अन्त्य स्वर का ‘आ’ होता है । जैसे—यो विय दिस्सति—यादी, यादिक्खो, यादिसो (=जैसा) ।

§ २३. न्त कि मि मानं टा की टी ३.८७—इन प्रत्ययों के आने से, ‘न्त’, ‘कि’, तथा ‘इम’ का यथाक्रम ‘आ’, ‘की’, तथा ‘ई’ आदेश हो जाता है । जैसे—भवं विय दिस्सति—भवन्त+दिस+री=भवादी । भवादिक्खो । भवादिसो । कीदी, कीदिक्खो, कीदिसो । ईदी, ईदिक्खो, ईदिसो ।

§ २४. तुम्हाम्हानं तामेकस्मिं ३.८८—इन प्रत्ययों के आने से, एकवचन ‘तुम्ह’ तथा ‘अम्ह’ शब्दों का यथाक्रम ‘ता’ तथा ‘मा’ आदेश होता है । जैसे—तादी, तादिक्खो, तादिसो (=तुम जैसा) । मादी, मादिक्खो, मादिसो (=मुझ जैसा) ।

वहुवचन में—तुम्हादी, अम्हादी, इत्यादि ।

§ २५. वेतस्सेट् ३.९०—‘री’, ‘रिक्ख’, तथा ‘क’ प्रत्ययों के आने से, ‘एत’

समानो विय दिस्सतीति—सदी, सदिक्खो, सदिसो । अञ्जादी, अञ्जादिक्खो, अञ्जादिसो । भवादी, भवादिक्खो, भवादिसो । यादी, यादिक्खो, यादिसो । तादी, तादिक्खो, तादिसो ।

३८. रानुवन्धेन्तसरादिस्स ४.१३२—‘र’ अनुबन्ध वाला प्रत्यय आने से, शब्द के अन्त्य स्वर से ले कर शेष अवयव का लोप हो जाता है । जैसे—

कि+रति=क्+अति (‘कि’ शब्द के ‘इ’ का लोप)

क्+अति=कति । कि+रीव=कीव । कि+रीवत्तक=कीवत्तकं । कि+रित्तक=कित्तकं ।

समानो विय दिस्सति—सदिस+री=सदी (‘दिस’ शब्द के ‘इस’ का लोप)

समानारोरीरिक्खकेसु ५.१२५—‘समान’ शब्द से परे, ‘दिस’ का विकल्प से ‘र’ आदेश होता है । जैसे—

सदिस+री=सर+ई=सरी । सदी । सरिक्खो, सदिक्खो । सरिसो, सदिसो ।

शब्द का विकल्प से 'ए' आदेश होता है। जैसे—एदी, एतादी। एदिकखो, एता-दिकखो। एदिसो, एतादिसो।

§ २६. सञ्जाय मुदो दकस्स ३.७१—संज्ञा का अर्थ हो, तो पूर्वपद 'उदक', शब्द का 'उद' आदेश होता है। जैसे—

उदकं घाति इति अस्मि—उदधि^{१९}। उदकं पीयते अस्मि इति—उद-पानं^{२०}।

६. द्वन्द्व

§ २७. चत्वे ३.१६—अनेक स्याद्यन्त शब्दों का, 'श्रीर' के अर्थ में, समास होता है। जैसे—

(क) समाहार^{१९}

इन में नित्य समाहार-समास होता है—प्राणी के अङ्गों में—चक्खु च सोतं च—चक्खुसोतं। मुखनासिकं। हनुगीवं। छविमंसलोहितं। नामरूपं। जरामरणं। वाजों के नाम में—मुरजं च गोमुखं च—मुरजगोमुखं। पटहाळम्बरं। मट्टविकपाणविकं। गीतवादितं। सम्मताळं।

हल के अंगों में—थालपाचनं। युगनङ्गलं।

सेना के अंगों में—असिसत्तितोमरं। अत्तिचम्मं। धनुकलापं। पहरणवरणं।

नित्य-चैरियों में—अहिनकुलं। विळारमूसिकं। काकोलूकं। नागसुपण्णं।

संख्या तथा परिमाण में—एककडुक्कं। डुकतिकं। तिकचतुवकं। चतुवक-पञ्चकं। दसेकादसकं।

३६. दा घा त्वि ५.४५—भाव तथा कारक में, बहुधा 'दा' तथा 'घा' धातु के अन्त्य स्वर का 'इ' होता है। जैसे—आदि, निधि, बालधि, उदधि।

४०. अ नो ५.४८—भाव तथा कारक में, धातु से परे 'अन' का आगम होता है। जैसे—उदपानं, अयादानं, इत्यादि।

४१. समाहारे नपुंसकं ३.२०—समाहार-समास नपुंसक लिङ् होता है

दुद्र जन्तुओं में—कोटपटङ्गं । कुत्थकिपिल्लिकं । डंसमकसं । मक्खिक-
किपिल्लिकं ।

छोटी जातियों में—ओरडिभकसूकरिकं । साकुन्तिकमागविकं । सपाक-
चण्डालं । वेनरथकारं । पुक्कुसछवडाहकं ।

चरण-साधारण में—अतिसभारद्वाजं । कठकालापं । सीलपञ्जाणं । सम-
थत्रिपस्सनं । विज्जाचरणं ।

ग्रन्थों के नाम में—दीघमज्झिमं । एकुत्तरसंयुत्तकं । खन्धकविभङ्गं ।

लिङ्ग विशेषों में—इत्थिपुमं । दासिदासं । तिणकट्टुसाखापलासं ।

विविध विरुद्धों में—कुसलाकुसलं । सावज्जानवज्जं । हीनप्पणीतं । कण्ह-
सुवकं । छेकपापकं । अघरुत्तरं ।

दिशाओं में—पुव्वापरं । दक्खिणुत्तरं । पुव्वदक्खिणं । पुव्वुत्तरं । अपर-
दक्खिणं । अपरुत्तरं ।

नदी के नामों में—गङ्गायमुनं । महीसरभु ।

(ख) समाहार—इतरेतर

इनमें समाहार-समास होता है, और इतरेतर भी—

तृण विशेषों में—कासकुसं, कासकुसा, । उसीरवीरणं, उसीरवीरणा । मुञ्ज-
वव्वजं, मुञ्जवव्वजा ।

वृक्ष विशेषों में—खदिरपलासं, खदिरपलासा । धवास्सकण्णं, धवास्सकण्णा ।
पिलक्खनिग्रोधं, पिलक्खनिग्रोधा । अस्सत्यकपित्थनं, अस्सत्यकपित्थना । साकसालं,
साकसाला ।

पशु विशेषों में—गजगवजं, गजगवजा । गोमहिसं, गोमहिंसा । एणेत्यगोम-
हिसं, एणेत्यगोमहिंसा । एणेत्यवराहं, एणेत्यवराहा । अजेळकं, अजेळका । कुक्कुर-
सूकरं, कुक्कुरसूकरा । हत्थियगवास्सवळवं, हत्थियगवास्सवळवा ।

पक्षी-विशेषों में—हंसवलाकं, हंसवलाका । कारण्डवक्कवाकं, कारण्डवक्क-
वाका । वकवलाकं, वकवलाका ।

धन वाचक शब्दों में—हिरञ्जसुवण्णं, हिरञ्जसुवण्णा । मणिसंखमुत्ता-
वेळुरियं, मणिसंखमुत्तावेळुरिया । जातरूपरजतं, जातरूपरजता ।

धान्य के नामों में—सालियवकं, सालियवका । तिलमुग्गमासं, तिलमुग्ग-
मासा । निष्फावकुलत्थं, निष्फावकुलत्था ।

व्यञ्जनों में—साकसुवं, साकसुवा । गव्यमाहिसं, गव्यमाहिता । एणेय्यवाराहं,
एणेय्यवाराहा । मिगमायूरं, मिगमायूरा ।

जनपदों में—कासिकोसलं, कासिकोसला । वज्जिमल्लं, वज्जिमल्ला । चेत्ति-
विसं, चेत्तिविता । मच्छसूरसेनं, मच्छसूरसेना । कुरुपञ्चालं, कुरुपञ्चाला ।

(ग) इतरेतर

इनमें इतरेतर-समास होता है—

चन्दिमो च सुरियो च—चन्दिमसुरिया । समणो च ब्राह्मणो च—समण-
ब्राह्मणा । मातापितरो^{४२} । पितापुत्ता^{४३} । जयम्पती^{४४} ।

४२. विज्जा यो नि स म्ब न्धा न मा तत्र च त्थे ३.६४—विद्या तथा योनि
के सम्बन्ध-वाचक ल्तुप्रत्ययान्त तथा 'पितु' आदि शब्दों के अन्त्य स्वर का 'आ'
होता है, यदि उनका वैसे ही शब्दों के साथ द्वन्द्व समास हो । जैसे—

होता च पोता च—होतापोतारो । मातापितरो ।

४३. पुत्ते ३.६५—विद्या तथा योनि के सम्बन्ध-वाचक ल्तुप्रत्ययान्त,
तथा 'पितु' आदि शब्दों के अन्त्य स्वर का 'आ' होता है, यदि उन का समास 'पुत्त'
शब्द के साथ हो । जैसे—पिता च पुत्तो च—पितापुत्ता । माता च पुत्तो च—
मातापुत्ता ।

४४. जा या य जयं प ति म्हि ३.७०—'पति' शब्द यदि उत्तर पद में हो,
तो पूर्व पद 'जाया' शब्द का 'जयं' आदेश हो जाता है । जैसे—जाया च पति
च—जयम्पती ।

३१. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क) यावजीवं, यथासत्ति, अन्तोपासादं वा, अन्तोनगरं वा, वहि-नगरं वा, पुरे-भत्तं वा, पच्छा-भत्तं वा, कायगता-सति उपट्टापेतव्वा । इद्धिया तिरोकुड्डं वा तिरोपाकारं वा गन्तुं सक्कोति । अनुलोमं पटिलोमं मनसि-कातव्वं ।

(ख) (अम्बपाली-गाथातो) (पुरे) कालका भमर-वण्ण-सदिसा वेल्लितग्गा मम मुद्धजा (केसा) अहु । (इदानि) ते जराय साणवास-सदिसा । पुप्फ-पूरं मम उत्तमङ्गं, तं जराय ससलोम-गन्धिकं । काननं व सहितं सुरोपितं कोच्छ-सूचि-विचित्तग्ग-सोभितं तं जराय विरळं तहिं तहिं । सण्ह-गन्धक-सुवण्ण-मण्डितं सोभते सु वेणिहि (वेणीहि) अलङ्कतं, तं जराय खलति सिरं कतं । वट्ट-पलिघ-सदिसोपमा उभो सोभते सु वाहापुरे मम, ता जराय यथा पातली दुव्वलिका । सण्ह-मुद्धिका-सुवण्ण-मण्डिता हत्था मम, ते जराय यथा मूल-मूलिका । तूल-पुण्ण-सदिसोपमा पादा मम जराय फुटिका वलीमता । पीन-वट्ट-पहितुग्गता थनका मम रिन्दी व लम्बन्ते' नोदकां । एदिसो अहु अयं समुस्सयो जज्जरो बहुदुक्खानं आलयो । सो' पलेप-पतितो जरागतो, 'सच्चवादि-वचनं (बुद्ध-वचनं) अनञ्जथा ति ॥ (अञ्जथा न होती ति अम्बपाली-गाथा ।) सुवुत्तवादी द्विपदान-मुत्तमो, महाभिसक्को नरदम्म-सारथि । चित्तं चलं मक्कट-सन्निभं । अवीत-रागेण सुदुब्बिवारियं ति ॥

(ग) माला-गन्ध-विलेपन-धारण-मण्डन-विभूसनट्टाना पटिविरतो होति ।

सत्ताहं चतुसच्चं तिलक्खनेन भावेतव्वं । विकाल-भोजना, अदिन्ना-दाना मुसा-वादा, पटिविरतेन भवित्तव्वं । दीपङ्करो भगवा सत-सहस्स-छळ्ळभिञ्ज-खीणासव-भिक्खूहि अञ्जसं (मग्गं) पटिपज्जि । दिट्ठ-धम्म-सुख-विहारिनो च अपगत-भयभेरवा च कत-करणीया च बुद्ध-पुत्ता विहरन्ति । चीवर-पिण्ड-पात-सेनासन-गिलान-पच्चय-भैसज्ज-परिक्खारा समुदानेतव्वा । वोसंसा-समाधि-पधान-संखार-समन्नागतं इद्धि-पादं भावेतव्वं । ओट्ट-पहूत-मत्तेन लपित-त्तापन-मत्तेन तावतकेनेव ज्ञाणवादं थेरवादं न वत्तव्वं । भगवा हि उत्तरि-मनुस्स-धम्मा अल-

मरिय-जाण-इस्सन-विसेसं अज्झगमा । एकन्त-परिपुण्णं एकन्त-परिसुद्धं संख-
लिखितं ब्रह्मचरियं चरित्तुं अगारं अज्झावसता न सुकरं होति । राग-दोस-मोहा-
पमाद-करणे ते खीणासव-भिक्षुनो पहीना उच्छिन्न-मूला ताला-वत्थु-कर्ता
अनभावकता आर्यति अनुप्पाद-धम्मा । सञ्जा-वेदयित-निरोध-समापत्तिया वुट्टु-
हन्तस्स भिक्षुनो विवेक-निभं चित्तं होति विवेक-पोणं विवेक-पवभारं ति ।
निव्व्वाणोगधं हि ब्रह्म-चरियं (तथागतप्पवेदित-धम्म-विनये) निव्व्वाण-परायणं
निव्व्वाण-परियोसानं ति ।

२ ऊपर के काले शब्दों का विग्रह कीजिए; और उनके समास बताइए ।

३. हिन्दी में अनुवाद कीजिए । काले छपे अंशों के लिए एक ही पद (समास)
का व्यवहार कीजिए—

उसके कपड़े लाल हैं । यह कमल नीला है । यह लम्बे कान वाला है ।
उसकी कीर्ति बहुत बढ़ी है । वह हाथ में तलवार लिए है । वह सोने के गहने
पहने हुए है । इस जङ्गल में बड़े मतवाले हाथी हैं । यह काम बहुत बुरा है ।
इसके पत्ते गिर गये हैं । पानी भरा घड़ा यहाँ है । उसके पास दूध है । भोजन
कुछ कुछ गरम है । शक्ति के अनुसार काम करता है । वृक्ष पर वानर चढ़े हैं ।
लड़के पढ़ा दिये गये हैं । बड़ी विचित्र गायें रखने वाला आदमी है । चश्मे की
ओर जाता है । ब्राह्मणों की सभा में गया था । उसका आदमी है । दो नाम
वाला ग्वाला आ गया है । एक दूसरे का जोड़ा मिल गया । वह मेरा सगा भाई
है । आप का नाम क्या है ? धुकती आग में थोड़ा घी डालिये । वह गुड़ से
मिला हुआ चावल खाता है । इस दरख्त के फल पक गये हैं । वह अपने पिता
के समान है । उसको कोई लड़का नहीं है ।

४. निम्नलिखित शब्दों का विग्रह कीजिए, तथा उनके नियमों का निर्देश
कीजिए—

जयम्पती । मिगमायूरं । पिलक्खनिग्रोध । कुक्कुरसूकरा । गङ्गायमुनं ।
अधरुत्तरं । इत्थिपुमं । एककदुकं । विळारमूसिकं । मादिकखो । सरिक्खो । अलं-
करिय । सक्कच्च । पञ्चगवं । अवकोकिलं । अपुनगेय्या । लोहित सालि ।
नदीसोतो । चित्तजं । यूपदारु । उरगो । दधिभोजनं । तन्तवायो । साग्गि ।

दिगुणं । चित्तगु । अपुत्तो । पपण्णो । अतिथखीरा । जित्तिन्द्रियो । वजिरपाणि । साय-
मृगं । अधोगङ्गं ।

५. समास कौजिए—

अनु + रथ । पटि + स्रोत । बहूनि धनानि यस्स । तयोदस परिमाणं येसं ।
पितुना सदिसो । सवरेहि भयं । न कुसलं । निग्गतो कोसम्बिया । परिगिलानो
अज्जेनाय । कुच्छित्तो पुरिसो । पच्चन्नं गुन्नं समाहारो । कम्मा जातं । गामा निग्गतो ।
चित्ता गावो अस्स । परि पव्वतं वस्सि देवो । दिन्नं भोजनं यस्स सो । नीलं उप्पलं ।

छठा काण्ड

चौथा पाठ

समासान्त प्रत्यय

अ

§ १. समासन्त्व ३.४० : पापादी हि भूमिया ३.४१—'पाप' आदि शब्दों के साथ, जब 'भूमि' शब्द का समास होता है, तो उस से परे 'अ' प्रत्यय होता है। जैसे—

पापा भूमि यस्मि ठाने—पापभूमि + अ = पापभूमं । जातिया उपलब्धिता भूमि यस्मि ठाने—जातिभूमि + अ = जातिभूमं ।

§ २. संख्या हि ३.४२—संख्या-वाचक शब्दों के साथ, जब 'भूमि' शब्द का समास होता है, तो उससे परे 'अ' प्रत्यय होता है। जैसे—

द्वे भूमियो अस्स भवनस्स—द्विभूमं । तिभूमं ।

§ ३. नदी गोदावरी नं ३.४३—संख्या-वाचक शब्दों के साथ, जब 'नदी', तथा 'गोदावरी' शब्दों के साथ समास होता है, तो उससे परे 'अ' प्रत्यय होता है। जैसे—

पञ्चन्नं नदीनं समाहारो—पञ्चनदं । सत्तन्नं गोदावरीनं समाहारो—सत्तगोदावरं ।

§ ४. अ संख्ये हि चाङ्गुल्या नञ्ज संख्यत्थे सु ३.४४—यदि बहुव्रीहि या अव्ययीभाव समास न हो, तो अव्यय तथा संख्यावाचक शब्दों के साथ 'अङ्गुली' शब्द का समास होने से, उससे परे 'अ' प्रत्यय होता है। जैसे—

निगगतं अङ्गुलीहि—निरङ्गुलं । अच्चङ्गुलं । द्वे अङ्गुलियो समाहरा—द्वङ्गुलं ।

§ ५. दीघा हो वस्से क दे से हि च रत्या ३.४५—संख्यावाचक शब्द, तथा 'दीघ', 'अहो', 'वस्स', 'एक', और 'देस' के साथ 'रत्ति' का समास होने से,

उससे परे 'अ' प्रत्यय होता है। जैसे—

दीघा च सा रत्ति चात्ति—दीघरत्तं। अहो च रत्ति चात्ति—अहोरत्तं।
वस्सासु रत्ति—वस्सारत्तं। पुब्वा च सा रत्ति चात्ति—पुब्वरत्तं। अपपरत्तं।
अड्ढा च सा रत्ति चात्ति—अड्ढरत्तं। अतिकन्तो रत्ति—अतिरत्तो। द्वे रत्ती
समाहारा—द्विरत्तं। एकरत्तं, एकरत्ति।

§६. गोत्व च त्ये चालो पे ३.४६—यदि द्वन्द्व, बहुव्रीहि, या अव्ययीभाव
न हो, तो समास होने पर 'गो' शब्द से परे 'अ' प्रत्यय होता है। जैसे—

रञ्जो गो—राजगवो। परमो गो—परमगवो। पञ्च गावो धनं अस्स—
पञ्चगवधनो। दसन्नं गुन्नं समाहारो—दसगवं।

§७. रत्ति न्दि व दार ग व च तुर स्ता ३.४७—निम्नलिखित समासान्त
निपात हैं—

रत्तो च दिवा च—रत्तिन्दिवं। रत्ति च दिवा च रत्तिन्दिवं। दारा च गावो
च—दारगवं। चतस्सो अस्सियो अस्स—चतुरस्सो। 'अनुगवं सकटं=बैल के
वरावर हीं लम्बी गाड़ी।

§८. अक्खि स्मा ञ्ज त्ये ३.४९—बहुव्रीहि समास में, 'अक्खि' शब्द से
परे, 'अ' प्रत्यय होता है। जैसे—

विसालानि अक्खीनि यस्स सो—विसालक्खो।

§९. दारु म्हा इग्गु ल्या ३.५०—बहुव्रीहि समास में, 'दारु' समझे जाने
पर, अङ्गुली शब्द से परे 'अ' प्रत्यय होता है। जैसे—

द्वे अङ्गुलियो अवयवा अस्स—द्वङ्गुलं दारु=पुथाल तृण आदि बटोरने के
लिए दो अङ्गुलियों वाली बनी लकड़ी। पञ्चङ्गुलं दारु।

§१०. चि वी ति हारे ३.५१—क्रिया का व्यतिहार (=अदला का बदला)
समझा जाय, तो बहुव्रीहि समास में 'चि' प्रत्यय होता है। 'चि' का 'इ' रह जाता
है। जैसे—

केसाकेसी=भोंटाभोंटी। दण्डादण्डी=लाठालाठी।

१ आयामे नुगवं ३.४८—निपात।

२. तत्य गहेत्वा तेन पहरित्वा युद्धे सरूपं ३.१८—'उसे पकड़ कर, उससे

क

§ ११. लित्त्वं लित्त्वं यु हि को ३.५३—बहुव्रीहि समास में, 'लु' प्रत्ययान्त, तथै
स्त्रीलिङ्ग ईकारान्त-ऊकारान्त शब्दों से परे बहुधा 'क' प्रत्यय होता है। जैसे—
बहवो कत्तारो एतस्स—बहुकत्तुको। बहू कुमारियो एतस्मिं गामे—बहु-
कुमारिको गामो। बहू ब्रह्मवन्तू एतस्मिं गामे—बहुब्रह्मवन्धुको गामो।

§ १२. वाञ्ज तो ३.५३—और भी स्थानों में विकल्प से 'क' प्रत्यय होता
है। जैसे—

बहुमालको, बहुमालो।

मार मार कर, जैसे युद्ध करता है'—इस अर्थ में समास होता है। जैसे—

केसेसु च केसेसु च गहेत्वा युद्धम्पवत्तं—केसाकेसी। दण्डेहि च दण्डेहि च
पहरित्वा युद्धम्पवत्तं—दण्डादण्डी। मुट्टामुट्ठी।

चिंस्मि ३.६६—'चि' प्रत्यय आने से, उत्तर पद से पहले 'आ' का आगम
होता है। जैसे—दण्डादण्डी। मुट्टामुट्ठी।

पञ्चादि-वृत्ति
(अणादि)

मोग्गल्लान 'ण्वादि'-वृत्ति

णु

१. च र, द र, क र, र ह, ज न, स न, त ल, सा द, सा ध, क स, अ स, च ट, अ स, वाहि णु—इन धातुओं से परे, बहुधा 'णु' प्रत्यय होता है। 'णु' का 'उ' रह जाता है।

'अस्सा णानुब्ध' ५.८४—इस सूत्र से, धातु के उपान्त 'अ' का 'आ' हो जाता है। जैसे—

चरति हृदये मनुञ्जभावेनाति—चर+णु=चारु=सुन्दर। दरीयतीति—
 ▲दारु=लकड़ी। करोति इति—कारु=शिल्पी, इन्द्र, विश्वकर्मा। रहति, चन्दादीनं
 सोभाविसेसं नासेतीति—राहु=असुरेन्द्र। जायति गमनागमनं अनेनाति—
 जाणु=घुटना। सनेति, अत्तनि भत्ति उप्पादेतीति—सानु=जो अपने में भक्ति
 उत्पन्न करावे—पहाड़ की चोटी। तलन्ति, पतिट्ठहन्ति एत्थ दन्तानि—तालु।
 सादीयति अस्सादीयतीति—साट्टु=मधुर। साघेति अत्तपरहितं इति—साधु=
 सज्जन। कसीयतीति—कासु=गढ़ा। असति, सीघभावेन पवत्ततीति—आसु=
 शीघ्र। चटति, भिन्दति अमुञ्जभावन्ति—चाट्टु=खुसामद। अयन्ति, पवत्तन्ति
 सत्ता एतेनाति—आसु=प्राण।

'आ स्सा णा पि म्हि युक्' ५.९१—इस सूत्र से, 'आकारान्त' धातु से परे, 'य' का आगम होता है। जैसे—

वाति गच्छति इति—वायु=हवा।

२. भ, र म र, च र, त र, अ र, ग र, घ र, ह न, त न, म न, भ म, कि त,
 ध न, व ह, क म्ब, अ म्ब, इ क्ख, च क्ख, भि क्ख, सं क, इ न्द, अ न्द, य ज, प ट,

अण, अत्त, वत्त, पत्त, पंस, वन्धा उ—इन धातुओं से परे 'उ' प्रत्यय होता है। जैसे—

भरतीति—भरु=पति । भरति रूपकायेन सहेवाति—भरु=देव, निर्जल देश । चरीयति, भक्खीयतीति—चरु=हृद्यपाक । तरन्ति अनेनाति—तरु=वृक्ष । अरति, सून-भावेन उट्ठं गच्छतीति—अरु=व्रण । गरति, सिञ्चति, गिरति, वमति वा सिस्सेसु सिनेहन्ति—गरु, या गुरु । हनति, ओदनादिसु दण्णविसेसं नासेतीति—हनु=ठुड्ढी । तनोति संसारदुक्खन्ति—तनु=शरीर । मञ्चति सत्तानं हिताहितं इति—मनु=प्रजापति । भमति, चलतीति—भमु=भाँ । केतति, उट्ठं गच्छति, उपरि निवसतीति—केतु=ध्वजा । धनति, सहं करोतीति—धनु=चाप । वंह इति निद्देसा उम्ह् निच्चं निग्गहीत लोपो—वंहति, वुद्धि गच्छतीति बहु=अधिक । कम्बति, संवरणं करोतीति—कम्बु=शङ्ख । अम्बति, अभिनादं करोतीति—अम्बु=जल । चक्खति रूपन्ति—चक्खु=आँख । भिक्खतीति भिक्खु=श्रमण । सङ्कीयतीति—सङ्कु=शूल । इन्दति, नक्खत्तानं परमिस्सरियं पवत्तेतोति—इन्दु=चाँद । अन्दति, वन्वति सत्ता एतायाति—अन्दु=जंजीर । यजन्ति अनेनाति—यजु=वेद । पटति, व्यत्तभावं गच्छतीति—पटु=विचक्षण । अणति, सुखुमभावेन पवत्ततीति—अणु=सूक्ष्म, धान्य विशेष । असन्ति, पवत्तन्ति सत्ता एतेहि—असवो=प्राण । सुखं वसन्ति अनेनाति—वसु=वनं । पसीयति, वाधीयति सामिकेहीति—पसु=चतुष्पाद । पंसति, सोभाविसेसं नासेतीति—पंसु=धूल । वन्धीयति सिनेहभावेनाति—वन्धु=वान्धव ।

ऊ

३. वन्धा ऊ व धो च—'वन्ध' धातु से परे 'ऊ' प्रत्यय होता है; और 'वन्ध' का 'वध' आदेश हो जाता है। जैसे—पञ्चहि कामगुणेहि अत्तनि सत्ते वन्धतीति—वधु=वहू ।

४. जम्बा द यो—'जम्बू' आदि 'ऊ' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं ।

निपातनं—अप्पत्तस्स पापनं, पत्तस्स पापनं, पत्तस्स पटिसेधो च । जनिस्मा ऊ वुचागमो । 'मनानं निग्गहीतं' ५.२६—इस सूत्र से 'जन' धातु के

'न' का निगगहीत हो गया । फिर, 'वग्गे वग्गन्तो' १.४१—इस सूत्र से निगगहीत का 'म' हो गया । जैसे—

जायति, जनीयतीति वा—जन + ऊ = जन्मू = वृक्ष ।

'भम' धातु के 'अम' का लोप हो जाता है । जैसे—भमति कम्पति—भू या भमु ।

करोतिस्मा ऊ । तस्स 'कन्वु' चागमो । 'पररूप-भयकारे व्यञ्जने ५.६५—इति धात्वन्तस्स व्यञ्जनस्स पररूपत्तं । रुधिरप्पादं करोतीति—कक्कन्धु = वैर का फल ।

आलम्बति, अवसंसतीति—अलावू = तुम्बा ।

सर = गतिर्हिंसाचिन्ताद्यु । सरति गच्छतीति—सरभू = एक नदी का नाम । सरति, पाणे हिंसतीति—सरयू = क्षुद्र जन्तु विशेष ।

चम = अदने । चमति, भक्कति निवापनन्ति—चमू = सेना ।

तन = वित्यारे । तनोति संसारदुःखन्ति—तनू = शरीर इत्यादि ।

कु

५. तपुसवीधकुरपुधमुदा कु—इन धातुओं से परे 'कु' प्रत्यय होता है । 'कु' का 'उ' रह जाता है । जैसे—

तापीयतीति—तिपु = सीसा । उसति, दाहं करोतीति—उसु = बाण ।

वेचति रंसीहि तिभिरन्ति—विधु = चन्द्र । कुरति, किच्चाकिच्चं वदतीति—

कुरु = राजा । कुरवो = जनपदा । पुथति, महन्तभावेन पत्यरतीति—पुयु = विस्तार ।

मोदनं, मुदीयतीति वा—मुदु = नरम ।

६. सिन्धा दथो—'सिन्धु' आदि 'कु' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं । जैसे—

सन्दति, पत्तवतीति—सिन्धु = नदी । वहन्ति अनेनाति—बाहु । वधति,

उपह्वे निवारेतीति—बाहु = भुजा । रंघति, पवत्तति राजवम्मेति—रघु =

राजा । विन्दन्ति, अनेन नन्दन्तीति—विन्दु = कणिका । मञ्जति, जायति मधुर

न्ति—मधुः अयवा, मधुकरीहि कतं—मधु । रपति, जप्पति मन्तन्ति—रिपु =

शत्रु । ससति, जीवतीति—सुसु = शिशु । अरति, महन्तं भावं गच्छति इति—

उरु = वड़ा । अरन्ति अनेनाति—ऊरु = जाँघ । आखञ्जतीति—आखु = चूहा ।

तरतीति—थरु=तलवार की मूठ । लङ्घति, पवत्तति लघुभावेनाति—लघु=हलका । भञ्जति विसेसेनाति—पभङ्गु=अङ्कुर । ठाति, पवत्तति सुन्दरभावेनाति—मुट्ठु=अच्छा । ठाति, पवत्तति असुन्दरभावेनाति—डुट्ठु=बुरा इत्यादि ।

इ

७. इ—धातु से परे बहुधा 'इ' प्रत्यय होता है । जैसे—

असति, खिपीयतीति—असि=तलवार । कसीयतीति—कसि=कृषि । आमसीयतीति—मसि=राख । कु=सद्दे; ओस्स अवादेशो; कव्यति, कथेतीति—कवि । रवति, गज्जतीति—रवि=सूर्य । सप्पति, पवत्ततीति—सप्पि=घी । गन्थेतीति—गण्ठि=गाँठ । राजति, पवत्ततीति—राजि=पंक्ति । कलीयति, परिमीयतीति—कलि=पाप । वलन्ति, जीवन्ति अनेनाति—वलि=कर । थनति नदतीति—थनि=शब्द । अच्चीयति, पूजीयतीति—अच्चि=ज्वाला । वलनं सङ्कोचनं—वलि=सिकुड़न । वल्लीयन्ति संवरीयन्ति सत्ता एतायाति—वल्लि=लता इत्यादि ।

८. द ध्या द यो—'दधि' आदि 'इ' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं । जैसे—
घतमादधातीति—दधि=दही । अंहति, गच्छतीति—अहि=साँप । कम्पति, चलतीति—कपि=वानर । मनति जानातीति मुनि=श्रमण । मनति, महग्घभावं गच्छतीति—मणि=रत्न । इक्खति अनेनाति—अक्खि=आँख ('इक्ख' के 'इ' का 'अ' हो गया) । कमति, यातीति—किमि=कीड़ा ('कम' का 'किम' हो गया) । तुरित्तो तरति यातीति—तित्तिरि=पक्षी । कीळनं—केळि=क्रीड़ा । उस्सति, दहतीति—उक्खलि=भाजन इत्यादि ।

कि

९. यु व ण्णु प न्ता कि—जिन धातुओं के उपान्त में 'इ' या 'उ' रहे, उनसे परे बहुधा 'कि' प्रत्यय होता है । 'कि' का 'इ' रहता है । जैसे—

सीलं इच्छतीति—इसि=तपस्वी । गिरति, पसवति छविमंससारभूतं भेसज्जा-

दीनि—गिरि—पहाड़ । सूचेति सुन्दरत्तन्ति—सुचि—पवित्र । वृन्ति एतायाति
वृचि—अभिलाषा इत्यादि ।

१०. व प, व र, व स, र स, न भ, ह र, ह न, प णा, इ ण्—इन धातुओं
से परे 'इण्' प्रत्यय होता है । जैसे—

वपन्ति एतायाति—वापि—जलाशय । वारेन्ति एतेनाति—वारि—जल ।
वसन्ति एतायाति—वासि—बसुला । रसीयति, अस्सादनवसेन समोसरीयतीति—
रासि—समूह । नमति, हिस्रतीति—नाभि । हारेतीति—हारि—मनोज्ञ । हनन्ति
एतेनाति—घाति—हथियार । पणति, वोहरतीति—पाणि—प्राणी । पणति,
वोहरति एतेनाति वा—पाणि—हाथ ।

ईण

११. भू ग मा ई ण्—'भू' तथा 'गम' धातुओं से परे, भविष्यत्काल में, 'ईण'
प्रत्यय होता है । जैसे—भविस्सतीति—भावी—होने वाला । गमिस्सतीति—
गामी—जाने वाला ।

ई

१२. त न्द ल क्खा ई—इन धातुओं से परे, 'ई' प्रत्यय होता है । जैसे—
तन्दनं—तन्दी—आलस्य । लक्खीयन्ति सत्ता एतायाति—लक्खी—श्री ।

रो

१३. ग मा रो—'गम' धातु से परे, 'रो' प्रत्यय होता है । 'रो' का 'ओ'
रह जाता है ।

रानुबन्धेन्तसरादिस्स ४.१३२—इस सूत्र से 'गम' के 'अम' का लोप हो
गया । जैसे—

गच्छतीति—गो—पशु ।

क

१४. इ भी का क र अ र व क स क वा हि को—इन धातुओं से परे, 'क'
प्रत्यय होता है । जैसे—

एति पवत्ततीति—एको=असहाय । भायन्ति अस्मा इति—भेको=मेढक । काति, सहं करोतीति—काको=कौआ । करोति वण्णन्ति—कक्को=एक तरु का रंग । अरति, यातीति—अक्को=सूरज । वकति, ओदनमाददातीति—वक्कं=देहकोट्टासविसेसों । सक्कोतीति—सक्को=इन्द्र । वाति, वन्वति एतेनाति वाको=बल्कल ।

१५. ऊ का द यो—'ऊका' आदि, 'क' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं । जैसे— ऊहीयति विचिनीयतीति—ऊका=जूं । उन्दति, द्रवं करोतीति—उदकं=जल । भायति एतस्माति—भीको=भीर । सक्कोति घारेतुन्ति—सिक्का=सिकहर । हीयति सावूहि—हाको=क्रोध । सम्बति, उदकं मण्डेतीति—सम्बुको=जलजन्तु विशेष । पुथति, पत्थरति अत्तनो बालभावं—पुयुको=मूर्ख । सोचन्ति एतेनाति—सुक्कं=उजला । उपचिनन्तीति—उपचिका=दीमक । कम्पति, चलतीति—पङ्को=कीचड़ ('कम्प' का 'पं' आदेश) । उसतीति—उक्का=ज्वाला । उसति, दहतीति—उम्मुकं=अलात । वमीयतीति—वम्मिको=दीयंड । मसीयति पेमेनाति—मत्त्यकं=शिर ('स' का 'त्य' होता है) ।

आनक

१६. भी त्वा न को—'भी' धातु से परे 'आनक' प्रत्यय होता है । जैसे— भायन्ति एतस्मा ति—भयानको ।

आणिक, आटक

१७. सिङ्घा आ णि का ट का—'सिंघ' धातु से परे 'आणिक' तथा 'आटक' प्रत्यय होते हैं । जैसे—

सिङ्घायति पस्सवतीति—सिङ्घाणिका=नाक का पीटा । सिङ्घति एकीभावं यातीति—सिङ्घाटकं=चौराहा ।

अक

१८. क रा दि त्व को—'कर' आदि धातुओं से परे, 'अक' प्रत्यय होता है । जैसे—

करोयतीति—करको = कमण्डलु । करोतीति—करको = वस्सोपलो । सरति
 झुदकमेत्याति—सरको = जल पीने का भाजन । नरन्ति पापुणन्ति सत्ता एत्याति—
 नरको । तरन्ति अनेनाति—तरको = तरण । वारेतीति—वरको = वरण करना,
 धान्यविशेष । जनेतीति—जनको = पिता । कनति दिव्वतीति—कनकं = सोना ।
 कटति, मटति निवारैति रिपवोति—कटकं = नगर । कुरतीति कोरको =
 कली । थवोयतीति—थवको = गुच्छा ।

१९. व ल प ते ह्या को—'वल' तथा 'पत' धातु से परे 'अक' प्रत्यय होता
 है । जैसे—

वलति जीवतीति—बलाका = पक्षी-विशेष । पतति, यातीति—पताका ।

२०. सा मा का द यो—'सामाक' आदि, 'आक' प्रत्ययान्त शब्द निपात
 हैं । जैसे—

साति, देहं तनुं करोतीति—सामाको = तृण धान्य । पिवति रत्तन्ति—
 पिनाको = शिव का धनुष, । गवति, नदति एतेनाति—गुवाको = सुपारी ।
 पटति, यातीति पटाका = पताका । सलति, यातीति—सलाका = शलाका, वैद्यों
 के चीर-फाड़ के लिए । विदति, जानातीति—विदाको = विद्वान् । पणीयाति,
 वोहरीयतीति—पिञ्जाको = तिलका पीना, खरी ।

किक

२१. वि च्छा ल ग म मु सा कि को—'विच्छ', 'अल', 'गम', तथा 'मुस'
 धातुओं से परे 'किक' प्रत्यय होता है । जैसे—विच्छति, यातीति—विच्छिको =
 विच्छू । अलति, वन्धति एतेनाति—अलिकं = असत्य । गच्छतीति—गमिको =
 जाने वाला । मुसति, थनेतीति—मूसिको = चूहा ।

२२. कि क णि का द यो—'किकणिका' आदि 'किक' प्रत्ययान्त शब्द निपात
 हैं । जैसे—

कणति, सद्ं करोतीति—किकणिका = छोटी घण्टियाँ । मुदन्ति एतायाति—
 मुद्दिका = अंगूठी, फल विशेष । महीयति पूजीयतीति—महिका = हिम । कली-
 यति, परिभीयतीति—कलिका = कली । सप्पति, गच्छतीति—सिप्पिका =
 सीपी इत्यादि ।

कीक

२३. इ सा की को—'इस' धातु से परे 'कीक' प्रत्यय होता है। जैसे—
इच्छीयतीति—इसीका=सीक ।

णुक

२४. क म प दा णु को—'कम', तथा 'पद' धातुओं से परे, 'णुक' प्रत्यय होता है। जैसे—

कामेतीति—कामुको=कामी । पज्जति, याति एतायाति—पादुका=खड़ाऊँ ।

णूक

२५. म ण्ड स ला णू को—'मण्ड', तथा 'सल' धातुओं से परे, 'णूक' प्रत्यय होता है। जैसे—

मण्डेति, जलं भूसेतीति—मण्डूको=मेढ़क । सलति, गोचरतं उपयातीति—सालूकं=उत्पलकन्द ।

२६. उ लू का द यो—'उलूक' आदि 'णुक' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

उलति, गवेसतीति—उलूको=उल्लू । मञ्जतीति—मञ्जुको=वृक्ष ('मन' के 'न' का 'ध' हो गया) । जलतीति—जलूका=जोंक इत्यादि ।

सक

२७. क सा स को—'कस' धातु से परे, 'सक' प्रत्यय होता है। जैसे—
कस्सतीति—कस्सको=कृपक ।

तिक

२८. क रा ति को—'करोति' से परे, 'तिक' प्रत्यय होता है। जैसे—
करोन्ति कीळं एत्थाति—कत्तिका=कार्तिक ।

ठकण्

२६. इसा ठकण्—'इस' धातु से परे, 'ठकण्' प्रत्यय होता है। जैसे—
इच्छीयतीति—इड्का = ईट ।

ख

३०. समा खो—'सम' धातु से परे, 'ख' प्रत्यय होता है। जैसे—
उपसमेतीति—सङ्खो = शङ्ख ।

३१. मुखादयो—'मुख' आदि, 'ख' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—
मुनन्ति, वन्धन्ति एतेनाति—मुखं ।

सयन्ति एत्य ऊका कुमुमादयो वाति—सिखा = चूड़ा। विसन्ति एत्य, पवि-
सन्ति वाति—विसिखा = गली। कनति, दिप्पतीति—निक्खो = सुवण्णविकारो।
मयति यातीति—मयूखो = किरण। लुनाति, छिन्दति सोभन्ति—लूखो = ह्वा।
अरन्ति, यन्ति एतेनाति—अक्खो = अक्ष, पासा। यसति, पयतति वलिमाहरणत्या-
याति—यक्खो = यक्ष। रूहति, जनेतीति—रूक्खो = वृक्ष। उसति, दहति कायगि-
नाति—उक्खो = वैल। सहति, अत्तनि कतापराधं खमतीति—सखो = मित्र
इत्यादि ।

गक्

३२. अज वज मुद गद गमा गक्—इन धातुओं से परे, 'गक्' प्रत्यय
होता है। जैसे—

अजति, गच्छति सेट्टभावन्ति—अग्गो = अगुआ। वजति, समूहत्तं गच्छतीति—
वग्गो = समूह। मुदन्ति एतेनाति—मुग्गो = मूंग। गदतीति—गग्गो = एक
ऋषि। गच्छतीति—गङ्गा ('मनानं निग्गहीत्तं ५.९६—इस सूत्र से 'गम' धातु के
'म' का अनुस्वार हो गया) ।

३३. सिङ्गादयो—'सिङ्ग' आदि, 'गक्' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं।
जैसे—

सयति, पवत्तति मत्यके ति—सिङ्गं = सींग ('सी' धातु का ह्रस्व हो गया;
और निग्गहीत का आगम हुआ)। फुरति, चलतीति—फुलिङ्गो—चिनगारी।

उच्चलति, कम्पतीति—उच्चालिङ्गो = एक उजला कीड़ा । कलति, नादं करोति
 बहुराजिकायाति—कलिङ्गो = दक्खिणापथो । भमतीति—भिङ्गो = भौरा । पत-
 न्तो गच्छतीति—पटङ्गो, पटगो = फर्तिगा ।

गि

३४. अ ग गि—अग = कुटिल गमने । इस धातु से परे, 'गि' प्रत्यय होता
 है । जैसे—

अगति, कुटिलो हुत्वा गच्छतीति—अगि = आग ।

गु

३५. या व ला गु—'या' तथा 'वल' धातुओं से परे, 'गु' प्रत्यय होता है । जैसे—
 या = पापुणने । यातीति—यागु = यवागु । वलीयति, संवरीयतीति—
 वग्गु = मनोज्ञ ।

३६. फे र्वा द यो—'फेग्गु' आदि, 'गु' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं । जैसे—
 फलति, निट्टानं गच्छतीति—फेग्गु = सारहीन । भरतीति—भग्गु = भृगु
 ऋषि । हिनोति, पवत्ततीति—हिङ्गु = हींग । कमीयतीति—कङ्गु = धान्य-
 विशेष इत्यादि ।

घ

३७. ज ना घो—'जन' धातु से परे, 'घ' प्रत्यय होता है । जैसे—
 जायति गमनमेतायाति—जङ्घा ('जन' धातु के 'न' का निग्गहीत हो गया—
 मनानं निग्गहीतं ५.९६) ।

३८. मे घा द यो—'मेघ' आदि, 'घ' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं । जैसे—
 मेहति, सिञ्चतीति—मेघो (मिह = सेचने । 'ह' लोपो) । मुय्हन्ति सत्ता
 एत्थाति—मोघो = तुच्छ । सेति, लहु हुत्वा पवत्ततीति—सीघं = शीघ्र । निदह-
 तीति—निदाघो = ग्रीष्म । महीयति, पूजियतीति—मघा = एक नक्षत्र इत्यादि ।

च

३९. चु - सर - व रा चो—इन धातुओं से परे, 'च' प्रत्यय होता है । जैसे—

चवति ल्कवाति—चोचं=उपभुक्तफलविसेसो । सरति, आयति दुक्त्वं
हिंसतीति—सन्चं=सत्य । वारति सुखन्ति—वच्चं=पाखाना ।

चु, ईचि

४०. म रा चु ईचि च—'मर' धातु से परे, 'चु' तथा 'ईचि' प्रत्यय होते हैं, और 'च' प्रत्यय भी । जैसे—

मरणं—मच्चु=भौत । मारेति, अन्यकारं विनासेतीति—मरीचि=किरण, मृगतृष्णा । मरतीति—मच्चो=प्राणी ।

छिक्

४१. कु स-प सा छिक्—इन धातुओं से परे, 'छिक्' प्रत्यय होता है । जैसे—

कुसीयति, अक्कोसीयतीति—कुच्छि=पेट । पसीयति, बावीयति एत्याति—पच्छि=खाँची, डाली ।

छुक्

४२. क स-उ सा छुक्—इन धातुओं से परे, 'छुक्' प्रत्यय होता है । जैसे—
कसन्ति, विलेखन्ति एत्याति—कच्छु=खुजली ।

छो

४३. अ स-म स-व द-कु च-क चा छो—इन धातुओं से परे, 'छो' प्रत्यय होता है । जैसे—

असति, खिपतीति—अच्छो=भालू । आमसति जलन्ति—मच्छो=मछली ।
वदतीति—वच्छो=वत्स । कुचीयति, संकोचीयतीति—कोच्छो=पीड़ा । कची-
यति, वन्वीयतीति—कच्छो=तराई ।

४४. गु च्छा द यो—'गुच्छ' आदि 'छ' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं । जैसे—
गोपीयतीति—गुच्छो=गुच्छा । तुसन्ति अनेनाति—तुच्छं=मिथ्या ।
पोसन्ति तनुमनेनाति—पुच्छो=पूँछ इत्यादि ।

उट्, जु

४५. अ रा - जु उट् च—'अर' धातु से परे, 'जु' प्रत्यय, होता है। 'अर' का 'उ' आदेश होता है। जैसे—अरति, अकुटिलभावेन पवत्ततीति—उजु=सीधा।

४६. रज्जा द यो—'रज्जु' आदि 'जु' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—
रुन्धन्ति एतेनाति—रज्जु=रस्सी ('रुध' धातु का 'रुध' हो गया)। अम-
ञ्जित्थाति—मञ्जु=मञ्जुल इत्यादि।

भक्

४७. गि धा भक्—गिध=अभिकङ्खार्यं। इस धातु से परे, 'भक्' प्रत्यय होता है। जैसे—

गेधतीति—गिज्भो=गीध।

४८. वञ्भा द यो—'वञ्भ' आदि 'भक्' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

वन=याचने। वनोति, अत्तानं अनुभवितुं याचतीति—वञ्भो=फलहीन वृक्ष। वञ्भा=वाँभ स्त्री। 'वन' का 'विन' आदेश हो जाने से—विञ्भो=पर्वत। सञ्जयतीति—सज्भं=रजत इत्यादि।

अ

४९. क म - य जा ओ—इन धातुओं से परे, 'अ' प्रत्यय होता है। जैसे—
कमीयतीति—कञ्जा=कुमारी ('कम' धातु के 'म' का निगहीत हो गया)।
यजन्ति अनेनाति—यञ्जो=यज्ञ।

५०. पु णा अं—'पु' धातु से परे, विकल्प से 'अ' प्रत्यय होता है। जैसे—
पुणाति, सुन्दरत्तं करोतीति—पुञ्जं=कुशल कर्म।

५१. अ र - हा ओ हा स्स हिरब् च—'अर' तथा 'हा' धातु से परे, 'अ' प्रत्यय होता है। 'हा' का 'हिरब्' आदेश हो जाता है। जैसे—

अरीयते, गम्यतेति—अरञ्जं=वन। जहाति सत्तानं हीनत्तन्ति—हिरञ्जं=धन, सोना।

कीट

५२. किर-तरा कीटो—इन धातुओं से परे, 'कीट' प्रत्यय होता है । जैसे—

सोभेतुमेत्य रेतनानि विकिरीयन्तीति—किरीटं=मकुट । तरन्ति, यन्ति चुरूपत्तमनेनाति—तिरीटं=पगड़ी ।

अट

५३. सका दी ह्यटो—'सक' आदि धातुओं से परे, 'अट' प्रत्यय होता है । जैसे—

सक्कोति भारं वहिनुन्ति—सकटो=गाड़ी । अकसि, निरोजत्तं अगमीति—कसटं=बुरा, अप्रिय । करोति अमनायन्ति—करटो=कौआ । मक्कति चलतीति—मक्कटो=वानर । देवीयति पूजियतीति—देवटो=ऋषि । कमति, इच्छति आरोहन्ति—कमटो=वौना ।

५४. मकुट-आवाट-कवाट-कुक्कुट्टा—ये शब्द निपात हैं । जैसे—

मङ्केति, सोभेतीति—मकुटं=मकुट । अव्यते, खञ्जते 'ति—आवाटो=गढ़ा । कवति, रवतीति—कवाटं=किवाड़ । कुकति, गोचरमाददातीति—कुक्कुटो=मुर्गा ।

ठ

५५. कम-उस-कुस-कसा ठो—इन धातुओं से परे, 'ठ' प्रत्यय होता है । जैसे—

ओदनादीनि कामेतीति—कण्ठो=गला । ओदनादीसु उण्हेन उसीयतीति—ओदठो=ओठ, अँट । कुसीयति, अक्कोसीयति—कोदठो=धान की कोठी । कसति, याति विनासन्ति—कदठं=लकड़ी ।

५६. कुट्टादयो—'कुट्ट' आदि 'ठ' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं । जैसे—

कुच्छीयतीति—कुदठं=कुप्ट । कुणति, नदतीति—कुण्ठो=अत्यन्त क्षीण । अक्कोसीयतीति—कुण्ठो=जिसका हाथ पैर कटा हो । दंसति एतायाति—

दाठा=दाढ़ । कामीयति दिन्नेहीति—कमठो=भिक्षा भाजन, वीना, कछुआ ।
फुस्सतीति—फुट्ठो=स्पर्श इत्यादि ।

अण्ड

५७. वर-क रा अण्डो—इन धातुओं से परे, 'अण्ड' प्रत्यय होता है । जैसे—
अत्तनि पेमं वारयतीति—वरण्डो=मुखरोग । करीयतीति—करण्डो=
भाण्ड विशेष ।

ड

५८. मनन्ता डो—मकारान्त तथा नकारान्त धातुओं से परे, बहुधा 'ड'
प्रत्यय होता है । जैसे—

सम=उपसमे । समनं—सण्डं=समूह । कमति यातीति—कण्डो=वाण,
परिच्छेद । दम्यन्ते अनेनाति—दण्डो=सजा । अमन्ति, उप्पज्जन्ति एत्याति—
अण्डो=अण्डा । गच्छति सूनभावन्ति—गण्डो=व्याधि, गाल । रमन्ति एत्याति—
रण्डा=विधवा । मञ्जन्ति एतेनाति—मण्डो=मांड । खञ्जतीति—खण्डो=
खांड । लमति, हिंसति सुचिभावन्ति—लण्डो=लेंड इत्यादि ।

५९. कुण्डादयो—'कुण्ड' आदि 'ड' प्रत्ययान्त शब्द नियत हैं । जैसे—

कामीयतीति कुण्डं=भाजन । मञ्जति हिनाहितन्ति—मुण्डो=शिर मुड़ाया
हुआ । तनोति एतेनाति—तुण्डं=मुख । ईरित कम्पतीति—एरण्डो=रेंड,
व्याघ्रपुच्छ । सुगन्धं सेवतीति—सिखण्डो=चोटी इत्यादि ।

किण

६०. तिज-क स-त स-द क्खा कि णो ज स्स खो च—इन धातुओं से
परे, 'किण' प्रत्यय होता है तथा, 'ज' का 'ख' होता है । जैसे—

तेजीयित्थाति—तिखिणं=तेज । कसति पवत्तति—कसिणं=अशेष ।
तसनं—त्तसिणा=तृष्णा । दक्खति, वुद्धिं गच्छति एतेनाति—दक्खिणा=
दक्षिणा, दान ।

णि

६१. वी आदितो णि—'वी' आदि धातु से परे, 'णि' प्रत्यय होता है । जैसे—

वीयतीति—वेणि—जूरा । सेवनं—सेणि—समान शिल्पियों का समूह ।
निसेवीयतीति—नित्सेणि—निसेनी । सपति, पस्सवतीति—सोणि—चूतड़ । दवति,
वहतीति—दोणि—नाव । कीयतेति—केणि—ऋय । इत्यादि

अणि

६२. ग हा दी ह्याणि—'गह' आदि धातुओं से परे, 'अणि' प्रत्यय होता है । जैसे—

गण्हातीति—गहणि—जठराग्नि । अरीयति, गमीयतीति—अरणि—अग्नि-
मन्थन की लकड़ी । धारेतीति—धरणि—पृथ्वी । सरीयति, गमीयतीति—
सरणि—मार्ग । तरन्ति अनेनाति—तरणि—समुद्र, मूर्य ।

णु

६३. री-वी-हा हि णु—इन धातुओं से परे, 'णु' प्रत्यय होता है । जैसे—
रीयति पस्सवतीति—रेणु—रज । वेति, पवत्तीति—वेणु—बांस । भाति,
दिप्पतीति—भाणु—किरण ।

६४. खा ण्वा द यो—'खाणु' आदि 'णु' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं । जैसे—
खञ्जति, अवदारीयतीति—खाणु—ठूठ । जायति गभनमनेनाति—जाणु,
जण्णु—घुटना । हरीयतीति—हरेणु—गन्ध-द्रव्य इत्यादि ।

ण

६५. क्वा दितो णो—'कु' आदि शब्दों से परे, 'ण' प्रत्यय होता है । जैसे—
कवति, नदति एत्याति—कोणो—पास, अंश, वीणा आदि का दण्ड ।
सुणोतीति—सोणो—कुत्ता, मनुष्य ।

दवति, पवत्तीति—दोणो—एक परिमाण । विरूपत्तं वारेतीति—वण्णो—
रंग । सवनं करोतीति—कण्णो—कान । पणीयति, वोहरीयतीति—पण्णो—

पत्ता । तायतीति—ताणं=रक्षा । निलीयन्ति एत्याति—लेणं=गुफा, छिपने का स्थान ।

णक्

६६. सु वी हि णक्—‘सु’ तथा ‘वी’ धातु से परे, ‘णक्’ प्रत्यय होता है । जैसे—

सुणोतीति—सुणो=कुत्ता । वीयतीति—वीणा ।

६७. ति णा द यो—‘तिण’ आदि, ‘ण’ प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं । जैसे—
तिज्ज=निसाने । ज लोपो । तेजेति एतेनाति—तिणं=तृण । लीयति, रसतो सव्वत्थ अल्लीयतीति—लोणं=निमक । लेहीयतीति—लोणं । गच्छतीति—गोणो=बैल । हरीयतीति—हरिणो=मृग । अत्तनो लूखभावे सम्पत्ते ईरति कम्पतीति—इरिणं=ऊसर । अभित्थवीयतीति—थूणं=नगर । थूणो=घर का खम्भा इत्यादि ।

६८. र व ण - व र ण - पू र णा द यो—‘रवण’ आदि शब्द, ‘अण’ प्रत्यय से सिद्ध होते हैं । जैसे—

रवतीति—रवणो=कोयल । वाहेतीति—वरणो=चहारदिवारी । पूरीयते अनेनाति—पूरणो=पूरा करने वाला ।

अति

६९. पा - व सा अ ति—‘पा’ तथा ‘वस’ धातु से परे, ‘अति’ प्रत्यय होता है । पूर्व स्वर का लोप होता है । जैसे—

पाति, रक्खतीति—पति=स्वामी । वसन्ति एत्याति—वसति=घर ।

तु

७०. धा - हि - सि - त न - ज न - ग म - स चा तु—इन धातुओं से परे, ‘तु’ प्रत्यय होता है । जैसे—

धारेतीति—धातु=गेरुक आदि । हिनोति, पवत्तति फलं एतेनाति—हेतु=कारण । सेवीयति जनेहि इति—सेतु=पुल । तन्यतेति—तन्तु=सूत्र ।

जनीयते कम्मकिलेसेहिति—जन्तु । जायति कम्मकिलेसेहि—जन्तु । जरतीति—
जत्तु = पंसुली । गच्छतीति—गन्तु = जाने वाला । सचति, समेतीति—सत्तु = सत्तू ।

७१. अरिस्तुट् च—'तु' प्रत्यय आने से, 'अर' (=गमने) का 'उ' आदेश हो जाता है । जैसे—

अरति, पवत्ततीति—उतु = ऋतु ।

७२. पि ता द थो—'पितु' आदि, 'तु' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं । जैसे—

पा = रक्खने । आस्स इत्तं । पाति, रक्खतीति—पिता । मानेतीति माता ।
भातीति—भाता = भाई । धा = धारणे : आस्स ईत्तं : धारीयतीति—धीता =
वेटी । दुहति, वन्धवे पपूरेतीति—दुहिता = वेटी । जन = जनने : अस्स आत्तं : मा
चन्तादेसो : पपुत्ते जनेतीति—जामाता = दामाद । नहीयति, वन्धीयति पेमेनाति
नत्ता = नाती । हवति, पूजेतीति—होता = हवन करने वाला । पुनाति, आयति
भवं पवित्तं करोतीति—पोता = पोता ।

रतु

७३. जनकरा रतु—'जन' तथा 'कर' धातु से परे, 'रतु' प्रत्यय होता
है । 'र' अनुबन्ध, अन्त स्वरदि को लोप करने के लिए है । जैसे—

जायतीति—जतु = लाह । करीयतीति—कतु = यज्ञ ।

उन्त

७४. सका उन्तो—सक = सत्तियं । इस धातु से परे, 'उन्त' प्रत्यय होता
है । जैसे—

[आकासे गन्तुं] सककोतीति—सकुन्तो = पक्षी ।

ओत

७५. क पा ओ तो—कप = अच्छादने । इस धातु से परे, 'ओत' प्रत्यय
होता है । जैसे—

कपतीति—कपोतो = कबूतर । कहीं कहीं, 'त' का 'ट' हो जाता है—
कपोटो = कबूतर ।

अन्त

७६. व सा दी ह्यन्तो—'वस' आदि धातु से परे, 'अन्त' प्रत्यय होता है जैसे—

वसन्ति एतस्मि काले कीळापसुता इति—वसन्तो । रुहति, जायतीति—रुहन्तो=वृक्ष, इस नाम का एक मृगराज । भद्=कल्याणः भद्दिस्स संयोगादिलोपोः भज्जति कल्याणधम्मन्ति—भदन्तो=प्रव्रजित । नन्दति एतायाति—नन्दन्तो=सखी । जीवन्ति एतायाति—जीवन्तो=औषधि । सूयतीति—सवन्तो=नदी । रोदापेतीति—रोदन्तो=औषधि । अ्रवति रक्खतीति—अ्रवन्तो=जनपद ।

७७. हि सी नं मुक् च—'हि' तथा 'सि' धातु से परे, 'अन्त' प्रत्यय होता है; उससे परे 'म' का आगम होता है । जैसे—

हिनोति, अ्रयति पवत्तति एतस्मिन्ति—हेमन्तो=ऋतु । सयन्ति एत्थ अका कुसुमादयोति—सीमन्तो=माँग ।

इत

७८. ह र - रु ह - कु ला इ तो—इन धातुओं से परे, 'इत' प्रत्यय होता है । जैसे—

अत्तनो सिनेहं हरतीति—हरितो=हरा रंग । रुहतीति—रोहितो=एक तरह की मछली । रुहति, सरीरे व्यायनवसेनाति—रोहितं (रस्स लत्ते—लोहितं)=खून । अत्तनो गुणं कुलिति, पत्थरतीति—कोलितो=द्वितीय अग्र श्रावक, इस नाम का एक ग्राम ।

अत

७९. भ रा दी ह्य तो—'भर' आदि धातुओं से परे 'अत' प्रत्यय होता है । जैसे—

भरतीति—भरतो=नट । रज्जन्ति एत्थाति—रजत्तं=चाँदी । यजितव्वोति—यजतो=आग । पचतीति—पचतो=रसोइया ।

आतक्

८०. कि रा दी ह्या त क्—'किर' आदि धातु से परे, 'आतक्' प्रत्यय होता

है। जैसे—

किरतीति—किरातो = एक जंगली जात। 'र' का 'ल' हो जाने से—किलातो।
अलतीति—अलातं = तितकी, लुकारी। चिलतीति—चिलातो = एक तरह की मछली।

अत्त

८१. अ मा दी ह्य त्तो—'अम्' आदि धातुओं से परे, 'अत्त' प्रत्यय होता है। जैसे—

अमति, कालन्तरं पवत्ततीति—अमत्तं = भाजन। पुव्वसर लोपोः मानं—
मत्तं = परिमाण, इतना भर। वारन्ति अनेनाति—वरत्तं = रस्सी, लगाम। कलति,
परिच्छिन्दतीति—कलत्तं = भार्या।

त्

८२. वा दी हि तो—'वा' आदि धातुओं से परे, 'त' प्रत्यय होता है। जैसे—
वायतीति—वातो = हवा। तायतीति—तातो = पिता। तनोतीति—
तन्तं = ताँत। दमतीति—दन्तो = दाँत। अमति, यातीति—अन्तो = समाप्ति,
आँत। सेवीयतीति—सेतो = उजला। सुणन्ति अनेनति—सोतं = कान। सव-
तीति—सोतो = सोता। पुनीयतीति—पोतो = बच्चा। गोपीयतीति—गोत्तं =
गोत्र। योजन्ति अनेनाति—योत्तं = रस्सी। ममायन्तेहि ग्यहतीति—गत्तं =
शरीर। आवाधा निरन्तरं अतति पवत्तति इति—अत्ता—मन आदि। खिपीयति
एत्थाति—खेत्तं = खेत।

तक्

८३. घ रा दी हि तक्—'घर्' आदि धातुओं से परे, 'तक्' प्रत्यय होता है। जैसे—

घरति, सिञ्चतीति—घत्तं = घी। सेवीयतीति—सित्तो = उजला। दुव्वलत्ता
दवति उपतपतीति—दूत्त। मिज्जति, सिनेहतीति—मित्तो = मित्र। चिन्तेतीति—
चित्तं = विज्ञान, चित्त—कर्म आदि। पोसीयतीति—पुत्तो = बेटा। विन्दति
पीतिमनेनाति—वित्तं = धन। वरणं—वत्तं = ब्रह्मचर्य आदि व्रत।

८४. नेत्ता द यो—'नेत्त' आदि, 'तक्' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—
नयति, पापेतीति—नेत्तं = श्राख। करणं—कुत्तं = त्रिया। कमति यातीति—
कुन्तो = एक हथियार। सुद्धु रमतीति—सूरतो = मुख संवास। मिहति, सिञ्च-
तीति—मुत्तं = पेशाव। पालीयतीति—पलितं = बालका पकना। पलितं यस्स
अत्थि सो—पलितो। पलिता इत्थी। मिहन्—सितं = मुत्तपुराहट ['मिह' का
'सि' आदेश हो गया]।

मिहन्—मिहितं = मूसपुराहट। कुलीयति, अक्कोलीयतीति—कुलीतो =
काहिल। सेन्ति बन्वन्ति धरावासं एतायानि—जीता = हन की जोत इत्यादि।

अथ

८५. समा दो ह्य थो—'सम' आदि धातुओं से परे, 'अथ' प्रत्यय होता
है। जैसे—

समेतीनि—समथो = समाधि। दरणं—दरथो = पीड़ा। दमनं—दमथो =
दमन। किलमनं—किलमथो = परिश्रम। सपनं—सपथो = सीगन्ध। आवसन्ति
एत्थाति—आवसथो = घर।

८६. उपवत्ता वस्सोद् च—'उप' पूर्वक 'वस' धातु से परे, 'अथ'
प्रत्यय होना है; 'वस' का 'ओ' आदेश होता है। जैसे—

उपवसन्ति एत्थाति—उपोसथ = तिथिविशेष, नवां हस्ति-कुल।

थक्

८७. रमा थक्—'रम' धातु से परे, 'थक्' प्रत्यय होता है। जैसे—
रमन्ति, कीळन्ति एतेनाति—रथो।

८८. तित्था द यो—'तित्थ' आदि, 'थक्' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं।
जैसे—

तर = तरणेः अस्स इत्तं, पररूपादि। तरन्ति अनेनाति—तित्थं = घाट।
सेत्ततीति—सित्थं = मोम। हसन्ति अनेनाति—हत्थो = हाथ, नक्षत्र। गायतीति
गाथा = पद्य विशेष। अरन्ति, पवत्तन्ति अनेनाति—अत्थो = धन। रोगं तुदति,
पीळेतीति—तुत्थं = दवा। यु = मिस्सने। यवतीति—थूथो = किन्हीं जानवरों
का समूह। पटिकूलत्ता गोपीयतीति—गूथो = मैला इत्यादि।

धु

८६. वस-मस-कुसा धु—इन धातुओं से परे, 'धु' प्रत्यय होता है।
जैसे—

वसन्ति एत्याति—वत्यु=पदार्थ । दधि आमसतीति—मत्यु=मट्टा ।
कुसति, अक्कोसति भेरवनादत्ताति—कोत्यु=सियार ।

थि

९०. सक-वसा थि—'सक' तथा 'वस' धातु से परे, 'थि' प्रत्यय होता है। जैसे—

सक्कोति गन्तुमनेनाति—सत्थि=जाँघ । वसीयति अच्छादीयतीति—
वत्थि=पेड़ ।

थिक्

९१. वीतो थिक्—'वी' धातु से परे, 'थिक्' प्रत्यय होता है। जैसे—
वीयन्ति, गच्छन्ति एतायाति—वीथि=गली ।

रथिण्

९२. सरिस्मा रथिण्—'सर' धातु से परे, 'रथिण्' प्रत्यय होता है।
जैसे—

सारेतीति—सारथि=रथ हाँकने वाला ।

इथि

९३. ताता इथि—'ता' तथा 'अत' धातु से परे, 'इथि' प्रत्यय होता है।
जैसे—

तायति, पालेतीति—त्तिथि । अतति, गच्छतीति—अत्तिथि ।

थी

९४. इसा थी—'इस' धातु से परे, 'थी' प्रत्यय होता है। जैसे—
इच्छति, इच्छीयतीति वा—इत्थी=नारी ।

दक्

६५. रुद - खिद - मुद - मद - छिद - सूद - सप - क मा दक्—इन धातुओं से परे, 'दक्' प्रत्यय होता है। जैसे—

रुदतीति—रुदो=उमापति। 'र' का 'ल' होने से, लुदो=वहेलिया। खिदति, असहतीति—खुदो=क्षुद्र। मोदन्ति एतायाति—मुद्दा=अंगूठी। मज्जन्ति अस्मिन्ति—मद्दो=माद्र जनपद। छिज्जतीति—छिद्दं=छेद। सूदति, सामिकेहि भति पक्खरतीति—सुदो=शूद्र। सपन्ति अनेनाति—सद्दो=शब्द। कामीयतीति—कन्दो=मूल विशेष।

६६. कुन्दादयो—'कुन्द' आदि, 'दक्' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—
कामीयतीति—कुन्दो=एक प्रकार का फूल। मञ्जतेति—मन्दो=जड़।
वुणीयति संवरीयतीति—वुन्दो=मूल प्रदेश। निन्दीयतीति—निद्दा=नींद।
उन्दति, किलेदतीति—उद्दो=ऊद विलवा। सम्मा उन्दति, किलेदतीति—
समुद्दो=समुद्र। पुलति, हिंसतीति—पुत्तिन्दो=शवर इत्यादि।

दु

६७. द दा दु—दद=दाने; इस धातु से परे, 'दु' प्रत्यय होता है। जैसे—
दुक्खं ददातीति—दद्दु=दाद।

ध

६८. खण - अन - दम - रमा धो—इन धातुओं से परे, 'ध' प्रत्यय होता है। जैसे—

बाणेन खञ्जते ति—खन्धो=राशि। अनति, जीवति एतेनाति—अन्धो=अंधा। दमेतव्वोति—दन्धो=जड़। रमन्ति एत्थ सप्पादयो ति—रन्धं=विल।

६९. मुद्धादयो—'मुद्ध' आदि, 'ध' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—
मोदन्ति एत्थ ऊक्कादयोति—मुद्धा=शिर। अरन्ति, यन्ति एत्थाति—अद्धा=मार्ग, काल। गेधतीति—गद्धो=गिज्भो। पटिवेधतीति—विद्धं=निर्मल इत्यादि।

धुक्

१००. सी तो धुक्—'सी' धातु से परे, 'धुक्' प्रत्यय होता है। जैसे—
सयन्ति एतायाति—सीधु=एक प्रकार की सुरा।

कुन

१०१. वर-अर-कर-तर-दर-यम-अज्ज-मिथ-सका कुनो—
इन धातुओं से परे, 'कुन' प्रत्यय होता है। जैसे—

वारतीति—वरुणो=इस नाम के ईश्वर देवराज, वृक्ष [रा नस्स णो ५.१७१]।
अरति, गच्छतीति—अरुणो=सूर्य। परदुक्खे सति साधूनं हृदयकम्पनं करोतीति—
करुणा=दया। बालभावं अतरि, तरतीति—तरुणो=युवा। विदारतीति—
दारुणो=कड़ा। यमेति, नासेतीति—यमुना=नदी। अज्जति, धनसञ्चयं करो-
तीति—अज्जुनो=राजा, वृक्ष विशेष। मिथो सङ्गमो ति—मिथुनं=जोड़ा।
सक्कोति इति—सकुनो=पक्षी। सकुनो। सकुणो। सकुणी।

इन

१०२. अजा इनो—अज, वज=गमने। इस धातु से परे, 'इन' प्रत्यय
होता है। जैसे—

अजति, विक्रयं यातीति—अजिनं=चमड़ा।

१०३. विपिनादयो—'विपिन' आदि, 'इन' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं।
जैसे—

वपन्ति एत्याति—विपिनं=वन। सुपन्ति एतेनाति सुपिनं=नींद, सपना।
तुदन्ति, सत्ते पीळेतीति—तुहिनं=हिम। कप्पति, रिपवो विजेतुं समत्येतीति—
कप्पिनो=राजा। कमन्ति, एत्थ मीनादयो पविसन्तीति—कुमिनं=मछली
वभाने का छोप। देन्ति एतेनाति—दिनं=दिन।

कन

१०४. किरा कनो—'किर' धातु से परे, 'कन' प्रत्यय होता है। जैसे—

किरन्ति पत्थरन्तीति—किरणा=किरण । [रा नस्स णो ५.१७१—इस सूत्र से, 'र' के उत्तर 'न' का 'ण' हो गया ।]

नक्

१०५. दी-जि-इ-मी हि नक्—इन धातुओं से परे, 'नक्' प्रत्यय होता है । जैसे—

अदेसि, खयमगमासि इति—दीनो=निर्धन । पञ्च मारे अजिनीति—जिनो=बुद्ध । एसि, इस्सरत्तं अगमासीति—इनो=स्वामी । मीयते, हिंसीयते ति—मीनो=मछली ।

न

१०६. सि-धा-वी-वा हि नो—इन धातुओं से परे, 'न' प्रत्यय होता है । जैसे—

सेति, वन्धतीति—सेनो=वाज । सेना । धारेतीति—धाना=भूजा । वेति, पवत्ततीति—वेनो=एक हीन जाति । सत्तेसु वाति, पवत्ततीति—वानं=तृष्णा ।

१०७. ऊना द यो—'ऊन' आदि, 'न' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं । जैसे—

ऊह=वित्तक्के । ह लोपो । ऊहनं—ऊनो=अपूर्ण । हि=गतियं । दीघरत्तं हेसि, हीनत्तमगमीति—हीनो । चि=चये । दीघरत्तं चयन्ति एत्थ रतनानीति—चीनो=चीन देश । हनिस्स जघो । हञ्जतीति—जवनं=कटि । ठाति पवत्ततीति—येनो=चोर ['ठ' का 'थ' हो गया] । उन्दीयतीति—ओदनो=भात ['उन्द' का 'ओद' हो गया] । रज्जते अनेनाति—रजनं=रंग । रज्जति एतायाति—रजनी=रात । पज्जति, गच्छतीति—पज्जुन्नो=इन्द्र, मेघ । गच्छन्ति एत्थ विहङ्गादयोति—गगनं=आकाश इत्यादि ।

तन

१०८. वी-पता त नो—इन धातुओं से परे, 'तन' प्रत्यय होता है । जैसे—

वेति, पवत्तति एतेनाति—वेतनं=वेतन । पतन्ति एत्थाति—पत्तनं=नगर ।

तनक्

- ✦ १०९. रमा तनक्—‘रम’ धातु से परे, ‘तनक्’ प्रत्यय होता है। जैसे—
रमन्ति एत्याति—रतनं=मणि आदि, हाथ भर लम्बा। [गमादिरानं लोपो
न्तस्स ५.१०९—इस सूत्र से ‘रम’ धातु के ‘म’ का लोप हो गया।]

नुक्

११०. सू-भा हि नुक्—इन धातुओं से परे, ‘नुक्’ प्रत्यय होता है। जैसे—
पसवीयतीति—सूनु=पुत्र। भाति, दिप्पतीति—भानु=सूरज।
१११. धा स्ते च—वा=धारणे। इस धातु से परे, ‘नुक्’ प्रत्यय होता है;
तया ‘घा’ का ‘वे’ आदेश होता है। जैसे—वारेतीति—धेनु=गाय।

अनि

११२. वत्त-अट-अव-धम-अ से ह्य नि—वत्तन्ति एतेनाति—वत्तनि
=कन्नन दंडं?। वत्तनी=मार्ग। अटते, गम्मते ति—अटनि=मञ्चङ्गो?।
सत्ते अवति, रक्खतीति—अवनि=पृथ्वी। धमन्ति एतेन वीणादयोति—धमनि—
धमनी=सिरा। भण्डत्थाय असीयते, खिपीयतेति—असनि=वज्र।

नि

११३. यु तो नि—यु=मिस्सने। इस धातु से परे, ‘नि’ प्रत्यय होता है।
जैसे—
यवन्ति, सत्ता अनेन एकीभावं गच्छन्तीति—योनि=भग।

प

११४. चम-आय-पा-व पा पो—इन धातुओं से परे, ‘प’ प्रत्यय होता
है। जैसे—
चमन्ति, अदन्ति एत्याति—चम्पा=नगर। अपेसि, ईसकमत्तं अगमासीति—
अप्पं=योड़ा। अपायं पाति, रक्खतीति—पापं। वपन्ति एत्याति—वप्पो=खेत।
११५. यु-यु-कूनं दी घो च—इन धातुओं से परे, ‘प’ प्रत्यय होता है,

तथा उनका दीर्घ होता है। जैसे—

यवन्ति, सह वत्तन्ति एत्याति—यूपो = यज्ञ की लाठ, प्रासाद। थवीयतीति—
थूपो = चैत्य, स्तूप। कवन्ति, नदन्ति एत्याति—कूपो = कूआँ।

पक्

११६. खि प - सु प - नी - सू - पू हि प क्—इन धातुओं से परे, 'पक्' प्रत्यय होता है। जैसे—

खिपति, खयं गच्छतीति—खिप्यं = शीघ्र। सुपन्ति एत्य सुनखादयो 'ति—
सुप्यं = सूप। नयन्ति एतस्मा फलन्ति—नीपो = वृक्ष। सवति, र्विच जनेतीति—
सूपो = व्यञ्जन। पवीयति, भरिचजीरकादीहि पवित्तं करीयतीति—पूपो = पूआ।

११७. सि प्पा द यो—'सिप्य' आदि, 'पक्' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं।

जैसे—

सपति अनेनाति—सिप्यं = कला ['सप' का 'सिप' हो गया]। विज्जं वप-
तीति—विप्यो = ब्राह्मण। वमति, वहि निक्खमति हृदयङ्गतसोकेनाति—वप्यो =
आँसू ['व' का 'व' हो गया]। छुप = सम्फस्से। उस्स ए। छुपति अनेनाति—
छेप्यं = अंगूठा। रूपति, विकारमापज्जतीति—रूपं इत्यादि।

अप

११८. सा सा अ पो—सास = अनुसिद्धियं। इस धातु से परे, 'अप' प्रत्यय होता है। जैसे—

सासीयन्ति एतेनाति—सासपो = सरसों।

११९. वि ट पा द यो—'विटप' आदि, 'अप' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं।
जैसे—

वट = वेठने। अस्स इत्तं। वटति, वेठति एतेनाति—विटपो। कुय =
पूतिभावे। थस्स णो। अकुथि, पूतिभावं अगमीति—कुणपो = मृतक। मण्डीयति
जनेहीति—मण्डपो इत्यादि।

फ

१२०. गु पा फो—'गुप' धातु से परे, 'फ' प्रत्यय होता है। जैसे—

गोपीयतीति—गोप्फो = गिष्टा ।

व

१२१. गर-सर रा दी हि वो—'गर,' 'सर' आदि धातुओं से परे, 'व' प्रत्यय होता है । जैसे—

गरति, अञ्जे अनेन पीळ्तेतीति—गव्वो = अभिमान । सरति, पवत्ततीति—सव्वो = सकल । फलकामेहि जनेहि अमीयति, गमीयतीति—अम्वो = आम । पुत्तेन अमीयति, गमीयतीति—अम्व्वा = माता ।

१२२. निम्वा द यो—'निम्ब' आदि, 'व' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं । जैसे—

नमति फलभारेणाति—निम्बो = नीम । वित्तादयो वमति, उगिरतीति—खिम्ब = गरीर । तित्तेन कुसीयति, अक्कोसीयतीति—कोसम्बो = एक वृक्ष । वदन्ति एतेन द्वारादीनि इति—कदम्बो = वृक्ष । जनेहि कोटीयति, पवत्तीयतीति—कुटुम्बं । तण्डुलादयो अनेन कण्डन्ति परिच्छिन्दन्तीति—कुटुवो, कुडुवो = पैला इत्यादि ।

वि

१२३. द रा वि—दर = विदारणे । इस धातु से परे, 'वि' प्रत्यय होता है । जैसे—

द्योदनादीनि दारेन्ति एतायाति—इव्वि = कलछूल ।

अभ

१२४. क र-स र-स ल-क ल-व ल-व सा अ भो—इन धातुओं से परे, 'अभ' प्रत्यय होता है । जैसे—

करोतीति करभो = ऊँट । सरति, गच्छतीति—सरभो = मृगविशेष । सलति, गच्छतीति—सलभो = फाँतगा । कलीयति, परिमीयति वयसा ति कलभो—हाथी का बच्चा । कळभो । वल्लेति, संवरणं करोतीति—वल्लभो = प्रिय । वसन्ति अनेनाति—वसभो = पुङ्गव ।

रभ

१२५. ग दा र भो—'गद' धातु से परे, 'रभ' प्रत्यय होता है । जैसे—
गदतीति—गद्रभो = गदहा ।

कभ

१२६. उ स - रा सा क भो—इन धातुओं से परे, 'कभ' प्रत्यय होता है ।
जैसे—
उसति पटिपक्खे निदहतीति—उसभो = श्रेष्ठ । रासति नदतीति—रासभो =
गदहा ।

भक्

१२७. इ तो भ क्—'इ' धातु से परे, 'भक्' प्रत्यय होता है । जैसे—
एति गच्छतीति—इभो = हाथी ।

भ

१२८. ग र - अ वा भो—इन धातुओं से परे, 'भ' प्रत्यय होता है । जैसे—
गरति, वहि निक्खमनवसेन सिञ्चतीति—गवभो = गर्भ, प्रसूति-मृह । अ वति,
सत्ते रक्खतीति—अवभं = मेघ ।

१२९. सो व्भा द यो—'सोवभ' आदि, 'भ' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं । जैसे—
सीदन्ति एत्याति—सोवभं = दरार ['सिद' के 'इ' का 'ओ' हो गया] ।
सोवभो = एक जलाशय । कामीयतीति—कुम्भो = घड़ा ['कम' के 'अ' का 'उ'
हो गया] । कुसति, अन्ह्यतीति—कुसुम्भं = एक फूल, जिससे रंग तैयार किया
जाता है । कुसुम्भो = सोना इत्यादि ।

कुम

१३०. उ स - कु स - प द - सु खा कु मो—इन धातुओं से परे, 'कुम' प्रत्यय
होता है । जैसे—

उसति दहतीति—उसुमं = गरम । कुसति अन्ह्यतीति—कुसुमं = फूल ।

पज्जति देवपूजायं यातीति—पट्टमं=कमल । सुखयतीति—सुखुमं=सूक्ष्म ।

१३१. वट्टमादयो—'वट्टम' आदि, 'कुम' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं ।
जैसे—

वजन्ति एत्थाति—वट्टमं=रास्ता [वजिस्सन्तस्स टो] । सिलिस्सतीति—
सिलेसुमो=कफ (सिलिस्सस्स लिस्से) । कामीयतीति—कुड्कुमं=केसर
इत्यादि ।

उम

१३२. गुंघा उमो—गुघ=परिवेठने । इस धातु से परे, 'उम' प्रत्यय
होता है । जैसे—

गुघति, परिवेठतीति—गोघुमो=गेहूँ ।

अम, इम

१३३. पठ-चरा अमिमा—'पठ' तथा 'चर' धातु से परे, यथाक्रम
'अम' तथा 'इम' प्रत्यय होते हैं । जैसे—

पठीयति, उच्चारीयति उत्तमभावेनाति—पठमं=श्रेष्ठ, पहला । चरति,
हीनतं यातीति—चरिमं=पिछला ।

मक्

१३४. हि घू हि मक्—हि=गतियं । घू=कम्पने । इन धातुओं से परे,
'मक्' प्रत्यय होता है । जैसे—

हिनोति, पवत्ततीति—हिमं=पाला । घुनाति, कम्पतीति—घूमो=घूर्वा ।

रीसन

१३५. भीतो रीसनो च—'भी' धातु से परे, 'रीसन,' तथा 'मक्'
प्रत्यय होते हैं । जैसे—

भायन्ति एतस्मा ति—भीसनो=भयानक । भीमो=भयानक ।

म

१३६. खी - सु - वी - या - गा - हि - सा - लू - खु - हु - मर - धर - कर - घरे - जम - अम - समा मो—इन धातुओं से परे, 'म' प्रत्यय होता है। जैसे—

खेमनं, निरुपद्वकरणतायाति—खेमो = क्षेम । सुणातीति—सोमो = चाँद । वायन्ति एतेनाति—त्रेमो = करघा । यातीति—यामो = दिन का छठा या आठवाँ भाग । गायन्ति एत्थाति—गामो = गाँव । हिनोति, पवत्ततीति—हेमं = सोना । साति, सुन्दरत्तं तनुं करोतीति—सामो = काल । लूयते ति—लोमं = रोंवा । ख्यायते उत्तम भावेना ति—खोमं = अतसि । ह्वनं ह्वयते वा—होमो = आहुति । मरन्ति अनेनाति—मम्मं = मर्म । अत्तानं धारेन्ते अपाये वट्टदुक्खे च अपतमाने कत्वा धारेतीति—धम्मो = परिपत्त्यादि, धर्म । करणं, करीयतीति वा कम्मं = कर्म, सुखदुक्खफलदं । सेदो पग्घरति अनेना ति—घम्मो = धाम । जमेति अभक्खितत्वं अदतीति—जम्मो = निहीन, विना सोचे विचारे करने वाला । अमेति पेमेन पवत्तति पुत्तकेसूति—अम्मा = माता । समेन्ति अनेनाति—सम्मा = ठीक तरह ।

१३७. अस्मा दयो—'अस्म' आदि, 'म' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—अस = खेपने । अस्सतेति—अस्मा = पत्थल । भस = भस्मीकरणे । भसति पग्घरतीति—भस्मं = राख । उसति, निदहतीति—उस्मा = तेजो धातु । पविसन्ति एत्थाति—वेस्मं = घर । भायन्ति एतस्माति—भेस्मा = भयानक । अस्सति, जनेहि चजीयते ति—अधमो = निहीन ['अस' के 'स' का 'ध' हो जाता है] । करोतीति—कुम्मो = कछुआ ['कर' के 'अ' का 'उ' हो गया] इत्यादि ।

मि

१३८. नी तो मि—'नी' धातु से परे, 'मि' प्रत्यय होता है। जैसे—नयतीति—नेमि = चक्रान्त ।

१३९. ऊ मि - भू मि - नि मि - र स्मि—'ऊमि' आदि 'मि' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

ऊह = वितक्के । ह लोपो । ऊहन्ति वितक्केन्ति एतेनाति—ऊमि = तरङ्ग । भवन्ति एत्थाति—भूमि = पृथ्वी । नेति, सुगतिं पापेतीति—निमि = राजा । रसन्ति सत्ता एतायाति—रस्मि = रस्सी ।

य

१४०. मा - द्या हि यो—'मा' तथा 'द्या' धातु से परे, 'य' प्रत्यय होता है। जैसे—

मेति, परिमेति अञ्जेन उत्तमेन गुणेन अत्तनो गुणन्ति—माया = सन्त दोस-पटिच्छादनलक्षणणा । छिन्दति संसयन्ति—द्याया = प्रतिविम्ब ।

१४१. ज नि स्स जा च—'जन' धातु से परे, 'य' प्रत्यय होता है । 'जन' धातु का 'जा' आदेश होता है । जैसे—

जनेतीति—जाया = भार्या ।

१४२. ह द या द यो—'हृदय' आदि, 'य' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं । जैसे—

हरतीति—हृदयं = चित्त; मनो धातु, तथा मनोविज्ञान धातु का आश्रय ['हर' के 'र' का 'द' हो गया] । अत्तनि पेमं तनोतीति—त्तनयो = वेटा । सरति गच्छतीति—सुरियो = सूरज ['सर' का 'सुरि' हो गया] । मुखमाहरतीति—हृम्मियं = मुण्डच्छदन पासादो ['हर' का 'हृम्मि' हो गया] । कसति बुद्धिं यातीति—किसलयं = पल्लव ['कस' का 'किसल' हो गया] इत्यादि ।

रक्

१४३. खी - सि - सि - नी - सी - सु - वी - कु - सू हि रक्—इन धातुओं से परे, 'रक्' प्रत्यय होता है । जैसे—

खयति, दुहनेनाति—खीरं = दूध । कुसुमादीहि सेवीयतीति—सिरो = शिर । सेति, सरीरं बन्धतीति—सिरा = नाड़ी । नेति, परेहि वा नीयतीति—नीरं = जल । सयतीति—सीरो = फाल । अनिट्टफलदायकत्तं सवतीति—सुरा = मदिरा । सुणोति उत्तमगीतादिन्ति—सुरो = देवता । वेति, उत्तमभावं यातीति—वीरो = बहादुर । कवति, नदतीति—कुरं = भात । भयद्वितानं पठमकप्पिकानं सूरत्तं पसवतीति—सूरो = बहादुर, सूरज ।

१४४. हि - चि - दु - मी नं दीघो च—इन धातुओं से परे, 'रक्' प्रत्यय होता है; और अन्त का दीर्घ होता है । जैसे—

हिनोति, पवत्ततीति—हीरं = हीरा । चयतीति—चीरं = बल्कल । दुक्खेन

गमीयतीति—दूरं=दूर । मीयते पक्खिपीयते 'ति'—मीरो=समुद्र ।

१४५. धा तान मी च—'धा' तथा 'ता' धातु से परे, 'रक्' प्रत्यय होता है ।
अन्त्य स्वर का 'ई' आदेश होता है । जैसे—

धारेतीति—धीरो=धैर्यवान् । जलं तायतीति—तीरं=तट ।

१४६. भ द्रा द यो—'भद्र' आदि, 'रक्' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं । जैसे—
भद्=कल्याणे । द लोप, पररूपाभावा । भजीयतीति—भद्रं=कल्याण ।
भायन्ति एतायाति—भेरी=दुन्दुभि । विचिन्तितव्वन्ति—विचित्रं=नाना प्रकार
का । या=पापुणने । रस्स त्रन् । यातीति—यात्रा=यानं । गोपीयतीति—गोत्रं=
गोत्र । भस्मं करोति एतायाति—भस्त्रा=भायी, 'कम्मारागगरि' । सोकेन ताळन्ते
उसति, दहतीति—उरो=छाती इत्यादि ।

उर

१४७. मन्द-अङ्क-सस-अस-मथ-चत्ता उरो—इन धातुओं से
परे, 'उर' प्रत्यय होता है । जैसे—

मन्दि, असुन्दरत्ता जळत्तमगमीति—मन्दुरा=अस्तवल । अङ्कीयति, लक्खी-
यतीति—अङ्कुरो । ससति, हिंसतीति—ससुरो=ससुर । असियित्याति—असुरो=
राक्षस । अरीहि मथीयति, अलोळियतीति—मथुरा=नगर । चलीयतीति—
चतुरो=चालाक ।

१४८. वि धुरा द यो—'विधुर' आदि, 'उर' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं ।
जैसे—

वेधति, हिंसति इति—विधुरो=रंडुआ । उन्दति, किलेदतीति—उन्दुरो=
चूहा । मङ्कति, अनेन अत्तानं अलं करोतीति—मकुरो=आइना, रथ, मछली ।
कुकति, ससादयो आददातीति—कुवकुरो=कुत्ता । अमङ्गि, पसत्थमगमीति—
मङ्गुरो=एक तरह की मछली इत्यादि ।

किर

१४९. ति म-रु ह-रु ध-व ध-म द-मन्द-व ज-अ ज-रु च-क सा किरो—इन
धातुओं से परे, 'किर' प्रत्यय होता है । जैसे—

तेमेतीति—तिमिरं=अन्धकार, पानी । रुहति, पवत्ततीति—रुहिरं=लहू ।

जीवितं रुच्यतीति—रुधिरं=लहू । वाधीयतीति—वधिरु=बहरा । जना
मज्जन्ति एतायाति—मदिरा=शराव । मोदन्ति एत्याति—मन्दिरं=घर ।
वजतीति—वजिरं=वज्र । अजति, गच्छति एत्याति—अजिरं=आंगन ।
रोचतीति—रुचिरं=सुन्दर । कसीयति, दुक्खेन गमीयतीति—कसिरं=थोड़ा ।
१५०. थि रा द यो—‘थिर’ आदि, ‘किर’ प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं ।

जैसे—

ठातीति—थिरं=स्थिर । इच्छीयतीति—सिसिरो=शिशिर ऋतु । खादी-
यति पाणकेहीति खदिरो=दतवन । इत्यादि

१५१. द द ग रे हि डुर भ रा—‘दद’ तथा ‘गर’ धातु से परे, यथाक्रम
‘दुर’ तथा ‘भर’ होता हैं । जैसे—

अत्तानं ददातीति—ददरो=मेढ़क । गरति सिञ्चतीति—गम्भरं=गुहा ।

(द्वित्व)

१५२. च र-द र-ज र-ग र-म रे हि ते—‘चर’ आदि धातुओं से परे,
वे ही ‘चर’ आदि होते हैं । जैसे—

चरन्ति एत्याति—चच्चरं=चौराहा, आंगन । दरीयतीति—ददरं=एक

पक्षी, भेरी । अजरीति, जज्जरो=जर्जर । गरति, सिञ्चतीति—गग्गरो=गड़-
गड़ाहट, हंस की आवाज । मरीयतीति—मम्मरो=सूखे पत्तों की मरमर आवाज ।

घर

१५३. पी तो क्व रो—पी=तपने । इस धातु से परे, ‘क्वर’ प्रत्यय होता
है । जैसे—

अपीनीति—पीवरं=मोटा ।

१५४. ची व रा द यो—‘चीवर’ आदि, ‘क्वर’ प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं ।

जैसे—

चिनातिस्स दीघरत्तं, चीयतीति—चीवरं=कापाय । परिळाहं समेतीति—
संवरी=रात्रि । धारेतीति—धीवरो=मल्लाह (‘धा’ का ‘धी’ हो गया) । येन
केन चि अत्तानं तायतीति—तीवरो=एक हीन जाति । नयन्ति एत्थ सत्ताति—
नीवरं=घर । इत्यादि

क्रर

१५५. कु तो क्र रो—कु=सदे । इस धातु से परे, 'क्र' प्रत्यय होता है जैसे—

कवति, नदतीति—कुररो=एक पक्षी (कुररी)

छर

१५६. व स-अ सा छरो—इन धातुओं से परे, 'छर' प्रत्यय होता है । जैसे—

वसन्ति एत्याति—वच्छरो=वर्ष । संवसन्ति एत्याति —संवच्छरो=वर्ष ।
असति विसज्जेतीति—अच्छरा=देवकन्या, चुटकी ।

छेर

१५७. म सा छे रो च—मस=आमसने । इस धातु से परे, 'छेर' प्रत्यय होता है, और 'छर' भी । जैसे—

तण्हाय परामसनं—मच्छेरं=कजूसी । मच्छरं=कजूसी ।

सर

१५८. धू-वा तो स रो—धुनातीति—धूसरो=रूखा, हलका पीला रंग । वाति, गच्छतीति—वासरो=दिन ।

अर

१५९. भ मा दी ह्य रो—'भम' आदि, धातुओं से परे 'अर' प्रत्यय होता है । जैसे—

भमतीति—भमरो=भौरा । तसति, भयं गण्हातीति—त्तसरो=मन्दन्ति, मोदन्ति एत्याति—मन्दरो=पर्वत । कन्दति, अन्ह्यतीति—कन्दरो=कन्दरा । देवन्ति, कीळन्ति एतेनाति—देवरो=देवर ।

१६०. व दि स्स व दा च—'वद' धातु से परे, 'अर' प्रत्यय होता है । 'वद' का 'वद' आदेश होता है । जैसे—

वदन्ति एतेनाति—वदरो=वैर का फल । वदरी ।

१६१. व द ज नानं ठ ड् च—'वद' तथा 'जन' धातु से परे, 'अर' प्रत्यय होता है; तथा अन्त का 'ठ' आदेश होता है । जैसे—

वदतीति—वठरो=मूर्ख । जनयति (एतस्माति)—जठरं=उदर ।

१६२. प चि स्सि ठ ड् च—'पच' धातु से परे, 'अर' प्रत्यय होता है; तथा 'पच' का 'पिठ' आदेश होता है । जैसे—

पचन्ति एतायाति—पिठरो=पकाने का वरतन ।

अरण

१६३. व का अ र ण—वक=आदाने । इस धातु से परे, 'अरण' प्रत्यय होता है । जैसे—

वकेति, आददाति एतायाति—वाकरा=जाल ।

आर

१६४. सि ङ्गि - अं ग - अ ग - म ज्ज - क ल - अ ल आ रो—इन नाम धातुओं से परे, 'आर' प्रत्यय होता है । जैसे—

किलेससिङ्गकरणं—सिङ्गारो । अङ्गति—विनासं गच्छतीति—अङ्गारो । अगन्ति, गच्छन्ति एत्याति—अगारं=घर । लीहनेन अत्तनो सरीरं मज्जति, निम्मलत्तं करोतीति—मज्जारो=विलार । एतेन गुणं कलीयति परिमीयतीति—फळारो=मटमला रंग । दीघत्तं अलति यातीति (बन्धे)=अळारो=टेढ़ा ।

१६५. क मि स्त स्तु च—'कम'=इच्छायं । इस धातु से परे, 'आर' प्रत्यय होता है । 'कम' का 'कुम' आदेश होता है । जैसे—

कामीयतीति—कुमारो ।

१६६. भि ङ्गु रा द यो—'भिङ्गार' आदि, 'आर' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं । जैसे—

भरति, दधाति उदकन्ति—भिङ्गारो=सोने की भारी ['भर' का 'भिङ्ग' आदेश हो गया] । क्रेदीयतीति—केदारं=खेत [किलद=अल्लभावे । 'ल' का लोप हो गया] । के जले सति दारो विदारणभस्ताति वा—केदारं=खेत । कुं

पठवि विन्दति तत्रापन्नतायाति—कोविळारो = दुगना हुआ (विद = लाभे) । इमस्मा कुपुव्वविदा आरो । दस्स लत्तं । इस्स एत्ताभावो । समासे कुस्स ओ च) इत्यादि ।

मार

१६७. क रा मा रो—'कर' धातु से परे, 'मार' प्रत्यय होता है । जैसे—
लोहकिच्चं करोतीति—कम्मारो = लोहार ।

खर

१६८. पु स-स रे हि ख रो—'पुस' तथा 'सर' धातु से परे, 'खर' प्रत्यय होता है । जैसे—

पोसीयति जलेनाति—पोक्खरं = कमल । सरति विकारं गच्छतीति—
सक्खरा = सक्कर ।

कीर

१६९. स र-व स-क ला की रो व स्सु द् च—इन धातुओं से परे, 'कीर' प्रत्यय होता है; 'व' का 'उ' होता है । जैसे—

सरीयतीति—सरीरं = शरीर । करोन्ति वासं एतेनाति—उसीरं = खस ।
अनेन थूलादि कलीयति परिमीयतीति—कलीरो = वांस का अंकुर ।

१७०. ग म्भी रा द यो—'गम्भीर' आदि, 'कीर' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं । जैसे—

गो वुच्चति पठवी । तं भिन्दित्वा गच्छति पवत्ततीति—गम्भीरो, गभीरो = गहरा । पादे कुलति, पत्थरतीति—कुळीरो (कुलीरो) = केकड़ा इत्यादि ।

ऊर

१७१. ख ज्ज-व ल्ल-म ता ऊ रो—इन धातुओं से परे, 'ऊर' प्रत्यय होता है । जैसे—

खज्जियतीति—खज्जुरो, खज्जुरी = खजूर । वल्लीयति, संवरीयतीति—
वल्लूरो = सूखा मांस । मसीयतीति—मसूरो = मसूर की दाल ।

१७२. कप्पूरादयो—'कप्पूर' आदि, 'ऊर' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं।

जैसे—

तुष्टि उप्पादेतुं कप्पति सक्कोतीति—कप्पूरं=कपूर=घनसार । किंविस्सं करोतीति—कुरुरो=पापकारी । पस=वाधने । पसति पीळेतीति—पसूरो=दूर, व्यञ्जन इत्यादि ।

ओर

१७३. कठ-चका ओरो—इन धातुओं से परे, 'ओर' प्रत्यय होता है।

जैसे—

कठति, किच्छेन जीवतीति—कठोरो=कठोर । चकति, परिवितक्केतीति—चकोरो=पक्षी विशेष ।

१७४. मोरादयो—'मोर' आदि, 'ओर' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

मी=हिसायं । ई लोपो । भीयति हिंसतीति—मोरो । कस=गमने । अस्स इ । कसति, गच्छतीति—किसोरो=किशोर, अश्व । महीयति पूजियतीति—महोरो=वल्मीक इत्यादि ।

एरक्

१७५. कुतो एरक्—कवति, नदतीति—कुवेरो [युवण्णानमियडुवडसरे ५.१३६]

रिक

१७६. भू-सूहि रिक्—इन धातुओं से परे, 'रिक' प्रत्यय होता है।

जैसे—

भवतीति—भूरि=बहुत । भूरी=मेघा । सवति, हितं पसवतीति—सूरि=विचक्षण ।

रु

१७७. मी-कसी-नीहि रु—इन धातुओं से परे, 'रु' प्रत्यय होता है।

जैसे—

रंसीहि अन्धकारं मीयति हिंसतीति—मेरु=सुमेरु पर्वत । के, जले, सयति पवत्ततीति—कसेरु=पानी में जमने वाला एक कन्द । अत्तनिस्सिते सुन्दरत्तं नेति, पापेतीति—मेरु=पर्वत ।

एरु

१७८. सि ना एरु—सिना=सोचेय्ये । इस धातु से परे, 'एरु' प्रत्यय होता है । जैसे—

सिनाति, सुचि करोतीति—सिनेरु=पर्वतराज ।

रुक्

१७९. भी - रु हि रुक्—इन धातुओं से परे, 'रुक्' प्रत्यय होता है । जैसे—
भायन्ति एतस्माति—भीरु=भयानक (?) डरपोक । रवतीति रुह=मिगो, मृग ।

बूल

१८०. त मा बूलो—तम=भूसने । इस धातु से परे, 'बूल' प्रत्यय होता है । जैसे—

मुखं तमेति, भूसेतीति—जम्बूलं=पान ।

लक्, वाल

१८१. सि तो लक् वाला—सि=सेवार्यं । इस धातु से परे, 'लक्' तथा 'वाल' प्रत्यय होते हैं । जैसे—

सत्तेहि सेवीयतीति—सिला=शिला । सेलो =पर्वत । जलं सेवतीति—सेवालो=सेवार ।

अल

१८२. मङ्ग-कम-सम्ब-सब-सक-वस-पिस-केव-कल-पल्ल-कठ-पठ-कुण्ड-मण्डा अलो—इन धातुओं से परे, 'अल' प्रत्यय होता है । जैसे—

मङ्गन्ति, सत्ता एतेन वृद्धि गच्छन्तीति—मङ्गलं । कामीयतीति—कमलं ।
 सम्ब्वेति खण्डेतीति—सम्ब्वलं=पाथेय । सबलं=चितकवरा । सक्कोति वत्तुन्ति—
 सकलं=सब । वसतीति—वसलो=शूद्र । पियभावं पिसति गच्छतीति—पेसलो=
 प्रियशील । केवति, पवत्ततीति—केवलं=सकल । कलीयति, परिमीयति उदक
 मेतेनाति—कललं=गर्भ की एक अवस्था; कीचड़ । पल्लति, आगच्छति उदक-
 मेतस्माति—पल्ललं=जलाशय । कठन्ति, एत्थ दुक्खेन यन्तीति—कठलं=
 कपाल-खण्ड । पटति वृद्धि गच्छतीति—पटलं=समूह । घंसनेन कुण्डति दहतीति—
 कुण्डलं । मण्डीयति, परिच्छेदकरणवसेन भूसीयतीति—मण्डलं=घेरा ।

कल

१८३. मुत्ता कलो—'मुस' धातु से परे, 'कल' प्रत्यय होता है । जैसे—
 मुसलो=अयोग्य ।

१८४. फलादयो—'फल' आदि, 'कल' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं । जैसे—
 तिट्ठति एत्याति—थलं=ऊँची जगह (ठस्स थो । पुव्वसर लोपो) । उदकं
 पिवतीति—उप्पलं=उत्पल । पतति गच्छति परिपाकन्ति—पाटलो=फल,
 सुवर्णकुसुम । वेहति वृद्धि गच्छतीति—ब्रह्मलं=घना । चुपति, एकत्थ न तिट्ठ-
 तीति—चपलो इत्यादि ।

कालो, कल

१८५. कुला कालो च—कुल=पत्थारे । इस धातु से परे, 'काल' प्रत्यय
 होता है, और 'कल' भी । जैसे—

कुलति, अत्तनो सिप्पं पत्थरतीति—कुलालो=कुम्हार । कुलति, पक्खे पसार-
 तीति—कुललो=टिट्ठिहरी चिड़िया ।

१८६. मुळालादयो—'मुळाल' आदि, 'काल' प्रत्ययान्त शब्द निपात
 हैं । जैसे—

मील=निमीलने । उद्धरमत्ते निमीलतीति—मुळालं=मृणाल । मूसिका-
 दिखादनेन वलति जीवतीति—विळालो=विलार । कप्पति जीवितुं एतेनाति
 कपालं=घटादि-खण्ड । पी=तप्पने । अत्तनो फलेन सत्ते सन्तप्पेतीति—पियालो

==पियाल फल । कुण =सद्दे । वातसमुद्धिता वीचिमाला एत्थ कुणन्ति नदन्तीति—
कुणालो=एक महा सर । पविसन्ति एत्थाति—विसालो=विस्तार । पल=गमने ।
वातेन पलति, गच्छतीति—पलालं=पुत्राल । ससादयो सरति, हिंसीति—
सिङ्गालो (सिगालो) =सियार इत्यादि ।

णाल

१८७. चण्डपता णालो—'चण्ड' तथा 'पत' धातु से परे 'णाल' प्रत्यय होता है । जैसे—

चण्डेति पीळेतीति—चण्डालो । अधो गच्छतीति—पातालं=रसातल ।

ल

१८८. मादित्तो लो—'मा' आदि धातु से परे, 'ल' प्रत्यय होता है । जैसे—
मीयति, परिमीयतीति—माला । एति, गच्छतीति—एला=मुँह का लार ।
पीनेति, तप्पेति एत्थाति—पेलो=वेंत की बनी डलिया । दूयति परितापेतीति—
दोला=हिंडोला । कल =सङ्ख्याने । कलनं—कल्लं=युक्त ।

इल

१८९. अन-सल-कल-कुक्क-सठ-महा इलो—इन धातुओं से परे, 'इल' प्रत्यय होता है । जैसे—

अनति पवत्ततीति—अनिलो=हवा । सलति, गच्छतीति—सलिलं=जल ।
कलति पवत्ततीति—कलिलं=गहन । कुकति, अत्तनो नादेन सत्तानं मनं गण्हा-
तीति—कोकिलो=कोयल । सठति, वञ्चेतीति—सठिलो=शठ । महीयति
पूजीयतीति—महिला=स्त्री ।

किल

१९०. कुटा किलो—कुट=कोटिल्ये । इस धातु से परे, 'किल' प्रत्यय होता है । जैसे—

अकुटि, कुटिलत्तमगमीति—कुटिलो=टेढ़ा ।

१६१. सि थि ला द यो—'सिथिल' आदि, 'किल' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

सहितुं अलन्ति—सिथिलं ['सह' धातु का 'सिथ' आदेश हो गया] ।
परदुक्खे सति कम्पतीति—कपिलो = ऋषि । अकवि, नीलादिवणत्तमगमीति—
कपिलो = मटमैला रंग । मथीयतीति—मिथिला = पुरी इत्यादि ।

कुल

१६२. चट - कण्ड - वट्ट - पु था कु लो—इन धातुओं से परे, 'कुल' प्रत्यय होता है । जैसे—

चटति, मित्ते भिन्दतीति—चटुलो = खुसामदी । कण्डीयति छिन्दीयतीति—
कण्डुलो = वृक्ष । वट्टतीति—वट्टुलो = परिमण्डल । अपत्यरीति—पुयुलो =
विस्तार ।

१६३. तु मु ला द यो—'तुमुल' आदि, 'कुल' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं ।
जैसे—

तम = छेदने । अतमि, वित्थिणत्तमगमीति—तुमुल = फलने वाला । तमीयति,
विकारमापादीयतीति—तण्डुलो = चावल । अत्थिकेहि निचीयते कि—निचुलो =
हिज्जलो, एक वनस्पति-विशेष इत्यादि ।

ओल

१६४. क ल्ल - क प - त क्क - प टा ओ लो—इन धातुओं से परे, 'ओल' प्रत्यय होता है । जैसे—

वातवेगेन समुद्गतो कल्लति, रवतीति—कल्लोलो = समुद्र का लहर । कपति,
दन्ते अच्छादेतीति—कपोलो = गाल । तक्कीयतीति—तक्कोलं = एक फल ।
पटति, व्याधिमेतेन गच्छतीति—पटोलो = एक सच्ची इत्यादि ।

उल, उलि

१६५. अ ङ्ग उ लो लि—अङ्ग = गमने । इस धातु से परे, 'उल' तथा
'उलि' प्रत्यय होते हैं । जैसे—

अङ्गन्ति; एतेन जानन्तीति—अङ्गुलं=प्रमाण । अङ्गति, उग्गच्छतीति—
अङ्गुलि ।

अलि

१९६. अञ्जलि—अञ्ज=व्यक्तिमखनगतिकन्तिसु । इस धातु से परे,
'अलि' प्रत्यय होता है । जैसे—

अञ्जेति, भत्ति अनेन पकासेतीति—अञ्जलि ।

लि

१९७. छदा लि—छद=संवरणे । इस धातु से परे, 'लि' प्रत्यय होता है ।
जैसे—

छादेतीति—छल्ली=छल्ली ।

१९८. अल्ल्यादयो—'अल्लि' आदि, 'लि' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं ।
जैसे—

अर=गमने । अरति, पवत्ततीति—अल्लि=वृक्ष । अत्थिकेहि नीयतीति—
नीलि, नीली=एक प्रकार का गाछ । द्वित्व होने से, 'निल्ली' भी होता है ।
पालेति, रक्खतीति—पालि । पाली=पंक्ति । पालेति, रक्खतीति—पल्लि=कुटि ।
चोदीयतीति—चुल्ली=चूल्हा इत्यादि ।

अव

१९९. पि ला दी ह्यवो—'पिल' आदि धातुओं से परे, 'अव' प्रत्यय होता
है । जैसे—

पिल=वत्तने । पिल्यतेति—पेलवो=पतला । पल्लीयतीति—पल्लवो ।
पणीयतीति—पणवो=एक तरह का ढोल इत्यादि ।

२००. साळवादयो—'साळव' आदि, 'अव' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं ।
जैसे—

सलति, पवत्ततीति—साळवो=अच्छी तरह तैयार किया गया, 'खदर' आदि
फल का एक खाद्य । कित=निवासे । किच्छतीति—कितवो=ठग, जुआरी ।

म=बन्धने । मुनाति बन्धतीति—मुत्तवो=चण्डाल । वल, वल्ल=संवरणे ।
वलति, वल्लतेति वा—त्रळवा=अश्वराज । मुर=संवेठने । मुरीयतीति—
मुखो=मृदङ्ग इत्यादि ।

आव

२०१. सरा आवो—‘सर’ धातु से परे, ‘आव’ प्रत्यय होता है । जैसे—
सरति, पवत्ततीति—सराव=प्याला ।

णुव

२०२. अल-मल-विला णुवो—इन धातुओं से परे, ‘णुव’ प्रत्यय होता
है । जैसे—

लताहि अल्लीयतीति—आलुवो=एक गाछ । मलति, धारेतीति—मालुवा=
लता, अमर वेल । विलति, भिन्दतीति—त्रैलुवो=वृक्ष ।

ईव

२०३. गा त्वीवो—गा=सद्दे । इस धातु से परे, ‘ईव’ प्रत्यय होता है ।
जैसे—

गायन्ति एतायाति—गीवा=गला ।

क्व, क्वा

२०४. सु तो क्व क्वा—‘सु’ धातु से परे, ‘क्व’ तथा ‘क्वा’ प्रत्यय होते हैं ।
जैसे—

सुणातीति—सुवो=सुग्गा । सुवा=सुग्गा ।

२०५. वि द्वा—‘विद’ धातु से परे, ‘क्वा’ प्रत्यय होता है; तथा उसका
पर-रूप-भाव होता है । यह निपात है । जैसे—

विदति, जानातीति—विद्वा=विद्वान ।

रेव

२०६. थु तो रेवो—थु=अभित्यवे । इस धातु से परे, ‘रेव’ प्रत्यय होता

है। जैसे—

यवति, सिञ्चतीति—धेवो = जल विन्दु ।

रिच

२०७. स मा रि चो—सम = उपसमे । इस धातु से परे, 'रिच' प्रत्यय होता है। जैसे—

समेति, उपसमेतीति—सिचो = शिव, उमापति । सिचा = सियार । सिचं = शान्ति ।

रचि

२०८. छ दा र चि—छद = संवरणे । इस धातु से परे, 'रचि' प्रत्यय होता है। जैसे—

छादेतीति—छचि = द्युति, त्वचा के ऊपर की पपड़ी ।

किस

२०९. पू र-ति मा कि सो रस्सो च—'पूर' तथा 'तिम' धातु से परे, 'किस' प्रत्यय होता है । 'ऊ' का 'उ' हो जाता है । जैसे—

पूरेतीति—पुरिसो = पुरुष । पुरे, उच्चे ठाने सेति, पवत्ततीति—पुरिसो = पुरुष । तेमीयतीति—तिमिसं = अन्वकार ।

ईस

२१०. क रा ई सो—'कर' धातु से परे, 'ईस' प्रत्यय होता है । जैसे—
करीयतीति—करीसं = गुह ।

२११. सि री सा द यो—'सिरीस' आदि, 'ईस' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं । जैसे—

सप्पदट्टकालादिसु सरीयतीति—सिरीसो = वृक्ष । पूरेतीति—पुरिसं = गुह । तलति, सत्तानं पतिट्ठानं भवतीति—तालिसं = एक दवा का गाछ इत्यादि ।

रिञ्विस

२१२. क रा रि ङ्विसो—'कर' धातु से परे, 'रिञ्विस' प्रत्यय होता है ।
जैसे—

करीयतीति—किञ्विसं=पापं ।

स

२१३. स स-अ स-व स-वि स-हन-वन-भन-अन-क मा सो—
इन धातुओं से परे, 'स' प्रत्यय होता है । जैसे—

ससन्ति, जीवन्ति सत्ता एतेनाति सस्सं=शस्य । असति, खिपतीति—
अस्सो=घोड़ा । वसन्ति एत्याति —वस्सं=वर्ष । विसतीति—वेस्सो=वैश्य ।
हञ्जतेति—हंसो । वनोति, पत्यरतीति—वंसो=वंश, वांस । मञ्जतेति—मंसं=
मांस । अनति, जीवति एतेनाति अंसो=हिस्सा, कंधा । कामीयतीति—कंसो=
एक नाप ।

सक्

२१४. आ मि-थु-कु-सी तो सक्—इन धातुओं से परे, 'सक्' प्रत्यय
होता है । जैसे—

आमीयति, अन्तो पक्खिपीयतीति—आमिसं=भोग्य पदार्थ । थवीयतीति—
थुसो=भुस्सा । कवति, वातेन नदतीति—कुसो=कुश घास । सयन्ति एत्य
ऊकादयो ति—सीसं=सिर, सीसा ।

२१५. फ स्सा द यो—'फस्स' आदि, 'सक्' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं ।
जैसे—

फुस=सम्फस्से । उस्स अ । फुसति इति—फस्सो=स्पर्श । फुस्सो=एक
नक्षत्र । पोसीयतीति—पोसो=पुरुष । पुस्सं=फल-विशेष । अभवीति—भुसं=
भुस्सा । अङ्केति अनेन अञ्जे 'ति—अङ्कुसो । फायति, वुद्धि गच्छतीति—पप्फासं=
पेट के भीतर का एक अवयव । कलीयति, परिमीयतीति—कम्मासो=चितकवरा ।
कम्मासं=पाप । कुलति पत्यरतीति—कुम्मासो=एक स्राव । मञ्जति सघनत्तं
एतायाति—मञ्जूसा=ब्रह्मा । पीनेतीति—पीयूसं=अमृत । कुल=संवरणे ।

कुलीयति, संवरीयतीति—कुलिसं=वज्र । वल=संवरणे । वलति, एतेन मच्छे ।
गण्हातीति—ब्रह्मिसो=बंसी । महीयति इति—महेसी=पट रानी इत्यादि ।

णिसक्

२१६. सु तो णि स क्—‘सु’ धातु से परे, ‘णिसक्’ प्रत्यय होता है । जैसे—
सुणातीति—सुणिसा=पतोह ।

अस

२१७. वे त - अ त - यु - प न - अ ल - क ल - च मा असो—इन धातुओं से परे, ‘अस’ प्रत्यय होता है । जैसे—

वेतति, पवत्ततीति—वेतसो=वेंत । अतति, वातकम्पितो निच्चं वेधत्तं
यातीति—अतसो=वातो । अतसी=अलसी । यवीयति, मिस्सीयतीति—
यवसो=पशुओं का चारा । पन्यते, थवीयतेति—पनसो=कटहल । अलीयति,
वन्धीयतीति—अलसो=अलसी । कलीयतीति—कलसो=कलश । चमति,
अदति अनेनाति—चमसो=चमचा, श्रुवा ।

असण्

२१८. व य - दि व - क र - क रे हि असण् सक् पा स क सा—‘वय’
आदि धातुओं से परे, यथाक्रम ‘असण्’ आदि प्रत्यय होते हैं । जैसे—

वयति, गच्छतीति—वायसो=कौआ । दिव्वन्ति एत्याति—दिवसो=
दिन । करीयतीति—कप्पासो=कपास । किव्विसं करोतीति—कक्कसो=कर्करा ।

सु

२१९. स स - म स - दं स - अ सा सु—‘सस’ आदि धातुओं से परे, ‘सु’
प्रत्यय होता है । जैसे—

ससति, जीवति इति—सस्सु=सास । मसीयतीति—मस्सु=दाढ़ी । दंसीयति
परायत्तो एतेनाति—दहसु=चोट । असीयति, खिपीयतीति—अस्सु=आँसू ।

दसुक्

२२०. वि दा द सुक्—'विद' धातु से परे, 'दसुक्' प्रत्यय होता है। जैसे—
विदति, जानातीति—विदस्सु=विद्वान् ।

रीहो

२२१. स सा री हो—'सस' धातु से परे, 'रीह' प्रत्यय होता है। जैसे—
ससति, हिंसतीति—सीहो=सिंह ।

ह

२२२. जी वा मा हो व मा च—'जीव' तथा 'अम' धातु से परे, 'ह' प्रत्यय होता है। जैसे—

जीवन्ति एतायाति—जिह्वा=जीभ । अमति पवत्ततीति—अम्हं=पत्थर ।
पपुञ्चो अमति पवत्ततीति—पम्हं=प्रमुख ।

- २२३: त ण्हा द यो—'तण्हा' आदि, 'ह' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—
तसति, पातुमिच्छति एतायाति—तण्हा=तृष्णा । कस=विलेखने । कस-
तीति—कण्हो=काला । जोतेतीति—जुण्हा=चाँदनी । निमीलन्ति अनेन अक्खी-
नीति—मीळ्हं=गुह । गव्हतीति—गाळ्हं=गाढ़ । दहतीति—दळ्हं=दूढ ।
वहति, वुद्धिं गच्छतीति—वाळ्हं=मज्जवूत । गच्छतीति—गिम्हो=ग्रीष्म ।
पटति, यातीति—पटहो=एक वाजा । कलीयति, परिमीयति अनेन सूरभावन्ति—
कलहो=विवाद । कटन्ति, एत्थ ओसघादिं मट्ठतीति—कदाहो=कड़ाही । वरीय-
तीति—वराहो=सूअर । लुनाति एतेन, ति—लोहं=लोहा इत्यादि ।

हि, ही

२२४. प णु स्स हा हि ही णो ल ङ् च—'पण' तथा उ-पूर्वक 'सह' धातु से परे, यथाक्रम 'हि ही' प्रत्यय होते हैं। अन्त का 'ण' तथा 'लङ्' आदेश होता है। जैसे—

पणीयति, बोहरीयतीति—पण्ही=एंड़ी । उस्सहतीति—उस्सोळ्हि=वीर्य ।

ळ

२२५. खी-मि-पी-चु-मा-वा-का हि लो उस्स वा दी घो च—इत्तु धातुओं से परे, 'ळ' प्रत्यय होता है; तथा 'उ' का विकल्प से दीर्घ हो जाता है। जैसे—

खीयतीति—खेळो = थूक । मीयति, पक्खिपीयतीति—मेळा = राख । पीनेतीति—पेळा = पेड़ा । चवतीति—चूळा = चूड़ा । चोळो = कपड़ा । मीयति परिमीयतीति—माळो = एक कूट वाला, अनेक कोनों वाला सभागृह । वाति गच्छतीति वाळो = जंगली जानवर । काति, फरुसं वदतीति काळो = कृष्ण ।

ळक्

२२६. गु तो ळक् च—गु = सहे। इस धातु से परे, 'ळक्' प्रत्यय होता है, और 'ळ' भी । जैसे—

गवति, (सहं) पवत्तति एतेनाति—गुळो = गुड़ । गोळो = वीना ।

२२७. पङ्गुळादयो—'पङ्गुळ' आदि 'ळक्' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं । जैसे—

खञ्ज = गतिवेकल्ले । पङ्गु आदयो अखञ्जि, गतिवेकल्लं आपञ्जि इति—पङ्गुळो = लूंक । किञ्चिसं करोतीति—कखल्लो = क्रूर । कुक्कति, पापकारीहि आदीयतीति—कुक्कुळं = एक नरक । मङ्केति, वनं मण्डेतीति—मकुळो = कली ।

ळि

२२८. पा तो ळि—'पा' धातु से परे, 'ळि' प्रत्यय होता है । जैसे—
अत्थं पाति, रक्खतीति—पाळि = पालि भाषा ।

लु

२२९. वी तो लु—'वी' धातु से परे, 'लु' प्रत्यय होता है । जैसे—
वेति पवत्ततीति—वेलु = वाँस ।

॥ इति 'ण्वादि' वृत्ति ॥

पहला परिशिष्ट
मोग्गल्लान सूत्र-पाठ

मोग्गल्लान व्याकरणा

सिद्धमिद्धगुणं साधु नमस्सित्वा तयागतं
सधम्मसङ्घं भासिस्सं मागधं सहलक्खणं ॥

पालि-व्याकरण में सूत्र पाँच प्रकार के हैं—१. संज्ञा, २. परिभाषा, ३. विधि, ४. नियम, ५. अधिकार।

१. संज्ञा-सूत्र

‘संज्ञा’ का अर्थ है ‘नाम-करण’। मोग्गल्लान व्याकरण के प्रथम बारह सूत्र ‘संज्ञा-सूत्र’ हैं। पहला सूत्र ‘वर्ण’ का नाम-करण करता है; दूसरा ‘स्वर’ का, तीसरा ‘सवर्ण’ का, चौथा ‘ह्रस्व’ का, पाँचवाँ ‘दीर्घ’ का, छठा ‘व्यञ्जन’ का, सातवाँ ‘वर्ग’ का, और आठवाँ ‘निगहीत’ का।

नवाँ सूत्र है—इयुवण्णा ऋन्ता नामस्सन्ते १.६—अर्थात्, किसी पुल्लिङ्ग या नपुंसकलिङ्ग नाम के अन्त्य ‘इ’ या ‘ई’ की संज्ञा ‘ऋ’, तथा ‘उ’ या ‘ऊ’ की संज्ञा ‘ल’ है।

‘ऋ’ या ‘ल’ शब्द का, अपने में कोई अर्थ नहीं है। किंतु व्याकरण-शास्त्र में, जहाँ कहीं ‘ऋ’ संज्ञा आती है, उससे ऋट नाम के अन्त्य ‘इ’ या ‘ई’ का बोध हो

१. अ आदयो तितालीस वण्णा । २. दसादो सरा । ३. द्वे द्वे सवण्णा ।
४. पुञ्चो रत्तो । ५. परो दीधो । ६. कादयो व्यञ्जना । ७. पञ्च पञ्चका
वग्गा । ८. विन्दु निगहीतं ।

जाता है। उसी तरह, 'ल' संज्ञा कहने से, नाम का अन्त्य 'उ' या 'ऊ' समझ लिया जाता है।

दसवाँ सूत्र है—पित्थियं^१ १.१०—अर्थात्, स्त्रीलिङ्ग नाम के अन्त्य 'इ', 'ई', 'उ' या 'ऊ' की संज्ञा 'प' होगी। आगे के सूत्रों में, जहाँ कहीं 'प' संज्ञा आवेगी, उससे भट स्त्रीलिङ्ग नाम के अन्त्य इ, ई, उ या ऊ का बोध हो जायगा।

ग्यारहवाँ सूत्र है 'घा'^२ १.११—अर्थात्, स्त्रीलिङ्ग नाम के अन्त्य 'आ' की 'घ' संज्ञा होती है। आगे के सूत्रों में, जहाँ कहीं 'घ' संज्ञा आवेगी, उससे भट 'आ'कारान्त स्त्रीलिङ्ग नाम के अन्त्य 'आ' का बोध हो जायगा।

बारहवाँ सूत्र है—गोस्थालपने १.१२—अर्थात्, सम्बोधन के अर्थ में (=आलपने) प्रयुक्त 'सि' विभक्ति की संज्ञा 'ग' होगी।

२. परिभाषा-सूत्र

बहुत से स्थानों पर एक ही बात को बार-बार कहने से बचने के लिए, कोई नियम या छोटा संकेत निश्चित कर लेते हैं। ऐसे नियम या संकेत निश्चित करने वाले सूत्र 'परिभाषा-सूत्र' कहे जाते हैं।

मोगल्लान व्याकरण में, परिभाषा के (१३-२५) तरह सूत्र हैं। इन तरह सूत्रों में, पहले के पाँच सूत्र नियम निर्धारित करते हैं—

(क) नियम-निर्धारक-सूत्र

विधिव्विसेसनन्तस्स १.१३—सूत्र में यदि कोई विशेषण-पद आवे, तो वह विशेषण जिसके अन्त में हो उसी शब्द का ग्रहण होता है। जैसे—

'अतो योनं टा टे'^३—इस सूत्र में, 'अतो' का अर्थ है 'अ' से परे। किन्तु, यह पद नाम का विशेषण है; इसलिए, इसका अर्थ हुआ—'अ' जिसके अन्त में हो,

^१ पो इत्थियं

^२ घो + आ

ऐसे नाम से परे । फलतः, इस सूत्र का अर्थ हुआ—अकारान्त नाम से परे 'यो' विभक्तियों का 'टा-टे' आदेश हो जाता है ।

सप्तमियं पुव्वस्स १.१४—सूत्र के किसी पद में सप्तमी विभक्ति होने पर, उससे (व्यवधान रहित) पूर्वका कार्य जानना चाहिए । जैसे—

'सरो लोपो सरं' । इस सूत्र में, 'सरं' पद सप्तम्यन्त है । अतः, इस सूत्र का अर्थ हुआ—स्वर से (व्यवधान रहित) पूर्व स्वर का लोप होता है । जैसे—

सम्मन्ति + इघ = सम्मन्तिघ । यहाँ, 'इघ' के 'इ' से (व्यवधान रहित) पूर्व 'सम्मन्ति' के 'इ' का लोप हो गया ।

पञ्चमियं परस्स १.१५—सूत्र के किसी पद में पञ्चमी विभक्ति होने पर, उससे पर का (=वाद का) कार्य जानना चाहिए । जैसे—

'अतो योनं टा टे' । इस सूत्र में 'अतो' पद पञ्चम्यन्त है; अतः, इसका अर्थ हुआ—अकारान्त नाम से (व्यवधान रहित) पर में (=वाद में) । फलतः, इस सूत्र का अर्थ हुआ—अकारान्त नाम से (व्यवधान रहित) परे, 'यो' विभक्तियों का 'टा-टे' आदेश होता है ।

'आदिस्स' १.१६—पर का जो कार्य होना कहा गया है, वह उसके आदि वर्ण के स्थान में समझना चाहिए । जैसे—

र संख्यातो वा ४.१०—इस सूत्र में, संख्या से परे 'दस' शब्द का 'र' आदेश किया गया है । 'दस' शब्द के 'र' आदेश होने का अर्थ है—'दस' शब्द के आदि-वर्ण 'द' के स्थान में 'र' होना । जैसे—ते + दस = तेरस ।

'छट्ठियन्तस्स' १.१७—सूत्र के किसी पद में षष्ठी विभक्ति होने पर, उससे उसके अन्तिम वर्ण का कार्य समझना चाहिए । जैसे—

'राजस्स इ नाम्हि'—इस सूत्र में 'राजस्स' पद षष्ठ्यन्त है । अतः, इस सूत्र का अर्थ हुआ—'राज' शब्द के अन्तिम वर्ण 'अ' का 'इ' हो जाता है, यदि 'ना' विभक्ति परे हो । जैसे—राज + ना = राजिना ।

(ख) संकेत (=अनुबन्ध) निश्चय करने वाले सूत्र

इ अनुबन्धो १.१८—जिसमें 'इ' अनुबन्ध (=संकेत) लगा हो, उसका आदेश, षष्ठ्यन्त पद के अन्तिम वर्ण के स्थान में होता है ।

टनुबन्धानेकवण्णा सब्बस्स १.१९—जिसमें 'ट' अनुबन्ध (=संकेत) लगा

हो, और जो अनेक वर्णों वाला आदेश हो, वह सम्पूर्ण पठ्यन्त पद के स्थान में होता है। जैसे—

‘अतो योनं टा टे’ : इस सूत्र में, ‘योनं’ पद में पठ्यी विभक्ति है; अतः, ऊपर कहे गये सूत्र ‘छट्टियन्तस्स’ के अनुसार, ‘यो’ पद के अन्तिम वर्ण ‘ओ’ का लोप होना चाहिए था। किंतु, प्रस्तुत सूत्र के अनुसार, सम्पूर्ण पद ‘यो’ का ‘आ’ तथा ‘ए’ आदेश होगा; क्योंकि ‘आ-ए’ के साथ ‘ट’ अनुबन्ध (=संकेत) लगा है। जैसे—
बुद्ध + यो = बुद्धा, बुद्धे।

अनेक वर्णों वाला आदेश भी सम्पूर्ण पठ्यन्त पद के स्थान में होता है।

अ कानुबन्धाद्यन्ता १.२०—जिसमें ‘अ’ अनुबन्ध (=संकेत) लगा हो, वह पठ्यन्त पद के आदि में आता है। जैसे—

‘सुब्बु सस्स’। इस सूत्र के ‘सुब्बु’ पद में, ‘ब्’ अनुबन्ध (=संकेत) लगा है। इससे मालूम होता है, कि पठ्यन्त पद ‘स’ के आदि में ‘सु’ का आगम होगा। ‘सु’ का ‘स’ ही रहता है, क्योंकि ‘उ’ केवल उच्चारण-सौकर्य के लिए लगा दिया गया है। अतः—बुद्ध + स = बुद्ध + स्स = बुद्धस्स।

जिसमें ‘क’ अनुबन्ध (=संकेत) लगा हो, वह पठ्यन्त पद के अन्त में आता है। जैसे—

(अत्त-आतुमानं) ‘सुहिसु नक्’—यहाँ, ‘नक्’ पद में ‘क’ अनुबन्ध (=संकेत) लगा है; इससे मालूम होता है, कि ‘न’ का आगम पठ्यन्त पद ‘अत्त’ तथा ‘आतुम’ के अन्त में होगा—‘सु-हि’ विभक्तिर्या यदि परे हों। जैसे—अत्त + सु = अत्तन + सु = अत्तनेसु।

मनुबन्धो सरानमन्ता परो १.२१—जिसमें ‘म’ अनुबन्ध लगा हो, वह पठ्यन्त शब्द के अन्तिम स्वर से परे आता है। जैसे—

‘मं च रुधादीनं’। इस सूत्र के ‘मं’ पद में, ‘म’ अनुबन्ध (=संकेत) लगा है; इससे मालूम होता है, कि ‘अं’ का आगम पठ्यन्त शब्द ‘रुध’ के अन्तिम ‘स्वर’ ‘उ’ से परे होगा। जैसे—रुधति।

(ग) साधारण परिभाषा-सूत्र

विप्पट्टिसेधे १.२२—यदि एक ही जगह, परस्पर भिन्न दो सूत्र (नियम) लगते हों, तो उनमें वाद में कहा गया सूत्र लगता है।

संकेतो ऽनवयवोऽनुवन्वो १.२३—किसी शब्द में, 'अनुवन्व' सिर्फ एक संकेत के लिए लगाया जाता है। 'अनुवन्व' केवल इस बात का संकेत करने के लिए लगाया जाता है, कि वह आदेश किसके स्थान पर, या वह आगम कहाँ पर होगा। 'अनुवन्व', शब्द का अङ्ग नहीं होता है; अतः, आदेश या आगम के समय, वह छोड़ दिया जाता है। [दिए—पृ० ४३६, ४४०, ४४६, ४५०]

अनुवन्वों के संकेत—

१. 'ङ'—पठ्यन्त पद के अन्तिम वर्ण के स्थान में आदेश करने का संकेत करता है।
२. 'ट'—सम्पूर्ण पठ्यन्त पद के स्थान में आदेश करने का संकेत करता है।
३. 'अ'—पठ्यन्त पद के आदि में आगम करने का संकेत करता है।
४. 'क'—पठ्यन्त पद के अन्त में आगम करने का संकेत करता है।
५. 'म'—पठ्यन्त पद के अन्तिम स्वर से परे आगम करने का संकेत करता है।

वर्णपरिणामसवर्णोऽपि १.२४—स्वर के साथ 'वर्ण' शब्द लगा देने से, उसके सवर्ण का भी ग्रहण होता है। 'अवर्ण' कहने से, 'आ' का भी ग्रहण होता है; 'इवर्ण' कहने से, 'ई' का भी ग्रहण होता है। इत्यादि।

- न्तु वन्तु मन्त्वा वन्तु तवन्तु सम्बन्धी १.२५—सूत्र में, जहाँ 'न्तु' शब्द का प्रयोग आवे, वहाँ 'वन्तु', 'मन्तु' 'आवन्तु' तथा 'तवन्तु'—इन्हीं के 'न्तु' का ग्रहण करना चाहिए। [जन्तु, तन्तु आदि शब्दों के 'न्तु' का नहीं]

३. विधि-सूत्र

विभक्ति-प्रत्ययादि के विषय में विधान करने वाले सूत्र 'विधि-सूत्र' हैं। 'विधि-सूत्र' ही, व्याकरण में सर्व-प्रधान हैं; क्योंकि, दूसरे सूत्र तो विधि-सूत्र के कार्य-सम्पादन के सौकर्य के लिए ही बनाए गए हैं। जैसे—

प्य दिच्चादीहि ४.४—अर्थात्, 'दिति' आदि शब्दों से परे, अपत्य के अर्थ में 'प्य' प्रत्यय होता है। दिति + प्य = दिच्चो।

कम्मे दृत्तिया २.२—कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है।

अतो योर्न टाटे २.४३—अकारान्त नाम से परे, 'यो' विभक्तियों का 'टा-टे'

- आदेश होता है। इत्यादि।

४. नियम-सूत्र

किन किन स्थान में कोई खास नियम लागू होते हैं या नहीं, उसे बताने वाले सूत्र 'नियम-सूत्र' हैं। जैसे—

न खादादीनं २.६—अर्थात्, ऊपर कहा गया नियम 'खाद' आदि धातुओं के साथ नहीं लगता है।

वहिस्सानिमन्तु के २.७—अर्थात्, 'वह' धातु के प्रयोज्यकर्ता में तृतीया विभक्ति होती है, यदि उसका कर्ता नियन्ता न हो।

५. अधिकार-सूत्र

किसी प्रकरण-विशेष की सूचना देने वाले सूत्र 'अधिकार-सूत्र' हैं। जैसे—
 बहुलं १.५८—अर्थात्, आगे आने वाले सभी सूत्रों में 'बहुल' का नियम लगा है।
 उत्तरपदे ३.५४—अर्थात्, आगे आने वाले सूत्रों के कार्य तभी होते हैं, यदि 'उत्तर पद' परे हो। इत्यादि।

सूत्र-पाठ

पठमो कण्डो

१. अ आदयो तितालीस वण्णा	११. घा
२. दसादो सरा	१२. गो स्यालपने
३. द्वे द्वे सवण्णा	(सञ्जाधिकार)
४. पुव्वो रस्सो	१३. विधिव्विसेसनन्तस्स
५. परो दीघो	१४. सत्तमियं पुव्वस्स
६. कादयो व्यञ्जना	१५. पञ्चमियं परस्स
७. पञ्च पञ्चका वग्गा	१६. आदिस्स
८. विन्दु निग्गहीतं	१७. छट्ठियन्तस्स
९. इयुवण्णा भला नामस्सन्ते	१८. ड नुवन्वो
१०. पित्थियं	१९. टनुवन्वानेकवण्णा सब्वस्स

२०. अकानुवन्वाद्यन्ता	३६. लोपो
२१. मनुवन्धो सरानमन्ता परो	४०. परस्तरस्त
२२. विष्पट्टिसेधे	४१. वग्गे वगन्तो
२३. संकेतो 'नवयवो' नुवन्धो	४२. येवहिनु ज्जो
२४. वण्णपरेन सवण्णो' पि	४३. ये संस्त
२५. न्तु वन्तुमन्त्वावन्तु तवन्तुसम्बन्धी (परिभासायो)	४४. मयदा सरे
२६. सरो लोपो सरे	४५. वनतरगा चागमा
२७. परो क्वचि	४६. छा लो
२८. न द्वे वा	४७. तदमिनादीनि
२९. युवण्णानमेओ लुत्ता	४८. तवग्गवरणानं ये चवग्गवयजा
३०. यवा सरे	४९. वगलसेहि ते
३१. एओनं	५०. हस्त विपल्लासो
३२. गोस्तावड्	५१. वे वा
३३. व्यञ्जने दीघरस्ता	५२. तथनरानं टठणला
३४. सरम्हा द्वे	५३. संयोगादि लोपो
३५. चतुत्यदुतियेस्वेसं ततियपठमा	५४. वीच्छाभिक्खञ्जेसु द्वे
३६. वित्तित्सेवे वा	५५. स्यादिलोपो पुव्वस्तेकस्त
३७. एओनमवण्णे	५६. सव्वादीनं वीतिहारे
३८. निग्गहीतं	५७. याव वोधं सन्भमे
	५८. ब्रह्मं

इति (मोगल्लाने व्याकरणे) सञ्जादिकण्डो पठमो

अ०। २०. न्वा + आदि + अन्ता। २१. नं + अ०। २६. इ + उ = यु।
 ३२. स्त + अ। ३५. सु + एतं (चतुत्य-दुतियानं)। ३६. वो + इतिस्स + एवे।
 ३७. नं + अ। ४२. य + एव। ४४. म, य, द०। ४५. व, न, त, र, ग०।
 ४८. तवग्ग-व-र-णानं ये चवग्ग-व-य-जा। ४९. वग-ल-से हि ते (= ते एव वग-
 ल-न्ता)। ५२. त-थ-न-रानं ट-ठ-ण-त्ता। ५४. च्छा + आ०। ५५. स्स + ए०।
 ५६. व्व + आ०।

दुतियो कण्डो

(स्यादि)

- | | |
|---|--|
| १. द्वे द्वेकानेकेसु नामस्मा सि यो अं यो
ना हि स नं स्मा हि स नं स्मि सु | २०. लक्खणे
२१. हेतुम्हि
२२. पञ्चमीणे वा
२३. गुणे
२४. छट्ठी हेत्वत्येहि
२५. सब्वादितो सब्वा
२६. चतुर्थी सम्पदाने
२७. तादत्ये
२८. पञ्चम्यवधिसमा
२९. अपपरीहि वज्जने
३०. पटिनिधिपटिदानेसु पतिना
३१. रित्ते दुतिया च
३२. विनाञ्चत्र ततिया च
३३. पुथनानाहि
३४. सत्तम्याघारे
३५. निमित्ते
३६. यवभावो भावलक्खणं
३७. छट्ठी चानादरे
३८. यतो निद्वारणं
३९. पठमात्यमत्ते
४०. आमन्तणे |
| २. कम्मे दुतिया | |
| ३. कालद्वानमच्चन्तसंयोगे | |
| ४. गतिवोधाहारसहत्याकम्मक
भज्जादीनं पयोज्जे | |
| ५. हरादीनं वा | |
| ६. न खादादीनं | |
| ७. वहिस्सानियन्तुके | |
| ८. भक्खिस्सार्हिंसायं | |
| ९. ध्यादीहि युत्ता | |
| १०. लक्खणित्थम्भूतवीच्छास्वभिना | |
| ११. पतिपरीहि भागे च | |
| १२. अनुना | |
| १३. सहत्ये | |
| १४. हीने | |
| १५. उपेन | |
| १६. सत्तम्याधिक्ये | |
| १७. सामित्ते 'धिना | |
| १८. कत्तुकरणेसु ततिया | |
| १९. सहत्येन | |

१. द्वे + एक + अने० । ४. गति-वोध-आहार-सहत्य-अकम्मक-भज्जादीनं पयोज्जे । ७. स्स + अ० । ८. स्स + अ० । ९. धि + आ० । १०. लक्खण-इत्थंभूत-वीच्छासु अभिना । १६. मी + आ० । २२. मी + इ० । २८. मी + अ० । ३२. ना + अ० । ३३. पुथ-नानाहि । ३९. मा + अ० ।

४१. छट्ठी सम्बन्धे	६१. अयूनं वा दीघो
४२. तुल्यत्येन वा ततिया	६२. घन्नह्यादिते
४३. अतो योनं टाटे	६३. नाम्मादीहि
४४. नीनं वा	६४. रस्सो वा
४५. स्मास्मिन्नं	६५. यो स्संस्सास्सार्थंतिसु
४६. सस्साय चतुत्थिया	६६. एकवचनयोस्वघोनं
४७. घपतेकस्मि नादीनं यथा	६७. गे वा
४८. स्सा वा तेतिमामूहि	६८. सिस्मि नानपुंसकस्स
४९. नम्हि नुक् द्वादीनं सत्तरसन्नं	६९. गोस्सागसिहिनंसु गा ^{वगा}
५०. बहुकत्तिन्नं	७०. सुम्हि वा
५१. ण्णं ण्णन्नं तितोज्झा	७१. गवं सेन
५२. उभिन्नं	७२. गुन्नं च नंना
५३. सुञ्जं सस्स	७३. नास्सा
५४. स्सं स्सा स्सायेस्विअरेकञ्जेति- मानमि	७४. गावुम्हि
५५. ताय वा	७५. यं पीतो
५६. तेतिमातो सस्स स्साय	७६. नं भीतो
५७. रत्यादीहि टो स्मिनो	७७. योनं नोने पुमे
५८. नुहिसुभस्सो	७८. नो
५९. ल्लुपित्तादीन्स्सा सिस्मि	७९. स्मिनो नि
६०. गे अ च	८०. अम्मवादीहि
	८१. कम्मादितो

४६. स्स + आ० । ४७. घ-पतो एकस्मि ना-आदीनं यथा । ४८. ता + एता + इमा + अमूहि । ५०. बहु-कत्तिन्नं । ५४. स्सं-स्सा-स्सायेसु इतर-एक-अञ्ज-एत-इमानं इ । ५६. ता + एता + इमा० । ५७. त्ति + आ० । ५८. सु-हि-सु उभस्स ओ । ५९. नं + आ० । ६१. अ + इ + उ (इत्थेसं) । ६२. तो + ए । ६३. न + आ० । ६५. स्सं + स्सा + स्साय + अं + ति (इच्चेतेसु) । ६६. एकवचन-योसु अ-घ-ओनं । ६८. न + आ० । ६९. स्स + आ० । ७७. नो-ने । ८०. म्मु + आ० । ८१. म्म + आ० ।

८२. नास्सेनो	१०४. स्मिनो स्सं
८३. भला सस्स नो	१०५. यं
८४. ना स्मास्स	१०६. तिं सभापरिसाय
८५. ला योनं वो पुमे	१०७. पदादीहि सि
८६. जन्त्वादितो नो च	१०८. नास्स सा
८७. कूतो	१०९. कोधादीहि
८८. लोपो' मुस्मा	११०. अतेन
८९. न नो सस्स	१११. सिस्सो
९०. यो लोपनिसु दीघो	११२. व्वच्चे वा
९१. सुनंहिसु	११३. अन्नपुंसके
९२. पञ्चादीनं चुद्दसन्नम	११४. योनं नि
९३. व्वादो न्तुस्स	११५. भला वा
९४. न्तस्स च ट वंसे	११६. लोपो
९५. योसुञ्जिक्कस्स पुमे	११७. जन्तु हेत्त्वोघपेहि वा
९६. वेवोसु लुस्स	११८. ये पस्सिवण्णस्स
९७. योमिह् वा व्वच्चि	११९. गसीनं
९८. पुमालपने वे वो	१२०. असंख्येहि सव्वासं
९९. स्मा-हि-स्मिन्नं म्हा-भि-मिह्	१२१. एकत्यतायं
१००. सुहिस्वस्से	१२२. पुव्वस्सामादितो
१०१. सव्वादीनं नमिह् च	१२३. नातो' मपञ्चमिमा
१०२. सं-सानं	१२४. वा ततिया सत्तमीनं
१०३. घ-पा सस्स स्सा वा	१२५. राजस्सि नामिह्

८२. स्स+ए० । ८३. भ-ल० । ८६. न्तु+आ० । ९१. सु-नं-हि-सु । ९२. पञ्च-आदीनं चुद्दसन्नं अ । ९३. यो+आ० । ९४. वा+अंसे । ९५. योसु ऋ-इ-स्स० । १००. सु+अस्स+ए । ११०. तो+ए० । १११. स्स+ओ । ११२. चि+ए० । ११३. अं+न० । ११७. जन्तु-हेतु-ई-घ-पेहि वा । ११८. स्स+इ० । १२२. स्मा+अ० । १२३. न+अतो+अं+अपञ्चमिया । १२५. स्स+इ ।

१२६. सु-नं-हिमु	१४६. मनादीहि स्मिसंनास्मानं सिसो
१२७. इमस्सानित्ययं टे	ओसासा
१२८. नाम्हनिमि	१४७. सतो सव्भे
१२९. सिम्हनपुंसकस्सायं	१४८. भवतो वा भोन्तो गयोनासे
१३०. त्यतेतानं तस्स सो	१४९. सिस्सागितो नि
१३१. मस्सामुस्स	१५०. न्तस्सं
१३२. के वा	१५१. भूतो
१३३. ततस्स नो सव्वासु	१५२. महन्तारहन्तानं टा वा
१३४. ट सस्मास्मिस्सायत्संस्सासंम्हा-	१५३. न्तुस्स
म्हिस्विमस्स च	१५४. अंडं नपुंसके
१३५. टे सिस्सिसिस्सा	१५५. हिमवतो वा ओ
१३६. दुतियस्स योस्स	१५६. राजादियुवादित्वा
१३७. एकच्चादीहत्तो	१५७. वा म्हानड्
१३८. न नित्स्स टा	१५८. योनमानो
१३९. सव्वादीहि	१५९. आयो नो च सत्ता
१४०. योनमेट्	१६०. टे स्मिनो
१४१. नाञ्जञ्च नामप्पधाना	१६१. नोनासेस्वि
१४२. ततित्ययोगे	१६२. स्मानंसु वा
१४३. चत्यसमासे	१६३. योस्वंहिमु चारड्
१४४. वेट्	१६४. ल्तुपितादीनमसे
१४५. पुव्वादीहि छहि	१६५. नम्हि वा

१२७. स्स + अ० । १२८. नाम्हि अन-इमि (इच्चादेस्सा हौन्ति) । १२९. सिम्हि अनपुंसकस्स अयं । १३०. त्य + एत० । १३१. स्स + अ० । १३४. ट स-स्मा-स्मि-स्साय-त्सं-स्सा-सं-म्हा-म्हिमु इमस्स च । १३५. स्स + इ० । १३७. दीहि + अतो । १४०. नं + एट् । १४१. न + अ० । म + अ० । १४४. वा + एट् । १४६. मन-आदीहि—

स्मि = सि । स = सो । अं = ओ । ना = ता । स्मा = सा ।

१६६. आ	१६१. वत्तहा सनन्नं नोनानं
१६७. सलोपो	१६२. ब्रह्मस्सु वा
१६८. सुहिस्वारङ्	१६३. नाम्हि
१६९. नज्जा योस्वाम्	१६४. पुमकम्मथामद्धानं वा सस्मासु च
१७०. टि कतिम्हा	१६५. युवा सस्सिनो
१७१. ट पञ्चादीहिं चुहुसहि	१६६. नोत्तातुमा
१७२. उभगोहि टो	१६७. सुहिसु नक्
१७३. आरङ्स्मा	१६८. स्मास्स ना ब्रह्मा च
१७४. टोटे वा	१६९. इमेतानमेनान्वादेसे दुतियायं
१७५. टा नास्मानं	२००. किस्स को सव्वासु
१७६. टि स्मिनो	२०१. कि स-स्मिमु वानित्थियं
१७७. दिवादितो	२०२. किमंसिसु सह त्पुंसके
१७८. रस्सारङ्	२०३. इमस्सिदं वा
१७९. पितादीनमनत्त्वादीनं	२०४. अमुस्सादुं
१८०. युवादीनं सुहिस्वानङ्	२०५. सुम्हाम्हस्सास्मा
१८१. नोनानेस्वा	२०६. नम्हि तिचतुन्नमित्थियं तिस्स चतस्सा
१८२. स्मास्मिन्नं नाने	२०७. तिस्सो चतस्सो योम्हि सविभत्तीनं
१८३. योनं नोने वा	२०८. तीणि चत्तारि नपुंसके
१८४. इतो अज्जत्थे पुमे	२०९. पुमे तयो चत्तारो
१८५. ने स्मिनो क्वचि	२१०. चतुरो वा चतुस्स
१८६. पुमा	२११. मयमस्माम्हस्स
१८७. नाम्हि	२१२. नंसेस्वस्माकं ममं
१८८. सुम्हा च	२१३. सिम्हहं
१८९. गस्सं	२१४. तुम्हस्स तुवं त्वमम्हि च
१९०. सास्संसे चानङ्	

२०१. वा + अ० । २०३. स्स + इ० । २०४. स्स + अ० । २०५. सुम्हि +
अम्हस्स + अस्मा । २०६. म + इ० । २११. मयं + अस्मा + अम्हस्स । २१२.
सु + अ० । २१३. म्हि + अ० । २१४. त्वं + अ० ।

२१५. तथा-तयीनं त्व वा तस्स
 २१६. स्माम्हि त्वम्हा
 २१७. न्तन्तूनं न्तो योमिह पठमे
 २१८. तं नमिह
 २१९. तोतातिता सस्मास्मिनासु
 २२०. टटाग्रं गे
 २२१. योमिह द्विन्नं दुवे द्वे
 २२२. दुविन्नं नमिह वा
 २२३. राजस्स रञ्जं
 २२४. नास्मासु रञ्जा
 २२५. रञ्जो रञ्जस्स राजिनो से
 २२६. स्मिह्मि रञ्जे राजिनि
 २२७. समासे वा
 २२८. स्मिह्मि तुम्हाम्हानं तयि
 मयि

२२९. अमिह तं भं तवं ममं
 २३०. नास्मासु तथा मया
 २३१. तव मम तुय्हं मय्हं से
 २३२. डंडाकं नमिह
 २३३. दुतिये योमिह वा
 २३४. अपादादो पदतेकवाक्ये
 २३५. यो-नं-हिस्वपञ्चम्या वो नो
 २३६. ते मे नासे
 २३७. अन्वादेसे
 २३८. सपुव्वा पठमन्ता वा
 २३९. नचवाहाहेवयोगे
 २४०. दस्सनत्येनालोचने
 २४१. आमन्तणं पुव्वमसन्तं व
 २४२. न सामञ्जवचनमेकत्ये
 २४३. बहुसु वा

इति (मोगल्लाने व्याकरणे) स्यादिकण्डो दुतियो

ततियो कण्डो

(समाप्तो)

- | | |
|--|---|
| १. स्यादि स्यादिनेकत्वं | ४. याचावघारणे |
| २. असंख्यं विभक्तिसम्पत्तिसमीपसा-
कल्याभावयथापच्छायुगपदत्ये | ५. पथ्यपावहित्तिरोपुरे पच्छा वा पञ्च-
म्या |
| ३. यथा न तुल्ये | ६. समीपायामेस्वनु |

२३४. अपाद + आदो पदतो + एकवाक्ये । २३५. सु + अ० । २३६ न-च-
वा-हि-एव योगे । २४०. त्ये + अना० ।

१. ना + ए० । ४. व + अ० । ५. परि-अप-आ-वहि-तिरो-पुरे-पच्छा वा
पञ्चम्या । ६. प + आ० । सु + अ० ।

७. तिङ्गवादीनि	२६. इत्थियमत्वा
८. ओरे-परि-प्रटि-पारे-मञ्जे हेट्ठु- द्धाघोन्तो वा छट्ठिया	२७. नदादितो डी
९. तं नपुंसकं	२८. यक्खादिच्चिनी च
१०. अमादि	२९. आरामिकादीहि
११. विसेसनमेकत्थेन	३०. युवण्णेहि नी
१२. नञ्	३१. क्तिम्हाञ्चत्थे
१३. कुपादयो निच्चमस्यादि विधिम्हि	३२. धरण्यादयो
१४. ची क्रियत्थेहि	३३. मातुलादित्वानी भरियायं
१५. भूसजादरानादरेस्वलं सासा	३४. उपमा-संहित-सहित-सञ्जत-सह- सथ-वाम-लक्खणादितुरुत्तू
१६. अञ्जे च	३५. युवा ति
१७. वानेकञ्चत्थे	३६. न्तन्तूनं डीम्हि तो वा
१८. तत्थ गहेत्वा तेन पहरित्वा युद्धे सख्पं.	३७. भवतो भोतो
१९. चत्थे	३८. गोस्तावड्
२०. समाहारे नपुंसकं	३९. पुथुस्स पथव-पुथवा
२१. संख्यादि	४०. समासन्त्व
२२. क्वचेकत्तञ्च छट्ठिया	४१. पापादीहि भूमिया
२३. स्यादिसु रस्सो	४२. संख्याहि
२४. घपस्सान्तस्साप्यधानस्स	४३. नदीगोदावरीनं
२५. गोस्सु	४४. असंख्येहि चाङ्गुल्या नञ्जासंख्य- त्थेसु

७. गु + आ० । ८. हेट्ठा + उट्ठो + अघो + अन्तो । ११. म + ए० । १३. च्चं + अ० । १५. भूसन + आदर + अनादरेसु अलं, सा सा । १७. वा + अ० । २२. चि + ए० । २३. सि + आ० । २५. गोस्स + उ । २६. इत्थियं + अतो + आ । २८. तो + इ० । ३०. इ + उ = यु । ३१. म्हा + अ० । ३२. णी + आ० । ३३. तो + इनी । ३४. लक्खणादितो + उरतो + ऊ । ३८. स्स + अ० । ४०. न्तो + अ । ४४. असंख्येहि च + अङ्गुल्या + अनञ् + असंख्यत्थेसु ।

४५. दीघाहोवस्सेकदेसेहि च रत्या	६६. चिस्मि
४६. गोत्वचत्थे चालोपे	६७. इत्थियम्भासितपुमित्थी पुमेवेकत्थे
४७. रत्तिन्दिवदारगवचतुरस्सा	६८. क्वचिप्पच्चये
४८. आयामे 'नुगवं	६९. सव्वादयो वुत्तिमत्ते
४९. अक्खिंस्माञ्जत्थे	७०. जायाय जयम्पत्तिम्हि
५०. दांरुम्ह्यङ्गुल्या	७१. सञ्जायमुदोदकस्स
५१. चि वीतिहारे	७२. कुम्हादिसु वा
५२. ल्त्वित्थियूहि को	७३. सोतादिसूलोपो
५३. वाञ्जतो	७४. ट नञ्स्स
५४. उत्तरपदे	७५. अन् सरे
५५. इमस्सिदं	७६. नखादयो
५६. पुं पुमस्स वा	७७. नगो वाप्पाणिं
५७. ट न्तन्तूनं	७८. सहस्स सोञ्जत्थे
५८. अ	७९. सञ्जायं
५९. मनाद्यपादीनमो मये च	८०. अपच्चक्खे
६०. परस्स संख्यासु	८१. अकाले सकत्थे
६१. जने पुयस्सु	८२. गन्थान्ताधिक्ये
६२. सो छस्साहायतने वा	८३. समानस्स पक्खादिसु वा
६३. ल्लुपितादीनमारङ्गरङ्ग	८४. उदरे इये
६४. विज्जायोनिस्सम्भन्धानमा तत्र चत्थे	८५. रीरिक्खकेसु
६५. पुत्ते	८६. सव्वादीनमा

४५. दीघ + अहो + वस्स + एकदेसेहि च रत्या, ४६. गोतो + अचत्थे + च + अलोपे । ४७. रत्तिन्दिव-दारगव-चतुरस्सा । ५०. म्हि + अ० । ५२. ल्लु + इत्थिय इ + उ० । ५३. वा + अ० । ५५. स्स + इदं । ५९. मनादि + अपादीनं + ओ मये च । ६१. स्स + उ । ६२. स्स + अ० । ६३. नं + अ० । ६४. नं + आ । ६७. इत्थियं भासितपुमा इत्थी. पुमा इव एकत्थे । ६८. चि + प० = चिप्प० । ७०. जयं पत्तिम्हि । ७१. यं + उ० । ७३. सोतादिसु उ-लोपो । ७७. वा + अ० । ८२. न्ते + अ० । ८६. नं + आ ।

८७. न्तकिमिमानं टाकीटी	९९. वीसतिदसेसु पञ्चस्स पण्णुपत्ता
८८. तुम्हाम्हानं तामेकस्मि	१००. चतुस्स चुचो दसे
८९. तं ममञ्जत्र	१०१. छस्स सो
९०. वेतस्सेट्	१०२. एकट्ठानमा
९१. विघादिसु द्विस्स दु	१०३. र संख्यातो वा
९२. दि गुणादिसु	१०४. छतीहिं लो च
९३. तीस्व	१०५. चतुत्थततियानमड्ढुड्ढतिया
९४. आ संख्यायासतादो नञ्जत्थे	१०६. दुतियस्स सह दियड्ढ-दिवड्ढा
९५. तिस्से	१०७. सरे कद् कुस्सुत्तरत्थे
९६. चत्तालीसादो वा	१०८. काप्पत्थे
९७. द्विस्सा च	१०९. पुरिसे वा
९८. वा चत्तालीसादो	११०. पुव्वापरज्जसायमज्जेहाहस्सन्हो

इति (मोग्गल्लाने व्याकरणे) समासकण्डो ततियो

चतुत्थो-करणो

(णादि)

१. णो वापञ्चे	५. आ णि
२. वच्छादितो णानणायंणा	६. राजतो ञ्जो जातियं
३. कत्तिका-विघवादीहि णेय्य-णेरा	७. खत्ता यिया
४. ण्य दिच्चादीहि	८. मनुतो स्ससण्

८७. न्त-कि-इमानं टा-की-टी । ८८. तुम्ह-अम्हानं ता-मा एकस्मि ।
 ८९. तं मं अञ्जत्र । ९०. वा एतस्स एट् । ९३. तीसु अ । ९५. तिस्स ए । ९७. द्विस्स
 आ च । ९८. वा अचत्तालीसादो । १०२. नं आ । १०५. नं अड्ढा उड्ढतिया ।
 १०७. स्स + उ । १०८. का अण्पत्थे (=अल्पार्थे) । ११०. पुव्व-अपर-अज्ज-
 सायं-मज्जेहि अहस्स अन्हो ।

१. वा + अ० । ७. य-इया । ८. स्स, सण् ।

६. जनपदनामस्मा खत्तिया रञ्जे च णो	दिव्वति खणति तरति चरति
१०. प्य कुरुसिवीहि	वहति जीवति
११. ण रागा तेन रत्तं	३०. तस्स संवत्तति
१२. नक्खत्तेनिन्दुयुत्तेन काले	३१. ततो सम्भूतमागतं
१३. सास्स देवता पुण्णमासी	३२. तत्थ वसति विदितो भत्तो नियुत्तो
१४. तमधीते तं जानाति कणिका च	३३. तस्सिदं
१५. तस्स विसये देसे	३४. णो
१६. निचासे तन्नामे	३५. गवादीहि यो
१७. अदूरभवे	३६. पिनितो भानरि रेय्यण्
१८. तेन निव्वत्ते	३७. मातितो च भंगिनियं द्यो
१९. तमिघत्थि	३८. मातापितुस्सामहो
२०. तन्न भवे	३९. हिते रेय्यण्
२१. अज्जादीहि तनो	४०. निन्दा अजातप्पपटिभागरस्सदया
२२. पुरातो णो च	सञ्जामु को
२३. अमात्वच्चो	४१. तमस्स परिमाणं णिको च
२४. मज्झादित्थिमो	४२. यतेतेहि त्तको
२५. कण्णेव्यणेव्यकयिया	४३. सव्वा चावन्तु
२६. णिको	४४. किन्हा रति-रीव-रीवत्तक-रित्तका
२७. तमस्स सिप्पं. सीलं पण्यं पहरणं	४५. संजातं तारकादित्थीतो
पयोजनं	४६. माने मत्तो
२८. तं हन्तरहति गच्छत्तुच्छति चरति	४७. तग्घो चुद्धं
२९. तेन कंतं कीतं बद्धमभिसंखतं	४८. णो च पुरिसा
संसट्ठं हतं हन्ति जितं जयति	४९. अयुभद्वितीहंसे

१२. न + इ० । १४. क, णिका । १९. तं इघ अत्थि । २३. अमातो अच्चो ।
 २४. तो + इ० । २५. कण्-णेव्य-णेव्यक-य + इया । २८. न्ति + अर० । ति +
 उ० । ३३. स्स + इ० । ३८. सु + आ० । ४०. निन्दा-अज्जात-अप्प-पटिभाग-
 रस्स-दया-सञ्जामु को । ४२. यतो एतेहि त्तको । ४५. दितो-इतो । ४७. च उद्धं ।
 ४९. अयो उन्न-द्वि-त्तीहि अंसे ।

५०. संख्याय सच्चुतीसासदसन्ताधि- कार्स्मि सतसहस्से डो	७०. इयो हिते
५१. तस्स पूरणेकादसादितो वा .	७१. चक्खवादितो स्सो
५२. म पञ्चादिकतीहि	७२. ण्यो तत्थ साधु
५३. सतादीनभि च	७३. कम्मा नियञ्जा
५४. छा द्ढु-द्ढुमा	७४. कथादित्विको
५५. एका काक्यसहाये	७५. पयादीहि णेय्यो
५६. वच्छादीहि तनुत्ते तरो	७६. दक्खिणायारहे
५७. किम्हा निद्वारणे रतर-रतमा	७७. रायो तुमन्ता
५८. तेन दत्ते लिया	७८. तमेत्यस्सत्थीति मन्तु
५९. तस्स भावकम्मेसु त्त-त्तात्तन-ण्य- ण्येय्य-णिय-णिया	७९. वन्ववण्णा
६०. व्य वद्धदासा वा	८०. दण्डादित्विक ई वा
६१. नण् युवा खो च वस्स	८१. तपादीहि स्सी
६२. अण्वादित्विमो	८२. मुखादितो रो
६३. भावा तेन निव्वत्ते	८३. तुण्डयादीहि भो
६४. तरतमिस्सिकियिद्दा' तिसये	८४. सद्दादित्व
६५. तन्निस्सिते ल्लो	८५. णो तपा
६६. तस्स विकारावयवेसु ण-णिक- ण्येय्य-मया	८६. आत्वभिज्झादीहि
६७. जतुतो स्सण् वा	८७. पिच्छादित्विलो
६८. समूहे कण्ण-णिका	८८. सीलादितो वो
६९. जनादीहि ता	८९. मायामेघाहि वी
	९०. सिस्सरे आम्युवामी
	९१. लक्खया णो अ च
	९२. अङ्गा नो कल्याणे

५०. सति-उति-ईस-आस-इसन्ताधिकार्स्मि । ५३. नं+इ । ५५. एका क-आकी असहाये । ५८. ल-इया । ६२. अणु-आदितो इमो । ६४. तर-तम-इस्सिक-इय-इद्दा अतिसये । ७३. निय, जा । ७४. दितो-इको । ७८. तं एत्य अस्स अत्थि, इति मन्तु । ७९. न्तु+अ० । ८०. तो+इ० । ८४. तो अ । ८६. लु+अ० । ८७. तो+इ० । ९०. आमी-उवामी ।

६३. सो लोमा	११४. वारसंख्याय क्वत्तुं
६४. इमिया	११५. कतिम्हा
६५. तो पञ्चम्या	११६. बहुम्हा धा च पच्चासत्तियं
६६. इतोतेत्तो कुतो	११७. सर्कि वा
६७. अभ्यादीहि	११८. सो वीच्छाप्यकारेसु
६८. आद्यादीहि	११९. अभूततन्भावे करासभूयोगे वि- कारा ची
६९. सव्वादितो सत्तम्या त्र-त्या	१२०. दिस्सन्तञ्जे'पि पच्चया
१००. कत्येत्यकुत्रात्र क्वेहिध	१२१. अञ्जस्मि
१०१. धि सव्वा वा	१२२. सकत्ये
१०२. या हिं	१२३. लोपो
१०३. ता हं च	१२४. सरानमादिस्सायुवणस्साएओ णानुवन्वे
१०४. कुहिं कहं	१२५. संयोगे ववचि
१०५. सव्वेकञ्जयतेहि काले दा	१२६. मज्जे
१०६. कदा कुदा सदाधुनेदानि	१२७. कोसज्जाज्जवपारिसज्जमुहज्ज मद्दवारिस्सासभाजञ्जयेय्यवाहु- सच्चा
१०७. अज्जसज्जवपरज्ज्वेतरहिं करहा	१२८. मनादीनं सक्
१०८. सव्वादीहि पकारे था	१२९. उवण्णस्सावड् सरे
१०९. कथमित्यं	१३०. यम्हि गोस्स च
११०. धा संख्याहि	
१११. वेकाज्जं	
११२. द्वितीहेधा	
११३. तव्वति जातियो	

६६. इतो, अतो, एतो, कुतो । १००. कत्य, एत्य, कुत्र, अत्र, क्व, इह, इध ।
१०५. सव्व-एक-अञ्ज-य-त्त० । १०६. सदा अघुना इदानि । १०७. अज्ज, सज्जु,
अपरज्जु, एतरहिं, करहा । १०९. थं + इ० । १११. वा एका ज्जं । ११२. हि +
ए० । ११९. अभूत-तन्भावे कर-अस-भू-योगे विकारा ची । १२०. न्ति + अ० ।
१२४. सरानं आदिस्स अ-इ-उवण्णस्स आ-ए-ओ ण-अनुवन्वे । १२७. कोसज्ज-
अज्जव-वारिसज्ज-मुहज्ज-मद्दव-आरिस्स-आसभ-आजञ्ज-येय-वाहुसच्चा । १२९.
स्स + अ० ।

१३१. लोपो' वणिवणानं	१३७. कण्कनाप्पयुवानं
१३२. रानुवन्धे'न्त सरादिस्स	१३८. लोपो वीमन्तु-वन्तूनं
१३३. किसमहतमिमे कस्महा	१३९. डे सतिस्स तिस्स
१३४. आयुस्सायस्मन्तुम्हि	१४०. एतस्सेद् त्ते
१३५. जो बुद्धस्सिधिट्ठेसु	१४१. णिकस्सियो वा
१३६. वाळ्हन्तिकपसत्थानं सावने दसा	१४२. अघातुस्स के 'स्यादितो घे'स्सि

इति (मोगल्लाने व्याकरणे) णादिकण्डो चतुत्थो

पञ्चमो कण्डो

(खादि)

१. तिज-मानेहि ख-सा खमा-वी मंसासु	१०. सदादीनि करोति
२. किता तिकिच्छा-संसयेसु छो	११. नमोत्वस्सो
३. निन्दायं गुण-वधा वस्स भो च	१२. धात्वत्ये नामस्मि
४. तुंस्मा लोपो चिच्छायं ते	१३. सच्चादीहापि
५. ईयो कम्मा	१४. क्रियत्या
६. उपमानाचारे	१५. चुरादितो णि
७. आधारा	१६. पयोजकव्यापारे णापि च
८. कत्तुतायो	१७. क्यो भावकम्मेस्वपरोक्खेसु मान- न्तत्यादिसु
९. च्यत्ये	१८. कत्तरि लो

१३१. अवण-इवणानं । १३३. किस-महतं इमे कस्-महा । १३४. स्स +
आ० । १३५. बुद्धस्स इय-इट्ठेसु । १३६. वाळ्हन्तिक-पसत्थानं साध-नेद-
सा । १३७. कण-कना अप्पयुवानं । १४१. स्स + इ० । १४२. घे अस्स इ ।

पञ्चमो कण्डो

४. च + इ० । ६. ना + आ० । ८. तो + आयो । ९. ची + अत्ये । ११.
नमोतो अस्स ओ । १७. क्यो भाव-कम्मेसु अपरोक्खेसु मान-न्त-ति आदिसु ।

१६. मं च रघादीनं	४१. क्वचण्
२०. णिणाप्यापीहि वा	४२. गमा रु
२१. दिवादीहि यक्	४३. समानञ्जभवन्तयादितुपमाना दिसा कम्मे रीरिक्त्तका
२२. तुदादीहि को	४४. भावकारकेस्वघण्-घका
२३. ज्यादीहि क्ना	४५. दाघात्वि
२४. ष्यादीहि क्णा	४६. वमादीह्यु
२५. स्वादीहि क्णो	४७. क्वि
२६. तनादित्वो	४८. अनो
२७. भावकम्मेनु तव्वानीया	४९. इत्थियमणक्त्तिकयक्या च
२८. घ्यण्	५०. जा-हाहि नि
२९. आस्से च	५१. करा रिरियो
३०. वदादीहि यो	५२. इ-कि-ती सरूपे
३१. किच्च-घच्च-भच्च-भव्व-लेय्या	५३. सीलाभिकञ्ज्जावस्सकेसुणी
३२. गुहादीहि यक्	५४. थावरित्तरभङ्गुरभिदुरभासुर भत्तरा
३३. कत्तरि ल्नु-णका	५५. कत्तरि भूते क्तवन्तु-क्तावी
३४. आवी	५६. क्तो भाव-कम्मेसु
३५. आसिसायमको	५७. कत्तरि चारम्मे
३६. करा णनो	५८. ठास-वस-सिलिस-सी-रह-जर- जनीहि
३७. हातो वीहि-कालेसु	५९. गमनत्याकम्मकावारे च
३८. विदा कू	
३९. वितो वातो	
४०. कम्मा	

२०. णि-णापि-आपीहि वा । २३. जि + आ० । २४. को + आ० । २५. सु + आ० । २६. तो + ओ । २९. आस्स + ए । ३०. द + आ० । ३२. ह + आ० । ३५. यं + अको । ४१. क्वचि अण् । ४३. समान-अञ्ज-भवन्त-य आदितो उपमाना दिसा कम्मे री-रिक्त्त-का । ४४. सु + अ० । ४५. दा-आतो इ । ४६. वम-आदीहि अयु । ४९. इत्थियं अ, ण, क्त्ति, क, यक्, या च । ५३. ल + आ० । अञ्ज + आ० । ५४. थावर-इत्तर-भङ्गुर-भिदुर-भासुर-भत्तरा । ५७. च + आ० ।

६०. आहारत्था
 ६१. तुं-त्ताये-त्तवे भावे भविस्सति
 क्रियायं तदत्थायं
 ६२. पटिसेधे' लंखलूनं तून-क्त्वा-नक्त्वा
 वा
 ६३. पुब्बेककत्तुकानं
 ६४. न्तो कत्तरि वत्तमाने
 ६५. मानो
 ६६. भाव-कम्मेसु
 ६७. ते स्सपुब्बानागते
 ६८. ण्वादयो
 ६९. खच्छसानमेकस्सरोदि द्वे
 ७०. परोक्खायञ्च
 ७१. आदिस्सा सरा
 ७२. न पुन
 ७३. यथिद्वं स्यादिनो
 ७४. रस्सो पुब्बस्स
 ७५. लोपो' नादिव्यञ्जनस्स
 ७६. ख-छ-सेस्वस्सि
 ७७. गुप्स्सुस्स
 ७८. चतुत्थदुतियानं ततियपठमा
 ७९. क्वग्ग-हानं चवग्ग-जा
८०. मानस्स वी परस्स च मं
 ८१. कितस्सासंसये ति वा
 ८२. युवण्णानमे ओप्पच्चये
 ८३. लहुस्सुपन्तस्स
 ८४. अस्सा णानुवन्धे
 ८५. न ते कानुवन्धनागमेसु
 ८६. वा क्वचि
 ८७. अञ्जत्रापि
 ८८. प्ये सिस्सा
 ८९. एओनमयवा सरे
 ९०. आयावा णानुवन्धे
 ९१. आस्साणापिम्हि युक्
 ९२. पदादीनं क्वचि
 ९३. मं वा रुधादीनं
 ९४. क्विम्हि लोपो' न्तव्यञ्जनस्स
 ९५. पररूपमयकारे व्यञ्जने
 ९६. मनानं निग्गहीतं
 ९७. न ब्रूस्सो
 ९८. कगा चजानं घानुवन्धे
 ९९. हनस्स घातो णानुवन्धे
 १००. क्विम्हि घो परिपच्च समोहि
 १०१. परस्स घं से

६७. ते (=न्तमाना) सपुब्बा अनागते । ६८. णु + आ० । ६९. ख-छ-सानं एक-स्सरोदि द्वे । ७३. यथा + इद्वं । ७६. ख-छ-सेसु अस्स इ । ७७. स्स + उ० । ८१. स्स + आ० । ८२. इ + उ = यु । नं ए-ओ । ८३. स्स + उ० । ८४. अस्स आ । ८५. न ते (ए-ओ-आ) क + अनुवन्ध-न + आगमेसु । ८८. सिस्स आ । ८९. ए-ओनं अय-अवा सरे । ९०. आय-आवा णानुवन्धे । ९१. स्स + आ० । ९६. म-नानं । ९७. ब्रूस्स + ओ ।

१०२. जि-हरानं गि	१२३. जर-सदानमीम् वा
१०३. घास्स हो	१२४. दिसस्स पस्स दस्स दस् द दक्खा
१०४. णिम्हि दीघो दुसस्स	१२५. समाना रो री-रिक्ख-केसु
१०५. गुहिस्स सरे	१२६. दहस्स दस्स डो
१०६. मुह-वहानञ्च ते कानुवन्धे'त्वे	१२७. अनघण्स्वापरीहि लो
१०७. वहस्सुस्स	१२८. अत्यादिन्तेस्वत्थिस्स भू
१०८. घास्स हि	१२९. अत्रास्तात्रादिसु
१०९. गमादि-रानं लोपो'न्तस्स	१३०. न्तमानान्तिथियुंस्वादि लोपो
११०. वचादीनं वस्सुट् वा	१३१. पादितो ठास्स वा ठहो क्वचि
१११. अस्सु	१३२. दास्सियड्
११२. वद्धस्स वा	१३३. करोतिस्स खो
११३. यजस्स यस्स टियी	१३४. पुरस्सा
११४. ठास्सि	१३५. नितो कमस्स
११५. गा-पानमी	१३६. युवण्णानमियडुवड् सरे
११६. जनिस्सा	१३७. अञ्जादिस्सास्सी क्ये
११७. सासस्स सिस् वा	१३८. तनस्सा वा
११८. करस्सा तवे	१३९. दीघो सरस्स
११९. तुं-तून-त्तव्वेसु वा	१४०. सानन्तरस्स तस्स डो
१२०. वास्स ने जा	१४१. कसस्सिम् च वा
१२१. सकापानं कुक्कु णे	१४२. थस्तो-अस्ता
१२२. नितो चिस्स छो	१४३. पुच्छादितो

१०६. ते = तकारे । १०७. स्स + उ० । १०९. रानं = रकारन्तानं ।
 ११०. स्स + उट् । १११. अस्स उ । ११४. ठास्स इ । ११५. गा-पानं ई ।
 ११६. जनिस्स आ । ११८. स्स + आ । १२१. क + आ० । १२३. नं ईम् ।
 १२७. अन-घणसु आ-परीहि लो । १२८. ति + आ० । सुव-अ० । १२९. अ-आ-
 स्सा आदिसु । १३०. न्त-मान-अन्त-इय-इयुंस् आदि लोपो । १३२. स्स + इ० ।
 १३६. इ-उवण्णानं इयड्-उवड् सरे । १३७. अ-जादिस्स आस्स ई क्ये ।
 १३८. स्स + आ । १४०. स + अ० । १४१. स्स + इ० ।

१४४. सास-वस-संस-ससा थो	१६२. मानस्स मस्स
१४५. धो घहभेहि	१६३. बिलस्से
१४६. दहा ढो	१६४. प्यो वा त्वास्स समासे
१४७. वहस्सुम् च	१६५. तुं याना
१४८. रूहादीहि हो ळ च	१६६. हना रच्चो
१४९. मुहा वा	१६७. सासाधिकरा चचरिच्चा
१५०. भिदादितो नो क्त-क्तवन्तूनं	१६८. इतो च्चो
१५१. दात्वन्नो	१६९. दिसा वानवा स् च
१५२. किरादीहि णो	१७०. बि व्यञ्जनस्स
१५३. तरादीहि रिण्णो	१७१. रा नस्स णो
१५४. गो भञ्जादीहि	१७२. न न्तमानत्यादीनं
१५५. सुसा खो	१७३. गमयमिसासदिसानं वा च्छड्
१५६. पचा को	१७४. जर-मराणमीयड्
१५७. मुचा वा	१७५. ठा-पानं तिट्ठ-पि वा
१५८. लोपो वड्ढा क्तस्स	१७६. गम-वद-दानं घम्म-वज्ज-दज्जा
१५९. क्वस्स	१७७. करस्स सोस्स कुव्व-कुरु-कयिरा
१६०. णिणापीनं तेसु	१७८. गहस्स घेप्यो
१६१. क्वचि विकरणानं	१७९. णो निग्गहीतस्स

इति (मोगल्लाने व्याकरणे) खादिकण्डो पञ्चमो

१४५. घ-ह-भेहि = घकारन्त-हकारन्त-भकारन्तेहि क्रियत्येहि । १४७. स्स + उ० । १५१. दातो इन्नो । १६३. बि-लस्स ए । १६७. स-अस-अधिकरा च-च-रिच्चा । १६९. दिसा वान-त्रा स् च । १७३. गम-यम-इस-आस-दिसानं वा च्छड् । १७४. णं + ई० ।

छंदो कण्ठी

(त्यादि)

- | | |
|---|---|
| १. वक्तमाने ति अन्ति, सि थ, मि म,
ते अन्ते, से व्हे, ए म्हे | १२. सम्भावने वा |
| २. भविस्सति स्सति स्सन्ति, स्ससि
स्सथ, स्सामि स्साम, स्सते स्सन्ते,
स्ससे स्सव्हे, स्सं स्साम्हे | १३. मायोगे ई आ आदि |
| ३. नामे गरहाविम्हयेसु | १४. पुव्वपरच्छक्कानमेकानेकेसु तुम्हा-
म्हसेसेसु द्वे द्वे मञ्जिभमुत्तमपठमा |
| ४. भूते ई उं, ओ त्य, इं म्हा, आ ऊ,
ते व्हं, अ म्हे | १५. आ-ईस्सादिस्वब् वा |
| ५. अनज्जतने आ ऊ, ओ त्य, अ म्हा,
त्य त्युं, से व्हं, इं म्हेसे | १६. अआदिस्वाहो ब्रूस्स |
| ६. परोक्खे अ उ, ए त्य, अ म्हे, त्य
रे, त्यो व्हो, इ म्हे | १७. भुस्स वुक् |
| ७. एय्यादो वातिपत्तियं स्सा स्संसु,
स्से स्सथ, स्सं स्सम्हा, स्सथ स्सिसु,
स्ससे स्सव्हे, स्सं स्साम्हसे | १८. पुव्वस्स अ |
| ८. हेतुफलेस्वेव्य एय्युं, एय्यासि एय्या-
थ, एय्यामि एय्याम, एथ एरं,
एयो एय्यव्हो, एय्यं एय्याम्हे | १९. उस्संस्वाहा वा |
| ९. पञ्चपत्यनाविधिसु | २०. त्यन्तीनं टटू |
| १०. तु अन्तु, हि थ, मि म,; तं अन्तं,
त्सु व्हो, ए आमसे | २१. ई-आदो वचस्सोम् |
| ११. सत्वरहेस्वेय्यादि | २२. दास्स दं वा मि-मेस्वद्धिते |
| | २३. करस्स सोस्स कुं |
| | २४. का ई आदिसु |
| | २५. हास्स चाहड् स्सेन |
| | २६. लभ-वस-च्छिद-भिद-खदानं च्छड् |
| | २७. मुज-भुच-वच-विसानं वत्तड् |
| | २८. आ ई आदिमु हरस्सा |
| | २९. गमिस्स |
| | ३०. डंसस्स च छड् |
| | ३१. हूस्स हे-हेहि-होहि स्सच्चादो |
| | ३२. णा-नासु रस्सो |

११. सत्ति-अरहेसु एय्य आदि । १४. नं+ए० । म्हे+अ० । म+उ० ।
१५. सु+अ० । १६. सु+आ० । १९. उस्स अंसु आहा वा । २०. ति-अन्तीनं
टटू । २१. स्स+ओ । २८. स्स+आ । ३१. स्सति+आदो ।

३३. आ ई ऊ म्हा स्ता स्सम्हानं वा
 ३४. कुसरहेहीस्स छि
 ३५. अ ई स्सादीनं व्यञ्जनस्सिञ्
 ३६. ब्रूतो तिस्सीञ्
 ३७. क्यस्स
 ३८. एय्याथस्से अ आ ई थानं ओ अ
 अं त्य त्यो व्होक्
 ३९. उं स्सि त्वंसु
 ४०. एओत्ता सुं
 ४१. हूतो रेसुं
 ४२. ओस्स अ इ त्य त्यो
 ४३. सि
 ४४. दीघा ईस्स
 ४५. म्हात्थानमुञ्
 ४६. इंस्स च सिञ्
 ४७. एय्युं स्सुं
 ४८. हिस्सतो लोपो
 ४९. क्यस्स स्से
 ५०. अत्थितेय्यादिच्छन्नं स-सु-ससथ सं-
 साम
 ५१. आदिविन्नमिया इयुं
 ५२. तस्स थो
 ५३. सि-हिस्वट्
 ५४. मि-मानं वा म्हि-म्हा च
 इति (मोगल्लाने व्याकरणे) त्यादिकण्ठो छट्ठो
५५. एमु सु
 ५६. ई आदो दीघो
 ५७. हिमिमेस्वस्स
 ५८. सका णास्स ख ई आदो
 ५९. स्से वा
 ६०. तेसु सुतो कणोक्खानं रोट्
 ६१. वास्स सनास्स नायो तिम्हि
 ६२. वाम्हि जं
 ६३. एय्यस्सियावा वा
 ६४. ई सच्चादिसु क्खालोपो
 ६५. स्सस्स हि कम्मो
 ६६. एत्तिस्मा
 ६७. हना छेत्ता
 ६८. हातो ह
 ६९. दक्खखहेहि होहीहि लोपो
 ७०. कथिरेय्यस्सेय्युमादीनं
 ७१. टा
 ७२. एयस्सा
 ७३. लभा इंईनं थंया वा
 ७४. गुरुपुट्ठा रस्सा रे न्ते न्ती नं
 ७५. एय्येय्यानेय्यन्नं टे
 ७६. ओ-विकरणस्सु परच्छक्के
 ७७. पुट्ठच्छक्के वा ववचि
 ७८. एय्यामस्सेमु च

३४. कुस-रहेहि ईस्स छि । ३५. स्स + इञ् । ३६. स्स + ईञ् । ५०. अत्थितो +
 एय्यादि० । ५१. न्नं + इ० । ५३. सु + अट् । ५७. सु + अ० । ७६. स्स + उ ।
 ७८. एय्यामस्स एमु च ।

दूसरा परिशिष्ट

मोगगल्लान धातु-पाठ

दूसरा परिशिष्ट

मोग्गल्लान-धातुपाठो

अ-अन्तो उच्चारणत्थो, सेसा धात्वत्था

संख्या

- २५ अग्घ (भू) अग्घने=योग्य होना, बराबरी करना, कीमत का होना
- ३ अंक (भृ) लक्खणे=निशान बनाना, लिख लेना
- ४५१ अङ्क (चु) लक्खणे=निशान बनाना, लिख लेना
- २२ अङ्ग (भू) गमनत्थे=जाने के अर्थ में
- ४५६ अच्च (चु) पूजायं=पूजा करना
- ३८ अच्च (भू) पूजायं=पूजा करना
- ४८ अज (भू) गमने^१=जाना
- ६१ अज्ज (भू) गमने=जाना
- ३७ अञ्च (भू) गमने=जाना
- ४६६ अञ्च (चु) पूजायं=पूजा करना
- ४३ अञ्छ (भू) आयामे=छींचना । निकालना
- ५८ अञ्ज (भू) व्यक्ति मक्खन^०=व्यक्त करना, मालिश करना, जाना
- ५८ अञ्ज (भू) व्यक्तिमक्खनगतिकन्ति^०=व्यवत करना, मालिश करना, जाना, चमकना

१. अज ('सम' पूर्वक) + य = समज्जा । ५.४६

संख्या

- ४६४ अज्ज (चु) मज्जने = साफ करना
 ७० अट (भू) गमनत्थे = धूमना
 ९६ अण (भू) सहत्थे = शब्द करना
 ४९७ अत्थ (चु) याचने^३ = माँगना
 १३० अछ (भू) भक्खने = खाना
 १३२ अछ (भू) गतियाचनेसु = जाना; माँगना
 १४९ अन (भू) पाणने = जीना, रक्षा करना
 ११७ अन्द (भू) वन्वने = वान्वना
 १९२ अम (भू) गमने = जाना
 १६८ अम्व (भू) सह्दे = शब्द करना
 १९५ अय (भू) गमनत्थे = जाना
 २१२ अर (भू) गमने^३ = जाना
 २६८ अरह (भू) पूजायं = पूजा करना
 २३० अव (भू) रक्खणे = रक्षा करना
 ४२२ अस (जि) भोजने = खाना
 ३७३ अस (दि) क्खेपने = फेंकना
 ३०३ अस (भू) भुवि^४ = होना

२. अत्थ + आपि = अत्थापेति । ५.१३

३. ० + अन = अरण । ५.१७१

४. विधि ६.५०—

अस्स अस्तु

अस्स अस्सथ

अस्सं अस्साम

० + एय्य = सिया । ० + एय्युं = सियुं । ६.५१

० + ति = अत्थि । ० + तु = अत्थु । ६.५२

० + सि = असि । ० + हि = अहि । ६.५३

संख्या

- २३७ अस (भ) अदने^५ = खाना
 ४८८ आण (चु) पेसने = भेजना, आज्ञा देना
 ४२७ आप (की) पापुणने^५ = पाना
 ४२४ आप (त) पापुणने = पाना

० + मि = अमिह । ० + म = अमह । ६.५४

० + मि = अस्मि । ० + म = अस्म । ६.५५

भूत ६.५६—

आसि आसु

आसि आसित्य

आसि आसिम्हा

० + अ (परोक्त्वे) = वभूव

आ (अनज्जतने) = अभवा

स्ता = अभविस्ता

स्तति = भविस्तति । ५.१२६.

० + न्त = सन्तो

मान = समानो

न्ति = सन्ति

न्तु = सन्तु

एय्य = सिया

एय्यं = सियुं

५. ० + स, ति = असिसिसति । ५.७१:७५

० + क्त = आसितं । ५.५६

६. ० ('प' पूर्वक) + न्त = पापुणन्तो

ति = पापुणोति; पापेति । ५.१८

तव्व = पापुणितव्वं

तुं = पापुणितुं । ५.८५

संख्या

- २४० आस (भू) उपवेसने" = बैठना
 २८८ इ (भू) अज्झने गति कन्तिसु" = पढ़ना । जाना
 १३ इक्ख (भू) दस्सने = देखना
 २२ इङ्ग (भू) गमनत्थे = जाना
 ३४५ इघ (दि) सेसिद्धियं = बढ़ना । उन्नति करना
 ११८ इन्द (भू) परमिस्सरिये = मालिक बनना । ऐश्वर्य-लाभ करना
 १४७ इन्ध (भू) दित्तियं = प्रदीप्त होना
 २३८ इस (भू) इच्छायं' = चाहना ।
 २५२ इस्स (भू) इस्सायं = डाह करना
 ५१९ ईर (चु) खेपे = फेकना । प्रेरणा करना
 २४ ईस (दि) इस्सरिये = ऐश्वर्य करना

७. ० ('उप' पूर्वक) + अन्न = उपासना । ५.४९१
 + क्त (भाव; कर्म) = उपासितो । ५.५८
 + क्त = आसितं (आधारे, कत्तरि, भावे, कम्मे) । ५.५९
 + ति = अच्छति
 न्त = अच्छन्तो
 मान = अच्छमानो । ५.१७३
८. ० सीले; निपात्त = इत्वणे । ५.५४
 ० ('अधि' पूर्वक) + प्य = अधिच्च
 त्वा = अधीयित्वा
 ० ('सम' पूर्वक) + प्य = समेच्च
 त्वा = समेत्वा । ५.१६८
 ० + स्सति = एहिति; एस्सति । ६.६६
९. ० + तब्ब = एसितब्बं । ५.८३
 + ति = इच्छति
 न्त = इच्छन्तो

संख्या

- २८२ ईह (भू) घट्टने^{१०} = चेष्टा करना
 ४२ उञ्छ (भू) उञ्छे = कणों को चुनना
 १६८ उत्सूय (भू) दोसाविकरणे = दोष का आरोप करना
 ५४६ ऊह (चु) विम्हापने = ठगना
 २८३ ऊह (भू) वितक्के = वितर्क करना
 ६८ एज (भू) कम्पने = कांपना
 १७७ उद्रम (भू) अद्रमे = खाना
 १२१ उन्द (भू) किलेदने = भिगोना
 ६६ उञ्छ (भू) उस्सगे = छोड़ना
 १४० एघ (भू) वुद्धियं = वृद्धि करना
 २३६ एत्त (भू) मग्गने = खोजना
 १७ कङ्ख (भू) इच्छायं = चाहना
 ७७ कट (भू) महने = चूर चूर करना
 ६२ कड्ढ (भू) कड्ढने = निकालना
 ६६ कण (भू) सहत्थे = शब्द करना
 ६५ कण (भू) निमीलने = मूंदना
 ४७७ कण्ठ (चु) सोके = शोक करना
 ८४ कण्ड (भू) भेदने = तोड़ना
 ४७८ कण्ड (चु) भेदने = तोड़ना
 २३३ कण्डुव (भू) कण्डुवने = खुजलाना
 ४८७ कण्ण (चु) सवने = चुनना
 ३१० कत्त (रु) छेदने = छेदना । काटना
 १०४ कत्थ (भू) सिलाघायं = प्रशंसा करना
 ४८६ कय (चु) वाक्यापवन्थे = कहना

मान = इच्छमानो । ५.१७३

१०. ० †प्र = ईहा । ५.४६

संख्या

- १५० कन (भू) दितिगतिकन्तिसु = चमकना; जाना
 ११४ कन्द (भू) व्हांनरोदनेसु = पुकारना; रोना
 १६२ कप्प (भू) सामत्तिये = समयं होना
 ५१३ कप्प (चु) वितक्के = वितकं करना
 १८२ कम (भू) पदविक्लेपे = टहलना
 ५१६ कम (चु) इच्छायं^{११} = चाहना
 १५६ कम्प (भू) चलने = कांपना
 १६६ कम्ब (भू) संवरणे = आच्छादित करना
 ४४३ कर (त) करणे^{१२} = करना

११. ० + ति (पुनः पुनः) = चङ्कमति । ५.७०

० ('नि' पूर्वक) + ति = निक्खमति । ५.१३५

१२. ० + णि = कारेति (प्रेरणार्थक)

णापि = कारापेति (प्रेरणार्थक) । ५.१६ : १६०

० + णि = कारेन्तो; कारयन्तो

णापि = कारापेन्तो; कारापयन्तो; कारापेति; कारापयति । ५.२०

० + तव्व, अनीय = कत्तव्वं । करणीयं । ५.२७

० + ध्यण् = कारियं । ५.२८

० + य = किच्चं । ५.३१

० + णन = कारणं (कत्तरि) । ५.३६

० + अण = कुम्हकारो । ५.४१

० + अ = करो (भाव) । ५.४४

० + अ (कर्म) = ईसक्करो; दुक्करो; सुकरो

० + ण = कारा

अन = कारणा । ५.४६

० + रिरिय = किरिया । ५.५१

० + णी (सीले) = अवस्सकारी । ५.५३

संख्या

५२६ कल (चु) संख्याने = गिनना

- +क्त = कतो । ५.५६
- ('प' पूर्वक) +क्त = पकतो (क्रियारम्भ में) । ५.५७
- +तुं, ताये, तवे = कातुं, कताये, कातवे । ५.६१
- +णक = कारक । ५.८४
- +क्त = कतो । ५.१०६
- +तवे = कातवे । ५.११८
- +तुं = कातुं, कत्तुं
तून = कातून, कत्तून
तव्वं = कातव्वं, कत्तव्वं
- ('सि' पूर्वक) +यण = सङ्खारो (कर्म) सङ्खरीयति । ५.१३३
- ('पुर' पूर्वक) निपात = पुरक्खत्वा; पुरेक्खारो । ५.१३४
- +मान = कराणो
- ('त्त', 'अस', 'अधि' पूर्वक) +प्य = सवकच्च, असवकच्च, अधि-
किच्च । ५.१६७
- +न्त = करोन्तो
मान = कुरमानो
न्ति = करोन्ति । ५.१७२
- +ति = कुव्वति, कथिरति, करोति
न्त = कुव्वन्तो, कथिरन्तो, करोन्तो
मान = कुव्वमानो, कथिरमानो, कराणो
ते = कुव्वते, कथरते, कथिरते । ५.१७७
- +मि = कुम्मि, करोमि
म = कुम्म, करोम । ६.२३
- +ई = अकासि, अफरि
उं = अकंसु, अफरिसु

संख्या

- २४५ कस (भू) गतिहिंसा विलेखनेसु^{११} = जाना । मारना । जोतना
 ३२२ का (दि) सद्दे = शब्द करना
 २५५ कास (भू) दित्तियं = शोभित होना
 ३५ किञ्च (भू) मद्देने = तोड़ना । चूर चूर कर देना
 १०० कित (भ) निवासे^{१४} = रहना

आ = अका, अकरा । ६.२४

० + स्सति = काहति, करिस्सति

त्सा = अकाहा; अकरिस्सा । ६.२६

० + ई = अकासि, अका । ६.४४

० + इं = अकासिं, अकरिं

इम्हा = अकासिम्हा, अकरिम्हा

त्य = अकासित्य, अकरित्य । ६.४६

कर (= कयिर) + एय्युं = कयित्तं

एय्यासि = कयिरासि

एय्याय = कयिराय

एय्यामि = कयिरामि

एय्याम = कयिराम । ६.७०

० + एय्य = कयिरा । ६.७१

० + एय = कयिराय । ६.७२

० + एय्य = करे, करेय्य

एय्यासि = करे, करेय्यासि

एय्यं = करे, करेय्यं । ६.७५

१३.० + क्त = कित्ठं, कट्ठं

तव्व = कसितव्वं । ५.१४१

१४.० + छ (संसये) = विचिकिच्छति; विचिकिच्छा । ५.२

० + छ (तिकिच्छायं) = तिकिच्छति; तिकिच्छा । ५.२:८१

संख्या

- ४६३ कित्त (चु) संसहे = वार वार, या विशेष रूप से कहना
 ३६८ किर (तु) विकिरणे^{११} = बिखेर देना
 १८७ किलम (भू) गिलाने = ग्लानि को प्राप्त होना
 ३६८ किलिस (दि) उपतापे = क्लेश पाना
 ४२३ की (की) दब्बविनिमये^{११} = खरीदना
 २२४ कौल (भू) वन्धे = बाँधना
 २८५ कोळ (भू) = खेल करना
 २ कु (भू) सहे = शब्द करना
 ८६ कुण्ड (भू) दाहे = जलाना
 ३८६ कुच (तु) संकोचे = सिकोड़ना
 ३४३ कुघ (दि) कोपे = क्रोध करना
 ६४ कुज (भू) अव्यत्ते सहे = पक्षियों का आवाज करना
 ३६० कुट (तु) कोटिल्ये = टेड़ा होना
 ७५ कुट (भ) च्छेदने = काटना
 ४७ कुट (भू) च्छेदने = काटना
 ४७१ कुट (चु) आकोटने = मारना पीटना
 १६६ कुण (भू) सहेत्ये = शब्द करना
 ३५४ कुप (दि) कोपे^{१३} = क्रोध करना
 ४०१ कुर (तु) सहे = शब्द करना
 ४०६ कुर (तु) च्छेदने = काटना
 २५१ कुस (भू) अक्कोसे आव्हाने च^{१४} = बुरा-भला कहना । पुकारना

१५. ० + क्त = किण्णो । + क्तवतु = किण्णवा । ५.१५२

१६. ० + ति = किणाति । ६.३२

१७. ० + अ (परोक्त्वे) = चुकोय । ५.७६

१८. ० + ई (भूत) = अक्कोच्छि; अक्कोसि । ६.३४

० + तब्ब = कोसितब्बं

संख्या

- ५३८ कुरा (तु) अगतेसे = बुरा-भना कहना
 २२५ कूल (भू) आचरणे = डकना
 २२७ केल (भू) नानने = हिनना
 ४७० कोह (तु) च्छेदने = छेदना
 ७५ कोह (तु) च्छेदने = छेदना
 ३६८ कलम (भू) गिनाने = परेजान होना
 ३६८ क्लिप्त (दि) उपनासे = क्लेन उठाना
 ६७ सञ्ज (भू) गनियेकल्पने = लंगड़ाना
 १५१ गण (भू) अवदारले = फाड़ना
 ८७ गण्ट (भू) च्छेदने = काटना
 ४७८ गण्ट (तु) च्छेदने = काटना
 १५१ गन (भू) अवदारणे^{११} = गनना
 १८३ गम (भू) गहने = गहना । धना करना
 १७५ गम्भ (भू) पतिवन्धे = ग्राह्य देना
 २८६ गर (भू) विनासे = नाश होना
 ५२४ गल (भ) मोचेव्ये = गारु करना
 २१६ गल (भू) कम्पने = तांपना
 २८६ खा (भू) कथने = कहना
 ३८१ खा (दि) पकासने = प्रकाशित होना
 ३३८ खिद (दि) असहने = खिन्न होना
 ३३६ खिद (दि) दीनभावे^{१०} = दुःखित होना
 ३६५ खिप (तु) पेरणे = फेंकना
 ४०५ खिल (तु) भेदने = तोड़ना
 ४१८ खिप (जि) क्लेपे^{११} = फेंकना

१६.० + क्त = खतो । ५.१०६

२०.० + क्त = खित्तो । क्तवन्तु = खिन्नवा

२१.० + क्त = खिपो । ५.४४

० + णक = खिपको । ५.८७

संख्या

- २५ खी (दि) खये = क्षय होना
 ६ खी (भू) खये = ,,
 ४२५ खी (की) खये^{१२} = ,,
 ४३८ खी (सु) खये = ,,
 १३६ खुद (भू) जिघच्छायं = भूख लगना
 ३५६ खुभ (दि) सञ्चलने = क्षुब्ध होना
 १७२ खुभर (भू) सञ्चलने = ,,
 ४०२ खुर (तु) च्छेदनविलेखनेसु = काटना । खुरेदना
 २२७ खेल (भू) चलने = खेलना
 २८६ ख्या (भू) कथने = कहना
 ६३ गज्ज (भू) सहे = गरजना
 ४८६ गण (चु) संख्याने = गिनना
 १२४ गद (भू) व्यक्तवचने = साफ साफ बोलना
 ४९५ गन्ध (चु) गन्धने = गूथना
 ५०६ गन्ध (चु) सूचने = सूचित करना
 १७६ गढभ (भू) पागम्भिभये = वकवाद करना
 १६२ गम (भू) गमने^{१३} = जाना

२२.० +क्त = खीणो । +क्तवन्तु = खीणवा । ५.१५२

२३.० +आ = अगमा; गमा

ई = अगमी; गमी

स्ता = अगमिस्ता; गमिस्ता । ६.१५

० +त्सं = गच्छं; गच्छित्सं । ६.२६

० +आ = अगा; अगमा । +ई = अगी; अगमी । ६.२६

० +आ = अगच्छा; अगच्छा । +ई = अगच्छि; अगच्छि । ६.३०

० +आ = अगमा; गम

ई = अगमी; गमि

संख्या

- २०६ गर (भू) सेचने=सीचना
 २७७ गरह (भू) निन्दार्यं=निन्दा करना
 २३७ गस (भू) अदने^{१६}=खाना
 २१७ गल (भू) अदने= ,,
 २३६ गवेस (भू) मग्गने=खोजना
 ३१८ गह (रू) उगादाने^{१७}=पकड़ना

अ =गमू; गमु

म्हा =गमिम्हा; गमिम्ह

स्सा =गमिस्सा; गमिस्त

म्हा =गमिस्तम्हा; गमिस्तम्ह । ६.३३

० +उं =अगमिसु; अगमंसु; अगमं । ६.३६

० +न्हा =अगमुम्हा; अगमिम्हा

त्थ =अगमुत्थ; अगमित्थ । ६.४५

० +हि =गच्छ; गच्छाहि । ६.४८

० +एय्यं =गच्छं; गच्छेय्यं । ६.४७

० +न्ति; न्ते =गच्छरे । गमिस्तरे । ६.७४

० +य =गम्मं । ५.३०

० +रू =वेदगू; पारगू । ५.४२

० +अन =गमनं । ५.४८

० +अ (परोक्षे) =जगाम । ५.७०

० +तव्व =गन्तव्वं । ५.६६

० +त्त =गतो । ५.१०६

० +ति, न्त मान =गच्छति; गच्छन्तो; गच्छमानो । ५.१७३

० +ति, न्त, मान =घम्मति; घम्मन्तो; घम्ममानो । ५.१७६

२४. ० +क्की = (भत्तं गसन्ति गणहन्ति वा एत्थ) भत्तगां । ५.६४:४९

२५. ० +अ (भाव) =यग्गहो; निग्गहो । ५.४४

संख्या

- ३२२ गा (दि) सद्दे^{१६} = गाना
 १४१ गाघ (भू) पतिठ्ठायं = प्रतिष्ठित होना
 २८४ गाह (भू) विलोळने = थाह लेना
 ४३४ गि (सु) सद्दे = कहना
 ४२६ गि (कि) सद्दे = ,,
 २ गिर (भू) निगिरणे = निगलना
 ३६६ गिर (तु) निगिरणे = निगलना
 ४०४ गिल (तु) अदने = खाना
 ३६२ गिला (दि) हासखणे = दुःखित होना
 ६४ गुज (भू) अव्यत्तेसद्दे = गुंजना
 ३ गुण (भू) आमन्तणे = आमन्वित करना
 १५३ गुण (भू) रक्खणे^{१७} = रक्षा करना
 ४७६ गुण्ठ (चु) वेठने = लपेटना
 २६ गुध (दि) परिवेठने = चारो ओर से लपेटना
 २७४ गुह (भू) संवरणे^{१८} = ढकना

-
- ० +क्वी = सलाकगं । ५.४७
 ० +क्वी (भक्तं गणहन्ति एत्य) = भक्तगं । ५.४६
 ० +त्वा = गहेत्वा । ५.१६३
 ० +ति, न्त, मान = घेप्पति; घेप्पन्तो; घेप्पमानो । ५.१७८
 ० +त्तव्य, तुं, न्त = गण्हितव्वं, गण्हितुं, गण्हन्तो
 २६. ० +क्त = गीतं । +त्वा = गादित्वा । ५.११५
 २७. ० +छ (निन्दायं) = जिगुच्छा । जिगुच्छति । ५.३
 ० +अ = जिगुच्छा । ५.४६:६६:७७
 २८. ० +यक् = गुहं । ५.४६:१०५
 ० +क = गुहा । ५.४६
 ० +य, अन = गुहं, निगूहने । ५.१०५
 ० +क्त = गूळ्हो । ५.१०६:१४८

संख्या

- ८० घट (भू) ईहायं=चेष्टा करना
 २३७ घस (भू) अदने^{११}=खाना
 ४६६ घट्ट (चु) घट्टने=चेष्टा करना
 ७३ घट्ट (भू) घट्टने= ,,
 २०६ घर (भ) सेचने=सींचना
 २५६ घंस (भू) घंसने=रगड़ना
 ३२३ घा (दि) गन्धोपादाने=सूंघना
 ४०३ घुर (तु) भीमे=घुरघुराना
 ५३५ घुस (चु) सहे=घोषित करना
 ४ घुस (भू) सहे=घोषित करना
 १३ चक्ख (भू) दस्सने=देखना
 ५४ चज (भू) हानियं^{१०}=छोड़ना
 ४७३ चट (चु) भेदने=कूटना
 ११६ चन्द (भू) दित्तिहिलादनेसु=चमकना, प्रसन्न होना-करना
 २०३ चर (भ) गतिभक्खणेसु^१=चलना, खाना, चरना
 २१६ चल (भू) कम्पने=कांपना
 १६७ चाय (भू) पूजायं=पूजना
 ४१२ चि (जि) चये^{१२}=चुनना

-
२६. ० + छ = जिघच्छा; जिघच्छति । ५.४
 ३०. ० + छ्यण (भाव) = चागो । ५.४४
 ३१. ० ('परि' पूर्वक) + य = परिचरिया । ५.४६
 ३२. ० + छ्यण = चैय्यं । ५.२८
 ० + अ (भाव) = चयो । ५.४४
 ० + तव्व = चेतव्वं । ५.८२
 ० + क्त, तव्व, तुं = चितो, चिनितव्वं, चिनितुं । ५.८५
 ० + ('नि' पूर्वक) + अ = निच्छयो । ५.१२२

संख्या

- १६ चिक्त् (भू) वचने=कहना
 ४६२ चित (चु) संचेतने=होश में होना
 ४८६ चिन्त (चु) चिन्तायं=चिन्ता करना
 १५८ चुप (भू) मन्द गमने=धीरे चलना
 ४८५ चुप्प (चु) संचुष्णने=चूर्ण करना
 १६४ चुम्ब (भू) बदन संयोगे=चूमना
 ४४७ चुर (तु) येय्ये^{११}=चोरी करना
 २२७ चेल (भू) चलने=गति करना
 ४८३ छड्ड (चु) छड्डने=फेकना
 ५०४ छद् (चु) वमने=उलटी करना
 ५०१ छन्द (भू) इच्छायं=चाहना
 ५०० छद (चु) संवरणे^{१२}=छिपाना
 ३१२ छिद (रु) द्वेषाकरणे^{१३}=टुकड़े करना
 ३३५ छिद (दि) द्वेषाकरणे=काटना, टुकड़े करना
 ३६६ छु (तु) सम्फस्ते=छूना ।
 १६ जग (भू) निद्रास्त्रये=जागना
 २४ जग्घ (भू) हसने=हँसना

० +क्षय (कर्म) =चीयते । ५.१३६

० +क्त =चिष्णो; क्तवन्तु =चिष्णवा । ५.१५३

३३. ० +णि =चोरयति । ५.१५

० +णि (प्रेरणायं) =चोरेति, चोरयति, चोरेन्तो, चोरयन्तो । ५.२०

३४. ० +क्त =छन्नो । +क्तवन्तु =छन्नवा । ५.१५०

३५. ० +स्ता =अच्छेच्छा; अच्छिन्दिस्ता; +स्तति =छेच्छति; छिन्दि-
 स्तति उं =अच्छेच्छुं; अच्छिन्दिसु । ६.२६

० +अ (परोक्षे) =चिच्छेद । ५.७८

० +क्त, क्तवन्तु =छिन्नो, छिन्नवा । ५.१५०

संख्या

- ७६ जट (भू) सङ्घाते=ढेर होना
 ३५२ जन (दि) जनने^{११}=उत्पन्न करना
 १५७ जप (भू) वचने=बोलना
 १७४ जम्म (भू) गत्तविनामे=जँभाई लेना
 २११ जर (भू) जीरणे^{१२}=जीर्ण होना
 २१६ जल (भू) दित्तियं^{१६}=जलना
 जा (की) वयोहानियं^{१९}=उम्र घटना
 २१३ जागर (भू) निद्दाखये^{२०}=जागना
 २६० जि (भू) जये^{२१}=जीतना

३६. ० ('अनु' पूर्वक) + क्त (भाव, कर्म) = अनुजातो । ५.५८
 ० + घ = जङ्घा । ५.६६
 ० + क्त, त्वा = जातो, जनित्वा । ५.११६
३७. ० ('अनु' पूर्वक) + क्त (भाव, कर्म) = अनुजिण्णो । ५.५८
 ० + अन, ति, णापि, अ = जीरणं, जीरति, जीरापेति, जरा । ५.१२३
 ० + क्त = जिण्णो । + क्तवन्तु = जिण्णवा । ५.१५३
 ० + न्त = जीयन्तो; जीरन्तो
 मान = जीयमानो; जीरमानो
 ति = जीयति; जीरति । ५.१७४
३८. ० + ति (अधिक के अर्थ में) = दहल्लति । ५.७०
३९. ० + नि = जानि (भाव) । ५.५०
४०. ० + य = जागरिया । ५.४६
४१. ० + स (इच्छायं) = जिगिसति; जिगिसा । ५.४
 ० + घ्यण् = जेय्यं । ५.२८
 ० + अ (भाव) = जयो । ५.४४:८६
 ० ('वि' पूर्वक) + क्तवन्तु = विजित्वा । + क्तावी = विजितावी ।
 ५.५५

संख्या

- ४६ जि (भू) जये=जीतना
 ४११ जि (जि) जये=जीतना
 २२६ जीव (भू) पाणवारणे^{११}=जीना
 ४७ जु (भू) जवे=वेग में होना
 ६८ जुत (भू) दित्तियं=चमकना
 ५१२ ऋप (चु) दाहे=जलाना
 ३३० ऋा (दि) चिन्तायं^{१२}=चिन्ता करना (शास्त्र आदिकी), ध्यान करना
 ५१० ऋष (चु) मरण तोस्रननिसाने=मरना, संतुष्ट होना, तेज करना
 ४१२ ऋा (जि) अरववोयने^{१३}=जानना
 ८ टीक (भू) गमनत्ये=जाना
 २६२ ठा (भू) गतिविद्याने^{१४}=ठहरना

-
- ० ('वि' पूर्वक) +त्त, अ=विजिगंसा । ५.१०२
 ० +त्ति=जयति । ५.१३६
 ४२. ० +अक (आशीर्वादायंक) =जीवको । ५.३५
 ४३. ० +अण्=मन्तञ्जायो । ५.४१
 ४४. ० +त्ति=नायति; जानाति । ६.६१
 ० +एय्य=जञ्जा; जानेय्य । ६.६२
 ० +एय्य=जानिया; जञ्जा; जानेय्य । ६.६३
 ० +ई (भूत) =अञ्जासि; अजानि
 स्तति=अस्सति; जानिस्सति । ६.६४
 ० ('वि' पूर्वक) +कू=विञ्जू । ५.३६:४०
 ० +तुं, न्त, ति, क्त=जानितुं, जानन्तो, जानेति, जातो । ५.१२०
 ४५. ० +इय (कर्म, भाव) =ठीयमानं, ठीयते । ५.१७
 सीले; निपात=थावर । ५.५४
 ० ('उय' पूर्वक) +क्त (कर्म, भाव) =उपट्टितो । ५.५८
 ० +न्त=तिट्टन्तो । +मान=तिट्टमानो । ५.६४:६५

संख्या

- २६३ डी (भू) आकासगमने^{५६} = उड़ना
 २५३ डंस (भू) दंसने^{५७} = डसना
 ४५० तक्कं (चु) वितक्के = तर्क करना
 ४१ तच्छ (भू) तनुकरणे = छीलना, पतला करना
 ४६३ तज्ज (चु) संतज्जने = डराना, धमकाना
 ६२ तज्ज (भू) हिंसायं = हिंसा करना
 ४३६ तन (त) वित्थारे^{५८} = फैलाना
 १५४ तप (भू) संतापे = तपाना
 ३५५ तप (दि) संतापे = तपाना
 १६० तप्प (भू) संतप्पने = तृप्त करना
 २०१ तर (भू) तरणे^{५९} = तरना

- ० + मान (भाव, कर्म) = ठीयमानं । ५.६६
- ० + न्त, मान (भविष्यत्) = ठस्सन्तो; ठस्समानो .
मान (भाव, भवि०) = ठीयिस्समानं । ५.६७
- ० + क्त = ठितो । + त्वा = ठत्वा । ५.११४
- ० ('सि' पूर्वक) + न्त, ति = सण्ठहन्तो, सन्तिट्ठन्तो । सण्ठहति,
सन्तिट्ठति । ५.१३१
- ० + ति = तिट्ठति, ठाति
मान, न्त = तिट्ठमानो, तिट्ठन्तो । ५.१७५
- ४६. ० + क्त = डीनो । + क्तवन्तु = डीनवा । ५.१५०
- ४७. ० + आ = अडञ्छा; अडंसा
ई = अडञ्छि; अडंसि । ६.३०
- ४८. ० + क्य (कर्म, भाव) = तायते; तञ्जते । ५.१३८
० + क्त = तन्ति । ५.४६
० + क्त = ततो । ५.१०६
० + ते = तनुते । ६.७६
- ४९. ० + ण = तारा । ५.४६

संख्या

- ५५१ तळ (चु) पतिट्ठायं=प्रतिष्ठित करना
 २६१ तस (भू) उव्वेगे^{५०}=सताना
 ३६६ तस (दि) पिपासायं=पाना, चाहना
 ३३१ ता (दि) पालने=पालना
 १६६ ताप (भू) संतापे=बलेषा देना, तपाना
 ४६६ तिज (चु) निसाने=तेज करना
 ५२ तिज (भू) निसाने^{५१}=तेज करना
 ५२१ तीर (चु) कम्मसमत्तिर्यं=तरना, काम खतम करना
 ३८३ तुद (तु) व्यथने=तकलीफ देना, सताना
 ३८४ तुल (चु) उभाने=तोलना
 २४६ तुस (भू) तुट्ठियं^{५२}=खुश करना
 ३७० तुस (दि) तुट्ठियं=खुश करना
 २६१ तस (भू) उव्वेगे=सताना
 ४४६ थक (चु) पतिघाते=रोकना
 ५०८ थन (चु) देवसद्दे=गर्जना (मेघ का)
 १७५ थम्भ (भू) पतिवन्धे=रोकना
 २०२ थर (भू) सत्थरणे=फैलाना
 १०२ थु (भू) अभित्थवे=तारीफ करना
 ४१४ थु (जि) अभित्थवे=तारीफ करना
 ३२ धेन (चु) चोरिये=चुराना
 ५१६ थोम (चु) सिलाघायं=तारीफ करना
 ४८२ दण्ड (चु) दण्डने=सजा देना

० +क्त =तिण्णो । +क्तवन्तु =तिण्णवा । ५.१५३

५०. ० +क्त (निपात) =त्रस्तो । ५.१४२

५१. ० +क्त, अ =तित्तिक्खा । ५.१:४६:६६

५२. ० +क्त, क्तवन्तु, तव्व, क्तित् =तुट्ठो, तुट्ठवा, तुट्ठव्वं, तुट्ठि । ५.१४०

संख्या

- १९४ दप (भू) दान गतिर्हिंसादानेसु=देना, जाना, हिंसा करना, लेना
 २०७ दा (भू) दारणे=फाड़ना
 २१८ दल (भू) विदारणे=फाड़ना
 २१९ दल (भू) दित्तियं=दीप्त होना, चमकना
 १३३ दलिद्द (भू) दुग्गतियं=निर्धन होना
 २६९ दह (भू) भस्मीकरणे^{१३}=भस्म करना
 १०७ दा (भू) दाने^{१३}=देना
 १२ दिक्ख (भू) मुण्डियोपनयननियमवतादेसेसु=मुण्डन करना, उपनयन करना, नियम करना, व्रत करना, धर्म सिखाना

५२. ० +ण =डाहो; दाहो; डहति; दहति । ५.१२६
 ० +क्त =दड्ढो । ५.१४६
 ० ('आ' पूर्वक) +अन =आळाहनं । परिळाहो । ५.१२७
 ५३. ० +मि =दम्मि; देमि; ददामि
 म =दम्म; देम; ददाम । ६.२२
 ० +ई (भूत) =अदासि; अदा । ६.४४
 ० +ध्यण् =देय्यं । ५.२९
 ० +अ (कर्म) =अन्नदो; पुरिन्ददो । ५.४४
 ० +इ =आदि । ५.४५
 ० +णी (सीले) =सतन्दायी । ५.५३
 ० +ति =ददाति । ५.७४
 ० +णक, अन, णापि =दायको, दानं, दापयति । ५.९१
 ० +त्वा =अनादियित्वा । +ति =समादियति ।
 +प्य =आदाय । ५.१३२
 ० +व्य (कर्म, भाव) =दीयते । ५.१३७
 ० +वत्, वत्तवन्तु =दिन्नो, दिन्नवा । ५.१५१
 ० ('अ' पूर्वक) +अन्ति =अदेन्ति । ५.१६३
 ० +ति, न्त, मान =दज्जति, दज्जन्तो, दज्जमानो । ५.१७६

संख्या

३५६ दिप (दि) दित्तिंयं=चमकना

३१६ दिव (दि) कीलाविजगिंसा

-ओहारज्जुतित्थुतिगतिमु

}	खेलना, जीतने की इच्छा करना,
	=व्यापार करना, चमकना,
	तारीफ़ करना, जाना

४०६ दिस (तु) अतिसज्जने^५=इनाम देना

३७२ दिस (दि) अप्पीतियं=घृणा करना

२४३ दिस (भू) पेक्खने^५=देखना

२४४ दिस (भू) अतिसज्जने=इनाम देना

५४० दिस (चु) उच्चारणे=उच्चारण करना

२७३ दिह (भू) उपचये=वदना

३८३ दी (दि) अवखंडने=टुकड़े करना

३३३ दी (दि) खये^५=नष्ट होना, धीण होना

५४.० +ति, न्त, मान=दिच्छति, दिच्छन्तो, दिच्छमानो । ५.१७३

५५.० +आवी=भयदस्तावी । ५.३४

० +री, रिक्ख, क=सरी, सदी; सरिक्खो, सदिक्खो, सरिसो,
सदिसो । ५.४३:१२५

० +स्तति=दक्खति; दक्खिस्सति । ६.६६

० +क्त=दिट्ठो । ५.८५

० +आ, ई, स्तति=अद्दा, अद्दक्खि, दक्खिस्सति । (कर्म) दिस्सति ।
५.१२४

० +अन, ति तच्च, तुं, अ, आ=दत्तनं, दत्सेति, दट्ठवं, दट्ठं, दुद्दसो,
अद्दस । ५.१२४

० +अन, तुं, ति, ओ=विपत्तना, विपत्तिंतुं, विपत्तति, सुदस्सी-
पियदस्सी-धम्मदस्सी । ५.१२४

० +त्वा=दिस्वा, पत्तिस्त्वा, दिस्वान । ५.१६६

५६.० +क्त, क्तवन्तु=दीनो, दीनवा । ५.१५०

संख्या

- १०६ दु (भू) द्रवे=पिघलना
 १०८ दु (भू) गमने=जाना
 ३३ दुभ (चु) जिघंसायं=हिंसा की इच्छा करना
 ५२६ दुल (चु) उक्खेपे=ऊपर फेंकना
 ३७२ दुस (दि) अप्पीतियं^{५०}=घृणा करना
 २७५ दुह (भू) प्पपरणे^{५६}=दुहना
 ४३८ दू (त) परितापे=पछताना
 १७८ दूम (भू) जिघंसायं=हिंसा की इच्छा करना
 २३१ देव (भू) गमने=जाना
 २५३ दंस (भू) दसने=डसना
 * धन (चु) सहे=आवाज करना
 १६१ धम (भू) सहे=वजाना (शङ्ख आदि का)
 २०६ धर (भू) धारणे=धारण करना
 ५२० धर (चु) धारणे=धारण करना
 २५६ धंस (भू) धंसने^{५९}=ध्वंस करना
 १३८ धा (भू) धारणे^{६०}=धारण करना
 २३४ धाव (भू) गतिसुद्धियं=दौड़ना
 ४१५ धू (जि) कम्पने^{६१}=हिलाना

५७.० +णि, क्त =इसितो । ५.१०४

५८.० +यक् =दुय्हं । ५.३२

० +क्त =दुद्धं । ५.१४५

५९.० +क्त (निपात) =धस्तो । ५.१४२

६०.० +ति =दहति । ५.१०३

० +ई =निधि; बालधि । ५.४५

० ('नि' पूर्वक) +क्त, क्तवन्तु =निहितो, निहितवा । ५.१०८

६१.० +ति =धुनाति । ६.३२

संख्या

- १३६ घे (भू) पाने=पीना
 ५ घोव (भू) घोवने=घोना
 ६ नच्च (भू) नच्चने=नाचना
 ४७२ नट (चु) नाटचे=नाटय (अभिनय) करना
 ७२ नट (भू) नच्चे=नृत्य करना
 १२६ नद (भू) अव्यत्ते सद्दे=नाद करना
 ११२ नन्द (भू) समिद्धियं^{१३}=समृद्ध होना
 १८६ नम (भू) नमने=भुक्ना, नमस्कार करना
 १६५ नय (भू) गमनत्ये=जाना
 ३७६ नस (दि) अदस्सने=नष्ट होना
 ३७६ नह (दि) वन्वने=व्रांधना
 ३५० नहा (दि) सोच्चे=नहाना
 १०५ नाय (भू) याचनोपतापिस्सरियासिसासु=माँगना, वीमार होना,
 श्रीमान् होना, आशिप देना
 ११३ निन्द (भू) गरहायं=निन्दा करना
 २६४ नी (भू) पापुणने^{१४}=पहुँचाना, प्राप्त कराना
 २२३ नील (भू) वण्णे=रँगना, नीला रँगना
 ३८४ नुद (तु) क्खेपे^{१५}=फेंकना

० +त्तच्च, तुं, अन्न = धुनितत्त्वं, धुनितुं, धुननं

+णि-त्तच्च, णापि-त्तच्च, णि-त्तुं = धुनयितत्त्वं, धुनापेतत्त्वं, धुन-
 यितुं । ५.८५

६२. ० +अक (आशीर्वादार्थक) = नन्दको । ५.३५

६३. ० +उं = नेसुं; नयिसु । ६.४०

० +त्तच्च = नेतत्त्वं । ५.८२

० +णि-त्ति = नायति । ५.६०

६४. ० ('प' पूर्वक) +अन्न = पनूदनं । ५.८७

संख्या

- ३३ पच (भू) पाके^{६६} = पकाना
 ४५७ पच (चु) वित्थारे = फैलाना
 ७० पट (भू) गमनत्थे = जाना
 ८१ पठ (भू) उच्चारणे^{६६} = उच्चारण करना, पढ़ना
 ९४ पण (भू) व्यवहारत्थुतिसु = व्यापार करना, बढ़ाई करना
 ४८० पण्ड (चु) परिहारे = खण्डन करना, नष्ट करना
 ९६ पण्ड (भ) लिङ्गवैकल्ये
 ९९ पत (भू) पतने = गिरना
 १०१ पत (भू) गमने = जाना
 २०२ पत्थर (भ) संथरणे = विछाना
 ३९४ पथ (तु) वित्थारे = फैलाना
 १०१ पथ (भू) गमने = जाना
 ३३९ पद (दि) गमने^{६०} = जाना

६५. ० + ल-मान, न्त, ति = पचमानो, पचन्तो, पचति । ५.१८
 ० + घ (कारक) = तिपको । ५.४४
 ० + धयण (भाव) = पाको । ५.४४
 ० + अ (भाव) = पचो । ५.४४
 ० + ति (सरूपे) = पचति । ५.५२
 ० + मान (भाव, कर्म) = पच्चमानो । ५.६६
 ० + मान (कर्म-भविष्य) = पचिस्समानो । ५.६७
 ० + क्त, क्तवतु = पक्को, पक्कवा । ५.१५६
 ० + क्य (कर्म) = पचीयति, पच्चति । ६.३७
 ० + मि, म, हि = पचामि, पचाम, पचाहि । ६.५७
 ६६. ० + णक, ल्लु = पाठको, पठिता । ५.३३
 ६७. ० + धयण (कारक) = पादो । ५.४४
 ० ('आ' पूर्वक) + अ = आपदा । ५.४९

संख्या

- १६५ पय (भू) गमनत्ये=जाना
 २६७ पा (भू) रक्खणे=रक्षा करना
 २६६ पा (भू) पाने^{१८}=पीना
 ७ पाण (भू) चाणे=त्यागना
 ५२२ पार (चु) सामत्थिये=सकना, समर्थ होना
 ५२३ पाल (चु) रक्खने=पालना
 ७६ पिट (भू) सङ्घाते=ढेर करना
 ४८१ पिण्ड (चु) सङ्घाते=ढेर करना
 २१५ पिलु (भू) गमनत्ये=जाना
 ५३४ पिस (चु) गमने=जाना
 ५४७ पिह (चु) इच्छायं=चाहना
 २६० पिस (भू) संचुण्णने=पीसना
 ५०६ पी (चु) तप्पने^{१९}=तृप्त करना
 ५४६ पीळ (चु) वाघायं=तकलीफ देना

-
- ० ('नि' पूर्वक) +तच्च, तुं, अन=निपज्जितच्चं, निपज्जितुं, निप-
 ज्जनं । ५.६२
 ० ('उ' पूर्वक) +क्त, क्तवन्तु=उप्पन्नो, उप्पन्नवा । ५.१५०
 ० ('उ' पूर्वक) +ई (परोक्खे)=उदपादि । ५.१६१
 ६८. ० +स-अ=पिपासा । ५.४६ : ७६
 ० +णी (सीले)=खीरपायी । ५.५३
 ० +क्त=पीतं (आधारे, कम्मे, कत्तरि, भावे)
 ० +क्त, त्वा=पीतं, पीत्वा । ५.११५
 ० +ति, न्त, मान=पिवति, पाति, पिवन्तो, पिवमानो । ५.१७५
 ६९. ० +क=पियो । ५.४४
 ० +तच्च, तुं, अन, ति=पीनेतच्चं, पीनयितुं-पीनितुं, पीननं, पीन-
 यति । ५.८५
 ० +क्त, क्तवन्तु=पीनो, पीनवा । ५.१५०

संख्या

- ३६ पुच्छ (भू) पुच्छने^० = पूछना
 ४५ पुञ्छ (भू) पुञ्छने = पौछना
 ४७३ पुट (चु) भेदने = तोड़ना
 ३६२ पुण (तु) कम्मनि सुभे = धर्म कृत्य करना
 ३६४ पुथ (तु) वित्थारे = फैलना
 १६३ पुप्फ () विकसने = फूलना
 ५३२ पुल (चु) महत्ते = ऊँचा होना
 ५३१ पुल (चु) समुत्सये = ढेर करना
 २४८ पुस (भू) पोसने = पोसना; पालना
 ५३७ पुस (चु) पोसने = पोसना; पालना
 ४१६ पू (जि) पवने = पवित्र करना
 १५२ पू (भू) पवने = पवित्र करना
 ४६७ पूज (चु) पूजार्थं = पूजना
 २०४ पूर (भू) पूरणे^० = भरना
 २२७ पेल (भू) चलने = चलना
 २१५ प्लु (भू) गमनत्थे = जाना
 ८ फण (भू) फरणे = व्याप्त होना
 ११५ फन्द (भू) किञ्चि चलने = घड़कना, हिलना
 ८ फर (भू) फरणे = व्याप्त होना
 २२१ फल (भू) निप्फत्तियं = फलना
 १६६ फाय (भू) वुद्धियं = बढ़ना
 ४०० फुर (तु) चलने = फड़कना
 २२० फुल्ल (भू) विकसने = फूलना

७०. ० + क्त = पुट्ठो । ५.८५

० + क्त, त्वा = पुट्ठो, पुच्छित्त्वा

७१. ० + क्त = पुण्णो । + क्तवन्तुं = पुण्णदा । ५.१५२

संख्या

- ४१० फुस (तु) सम्फस्से=छूना
 ३१४ वघ (रु) वन्धने^{१२}=वैधाना
 १४६ वघ (भू) वन्धने=वैधाना
 ६ बल (भू) पाणने=साँस लेना
 २८१ वह (भ) वुद्धियं^{११}=बढ़ना
 १४२ वाघ (भू) निवाघायं=पीड़ा देना
 ३४१ वुघ (दि) अवगमने=जनाना, समझना
 २८१ ब्रह (भू) वुद्धियं=बढ़ना
 २६८ ब्रू (भू) वचने^{१४}=बोलना
 २८१ ब्रूह (भू) वुद्धियं=बढ़ना
 १४ भक्ख (भू) अदने=खाना
 ४५३ भक्ख (चु) अदने=खाना
 ५० भज (भू) सेवायं^{१५}=सेवा करना
 ६५ भज्ज (भू) पाके^{१६}=भूनना

७२. ० +छ = वीभच्छा, वीभच्छति (निन्दायं) । ५.३

७३. ० +फत्त = बाळ्हो । ५.१०६

० +फत्त = बुद्धो । ५.१४७

७४. ० +आ, उ = आह, आहु इत्यादि । ६.१६

० +उ = आहंसु, आहु । ६.१६

० +ति, अन्ति = आह, आहु । ६.२०

० +ति = अवीति; व्रूति । ६.३६

० +मि, इ = व्रूमि; अन्नवि । ५.६७

० +णि-ति, न्ति = व्रूति, वुवन्ति

७५. ० +क्ति = भक्ति । ५.४६

० +ध्यण् = भाग्यं । ५.६८

७६. ० +क्त = भट्ठो । ५.१४३

संख्या

- ५७ भज्ज (भू) ओमद्दने^{३३} = नष्ट करना
 ७८ भट (भू) भतियं = नीकरी करना
 ६३ भण (भू) भणने = स्पष्ट कहना
 ४८० भण्ड (चु) परिहासे = उपहास करना
 ३०३ भद् (चु) कल्याणे = शुभ कर्म करना, सुखी होना
 ११६ भद् (भू) कल्याणे = शुभ कर्म करना, सुखी होना
 १८४ भम (भू) अनवट्ठाने = घूमना
 १० भर (भू) भरणे^{३६} = पालना
 ३७५ भस (दि) अघोपतने = नीचे गिरना, निन्दित होना
 २६४ भस (भू) भस्मीकरणे = भस्म करना
 २६० भा (भू) दित्तियं^{३७} = चमकना
 २६१ भा (भू) अववोधने = जनाना, प्रकाशित करना
 २५६ भास (भू) वचने = बोलना
 ११ भिक्ख (भू) याचने^{३८} = माँगना
 ३११ भिद (रु) विदारणे^{३९} = तोड़ना, फोड़ना, चीरना
 ३३४ भिद (दि) विदारणे = तोड़ना, फोड़ना, चीरना

७७. ० (सीले-निपात) = भङ्गुर । ५.५४
 ० + क्त, क्तवन्तु = भग्गो, भग्गवा । ५.१५४
 ७८. ० + य = भच्चो (निपात) । ५.३१
 ७९. ० (सीले-निपात) = भासुर, भस्सर । ५.५४
 ८०. ० + अ = भिक्खा । ५.४६
 ८१. ० + स्सा = अभेच्छा, अभिन्दिस्सा । ६.२६
 ० + क्त = भित्ति । ५.४६
 ० (सीले-निपात) = भिटुर । ५.५४
 ० + त्व्व = भेत्तव्वं, भिन्दितव्वं । ५.६५
 ० + क्त, क्तवन्तु = भिन्नो, भिन्नवा । ५.१५०

संख्या

- १६६ भी (भू) भये=डरना
 ३८८ भुज (तु) कोटिल्ले=टेढ़ा होना
 ३०६ भुज (रु) पालनज्भोहारेभु^{ली}=पालना, खाना
 ५३६ भूत्त (चु) अलङ्कारे=सजाना
 २५४ भूस (भू) अलङ्कारे=सजाना
 १ भू (भू) सत्तायं^{ली}=होना

-
८२. ० +ख (इच्छायं) =बुभुक्खति, बुभुक्खा । ५.४:७८
 ० +स्सा =अभोक्खा, अभुञ्जिस्सा
 स्सति =भोक्खति, भुञ्जिस्सति । ६.२७
 ० +य =भोज्जं । ५.३०
 ० +क =भुजो । ५.४४
 ० +णी (सीले) =उण्हभोजी । ५.५३
 ० +क्त =भुत्तं (आघारे, कम्मे, कत्तरि, भावे) । ५.६०
 ० +त्तुं =भुञ्जित्तुं, भोत्तुं ('त्तुं' प्रत्ययके प्रयोग) । ५.६१: १७०
 ८३. ० +अ =वभूव । ६.१७: १८
 ० +त्य, स्सा, स्सति =वभूवित्य-अभवित्य, अभविस्सा, अनुभविस्सति,
 अनुभोस्सति । ६.३५
 ० +एय्याय, स्से =भवेय्यायो, भवेय्याय, अभविस्सें, अभविस्स;
 +अ, आ =अभवं, अभव; अभवित्य, अभवा;
 +ई, थ =भवयव्हो, भवय । ६.३८
 ० +ओ =अभव, अभवि, अभवित्य, अभवित्यो, अभवो । ६.४२
 ० ('अनु' पूर्वक) +य-स्सा =अन्वभविस्सा, अन्वभूयिस्सा,
 +स्सति =अनुभविस्सति, अनुभूयिस्सति । ६.४६
 ० +एय्याम =भवेमु, भवेय्यामु, भवेय्याम । ६.७८
 ० +य =भव्वं । ५.३१
 ० +अ (भाव) =भवो । ५.४४: ८६

संख्या

- २८७ भू (भू) सत्तायं=होना
 ४५४ मक्ख (भू) मक्खने=जाना
 १८ मग्ग (भू) अन्वेसने=खोजना
 ४५६ मग्ग (चु) अन्वेसने=खोजना
 २१ मङ्ग (भू) मङ्गल्ये=मङ्गल होना
 ११ मज्ज (भू) संसुद्धियं=संशोधन करना, साफ करना
 ६६ मण (भू) सदत्थे=शब्द करना
 ४७६ मण्ड (चु) भूसायं=सजाना
 ८५ मण्ड (भू) भूसने=सजाना
 १०३ मथ (भ) विलोळने=मथना
 २७ मद (दि) उम्मादे^०=नशे में होना, पागल होना
 १३१ मद्द (भू) मद्दने=मसलना
 ३५१ मन (दि) ञाने^०=जानना
 ४४१ मन (त) बोधने=विचारना, मनन करना

-
- ० +घ्यण (भाव) =भावो । ५.४४
 ० +क्वी =अभिभू, सयम्भू । ५.४७ : १५६
 ० +क्त्ति =भूति । ५.४६
 ० +त्तब्ब =भवित्तब्बं । ५.८२
 ० +णि-त्ति =भावयति । ५.६०
 ० +त्ति =भवति । ५.१३६
 ० ('अभि' पूर्वक) +त्त्वा, प्य =अभिभवित्त्वा, अभिभूय । ५.१६
 ८४. ० +य =मज्जं । ५.३०
 ० ('प' पूर्वक) +त्तब्ब, तुं =पमज्जित्तब्बं, पमज्जित्तुं,
 +अन, ण =पमज्जनं, पादो । ५.६२
 ८५. ० +स =वीमंसा, वीमंसति । ५.१ : ४६ : ६६ : ८०
 ० +क्त्त =मतो । ५.१०६

संख्या

- ४६० मन्त (चु) गुत्तभासने=सलाह करना
 १०३ मन्थ (भू) विलोळने=मथना
 १६५ मय (भू) गमनत्ये=जाना
 २०५ मर (भू) पाणचागे^६=मरना
 २४६ मस (भू) आमसने=माफ करना
 ४५६ मह (चु) अन्वेसने=खोजना
 २६८ मह (भू) पूजायं=पूजना
 ५०७ मान (चु) पूजायं=पूजना
 २८ मिद (दि) स्नेहने=स्नेहयुक्त होना
 १३५ मिद (भ) सिनेहे=स्नेहयुक्त होना
 १२ मिघ (भू) सङ्गमे^७=जोड़ना, युक्त करना
 ३४० मिघ (दि) अभिकंखायं=चाहना
 ३६३ मिला (दि) गत्तविनामे=अँगड़ाई लेना
 ५४४ मिस्त (चु) सम्मिस्ते=मिलाना
 २७६ मिह (भू) सेचने=गीला करना, सींचना
 २६६ मिह (भू) ईसं हसने=मुसकराना
 ५४८ मिह (चु) पूजायं=पूजना
 ३०६ मुच (रु) मोचने^८=छुड़ाना, मुक्त करना
 ३५ मुच (चु) पमोचने=छुड़ाना, मुक्त करना
 ४० मुच्छ (भू) मोहे=मुरझाना

८६. ० +न्त, मान ति =भीयन्तो, मरन्तो; भीयमानो, मरमानो; भीयति,
 मरति । ५.१७४

८७. ० +अ =मेघा । ५.४६

८८. ० +क्त, क्तवरु =मुक्को, मुत्तो; मुक्कवा, मुत्तवा । ५.१५७

० +स्ता =अमोक्त्वा, अमुञ्चिस्ता

स्तति =मोक्वति, मुञ्चिस्तति । ६.२७

संख्या

- ५६ मुज्ज (भू) मुज्जने^६—गोता लेना
 ८८ मुण्ड (भू) खण्डने^७—मूँडना
 १२२ मुद (भू) तोसे^{१०}—संतुष्ट होना
 ४०७ मुस (तु) थ्ये^{११}—चोरी करना, ठगना
 २८० मुह (भू) मुच्छायं^{१२}—मूर्च्छित होना, मुरझाना
 ३८० मुह (दि) वेचित्ते^{१३}—मोहित होना, मूढ़ होना
 ४१७ मी (जि) हिंसायं^{१४}—हिंसा करना
 १३ मील (भू) निमीलने^{१५}—मूँदना
 ५२७ मील (चु) निमीलने^{१६}—मूँदना
 ४१६ मू (जि) वन्धने^{१७}—वाँधना
 १८१ मू (भू) वन्धने^{१८}—वाँधा
 १२ मेघ (भू) सङ्गमे^{१९}—लड़ाई करना
 ४५५ मोक्ख (चु) मोचने^{२०}—छुड़ाना
 ५१ यज (भू) देवपूजा सङ्गति करण दानेसु^{२१}—देवपूजा करना, मिलना,
 देना
 ४६४ यत (चु) निय्यातने^{२२}—वाहर भेजना

-
८६. ० ('नि' पू०) + क्त, क्तवन्तु = निमुग्गो, निमुग्गवा । ५.१५४
 ६०. ० + क = मुदा । ५.४६
 ० + क्त = मुदितो, मोदितो । ५.८६
 ० ('अनु' पू०) + त्वा = अनुमोदित्वा, अनुमोदियान । ५.१६५
 ६१. ० निपात—मोमुहो । ५.७०
 ० + क्त = मूळ्हो । ५.१०६
 + क्त = मूळ्हो, मुद्धो । ५.१४६
 ६२. ० + यक् = इज्जा । ५.४६
 ० + क्त = इट्ठि । ५.४६
 ० + क्त, त्वा = इट्ठं, यिट्ठं; यजित्वा । ५.११३ : १४३

संख्या

- ४६१ यन्त (चु) संकोचने=सकुचना
 १८० यम (भू) मेथुने^१=विवाहित होना
 १६० यम (चु) उपरमे=रुकना
 ३७४ यस (दि) पयतने=यत्न करना
 ३०० या (भू) पापुणने^२=प्राप्त करना
 ३१ याच (भू) याचने=माँगना
 ३२८ युज (दि) समाधिम्हि=ध्यान करना
 ४६६ युज (चु) संयमे=संयम करना
 ३०८ युज (रु) योगे=जोड़ना
 ३४२ युघ (दि) सम्पहारे^३=लड़ना, जूझना
 १५ रक्ख (भू) पालने=पालना
 २२ रङ्ग (भू) गमनत्ये=जाना
 ४६१ रच (चु) पतियतने
 ५५ रञ्ज (भू) रागे=रँगना
 ३२७ रञ्ज (दि) रागे=रँगना
 ७१ रट (भू) परिभासने=रटना
 ६६ रण (भू) सदृत्ये=आवाज़ करना
 १३४ रद (भू) विलेखणे=खोदना
 १५७ रप (भू) वचने=बोलना
 १४ रभ (भू) राभस्से=जल्दी में होना
 ८८ रम (भू) कीळायं^४=खेलना

६३. ० +ति, न्त, मान =यच्छति, यच्छन्तो, यच्छमानो । ५.१७३

६४. ० +क्त =यातं (आधारे, कत्तरि, भावे, कम्मे) । ५.५६

६५. ० ('आ' पूर्वक) +क =आयुधं । ५.४४

० +कि =युधि । ५.५२

६६. ० +क्त =रतो । ५.१०६

संख्या

- १७१ रम (भू) आरम्भे=शुरू करना
 १६५ रम्ब (भू) अवसेसने=बचाना
 १६५ रम (भू) गमनत्ये=जाना
 ५४२ रस (चु) अस्साद स्नेहनेसु=स्वाद लेना, गीला होना, प्यार करना
 २६३ रस (भू) अस्सादनेसु=स्वाद लेना
 २७६ रह (भू) चागे=त्यागना
 ५४२ रह (चु) चागे=त्यागना
 ३०१ रा (भू) आदाने=लेना
 ४६ राज (भू) दित्तिर्यं=शोभा देना
 ३४५ राघ (दि) संसिद्धियं=सिद्ध होना
 ३४८ राघ (दि) हिंसायं=हिंसा करना
 २३ रिच (क) विरेचने=दस्त आना
 ३२५ रिच (दि) विरेचने=दस्त आना
 ३६ रिञ्च (भू) रिञ्चने=खाली होना
 २०० रु (भू) सद्दे^{१०}=शब्द करना
 ३८७ रुज (तु) भङ्गे=टूटना
 ३७ रुच (चु) भासने=चमकना
 ३६ रुच (चु) रोचने=पसन्द आना
 २६ रुच (दि) रोचने=पसन्द आना
 ३० रुच (भू) दित्तिर्यं=चमकना
 ३२४ रुच (दि) रोचने=पसन्द आना
 ३८७ रुज (तु) भङ्गे^{१०}=बुरा होना, पीड़ा होना, पीड़ा देना
 ३६१ रुठ (तु) उपसंघाते=मारना, लूटना

६७.० +अ (भाव) =रचो । ५.४४

६८.० +क =रुजा । ५.४६

० +ध्यण् (कारक) =रोगो । ५.४४

संख्या

- १२० रुद (भू) रोदने^{१०} = रोना
 ३०५ रुघ (रु) आवरणे^{१०} = रोकना, घेर लेना
 ३४६ रुघ (दि) आवरणे = रोकना, घेर लेना
 ३६१ रुस (दि) रोसे = रुसना, नाराज होना
 २४६ रुस (भू) रोते = रुसना, नाराज होना
 ५३६ रुस (चु) फारसिये = कठोर होना
 २७१ रुह (भू) जनने^{१०} = जगना
 ४३२ लक्ख (चु) दस्सणे = देखना
 २२ लङ्घ (भू) गमनत्ये = जाना, लांघना
 २६ लङ्घ (भू) गतिसोसनेसु = जाना, सूखना
 ६० लज्ज (भ) लज्जने = लजाना, धारमाना
 ४४ लञ्छ (भू) लक्खणे = निशान करना
 ५११ लप (भू) वचने = बोलना, बातचीत करना
 १५७ लप (भू) वचने = बोलना, बातचीत करना
 २० लभ (भू) सङ्गे^{१०} = आसक्त होना, पाना

६६. ० †स्सा = अरुच्छा; अरोदिस्सा

स्सति = रुच्छति; रोदिस्सति । ६.२६

० †क्त = रुदितं, रोदितं । ५.८६

१००. ० †ल-ति, मान, न्त = रुन्धति, रुन्धमानो, रुन्धन्तो । ५.१६

० †तुं, ण = रुन्धितुं, रुन्धिन्तुं; निरोधो

१०१. ० ('अभि' पू०) †ई = अभिरुच्छि, अभिरुहि । ६.३४

० ('आ' पू०) †क्त (भाव, कर्म) = आरुद्धो । ५.५८

० †क्त, तुं = अरुद्धो, आरोहितुं । ५.१४८

१०२. ० †स्सा = अलच्छा, अलभिस्सा

†स्सति = लच्छति, लभिस्सति । ६.२६

० †घ्यण = लाभो । ५.४४

संख्या

- १७० लभ (भू) लाभे=पाना
 १६५ लम्ब (भू) अवसंसने=लटकना
 ५५२ लळ (चु) उपसेवायं^{१०३}=पालना; पोसना
 २८६ लळ (भू) विलासे=ऐश करना
 ५३३ लल (चु) इच्छायं=चाहना
 २६२ लस (भू) कन्तिये=शोभा देना
 ३०१ ला (भू) आदाने=ग्रहण करना
 ३८५ लिख (तु) लेखने=खोदना (लोहे की लेखनी आदि से अक्षर आदि का)
 ३१५ लिप (रु) लिम्पने=लीपना
 ३६७ लिस (दि) लेसे=आलिङ्गन करना
 २७२ लिह (भू) अस्सादने^{१०४}=चाटना
 ३६४ ली (दि) सिलेसन द्रवीकरणेसु^{१०५}=चिपकाना, पिघलाना
 ३२९ लुज (दि) विनासे=नाश करना
 १५ लुञ्च (भू) अपनयने=उखाड़ना (वाल आदि का)
 ३६१ लुठ (तु) उपसंघाते=भारना-लूटना
 ३१६ लुप (रु) छेदने^{१०६}=काटना
 ३५७ लुप (दि) च्छेदने=काटना
 ३५८ लुभ (दि) लोभे=लोभ करना

० +ई (भूत) =अलत्थ, अलभि

इं (भूत) =अलत्थं, अलभिं । ६.७३

० +क्त =लद्धं । ५.१४५

१०३. ० +णि =लाळयति । ५.१५

१०४. ० +य =लेय्यं । ५.३१

१०५. ० +क्त, क्तवन्तु =लीनो, लीनवा । ५.१५०

१०६. ० निपात—लोलुपो । ५.७०

संख्या

- ४२० लू (जि) छेदने^{१०९} = काटना
 ४४८ लोक (चु) = देखना
 ४४८ लोच (चु) दस्सने = देखना
 ६ वक (भू) आदाने = लेना
 ५ वङ्क (भू) कोटिल्लो = टेढ़ा होना
 २२ वङ्ग (भू) गमनत्ये = जाना
 ३७ वच (चु) भासने^{१०८} = बोलना = वातचीच करना
 ३८ वच (चु) भासने = बोलना = वातचीत करना
 २९ वच (भू) व्यत्तवचने = बोलना
 ४६० वच्च (चु) अज्झने = पढ़ना
 ४८ वज (भू) गमने^{१०९} = जाना
 ४६२ वज्ज (चु) वज्जने = मना करना
 ४५८ वञ्च (चु) पलम्भने = ठगना
 ३७ वञ्च (भू) गमने = जाना
 १४० वड्ढ (भू) वुद्धियं^{११०} = वढ़ना

१०७. ० + अण् = सरलावो । ५.४१

० + क्त, क्तवन्तु = लूनो, लूनवा । ५.१५०

१०८. ० + ई = अवोच । ६.२१

स्ता, त्सति = अवक्खा, अवचिस्सति; वक्खति, वचिस्सति । ६.२७

० + घ्यण् = वाक्यं । ५.२८ : ६८

० + अ (भाव) = वचो । ५.४४

० + घ (भाव) = वको । ५.४४

० + इ (स्वरूघ) = वचि । ५.५२

+ क्त = उत्तं, वुत्तं, उत्त्यं, वुत्त्यं । ५.११० : १११

१०९. ० ('प' पूर्वक) + य = पव्वज्जा । ५.४६

११०. ० + क्ति = वड्ढि । ५.१५८

संख्या

- ६१ वड्ढ (भू) वड्ढने=वढ़ाना
 १४८ वण (भू) सम्हत्तियं=आवाज करना
 ४७४ वण्ट (चु) विभाजने=वांटना
 ७६ वण्ट (भू) विभाजने=वांटना
 ४८४ वण्ण (चु) वण्णने=वर्णन करना
 ६७ वत्त (भू) वत्तने=होना
 ११० वद (भ) वचने^{११}=बोलना
 १४३ वघ (भू) हिंसायं^{१२}=हिंसा करना
 ४४० वन (त्) याचने^{१३}=मांगना
 ५०२ वन्द (चु) अभिवादनयुतिसु^{१४}=नमस्कार करना, तारीफ करना
 १११ वन्ध (भू) अभिवादनयुतिसु=नमस्कार करना, तारीफ करना
 १५६ वप (भू) वीजनिक्खेपे=बोना
 १८६ वम (भू) उगिरणे^{१५}=उलटी करना
 ५१४ वम्ह (चु) गरहायं=निन्दा करना
 १६५ वप (भू) गमनत्ये=जाना
 ५१८ वर (चु) आवरणच्छासु=छिपाना, चाहना
 २१४ वर (भू) वारणसम्भतिसु=मना करना, विभाग करना
 २२६ वल (भू) संवरणे=छिपाना
 २२६ वल्ल (भू) संवरणे=छिपाना
 ५४१ वस (चु) अच्छादने=ढकना

१११.० +घ =वज्जं । ५.३०

० +ति, न्त, मान =वज्जति, वज्जन्तो, वज्जमानो । ५.१७६

११२.० +णक् =वघको । ५.८७

११३.० +ति =वनुति, वनोति । ६.७७

११४.० +अन =वन्दना । ५.४६

११५.० +थु =वमथु । ५.४६

संख्या

- १७ वस (भू) निवासे^{११६} = रहना
 १६ वस्स (भू) सेवने = सेवन करना
 ७४ वह (भू) वहने = ढोना
 २७० वह (भ) पापुणने^{११७} = पाना
 ३६५ वा (दि) गतिवन्वनेसु = जाना, बाँधना
 ३०२ वा (भू) गमने = जाना
 ३८६ विज (तु) भयचलनेसु^{११८} = डरना, काँपना
 ३४० विद (दि) सत्तायं = होना
 ३६३ विद (तु) बाणे^{११९} = जानना
 ३१३ विद (रु) लाभे = पाना
 ४६८ विद (चु) बाणे^{१२०} = जानना
 ३४६ विव (दि) वेधने = बाँधना
 १४५ विव (भू) वेधने = बाँधना
 ४०८ विस (तु) पवेसने^{१२१} = घुसना

११६. ० +स्सा = अत्रच्छा, अत्रसिस्सा

स्सति = वच्छति, वसिस्सति । ६.२६

० ('अनु' पू०) +क्त (भाव, कर्म) = अनुवुसितो । ५.५८

० +क्त = वृत्यं । ५.१४४

११७. ० +क्त = वूल्ल्हो । ५.१०७ : १४८

११८. ० ('सं' पू०) +क्त = संविग्गो । +क्तवन्तु = संविग्गवा । ५.१५४

११९. ० +णि-ति = वेदियति । ५.१३६

० +यक् = विज्जा । ५.४६

० +अन = वेदना । ५.४६

० +फू = विहू (लोकविहू) । ५.३८

१२०. ० ('प' पूर्वक) +स्सा = पावेक्खा, पाविसिस्सा

स्सति = पवेक्खति, पविसिस्सति

संख्या

- ३०२ वी (भू) गमने=जाना
 २२८ वी (भू) तन्तसन्ताने=बुनना (कपड़े का)
 ६६ वीज (भू) वीजने=हवा करना
 ४२९ वु (की) संवरणे=ढकना
 ४३३ वु (सु) संवरणे=ढकना
 ४७५ वेठ (चु) वेठने=लपेटना
 १५६ वेप (भू) चलने^{१२१}=कांपना
 २२७ वेल (भू) चलने=हिलना
 १०६ व्यथ (भू) दुखभयचलनेसु=दुःखी होना, डरना, कांपना
 २६७ व्हे (भू) अन्हाने=पुकारना
 ४३७ सक (त) सत्तियं^{१२२}=सकना; समर्थ होना
 ४३४ सक (कि) सत्तियं^{१२२}=सकना; समर्थ होना
 ४३५ सक (सु) सत्तियं^{१२२}=सकना; समर्थ होना
 ८ सक्क (भू) गमनत्ये=जाना
 ४ सङ्क (भू) सङ्कायं=सन्देह करना
 ५१७ सङ्गाम (चु) युद्धे=लड़ाई करना
 ३४ सच (भू) समवाये
 ५३ सज (भू) विस्सजनालिङ्गननिम्मानेसु=छोड़ना, गले लगाना, बनाना

ई=पावेक्खि, पाविसि । ५.२७

०+ध्यण (कारक) =वेसो । ५.४४

१२१. ०+थु=वेपयु । ५.४६

१२२. ०+न्त, ति =सक्कुणन्तो; सक्कुणोति, सक्कोति । ५.१२१

०+ई, उं (भूत) =असक्खि, असक्खिसु । ६.५८

०+स्सा =सक्खिस्सा; सक्कुणिस्सा

स्सति =सक्खिस्सति; सक्कुणिस्सति । ६.५९

०+स्सति =सक्खति; सक्खिस्सति । ६.६९

संख्या

- ३२६ सज (दि) सङ्गे=आसक्त होना
 ६१ सज्ज (भू) अज्जने=उपार्जन करना
 ४६४ सज्ज (चु) अज्जने=उपार्जन करना
 ५६ सञ्ज (भू) सङ्गे=आसक्त होना
 ८२ सठ (भू) केतवे=ठगना
 १२६ सद (भू) विसणगत्यवसादनादानेसु^{१३३}=जीर्ण होना, जाना, नीचे गिराना, लेना
 ४३६ सन (त) दाने=दान करना
 १२५ सन्द (भू) पस्सवने=टपकना
 १५५ सप (भू) अक्कोसे=कोसना, शाप देना
 १६१ सय्य (भू) गमने=जाना, रेंगना
 ३६० सम (दि) उपसमखेदेसु^{१३४}=(व्रत आदि से) शान्ति प्राप्त करना, पसीना छूटना
 १८५ सम (भू) परिस्समे=थकना
 ४६८ समाज (चु) पीत्तिदस्सने=खातिर करना
 १६७ सम्म (भू) मण्डने=सजाना
 १७६ सम्भ (भू) विस्सासे=भरोसा रखना
 ४२८ सम्भु (की) पापुणने=इकट्टा करना; प्राप्त करना
 २०८ सर (भू) गतिर्हिंसाचिन्तासु^{१३५}=आना, हिंसा करना, सोचना=चिन्ता करना
 २१५ सल (भू) गमनत्ये=जाना

१२३. ० ('नि' पूर्वक) +तव्व =निसीदितव्वं । +अन =निसीदनं ।

+तुं =निसीदित्तुं । +ति =निसीदति । ५.१२३

० +वत, वतवन्तु =सन्नो; सन्नवा । ५.१५०

१२४. ० +स्त =सञ्जतो । ५.१०६

१२५. ० +अन =सरण । ५.१७१. ० +ध्यण् (कारक) =सारो । ५.४४

संख्या

- २४२ सस (भू) गतिहिंसापाणनेसु = जाना, हिंसा करना, साँस लेना
 २५८ संस (भू) पसंसने^{११६} = बड़ाई करना
 २७८ सह (भू) मरिसने = क्षमा करना
 ३७८ सा (दि) तनूकरणावसानेसु = पैना करना-शान धरना, खतम करना
 १२३ साद (भू) अस्तादने = स्वाद लेना
 ३४५ साघ (दि) संसिद्धियं = सिद्ध करना
 १६३ साय (भू) सायने = चाटना
 २४१ सास (भू) अनुसिट्ठियं^{११७} = अनुशासन करना
 ४२१ सि (जि) वन्वने^{११८} = बाँधना
 ४४५ सि (त) वन्वने = बाँधना
 २३५ सि (भू) सेवाय^{११९} = टहल करना
 १० सिक्ख (भू) विज्जोपादाने = सीखना (विद्या आदि का)
 २७ सिङ्घ (भू) घायने = सूँघना
 ३०७ सिच (रु) क्खरणे = टपकना
 ३३७ सिद (दि) पाके^{१२०} = पकाना
 १३७ सिद (भू) पाके = पकाना
 १४४ सिध (भू) गमने = जाना
 ३४५ सिध (दि) संसिद्धियं = सिद्ध होना
 * सिना (दि) सोचेय्ये = नहाना = पवित्र होना

१२६. ० + क्त = सत्यं, सत्यं । ५.१४४

१२७. ० + क्त = सिद्धि । ५.४६. ० + क्त = सिद्धं, सत्यं । ५.११७

० + क्त, तुं = सत्यं, सासितुं । ५.१४४

० + यक् = सिस्सो । ५.३२

१२८. ० + ति = सिनोति । ५.८५

१२९. ० ('नि' पूर्वक) + प्य = निस्साय । ५.८८

१३०. ० + क्त, क्तवन्तु = सिन्नो, सिन्नावा । ५.१५०

संख्या

- ३८२ सिनिह (दि) पीणने = स्नेह करना
 २३ सिलाघ (भू) कथने = वखान करना
 ३६६ सिलिस (दि) आलिङ्गने^{१११} = गले लगाना
 ७ सिलोक (भू) संघाते = शब्द योजना (काव्य आदि के रूप में) करना
 ५४३ सिस (चु) विसेसने = वचाना; वाकी रखना
 २३८ सिंस (भू) इच्छायं = चाहना
 ३२० सिव (दि) तन्तुसन्ताने = सीना
 ३०४ सी (भू) सये^{११२} = सोना
 २२२ सील (भू) समाधिम्हि = शील पालन करना
 ५२८ सील (चु) उपधारणं = चुनना, कन कन उठाना
 ४३१ सु (सु) सवने^{११३} = सुनना
 ४३० सु (की) सवने^{११४} = सुनना
 ४४६ सु (त) अभिसवे = नहाना
 * सुच (चु) पेसुञ्जे = सूचना (खबर) देना
 ३२ सुच (भू) सोके = शोक करना

१३१. ० ('आ' पूर्वक) + क्त (भाव, कर्म) = आसिलिट्ठो । ५.५०
 १३२. ० + य = सेय्या ५.४६. ० ('अधि' पूर्वक) + क्त (भाव, कर्म) = अधिसयितो । ५.५८
 १३३. ० + क्य = सूयमानं, सूयते । ५.१७ : १३६. ० + तून = सोतून, सुत्वानः सुत्वा ('अलं-खलु' के साथ) । ५.६२. ० + तव्वं = सोतव्वं । ५.८२. ० + क्त, तव्व, तुं = सुतो, सुणितव्वं, सुणित्तुं । ५.८५. ० + ति = सुनोति । ५.८५.
 ० + उं = अस्तोसुं, अस्तुं । ६.४०
 ० + ई (भूत) = अस्तोसि, असुणि
 + स्त = अस्तोस्ता, असुणिस्ता
 + स्तति = सोस्तति, सुणिस्तति । ६.५०.

संख्या

- ३४४ सुघ (दि) सोचेव्ये = शोधना; पवित्र करना
 ३६७ सुप (तु) सये^{११६} = सोना
 १७३ सुभ (भू) सोभने = शोभा देना
 ३७७ सुस (दि) सोसने^{११६} = सूखना
 २३६ सू (भू) पसवे = पैदा करना
 १८ सू (भू) पस्सवने^{११६} = उत्पन्न करना
 १२७ सूद (भू) क्खरणे = टपकना
 १९ सूल (भू) रुजायं = दर्द होना
 २३२ सेव (भू) सेवने = सेवा करना
 २५८ संस (भू) संसने = बड़ाई करना
 ३८२ स्निह (दि) पीणने = प्रेम करना
 ८३ हठ (भू) वलक्कारे = हठ करना
 ३५३ हन (दि) हिंसायं = हिंसा करना, मारना
 २९५ हन (भू) हिंसायं^{११७} = हिंसा करना, मारना
 * हनु (भू) अपनयने = छिपाना
 ३६१ हर (दि) लज्जायं = लजाना, शरमाना

१३४. ० ('प' पूर्वक) + क्त = पसुत्तं । ५.५७

१३५. ० + क्त, क्तवन्तु = सुक्खो, सुक्खवा । ५.१५५

१३६. ० + क्त, क्तवन्तु = सूनो, सूनवा । ५.१५०

१३७. ० + य = घच्चो । ५.३१. ० + स्साम = हञ्छेम; हनिस्साम ।
 पटिहंखामि; पटिहनिस्सामि । ६.६७. ० ('आ' पूर्वक) + क्त =
 आधातो । ५.९९. ० ('परि' पूर्वक) + क्वी = पलिघो । ० ('पटि'
 पूर्वक) + क्वी = पटिघो । निपात-अघं, संघो, ओघो । ५.१००.
 ० + स, अ = जिघंसा । ५.१०१. ० + क्त = हतो । ५.१०६.
 ० + ति = हन्ति । ५.१६१. ० ('आ' पूर्वक) + प्य = आहच्च;
 आहन्त्वा । ५.१६६.

संख्या

- * हर (भू) हरणे^{११८} =हरना, चुराना
 २५० हस (भू) हसने =हँसना
 * हस (भू) आलिक्ये =ठट्टा करना, मञ्चाक करना
 २६५ हा (भू) चागे^{११९} =त्यागना, छोड़ना
 ३८१ हा (दि) परिह्वाने =हानि होना
 ४४२ हि (त) गतियं^{१२०} =जाना
 ६० हिण्ड (भू) आहिण्डने =भटकना, खोजते फिरना
 १२५ हिलाद (भू) सुखे =सुखी होना
 ५०५ हिलाद (चु) सुखे =सुखी होना
 ३६१ हिरि (दि) लज्जायं =लजाना, शरमाना
 ५५० हीळ (चु) निन्दायं =निन्दा करना
 ३१७ हिंस (रु) हिंसायं =हिंसा करना, मारना
 २१५ हुल (भू) गमनत्ये =जाना
 २८७ हू (भू) सत्तायं^{१२१} =होना

१३८. ० +आ =अहा, अहरा । +ई =अहासि, अहरि । ६.२८. ० +
 ण =हारा । ५.४६. ० +अन =हारणा । ५.४६. ० +स-अ =
 जिगिंसा । ५.१०२. ० ('अभि' पूर्वक) +तुं =अभिहट्टुं । +
 त्वा =अभिहरित्वा । ५.१६५.
 १३६. ० +स्तति =हायिस्तति, हाहति । +स्ता =अहाहा, अहायिस्ता ।
 ६.२५. ० +णन =हायना (वीहि) । हायनो (संवच्छरो) ।
 ५.३७. ० +नि =हानि । ५.५०. ० +स्तति =हाहति, जहिस्तति ।
 ६.६८. ० +ति, तव्व, तुं =जहाति, जहितव्वं, जहितुं । ५.७०:७६
 १४०. ० +ति, तव्व =हिनोति, पहिणितव्वं
 +तुं, अन =पहिणितुं, पहीणनं
 १४१. ० +स्तति =हेस्तति; हेहिस्तति; होहिस्तति । ६.३१
 ० +रेसुं =अहेसुं; अभवुं । ६.४१

संख्या

२४६ हंस (भू) तुट्टियं=सन्तुष्ट होना

—

-
- ० +ओ=अहोसि; अहुवो । ६.४३
 - ० (=हेहि) +स्सति=हेहिति; हेहिस्सति । ६.६६
 - ० (=होहि) +स्सति=होहिति; होहिस्सति । ६.६६

तीसरा परिशिष्ट
मोग्गल्लान गण-पाठ

तीसरा परिशिष्ट

मोगल्लान गण-पाठो

व्याकरण में कुछ ऐसे नियम आते हैं, जो कुछ निश्चित शब्द अथवा धातु पर ही लागू होते हैं। जैसे—

ध्यादीहि युत्ता २.६—अर्थात् 'धि' आदि शब्दों के योग में दुतिया विभक्ति होती है। 'धि' आदि शब्द आठ हैं—धि, हा, अन्तरा, अन्तरेन, अभितो, परितो, सव्वतो, उभयतो।

ऊपर के सूत्र में, इन आठों शब्दों का उल्लेख न करके, सरलता के लिए, उनका बोध 'धि-आदि' से कर लिया गया है। इस तरह, इन आठ शब्दों का एक गण हुआ, जिसका नाम 'ध्यादि' पड़ा; क्योंकि यह गण 'धि' शब्द से आरम्भ होता है।

मोगल्लान व्याकरण में ऐसे अस्सी गण हैं। कुछ तो छोटे छोटे गण हैं, जिन में दो या तीन ही शब्द या धातु हैं; परन्तु, बड़े बड़े गणों में उनकी संख्या तीस-चालीस तक भी है।

किसी गण को आसानी से खोज निकालने के लिए, अ-कारादि क्रम से गणों की एक सूची दे दी जाती है—

मोगल्लान गण-पाठ की सूची

अङ्गुलि	आदि	४. ३५	अभिज्झा	आदि	४. ८६
अज्ज	,,	४. २१	अम्मा	,,	२. ६३
अणु	,,	४. ६२	आदि	,,	४. ६८

आप	आदि ३. ५६	दिति	आदि ४. ४
आरामिक	” ३. २६	दिव	” २. १७७
एकच्च	” २. १३७	धि	” २. ६
एकादस	” ४. ५१	नख	” ३. ७६
कत्तिका	” ४. ३	नत्ता	” २. १७६
कथादि	” ४. ७४	नद	” ३. २७
कम्म	” २. ८१	पक्ख	” ३. ८३
किर	” ५. १५२	पञ्च	” ४. ५२
कुम्ह	” ३. ७२	पथ	” ४. ७५
कोष	” २. १०६	पद	” २. १०७
खाद	” २. ६	पद	” ५. ६२
गम	” ५. १०६	पिच्छ	” ४. ८७
गुण	” ३. ६४	प	” ३. १३
गुह	” ५. ३२	पाप	” ३. ४१
गो	” ४. ३५	पिता	” २. ५६
घरणी	” ३. ३२	पुच्छ	” ५. १४३
चक्खु	” ४. ७१	ब्रह्म	” २. ६२
चत्तालीस	” ३. ६६	भज्ज	” २. ४
चुर	” ५. १५	भज्ज	” ५. १५४
जन	” ४. ६६	भिद	” ५. १५०
जन्तु	” २. ८६	मज्झ	” ४. २४
जा	” ५. १३७	मन	” २. १४६
तदमिना	” १. ४७	मातुल	” ३. ३३
तप	” ४. ८१	मुख	” ४. ३५; ८२
तर	” ५. १५३	यक्ख	” ३. २८
तारका	” ४. ४५	राजा	” २. १५६
तिट्ठु	” ३. ७	रुह	” ५. १४८
तुट्ठि	” ४. ८३	वच	” ५. ११०
दण्ड	” ४. ८०	वच्छ	” ४. २; ५६

वद	आदि ५.३०	सद्वा	आदि ४.८४
विघ	" ३.६१	सब्ब	" २.१०१
विघवा	" ४.३	साखा	" ४.३५
वम	" ५.४६	स	" ५.४३
सक्करा	" ४.३५	सील	" ४.८८
सच्च	" ५.१३	सुमेव	" २.१३०
सत	" ३.६४:५३	सोत	" ३.७२
सद्द	" ५.१०	हर	" २.५

पठमो कण्डो

तदमिनादीनि । १.४७

तदमिना, सकदागामी, एकमिदाहं, संविदावहारो, वलाहको, जीमूतो, चुत्तानं, उदुक्खलं, पिसाचो, भयूरो, दोवारिको, सीहो, नियको, मेखला, मागविको, सोवगिको, लोलुपो, मोमुहो, महिसो, पिसोदरं, पुरेक्खारो, आकासानञ्चं, अञ्जोञ्जं, दुस्स, विहगो, द्विजो, कळ्ळभो, दक्खित्ति, अभिसंत्तासि, पिदहत्ति, पिदहन्तिच्चादयो, अपिपुञ्जदधातिना, निप्फन्ना, लुत्ता, कारा, सद्दा, इति तदमिनादि । (आकत्तिगणोयं)

(यं यं लक्खणेनानुपपन्नं तं सच्चं तदमिनादिपक्खेन सावेत्तच्चं ।)

दुतियो कण्डो

गतिवोधाहारसद्दत्याकम्मकभज्जादीनं पयोज्जे । २.४.

भज्ज = पाके, कुट कोट्ट = च्छेदने, थर = सन्थरणे इति भज्जादि ।

हरादीनं वा । २.५.

हर = हरणे, अज्झोपुव्व-हर = अज्झोहारे, कर = करणे, दिस = पेक्खने, अभिवादि = (नाम वातु) अभिवादने इति हरादि ।

न खादादीनं । २.६.

खाद = भक्खने, अद = भक्खने, ष्हे = अष्हाने, सहाय = (नाम धातु) सहकरणे, कन्द = ष्हान-रोदनेसु, नी = पापुणने, (अनियन्तुके कत्तरि गम्यमाने) वह = पापणे, (अहिंसायं गम्यमानायं) भक्ख = अदने, इति खादादि ।

ध्यादीहि युत्ता । २.९.

धि, हा, अन्तरा, अन्तरेन, अभितो, परितो, सब्वतो, उभयतो, इति ध्यादि (आकतिगणोयं) ।

लुपितादीनमा सिम्हि । २.५६.

पितु, मातु, भातु, धीतु, दुहितु, जामातु, नत्तु, होतु, पोतु, इति पितादयो ।

घ ब्रह्मादित्ते । २.६२.

ब्रह्म, कत्तु, इसि, सख, मुनि, भदन्त, इति ब्रह्मादि । (आकतिगणोयं)

नाम्मादीहि । २.६३.

अम्मा, अन्ना, अम्वा, ताता, इति अम्मादि । (आकतिगणोयं)

[सम्बोधने गस्स एकारलाभिनो घसञ्जा सब्वे एत्थ दट्ठ्वा ।]

अम्वादीहि । २.८०.

अम्बु, पंसु, इच्चादि अम्बु-आदि । (अयञ्चाकतिगणो)

[यस्स सहस्स सत्तम्येकवचने नि-आदेसो वा दिस्सति, सोयं अम्वादिसु दट्ठ्वा ।]

कम्मादित्तो । २.८१.

कम्म, चम्म, वेस्म, भस्म, ब्रह्म, अत्त, आतुम, घम्म, मुद्ध, (कालद्धान वाचि) अद्ध, अस्म, गाण्डीवधन्व, अणिम, लधिम, कसिम, महिम, इच्चादि कम्मादि । (अयम्पाकतिगणो)

[यस्स सहस्स सत्तम्येकवचने वा नि आदेसो, ततियेकवचने वा एनादेसो च दिस्सति, अयं कम्मादिसु दट्ठ्वा ।]

जन्त्वादितो णो च । २.८६.

जन्तु, गोत्रभू, सहभू एवमादि जन्त्वादि । (अयमाकृतिगणो)
[यतो परेसं योनं वो-नो-आदेसा वा दिस्सन्ति, अयं जन्त्वादिसु दट्टुब्बो ।]

सव्वादीनं नम्हि च । २.१०१.

सव्व, कतर, कतम, उभय, इतर, अञ्ज, अञ्जतर, अञ्जतम, (ववत्थायं असञ्जायं वत्तमाना) पुव्व, पर, अपर, दक्खिण, उत्तर, अधर, य, त्य, त, एत, इम, अमु, कि, एक, तुम्ह, अम्ह इति सव्वादि ।

[किञ्चापि कच्चानेन त्यसद्दो सव्वादिसु न पठितो, तथापि 'खिड्डा पणिहिता त्यासु रति त्यासु पतिट्ठिता' त्यादि पाळियं पयोगस्स दिस्समानत्ता 'सो' पि सव्वादिसु दट्टुब्बो ।]

पदादोहि सि । २.१०७.

पद, विल इति पदादि ।

कोधादोहि । २.१०६.

कोध, अत्थ इति कोधादि

[मुखदमादीहपि परस्स नास्स सादेसो दिस्सते देसनायं ।]

एकच्चादोहतो । २.१३७.

एकच्च, एस, स, पठम, कतिपय, इच्चादि एकच्चादि ।

मनादोहि स्मिं-सं-ना-स्मानं सि-तो-ओ-सा-सा । २.१४६

मन, तम, तप, तेज, सिर, उर, वच, ओज, रज, यस, पय, (जलासयवाचि) सर, (अक्खयवाचि) वय, (लोहवाचि) अय, (पटवाचि) वास, (मनोवाचि) चेत, छन्द, इति मनादि ।

[अञ्जे हि तु अह-रह-सद्दापि मनादिसु पठीयन्ते; तथापि 'अह' सद्दस्स मनादिसु कारियासम्भवा, 'रह'-सद्दस्स च निपातत्ता न इह ते मनादिसु दट्टुब्बानि परिक्खत्ता । यदिपि रहसीति च पयोगो दिस्सते पाळियं, तथापि एत्थापि न सत्तम्यन्तो रह-सद्दो । किंत्वयमपि सत्तम्यन्तपतिरूपको विसुं येव निपातो ।

‘मनादीनं सक्’ इति ४.१२८ एत्थ तु सुमेघादयो’पि मनादिसु पठीयन्ते, पानुवन्धप्पच्चये परे सकागमत्थ सकागमसुत्तमन्तरेण अत्र तु ते’पि न मनादिसु दट्ठव्वा ।]

सुमेघादीनमवुद्धि च (५)

सुमेघ, भूरिमेघ, मन्दमेघ, अप्पमेघ, इच्चादि सुमेघादि ।

[पाणिनीयेहि समासन्तानं विधानावसरे नब्दुसु इच्चैतेहि परेहि अकारन्ते हि तिथलिङ्गेहि पजा-मेघासद्देहि “नित्यमसिच् प्रजामेघयोः ५.४.१२४” इच्चनेन सुत्तेन अस् विधाय सकारन्ता “अप्रजस्, दुप्प्रजस्, सुप्रजस् अमेघस्, दुमैघस्, सुमेघस्” इच्चैते सद्दा निष्पादीयन्ते ।

[चन्दव्याकरणे तु “प्रजाया असिच् ४.४.१०७ मन्दाल्पाच्च मेघायाः ४ ४. १०८” इति सुत्तेहि द्वीहेतेहि यथावुत्ता चेव पाणिनीया तदधिका “मन्दमेघस्, अल्पमेघस्” इति सद्दा च निष्पादीयन्ते ।

अस्मिमपि सद्दलक्खणे ‘सुमेघादीनम वुद्धि च इति गण-सुत्तेनानेन यथावुत्तेसु तेसु सकारन्तेसु ये ये वुद्धवचने दिस्सन्ति तेसमेव सद्दानं गहणन्ति मञ्जाम ।]

राजादियुवादित्वा । २.१५६.

राज, ब्रह्म, सख, अत्त, आतुम, अस्म, मुद्ध, (कालद्वानवाचि) अद्ध, गाण्डीव-धन्व, (अञ्जत्थे वत्तमानधम्मसद्दन्ता) दळ्हधम्म, पच्चक्खधम्म, कल्याणधम्म, अधीतधम्म (इच्चादयो विकप्पेण, भावे, इमप्पच्चयन्ता) अणिम, लघिम, महिम, कसिम इच्चादयो च राजादयो ।

युव, सा, सुवा, मघव, पुम, वत्तह इच्चादयो युवादयो ।

(इमे’पि द्वे आकतिगमणा’व, तेन यथागममञ्जे’पि सद्दा एत्थ दट्ठव्वा ।)

दिवादितो । २.१७७.

दिव, भू, इति दिवादि ।

पितादीनमनत्वादीनं । २.१७६.

पितादयो दस्सितपुव्वा’व । नत्तु, होतु, पोतु, इति नत्तादि ।

(इति स्यादि कण्डो दुतियो)

ततियो पाठो

तित्ठवादीनि । ३.७.

तित्ठगु, वहग्गु, आयतिगवं, खलेयवं, लूनयवं, लूयमानयवं, संहटयवं, उम्मत्त-
गङ्गं, लोहितगङ्गं, समम्भूमि, समम्पदाति, सुसमं, विसमं केसाकेसि, मुट्ठामुट्ठि,
दण्डादण्डि, मुसलमामुसलि, (इच्चादयो च्यन्ता), पातनहानं, सायनहानं, पातकालं,
सायकालं, पातमेघं, सायमेघं, पातमगं, सायमगं, इच्चादि तित्ठवादि । (आक-
तिगणोयं)

कुपादयो निच्चमस्यादि विधिम्हि । ३.१३.

प, परा, अप, सं, अनु, अव, ओ, नि, दु, वि, अधि, अपि, अति, सु, उ, अमि,
पति, परि, उप, आ, इति पादि ।

(किञ्चापि कच्चानेहि ओ-उपसगं पहाय 'वि-नी' इति द्वे उपसग्गा पठिता,
नथापि इह यथा दूरकख-वीतिहार-अतीसारादिषु 'द्व-वी-अतीनं' दीघेन सिद्धि,
तयेव नी-सद्दस्सापि दीघेन सिद्धि भवतीति, नी-सद्दं पहाय ओ-उपसगो पठितो ।)

नदादितो डो । ३.२७.

नद, मह, कुनार, तरुण, वरुण, नगर, ब्राह्मण, सूकर, हंस, कुक्कुट, किसोर,
कलभ, हरीतक, देव, मातामह, पितामह, विसालकख, सख, काळ, अतस, नीलि,
पालि, भूरि, खज्जूर, वदर, कुरर, संवर, भेर, दळ्वि, धमनि, वत्तनि, सकुन, सकुण,
पुत्त, सोणि, दोणि, वलि, वल्लि, पञ्चम, छट्ठ, छट्ठम, सत्तम, अट्ठम, नवम,
दसम, कतिमादयो (पूरणत्यपच्चयन्ता); नन्दन्त, जीवन्त, सवन्त, रोदन्त,
अवन्तादयो (अन्तप्पच्चयन्ता); पचन्त, महन्त, भवन्तादयो (न्तप्पच्चयन्ता);
वासिट्ठ, गोतम, माणव, ओपगव, मानुस, तापस, कोसम्ब, काकन्द, माकन्द,
साहस्स, फुस्स, वेसाख, मागसिरादयो (णप्पच्चयन्ता) वच्छतर, उक्खतर अस्स-
तर, उसभतर, महत्तरादयो (केचि तर-पच्चयन्ता); वेनतेय्य, सामणेरादयो
(ण्येय-णेरन्ता); नाविकादयो (णिकन्ता); गुणवन्त, सुतवन्त, सतिमन्त, गोम-
न्तादयो (न्वन्ता); गो (विकप्पेन); पुंयोगतो इत्थियं वत्तमाना पुमुनो
सञ्जाभूता अपालकन्ता सद्दा इच्चादि नदादि । (आकतिगणोयं)

[यतो यतो नामस्मा इत्थियं डीपच्चयो दिस्सते, सो नदादिसु दट्ठव्वो । कुतोचि नामस्मा डीपच्चयो विकप्पेन भवति । कुतोचि निच्चं । तस्मा यथा यथा जिनवचने दिस्सति, तथा तथा एव डीपच्चयो नदादितो दट्ठव्वो ।]

यक्खादित्थिनी च । ३.२८

यक्ख, नाग, सीह, सपत्ति, इच्चादि यक्खादि । (आकतिगणोयं)

आरामिकादोहि । ३.२९.

आरामिक, अनन्तरायिक, राज, दोहळ, (सञ्जायं गम्यमानायं) भानुस एवमादि आरामिकादि । (आकतिगणोयं)

घरण्यादयो । ३.३२.

घरी, पोक्खरी, उदरी, वपिलत्थप्पकासी, मनोरथपूरी, पपञ्चसूदी, तिरोकरी, आचरिय एवमादि घरण्यादि । (आकतिगणोयं)

मातुलादित्थिनी भरियायं । ३.३३.

मातुल, वरुण, इन्द, गहपति, आचरिय, (अभरियायं) खत्तिय, अय्यक एवमादि मातुलादि ।

पापादोहि भूमिया । ३.४१.

पाप, जाति इति पापादि ।

मनाद्यपादीनमो मये च । ३.५६.

मानदि वुत्तपुब्बं । आप, दिसा, अह, रह, वाय, सरद इच्चादि आपादि । (आकतिगणोयं)

कुम्हादिसु वा । ३.७२.

कुम्भ, पत्त, बिन्दु इच्चादि केम्भादि । (आकतिगणोयं)

सोतादिसू लोपो । ३.७३.

सोत, रक्खस, आसय इच्चादि सोतादि । (आकतिगणोयं)

[येषु सद्देशु परेषु उदकसद्देश्च उकारो लुप्यते, ते सद्देश्च सोतादिसु दृढ्वा ।
 ▲ केचि तु दकसद्देश्चैविच्छन्ति, नेवुलोपं ।]

नखाद्यो । ३.७६.

नख, नकुल, नपुंसक नक्खत्त, नाक, नमुचि, नक्क, एवमादि नखादि । (आकति-
 गणोयं)

समानस्स पवखादिसु वा । ३.८३.

पक्ख, जोति, जनपद, रत्ति, पत्तिनि, पत्तो, नाभि, वन्धु, ब्रह्मचारी, नाम,
 गोत्त, रूप, ठान, वण्ण, वयो, वचन, धम्म, जातिय, घच्च इति पक्खादि ।

विधादिसु द्विस्स दु । ३.९१.

विध, पट्ट, रत्ति, अङ्ग, (हळ्हादेसलाभि) हृदय, इति विधादि ।

दि गुणादिसु । ३.९२.

गुण, रत्ति, गो, पद, सत, सहस्स, वचन, इति गुणादि ।

आ संख्यायासतादो नञ्जत्ये । ३.९४.

सह, सहस्स, सतसहस्स, लक्ख, कोटि, एवमादि सतादि ।

चत्तालीसादो वा । ३.९६. •

चत्तालीस, पञ्जास, सट्ठि, सत्तति, असीति, नवुति, इति चत्तालीसादि ।

(इति समासकण्डो ततियो)

चतुर्थो कण्डो

वच्छादितो णान-णायना । ४.२.

कच्छ, कच्च, कातिय, मोग्गल्ल, सकट, (आह्वाणे) कण्ह, अस्सल, वदर, अग्गि-
 वेस्स, मुञ्ज, कुञ्ज, हरित, गग्ग, दक्ख, दोण एवमादि वच्छादि । (आकतिगणोयं)

[उभो णान-णायना उभिन्नमञ्जतरो वा येहि दिस्सते ते सब्बे वच्छादिसु
 दृढ्वा ।]

कत्तिकाविधवादीहि णेय्य-णेरा । ४.३.

कत्तिका, विन्ता, भगिनी, रोहिनी, अत्ति, पण्हि, गङ्गा, नदी, अन्त, अहि, कपि, सुचि, वाला, इच्चादि कत्तिकादि । (आकतिगणोयं)

[येभ्युयेन घपसञ्जन्ता अञ्जे च केचि अत्ति पण्हि इच्चादयो एत्थ दट्ठव्वा ।]

विधवा, वन्धकी, नाळिकी, समण, चटक, गोधा, काण, दासी इच्चादि विधवादि । (आकतिगणोयं)

[यतो णेर-प्पच्चयो दिस्सति सो विधवादिसु दट्ठव्वो ।]

ण्य दिच्चादीहि । ४.४.

दिति, अदिति, कुण्डनी, गग, भातु, कत, मुग्गल, वच्छ, अग्गिवेस्स, इच्चादि दिति-आदि । (आकतिगणोयं)

[येहि ण्यो दिस्सति ते दिच्चादिसु दट्ठव्वा । सक्कते गग्गादिगणतोपि यो यो इध जिनवचने लब्भति सो' पि एत्थेव दट्ठव्वो ।]

अज्जादीहि तनो । ४.२१.

अज्ज, स्वे, हिय्यो, सायं इति अज्जादि ।

मज्झादित्विमो । ४.२४.

मज्झ, अन्त, हेट्ठा-उपरि, ओर, पार, पच्छा, अब्भन्तर, पच्चन्त इति मज्झादि ।

गवादीहि यो । ४.३५.

गो, कवि, दु इति गो-आदि ।

साखादीहि इयो (४३)

साखा, मेघ, कुसग्गिय इति साखा-आदि ।

मुखादीहि यो (४४)

मुख, जघन, इति मुखादि ।

सक्करादीहि णो (४६)

सक्करा, कपालिका इति सक्करादि ।

अङ्गुल्यादोहि णिको (४७)

अङ्गुलि, मुनि, वाल, कुलिस, एकसाला, कक्क, लोहित इति अङ्गुल्यादि ।

सञ्जातं तारकादित्वितो । ४.४५.

तारका, पुप्फ, पल्लव, फल, कण्णक, कण्टक, सुत्त, मुत्त, उच्चार, विचार, पचार, मुकुळ, कुसुम, थवक, किंसलय, कुतूहल, निहा, मुहा, तन्दा, वुभुक्त्ता, पिपासा, मुच्छा, जिगुच्छा, संका, आसंका, सद्, सुख, दुक्ख, उक्कण्ठा, वावा, आवावा, भर, व्याधि, अन्व, वधिर, पण्ड, संसय, विम्हय, एवमादि तारकादि ।
(आकतिगणोयं)

तस्स पूरणेकादसादितो वा । ४.५१.

एकादस—अट्ठारस, एकूनवीसति—एकूनतिसति—एकूनचत्तालीस—
एकूनपञ्जास—अट्ठपञ्जास इति एकादसादि ।

म पञ्चादिकतोहि । ४.५२.

पञ्च, सत्त, अट्ठ, नव, दस—अट्ठादस, एकूनवीसति—एकूनतिसति
इच्चादि पञ्चादि ।

[छ-सङ्ख्याय सतादीहि च विना तदितरेहि येहि संख्यासद्देहि मप्पच्चयो
दिस्सते ते सब्बे पञ्चादिसु दट्ठव्वा ।]

सतादीनमि च । ४.५३.

सत्त—दससत्त, सहस्स—सत्तसहस्स इति सतादि ।

वच्छादीहि तनुत्ते तरो । ४.५६.

वच्छ, उक्ख, अस्स, उसभ, इति वच्छादि ।

अण्वादित्विमो । ४.६२.

अणु, लघु, महन्त, किस, गरु इति अण्वादि ।

जनादीहि ता । ४.६६.

जन, गज, वन्धु, गाम, सहाय, नगर इति जनादि ।

चक्ख्वादितो स्सो । ४.७१.

चक्खु, आयु इति चक्ख्वादि ।

कथादित्त्विको । ४.७४.

कथा, धम्मकथा, सङ्गाम, पवास, उपवास इति कथादि ।

पथादीहि णेय्यो । ४.७५.

पथ, सपत्ति, पदीप इति पथादि ।

दण्डादित्त्विक ई वा । ४.८०.

दण्ड, गन्ध, रूप, रस, सीस, केस, सस, धम्म, सङ्घ, ब्राण, गण, चक्क, पक्ख, दाठा, रट्ठ, कुट्ठ, जटा, छत्त, मन्त, योग, भोग, भाग, चाग, काम, धज, यान, कर, कुसल, मुसल, कंखा, विचिकिच्छा, धनसद्दो, (असम्पत्ते वत्तव्वे) अत्थसद्दो, पुञ्जत्थ, धम्मत्थ, धनत्थादयो ('अत्थ' सद्दन्ता) । ब्रह्मवण्ण, देववण्ण, सुवण्ण, वण्णादयो (वण्णन्ता); (जातियं गम्यमानायं) हत्थ, दन्तसद्दा; (ब्रह्मचारिणि वाचिनि) वण्णसद्दो; (देसे वत्तव्वे) पोक्खर, उप्पल, कुमुद, भिस, मुळाल, सालूक, पट्टुम, कद्दमादि, पोक्खरादि; (क्वचि अदेसे'पि) पट्टुमसद्दो, नावासद्दो, सुख, दुक्खसद्दा च, सिखा, माला, सील, वल, मेखला, वीणा, सञ्जा, वळवा, अट्ठका, वलाका, पताका, कम्म, वम्म, उस्साह, कूल, मूल, आयाम, वायाम, उपयाम, आरोह, अवरोह, एवमादि सिखादि; वाहुवल, ऊरुवल सद्दा च इच्चादि दण्डादि । (आकति-गणोयं)

तपादीहि स्सो । ४.२१.

तप, यस, तेज, मन, पय, इति तपादि ।

मुखादित्तो रो ४.८२.

मुख, सुसि, ऊस, मधु, ख, कुञ्ज, नग, नख, (उन्नतदन्ते वत्तव्वे) दन्त, रुचि, सुभ, सुचि, इति मुखादि ।

तुट्ठयादीहि भो । ४.८३.

तुट्ठि, साळि, वलि, इति तुट्ठयादि ।

आत्वभिज्झादीहि । ४.८६.

▲ अभिज्झा, सीत, घज, दया, सद्दा, निद्दा, इति अभिज्झादि ।

पिच्छादित्विलो । ४.८७.

पिच्छ, फेण (फेन), जटा, वाचा, तुण्ड इच्चादि पिच्छादि । (आकति-
गणोयं)

सीलादितो वो । ४.८८.

सील, केस, अण्ण, (सञ्जायं वत्तव्वायं) गाण्डी, राजी च एवमादि सीलादि ।
(आकतिगणोयं)

अभ्यादीहि । ४.९७.

अभि, परि, पच्छा, हेट्ठा, ओर, पार, पुरादि अभ्यादि ।

आद्यादीहि । ४.९८.

आदि, मज्झ, अन्त, पिट्ठि, पस्स, मुख, य, एवमादि आद्यादि ।

[ससंख्येहि तन्नुल्येहि चापञ्चभ्यन्तेहि येहि तो दिस्सति ते आद्यादिमु

दट्ठव्वा ।]

(इति णादिकण्डो चतुत्थो)

पञ्चमो कण्डो

सद्दादीनि करोति । ५.१०.

सद्द, वेर, कलह, धूप, अन्ध, मेघ, अट्ट, सुदिन, दुट्ठिन, नीहार, इच्चादि सद्दादि ।

सच्चादीहापि । ५.१३.

सच्च, अत्य, वेद, सुक्ख, सुख, दुक्ख, एवमादि सच्चादि ।

चुरादितो णि । ५.१५.

चुरादि, भुवादि, रुधादि, दिवादि, तुदादि, ज्यादि, क्यादि, स्वादि, तनादि,

इच्चेते धातुगणा धातुपाठतो येवावगन्तव्वा ।

वदादीहि यो । ५.३०.

वद=वचने, मद=उम्मादे, अम, गम=गमने, गद=वचने, पद=गमने, अद, खाद=भक्खने, दम=दमने, (अन्तेभिधेय्ये) भुज=पाल नज्झोहारेसु (सञ्जायं वत्तव्वायं), भर=भरणे एवमादि वदादि । (आकतिगणोयं)

गुहादीहि यक् । ५.३२.

गुह=संवरणे, दुह=प्पूरणे, सास=अनुसिट्ठियं, एवमादि गुहादि । (आकतिगणोयं)

समानञ्जभवन्तयादित्पमाना दिसा कम्मे रीरिक्खका । ५.४३.

य, त्य, त, एत, इम, अमु, किं, एक, तुम्ह, अम्ह, इति यादि ।

वमादीहथु । ५.४६.

वम=उगिररणे, वेप, कम्प=चलने, दू=परितापे, सी=सये इति वमादि ।

पदादीनिं क्वचि । ५.६२

पद=गमने, मद=उम्मादे, वुध=भाणे, युध=सम्पहारे, मन=भाणे, रुध=आवरणे, मुह=वेचित्ते, तुस=तुट्ठियं, नस=अदस्सने, भस=अघोपतने, सुस्=सोसे, कुप=कोपे, सीव=तन्तुसन्ताने, पूज=पूजायं इच्चादि पदादि । (आकतिगणोयं)

गमादिरानं लोपोन्तस्स । ५.१०६.

अम, गम=गमने, खन, खण=अवदारणे, हन=हिंसायं, मन=भाणे, तन=वित्थारे, यम=उपरमे, रम=कीळायं, नम=नमने, एवमादि गमादि । (आकतिगणोयं)

अञ्जादिस्सास्सि क्ये । ५.१३७.

भा=अवबोधने, ता=पालने, पा=रवखने, खा=ख्या=कथने, वा=गमने, भा=चिन्तार्य, दा=अवखण्डने, गिला=हासक्खये, मिला=गत्तविनामे इच्चादि जादि । (आकतिगणोयं)

पुच्छादितो । ५.१४३.

पुच्छ=पुच्छने, भज्ज=पाके, यज=देवपूजासंगतिकरणदानेसु, सज=सङ्गे, सज=विस्सज्जनालिङ्गननिम्मानेसु, मज्ज=संसुद्धियं, हर=हरणे, इच्चादि पुच्छादि । (आकतिगणोयं)

रुहादीहि हो ङ च । ५.१४८.

रुह=जनने, गुह=संवरणे, वह=पापुणने, वह-ब्रह-ब्रूह=बुद्धियं, इच्चादि रुहादि । (आकतिगणोयं)

भिदादितो नो क्तक्तवन्तूनं । ५.१५०.

भिद=विदारणे, छिद=द्वेषाकरणे, छद=संवरणे, खिद=असहने, पद=गमने, सिद=पाके, सद=विसरणगत्यवसादनादानेसु, पी=तप्पने, सु=पसवे, दी=खये, डी-ळी=आकासगमने, ली=सिलेसने, लू=च्छेदने, रुद=रोदने, एवमादि भिदादि । (आकतिगणोयं)

किरादीहि णो । ५.१५२.

किर=विकिरणे, पूर=पूरणे, खी=खये, तुद=व्यथने, एवमादि किरादि । (आकतिगणोयं)

तरादीहि रिण्णो । ५.१५३.

तर=तरणे, जर=वयोहानियं, चि=चये, एवमादि तरादि । (आकतिगणोयं)

गो भज्जादीहि । ५.१५४.

भज्ज=ओमहने, लभ=सङ्गे, मुज्ज=मुज्जने, विज=भयचलनेसु एवमादि भज्जादि । (आकतिगणोयं)

(इति खादिकण्डो पञ्चमो)

(इधाम्हेहि आकतिगणत्तेन नोपदिट्ठापि आदिसद्दोपलक्खिता सव्वे आकतिगणोयेव । यतो इध वुत्तानमादिसद्दोपलक्खितगणानमाकारमादस्सयमिदमाह सद्-

लक्षणकत्तायेव । यथा चायमाकतिगणो तथा ञ्जत्रापि आदिसद्दोपलक्खिता गणा
आकतिगणाति दस्सेतुमाह एवमञ्जत्रापि ।

आकति इति

च जाति वुच्चतिः तप्पधाना गणा आकतिगणा ।)

इति मोगल्लान गण-पाठो

चौथा परिशिष्ट

समास, स्त्री-प्रत्यय, समासान्त

समास-तालिका

पूर्व पद	उत्तर पद	विकार	उदाहरण	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या
न	×	अ ×	न ब्राह्मणो-अब्राह्मणो	३.१२; ७४	२७४
कुच्छितो	×	कु ×	कुच्छितो ब्राह्मणो-कु- ब्राह्मणो	३.१३	२७५
ईसकं	×	कद ×	ईसकं उण्हं-कदुण्हं	३.१३	२७५
×	(अप्रधान)	×	बहुमालो पोमो । निक्को- सम्बि	३.२४	२७०
×	घ, प	×	चित्ता गानो यस्स-चित्तगु	३.२५	२७०
इम	×	इदं ×	इमेसं पञ्चया-इदप्प- च्चया	३.५५	२७३
पुम	×	पुं ×	पुमस्स लिङ्गं-पुंलिङ्गं	३.५६	२७३
न्त, न्तु	×	अ ×	भवम्पत्तिट्ठा मयं-भग- वम्मूलको नो धम्मो ।	३.५७	२७०
न्तु	×	न्त ×	गुणवन्तपत्तिट्ठो	३.५८	२७०
मन	×	मनो ×	मनोसेट्ठा । मनोमया	३.५९	२७०
पर	(संख्या- वाचक)	परो ×	परोसतं । परोसहस्सं	३.६०	२६९
पुथ	जनो	पुथु ×	पुथुज्जनो	३.६१	२७५
छ	अहं । आय	स ×	साहं (=छाहं) । सत्था-	३.६२	२७५
लु	तनं	तार ×	यतनं	३.६३	२७३
लु	(विज्जा, योनि)	ता ×	सत्थुनो दस्सनं-सत्थारद स्सनं	३.६४	२८०
पितु	पुत्त	पिता ×	होतापोतारो		
(इत्थियं)	(समाना- धिकरणं)	(पुमेव) ×	पितापुत्ता	३.६५	२८०
(इत्थियं)	(वृत्तिमत्तं)	(पुमेव) ×	कुमारी भरिया यस्स सो- कुमारभरियो	३.६७	२७१
सव्वादि			तस्सा मुखं-तम्ममुखं	३.६९	२७४
जाया	पति	जयं ×		३.७०	२८०
उदक	×	उद ×	जाया च पति च-जयम्पती	३.७१	२७८
	(संज्ञायं)		उदकस्स पानं-उदपानं		

पूर्व पद	उत्तर पद	विकार	उदाहरण	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या
उदक न सह	सोतं (स्वर) ×(अञ्ज- त्ये)	दक × अन × स ×	उदकस्स सोतं—दफसोतं न अक्खातं—अनक्खातं सपुत्तो (सहपुत्तो)	३.७३ ३.७५ ३.७८-८२.	२७४ २७४ २६८, २७१
समान तुम्ह अम्ह द्वि	(पक्खादि) × × विघ(आ- दि)	स × तं × मं × दु ×	समानो पक्खो—सपक्खो तंसरणा । तन्दीपा मंसरणा । मन्दीपा दुविघो । दुप्पटं	३.८३-८५ ३.८६ ३.८६ ३.९१	२७१, २७६ २७१ २७१ २७२
द्वि द्वि द्वि	गुण(आदि) ति (असातादि संख्या)	दि × द्व × द्वा ×	दिगुणं । दिरत्तं । दिगु द्वत्तिखत्तुं द्वादस । द्वावीसति	३.९२ ३.९३ ३.९४	२७२ २७२ १६८
ति ति	“ (चत्ताली- सादि)	ते × ति, ते ×	तेरस । तेवीसति । तेचत्तालीस । तिचत्तालीस	३.९५ ३.९६	१६८ १७१
द्वि	(अचत्ता- लीसादि)	वा ×	वारस । वावीसति	३.९८	१६८
पञ्च पञ्च चतु छ	दस वीसति दस दस	पन्न × पण्ण × चु, चो × सो ×	पन्नरस (पञ्चदस) पण्णुवीसति (पञ्चवीसति) चुद्दस, चोद्दस, चतुद्दस सोळस	३.९९ ३.९९. ३.१०० ३.१०१	१६८ १६८ १६८ १६९
एक अट्ठ (संख्यावा- चक)	दस दस दस	एका × अट्ठा × × रस	एकादस अट्ठादस एकारस (एकादस)	३.१०२ ३.१०२ ३.१०३	१६८ १६८ १६८
छ । ति	दस	× ळस	सोळस (सोरस) । तेळस (तेरस)	३.१०४	१६८
कु (अप्पत्ये)	×	का ×	अप्पकं लवणं—कालवणं	३.१०८	२७५
कु (पुब्बादि)	पुरिस अह	का × × अन्ह	कापुरिसो पुब्बन्हो । सायन्हो	३.१०९ ३.११०	२७५ २७६

स्त्री प्रत्यय

प्रत्यय	प्रयोग-स्थान	उदाहरण	सूत्र संख्या	पृष्ठ
आ	अकारान्ततो	धम्मदिन्ना	३.२६	२३६, २४२
इी	नदादितो	नदी, मही, कुमारी	३.२७	२४०
इी	न्तन्तूनं तो वां	गच्छती, गच्छन्ती । सील- वती, सीलवन्ती ।	३.३६	२४०
इी	भवतो भोतो	भोती, भवन्ती	३.३७	२४०
इी	गोस्सावड्	गावी	३.३८	२४०
इी	पुथुस्स पथव-पुथवा	पथवी, पुथवी	३.४०	२४०
इनी	यक्खादितो	यक्खिनी, यक्खी	३.२८	२४०
इनी	आरामिकादीहि	आरामिकिनी	३.२९	२४१
नी	इ-उवण्णेहि	दण्डिनी, भिक्खुनी	३.३०	२४१
नी	क्खिम्हा अञ्जत्ये	साहं अहिंसारतिनी	३.३१	२४१
आनी	मानुलादितो	मानुलानी (भरियायं)	३.३३	२४२
ऊ	उपमानादिपुञ्जा	करभोरू, वामोरू	२.३४	२४२
ति	युवा	युवति	३.३५	२४२

समासान्त प्रत्यय

अ	पापादीहि भूमिया	पापभूमं । जातिभूमं	३.४१	२८४
अ	संख्याहि भूमिया	द्विभूमं । तिभूमं	३.४२	२८४
अ	नदी गोदावरीनं	पञ्चनदं । सत्तगोदावरं	३.४३	२८४
अ	अङ्गुल्या	निग्गतमङ्गलीहि-निरङ्गुलं	३.४४	२८४
अ	रत्तिया	दीघरत्तं । अहोरत्तं	३.४५	२८४
अ	'गो' सदा	राजगवो । परमगवो	३.४६	२८५
अ	अक्खिस्सा	विस्सालक्खो	३.४९	२८५
अ	अङ्गलन्ता (दारुम्हि)	पञ्चङ्गलं दारु	३.५०	२८५
च्चि	वीतिहारे	केसाकेसि । दण्डादण्डि	३.५१	२८५
क	ल्लु-ई-ऊ कारन्तेहि	बहुकत्तुको । बहुकुमारिको	३.५२	२८६
क	अञ्जेहि अञ्जपदत्ये	बहुमालको	३.५३	२८६

पाँचवाँ परिशिष्ट

तद्धित

पाँचवाँ परिशिष्ट

तद्धित प्रत्यय लगाने के साधारण नियम

साधारण नियम

‘ण’ अनुबन्ध

१. प्रत्यय में यदि ‘ण’ अनुबन्ध लगा हो, तो शब्द के प्रथम ‘अ’, ‘इ’ तथा ‘उ’ का क्रमशः ‘आ’, ‘ए’ तथा ‘ओ’ होता है। जैसे:—रघु+ण=राघवो।

२. यदि ‘ण’ अनुबन्ध वाला कोई स्वरदि प्रत्यय हो, तो शब्द के अन्त्य ‘उ’ का ‘अव’ होता है। जैसे:—रघु+ण=राघवो।

३. शब्द के प्रथम ‘अ’, ‘इ’ तथा ‘उ’ से परे, यदि कोई संयुक्त अक्षर हो, तो उनका कभी-कभी ‘आ’, ‘ए’ तथा ‘ओ’ नहीं भी होता है। जैसे:—कत्तिका+ण्य्य=कत्तिकेय्यो।

४. कभी-कभी, बीच के ‘अ-इ-उ’ का भी ‘आ-ए-ओ’ हो जाता है। जैसे:—वसिष्ठ+ण=वासेष्ठो!

‘र’ अनुबन्ध

५. प्रत्यय में यदि ‘र’ अनुबन्ध लगा हो, तो शब्द के अन्तिम स्वर से ले कर आगे के अंश का लोप होता है। जैसे:—पितु+र्य्यण=(‘पितु’ के ‘इतु’ का लोप) पेत्य्यं।

(१) ४.१२४। (२) ४.१२६। (३) ४.१२५। ‘कत्तिकेय्ये’ नहीं हुआ, क्योंकि ‘क’ से परे संयुक्त अक्षर ‘त्त’ है। (४) ४.१२६। (५) ४.१३२।

‘ड’ प्रत्यय

६. ‘ड’ प्रत्यय आने से, ‘सत्यन्त’ संख्या वाचक शब्द* के ‘ति’ का लोप होता है। जैसे :—वीसति+ड=वीसं । तिसं ।

स्त्री प्रत्यय लगने पर

७. ककारान्त शब्द से परे, यदि स्त्री-प्रत्यय ‘आ’ आवे, तो ‘क’ के पर्व ‘अ’ का बहुधा ‘इ’ होता है। जैसे बालक+आ=बालिका । कारिका ।

(६) ४.१३४।

* जैसे—विसति ।

(७) ४.१४२।

तद्धित प्रत्ययों की सूची

क्रम संख्या	प्रत्यय	उदाहरण	प्रयोग-स्थान	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या
१	अ	सद्धो	तं एत्य अस्त अत्यि	४.८४	१९६
२	अच्चो	अमच्चो	तत्र भवे	४.२३	२६१
३	अय	उभयं, द्वयं	परिमाणे	४.४९	२४८
४	आकी	एकाकी	असहाये	४.५५	२४८
५	आमह	मातामहो	मातापितुसु	४.३८	२६९
६	आमी	सामी	तं एत्य अस्त अत्यि	४.९०	१९७
७	आलु	अभिज्भालु	"	४.८६	१९६
८	आवन्तु	यावन्तं, तावन्तं	"	४.४३	२४६
९	इक	दण्डिको	"	४.८०	१९४
१०	इक	कधिको	तत्य साधु	४.७४	२६३
११	इट्ठ	पापिट्ठो	अतिसये	४.६४	२४८
१२	इत	तारकितं	संजातं इच्चत्ये	४.४५	२४७
१३	इम	पाकिमं	भावा तेन निव्वते	४.६३	२५२
१४	इम	अणिमा, लघिमा	भावे	४.६२	२०६
१५	इम	सतिमो, सहस्तिमो	पूरणे	४.५३	१७६
१६	इम	मज्झिमो, अन्तिमो	तत्र भवे	४.२४	२६२
१७	इम	पुत्तिमो	तं एत्य अस्त अत्यि	४.९४	१९२
१८	इय	पापियो	अतिसये	४.६४	२४८
१९	इय	अधिपतियं, पण्डितियं	भावे	४.५९	२०३
२०	इय	देवियो	तेन दत्ते	४.५८	२५२
२१	इय	गामियो, उदरियो	तत्र भवे	४.२५	२६२
२२	इय	खत्तियो	अपच्चे	४.७	२५६
२३	इय	पुत्तियो	तं एत्य अस्त अत्यि	४.९४	१९२
२४	इय	उपादानियं	तस्स हिते	४.७०	...
२५	इल	पिच्छिलो	तं एत्य अस्त अत्यि	४.८७	१९६
२६	इस्सिक	पापिस्सिको	अतिसये	४.६४	२४८
२७	ई	दण्डी	तं एत्य अस्त अत्यि	४.८०	१९४
२८	उवामी	सुवामी	"	४.९०	१९७
२९	एधा	द्वधा	पकारे	४.११२	२१९

क्रम संख्या	प्रत्यय	उदाहरण	प्रयोग-स्थान	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या
३०	क	राजञ्जकमानुस्सकं	समूहे	४.६८	२६०
३१	क	एको	असहाये	४.५५	२४८
३२	क	एको	असहाये	४.५५	२४८
३३	क	पञ्चकं, छक्कं	तं अस्स परिमाणं	४.४१	२४६
३४	क	समणको	निन्दिते	४.४०	२४६
३५	क	अस्सको(कस्सायं?)	अञ्जाते	४.४०	२४६
३६	क	तेलकं, घतकं	अप्पत्थे	४.४०	"
३७	क	वलिवट्टको (वलि- वट्टो विय)	पटिभागत्थे	४.४०	"
३८	क	मानुसको, रुक्खको	रस्से	४.४०	"
३९	क	पुत्तको, वच्छको	दयायं	४.४०	"
४०	क	मोरको	सञ्जायं	४.४०	"
४१	क	पदको	तं अधीते, तं जानाति	४.१४	२४९
४२	कण्	मागधको, आरञ्जको	तत्र भवे	४.२५	२६२
४३	क्खत्तुं	द्विक्खत्तुं	वारे	४.११४	२१९
४४	ची	घवली (करोति)	अभूततन्भावे	४.११९	२२०
४५	छ	मातुच्छा	मातितो, पितितो भगिनियं	४.३७	२५८
४६	जातियो	पट्टजातियो	पकारे	४.११३	२६०
४७	ज्झ	एकज्झं	"	४.१११	२१९
४८	ञ्जो	राजञ्जो	जातियं	४.६	२५६
४९	ञ्ज	कम्मञ्जं	तत्थ साधु	४.७३	२७३
५०	ट्ठ	छट्ठो	पूरणे	४.५४	१७५
५१	ट्ठम	छट्ठमो	पूरणे	४.५४	१७५
५२	ड	एकादसो, वीसो	तस्स पूरणे	४.५१	१७५
५३	ड	वीसं (सतं)	अधिकायं संख्यायं	४.५०	१७३
५४	ण	काकं	समूहे	४.६८	२६०
५५	ण	आयसं, ओदुम्बरं	तस्स विकारावयेसु	४.६६	२५९
५६	ण	कच्चायनं	तस्सेदं	४.३४	२५८
५७	ण	गारवं, अज्जवं	भावे	४.५९	२०३
५८	ण	पोरिसं	उद्धं परिमाणे	४.४८	२४८
५९	ण	पुराणो	तत्र भवे	४.२८	२५०

क्रम संख्या	प्रत्यय	उदाहरण	प्रयोग-स्थान	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या
६०	ण	श्रोदको, मागधो	तत्र भवे	४.२०	२६१
६१	ण	श्रोदुम्बरो	तं इघ अत्थि	४.१६	२४५
६२	ण	कोसम्बो	तेन निव्वत्ते	४.१८	२५१
६३	ण	वेदिसं	अद्दुर-भवे	४.१७	२५७
६४	ण	सेव्यो	निवासे	४.१६	२५७
६५	ण	वास्यतो	तस्स विसये देसे	४.१५	२५७
६६	ण	वेट्याकरणो	तं अधीते, तं जानाति	४.१४	२४६
६७	ण	सोगतो	सास्स देवता	४.१३	२४४
६८	ण	फुस्ती (रत्ति)	नक्खत्तेन युत्ते	४.१२	२५१
६९	ण	हालिहं	तेन रक्त्तं	४.११	२५१
७०	ण	मागधो	अपच्चे	४.६	२५७
७१	ण	वासिट्ठो	अपच्चे	४.१	२५४
७२	ण	लक्खणो	तं एत्थ अस्स अत्थि	४.८१	१६५
	(श्रदयव)				
७३	ण	तापसो	"	४.८५	१६६
७४	णान	वच्छानो	अपच्चे	४.२	२५४
७५	णायन	वच्छायनो	अपच्चे	४.२	२५४
७६	णि	वारुणि	"	४.५	२५६
७७	णिक	वेनयिको, सुत्तन्तिको	तं अधीते, तं जानाति	४.१४	२४६
७८	णिक	सारदिको	तत्र भवे	४.२६	२६२
७९	णिक	वेणिको	तमस्स सिप्यं	४.२७	२४५
८०	णिक	पंसुकूलिको	तमस्स सीलं	४.२७	"
८१	णिक	तेलिको	तमस्स पण्यं	४.२७	"
८२	णिक	चापिको, मुग्गरिको	तमस्स पहरणं	४.२७	"
८३	णिक	ओपधिकं	तमस्स पप्योजनं	४.२७	"
८४	णिक	साकुणिको	तं हन्ति	४.२८	२५०
८५	णिक	सन्दिट्ठिकं	तं अरहति	४.२८	"
८६	णिक	पारदारिको;	तं गच्छति	४.२८	"
		मग्गिको			
८७	णिक	सामाकिको	तं उच्छति	४.२८	"
८८	णिक	धम्मिको	तं चरति	४.२८	"
८९	णिक	कायिकं	तेन कतं	४.२९	२११

क्रम संख्या	प्रत्यय	उदाहरण	प्रयोग-स्थान	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या
६०	णिक	सात्तिकं	तेन कीतं	४.२६	२११
६१	णिक	आयसिको, पासिको	तेन वद्धं	४.२६	"
६२	णिक	घातिकं, दाधिकं	तेन अभिसंङ्खतं, संसट्ठं	४.२६	"
६३	णिक	जालिको	तेन हतंहन्ति वा	४.२६	"
६४	णिक	अक्खिकं	तेन जितं जयति वा	४.२६	"
६५	णिक	कुहालिको	तेन खणति	४.२६	"
६६	णिक	नाविको, गोपुच्छिको	तेन तरति	४.२६	"
६७	णिक	रथिको	तेन चरति	४.२६	"
६८	णिक	असिको, सीसिको	तेन वहति	४.२६	"
६९	णिक	वेतनिको, भतिको	तेन जीवति	४.२६	"
१००	णिक	पोनोभविको	तस्स संवत्तति	४.३०	२५२
१०१	णिक	मत्तिकं, पत्तिकं	ततो संभूतमागतं	४.३१	२५३
१०२	णिक	रुक्खमूलिको	तत्थ वसति	४.३२	२६२
१०३	णिक	लोकिको	तत्थ विदितो	४.३२	"
१०४	णिक	चातुम्महाराजिको	तत्थ भत्तो	४.३२	"
१०५	णिक	दोवारिको	तत्थ नियुत्तो	४.३२	"
१०६	णिक	सङ्घिकं	तस्सेदं	४.३३	२५७
१०७	णिक	दोणिको	तं अस्स परिमाणं	४.४१	२४६
१०८	णिक	कप्पासिकं	तस्स विकारावयेसु	४.६६	२५६
१०९	णिक	आपूपिकं	समूहे (=अचत्तेनमं)	४.६८	२६०
११०	णिय	आलसियं, कालुसियं	भावे	४.५६	२०३
१११	णेट्थ	पव्वतेय्यो	तत्र भवे	४.२५	२६२
११२	णेट्थ	दक्खिणेत्यो	अरहत्थे	४.७६	२५०
११३	णेट्थ	पायेय्यं	तत्थ साधु	४.७५	२६३
११४	णेट्थ	एणेत्यं, कोसेय्यं	तस्स विकारावयेसु	४.६६	२५६
११५	णेट्थ	सोचेय्यं, आधिपत्तेय्यं	भावे	४.५६	२०३
११६	णेट्थक	वाराणसेय्यको	तत्र भवे	४.२५	२६२
११७	ण्य	सवभो, पारिसज्जो	तत्थ सावु	४.७२	२६३
११८	ण्य	आलस्यं, ब्राह्मञ्जं	भावे	४.५६	२०३
११९	ण्य	कोरव्यो	रञ्जे	४.१०	२५७
१२०	तग्घ	जाणुतग्घं	उद्धं पारिमाणे	४.४७	२४७

क्रम संख्या	प्रत्यय	उदाहरण	प्रयोग-स्थान	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या
१२१	तन	अज्जतनो	तत्र भवे	४.२१	२६१
१२२	तत	तापतमो	अतिसये	४.६४	२४८
१२३	मर	पापतरो	अतिसये	४.६४	२४८
१२४	तर	वच्छन्तरो	तनुत्ते	४.५६	२५६
१२५	ता	नीलता	भावे	४.५६	२०३
१२६	ता	जनता	समूहे	४.६६	२६०
१२७	ति	युवति	स्त्री	४.३५	२५८
१२८	तो	गामतो	पञ्चम्यत्ये	४.६५	२१५
१२९	त्त	नीलत्तं	भावे	४.५६	२०३
१३०	त्तक	यत्तकं	तं अस्त् परिमाणं	४.४२	२४६
१३१	त्तन	वेदनत्तनं, पुथुज्जन- त्तनं	भावे	४.५६	२०३
१३२	त्य	सञ्चत्यं	सत्तम्यन्ते	४.६६	२१६
१३३	त्र	सञ्चत्र	"	४.६६	२१६
१३४	था	सञ्चथा	पकारे	४.१०८	२१०
१३५	दा	सञ्चदा	सत्तम्यन्ते	४.१०५	२१७
१३६	घा	द्विधा, बहुधा	पकारे	४.११०	२१८
१३७	घि	सञ्चघि	सत्तम्यन्ते	४.१०१	२१६
१३८	नण्	योञ्चनं	भावे	४.६१	२०६
१३९	निय	कम्मनियं	तत्य साधु	४.७३	२६३
१४०	नो	अङ्गना	तं एत्य अस्त् अत्यि	४.८२	१६५
१४१	व्य	दासव्यं	भावे	४.६०	२०६
१४२	भ	तुण्डभो	तं एत्य अस्त् अत्यि	४.८३	१६५
१४३	म	पञ्चमो	पूरणे	४.५२	१७८
१४४	मत्त	पलमत्तं	तमस्त् परिमाणं	४.४६	२४७
१४५	मन्तु	बुद्धिमा	तं एत्य अस्त् अत्यि	४.७८	१६४
१४६	मय	तिणमयं	तस्त् विकारावयेसु	४.६६	२५६
१४७	य	दिव्वो, गम्भो	तत्र भवे	४.२५	२६२
१४८	य	सृत्यो	अपच्चे	४.७	२५६
१४९	रतम	कतमो	निद्धारणे	४.५७	२४८
१५०	रतर	कतरो	"	४.५७	"
१५१	रति	कति, तति	"	४.४४	२४७

क्रम संख्या	प्रत्यय	उदाहरण	प्रयोग-स्थान	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या
१५२	राय	घातेतायं, पन्नाजे- तायं	अरहृत्ये	४.७७	२५०
१५३	रित्तक	कित्तक	तमस्स परिमाणं	४.४४	२४७
१५४	रीव	कीव	"	४.४४	"
१५५	रीवत्तक	कीवत्तकं	तमस्स परिमाणं	४.४०	२४६
१५६	रेय्यण	मत्तेय्यो	हिते	४.३६	२५६
१५७	रेय्यण	पेत्तेय्यो	पित्तितो भातरि	४.३६	२५८
१५८	रो	मुखरो	तं एत्थ अस्स अत्थि	४.८२	१६५
१५९	ल	देवलो	तेन दत्ते	४.५८	२५२
१६०	ल्ल	दुट्ठुल्लं, वेदल्लं	तन्निस्सिते	४.६५	२५०
१६१	दन्तु	गुणवा	तं एत्थ अस्स अत्थि	४.७६	१५४
१६२	वो	सीलवो	"	४.८८	१५७
१६३	वी	मायावी	"	४.८६	१५७
१६४	स	खण्डसो, एकसो	वीच्छायं	४.११८	२२०
१६५	स	लोमसो	तं एत्थ अस्स अत्थि	४.६३	१६८
१६६	सण्	मानुसो	अपच्चे	४.८	२५६
१६७	स्सी	तपस्सी	तं एत्थ अस्स अत्थि	४.८१	१६५
१६८	स्स	मनुस्सो	अपच्चे	४.८	२५६
१६९	स्स	चक्खुस्सं	तस्स हिते	४.७१	२६०
१७०	स्सण्	जातुस्सं	तस्स विकारावयेसु	४.६७	२५६
१७१	हं	तहं	सत्तम्यन्ते	४.१०३	२७१
१७२	हि	यहिं	"	४.१०२	२१७

ब्रह्म परिशिष्ट

कृदन्त

छठा परिशिष्ट

कृदन्त प्रत्ययों के लगाने के साधारण नियम

१. धातु के उपान्त 'इ' तथा 'उ' का, क्रमशः 'ए' तथा 'ओ' हो जाता है। जैसे:—
इस + तव्व = एसितव्वं। कुस + तव्व = कोसितव्वं।
२. प्रत्यय आने से, धातु के अन्त्य 'इ' तथा 'उ' का, क्रमशः 'ए' तथा 'ओ' होता है। जैसे:—
नी + तव्व = नेतव्वं। सु + तव्व = सोतव्वं।
३. स्वरादि प्रत्यय परे हो, तो धातु के अन्त्य 'ए' तथा 'ओ' का क्रमशः 'अय' तथा 'अव' होता है। जैसे:—
जि + अ = जे + अ = जयो। भू + अ = भो + अ = भवो।
४. स्वरादि प्रत्यय परे हो, तो धातु के अन्त्य 'इ' तथा 'उ' का क्रमशः 'इय' तथा 'उव' होता है। जैसे:—
वेदि + अ + ति = वेदियति। दू + अ + अन्ति = द्दुवन्ति।
५. रकारान्त धातु से परे, प्रत्यय के 'न' का 'ण' होता है। जैसे:—अर + अन = अरणं।

'ण'-अनुबन्ध

६. 'ण'-अनुबन्ध वाला प्रत्यय परे हो, तो धातु के उपान्त 'अ' का 'आ' होता है।

(१) सूत्र-५.८३। (२) ५.८२। (३) ५.८६। (४) ५.१३६।
(५) ५.१७१। (६) ५.८४।

पठ+णक=पाठको ।

७. 'ण' अनुबन्ध वाला स्वरादि प्रत्यय परे हो, तो घातु के अन्त्य 'ए' तथा 'ओ' का क्रमशः 'आय' तथा 'आव' होता है । जैसे :—

नी+णी-ति=ने+णि-ति=नायति । भू+णि-ति=भौ+णि-ति=भावयति ।

८. 'गापि' को छोड़, अन्य 'ण' अनुबन्ध वाला प्रत्यय परे हो, तो आकारान्त घातु से परे 'य' का आगम होता है । जैसे :—

दा+णक=दायको ।

'क' अनुबन्ध

९. 'क' अनुबन्ध वाला प्रत्यय परे हो, तो घातु के उपान्त 'इ', 'उ' या 'अ' का 'ए', 'ओ' तथा 'आ' नहीं होता है । जैसे :—

दिस+क्त=दिट्ठो ।

'र' अनुबन्ध

१०. 'र' अनुबन्ध वाला प्रत्यय परे हो, तो घातु के अन्तिम स्वर से ले कर आगे के भाग का लोप होता है । जैसे :—

वेद-गम+रु=वेद-गु+रु=वेदगू ।

'घ' अनुबन्ध

११. 'घ' अनुबन्ध वाला प्रत्यय परे हो, तो घातु के अन्तस्थित 'च' तथा 'ज' का क्रमशः 'क' तथा 'ग' हो जाता है । जैसे :—

वच+ध्यण=वाक्यं । भज+ध्यण्=भाग्यं ।

ख-छ-स प्रत्यय

१२. 'ख-छ-स' प्रत्यय परे हो, तो घातु के 'प्रथम एकस्वर शब्दरूप' का द्वित्व होता है : जैसे :—

(७) ५.६। (८) ५.६२। (९) ५.८५। (१०) ४.१३२। (११) ५.६२। (१२) ५.६६।

तिज+ख-अ=तितिक्खा । जिगुच्छा । वीमंसा ।

१३. द्वित्व होने पर, पूर्व 'अ' का 'इ' होता है । जैसे:—

पा+स-ति=पिपासति ।

१४. द्वित्व होने पर, पूर्व चतुर्थ तथा द्वितीय वर्ण का क्रमशः तृतीय तथा प्रथम वर्ण होता है । जैसे:—

भुज+ख-ति=बुभुक्खति ।

'क्वि' प्रत्यय

१५. धातु से परे, 'क्वि' प्रत्यय का लोप होता है । जैसे:—

अभिभू+क्वि=अभिभू ।

१६. 'क्वि' प्रत्यय परे हो, तो श्रन्त्य व्यञ्जन का लोप होता है । जैसे:—

भतं गतन्ति एत्याति=भत्तगं । भत्त-गत+क्वि=भत्त-ग=(सरम्हा द्वे) भत्तगं ।

*'क्य' प्रत्यय

(कर्म, भाव)

१७. 'क्य' प्रत्यय के पूर्व, 'इ' का विकल्प से आगम होता है । जैसे:—

पच+क्य-ति=पचीयति ।

१८. 'जा' धातु को छोड़, अन्य धातु के श्रन्त्य 'आ' का 'ई' होता है । जैसे:—

दा+क्य-ति=दीयति ।

१९. स्वरान्त धातु का दीर्घ होता है । जैसे:—

चि+क्य+ते=चीयते ।

'जि' (आगम)

२०. व्यञ्जनादि प्रत्यय के पूर्व, विकल्प से 'इ' का आगम होता है । जैसे:—

भुज्जितुं, भोत्तुं ।

(१३) ५.७६। (१४) ५.७८। (१५) ५.१५६। (१६) ५.६४।
(१७) ६.३७। (१८) ५.१३७। (१९) ५.१३६। (२०) ५.१७०।

* 'क्य' का 'य' रह जाता है । 'क्' अनुबन्ध है ।

कृदन्त प्रत्ययों की सूची

प्रत्यय	उदाहरण	प्रयोग-स्थान	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या
अ	जयो, पग्गहो	भाव-कारकेसु	५.४४	२००
अ	तितिक्खा, वीमंसा	„ इत्थियं	५.४६	२०१
अक	जीवको, नन्दको	कत्तरि (आशीवदि)	५.३५	१६२
अण	कुम्भाकारो	कत्तरि (कम्मतो)	५.४१	१६३
अथु	वमथु, वेपथु	भाव-कारकेसु	५.४६	२०१
अनीय	करणीयो	भाव-कम्मसेसु	५.२७	१५०
अनो	गमनं, दानं	भाव-कारकेसु	५.४८	२०२, २७८
अस्स	नमस्सति	तं करोति, (नामघातु)	५.११	२३६
आपि	सच्चापेति	नाम घातु	५.१३	२३७
आय	सहायति	तं करोति (नाम घातु)	५.१०	२३६
आय	भुसायति	च्यत्थे (नाम घातु)	५.४	२३२
आय	पव्वतायति	कत्तुतो उपमानाचरे	५.८	२३६
आवी	भयदस्सावी	कत्तरि	५.३४	१६२
इ	अतिहत्थयति	नाम घातु	५.१२	२३७
इ	वच्चि	सरूपे	५.५२	२०३
ईय	पुत्तीयति	उपमानाचारे (कम्मा) नाम घातु	५.५६	१४२
ईय	कुटीयति	„ (आघारा)	५.७	२३६
क	पियो, आयुधं	भाव-कारकेसु	५.४४	२००
क	सदिसो	कम्म-कारके	५.४३	२७६
क	गुहा, रुजा	भाव-कारकेसु (इत्थियं)	५.४६	२०१
कि	युधि	सरूपे	५.५२	२०३
कू	सव्वञ्जू	कत्तरि (कम्मा)	५.४०	१६२
कू	विञ्जू	कत्तरि	५.३६	१६२
कू	लोकविदू	„	५.३८	१६२
क्त	आसितं, कतो	भाव कम्मसेसु	५.५६	१४२
क्त	पकतो	कत्तरि च आरम्भे	५.५७	१४३
क्त	यातं (इदमेसं)	कत्तरि, कम्मे, भावे	५.५६	१४३
क्त	उपट्ठितो	„	५.५५	१४२
क्त	भुत्तं (इदमेसं)	„	५.६०	१४३

प्रत्यय	उदाहरण	प्रयोग-स्थान	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या
क्तवन्तु	विजितवन्त	कत्तरि भूते	५.५५	१४२
क्तावी	विजितावी	(कत्तरि) भूते	५.५५	"
क्ति	इष्टि, भूति	भावकारकेसु (इत्थियं)	५.४६	२०१
क्ष्य	ठीयते, सूयते	कम्मे, भावे	५.१७	१८०
क्वि	अभिभू, सयम्भू	भाव-कारकेसु	५.४७	२०१
ख	बुभुक्खति	इच्छायं	५.४	२३२
ख	तितिक्खा	खन्तियं	५.१	१८६
घ	वको, निपको	भाव-कारकेसु	५.४४	२००
घण्	पाको, चागो	"	५.४४	"
घ्यण्	वाक्यं	भाव-कम्मेसु	५.२८	१५०
घ्यण्	देय्यं	"	५.२६	१५०
छ	जिघच्छति	इच्छायं	५.४	२३२
छ	जिगुच्छा, वीभच्छा	निन्दायं	५.३	१८७
छ	तिकिच्छा, विचि- किच्छा	तिकिच्छा-संसयेसु	५.२	१८६
ण	कारा, हारा	भाव-कारकेसु (इत्थियं)	५.४६	२०१
णक	पाठको	कत्तरि	५.३०	१५१
णन	हायनो	"	५.३७	१६२
णन	कारणनं	"	५.३६	१६२
णापि	कारापेति	प्रेरणार्थक	५.१४	२१०
णि	कारेति	"	५.१६	२०६
णी	उण्ह भोजी	सीले (कत्तरि)	५.५३	१६३
तव्व	कतव्वं	भाव-कम्मेसु	५.२७	१५०
तवे	कातवे	तदत्यायं (निमित्तार्थक)	५.६१	१५२
ताये	कत्ताये	"	५.६१	"
ति	पचति	सरूपे	५.५२	२०३
तुं	कातुं	तदत्यायं (निमित्तार्थं)	५.६१	१५२
तून(अलं)	अलं सोतून	पटिसेधे	५.६२	१५४
त्वा	अलं सुत्वा	पटिसेधे	५.६२	"
त्वा	सुत्वा	पूर्वकालिक	५.६३	"
त्वान	अलं सुत्वान	अव्यय पटिसेधे	५.६२	"

प्रत्यय	उदाहरण	प्रयोग-स्थान	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या
त्वान	सुत्वान	पूर्वकालिक	५.६३	१५४
नि	हानि	भाव-कारकेसु (इत्थियं)	५.५०	२०३
न्त	तिट्ठन्तो	वत्तमाने कत्तरि (करते हुए)	५.६४	६२
मान	ठीयमानं, पच्चमानो	भावे, कम्मे	५.६६	१८०
मान	तिट्ठमानो	वत्तमाने कत्तरि (करते हुए)	५.६५	६२
य	वज्जं	भाव-कम्मेसु	५.३०	१५१
य	सेय्या, समज्जा	भाव-कारकेसु	५.४६	२०१
यक्	विज्जा	„ (इत्थियं)	५.४६	„
यक्	गुय्हं	भाव-कम्मेसु	५.३२	१५२
रिक्ख	सदिकखो	कम्म-कारकेसु	५.४३	२७६
रिरिय	किरिया	„ (इत्थियं)	५.६१	१५२
री	सदी	कम्म-कारकेसु	५.४३	२७६
रु	वेदग्	कत्तरि (कम्मतो)	५.४२	१६३
ल	पचत्ति, न्त, मान (अपरोक्खे)	+	५.१२	२३७
ल	कारेत्ति, कारयत्ति	+	५.२०	२१०
ल्लु	पठिता	कत्तरि	५.३३	६४, १६१
स	जिगिसत्ति	इच्छायं	५.४	२३२
स्सन्त	ठस्सन्तो	अनागते कत्तरि	५.६७	६२
स्समान	ठस्समानो	„	५.६७	६२

सातवाँ परिशिष्ट

१. सूत्र-सूची

सातवाँ परिशिष्ट

मोग्गल्लान सूत्र-सूची

पृष्ठ संख्या	सूत्र संख्या.	पृष्ठ संख्या	सूत्र संख्या
२७०	अ	३.५८	२३६ अघातुस्स०
१ परि०	अ आदयो०	१.१	२०२ अनघणस्त्वा०
१८७	अ आदिस्त्वा०	६.१६	१८४ अनज्जतने०
६६	अ आस्सआदिस्सु	५.१२६	१३६ अनुना
६४	अ ईस्सआदीनं०	६.३५	२०२, } अनो
२६८	अकालेसकत्थे	३.८१	२७८
२८५	अक्खिस्सा०	३.४६	५५ अन्वादेसे
१६७	अङ्गानो०	४.६२	२७४ अन् सरे
	अङ्गुल्यादीहि०	४.(४७)	२७१ अपच्चक्खे
२१८	अज्जसज्ज०	४.१०७	१३८ अपपरीहि०
२६१	अज्जादीहि०	४.२१	५५ अपादादो०
	अञ्जनापि	५.८७	२२० अभूततब्भावे०
	अञ्जस्मि	४.१२१	२१६ अभ्यादीहि
१८१	अञ्जादिस्सा०	५.१३७	२६१ अमात्वच्चो
२७६	अञ्जे च	३.१६	२७२ अमादि
२०६	अण्वादित्तिमो	४.६२	६१ अमुस्सादुं
३	अतेन	२.११०	१०२ अम्वादीहि
३	अतो योनं०	२.४३	५६ अम्हि तं मं०
१२६	अत्थितेय्यादि०	६.५०	२४८ अयुभद्धि०
१५२	अत्यादिन्ते०	५.१२८	३ अयूनं वा दीघो
२५७	अदूरभवे	४.१७	२६७ असङ्ख्यं०

पृष्ठ संख्या	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या	सूत्र संख्या
२८४	असङ्ख्येहि चाङ्गुल्या०	३.४४	१६२ आवी
३६	असङ्ख्येहि सञ्वासं	२.१२०	१६८ आ संख्या०
१४४	अस्सु	५.१११	१६२ आसिसा०
२१०	अस्सा णानु०	५.८४	१६१ आस्साणापि०
८२	अं ङं नपुंसके	२.१५४	१५० आस्से च
४	अं नपुंसके	२.११३	१४३ आहारत्त्या
६६	आ	२.१६६	२०३ इकिती०
८६	आ ई आदिसु०	६.२८	१५५ इतो च्चो
८५, १८४	आ ई ऊम्हा०	६.३३	१०१ इतो ञ्जत्ये०
८४, १८४	आ ईस्सादि०	६.१५	२१५ इतोतेत्तो०
	आकस्मिके०	४.(४५)	२०१ इत्थियमणक्त्तिक०
२५६	आ णि	४.५	२३६, २४२ इत्थियमत्त्वा
१२६	आदिद्विन्न०	६.५१	२७१ इत्थियम्भा०
२१६	आद्यादीहि	४.६८	५६ इमस्सानि०
२३२	आदिस्मा०	५.७१	२७३ इमस्सिदं
१ परि०	आदिस्स	१.१६	५६ इमस्सिदं वा
२३६	आधारा	५.७	१६८ इमिया
५५	आमन्तणं०	२.२४१	५७ इमेतान०
२६	आमन्तणे	२.४०	३३६ इयुवण्णा०
२८५	आयामे नु०	३.४८	८५ इयो हिते
२१०	आयावा०	५.६०	८७ इंस्स च०
१६४	आयुस्सा०	४.१३४	८७ ई आदोदीघो
६८	आयो नो च०	२.१५६	८६ ई आदो वच०
६५	आरङ्ग्मा	२.१७३	२३५ ईयो कम्मा
२४१	आरामिका०	३.२६	६५ ई स्सच्चादि०
१६६	आल्वभिज्झा०	४.८६	२७० उत्तरपदे
			२७१ उदरे इये

पृष्ठ संख्या	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या	सूत्र संख्या		
२३६	उपमाना०	५.६	१२६ एय्युं स्सुं	६.४७	
२४२	उपमा संहित०	३.३४	१२६ एय्येय्या०	६.७५	
१३६	उपेन	२.१५	एसुस्	६.५५	
७३	उभगोहि टो	२.१७२	२६६ ओरे परि०	३.८	
१६७	उभिन्नं	२.५२	१२३ ओविकरणस्सु०	६.७६	
२५५	उवण्णस्स०	४.१२६	८५, } ओस्स अइ०	६.४२	
१८७	उस्संस्वा०	६.१६	१८५		
८५	उस्सिस्सु	६.३६	१५०	कगा चजानं०	५.६८
८६	एओत्तासुं	६.४०	२४६	कण्कनाप्प०	४.१३७
४८,			२६२	कण्णोव्यणे०	४.२५
१२५,	एओनमयवा सरे		२१६	कतिम्हा	४.११५
११६,		५.८६	१४३	कत्तरि चा०	५.५७
२१०,			१४२	कत्तरि भू०	५.५५
२००			११५,		
२२६	एओनम वण्णे	१.३७	१२५,	} कत्तरि लो	५.१८
२२४	एओनं	१.३१	२१०		
१०१	एकच्चादी०	२.१३७	६४,	} कत्तरि ल्त्तुणका	५.३३
१६८	एकट्ठानमा	३.१०२	१६१		
२३५	एकत्थतायं	२.१२१	२५४	कत्तिका विववा०	४.३
१६	एकवचनयो०	२.६६	३०	कत्तुकरणेसु०	२.१८
२४८	एका काक्य०	४.५५	२३६	कत्तुतायो	५.८
२४६	एतस्सेट्ठं	४.१४०	२१६	कत्थेत्थकुत्रान्ण०	४.१००
६५	एतिस्सा	६.६६	२१८	कथमित्थं	४.१०६
१३०	एथस्सा	६.७२	२६३	कथादित्थिको	४.७४
१३०	एय्यस्सि०	६.६३	२१८	कदाकुदासदा०	४.१०६
८५	एय्यायस्से०	६.३८	१६२	कम्मा	५.४०
१८८	एय्यादो०	६.७	१००	कम्मादितो	२.८१
१२६	एय्यामस्से०	६.७८	२६३	कम्मा नियञ्जा	४.७३

पृष्ठ संख्या	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या	सूत्र संख्या
२६	कम्मे दुतिया	२.२	७२ कतो २.८७
१३०	कयिरेय्यस्सेय्यु०	६.७०	६० के वा २.१३२
१२३	करस्स सोस्स कुच्च०	५.१७७	१०० कोधादीहि २.१०६
१२४	करस्स सोस्स कुं	६.२३	२०६ कोसज्जाज० ४.१२७
१५३	करस्सा तवे	५.११८	२४१ कित्महाञ्जत्थे ३.३१
१६२	कराणनो	५.३६	१४२ क्तो भावकम्मेसु ५.५६
२४२	करा रिरियो	५.५१	१८० क्यस्स ६.३७
१२४	करोतिस्स खो	५.१३३	१८१ क्यस्स स्से ६.४६
२३३	कवग्गहानं चवग्गजा	५.७६	१२२ क्यादीहि क्णा ५.२४
१४५	कसस्सिम् च वा	५.१४१	१८० क्यो भावकम्मेस्व० ५.१७
८६	का ईआदिसु	६.२४	क्रियत्था ५.१४
१ परि०	कादयो व्यञ्जना	१.६	१६३ क्वचण् ५.४१
२७५	काप्पत्थे	३.१०८	२४६ क्वचिप्पच्चये ३.६८
२६	कालद्धानमच्च०	२.३	१२० क्वचि विकरणानं ५.१६१
१५२	किच्चघच्चमच्च०	५.३१	२७३ क्वचेकतं च छट्ठिया ३.२२
१८७	कितस्सासंसये०	५.८१	२ क्वचे वा २.११२
१८६	किता तिकिच्छा०	५. २	२०१ क्वि ५.४७
२३	किमंसिसु सह०	२.२०२	२०१ क्विम्हि घो० ५.१००
२४८	किम्हा निद्वारणे०	४.५७	२०१ क्विम्हि लोपो० ५.६४
२४७	किम्हा रतिरीव०	४.४४	२०१ क्विस्स ५.१५६
१४६	कसादीहि णो	५.१५२	२३२ खच्छसानमैकस्स० ५.६६
२०६	किसमहतमिमे०	४.१३३	२३३ खच्छसेस्वस्सि ५.७६
२३	कि सस्मिसु०	२.२०१	२५६ खत्ता यिया ४.७
२२	किस्स को०	२.२००	२१२ गतिवोघाहार० २.४
२७५	कुपादयो निच्चम०	३.१३	२७१ गन्थान्ताधिक्ये ३.८२
२७४	कुम्हादिसु वा	३.७२	१४३ गमनत्थाकम्म० ५.५६
८६	कुसग्हेहीस्स छि	६.३४	११६ गमयमिसास० ५.१७३
२१७	कुहिं कहं	४.१०४	११६ गमवददानं ५.१७६

पृष्ठ संख्या	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या	सूत्र संख्या	
१४४	गमादिरानं०	५.१०६	२२ घपा सस्स स्सा वा	२.१०३
१६३	गमा रु	५.४२.	१४ घन्नह्यादिते	२.६२
८६	गम्मिस्स	६.२६	२४१ घरण्यादयो	३.३२
७४	गवं सैन	२.७१	१ परि० घा	१.११
२५८	गवादीहि यो	४.३५	२५ घोस्संस्सास्सायं०	२.६५
३, १३	गसीनं	२.११६	१५० ध्यण्	५.२८
७८	गस्सं	२.१८६	१ परि० डनुवन्धो	१.१८
११६	गहस्स घेप्पो	५.१७८	५६ डडाकं नम्हि	२.२३२
१४५	गापानमी	५.११५	२६० चवत्वादितो स्सो	४.७१
७३	गावुम्हि	२.७४	१७६ चतुत्यततियानम०	३.१०५
१३७	गुणे	२.२३	१८७, } चतुत्यदुतियानं०	५.७८
७४	गुन्नञ्च नंना	२.७२	२३२	
१८७	गुपित्तुस्स	५.७७	१२०, } चतुत्यदुतियेस्वे०	१.३५
६६, } ११६	गुरुपुब्बा रस्सा०	६.७४	२२४, २००	
१५२	गुहादीहि यक्	५.३२	३० चतुत्थी सम्पदाने	२.२६
२०२	गुहिस्स सरे	५.१०५	१६८ चतुरो वा चतुस्स	२.२१०
६६	गे अ च	२.६०	१६८ चतुस्स चुचो दसे	३.१००
७१	गे वा	२.६७	१७१ चत्तालीसादो वा	३.६६
२८५	गोत्वचत्ये०	३.४६	२० चत्यसमासे	२.१४३
१४७	गोभञ्जादीहि	५.१५४	२७८ चत्ये	३.१६
१ परि०	गोत्यालपने	१.१२	२८५ चि वीतिहारे	३.५१
७३	गोस्सागसि०	२.६६	२८६ चीस्मि	३.६६
२२४	गोस्सावड्	१.३२	२७६ ची क्रियत्येहि	३.१४
२४०	गोस्सावड्	३.३८	१२४ चुरादितो णि	५.१५
२७०	गोत्सु	३.२५	२३६ च्यत्ये	५.६
१३	घपतेकस्मि०	४.४७	१ परि० छट्टियन्तस्स	१.१७
२७०	घपस्सान्तस्सा०	३.२४	३२ छट्ठी चानादरे	२.३७

पृष्ठ संख्या	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या	सूत्र संख्या	
३१	छट्ठी सम्बन्धे	२.४१	११७ बिलस्से	५.१६३
१३८	छट्ठी हेत्वर्थेहि	२.२४	८१ टटा अंगे	२.२२०
१६८	छतीहि लो च	३.१०४	२७४ ट नब्बस्स	३.७४
१६९	छस्स सो	३.१०१	१ परि० टनुवन्धानेक०	१.१९
१७५	छा द्ढुमा	४.५४	२७० ट न्तन्तूनं	३.५७
२२८	छा लो	१.४६	१६९ ट पञ्चादीहि०	२.१७१
२५९	जतुतो स्सण्वा	४.६७	२४ ट सस्मास्मि०	२.१३४
२५७	जनपदानामस्मा	४.९	१३० टा	६.७१
२६०	जनादीहि ता	४.६९	९५ टा नास्मानं	२.१७५
१४५	जनिस्सा	५.११६	१७४ टि कतिम्हा	२.१७०
२७५	जने पुथस्सु	३.६१	९५ टि स्थिमो	२.१७६
१३	जन्तुहेत्वी	२.११७	१०१ टे सिस्सिसि०	२.१३५
१०२	जन्वादितो नो च	२.८६	९९ टे स्मिनो	२.१६०
११७	जरमरानमीयङ्	५.१७४	९५ टो टे वा	२.१७४
११७, } जरसदानमीम् वा	५.१२३	११७	ठापानं तिट्ठु०	५.१७५
१५२		१४३	ठासवससिलिस०	५.५८
२८०	जायाय जयं पतिम्हि	३.७०	१४५ ठास्सि	५.११४
२०३	जाहाहि नि	५.५०	८६ ङसस्स च छङ्	६.३०
२३३	जिहरानं गिं	५.१०२	१७३ ङे सतिस्स	४.१३९
२४९	जो बुद्धस्सि०	४.१३५	२५१ ण रागा तेन०	४.११
१२१	ज्यादीहि क्का	५.२३	१२२ णानासु रस्सो	६.३२
६	झला वा	२.११५	२५८ णिकस्सियो वा	४.१४१
५	झला सस्स नो	२.८३	२६२ णिको	४.२६
१ परि०	बकानुवन्धा०	१.२०	२१२ णिणापीन०	५.१६०
१३०	बाम्हिं जं	६.६२	२१० णिणाप्यापीहि०	५.२०
१२१	बास्स ने जा	५.१२०	२११ णिम्हि दीघो०	५.१०४
१२२	बास्स सनास्स०	६.६१	२५८ णो	४.३४
२३३	बि व्यञ्जनस्स	५.१७०	२४८ णो च पुरिसा	४.४८

पृष्ठ संख्या	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या	सूत्र संख्या
१६६	णो तपा	४.८५	२४८ तरतमिस्सिकि०
११६	णो निग्गही०	५.१७६	१४६ तरादीहि रिण्णो
२५४	णो नापच्चे	४.१	२२३, } तवग्गवरणानं ये०
१६७	ण्णं ण्णन्नं तित्तो०	२.५१	१२० }
२५७	प्य कुरुसि०	४.१०	५६ तव ममतुय्हंमय्हं०
२५५	प्य दिच्चादी०	४.४	४७ तस्स थो
२६३	प्यो तत्थ साघु	४.७२	१७५ तस्स पूरणोकादस०
२६६	प्व्वादयो	५.६८	२०३ तस्स भावकम्मेषु०
२४७	तग्घो चुद्धं	४.४७	२५६ तस्स विकारावये०
२४	ततस्स नो०	२.१३३	२५७ तस्स विसये देसे
२०	ततियत्थयोगे	२.१४२	२५२ तस्स संवत्तति
२५३	ततो सम्भूत०	४.३१	२५७ तस्सिदं
२८५	तत्थ गहेत्वा०	३.१८	२६६ तं नपुंसकं
२६२	तत्थ वसति०	४.३२	८१ तं नम्हि
२६१	तत्र भवे	४.२०	२७१ तं ममञ्जत्र
२२५	तथनरानं०	१.५२	२५० तं हन्तरहति गच्छ०
२२८	तदमिनादीनि	१.४७	३० तादत्थ्ये
१८१	तनस्सा वा	५.१३८	२५ ताय वा
१२३	तनादित्तो	५.२६	२१७ ता हं च
२५०	तन्निस्सिते०	४.६५	१८६ तिजमानेहि खसा०
१६५	तपादीहि०	४.८१	२६६ तिट्ठग्वादीनि
२६०	तच्चती०	४.११३	१६८ तिस्से
२४६	तमधीते तं०	४.१४	१६७ तिस्सो चतस्सो
२४६	तमस्स परिमाणं०	४.४१	१०१ तिं सभापरिसाय
२४५	तमस्स सिप्यं०	४.२७	१६८ तीणि चत्तारिनपुं०
२४५	तमिघत्थि	४.१६	२७२ तीस्व
१६४	तमेत्थस्सत्थी०	४.७८	१३० तुअन्तु हि थ०
५६	तयातयीनं त्व वा	२.२१५	१६५ तुण्हाद्यादीहि भो

पृष्ठ संख्या	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या	सूत्र संख्या	
१२०	तुदादीहि को	५.२२	१४६ दात्विन्नो	५.१५५
५६	तुम्हस्स तुवं त्वम०	२.२१४	२०१, } दाधात्वि	५.४५
२७७	तुम्हाम्हानं तामे०	३.८८	२७८	
३०	तुल्यत्येन वा त०	२.४२	२८५ दारुम्ह्यङ्गुल्या	३.५०
१५२	तुं ताये तवे०	५.६१	४८ दास्स दं वा मिमे०	६.२२
१५२	तुं तूनतव्वेसु वा	५.११६	११८ दास्सियङ्	५.१३२
१५४	तुं याना	५.१६५	२७२ दि गुणादिमु	३.६२
२३२	तुंस्मा लोपो०	५.४	१०० दिवादितो	२.१७७
२५	तेतिमातो सस्स०	२.५६	११६ दिवादीहि यक्	५.२१
२११	तेन कतं कीतं०	४.२६	११८ दिसस्स पस्स०	५.१२४
२५२	तेन दत्ते लिया	४.५८	१५५ दिसा वानवा०	५.१६६
२५१	तेन निद्वत्ते	४.१८	२६३ दिस्सत्तञ्जेपि०	४.१२०
५५	तेमे नासे	२.२३६	८६ दीघा ईस्स	६.४४
६५, } तेसु सुतो क्णोक्णा	६.६०	२८४ दीघाहोवस्से०	३.४५	
८७		१८१ दीघो सरस्स	५.१३६	
६२	ते स्स पुब्बानागते	५.६७	१०१ दुतियस्स योस्स	२.१३६
८१	तोतातिता सस्मा०	२.२१६	१७६ दुतियस्स सह०	३.१०६
२१५	तो पञ्चम्या	४.६५	५६ दुतिये योम्हि०	२.२३३
२४	त्यतेतानं तस्स सो	२.१३०	१६७ दुविन्नं नम्हि वा	२.२२२
४८	त्यन्तीनं टट्टू	६.२०	२१६ द्वितीहेघा	४.११२
१६३	थावरित्तरभङ्गुर०	५.५४	१७१ द्विस्सा च	३.६७
६६	दक्खखहेहि०	६.६६	२ द्वे द्वेकानेके०	२.१
२५०	दक्खिणायारहे	४.७६	१ परि० द्वे द्वे सवण्णा	१.३
१६४	दण्डादित्विक ई वा	४.८०	१४७ घस्तोत्रस्ता	५.१४२
१ परि०	दसादो सरा	१.२	२३७ घात्वत्ये नाम०	५.१२
५५	दस्सनत्येनालो०	२.२४०	२१८ घा संख्याहि	४.११०
११७	दहस्स दस्स डो	५.१२६	१४५ घास्स हि	५.१०८
१४५	दहा डो	५.१४६	१८७ घास्स हो	५.१०३

पृष्ठ संख्या	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या	सूत्र संख्या
२१६	धि सव्वा वा	४.१०१	२६७ नातो'मपञ्चमिया
१४५	धो घहभेहि	५.१४५	६३ नामे गरहाविम्ह०
१३५	ध्यादीहि०	२.६	१७१ नाम्मादीहि
२५१	नक्खत्तेनिन्दु०	४.१२	५६ नाम्ह निमि
२७४	नखादयो	३.७६	७८ नाम्हि
२१३	न खादादीनं	२.६	७६ नाम्हि
२७५	नगो वा प्पाणिनि	३.७७	५६ नास्मानु तयामया
५५	न चवाहाहे०	२.२३६	७७ नास्मानु रञ्जा
१०२	नज्जा योस्वाम्	२.१६६	६ ना स्मास्त
२७४	नञ्ज	३.१२	१०० नास्त सा
२०६	नण् युवा०	४.६१	७३ नास्ता
१४३	न ते कानुवन्ध०	५.८५	१०० नास्सेनो
२४०	नदादितो डी	३.२७	२२६ निग्गहीतं
२८४	नदीगोदावरीनं	३.४३	११८ नितो कमस्ता
२२३	न द्वे वा	१.२८	२०० नितो चिस्त छो
१०१	न निस्त टा	२.१३८	२४६ निन्दाञ्जातप्प०
६०	न नो सस्त	२.८६	१८७ निन्दायं गुपवघा०
२०२	न न्तमानत्यादीनं	५.१७२	३२ निमित्ते
	न पुन	५.७२	२५७ निवासे तन्नामे
१५१	न न्रुस्तो	५.६७	४ नीनं वा
२३६	नमोत्वस्तो	५.११	१०२ ने स्मिनो क्वचि
१६७	नम्हि तिच्चतुन्न०	२.२०६	७० नो
१६६	नम्हि नुक् द्वादीनं०	२.४६	७५ नो'त्तातुमा
६६	नम्हि वा	२.१६५	८० नोनानेस्वा
	न सामञ्जवचन०	२.२४२	६८ नोनासेस्वि
७०	नं भीतो	२.७६	२७७ न्तकिमिमानं टा०
५६	नं सेस्वस्माकं ममं	२.२१२	२४० न्तन्तूनं डीम्हि०
२०	नाञ्जञ्च नाम०	२.१४१	८० न्तन्तूनं न्तो यो०

पृष्ठ संख्या	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या	सूत्र संख्या
४७, } ११६ } न्तमानान्तिवि०	५.१३०	१८६ परोक्वायञ्च	५.७०
८२ न्तस्स च ट वंसे	२.६४	१८५ परोक्खे अ उ ए०	६.६
६३ न्तस्सं	२.१५०	१२५, } परो क्वचि	१.२७
१ परि० न्तु वन्तुमन्त्वा०	१.२५	१२२	
८० न्तुस्स	२.१५३	१ परि० परो दीघो	१.५
६२ न्तो कत्तरि वत्त०	५.६४	११७ पादितो ठास्स०	५.१३१
१४७ पचा को	५.१५६	२८४ पापादीहि०	३.४१
१ परि० पञ्च पञ्चका वग्गा	१.७	१६६ पिच्छादित्विलो	४.८७
१ परि० पञ्चमियं परस्स	१.१५	६७ पितादीनमन०	२.१७६
१३७ पञ्चमीणे वा	२.२२	२५८ पित्तितो भातरि०	४.३६
३१ पञ्चम्यवधिस्मा	२.२८	१ परि० पित्थियं	१.१०
१६६ पञ्चादीनं चु०	२.६२	१४५ पुच्छादितो	५.१४३
१२८ पञ्हुपत्थना०	६.६	२८० पुत्ते	३.६५
१३८ पटिनिधि०	२.३०	१३७ पुथनानाहि	२.३३
१५४ पटिसेधे, अलं०	५.६२	२४० पुथुस्स पथव०	३.३६
२६, } १३५ } पठमात्थमत्ते	२.३६	१२३ पुव्वच्छक्के वा०	६.७७
१३६ पटिपरीहि भागे०	२.११	पुव्वपरच्छक्का०	६.१४
२६३ पथादीहि णेय्यो	४,७५	२६७ पुव्वस्सामा०	२.१२२
१५२ पदादीनं क्वचि	५.६२	१८७ पुव्वस्स अ	६.१८
१०० पदादीहि सि	२.१०७	२२ पुव्वादीहि०	२.१४५
२०६ पयोजकव्यापारे	५.१६	२७६ पुव्वापरज्जसा०	३.११०
२६८ पय्यपावहित्तिरो०	३.५	१५४ पुव्वेककत्तुकानं	५.६३
१५२ पररूपमयकारे०	५.६५	१ परि० पुव्वो रस्सो	१.४
२२७ परसरस्स	१.४०	७८ पुमकम्मथा०	२.१६४
२३३ परस्स घं से	५.१०१	७८ पुमा	२.१८६
२६६ परस्स संख्यासु	३.६०	७ पुमालपने०	२.६८
		१६७ पुमे तयो०	२.२०६
		१२४ पुरस्सा	५.१३४

पृष्ठ संख्या	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या	सूत्र संख्या
२६१	पुरातो णो च	४.२२	८४ भूते ई उं ओ०
२७५	पुरिसे वा	३.१०६	६४ भूतो
२७३	पुं पुमस्त वा	३.५६	२७६ भूसनादरा०
	प्ये सिस्ता	५.८८	१८७ भूस्स वुक्
१५४	प्यो वा त्वास्त०	५.१६४	२६२ मज्झादित्त्विमो
१४५	बहस्तुम् च	५.१४७	२५५ मज्झे
१७५	बहुकतिन्नं	२.५०	२६१ मनादीनं सक्
२१६	बहुम्हा वा च०	४.११६	१०० मनादीहि स्मि०
	बहुलं	१.५८	२७० मनाद्य पादीन०
५६	बहुसु वा	२.२४३	१५१ मनानं निग्गहीनं
१६८	वा चत्तालीसादो	३.६८	२५६ मनुतो स्तसण्
२४६	वाळ्हन्तिकपस०	४.१३६	१ परि० मनुवन्वो सरान०
१ परि०	त्रिन्दु निग्गहीतं	१.८	१७८ म पञ्चादिकतीहि
२२४,	} व्यञ्जने दीघरस्ता	१.३३	२२८ मयदा सरे
२२५			१.४४
२०६	व्य बद्धदासा वा	४.६०	५४ मयस्साम्हस्स
७६	ब्रह्मस्तु वा	२.१६२	६० मस्सामुस्त
४८	ब्रूतो तिस्सीब्	६.३६	६४ महन्तारहन्तानं०
२१३	भक्खित्सा हिसायं	२.८(२)	११८ मं च रुधादीनं
२४०	भवतो भोतो	३.३७	१५४ मं वा रुधादीनं
६४	भवंतो वा भोन्तो	२.१४८	२५६ मातापितुस्वा०
६३	भविस्सति स्सति०	६.२	२५८ मातितो च भगि०
	भावकम्मेषु	५.६६	२४२ मातुलादित्वानी०
१५०	भावकम्मेषु तव्वा०	५.२७	६२ मानस्स मस्स
२००	भावकारकेस्व०	५.४४	१८६ मानस्स वी०
२५२	भावा तेन नि०	४.६३	२४७ माने मत्तो
१४६	भिदादितो नो०	५.१५०	६२ मानो
६५	भुजमुच्चव०	६.२७	१६७ मायामेधाहि०

पृष्ठ संख्या	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या	सूत्र संख्या
८४, } १८४ }	मायोगे ई आ०	६.१३	२२३ युवण्णानमे औ लुत्ता १.२६
४८	मिमानं वा भ्हिम्हा०	६.५४	२४१ युवण्णेहिनी ३.३०
१६५	मुखादितो रो	४.८२	२४२ युवा ति ३.३५
	मुखादीहि यो	४.(४४)	८० युवादीनं० २.१८०
१४७	मुचा वा	५.१५७	७९ युवा सस्तिनो २.१६५
१४६	मुहवहानं च ते०	५.१०६	१५ ये पस्सिव० २.११८
१४६	मुहा वा	५.१४६	२२८ येवहिमु ञ्जो १.४२
८५	म्हात्थानमुञ्	६.४५	२२८ ये संस्स १.४३
२४०	यक्खादित्विनी च	३.२८	७६ योनमानो २.१५८
१४८	यजस्स यस्स टियी	५.११३	२० योनमेट् २.१४०
२४६	यतेतेहित्तको	४.४२	४ योनं नि २.११४
३१	यतो निद्वारणं	२.३८	७० योनं नोने पुमे २.७७
२६८	यथा न तुल्ये	३.३	७९ योनं नोने वा २.१८३
२३३	यथिट्ठं स्यादिनो	५.७३	५४ योनं हिस्व० २.२३५
३२	यट्भावो भाव०	२.३६	१६६ योम्हि द्विचं० २.२२१
२५६	यम्हि गोस्स च	४.१३०	१०२ योम्हि वा० २.६७
२२३	यवा सरे	१.३०	४ योलोपनिसु० २.६०
१४	यं	२.१०५	५ योसुज्जिभस्स० २.६५
१६	यं पीतो	२.७५	६६ योस्वं हिमु० २.१६३
	याव बोधं स०	१.५७	८० ध्वादो न्तुस्स २.६३
२६८	यावावधारणे	३.४	७७ रञ्जो रञ्जस्स० २.२२५
२१७	या हिं	४.१०२	२८५ रत्तिन्दिवदार० ३.४७
४६	युवण्णानमि०	५.१३६	१५ रत्यादीहि टो० २.५७
४८,			१६८ र संख्यातो वा ३.१०३
११५,			६५ रस्सारड् २.१७८
१५१,	युवण्णानमे औ पञ्चये	५.८२	२३३ रस्सो पुव्वस्स ५.७४
२००,			१०१ रस्सो वा २.६४
२१०			२५६ राजतो ञ्जो जा० ४.६

पृष्ठ संख्या	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या	सूत्र संख्या		
७७	राजस्स रञ्जं	२.२२३	२८६	ल्वित्थीयूहि को	३.५२
७७	राजस्सि नाम्हि	२.१२५	१२०,	} वगलसेहि ते	१.४६
७६	राजादियुवादित्वा	२.१५६	२२४		
२०२	रा नस्स णो	५.१७१	२२७	वग्गे वगन्तो	१.४१
२७७	रानुवन्वे'न्त०	४.१३२	२५४	वच्छादितो णान०	४.२
२५०	रायो तुमन्ता	४.७७	१४४	वचादीनं वस्सु०	५.११०
१३६,	} रित्ते दुतिया च	२.३१	२५६	वच्छादीहि तनु०	४.५६
१३८			१ परि०	वण्ण परेन सवण्णो०	१.२४
२७६	रीरिक्खेकसु	३.८५	४६	वत्तमाने ति अन्ति सि०	६.१
१४६	रुहादीहि हो०	५.१४८	६६	वत्तहा सनन्नं०	२.१६१
१३६	लक्खणित्यम्भूत०	२.१०		वत्थितो इवत्थे एय्यो ४.(४१)	
१३७	लक्खणे	२.२०	१५१	वदादीहि यो	५.३०
१६७	लक्ख्या णो अ च	४.६१	१४४	वद्धस्स वा	५.११२
६४	लभवसच्छिद०	६.२६	२२५	वनतरगा चागमा	१.४५
८७	लभा इईनं थंथा वा	६.७३	१६४	वन्त्तवण्णा	४.७६
१५१	लहुस्सुपन्तस्स	५.८३	२०१	वमादीहयु	५.४६
७	ला योनं वो०	२.८५	१४६	वहस्सुस्स	५.१०७
२२७	लोपो	१.३६	२१६	वहिस्सानियन्तुके	२.७.(१)
५,६	लोपो	२.११६	१४३	वा व्वच्चि	५.८६
२०५	लोपो	४.१२३	२८६	वाञ्जतो	३.५३
२३३	लोपो'नादिव्य०	५.७५	२६७	वा ततियासत्तमीनं	२.१२४
६०	लोपो मुस्सा	२.८८	२६६	वानेकञ्जत्थे	३.१७
२०२	लोपो वड्ढा०	५.१५८	७६	वाम्हानड्	२.१५७
२०४	लोपो'वण्णि०	४.१३१	२१६	वारसड्ख्याय०	४.११४
२४६	लोपो वीमन्तु०	४.१३८	२८०	विज्जायोनिस्स०	३.६४
६५	ल्लुपितादीनमसे	२.१६४	२२६	वित्तिस्सेवे वा	१.३६
२७२	ल्लुपितादीनमार०	३.६३	१६२	वितो वातो	५.३६
६५	ल्लुपितादीनमा सिम्हि	२.५६	१६२	विदा कू	५.३८

पृष्ठ संख्या	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या	सूत्र संख्या
२७२	विधादिसु द्विस्सट्ठु ३.६१	१ परि० सत्तमियं पुव्वस्स	१.१४
१ परि०	विधिञ्चिसेसनन्तस्स १.१३	३२ सत्तम्याघारे	२.३४
१३६- १३८	} विनाञ्जत्र ततिया च २.३२	१३८ सत्तम्याधिके	२.१६
१ परि०		विप्पट्टिसेधे १.२२	१२६ सत्यरहेस्वे० ६.११
२७४	विसेसनमेक० ३.११	२३६ सद्दादीनि क० ५.१०	
२७०	वीच्छाभिकखञ्जे० १.५४	१६६ सद्दादित्व ४.८४	
१६८	वीसत्तिदसेसु० ३.६६	२४६ सव्वाच आवन्तु ४.४३	
२१६	वेका ञ्झं ४.१११	२७४ सव्वादयो वुत्ति० ३.६६	
२१	वेट २.१४४	२१६ सव्वादितो सत्त० ४.६६	
२७७	वेतस्सेट्ठु ३.६०	१३४ सव्वादितो सव्वा २.२५	
२२४	वे वा १.५१	२७७ सव्वादीनमा ३.८६	
७	वेवोसु लुस्स २.६६	८१ सव्वादीनंनम्हि च २.१०१	
२६४	सकत्ये ४.१२२	२७२ सव्वादीनं वीत्तिहारे १.५६	
८७	सकाणास्स ख० ६.५८	२१ सव्वादीहि २.१३६	
१२३	सकापानं कुक्कुणे ५.१२१	२१० सव्वादीहि पकारे० ४.१०८	
२१६	सकिं वा ४.११७	२१७ सव्वेकञ्जयतेहि० ४.१०५	
	सक्करादीहि० ४.(४६)	२७६ समानञ्जभवन्त० ५.४३	
१ परि०	संकेतो'नवयो० १.२३	२७६ समानस्स पक्खादि० ३.८३	
२७६	संख्यादि ३.२१	२७७ समाना रोरिरिक्ख० ५.१२५	
१७३	संख्यायसच्चुती० ४.५०	२८४ समासन्त्व ३.४०	
२८४	संख्याहि ३.४२	७७ समासे वा २.२२७	
२३७	सच्चादीहापि ५.१३	२७८ समाहारे नपुंसकं ३.२०	
२४७	सञ्जातं तारकादि० ४.४५	२६८ समीपायामेस्वन्तु ३.६	
२७८	सञ्जायमुदोद० ३.७१	२६० समूहे कण्णणिका ४.६८	
२७१	सञ्जायं ३.७६		सम्भावने वा ६.१२
१७६	सतादीनमी च ४.५३	२००, } सरम्हा द्वे	
६४	सतो सव्वे २.१४७	२२५	१.३४

पृष्ठ संख्या	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या	सूत्र संख्या
२०४, } २५५ }	सरानमादिस्सा० ४.१२४	४७, } १३१ }	सिहिस्वद् ६.५३
२७५	सेरे कदकुस्सुत्त० ३.१०७	१६७	सीलादितो वो ४.८८
२२२	सरो लोपो सरे १.२६	१६३	सीलाभिवक्षञ्जा० ५.५३
६५	सलोपो २.१६७	३	सुम् सस्स २.५३
३	सस्साय चतुत्थिया २.४६	३,	सुनंहिसु २.१२६:२.६१
१३६	सहत्थे २.१३	६३,	
३०	सहत्थेन २.१६	७७	
२७१	सहस्स सो'ञ्जत्थे ३.७८	७८	सुम्हा च २.१८८
२२६	संयोगादि लोपो १.५३	५६	सुम्हाम्हास्सास्मा २.२०५
२५५	संयोगे क्वचि ४.१२५	७४	सुम्हि वा २.७०
२१	संसानं २.१०२	१४७	सुसा खो ५.१५५
	सखादीहि इयो ४.(४३)	७५	सुहिसु नक् २.१६७
१४५	सानन्तरस्स तस्स ठो ५.१४०	१६७	सुहिसु भस्सो २.५८
१३६	सामित्ते'धिना २.१७	३	सुहिस्वस्से २.१००
१४४	सासवससंससाथो ५.१४४	६६	सुहिस्वारड् २.१६८
१४५	सातस्स सिस् वा ५.११७	२७५	सो छस्साहायतने वा ३.६२
१५५	सासाधिकरा चच० ५.१६७	२७४	सोतादिसू लोपो ३.७३
२४४	सास्स देवता पुण्ण० ४.१३	१६८	सो लोमा ४.६३
७६	सास्संसे चानड् २.१६०	२२०	सो वीच्छापकारेसु ४.११८
८५	सि ६.४३	६८	स्मानंसु वा २.१६२
५८	सिम्हनपुंसकस्सायं २.१२६	५६	स्माम्हि त्वम्हा २.२१६
५४	सिम्हहं २.२१३	३	स्मास्मिन्नं २.४५
	सिलाय णेय्यो च ४.(४२)	७६	स्मास्मिन्नं नाने २.१८२
७०	सिस्मि नानपुंसकस्स २.६८	७६	स्मास्स ना ब्रह्मा च २.१६८
१६७	सिस्सरे आम्युवामी ४.६०	३	स्माहिस्मिन्नं म्हा० २.६६
१०१	सिस्सागितो नि २.१४६	७१	स्मिनो नि २.७६
२	सिस्सो २.१११	२२	स्मिनो स्सं २.१०४

पृष्ठ संख्या		सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या		सूत्र संख्या
५६	स्मिन्हि तुम्हा०	२.२२८	२२४	हस्स विपल्लासो	१.५०
७७	स्मिन्हि रञ्जे०	२.२२६	१६२	हातो वीहिकाले०	५.३७
२७१	स्यादिलोपो पु०	१.५५	६६	हातो ह	६.६८
२७३	स्यादिसु रस्सो	३.२३	६४	हास्स चाहङ्	६.२५
२६७	स्यादि स्यादिनेक०	३.१	२५६	हिते रेय्यण्	४.३६
१२२	स्वादीहि षणो	५.२५	८२	हिमवतो वा ओ	२.१५५
	स्सस्स हि कम्मो	६.६५	४७	हिमिमेस्वस्स	६.५७
२५	स्सा वा तेत्तिमामू०	२.४८	१३१	हिस्सतो लोपो	६.४८
६५	स्से वा	६.५६	१३६	हीने	२.१४
५८	स्संस्सा स्सा यो०	२.५४	८७	हूतो रेसुं	६.४१
२११	हनस्स घातो०	५.६६	६५	हूस्स हेहेहि०	६.३१
६५	हना छेखा	६.६७	१२८	हेतुफलेस्वेय्य०	६.८
१५५	हना रच्चो	५.१६६	१३७	हेतुम्हि	२.२१
२१२	हरादीनं वा	२.५			

आठवाँ परिशिष्ट

एवादि वृत्ति में सिद्ध किए गए
शब्दों की अनुक्रमणिका

आठवाँ परिशिष्ट

‘एवादि’ वृत्ति में सिद्ध किए गए शब्दों की अनुक्रमणिका

अ

ण्वादि

सूत्र-संख्या

१४. अक्को, (अर = गमने, क) = सूर
 ८. अक्खि, (इक्ख, चक्ख = दस्सने, इ नपु०) = आँख
 ३१. अक्खो, (अर = गमने, ख) = अक्ष; पासा
 १६४. अंगारं, (अग = कुटिलगमने, आर) = धर
 ३२. अगो, (अज, वज = गमने, गक्) = अग्र
 ३४. अग्गि, (अग = कुटिल गमने, गि) = आग
 १४७. अङ्कुरो, (अङ्क = लक्खणे, उर) = अङ्कुर
 २१५. अङ्कसो, (अङ्क = लक्खणे, सक्) = अङ्कश
 १६४. अङ्गारो, (अङ्ग = गमनत्ये, आर) = आग
 १६५. अङ्गुलं, (अङ्ग = गमनत्ये, उल) = अङ्गुली, एक नाप
 १६५. अङ्गुलि, (अङ्ग = गमनत्ये, उलि) = अङ्गुली
 ७. अच्चि, (अच्च, अञ्च = पूजायं, इ) = आँच
 ४३. अच्चो, (अस = खेपने, छ) = भालू
 १५६. अच्चरा, (अस = खेपने, छर) = देवकन्या, चुटकी
 १०२. अजिनं, (अज, वज = गमने, इन) = चमड़ा
 १०२. अजिरं, (अज, वज = गमने, किर) = आँगन
 १०१. अज्जुनो, (अज्ज, सज्ज = अज्जने, कुन) = राजा, वृक्ष विशेष

ण्वादि

सूत्र-संख्या

१९६. अञ्जलि, (अञ्ज = व्यक्तिमक्खनगतिकन्तिसु, अलि) = अञ्जलि
 ११२. अटनि, (अट, पट = गमनत्थे, अनि) = पाया
 २. अणु, (अण = सद्धत्थे, उ) = सूक्ष्म, धान्य विशेष
 ५८. अण्डो, (अम = गमने, ड) = अण्डा
 २१७. अतसो, (अत = सातच्चगमने, अस) = वायु
 ९३. अतिथि, (अत = सातच्चगमने, इथि) = पाहुन
 ८२. अत्ता, (अत = सातच्चगमने, त) = मन
 ८८. अत्थो, (अर = गमने, थक्) = धन
 ९९. अद्धं, (अर = गमने, ध) = मार्ग, काल
 ९९. अद्धा, (अर = गमने, ध) = मार्ग, काल
 १३७. अधमो, (अस = खेपने, म) = नीच
 १८९. अनिलो, (अन = पाणने, इल) = हवा
 ८२. अन्तो, (अम, गम = गमने, त) = समाप्ति, अंत
 २. अन्दु, (अन्द = वन्धने, उ) = जंजीर
 ९८. अन्धो, (अन = पाणने, ध) = अंधा
 ११४. अप्पं, (आप = पापुणने, प) = थोड़ा
 १२८. अट्ठं, (अव = रक्खने, भ) = मेघ ।
 ८१. अमत्तं, (अम = गमने, अत्त) = भाजन
 १२१. अम्बो, अम्बा, (अम = गमने, व) = आम
 २. अम्बु, (अम्ब = सद्धे, उ) = जल
 १३६. अम्मा, (अम = गमने, म) = माता
 २२२. अम्हं, (अम = गमने, ह) = पत्थर
 ५१. अरञ्जं, (अर = गमने, ञ) = जंगल
 ६२. अरणि, (अर = गमने, अणि) = अरणि
 २. अरु, (अर = गमने, उ) = व्रण
 १०१. अरुणो, (अर = गमने, कुन) = सूरज
 २१७. अलसो, (अल = वन्धने, अस) = आलसी

ण्वादि

सूत्र-संख्या

८०. अलातं, (अल = वन्धने, आतक) = तितकी, लुकारी
 ४. अलावू, (लम्ब = अवसंसने, ऊ) = तुम्बा, लीका
 २१. अलिकं, (अल = वन्धने, किक) = भूठा
 १६८. अल्लि, (अर = गमने, लि) = वृक्ष
 ११२. अवनि, (अव = रक्खने, अनि) = पृथ्वी
 ७६. अवन्ती, अव = रक्खने, अन्त = इस नाम का जनपद
 ११२. असनि, अस = खेपने, अनि = वज्र
 ७. असि, अस = खेपने, इ = तलवार
 २. असु, अस = खेपने, उ = प्राण
 १४७. अनुरो, अस = खेपने, उर = दैत्य
 २१३. अस्तो, अस = खेपने, स = घोड़ा
 २१२. अस्तु, अस = खेपने, सु = चाँसू
 ८. अहि, अंह = गमने, इ = साँप
 १६४. अळारो, अल = वन्धने, आर = मटमैला रंग
 २१३. अंतो, अन = पाणने, स = कंधा; हिस्ता
 ६. आखु, खण = अवदारणे, कु = चूहा
 २१४. आमिसं, मि = पक्खेपे, सक् = आहारादि
 १. आयु, अय = गमनत्ये, णु = आयु
 २०२. आलुवो, अल = वन्धने, णुव = एक गाछ
 ८५. आवसथो, वस = निवासे, अय = घर
 ५४. आवाटो, अव = रक्खने, आटण् = गढ़ा
 १. आसु, अस = खेपने, णु = शीघ्र
 २६. इट्टका, इस = इच्छायं, ठकण् = ईंट
 ६४. इत्थी, इस = इच्छायं, थी = स्त्री
 १०५. इनो, इ = अज्जेनगतिसु, नक् = स्वामी
 २. इन्दु, इन्द = परमिस्सरिये, उ = चाँद
 १२७. इभो, इ = अज्जेनगतिसु, भक = हाथी

प्वादि

सूत्र-संख्या

१०७. ऊनो, ऊह = वितक्के, न = कम
 १३६. ऊमि, ऊह = वितक्के, मि = तरंग
 ६. ऊरु, अर = गमने, कु = जाँघ
 १४. एको, इ = अज्भेन गतिकन्तिसु, क = अकेला
 ५६. एरण्डो, ईर = क्लेपे, ड = रेंड, व्याघ्रपुच्छ
 १८८. एला, इ = अज्भेन गतिकन्तिसु, ल = मुँह का लार
 ५५. ओट्टो, उस = दाहे, ठ = ओठ, ऊँट
 १०७. ओदनो, उन्द = किलेदने, न = भात
 १४. कक्को, कर = करणे, क = एक तरह का रंग
 ४. कक्कन्धु, कर = करणे, ऊं = वैर का फल
 २१८. कक्कसो, कर = करणे, कस = कर्कश
 २२७. कक्कळो, कर = करणे, ळक् = क्रूर
 ३६. कङ्गु, कम = इच्छायं, गु = धान्य विशेष
 ४३. कच्छो, कच् = वन्यने, छ = तराई
 ४२. कच्छु, कस = विलेखने, छुक् = खुजली
 ४६. कञ्जा, कम = इच्छायं, ज = कुमारी
 १८. कटर्क, कट = मद्दने, अक = नगर
 २२३. कटाहो, कट = मद्दने, छ = कड़ाही
 १८२. कठलं, कठ = किच्छजीवने, अल = कपाल-खंड
 १७३. कठोरो, कठ = किच्छजीवने, ओर = कठोर
 ५५. कट्टं, कस = गमने, ठ = काठ
 ५५. कण्ठो, कम = इच्छायं, ठ = कण्ठ
 ५८. कण्डो, कम = पदविक्लेपे, ड = वाण, परिच्छेद
 १६२. कण्डुलो, कण्ड = च्छेदने, फुल = वृक्ष
 ६५. कण्णो, कर = करणे, ण = कान
 २२३. कण्हो, कस = विलेखने, ह = काला
 ७३. कतु, कर = करणे, रतु = यज्ञ

ण्वादि

सूत्र-संख्या

२८. कत्तिका, कर=करणे, तिक=कार्तिक
 १२२. कदम्बो, कद=सुत्तियोधातु, व=वृक्ष
 १८. कनकं, कन=दितिगतिकन्तिनु, अक=सोना
 ६५. कन्दो, कम=इच्छायं, दक=मूल विशेष
 १५६. कन्दरो, कन्द=वहानरोदनेसु, अर=कन्दरा
 १८६. कपालं, कप्प=सामत्थिये, फाल=घटादि खंड
 ८. कपि, कम्प=चलने, इ=वानर
 १६१. कपिलो कम्प=चलने; कव=वण्णे, कील=मटमला रंग
 ७५. कपोतो, कप=अच्छादने, श्रोत=कवूतर
 १६४. कपोलो, कप=अच्छादने, श्रोत=गाल
 २१८. कप्पासो, कर=करणे, पास=कपास
 १०३. कप्पिनो, कप्प=सामत्थिये, इन=राजा
 १७२. कप्पूरं, कप्प=सामत्थिये, ऊर=कपुर, घनसार
 ५३. कमटो, कम=इच्छायं, अट=वांना
 ५६. कमठो, कम=इच्छायं, ठ=भिधा-भाजन
 १८२. कमलं, कम=इच्छायं, अल=कमल
 २. कम्बु, कम्ब=संवरणे, उ=शङ्ख
 १३६. कम्मं, कर=करणे, म=कर्म, सुखदुखफलदं
 १६७. कम्मारो, कर=करणे, मार=लोहार
 २१५. कम्मासो; कम्मासं, कल=सङ्ख्याने, सक्=चित्तकवरा
 १८. करको; करका, कर=करणे, अक=वनउरी, श्रोला
 ५३. करटो, कर=करणे, अट=कौआ
 ५७. करण्डो, कर=करणे, अण्ड=भाण्ड विशेष
 १२४. करभो, कर=करणे, अभ=ऊंट
 २१०. करीसं, कर=करणे, ईस=गुह
 १०१. करुणा, कर=करणे, कुन=दया
 ८१. कलत्तं, कल=संख्याने, अत्त=भार्या

ण्वादि .

सूत्र-संख्या

१२४. कलभो; कलभो, कल=संख्याने, भ्रभ=हाथी का वच्चा

१८२. कललं, कल=संख्याने, अल=गर्भ की एक अवस्था, कीचड़

२१७. कलसो, कल=संख्याने, अस=कलश

२२३. कलहो, कल=संख्याने, ह=विवाद

७. कलि, कल=संख्याने, इ=पाप

२२. कलिका, कल=संख्याने, कीक=कली

३३. कलिङ्गो, कल=सद्दे, गक्=एक जनपद

१८६. कलिलं, कल=संख्याने, इल=गहन

१६६. कलीरो, कल=संख्याने, कीर=वाँस कः कोंपल (अंकुर)

१८८. कल्लं, कल=संख्याने, ल=युक्त

१६४. कल्लोलो, कल्ल=सद्दे, ओल=समुद्र की लहर

५४. कवाटं, कु=सद्दे, आट=किवाड़

७. कवि, कु=सद्दे, इ=कवि

५३. कसटं, कस=गमने, अट=दुरा, अप्रिय

७. कसि, कस=विलेखने, इ=कृपि

६०. कसिणं, कस=गमने, किण=अशेष

१४६. कसिरं, कस=गमने, किर=योड़ा

१७७. कसेरु, सी=सये, रु=पानी में जमने वाला एक कन्द

२७. कसको, कस=विलेखने, सक=कृपक

२१३. कंसो, कम=इच्छायं, स=एक नाप

१६४. कळारो, कल=संख्याने, आर=मटमैला रंग

१४. काको, का=सद्दे, क=कौवा

२४. कामुको, कम=इच्छायं, पुक्=कामी

१. कारु, कर=करणे, णु=शिल्पी, इन्द्र, विश्वकर्मा

१. कासु, कस=विलेखने, णु=गड़ा

२२५. काळो; काळि, का=सद्दे, ल=जंगली जानवर

२००. कितवो, किन=निवासे, अव=ठग, जुवारी

ण्वादि

सूत्र-संख्या

२१२. किट्ठिसं, कर = करणे, रिट्ठिस = पाप
 ८. किमि, कम = पद विक्खेपे, इ = कीड़ा
१०४. किरणा, किर = विकिरणे, फन = किरण
 ८०. किरातो, किर = विकिरणे, आतक् = एक जंगली जात
 ५२. किरिंटं, किर = विकिरणे, कोट = मुकुट
 ८५. किलमथो, किलम, क्रम = गिलाने, अय = परिश्रम
 ८०. किलातो, किर = विकिरणे, आतक् = एक जंगली जात
१४२. किसलयं, कस = गमने, य = पल्लव
 १७४. किसोरो, कस = गमने, ओर = किशोर, अश्व
 २२. किङ्कणिका, कण = सदृश्ये, कीक = छोटी घण्टियाँ
 ५४. कुक्कुटो, कुक, वक = आदाने, कुटक = मुर्गा
 १८८. कुक्कुरो, कुक, वक = आदाने, उर = कुर्ता
२२७. कुक्कुळं; कुक्कुळो, कुक, वक = आदाने, ळ = एक नरक
 १३१. कुङ्कुमं, कम, इच्छायं, कुम = केशर
 ४१. कुच्छि, कुस = अक्कोसे, छिक = पेट
११०. कुटिलो, कुट = कोटिल्ये, किल = टेढ़ा
 १२२. कुटुम्बं, कुट = कोटिल्ये, व = परिवार, कुटुम्ब
 ५६. कुट्ठं, कुस = अक्कोसे, ठ = कुट
 १२२. कुडुवो, कण्ड = च्छेदने, व = पैला
११६. कुणपो, कुय = पूतिभावे, अप = मृतक
 १८६. कुणालो, कुण = सदृश्ये, काल = एक महासर
 ५६. कुण्ठो, कुण = सदृश्ये, ठ = जिसका हाथ पैर कटा हो
 ५६. कुण्डं, कम = इच्छायं, ड = भाजन
१८२. कुण्डलं, कुण्ड = दाहे, अल = कुण्डल
 ८४. कुत्तं, कर = करणे, तक् = त्रिया
 ८४. कुन्तो, कम = पदविक्रये, तक् = एक हथियार
 ६६. कुन्दो, कम = इच्छायं, दक् = एक प्रकार का फूल

ण्वादि

सूत्र-संख्या

१६५. कुमारो, कम = इच्छायं, आर = कुमार
 १०३. कुमिनं, कम = पदविकल्पे, इन = मछली वझाने का छोप (टाप) !
 १२६. कुम्भो, कम = इच्छायं; अथवा उम्भ = पूरणे, ह = घड़ा
 १३७. कुम्भो, कर = करणे, म = कछुआ
 २१५. कुन्मासो, कुल = सन्ताने, सक = एक वाद्य
 १८३. कुरं, कु = सहे, रकु = भात
 १५५. कुररो, कुररी, कुर = सहे, कुर = एक पक्षी (कुररी)
 ५. कुरु, कुर = सहे, कु = राजा
 ५. कुरवो, कुर = सहे, कु = जनपद
 १७२. कुरुरो, कर = करणे, ऊर = पापकारी
 १=५. कुललो, कुल = सन्ताने, काल = टिटिहरी (पक्षी विशेष)
 १=५. कुलालो, कुल = सन्ताने, काल = कुम्भकार, कोहॉर
 २१५. कुलिसं, कुल = संवरणे, सक् = वज्र
 १७५. कुवेरो, कु = सहे, एरक् = कुवेर महाराज
 २१४. कुसो, कु = सहे, सक् = कुश घास
 =४. कुसीतो, कुस = अक्कोसे, तक् = काहिल
 १३०. कुसुमं, कुस = अक्कोसे अन्हाने च, कुम = फूल
 १२६. कुसुम्भं, कुस = अक्कोसे अन्हाने च, भ = एक फूल जिसमे रंग तैयार किया जाता है ।
 १२६. कुसुम्भो, कुस = अक्कोसे अन्हाने भ = सोना
 १७०. कुलीरो; कुळीरो, कुल = सन्ताने, कीर = कर्कट, केकड़ा
 ११५. कूपो, कु = सहे, प = कूआ
 ६१. केणि; केणी, की = द्व्वविनिमये, णि = क्रय
 २. केतु, कित = निवासे, उ = ध्वजा
 १६६. केदारं, क्लेद, क्लिद = अल्हाभावे, आर = खेत
 १=२. केवलं, केव = सेवने, अल = सारा
 ५. केळि, कीळ = विहारे, इ = क्रीड़ा

ण्वादि

सूत्र-संख्या

१८६. कोकिलो, कुक, वक=आदाने, इल=कोयल
 ४३. कोच्छो, कुच=संकोचे, छ=पीड़ा
 ५५. कोट्ठो, कुस=अक्कोसे, ठ=अनाज रखने की कोठी
 ६५. कोणो, कु=सद्दे, ण=पास, अंश, वीणा आदि का दण्ड
 ५६. कोण्ठो, कुस=अक्कोसे, ठ=जिसका हाथ पैर कटा हो
 ८६. कोत्थु, कुस=अक्कोसे, थु=सियार
 १८. कोरको, कुर=सद्दे, अक्=कली
 ७८. कोलितो, कुल=सन्ताने, इत्त=द्वितीय अग्र श्रावक (एक ग्राम का नाम)
 १६६. कोविळारो, विद=लामे, आर दुगना हुआ
 १२२. कोसम्बो, कुस=अक्कोसे, व=वृक्ष
 १७१. खज्जुरो-खज्जुरी, खज्ज=खज्जने, ऊर=खजूर
 ५८. खण्डो, खन, खण=अवदारणे, ड=खांड
 १५०. खदिरो, अद, खाद=भक्खने, किर=खैर
 ६८. खन्धो, खन, खण=अवदारणे, ध=स्कन्ध; समूह
 ६४. खाणु, खन, खण=अवदारणे, णु=ठूठ
 ११६. खिप्पं, खिप=प्परणे, पक्=शीघ्र
 १४३. खीरं, खी=खये, रक्=दूध
 ६५. खुद्दो, खिद=असहने, दक्=क्षुद्र
 ८२. खेत्तं, खिप=प्परणे, त=खेत
 १३६. खेमो, खी=खये, म=क्षेम; कुशल
 २२५. खेळो, खी=खये, ल=थूक
 १३६. खोमं, खु=सद्दे, म=अतसि
 १०७. गगनं, गम=गमने, न=आकाश
 ३२. गगो, गद=वचने, गक्=एक ऋषि
 १५२. गगरो, गर, घर=सेचने, गर=गड़गड़ाहट, हंस की आवाज
 ३२. गङ्गा, गम=गमने, गक=गंगा नदी
 ७. गण्ठि, गन्थ=गन्थने, इ=गाँठ

ण्वादि

सूत्र-संख्या

५८. गण्डो, गम = गमने, ड = व्याधि, गाल
 ८२. गत्तं, गह = उपादाने, त = शरीर
 ६६. गद्धो, गिव = अभिकङ्खायं, घ = गिज्भो अत्यंत लोभाभिभूत
 १२५. गद्रभो, गद = व्यत्तवचने, रभ = गदहा
 ७०. गन्तु, गम = गमने, तु = जाने वाला
 १२१. गन्वो, गर = सेपने, व = अभिमान
 १५१. गवभरं, गर = सेचने, भर, = गुहा
 १२८. गवभो, गर = सेचने, भ = गर्भ
 १७०. गभीरो; गम्भीरो, गम = गमने, कीर = गहरा
 २१. गमिको, गम = गमने, किक = जाने वाला
 २. गरु, गर = सेचने, उ = गुरु, आचार्य
 ६२. गहृणि, गह = उपादाने, अणि = जठराग्नि
 ८८. गाथा, गा = सद्दे, थक् = पद्यविशेष
 १३६. गामो, गा = सद्दे, म = गाँव
 ११. गामी, गम = गमने, ईण् = जानेवाला
 २२३. गाळ्हं, गाह = विलोळने, ह = दृढ
 ४०. गिज्भो, गिव = अभिकङ्खायं, भक् = गीघ
 २२३. गिम्हो, गम = गमने, ह = ग्रीष्म
 ६. गिरि, गिर = निगिरणे, कि = पहाड़
 २०३. गोवा, गा = सद्दे, ईव = गला
 ४४. गुच्छो, गुप = गोपने, छ = गुच्छा
 २०. गुवाको, गु = सद्दे, आक् = सुपारी
 २२६. गुळो, गु = सद्दे, ळक् = गुड़
 ८८. गूपो, गुप = गोपने, थक् = गूह
 ६७. गोणो, गम = गमने, ण = वैल
 ८२. गोत्तं, गुप = गोपने, त = गोत्र
 १४६. गोत्रं, गुप = गोपने, रक् = गोत्र

ण्वादि

सूत्र-संख्या

१३२. गोधुमो, गुध = परिवेठने, उम = गेहूँ
 १२०. गोप्फो, गुप = गोपने, फ = गुल्फ, पैर की एँड़ी के ऊपर का भाग
 २२६. गोळो, गु = सहे, ळक् = गुड़
 ८३. घतं, घर = सेचने, तक = घी
 १३६. घम्मो, गर, घर = सेचने, म = ग्रीष्म
 १०. घाति, हन = हिंसायं, इण् = हथियार
 १७३. चकोरो, चक = परिवितक्के, ओर = पक्षी विशेष
 २. चक्खु, चक्ख = दस्सने, उ = आँख
 १५२. चच्चरं, चर = गतिभक्खनेसु, चर = चौराहा
 १६२. चटुलो, चट = भेदने, कुल = खुसामदी
 १८७. चण्डालो, चण्ड = चण्डिको, णाल = चाण्डाल
 १४७. चतुरो, चत = याचने, उर = चतुर
 १८४. चपलो, चुप = मन्दगमने, कल = चपल, चञ्चल
 २१७. चमसो, चम = अदने, अस = चमचा, श्रुवा
 ४. चमू, चम = अदने, ऊ = सेना
 ११४. चम्पा, चम = अदने, प = एक नगर (वर्तमान 'भागलपुर')
 १३३. चरिमं, चर = गतिभक्खनेसु, इम = पिछला
 २. चरु, चर = गतिभक्खनेसु, उ = हव्यपाक
 १. चाटु, चट; पुट = भेदने, णु = खुसामद
 १. चारु, चर = गतिभक्खनेसु, णु = सुन्दर
 ८३. चित्तं, चित = सञ्चेतने, तक् = विज्ञान; चित्र
 ८०. चिलातो, चिल = वसने, आतक = एक प्रकार की मछली
 १०७. चीनो, चि = चये, न = चीन देश
 १४४. चीरं, चि = चये, रक् = बल्कल
 १५४. चीवरं, चि = चये, क्वर = कषाय वस्त्र
 १६८. चुल्लि, चुद = चोदने, लि = चूल्हा
 २२५. चूळा, चु = चवने, ळ = जूरा

ण्वादि

सूत्र-संख्या

१६७. छल्लि, छद = संवरणे, लि = छल्ली
 २०८. छवि, छद = संवरणे, रवि = शोभा;
 १४०. छाया, छा = छादने, य = छाया
 ६५. छिहं, छिद = द्वेषाकरणे, दक् = छेद
 ११७. छेप्पं, छुप = सम्पत्से, पक् = अंगूठा
 १०७. जघनं, हन = हिंसायं, न = जांघ
 ३७. जङ्घा, जन = जनने, घ = जांघ
 १५२. जज्जरो, जर = वयोहानियं, जर = जर्जर
 १६१. जठरं, जन = जनने, अर = उदर, पेट
 ६४. जणु, जन = जनने, णु = घुटना
 ७३. जतु, जन = जनने, रतु = लाह
 ७०. जत्तु, जर = वयोहानियं, तु = पंसली
 १८. जनको, जन = जनने, अक = पिता
 ७०. जन्तु, जन = जनने, तु = जीव
 ४. जम्बू, जन = जनने, ऊ = जामुन
 १३६. जम्मो, जम = अदने, म = नीच, मूर्ख
 २६. जलूका, जल = दित्तियं, णुक = जोंक
 १६४. जाणु, जन = जनने, णु = घुटना
 ७२. जामाता, जन = जनने, तु = दामाद
 १४१. जाया, जन = जनने, य = स्त्री
 १०५. जिनो, जि = जये, नक् = बुद्ध
 २२२. जिह्वा, जीव = पाणधारणे, ह = जीभ
 ७६. जीवन्ती, जीव = पाणधारणे, अन्त = एक औपधि
 २२३. जुह्वा, जुत = दित्तियं, ह = चांदनी
 १६४. तक्कोलं, तक्क = वितक्के, ओल = एक फल
 १६३. तण्डुलो, तम = छेदने, कुल = चावल
 २२३. तण्हा, तस = पियासायं, ह = तृष्णा

ष्वादि

सूत्र-संख्या

१४२. तनयो, तन = वित्यारे, य = पुत्र
 २. तनु, तन = वित्यारे, उ = शरीर
 ४. तनू, तन = वित्यारे, ऊ = शरीर
 ८२. तन्तं, तन = वित्यारे, त = तांत
 ७०. तन्तु, तन = वित्यारे, तु = सूत्र
 १२. तन्दी, तन्द = आलस्से, ई = आलस्य
 १८०. तन्मुलं, तम = भूसने, वूल = पान
 १८. तरको, तर = तरणे, अक = नाव
 ६२. तरणि, तर = तरणे, अणि = समुद्र, सूरज
 २. तरु, तर = तरणे, उ = वृक्ष
 १०१. तरुणो, तर = तरणे, कुन = तरुण
 १५६. तसरो, तस; तस = पिपासायं, अर
 ६०. तसिणा, तस = पिपासायं, किन = तृष्णा
 ६५. ताणं, ता = पालने, ण = आण
 ८२. तातो, ता = पालने, त = पिता
 २११. तालीसं, तल = पतिद्वायं, ईस = एक दवा का गच्छ
 १. तालु, तल = पतिद्वायं, णु = तालु
 ६०. तिखिणं, तिज = निसाने, किण = तेज
 ६७. तिणं, तिज = निसाने, ण = तृण
 ८. तित्तिर, तर = तरणे, इ = तितर पक्षी
 ८८. तित्थं, तर = तरणे, थक् = घाट
 ६३. तिथि, ता = पालने, इथि = तारीख
 ५. तिपु, तप = सन्तापे, कु = सीसा धातु
 १४६. तिमिरं, तिम = तेमने, किर = अन्धकार; जल
 २०६. तिमिसं, तिम = तेमने, किस = अन्धकार
 ५२. त्तिरीदं, तर = तरणे, कीट = पगड़ी
 १४५. तीरं, ता = पालने, रक् = किनारा

ण्वादि

सूत्र-संख्या

१५४. तीवरो, ता = पालने, क्वर = एक नीच जाति
 ४४. तुच्छं, तुस = तुद्धियं, छ = असत्य, सारहीन
 ५६. तुण्डं, तनु = वित्यारे, ड = मुंह, चोंच
 ८८. तुत्यं, तुद = व्यथने, थक् = दवा
 १६३. तुमुलौ, तम = छेदने, कुल = व्याप्त, सङ्कुल
 १०३. तुहिनं, तुद = व्यथने, इन = पाला
 ७. थनि, थन = सद्दे, इ = शब्द
 ६. थरु, तर = तरणे, कु = तलवार की मूठ
 १८४. थलं, ठा = गतिनिवृत्तियं, कल = स्थल
 १८. थवको, थु = अभित्यवे, अक = फूल का गुच्छा
 १५०. थिरं, ठा = गतिनिवृत्तियं, किर = स्थिर
 २१४. थुसो, थु = अभित्यवे, सक् = भूसा
 ६७. थूणं, थु = अभित्यवे, ण = एक नगर; थूणो = क्षम्भा
 ११५. थूपो, थु = अभित्यवे, प = चैत्य
 १०७. थेनो, ठा = गतिनिवृत्तियं, न = चोर
 २०६. थेवो, थु = अभित्यवे, रेव = जलविन्दु
 ६०. दक्खिणा, दक्ख = वृद्धियं, किण = दक्षिणा, पूजा
 ५८. दण्डो, दम = उपसमे, उ = दण्ड
 १५२. दहरं, दर = विदारणे, दर = एक पक्षी
 ६७. दद्दु, दद = दाने, दु = दाद
 १५१. द्दुरो, दद = दाने, दुर = मेढक
 ८. दधि, धा = धारणे, इ = दही
 ८२. दन्तो, दम = उपसमे, त = दाँत
 ६८. दन्धो, दम = उपसमे, ध = मूढ़
 १२३. दन्धि-दन्धी, दर = विदारणे, वि = कलछूल
 ८५. दमयो, दम = उपसमे, अय = इन्द्रिय-दमन
 २१६. दस्तु, दंस, डंस = दंसने, सु = चोर

ण्वादि

सूत्र-संख्या

२२३. दळ्हं, दह = दाहे, ह = दृढ
 ५६. दाठा, दंस; डंस = दंसने, ड = दाढ़
 १. दारु, दर = दरणे, णु = लकड़ी
 १०१. दारुणो, दर = विदारणे, कुन = कर्कश
 १०३. दिनं, दा = दाने, इन = दिन
 २१८. दिवसो, दिव = कीळाविजिगिसावोहारज्जुतिथुतिगतिसु, सक् = दिन
 १०५. दीनो, दी = खये, नक् = दीन
 ६. दुद्धु, ठा = गतिनिवत्तियं, कु = बुरा
 ७२. दुहिता, दुह = अप्पूरणे, तु = वेटी
 ८३. दूतो, दू = परितापे, तक् = दूत
 १४४. दूरं, दु = गमने, रक् = दूर
 ५३. देवटो, देव = देवने (पूजने) अट = ऋषि
 १५६. देवरो, दिव = कीळादिनु, अर = देवर
 ६५. दोणो, दु = गमने, ण = द्रोण
 ६१. दोणि-दोणी, दु = गमने, णि = नाव
 १८८. दोला, दु = परितापे, ल = हिंडोला
 २. धनु, धन = सद्दे, उ = धनुष
 ११२. धमनि-धमनी, धम = सद्दे, अनि = सिरा
 १३६. धम्मो, धर = धारणे, म = धर्म
 ६२. धरणि, धर = धारणे, अणि = पृथ्वी
 ७२. धातु, धा = धारणे, तु = धातु
 १०६. धाना, धा = धारणे, न = भूजा
 ७२. धीता, धा = धारणे, तु = वेटी
 १४५. धीरो, धा = धारणे, रक् = धैर्य्य
 १५४. धीवरो, धा = धारणे, ववर = मल्लाह
 १३४. धूमो, धू = कम्पने, मक् = धूंआ
 १५८. धूसरो, धू = कम्पने, सर = धूसर

ण्वादि

सूत्र-संख्या

१११. घेनु, घा = धारणे, नुक् = गी
 ७२. नत्ता, नह = व्रन्थने, तु = नाती
 ७६. नन्दन्ती, नन्द = समिद्धियं, अन्त = सखी
 १८. नरको, नर = नये, अक = नरक
 १०. नाभि, नभ = हिंसायं, इण् नाभी
 ३१. निक्खो, कन = दित्तिगतिकन्तिसु, ख = निष्क
 १६३. निच्चुलो, चि = चये, कुल = एक गाछ
 ३८. निदाघो, दह = भस्मीकरणे, घ = ग्रीष्म
 ६६. निद्दा, निन्द = गरहायं, दक् = निद्रा
 १३६. निमि, नी = पापुणने, मि = एक राजा
 १२२. निम्बो, नम = नमने, व = नीम
 १६८. निल्लि, निल्ली, नीलि, नीली, नी = नये, लि = वृक्षविशेष
 ६१. निस्सेणि, निस्सेणी, सि = सेवायं, णि = निसेनी
 ११६. नीपो, नी = नये, पक् = वृक्ष
 १४३. नीरं, नी = पापुणने, रक = जल
 १५४. नीवरं, नी = पापुणने, क्वर = धर
 ८४. नेत्तं, नी = पापुणने, तक् = अंग्र
 ८४. नेता, नी = पापुणने, तक् = नेता
 १३८. नेमि, नी = पापुणने, मि = चक्के की परिधि
 १७७. नेरु, नी = नये, रु = सुमेरु पहाड़
 १५. पङ्को, कम्प = चलने, क = कीचड़
 २२७. पङ्गुळो, लञ्ज = गतिवेकल्ले, लक् = लंगड़ा
 ७६. पचतो, पच = पाके, अत = रसोदया
 ४१. पच्छि, पस = नाथने, छिक् = खाँची, डाली
 १०७. पज्जुत्तो, पद = गमने, न = इन्द्र; मेघ
 ३३. पटगो-पटङ्गो, पत; पय = गमने, गक् = फतिङ्गा
 १८२. पटलं, पट = गमने, अल = समूह

ष्वादि

सूत्र-संख्या

२२३. पटहो, पट=गमने, ह=एक वाजा
 २. पटु, पट=गमने, उ=दक्ष, पटु
 १६४. पटोलो, पट=गमने, ओल=एक सब्जी
 १३३. पठमं, पठ=उच्चारणे, अम=प्रथम् श्रेष्ठ
 १६६. पणवो, पण=व्यवहारत्युतिसु, अव=एक तरह का ढोल
 ६५. पणो, पण=व्यवहारत्युतिसु, ण=पत्ता
 २२४. पण्ह, पण=व्यवहारत्युतिसु, हि=एँड़ी
 १६. पत्ताका, पत; पय=गमने, आक=ध्वजा
 ६६. पति, पा=रक्खने, अति=पति
 १०८. पत्तनं, पत; पय=गमने, तन=नगर
 १३०. पटुमं, पद=गमने, कुम=कमल
 २१७. पनसो, पन=थुतियं, अस=काटहल
 २१५. पप्फासं, फाय=बुद्धियं, सक्=फुत्तफुत्त
 ६. पभङ्गु, भज्ज=ओमहने, कु=अंकुर
 २२२. पाम्हं, अम; गम=गमने, ह=प्रमुग्घ
 १८६. पलालं, पल=गमने, काल=पुआर
 ८४. पलितं, पाल=रक्खने, तक=वाल का पकना
 १८२. पल्ललं, पल्ल=गमने, अल=जलाशय
 १६६. पल्लवं, पल्ल=गमने, अव=पल्लव
 १६८. पल्लि, पाल=रक्खने, लि=कुटी; छोटी वस्ती
 २. पसु, पस=वाघने, उ=चीपाय
 १७२. पसूरो, पस=वाघने, ऊर=दूर, व्यञ्जन
 २. पंसु, पंस=नासने, उ=घूलि
 १८४. पाटलं, पत, पय=गमने, कल=फल
 १०. पाणि, पण=व्यवहारत्युतिसु, इण्=हाथ
 १८७. पातालं, पत, पय=गमने, णाल=रसातल
 २४. पाटुका, पद=गमने, णुक=खड़ाउं

ण्वादि

सूत्र-संख्या

११४. पापं, पा = रक्त्वने, प = अकुशल कर्म
 १६८. पालि-पाली, पाल = रक्त्वने, लि = पक्ति, बुद्ध-वचन, मूल
 २२८. पाळि, पा = रक्त्वने, ळि = तन्ति भाषा
 २०. पिञ्जा को, पण = व्यवहारत्युतिसु, आक = तिल का पीना, खरी
 १६२. पिठरो, पच = पाके, अर = पकाने का वर्तन
 ७२. पिता, पा = रक्त्वने, तु = पिता
 २०. पिनाको, पा = पाने, आक = शिवजी का धनुष
 १८६. पियाल्पे, पी = नप्पने, काल = एक फल
 २१५. पीयूत्तं, पी = तप्पने, सक् = अमृत
 १५३. पीवरं, पी = तप्पने, वर = स्थूल
 ४४. पुच्छो, पुत्त = पोसने, छ = पूँछ
 ५०. पुञ्जं, पुण = कम्मनि चुभे, ज = कुशल कर्म
 ८३. पुत्तो, पुत्त = पोसने, तक् = पुत्र
 ५. पुयु, पुय; पय = वित्यारे, कु = फलाव
 १५. पुयुको, पुय; पय = वित्यारे, क = अन्न
 १६२. पुयुलो, पुय, पय = वित्यारे, कुल = विस्तृत
 २०६. पुरिसो, पूर = पूरणे, किस = आदमी
 २११. पुरीसं, पूर = पूरणे, ईस = गृह
 ६६. पुलिन्दो, पुल = महत्तहिंसाभाणेषु, दक् = एक नीच जाति
 २१५. पुत्तं, पुत्त = पोसने, सक = एक फल
 ११६. पूपो, पू = पवने, पक् = पूआ
 ६८. पूरणो, पूर = पूरणे, अण = पूरा करने वाला
 १६६. पेलवो, पिल = वत्तने, अव = पतला
 १८८. पेलो, पी = तप्पने, ल = बेंत की बनी डलिया
 १८२. पेसलो, पिस = गमने, अल = प्रियशील
 २२५. पेळा, पी = तप्पने, ळ = पेड़ा
 १६८. पीक्खरं, पुत्त = पोसने, खर = कमल

प्वादि

सूत्र-संख्या

८२. पोतो, पू = पवने, त = वच्चा
२१५. फस्सो, फुस = सम्फस्से, सक् = स्पर्श
५६. फुट्ठो, फुस = सम्फस्से, ठ = स्पर्श
३३. फुलिङ्गो, फुट = चलने, गक् = चिनगारी
२१५. फुस्सो, फुस = सम्फस्से, सक् = एक नक्षत्र
३६. फेगु, फल = निष्फत्तियं, गु = असार
१६०. वदरं-वदरो, वद = वचने, अर = वर का फल
१४६. वधिरो, वध = वाधने, कीर = वहरा
२. वन्धु, वन्ध = वन्धने, उ = वन्धु
११७. वप्पो, वम = उगिरणे, पक् = आंमू
१६. वलाका, वल = पाणने, आक = एक पक्षी
७. वलि, वल = पाणने, इ = सिकुइन
१८४. वहलं, वह = बुद्धियं, कल = घना
२. वहु, वह = बुद्धियं, उ = बहुत
२१५. बळिसो, बल = संवरणे, सक् = वंसी
६. बाहु, वह = पापुणने; अथवा बाध = विवाधायं, कु = भुजा
२२३. बाळ्हं, वह = बुद्धियं, ह = दृढ, बहुत अधिक
६. विन्दु, विद = लाभे, कु = स्वल्प
१२२. विम्बं, वम = उगिरणे, ब = शरीर
१८६. विळालो, बल = पाणने, काल = विलाव
६६. बुन्दो, बु = संवलणे, दक् = मूल, जड़, वृक्ष का मूल
२०२. बेलुवो, बिल = भेजने, णुव = एक लता
३६. भगु, भर = भरणे, गु = एक ऋषि
७६. भदन्तो, भद् = कल्याणे, अन्त = प्रव्रजित
१४६. भंद्र, भद् = कल्याणे, रक् = सुन्दर
१५६. भमरो, भम = अनवट्टाने, अर = भौरा
२. भमु, भम = अनवट्टाने, उ = भौं

ण्वादि

सूत्र-संख्या

१६. भयानकी, भी = भये, आनक = भयानक
 ७६. भरतो, भर = भरणे, अत = नर्तक
 २. भरु, भर = भरणे, उ = पति
 १४६. भस्त्रा, भस = भस्मीकरणे, रक = भाथी
 १३७. भस्मं, भस = भस्मीकरणे, म = राख
 ६३. भाणु, भा = दित्तियं, णु = किरण
 ७२. भाता, भा = दित्तियं, तु = भाई
 ११०. भानु, भा = दित्तियं, नुक् = सूरज
 ११. भावी, भू = सत्तायं, ईण् = होने वाला
 २. भिक्खु, भिक्ख = याचने, उ = श्रमण
 १६६. भिङ्कारो, भर = भरणे, आर = सोने की भारी
 ३३. भिङ्गो, भम = अनवट्टाने, गक् = भीरा
 १५. भीको, भी = भये, क = भीरु
 १३५. भीमो, भी = भये, मक् = भयानक
 १७६. भीरु, भी = भये, रुक् = भयानक (?) डरपोक
 १३५. भीसनो, भी = भये, रीसनो = भयानक
 २१५. भुसं, भू = सत्तायं, सक् = भुस्सा
 ४. भू, भम = अनवट्टाने, ऊ = भीं
 १३६. भूमि, भू = सत्तायं, मि = पृथ्वी
 १७६. भूरि, भू = सत्तायं, रिक् = बहुत
 १७६. भूरी, भू = सत्तायं, रिक् = मेघा
 १४. भेको, भी = भये, क = मेढक
 १४६. भेरी, भी = भये, रक् = भेरी
 १३७. भेस्मा, भी = भये, म = भयानक
 ५४. मकुटं, मङ्क = मण्डने, उट = मुकुट
 १४८. मकुरो, मङ्क = मण्डने, उर = आइना, रथ, मछली
 २२७. मकुळो, मङ्क = मण्डने, लक् = कली

ण्वादि

सूत्र-संख्या

३८. मघा, मह्=पूजार्य, घ=मघा नक्षत्र
 १८२. मङ्गलं, मङ्ग=मङ्गल्ये, अल=मङ्गल
 १४८. मङ्गुरो, मङ्ग=मङ्गल्ये, उर=एक तरह की मछली
 ४०. मच्चु, मर=पाणचागे, चु=मृत्यु
 ४०. मच्चो, मर=पाणचागे, चो=मनुष्य
 ४३. मच्छो, मस=आमसने, छ=मछली
 १५७. मच्छेरं, मच्छेरं, मस=आमसने, छर, छेर=मात्सर्यं
 १६४. मज्जारो, मज्ज=संसुद्धियं, आर=विलाव
 ४६. मज्जु, मन=बाणे, जु=मज्जुल
 २१५. मज्जूसा, मन=बाणे, सक्=बक्सा
 ८. मणि, मन=बाणे, इ=मणि
 ५८. मण्डो, मन=बाणे, ड=मांड
 ११६. मण्डपो, मण्ड=भूसने, अप=मण्डप
 १८२. मण्डलं, मण्ड=भूसने, अल=गोलाकार
 २५. मण्डूको, मण्ड=भूसने, णुक=मेढक
 ८१. मत्तं, मा=माने, अत्त=मात्र
 १५. मत्थकं, मस=आमसने, क=माथा
 ८६. मत्थु, मस=आमसने, थु=मट्टा
 १४७. मथुरा, मथः मत्थ=विलोळने, उर=एक शहर
 १४६. मदिरा, मद=उम्मादे, किर=शराब
 ६५. मद्दो, मद=हासे, दक्=एक जनपद
 ६. मधु, मन=बाणे, कु=मधु
 २६. मधुको, मन=बाणे, णुक=वृक्ष
 २. मनु, मन=बाणे, उ=प्रजापति; महासम्मत्
 ६६. मन्दो, मन=बाणे, दक्=मढ़
 १५६. मन्दरो, मन्द=मोदनत्थुतिजळत्तेसु, अर=एक पर्वत
 १४६. मन्दिरं, मन्द=मोदनत्थुतिजळत्तेसु, किर=घर

ण्वादि

सूत्र-संख्या

१४०. मन्दुरा, मन्द = मोदनत्युतिजळत्तेसु, उर = अस्तबल
 १३६. मम्मं, मर = पाणचागे, म = मर्मस्थान
 १५२. मम्मरो, मर = पाणचागे, मर = मर्मर शब्द
 ३१. मयूखो, मय = गर्मने, ख = किरण
 ४०. मरीचि, मर = पाणचागे, ईचि = किरण
 २. मरु, मर = पाणचागे, उ = देव
 ७. मसि, मस = आमसने, इ = राख
 १७१. मसूरो, मस = आमसने, ऊर = एक दाल
 २१६. मस्सु, मस = आमसने, सु = दाढी
 २२. महिका, मह = पूजायं, किक = हिम
 १८६. महिला, मह = पूजायं, इल = स्त्री
 २१५. महेंसी, मह = पूजायं, सक् = पटरानी
 १७४. महोरो, मह = पूजायं, ओर = वल्मीक
 २१३. मंसं, मन = जाणे, स = मांस
 ७२. नाता, पा = पाने, तु = मां
 २०२. मालुवा, मल, मल्ल = धारणे, णुव = एक लता (अमरवेल)
 २२५. माळो, मा = माने, ळ = एक कूट वाला
 ८३. मित्तो, मिद् = स्नेहने, तक = मित्र
 १६१. मिथिला, मय, मन्य = विलोळने, किल = एक जनपद
 १०१. मियुनं, मिथ = सङ्गमे, कुन = जोड़ा
 ८४. मिहितं, मिह = ईसंहसने, तक = मुस्कराहट
 १०५. मीनो, मी = हिंसायं, नक् = मछली
 १४४. मीरो, मि = पक्खेपने, रक् = समुद्र
 २२३. मीळ्हं, मील = निमीलने, ह = गूह
 ३१. मुखं, मू = बन्धने, ख = मुंह
 ३२. मुग्गो, मुद = तोसे, गक् = मूंग
 ५६. मुण्डो, मन = जाणे, ड = शिर मुड़ाया हुआ

ण्वादि

सूत्र-संख्या

२००. मुत्तवो, मू=वन्धने, अत्र=चण्डाल
 ८४. मुत्तं, मिह=सेचने, तक्=मूत्र
 ५. मुद्दु, मुद=तोसे=नरम
 ९५. मुद्दा, मुद=तोसे, दक्=अंगूठी
 २२. मुद्दिका, मुद=तोसे, किक=अंगूठी
 ९९. मुद्धा, मुद=तोसे, ध=शिर
 ८. मुनि, मन=जाणे, इ=श्रमण
 २००. मुरवो, मुर=संवेठने, अत्र=मृदङ्ग
 १८३. मुसलो, मुस=खण्डने, कल=अयोग्य
 १८६. मुळालं, मील=निभीलने, काल=मृणाल
 २१. मूसिको, मुस=धेय्ये=चूहा
 ३८. मेघो, मिह=सेचने, घ=मेघ, वादल
 १७७. मेरु, मी=हिसायं, रु=मेरु पर्वत
 २२५. मेळा, मि=पक्खेपे, ल=राख
 ३८. मोघो, मुह=मुच्छायं, घ=निकम्मा
 १७४. मोरो, मी=हिसायं, ओर=मोर
 ३१. यक्खो, यस=पयतने, ख=यक्ष
 ७९. यजतो, यज=देवपूजायं, अत्र=अग्नि
 २. यजु, यज=देवपूजायं, उ=एक वेद
 ४९. यञ्जो, यज=देवपूजासंगतिकरणदानेसु, न=यज्ञ
 १०१. यमुना, यम=उपरमे, कुन=एक नदी
 २१७. यवसो, यु=मिस्सने, अस=तृणविशेष
 ३५. यागु, या=पापुणने, गु=यवागू
 १४६. यात्रा, या=पापुणने, रक्=यात्रा
 १३६. यामो, या=पापुणने, म=दिन का छठा या आठवाँ भाग
 ८८. यूथो, यु=मिस्सने, थक्=भुण्ड
 ११५. यूपो, थु=मिस्सने, प=यज्ञ की लाठ

ण्वादि

सूत्र-संख्या

८२. थोत्तं, युज = संयमने, त = रस्ती
 ११३. योनि, यु = मिस्तने, नि = भग-इन्द्रिय
 ६. रघु, रङ्घ = गमने, कु = एक राजा
 ७६. रजतं, रञ्ज = रागे, अत = चाँदी
 १०७. रजनी, रञ्ज = रागे, न = रात
 ४६. रज्जु, रुघ = आवरणे, जु = रस्ती
 ५८. रण्डा, रम = कीळायं, ड = विधवा
 १०६. रतनं, रम = कीळायं, तनक् = रत्न
 ८७. रथो, रम = कीळायं, थक् = रथ
 ९८. रन्धं, रम = कीळायं, ध = विल
 ६८. रवणो, रु = सद्दे, अण = कोयल
 ७. रवि, रु = सद्दे, इ = सूरज
 १३६. रस्मि, रस = अस्सादने, मि = किरण
 ७. राजि, राज = दित्तियं, इ = पक्ति
 १२६. रासभो, रास = सद्दे, कभ = गदहा
 १०. रासि, रस = अस्सादने, इण् = समूह
 १. राहु, रह = चागे, णु = इस नाम का असुरेन्द्र
 ६. रिपु, रप = वचने, कु = शत्रु
 ३१. रुक्खो, रुह = जनने, ख = वृक्ष
 ६. रुचि, रुच = दित्तियं, कि = अभिलापा
 १४६. रुचिरं, रुच = दित्तियं, किर = सुन्दर
 ६५. रुदो, रुद = अस्तुविमोचने, दक् = रुद
 १४६. रुधिरं, रुध = आवरणे, किर = लहू
 १७६. रुह, रु = सद्दे, रुक् = मिगो
 ७६. रुहन्तो, रुह = जनने, अन्त = वृक्ष
 १४६. रुहिरं, रुह = जनने, किर = लहू
 ११७. रूपं, रूप = रूपने, पक् = रूप

ण्वादि

सूत्र-संख्या

६३. रेणु, री=पस्सवने, णु=बूलि
 ७६. रोदन्ती, रुद=रोदने, अन्त=एक औपधि
 १२. लक्खी, लक्ख=दस्सने, ई=लक्ष्मी
 ६. लघु, लङ्घ=गतिसोसनेसु, कु=हलका
 ५८. लण्डो, लम=हिसायं, ड=लेंड
 ६७. लवण, ली=सिलेसनद्रवीकरणेसु; लिह=अस्सादने, साद अस्सादने,
 क्लेद=अद्भावे, णक=नमक
 ६. लघु, लङ्घ=गतिसोखनेसु, कु=हलका
 ६५. लुट्ठो, रुद=अस्सुविमोचने, दक्=वहेलिया
 ६५. लेणं, ली=निलीयने, ण=गुहा
 ६७. लोणं, ली=लिह=साद=क्लेदानं लोआदेसे रूपं, णक=नमक
 १३६. लोमं, लू=च्छेदने, म=रोआ
 २२३. लोहं, लू=च्छेदने, ह=लोहा
 १४. वक्कं, कुकः वक=आदाने, क=वृक्क (Kidney)
 ३२. वग्गो, अज, वज=गमने, गक्=समूह
 ३५. वग्गु, वल् वल्ल=संवरणे, गु=मनोज्ञ
 ३६. वच्चं, वर=वरणसम्भत्तिसु, च=गूह
 ४३. वच्छो, वद=वचने, छ=वत्स
 १५६. वच्छरो, वस=निवासे, छर=वरस
 १४६. वजिरं, अज, वज=गमने, किर=वज्र
 ४८. वज्झो, वज्झा, वन=याचने, भक्=वार्भ
 १३१. वट्ठमं, अज, वज=गमने, कुम=मार्ग
 १६२. वट्ठलो, वट्ठ=वट्टने, कुल=परिमण्डल
 १६१. वठरो, वद=वचने, अर=मूर्ख
 ६५. वण्णो, वर=वरणे, ण=रंग
 ८३. वत्तं, वर=वरणसम्भत्तिसु, तक्=व्रत
 ११२. वत्तनि, वत्त=वत्तने, अदि=मार्ग

ण्वादि

सूत्र-संख्या

११२. वत्तनी, वत्त=वत्तने, अति=मार्ग
 ६०. वत्थि, वस=निवासे, थि=पेडू
 ८६. वत्थु, वस=निवासे, थु=वस्तु
 ३. वधू, वन्ध=वन्धने, ऊ=वहू
 ११४. वप्पो, वप=वीजनिकक्षेपे, प=क्षेत
 १५. वम्मिको, वम=उगिरणे, क=दीयङ्
 १८. वरको, वर=वरणसम्भत्तिमु, अक=धान्य विशेष
 ६८. वरणो, वर=वरणे, अण=चहार दिवारी
 ५७. वरण्डो, वर=वरणे, अण्ड=मुखरोग
 ८१. वरत्तं, वर=वरणे, अत्त=रत्ती लगाम
 २२३. वराहो, वर=वरणे, ह=सूअर
 १०१. वरणो, वर=वरणसम्भत्तिमु, कुन=वरुण
 ७. वलि-वली, वल; वल्ल=संवरणे, इ=सिकुड़न
 १२४. वल्लभो, वल, वल्ल=संवरणे, अभ=प्रिय
 ७. वल्लि, वल्ली, वल, वल्ल=संवरणे, इ=लता
 १७१. वल्लूरो, वल; वल्ल=संवरणे, ऊर=सूखा मांस
 ६६. वसति, वस=निवासे, अति=वर, वस्ती
 ७६. वसन्तो, वस=निवासे, अन्त=वसन्त ऋतु
 १२४. वसभो, वस=निवासे, अभ=त्रैल
 १८२. वसलो, वस=निवासे, अल=गूद्र
 २. वसु, वस=निवासे, उ=धन
 २१३. वस्सं, -वस=निवासे, स=वर्ष
 २१३. वंसो, वनः सन=सम्भत्तियं, स=वंश, वांस
 २००. वळवा, वल, वल्ल=संवरणे, अव=अश्वराज
 १४. वाको, वा=गतिवन्धनेसु, क=वल्कल
 १६३. वाकरा, कुकः वक=आदाने, अरण्=जाल
 ८२. वातो, वीः वा=गमने, त=हवा

ण्वादि

सूत्र-संख्या

१०६. वानं, वी, वा = गमने, न = तृष्णा
 १०. वापि, वप = वीजनिक्लेपे, इण् = कूंआ
 २१८. वायसो, अय = वय = पय = मय = रय = नय गमनत्या, असण् = कौआ
 १. वायु, वा = गतिवन्धनेसु, णु = हवा
 १०. वारि, वर = वरणसम्भत्तिसु, इण् = जल
 १५८. वासरो, वी : वा = गमने, सर = दिन
 १०. वासि, वस = निवासे, इण् = वसुला
 २२५. वाळो, वी; वा = गमने, ळ = जंगली जान
 १४६. विचित्रं, चित = संचेतने, रक् = विचित्र
 २१. विच्छिको, विच्छ = गमने, किक = विच्छू
 ४८. विज्झो, वन = याचने, भक् = एक पर्वत
 ११६. विटपो, वट = वेठने, अय = डाली
 ८३. वित्तं, विद = लाभे, तक् = धन
 २०. विदाको, विद = भाणे, आक् = पण्डित
 २२०. विद्दस्सु, विद = भाणे, दसुक् = पण्डित
 ६६. विद्धं, विध = वेधने, ध = निर्मल
 २०५. विट्ठा, विद = भाणे, क्वा = पण्डित
 ५. विधु, विध = वेधने, कु = चाँद
 १४८. विधुरो, विध = वेधने, उर = रंडुआ
 १०३. विपिनं, वप = वीजनिक्लेपे, इन = जंगल
 ११७. विप्पो, वप = वीजनिक्लेपे, पक् = ब्राह्मण
 १८६. विसालो, विस = प्पवेसने, काल = विशाल
 ३१. विसिखा, सि = सेवायं; विस = प्पवेसने, ख = गली
 ६६. वीणा, वी = तन्तसन्ताने, णक् = वीणा
 ६१. वीथि, वी; वा = गमने, थिक् = गली
 १४३. वीरो, वी, वा = गमने, रक् = वीर
 ६१. वेणि-वेणी, वी = तन्तसन्ताने, णि = जूरा

ण्वादि

सूत्र-संख्या

६३. वेणु, वी, वा = गमने, णु = वाँस
 १०८. वेतनं, वी, वा = गमने, तन = वेतन
 २१७. वेतसो, वेत = सुत्तियोधातु, अस = वेंत
 १०६. वेनो, वी; वा = गमने, न = एक नीच जाति
 १३६. वेमो, वी = तन्तसन्ताने, म = करघा
 १३७. वेस्मं, विस = प्पवेसने म = घर
 २२६. वेळु, वी, वमने, लु = वाँस
 ५३. सकटो, सक = सत्तियं, अट = गाड़ी
 १८२. सकलं, यक = सत्तियं, अल = सारा
 १०१. सकुणो-सकुणी, सक = सत्तियं, कुन = पक्षी
 १०१. सकुनो-सकुनी, सक = सत्तियं, कुन = पक्षी
 ७४. सकुन्तो, सक = सत्तियं, उन्त = पक्षी
 १४. सक्को, सक = सत्तियं, क = इन्द्र
 १६८. सक्खरा, सर = गतिहिंसाचिन्तासु, खर = सक्कर
 ३१. सखो, सह = मरिसने, ख = मित्र
 २. सङ्कु, सङ्क = सङ्कायं, उ = शूल
 ३०. सङ्खो, सम = उपसमखेदेसु, ख = शङ्ख
 ३६. सच्चं, सर = गतिहिंसाचिन्तासु, च = सत्य
 ४८. सज्झं, सज्झ = सङ्गे, झक् = रजत
 १८६. सठिलो, सठ = केतवे, इल = शठ
 ५८. सण्डं, सम = उपसमे, ड = समूह
 ७०. सत्तु, सच = समवासे, तु = सत्तु
 ६०. सत्थिय, सक = सत्तियं, थि = जाँघ
 ६५. सट्ठो, सप = गमने, दक् = शब्द
 ८५. सपयो, सप = प्रक्कोसे, अय = कसम
 ७. सप्पि, सप्प = गमने, इ = घी
 १८२. सम्बलं, सम्ब = मण्डने, अल = पाथेय, राह-खरच

ण्वादि

सूत्र-संख्या

१५. सम्बुको, सम्ब=मण्डने, क=एक जल-जन्तु
 १३६. सम्मा, सम=उपसमे, म=यथार्थ, ठीक तरह
 १८. सरको, सर=गतिर्हिंसाचिन्तासु, अक=प्याला
 ६२. सरणि, सर=गतिर्हिंसा चिन्तासु, अणि=मार्ग
 १२४. सरभो, सर=गतिर्हिंसाचिन्तासु, अभ=एक मृग
 ४. सरभू, सर=गतिर्हिंसाचिन्तासु, ऊ=एक नदी
 २०१. सरावो, सर=गतिर्हिंसाचिन्तासु, आक्=प्याला
 १६६. सरीरं, सर गतिर्हिंसाचिन्तासु, कीर=शरीर
 १२४. सलभो, पिलु=प्लु=हुल—गमनत्था, अभ=फर्तिगा
 २०. सलाका, पिलु=हुल-गमनत्था, आक=वैद्यो के चीर-फाड़ का एक औजार
 १८६. सलिलं, पिलु=हुल-गमनत्था, इल=जल
 ७६. सवन्ती, सू=पसवे, अन्त=नदी
 १४७. ससुरो, सस=गति हिंसापाणनेसु, उर=ससुर
 २१३. सस्सं, सस=गतिर्हिंसापाणनेसु, स=धान
 २१६. सस्सु, सस=गतिर्हिंसापाणनेसु, सु=सास
 १५६. संवच्छरो, वस=निवासे, छर=वर्ष
 १५४. संवरी, सम=उपसमे, ववर=रात
 १. साडु, सद=अस्सादने, णु=स्वादु
 १. साधु, इध=सिध=राघ=साध-संसिद्धियं, णु=साधु
 १. सानु, वन, सन=सम्मत्तियं, णु=चोरी
 १३६. सामो, सा=तनुकरणावसानेसु, म=काल
 २०. सामाको, सा=तनुकरणावसानेसु, आक=तृणधान्य
 ६२. सारथि, सर=गतिर्हिंसाचिन्तासु, रथिण्=सारथि
 २५. सालूकं, सल=गमनत्थोदण्डकोधातु, णुक=उत्पल कन्द
 ११८. सासपो, सास=अनुसिद्धियं, अप=सरसो
 २००. साळवो, सल=गमने, अव=एक खाद्य
 १५. सिक्का, सक=सत्तियं, क=उपकरण विशेष

प्वादि

सूत्र-संख्या

५६. सिखण्डो, सि=सेवायं, ड=चोरी
 ३१. सिखा, सि=सेवायं; सी=सये, ख=शिखा
 ३३. सिङ्गं, सी=सये, गक्=सींग
 १६४. सिङ्गरो, सिङ्गि=नामधातु, झार=शृङ्गार
 १८६. सिङ्गलो-सिगालो, सर=गतिहिंसाचिन्तासु, काल=सियार
 १७. सिङ्घाणिका, सिङ्घ=घायने, आणिक=पोटा
 ८३. सितो, सि=सेवायं, तक=उजला
 ८४. सितं, मिह=ईसंहसने, तक्=मुस्कुराहट
 ८८. सित्यं, सिच=क्वरणे, थक्=मोम
 १६१. शियिलं, सह=जमायं, किल=पूथिल
 १७८. सिनेरु, सिना=सोचेय्ये, एरु=मुमेरु पर्वत
 ६. सिन्धु, सन्द=पस्सवने, यु=एक नदी
 ११७. सिष्पं, सप=गमने, पक्=शिल्प
 २२. सिष्पिका, सप्प=गमने, किक=सीपी
 १४३. सिरो, सि=सेवायं, रक्=शिर
 १४३. सिरा, सि=वन्धने, रक्=नाड़ी
 २११. सिरीसो, सर=गतिहिंसाचिन्तासु, ईस=वृक्ष
 १८१. सिला, सि=सेवायं, लक्=शिला
 १३१. सिलेसुमो, सिलिस=आलिङ्गने, कुम=कफ
 २०७. सिवो, सम=उपसमे, रिद=धिव, सिवं=शान्ति, सिवा
 १५०. सिसिरो, इस, सिस=इच्छायं, किर=एक ऋतु
 ३८. सीघं, सी=सये, घ=शीघ्र
 ८४. सीता, सि=वन्धने, तक्=हल की जोत
 १००. सीधु, सी=सये, धुक्=एक प्रकार की सुरा
 ७७. सीमन्तो, सी=सये, अन्त=मांग (केश की रेखा)
 १४३. सीरो, सी=सये, रक्=फाल
 २१४. सीसं, सी=सये, सक्=शिर, सीसा

ण्वादि

सूत्र-संख्या

२२१. सीहो, सस = गति-हिंसा-गणनेसु, रीह = सिंह
 १५. सुदकं, सुच = सोके, क = उजला
 १३०. सुखुमं, सुख = तक्रियायं, कुम = सूक्ष्म
 ६. सुचि, सुच = सूचने, कि = पवित्र
 ६. सुट्ठु, ठा = गतिनिवर्तियं, कु = अच्छा
 ६६. सुणो, सु = सवने, णक् = कुत्ता
 २१६. सुणिसा, सु = सवने, णिसक् = पतोह
 ६५. सुदो, सूद = खरणे, दक् = गूद्र
 १०३. सुपिन, सुप = सये, इन = नींद, सपना
 ११६. सुप्पं, सुप = सये, पक् = सूप
 १४३. सुरा, सु = सवने, रक् = देवता
 १४३. सुरा, सु = सवने, रक् = मदिरा
 १४२. सुरियो, सर = गति-हिंसा-चिन्तानु, य = सूरज
 २०४. सूवो, सु = सवने, वव = सुग्गा
 २०४. सुवा, सु = सवने, ववा = सुग्गा
 ६. सुसु, सस = गति-हिंसा-गणनेसु, कु = शिशु
 ११०. सूनु, सू = पसवे, नुक् = पुत्र
 ११६. सूपो, सू = पसवे, पक् = व्यञ्जन
 ८४. सूरतो, रम = कीढायं, तक् = मुख संवास
 १७६. स्रि, सू = पसवे, रिक् = विचक्षण
 ६१. सेणि, सेणी, सि = सेवायं, णि = समान शिल्पियों का समूह (श्रेणि)
 ८२. सेतो, सि = सेवायं, त = उजला
 ७०. सेतु, सि = सेवायं, तु = पुल
 १०६. सेना, सि = वन्धने, न = सेना
 १०६. सेनो, सि = वन्धने, न = बाज
 १८१. सेलो, सि = सेवायं, लक् = पर्वत
 १८१. सेवालो, सि = सेवायं, वाल = सेवाट

ण्वादि

सूत्र-संख्या

६५. सोणो, सु = सवने, ण = कुत्ता, मनुष्य
 ६१. सोणि, सु = पसवे, णि = चूतड़
 ८२. सोतं, सु = सवने, त = कान
 १२६. सोढ्भं, सिद = सीदने, भ = दरार
 १२६. सोढ्भो, सिद = सीदने, भ = एक जलाशय
 १३६. सोमो, सु = सवने, म = चांद
 ८८. हत्यो, हस = हसने, थक् = हाथ
 १४२. हदयं, हर = हरणे, य = हृदय
 २. हनु, हन = हिंसायं, उ = ठुड्डी
 १४२. हम्मियं, हर = हरणे, य = प्रासाद
 ६७. हरिणो, हर = हरणे, ण = मृग
 ७८. हरितो, हर = हरणे, इत = हरा रंग
 ६४. हरेणु, हर = हरणे, णु = गन्ध-द्रव्य
 २१३. हंसो, हन = हिंसायं, स = हंस
 १५. हाको, हा = चागे, क = क्रोध
 १०. हारि, हर = हरणे, इण् = मनोज्ञ
 ३६. हिङ्गु, हि = गतियं, गु = हींग
 १३४. हिमं, हि = गतियं, मक् = हिम, पाला
 ५१. हिरञ्जं, हा = चागे, ञ = धन, सोना
 १०७. हीनो, हि = गतियं, न = हीन
 १४४. हीरं, हि = गतियं, रक् = हीरा
 ७०. हेतु, हि = गतियं, तु = कारण
 १३६. हेमं, हि = गतियं, म = सुवर्ण, सोना
 ७७. हेमन्तो, हि = गतियं, अन्त = हेमन्त-ऋतु
 ७२. होता, हु = हवने, तु = हवन करने वाला
 १३६. होमो, हु = हवने, म = होम
 ५३. भक्कटो भक्क = सुत्तियो धातु (श्रीत धातु), अट = वानर
 १८८. माला, मा = माने, ल = माला

नवाँ परिशिष्ट

उदाहृत पदों की अनुक्रमणिका

नवाँ परिशिष्ट

उदाहृत पदों की अनुक्रमणिका

अ		पृष्ठ संख्या	अनुक्रमणिका	पृष्ठ संख्या
			अगच्छि	८६
			अगमा	८४, ८६
अकरम्मस ते	..	०२६	अगमि	८६
अकरि	..	८५, ८६	अगा	८६
अकरित्थ	..	८५	अगा पच्चता	२७५
अकरिम्हा	..	८५	अगा कत्था	२७५
अकरिस्सा	..	६४, १८८	अगमकत्तायति	२२६
अका	..	८६	अग्गि	२६, १०१
अकासि	..	८६	अग्गिनि	१०१
अकामित्थ	..	८५	अग्गी (०+यो)	६
अकामिम्हा	..	८५	अग्गी हि	३
अकासि	..	८५	अघं	२०१
अकाहा	..	६४, १८८	अङ्गना	१६७
अक्कोच्छि	..	८६	अचेतनो हं पठवियं पपत	१८६
अक्कोसि	..	८६	अच्चङ्गुलं	२८४
अक्कवन्ति	..	२२६	अच्चयति	२०६
अक्कित्तकं	..	२५२	अच्चापयति	२०६
अक्कित्तको	..	२५२	अच्चापेति	२०६

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
अच्चेति ..	२०६	अञ्जिस्तं ..	५८
अच्छरियं ! अन्धो नाम पव्वतं		अञ्जिस्ता ..	५८
आरोहिस्ताति ..	६४	अट्टत्रं ..	१६६
अच्छानि जलानि पेय्यानि	१५१	अट्टमो ..	१७५
अच्छिन्दिस्सा ..	६४	अट्टादस ..	१६८
अच्छिन्दिसु ..	६४	अट्टादसन्नं ..	१६६
अच्छेच्छा ..	६४, १८८	अट्टायिस्सा ..	१८८
अद्धिन्दिस्सा ..	१८८	अट्ठी (नपुः० + यो)	५, ६
अजानि ..	६५	अट्ठीनि (० + यो)	४, ६
अजिनम्हि मिंगं हञ्जाति	३२	अड्ढतियो ..	१७६
अजेळकं ..	२७६	अड्ढट्ठो ..	१७६
अजेळका ..	२७६	अड्ढरत्तं ..	२८५
अज्ज ..	२१८	अड्ढि ..	८६
अज्जतनी वुत्ति ..	१६२	अडंसि ..	८६
अज्जतनो ..	२६१	अणिमा ..	२०६
अज्जन्हो ..	२७६	अण्णवो ..	१६७
अज्जवं ..	२०६, २०५	अतिमञ्चो ..	२७५
अज्झत्तं ..	२२३, २२४	अतिरत्तो ..	२८५
अज्झापयति माणवकं वेदं	२१२	अतिलाभो ..	२७५
अज्झणमुत्तो ..	२२३, २२४	अतिवामोह ..	२७०
अञ्जं कोट्ठापेति ..	२१२	अतिसव्या ..	२०
अञ्जं भज्जापेति ..	२१२	अतिसभारद्वाजं ..	२७६
अञ्जं सन्थरापेति ..	२१२	अतिहृत्थयति ..	२३६, २३७
अञ्जदा ..	२१७	अतीतं नगरं (वि०)	१०; १५८
अञ्जमञ्जस्स भोजका	२७६	अतीतानि नगरानि	
अञ्जादिक्खो ..	२७७	(वि०) ..	१०, १५८
अञ्जादिसो ..	२७७	अतीता भूपा ..	१५८
अञ्जादो ..	२७७	अतीतो भूपो (वि०)	१०, १५८

		पृष्ठ संख्या			पृष्ठ संख्या
अतो	..	२१५	अधम्मिको	..	२५०
अतदत्यं	..	२२५	अघरुत्तरं	..	२७६
अत्तना	..	७६	अधिकरणं	..	२०८
अत्तनियं	..	२५८	अधिकरित्वा	..	१५५
अत्तनेनु	..	७५	अधिकिच्च	..	१५५
अत्तनेहि	..	७५	अधिच्च	..	१५५
अत्तनो	..	७६	अधित्थि	..	२६७
अत्तनोपदं	..	२३६	अधिपञ्जालेनु ब्रह्मदत्तो	..	१३६
अत्तत्स	..	७६	अधिपतियं	..	२०५
अत्तेनु	..	७५	अधिपतेय्यं	..	२०५
अत्तेहि	..	७५	अधियित्वा	..	१५५
अत्य	..	४७, १३१	अधुना	..	२१८
अत्यया	..	१६५	अयोगज्ञं	..	२६६
अत्थि	..	४७	अनकत्तातं	..	२७४
अत्थिको	..	१६५	अनादियित्वा	..	११८
अत्थिगीरा ब्राह्मणी	..	२६६	अनु उपानित्येरं विनयघरा	..	१३६
अत्थु	..	१३१	अनुगवं सकटं	..	२८५
अथ	..	२१६	अनुभविस्सति	..	१८१
अथा	..	८६	अनुभूयिस्सति	..	१८१
अथासि	..	८६	अनुमोदित्वा	..	१५४
अद्दं	..	६१	अनुमोदियान	..	१५४
अदेन्ति	..	११७	अनुयन्ति	..	२७०
अदस (भूत)	..	११८	अनुखं	..	२६८
अहं	..	११८	अनुहपं	..	२६८
अहा	..	११८	अनेकत्तं	..	२०३
अद्दुना	..	७८	अनेन	..	५६
अद्दुनो	..	७८	अनोकानं	..	२७४
			अन्ततो	..	२१६

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
अन्तरा च राजगहं अन्तरा		अपचुत्थ	८५
च नाळन्दं ..	३०, १३५	अपचुम्हा	८५
अन्तिमो ..	२६२	अपचू	८५, १८५
अन्तेवासी ..	२३६	अपचो	८५, १८५
अन्तोपासादं ..	२६९	अपपव्वतं वस्सिदेवो, अपपव्वता	२६८
अन्वद्धमासं ..	२६८	अप पाटलिपुत्तस्मा वुट्ठो देवो	१३८
अन्वभविस्सा ..	१८१	अपरज्जु	२१८
अन्वभूयिस्सा ..	१८१	अपरदक्खिणं	२१९
अपगतकालको ..	२६९	अपरन्हो	२७६
अपच ..	८५, १८५	अपरुत्तरं	२७९
अपचं ..	८५	अपादान	२७८
अपचंसु ..	८५	अपुनगेय्या गाथा	२७४
अपचा ..	८५, ८४, १८४	अप्फुटं	२२६
	१८५,	अन्नाहाणो	२७४
अपचि ..	१८५, ८५	अभविस्सा (हेणुहेणुमद्भूत)	६६, १८८
अपचित्थ ..	६४, ८५, १८५	अभिज्ज्हालु	१९६
अपचित्थो ..	८५, १८५	अभितो	२१६
अपचिम्ह ..	८५, १८५	अमित्थुतं	२७५
अपचिम्हा ..	६४, ८५	अभिनन्दुन्ति	२२७
अपचिस्स ..	८५, १८५	अभिन्दिस्सा	६४
अपचिस्सम्ह ..	८५, १८५	अभिभवित्वा	१५४
अपचिस्सम्हा ..	८५, १८५	अभिभायतनं	२२२
अपचिस्संसु ..	६४	अभिभू	२०१
अपचिस्सा ..	६४, ८४, ८५, १८५	अभिभूय	१५४
अपचिस्से ..	८५	अभिरुच्छि	८६
अपचिसु ..	८५	अभिरुहि	८६
अपची ..	८४, ८५, १८५	अभिवादयते गुरुं देवदत्तं	
अपचु ..	८५, १८५	देवदत्तेन वा	२१३

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
अभितेको ..	२७५	अम्हादी ..	२७७
अभिहृष्टं ..	१५४	अम्हि ..	२४, ४८
अभिहरित्वा ..	१५४	अम्हे ..	५६
अभुवो ..	८५	अम्हेनु ..	५४, ५६
अभेच्छा ..	६४	अम्हेहि हसितं ..	१४३, १८०
अभेच्छा ..	१८८	अयं इत्यी ..	५६
अभोकरा ..	६५, १८८	अयं पुरिसो ..	५६
अमच्चो ..	२६१	अपुत्तां ..	२७०
अमुकं ..	६०	अरणं ..	२०२
अमुका ..	६०	अरञ्जिको भिकरु ..	१६२
अमुकानि ..	६०	अरह ..	६४
अमुको ..	६०	अरहा ..	६४
अमुञ्चिस्ता ..	६५, १८८	अरियदुत्तिने ..	१०२
अमुयं (० + स्ति) ..	१४	अरियदुत्तिम्हि ..	१०२
अमुया (० + स्ति) ..	१४	अरुच्छा ..	६४, १८८
अमुया ..	२२, २५	अरोदिस्ता ..	६४, १८८
अमुस्त ..	६०	अलच्छा ..	६४, १८८
अमुस्तां ..	२२	अलत्य ..	८७
अमुस्ता ..	२५	अलत्यं ..	८७
अमू पुरिसा आगच्छन्ति ..	६०	अलन्दानि ..	२२७
अमू पुरिते पस्त ..	६०	अलभि ..	८७
अमूलामूलं गन्त्वा ..	२७४	अलभिस्ता ..	६४, १८८
अमोकरा ..	६५, १८८	अर्लाभि ..	८७
अम्मा ..	१०१	अलंकरिय ..	२७६
अम्ह ..	४७, ४८	अलं मुतेन ..	१५४
अम्हं ..	५६	अलं मुत्वा ..	१५४
अम्हा ..	२४	अलं मुत्वान ..	१५४
अम्हाकं ..	५६	अलं सोतून ..	१५४

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
अलाहनं ..	२०२	असुकं ..	६०
अल्हकं ..	१३५	असुका ..	६०
अवकोकिलं ..	२७५	असुकानि ..	६०
अवक्खा ..	६५, १८८	असुको ..	६०
अवचिस्सा ..	६५, १८८	असुणि ..	६५, ८७
अवच्छा ..	६४, १८८	असुणिस्सा ..	६५, ८७, १८८
अवमयूरं ..	२७५	असु पुरिसो ..	६०
अवसिस्सा ..	६४, १८८	अस्म ..	४७, ४८, १३१
अवस्सकारी ..	१६३	अस्मा ..	२४, ५४
अवंसिरो ..	२२६	अस्माकं = अम्हाकं ..	५६
अविज्जमानपुत्तो ..	२७०	अस्मासु ..	५६
अवोच ..	८६	अस्मि ..	४७, १३१
अन्नवि ..	१५१	अस्मि ..	२४
असकच्च ..	१५५	अस्स ..	२४, १२६
असक्करित्वा ..	१५५	अस्सको ..	२४६
असक्खि ..	८७	अस्सतरो ..	२५६
असक्खिसु ..	८७	अस्सते ..	२२४
असनं ..	२०२	अस्सत्थकपित्थनं ..	२७६
असनि गता ..	२६८	अस्सत्थकपित्थना ..	२७६
असन्तेत्थ ..	२२२	अस्सत्थ ..	१२६
असक्कच्च ..	२७६	अस्सां ..	२४, १२६
असि ..	४७, १३१	अस्सा ..	२४
असिचम्मं ..	२७८	अस्साम ..	१२६
असिच्छिन्नो ..	२७२	अस्साय ..	२४
असि छिन्दति ..	१७६	अस्सु ..	१२६
असिसत्तितोमरं ..	२७८	अस्सुं ..	६, ४७, १२६
असिससति ..	२३१, २३३	अस्सोसा ..	८७
असु इत्थी ..	६०	अस्सोसि ..	६५, ८७

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
▲ अस्तोसुं ..	८६	आचरिये आगते सिस्ता उद्वहन्ति	३२
अस्तोस्ता ..	६५, १८८	आचरियेन सदितो सिस्तो	३०
अंसिको ..	२५२	आचारो ..	२००
अहं ..	८७	आजञ्चं ..	२०६
अहरा ..	८६	आटयति ..	२०६
अहरि ..	८६	आटापयति ..	२०६
अहं ..	५४	आटापेति ..	२०६
अहं हसामि ..	१७८	आटेति ..	२०६
अहा ..	८६	आतुमना ..	७६
अहायिस्ता ..	६४	आतुमनेसु ..	७५
अहामि ..	८६	आतुमनेहि ..	७५
अहाहा ..	६४, १८८	आनुमनो ..	७६
अहि ..	४७, १३१	आनुमस्स ..	७६
अहिनकुलं ..	२७८	आनुमेनु ..	७५
अहेसुं ..	८७	आनुमेहि ..	७५
अहोरत्तं ..	२८५	आदयति ..	२०६
अहोसि ..	८५	आदयति देवदत्तेन ..	२१३
		आदापयति ..	२०६
		आदापेति ..	२०६
		आदि ..	२०१, २७८
		आदिच्चं ..	२५५
		आदिच्चो ..	२५५
आकासेव ..	२२३	आदितो ..	२१६
आकासे सकुणा विचरन्ति	२३	आदिस्मि ..	१५
आक्रोडयन्तो सो नेति सिधि-		आदेति ..	२०६
राजस्स पेक्खतो ..	३२	आदो (० + स्मि)	१५
आचरियं अनुगच्छति सिस्तो	१३६	आधिपच्चं ..	२०४
आचरियस्स पुत्तो ..	३१	आपदा ..	२०२
आचरियस्स सदितो सिस्तो	३०		

		पृष्ठ संख्या			पृष्ठ संख्या
आपाटलिपुत्तं	वस्सिदेवो,		आसि	..	८७ १
आपाटलिपत्ता	..	२६८	आसित्थ	..	८७
आपूपिकं	..	२६०	आसि	..	८७
आपोगतं	..	२७०	आसिम्हा	..	८७
आयतिगवं	..	२६९	आसीतिको वयो	..	२४६
आयसं	..	२५९	आसु	..	८७
आयसिको	..	२५२	आसेति	..	२११
आयस्मा	..	१९४	आह	..	४९, १८७
आयुस्सं	..	२६०	आहच्च	..	१५५
आयू (० + यो)	..	५, ६	आहनित्वा	..	१५५
आयूनि	..	४, ६	आहंसु	..	१८८
आरञ्जको	..	२६२	आहु	..	४९, १८७
आरञ्जिको	..	२६२			
आरामिकिनी	..	२४१			
आरिस्सं	..	२०६			
आरुल्हवानरो	..	२६९			
आलसियं	..	२०५	इक्खयति	..	२०९
आलस्सं	..	२०४	इक्खापयति	..	२०९
आलस्यं	..	२०४	इक्खापेति	..	२०९
आलाहनं	..	२०२	इक्खेति	..	२०९
आवुसो सुमन सामणेर	..	२९	इच्चस्स	..	२२३, २२४
आसं	..	२४	इच्छा	..	२०२
आसभं	..	२०६	इट्ठं	..	१४४
आसयति	..	२१७	इट्ठि	..	२०२
आसयति माणवकं ओदनं	..	२१२	इतरिस्सं	..	५८
आसापयति	..	२११	इतरिस्सा	..	५८
आसापेति	..	२११	इतरीतरस्स भोजका	..	२७२
आसाल्हो	..	२४५	इतो	..	२१५

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
इतो नायति ..	२२५	इमं भिक्षुं विनयमज्जापय,	
इत्तर ..	१६३	अथो एनं धम्ममज्जापय	५७
इत्थं ..	२१८	इमाय ..	२५
इत्थि ..	७२	इमिना ..	५६
इत्थिपुमं ..	२७६	इमिस्तं ..	५८
इत्थियं, (० + अं) ..	१६	इमिस्ता ..	२५, ५८
इत्थिया (० + ना) ..	१३	इमिस्ताय ..	२४, २५, ५८
इत्थिया ..	१६	इमे भिक्षू विनयमज्जापय,	
इत्थियो ..	१३, १६	अथो एने धम्ममज्जापय	५७
इत्थि ..	१६	इमेतं ..	५६
इत्थी ..	७०, ७२	इमेनु ..	५६
इत्थी (० + थो) ..	१३	इमेहि ..	५६
इत्थी विजिता रज्जा ..	१४३	इमेहि नाम कल्याणधम्मा	
इत्थेव ..	२२६	पटिजानिस्सन्ति	६३
इदप्पच्चया ..	२७३	इसि ..	१४, १०१
इदं ..	५६	इसे ..	१४, १०१
इदं तेसं भुत्तं ..	१४३	इस्सुकी ..	२६४
इदं तेसं यातं (भाव)	१४३	इह ..	२१६
इदमट्ठो ..	२७३	इह ते याता (कर्त्तृ) ..	१४३
इदप्पच्चया ..	२७३	इह तेहि भुत्तं ..	१४३
इदम्पि ..	२२७	इह तेहि यातं (कर्म)	१४३
इदानि ..	२१८	इह भवं भुज्जेय्य ..	१२६
इन्दसभं ..	२७३		
इध ..	२१६		
इधमाहु ..	२२५		
इमस्मा ..	२४		
इमस्मि ..	२४	ईदिक्खो ..	२७७
इमस्स ..	२४	ईदिसो ..	२७७

		पृष्ठ संख्या			पृष्ठ संख्या
ईदी	..	२७७	उपज्जि	..	१२०
ईहा	..	२०२	उपट्टानीय सिस्सो	..	१५१
	-०-		उपट्टितो गुरुं भवं (कर्त्तृ)		१४३
			उपट्टितो गुरु भोता (कर्म)		१४३
	उ		उपरिसिखरं	..	२६६
			उपवसा	..	२६६
उट्टुहति	..	११८	उपवासिको	..	२६३
उण्हभोजी	..	१६३	उपवीणायति	..	२३७
उत्त	..	१४४	उपासना	..	२०२
उत्तिट्टति	..	११८	उप्पन्नवा	..	१४६
उत्थ	..	१४४	उप्पन्नो	..	१४६
उदककुम्भो	..	२७४	उभयं	..	२४८
उदकविन्दु	..	२७४	उभिन्नं	..	१६७
उदकपत्तो	..	२७४	उभो	..	७३
उदकुम्भो	..	२७३, २७४	उभोसु	..	१६७
उदधि	..	२७८	उभोहि	..	१६७
उदपत्तो	..	२७४	उरगो	..	२७८
उदपान	..	२७८	उरसिकरिय	..	२७६
उदविन्दु	..	२७४	उसीरवीरणं	..	२७६
उदरस्स कारणा	..	१३८	उसीरवीरणा	..	२७६
उदरस्स हेतु	..	१३८	ऊसरु	..	१६५
उदरियो	..	२६२			
उद्धगङ्गं	..	२६६			
उप उपालित्थेरं विनयधरा		१३६			
उपकुम्भं	..	२६७, २६८			
उपकुम्भं कतं	..	२६७	एककट्टुं	..	२
उपकुम्भं निघेहि	..	२६७	एकको	..	२४८
उप खारियं दोणो	..	१३८	एकक्खत्तुं	..	२१६

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
▲ एकञ्चानि ..	१०१	एणेय्यगोमहिसं ..	२७६
एकञ्चे ..	१०१	एणेय्यगोमहिसा ..	२७६
एकज्भं करोति ..	२१६	एणेय्यवराहं ..	२७६
एकतिसं सतं ..	१७३	एणेय्यवाराहा ..	२८०
एकदा ..	२१७	एतरहि ..	२१८
एकधा ..	२१८	एतं भिक्खुं विनयमज्झापय, अथो एनं धम्ममज्झापय	५७
एकधा करोति ..	२१६	एतादिकञ्जो ..	२७२
एक फलं ..	१५६	एतादिसो ..	२७२
एकमिदाहं ..	२२८	एतादी ..	२७२
एकरत्तं ..	२८५	एताय ..	२५
एक रत्ति ..	२८५	एतिस्सं ..	५८
एकवीसत्तिमो ..	१७६	एतिस्सा ..	२५, ५८
एकादस ..	१६८	एतिस्साय ..	२५, ५८
एकादसत्रं ..	१६६	एते भिक्खू विनयमज्झापय, अथो एने धम्ममज्झापय	५७
एकादसमो ..	१७५	एत्तकं ..	२४६
एकादसं सतं ..	१७३	एत्तावन्तं ..	२४७
एकादसो ..	१७५	एत्य ..	२१६
एकाधिकं सतं ..	१७३	एदिकञ्जो ..	२७८
एका बालिका ..	१५६	एदिसो ..	२७८
एकारस ..	१६८	एदी ..	२७८
एकिस्सं ..	५८	एवरूपमकासि ..	८४
एकिस्सा ..	५८	एवं करेय्यासि ..	१२६
एकुत्तर संयुत्तकं ..	२७६	एवाहं ..	२२७
एकेकसो ..	२२०	एस अत्थो ..	२२६
एकेकस्स ..	२७१	एस धम्मो ..	२२६
एको ..	१३५	एसं ..	५६
एको बालको ..	१५६		
एणेय्यं ..	२५६		

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
एसा ..	२४	क	
एसितव्वं ..	१५१		
एसु ..	५६	कच्चानो ..	२५४
एसो ..	२४	कच्चायनं व्याकरणं	२५८
एस्सति ..	६५	कच्चायनो ..	२५४
एहि ..	५६	कञ्जाय हसितं ..	१४३
एहिति ..	६५	कञ्जाल्पं ..	२७३
एहिपस्सिको ..	२५०	कञ्जायो ..	२६
		कटं करोतु भवं ..	१३१
		कट्ठं ..	१४५
		कणिट्ठो ..	२४६
ओ		कणियो ..	२४६
		कण्हसप्पो ..	२७४
ओक्काको ..	२५७	कण्हसुक्कं ..	२७६
ओक्खतरो ..	२५६	कण्हा गावीनं, गावीसु वा	
ओघो ..	२०१	सम्पन्नखीरतमा	३१
ओट्ठकं ..	२६०	कण्हानी ..	२५४
ओट्ठमुखो ..	२७०	कण्हायनी ..	२५४
ओदको ..	२६१	“कतञ्जुम्हि च पोसम्हि सीलवन्ते	
ओदनं पचति ..	१७६	अरियवुत्तिने” ..	१०२
ओदुम्बरो ..	२४५, २५६	कत्तमो ..	१६२
ओपधिकं ..	२४६	कतरो कतमो वा देवदत्तो भवतं	२४८
ओरव्वकं ..	२६०	कतं ..	१४४
ओरव्विकं सूकरिकं	२७६	कतं ते ..	५५
ओरसो ..	२६१	कतं नो ..	५५
ओरेगङ्गं ..	२६६	कतं मे ..	५५
ओलुम्पिको ..	२५५, २५२	कतं वो ..	५५
		कति	१६१, २४७, २७७

		पृष्ठ संख्या			पृष्ठ संख्या
कतिन्नं	..	१७५	कन्दापयति	..	२०६
कतिमो	..	१७५	कन्दापेति	..	२०६
कत्त	..	१४	कन्देति	..	२०६
कत्तव्यं	..	१५२	कप्यासिकं	..	२५६
कत्तव्यो	..	१५०	कम्पयति	..	२१०
कत्तरो	..	१६१	कम्पापेति	..	२१०
कत्ता	..	६५	कट्टुण्हं	..	२७५
कत्ताये गच्छति	..	१५२	कम्पेति	..	२१०
कत्तारनिद्देशो	..	२७३	कम्मजं	..	२७३
कत्तिकेव्यो	..	२५५	कम्मञ्जं	..	२६३
कत्तुं	..	१५२	कम्मना	..	१००
कत्तुं अलसो	..	१५३	कम्मनि	..	१००
कत्तुनिद्देशो	..	२७४	कम्मनियं	..	२६३
कत्तून	..	१५२	कम्मुना	..	७८
कत्ते	..	१४	कम्मुनो	..	७८
कत्त्य	..	२१६	कम्मे	..	१००
कयं	..	२१७, २१८	कम्मेन	..	१००
कयं हि नाम सो भिक्खवे !			कयविककयिको	..	२५२
भोघ पुरिसो सव्वमत्ति-			कयिरन्तो	..	१२४
कामयं कुटिकं करिस्सति	६३		कयिरभावो	..	१२४
कयाहं	..	२२७	कयिरा	..	१३१
कथिको	..	२६३	कयिराय	..	१३०
कदन्नं	..	२७५	कयिराम	..	१३०
कदन्नं	..	२७५	कयिरामि	..	१३०
कदा	..	२१८	कयिरासि	..	१३०
कनिट्ठो	..	२४६	कयिरं	..	१३०
कनियो	..	२४६	कयिरति	..	१२४
कन्दयति	..	२०६	कयिरते	..	१२४

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
करणीयो ..	१५०	कातापयति ..	२११
करन्तो ..	२०२	कातापेति ..	२११
करभोरु ..	२४२	कातियानो ..	२५४
करह ..	२१८	कातुं ..	१५२
कराणो ..	६२, १२४	कातुं गच्छति ..	१५२
करिस्सति ..	६४	कातून ..	१५२
करोति ..	१२४	कातेति ..	२११
करोन्ति ..	२०२	कानि ..	२२
करोन्तो ..	१२४	कापिलवत्थवो ..	२६१
कलहायति ..	२३६	कापुरिसो ..	२७५
कव्यं ..	२५८	कापोतं ..	२५६
कसिमा ..	२०६	कायसम्फस्सो ..	२७३
कस्मा हेतुस्मा ..	१३६	कायिकं ..	२५१
कस्मि ..	२३	कायो ..	२२
कस्मि हेतुस्मि ..	१३६	कारण्डवचक्कवाका ..	२७६
कस्स ..	२३	कारण्डवचक्कवाकं ..	२७६
कस्स हेतुस्स ..	१३६	कारणं ..	१६२
कं हेतुं ..	१३६	कारा ..	२०२
का ..	२२	कारिका ..	२३६
काकन्दी ..	२५१	कारेत्त्वा ..	२७४
काकं ..	२६०	कालवण्णं ..	२७५
काकोलूकं ..	२७८	कालुसिय ..	२०५
कणिट्ठो ..	२४८	कासकुसा ..	२७६
कणियो ..	२४८	कासकुसं ..	२७६
कातव्वं ..	१५१, १५२	कासावं ..	२५१
कातयति ..	२११	कासिकोसलं ..	२८०
कातवे ..	१५३	कासिकोसला ..	२८०
कातवे गच्छति ..	१५२	कासिरञ्जा ..	७७

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
कासिरञ्जे ..	७७	किं निमित्तं ..	१३६
कासिरञ्जो ..	७७	किं पयोजनं ..	१३६
कासिराजस्मा ..	७७	कीटपतङ्गं ..	२७६
कासिराजस्त ..	७७	कीदिक्रवो ..	२७७
कासिराजे ..	७७	कीदिसो ..	२७७
कासिराजेन ..	७७	कीदी ..	२७७
कगहति ..	६४	कीव ..	२४७, २७७
किच्चं ..	१५१, १५२	कीवतकं ..	२४७, २७७
किच्चयं ..	२६४	कीवतका ..	१६१
किच्चानि कुव्वस्त करेय्य किच्चं ..	८२	कीवतकानि ..	१६१
किट्ठं ..	१४५	कीवतकायो ..	१६१
किणाति ..	१२२	कुक्कुरसूकरं ..	२७६
किण्णवा ..	१४६	कुक्कुरसूकरा ..	२७६
किण्णो ..	१४६	कुसलाकुसलं ..	२७६
कित्तकं ..	२४७, २७७	कुञ्जति ..	१२०
कित्तकानि ..	१६१	कुटीयति पासादे ..	२३६
कित्तकायो ..	१६१	कुतो ..	२१५
कित्तिमो ..	१६८	कुत्वकिपिल्लिकं ..	२७६
किन्ति ..	२२७	कुत्र ..	२१६
किन्दानि ..	२२७	कुदा ..	२१८
किन्नु खलु भो व्याकरणं अधीयस्सु १३१		कुद्दालिको ..	२५२
किमायस्मा विनयम्परियापुणेय्य,		कुपुरिसो ..	२७५
उदाहु धम्मं ..	१२८	कुव्वति ..	१२४
किरिया ..	२४२	कुव्वते ..	१२४
किस्स ..	२३	कुव्वन्तो ..	१२४
किस्मि ..	२३	कुव्वमानो ..	१२४
कि ..	२३	कुन्नाह्मणो ..	२७५
किं कारणं ..	१३६	कुम्म ..	१२४

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
कुमारियो बालिकायो	१५६	कोधवा ..	१६६
कुमारी बालिका ..	१५६	कोधसा ..	१००
कुमारभरियो ..	२७१	कोधापेति ..	२११
कुमारी ..	२४०	कोघालू ..	१६६
कुम्भकारो ..	१६३, २७८	कोधेति ..	२११
कुम्भे ओदनं पचति ..	३२	कोधेन ..	१००
कुम्मि ..	१२४	कोपनो ..	२०२
कुरयो ..	१०२	कोरव्यो ..	२५७
कुरुते ..	१२४	कोलेय्यको ..	२६२
कुरुमानो ..	१२४, २०२	कोसज्जं ..	२०६
कुरुपंचाला ..	२८०	कोसं कुटिला नदी ..	२६
कुरुपंचालं ..	२८०	कोसं गच्छति ..	२६
कुसलयति ..	२३६, २३७	कोसं पव्वतो ..	२६
कुहं ..	२१७	कोसम्वी ..	२५१
कुहिं ..	२१७	कोसम्बो ..	२६१
कुहिचन ..	२१७	कोसलो ..	२५७
कुहिञ्चि ..	२१७	कोसिनारको ..	२६२
के ..	२२	कोसितव्वं ..	१५१
केतति ..	११६	कोसुम्भं ..	२५१
केन कारणेन ..	१३६	कोसेय्यं ..	२५६
केन निमित्तेन ..	१३६	को हेतु ..	१३६
केन पयोजनेन ..	१३६	क्रिया ..	२४२
केन हेतुना ..	१३६	क्व ..	२१६
केसवो ..	१६७		
केसाकेसी ..	२८५		
कोण्डञ्जो ..	२५५	ख	
कोधनो ..	२०२	खतं ..	१४४
कोधयति ..	२११	खत्तबन्धुनी ..	२४१

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
सत्तियसभा ..	२७३	ग	
सत्तियो ..	२५६		
सत्यो ..	२५६	गग्यो ..	२५६
सदिरपलासा ..	२७६	गङ्गायमुनं ..	२७६
सदिरपलासं ..	२७६	गङ्गेय्यो ..	२६२
सन्ती परमं ..	२२५	गच्छ ..	१३१
सन्धकविभङ्गं ..	२७६	गच्छता ..	८१
सलु सुतेन ..	१५४	गच्छति ..	८१, ११६
सलु सुत्वा ..	१५४	गच्छती ..	२४०
सलु सुत्वान ..	१५४	गच्छतो ..	८१
सलु सोतून ..	१५४	गच्छन्तं ..	८१
सलेयवं ..	२६६	गच्छन्ता ..	८०
साणित्तिको ..	२५२	गच्छन्ति ..	६६, ११६
सादयति देवदत्तेन ..	२१३	गच्छन्ती ..	२४०
सादरो ..	२४५	गच्छन्ते ..	६६, ११६
सादरिको ..	२५०	गच्छन्तो ..	८०, ६२, ६३, ११६
सारसतिका वीहि ..	२४६	गच्छमानो ..	६२, ११६
सारी ..	१३५	गच्छरे ..	६६, ११६
सिन्नवा ..	१४६	गच्छं ..	६३
सिन्नो ..	१४६	गच्छाहि ..	१३१
सीणवा ..	१४६	गच्छिस्तं ..	६४
सीणो ..	१४६	गच्छेय्यं वाहं उपोसथं, न वा	
सीरपायी ..	१६३	गच्छेय्यं ..	१२८
खेपयति ..	२११	गजगवजं ..	२७६
खेपापयति ..	२११	गजगवजा ..	२७६
खेपापेति ..	२११	गजता ..	२६०
खेपेति ..	२११	गण्हन्तो ..	११६
		गण्हाति ..	११६

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
गण्हितव्वं ..	११६	गवेसु ..	७४
गण्हितुं ..	११६	गहनं—गहणं ..	२२५
गतं ..	१४४	गहपतानी ..	२४२
गता वालिका ..	१६०	गहेत्वा ..	११७
गतिमा (गतिमन्तु)	१६४	गामगतो ..	२७२
गतो वालको ..	१६०	गामतो ..	२१५
गन्तव्वं ..	१५१	गामनिग्गतो ..	२७८
गन्तुकामो ..	२२७	गामस्मा गच्छति ..	३१
गन्धवा ..	१६४	गामस्स मनुस्सा ..	३१
गन्धिको ..	२४५	गामं त्व भणे गच्छेय्यासि	१२६
गन्धी ..	१६४	गामं परितो सव्वतो पव्वतो	१३५
गव्यमाहिसं ..	२८०	गामं वालको गतो ..	१८०
गव्यमाहिसा ..	२८०	गामं वालिका गता ..	१८०
गव्यं ..	२५६, २५८	गामियो ..	२६२
गमनं ..	२०२	गामे गामे पानीयं ..	२७१
गमयति माणवकं गामं	२१२	गामे पटो अम्हाकं, अथो नगरे	
गमिस्सरे ..	११६	कम्बलो नो—अथो नगरे	
गम्मं ..	१५१	कम्बलो अम्हाकं	५५
गवम्पति ..	२३६	गामो गामो रमणीयो	२७१
गवस्मा ..	७३	गामो तव च परिग्गहो	५५
गवस्स ..	७३	गामो तुम्हं परिग्गहो अथ	
गवं ..	७३, ७४	जनपदो वो परिग्गहो	५५
गवा ..	७३	गामो तुम्हे-अम्हे उद्दिस्सागतो	५५
गवास्सं ..	२२४	गामो वो—नो आलोचेति	५५
गवी ..	७३	गारवं ..	२०५
गवुं ..	७३	गावस्मा ..	७३
गवे ..	७३	गावस्स ..	७३
गवेन ..	७३	गाव ..	७३

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
गावा	७३	गूळ्हो	१४६
गावे	७३	गो (० + सि)	१३
गावेन	७३	गोतमी	२४०
गावेसु	७४	गोनं	७४
गावो	७३	गोगुच्छिको	२५२
गीतवादितं	२७८	गोमयं	२५६
गीतं	१४५	गोमहिसं	२७६
गुणवता	८१	गोमहिसा	२७६
गुणवति	८१	गोमा (गोमन्तु)	१६४
गुणवती	२४०	गोळिकं	२५२
गुणवतो	८१	गोमु	७४
गुणवन्तपतिट्ठो	२७०	-०-	
गुणवन्तं	८१		
गुणवन्तं कुलं	८२	घ	
गुणवन्ता	८०		
गुणवन्ती	२४०	घच्चो	१५२
गुणवन्ते	८०	घतकं	२४६
गुणवन्तेन	८०	घतं तेलस्मा पतिददाति	१३८
गुणवन्तो	८०	घम्मति	११६
गुणवं कुलं	८२	घम्मन्तो	११६
गुणवा	८०	घरणी	२४१
गुणिट्ठो	२४६	घातयति	२१०, २११
गुणियो	२४६	घातिकं	२५२
गुन्नं	७४	घातेति	२१०, २११
गुहं	२२४	घेष्यति	११६
गुळ्हो	१४६	घेष्यन्तो	११६
गुळोदनो	२७२	घेष्यमानो	११६
गुह्यं	१५१, १५२	-०-	

पृष्ठ संख्या

पृष्ठ संख्या

चीयते ..	१८१	छाहं ..	२७५
चुद्स ..	१६८	छिन्नवा ..	१४६
चेतव्वं ..	१५१	छेकपापकं ..	२७६
चेतिविसं ..	२८०	छेच्छति ..	६४
चेतिविसा ..	२८०	छेत्तु ..	१६१
चेय्यं ..	१५१	छेदको ..	१६१
चोद्स ..	१६८	छेदयति ..	२११
चोरतो ..	२१५	छेदापयति ..	२११
चोरस्मा भायति ..	३१	छेदापेति ..	२११
चोरस्मा रक्खति ..	३१	छेदेति ..	२११
चोरयति ..	१२५		
चोरेति ..	१२५		

-

ज

छ

जञ्जा

जटिलो

जटियो

जनता

जनकस्स तुल्यो पुत्तो

जनकेन तुल्यो पुत्तो ..

जनपदो

जनेसुतो

जन्तवो

जन्तुयो (०+यो)

जन्तुयो

जन्तुनो

जन्तू (०+यो)

जयति

जञ्जा ..		१३०
जटिलो ..		१६६
जटियो ..		१६८
जनता ..		२६०
जनकस्स तुल्यो पुत्तो ..		३०
जनकेन तुल्यो पुत्तो ..		३०
जनपदो ..	१६६, १६६	२६१
जनेसुतो ..	१४६	२३६
जन्तवो ..	२२८	१०२
जन्तुयो (०+यो) ..	२२८	१३
जन्तुयो ..	२७८	१०२
जन्तुनो ..	१६६	१०२
जन्तू (०+यो) ..	१६६	१३
जयति ..	२४६	११५, ११६

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
जयम्पति ..	२८०	जायते गिनि ..	२२६
जयम्पती ..	२८०	जालिको ..	२५२
जयो ..	२००	जिगिसति ..	२३२, २३३
जरा ..	११७	जिगुच्छति ..	१८६, १८७
जरामरण ..	२७८	जिगुच्छा ..	२०२
जलं जलस्मा विना रुक्खो		जिघच्छति ..	२३२
सुक्खति ..	१३७	जिघंसति ..	२३३
जलेन विना रुक्खो सुक्खति	१३७	जिण्णवा ..	१४७
जहाति ..	१८६, २३३	जिण्णो ..	१४७
जहिस्सति ..	६६	जितिन्द्रियो ..	२६६
जागरिया ..	२०२	जिहसिसति ..	२३३
जाणुत्तग्घं ..	२४७	जीमूतो ..	२२८
जाणुमत्तं ..	२४७	जीयति ..	११७
जातं ..	१४५	जीयन्तो ..	११७
जातरूपरजतं ..	२७६	जीयमानो ..	११७
जातरूपरजता ..	२७६	जीरणं ..	११७, १५२
जातिभूमं ..	२८४	जीरति ..	११७, १५२
जातुमयं ..	२६०	जीरन्तो ..	११७
जातुस्सं ..	२६०	जीरमानो ..	११७
जातो ..	१२१	जीरापेति ..	११७, १५२
जानन्तो ..	१२१	जीरितव्वं ..	१५२
जानाति ..	१२१, १२२	जीवको ..	१६२
जानि ..	२०३	जीवतु ..	१३१
जानित्तुं ..	१२१	जीवितं तिणाय अपि न मञ्चति	३१
जानिया ..	१३०	जे अब्बे ! ..	२६
जानिस्सति ..	६५	जेट्टमूलो ..	२४५
जानेय्य ..	१३०	जेट्ठो ..	२४८, २४९
जायती सोको ..	२२५	जेतु ..	१६१

		पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
जेनदत्तिको	..	२५७	तञ्चरति	.. २२७
जेव्यो	..	२४८, २४९	तञ्जते	.. १८१
जीतति	..	११६	तञ्जेव	.. २२८
अस्तति	..	६५	तञ्हि	.. २२८
			तण्ठानं	.. २२७
			तत	.. १४४
			ततिय	.. १७५
			ततो	.. २१५, २७४
			ततोष	.. २२२
ठितं	..	१४५	तत्तकं	.. २४६
ठीयते	..	१८०, १८१	तत्य	.. २१६
ठीयमानं	..	१८०	तत्य नाम त्वं मोघपुरिस !	
			मया विरागाय घम्मे	
			देसिते सरागाय चेतैस्तसि	६३
			तत्र	२१६, २१७, २७४
			तत्रिमे	.. २२२
डहति	..	११७	तत्रिव	.. २२४
डाहो	..	११७	तथा	.. २१८
डीनवा	..	१४६	तथागतं अञ्जत्र को अञ्जो	
डंसमकासं	..	२७९	लोकनायको	.. १३७
डीनो	..	१४६	तथागतस्मा अञ्जत्र को	
			अञ्जो लोकनायको	१३८
			तदमिना	.. २२८
			तदलं	.. २२८
			तदा	.. २१७, २७४
तङ्करोति	..	२२७	तनुति	.. १२३
तङ्गणे	..	२२६	तनुते	.. १२३
तञ्च्यं	..	२२४	तनोति	.. १२३

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
तन्तवायो ..	२७२	तस्सा निस्सरणं ..	२५
तन्दीपा ..	२७१, २७२	तस्सा पतिट्ठितं ..	२५
तन्धनं ..	२२७	तस्साय ..	२४, २५
तपस्सी ..	१६५	तस्सेदं ..	२२३
तमहं ..	२२८	तहं ..	२१७
तम्पाति ..	२२७	तहिं ..	२१७
तम्ममुखं ..	२७३, २७४	तं ..	२५, ५६
तम्हा ..	२४	तंसभावो ..	२२६
तम्हि ..	२४	तंसरणा ..	२७२
तयं ..	२४८	तादिक्खो ..	२७७
तया ..	५६	तादिसो ..	२७७
तयि ..	५६	तादी ..	२७७
तयिदं ..	२२८	तापसी ..	१६६
तयो ..	१६७	ताय ..	२५
तयो बालका ..	१५६	तायते ..	१८१
तय्यगो ..	२७८	तारकितं गगनं ..	२४७
तरुणी ..	२४०	तारा ..	२०२
तळाकं अभितो उभयतो दीघा रुक्खा तिट्ठन्ति ..	१३५	तावन्तं ..	२४७
तवं ..	५६	तासं ..	२४
तस्मा ..	२४	तिअसीति ..	१७१
तस्मा परिग्गहो ..	२५	तिकचतुक्कं ..	२७८
तस्मि ..	२४	तिकिच्छति ..	१८६, १८७
तस्स ..	२४	तिकिच्छ्या ..	२०२
तस्सं ..	२४, २५	तिचत्तालीसं ..	१७१
तस्सा ..	२४, २५	तिट्ठगु कालो ..	२६६
तस्सा कतं ..	२५	तिट्ठति ..	११७
तस्सा दीयते ..	२५	तिट्ठथ वो ..	५५

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
१ तिद्वन्ति धम्मस्स जातारो	३१	तिस्सन्नं ..	१६७
तिद्वन्तो ..	६२, ११७	तिसं ..	२५
तिद्वमानो ..	६२, ११७	तिस्सा ..	२५
तिद्वाम ..	५५	तिस्साय ..	२५
तिणकट्टुसाखापलासं	२७६	तिस्सो ..	१६७
तिणमयं ..	२५६	तिस्सो वालिकायो ..	१५६
तिण्णन्नं ..	१६७	तिसतिमो ..	१७५, १७६
तिण्णवा ..	१४७	तिसं सतं ..	१७३
तिण्णं ..	१६७	तिसो ..	१७५
तिण्णो ..	१४७	तीणि ..	१६८
तितिकप्रति ..	१८६, २३२	तीणि फलानि ..	१५६
तितिकजा ..	२०२	तुट्टवा ..	१४५
तिदण्डकेन परिव्व्राजको वुज्झति	१३७	तुट्ठि ..	१४५
तिदसा ..	२६६	तुट्ठो ..	१४५
तिनवृत्ति ..	१७१	तुण्डिमा ..	१६६
तिन्नं ..	१६६	तुण्डिमो ..	१६६
तिपञ्जास ..	१७१	तुण्हीभूय ..	२७६
तिभूमं ..	२८४	तुम्हं ..	५६
तियासीति ..	१७१	तुम्हाकं ..	५६
तिरोकरिय ..	२७६	तुम्हादी ..	२७७
तिरोपच्चतं, तिरोपच्चता	२६८	तुम्हे ..	५६
तिरोभूय ..	२७६	तुम्हे हसय ..	१७८
तिलमुग्गमासं ..	२८०	तुम्हेहि हसितं ..	१८०
तिलमुग्गमासा ..	२८०	तुवं ..	५६
तिलेसु तेलं वत्तति	३२	ते ..	२४
तिवङ्गिकं ..	२२५	ते असीति ..	१७१
तिसट्ठि ..	१७१	तेचत्तालीस ..	१७१
तिसत्तति ..	१७१	तेचीवरिको ..	२४५

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
तेजति	११६	त्वयि	५६
तेजस्सी	१६५	त्वं	५६
तेत्तिंस	१६८	त्वं अपच	१८५
तेघा	२१६	त्वंसि	२२७
तेन	२४	त्वंहससि	१७८
तेनवुति	१७१		
तेन हसितं	१८०	—	
तेपञ्चास	१७१	थ	
तेरस	१६८		
तेरसघ्नं	१६६	थञ्चं	२२४
तेलकं	२४६	थामुना	७८
तेळस	१६८	थामुनो	७८
तेलिको	२४५	थालपाचनं	२७८
तेवीस	१६८	थालि पचति	१७६
तेसट्ठि	१७१	थावर	१६३
तेसत्तति	१७१	थेर्यं	२०६
तेहं	२२३		
तेहि	२४	—	
तेहि हसितं	१८०	द	
तोमरिको	२४५		
त्यज्ज	२२४	दकरक्खसो	२७४
अस्तो	१४७	दकसोतं	२७४
त्वमसि	२२७	दक्खति	६६
त्वम्हा	५६	दक्खि	२५५, २५६
त्वया	५६	दक्खिणपुव्वा	२६६
त्वया अत्र भूयते	१७८	दक्खिणुत्तरपुव्वानं	२०
त्वया अत्र भूयि	१७६	दक्खिणुत्तरं	२७६
त्वया हसितं	१८०	दक्खिणेय्यो	२५०

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
दक्षिणैव्यो भगवतो सावकसंधो	१६१	ददन्ती	११६
दक्षिण्यं ..	२०५	ददाति	१८६, २३३
दक्षिणस्सति (भविष्यत्काल)	६६, ११८	ददाहि	१३१
दज्जति ..	११६	दद्वलनि	१८६
दज्जन्तो ..	११६	दन्तवा	१६५
ददुं चकसु ..	११३	दन्तुरो	१६५
ददुडो ..	१४५	दधिभोजनं	२७२
दण्टपाणिने (द्वितीया)	१०२	दम्म	४८
दण्टपाणिनी (पठमा)	१०२	दम्मि	४८
दण्टवा ..	१६४	दयावा	१६६
दण्टादण्टी ..	२८५	दल्हयति विनयं	२३६, २३७
दण्टि ..	७२	दत्त	१६६
दण्टि ..	१६, ७०	दत्तगवं	२८५
दण्टिको ..	१६४	दत्तत्रं	१६६
दण्टिनं ..	१६, ७०	दत्तनीयो रुक्खो	१६१
दण्डिना ..	१६	दत्तेति (कर्म)	११८
दण्डिना (० + स्मा)	६	दहति	११७, १८७
दण्डिनि ..	७१	दात	६६
दण्डिनी ..	२४१	दातरि	६५
दण्डिने ..	७०	दाता	६५, ६६
दण्डिनो (० + यो)	५, १६, ७०	दातानं	६६
दण्डिनो पस्त ..	७०	दातारं	६५
दण्डियो ..	१३	दातारा	६५
दण्डिस्मा ..	६, १६	दातारानं	६६
दण्डिस्मि ..	७१	दातारे	६५
दण्डी ३, ५, ६, १३, ७०, ७२, १६४		दातारेसु	६६
दण्ढेन मप्यं पहरति ..	३०	दातारेहि	६६
दत्ति ..	२५६		

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या	
दातारो	..	६५	दिवसं गेहो सुञ्जो तिद्धति	२६
दातु	..	६४, ६५, १६१	दिवि	१००
दातुसु	..	६६	दिवियो	२६२
दातूहि	..	६६	दिसं दिसं अनुयन्ति	२७१
दाधिकं	..	२५२	दिसोदिसं	२७०
दानं	..	२०२	दिस्वा	१५५
दानानं दानेसु वा धम्मदानं सेट्ठं	३१	दिस्वान	१५५	
दानीयो ब्राह्मणो	..	१५१	दीघजङ्घो	२७१
दायक	..	६४, १६१	दीघमज्झिमं	२७६
दायज्जं	..	२०४	दीघरत्तं	२८५
दारगवं	..	२८५	दीनवा	१४६
दारुमयं	..	२५६	दीनो	१४६
दासव्यं	..	२०६	दीयते	१८१
दासिदासं	..	२७६	दीयते ते	५५
दाहो	..	११७	दीयते नो	५५
दिगु	..	२७२	दीयते मे	५५
दिगुणं	..	२७१, २७२	दीयते वो	५५
दिज्जति	..	१२०	दुकतिकं	२७८
दिट्ठफलं	..	१६७	दुककत्तं	२७५
दिट्ठो	..	१४४	दुककत्तं=दुककटं	२२५
दिन्नवा	..	१४६	दुट्ठुल्लं	२५०
दिन्नो	..	१४६	दुत्तिय	१७५
दिव्वं	..	२२४	दुद्धं	१४५
दिव्वो	..	२६२	दुपट्टं	२७२
दियङ्ढो	..	१७६	दुप्पुरिसो	२७५
दिरत्तं	..	२७८	दुविघो	२७१, २७२
दिवङ्ढो	..	१७६	दुव्वला इत्थी	१५६
दिवसस्स तिक्खत्तुं	..	३१	दुव्वलायो इत्थियो	१५६

		पृष्ठ संख्या			पृष्ठ संख्या
दुवित्रं	..	१६७	द्वितिस	..	१६८
दुवे	..	१६६	द्वयं	..	२४८
दुष्टं	..	१५२	द्वयाधिकं सतं	..	१७३
दूसयति	..	२११	द्वाचत्तालीस	..	१७१
दूसेति	..	२११	द्वादस	..	१६८
देच्चो	..	२५५	द्वादसमो	..	१७५
देव्यं दानं	..	१६१	द्वादसो	..	१७५
देव्यो ब्राह्मणो	..	१६१	द्वा पञ्चास	..	१७१
देवदत्त ! तव परिग्गहो		५५	द्वावीसति	..	१६८
देवदत्तो पसन्नो बुद्धं अनु		१३६	द्वासट्ठि	..	१७१
देवदत्तो पसन्नो बुद्धं पति, परि		१३६	द्वासत्तति	..	१७१
देवयति	..	२११	द्वासीति	..	१७१
देवसभं	..	२७३	द्वि असीति	..	१७१
देवानम्पियतिस्सो	..	२३६	द्विक्खत्तुं भुञ्जति	..	२१६
देवापयति	..	२११	द्विचत्तालीस	..	१७१
देवापेति	..	२११	द्विनवुत्ति	..	१७१
देवेति	..	२११	द्वित्रं	..	१६६
दोणमत्तं	..	२४७	द्वि, पञ्च बालका	..	१५६
दोणिको वीहि	..	२४६	द्विपञ्चास	..	१७१
दोणो	..	१३५	द्विभूमं	..	२८४
दोभगं	..	२५५	द्विरत्तं	..	२८५
दोमनस्सं	..	२६१	द्विसट्ठि	..	१७१
दोवारिको	..	२६३	द्विसत्तति	..	१७१
द्वङ्गुलं	..	२८४	द्विदोणेन घञ्जं किणाति		३०
द्वङ्गुलं दारु	..	२८५	द्वे	..	१६६
द्वत्तिकत्तुं	..	२७१	द्वे असीति	..	१७१
द्वत्तिपत्तपूरा	..	२७२	द्वेचत्तालीस	..	१७१
द्वत्तयो वारे	..	२७२	द्वेधा	..	२१६

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
द्वनवुत्ति	१७१	धस्तो	१४७
द्वे पञ्जास	१७१	धि अलसं सिस्सं	३०, १३५
द्वेसत्तति	१७१	धुनाति	१२२
द्वेसट्ठि	१७१	धेनुकं	२६०
		धेनुया (० + ना)	१३
		धेनुयो	१३
		धेनू (० + यो)	१३
		धोरय्हा	२६४
धनवा	१६५		
धनं ते	५५		
धनं नो	५५		
धनं मे	५५		
धनं वो	५५	नकुलो	२७४
धनिका	२३६	नखो	२७२, २७४
धनिको	१६५	नगा पब्बता	२७५
धनिकेहि दलिद्दानं दानं देय्यं	१५१	नगा रुक्खा	२७५
धनी	१६५	नगो	२७४
धनीयति	२३५	नगियं	२०५
धनुकलापं	२७८	नज्जायो	१०२
धम्मकथिको	२६३	नत्तरि	६५
धम्मदिन्ना	२३६	नदियो	१०२
धम्मिको	२५०	नदी	२४०
धम्मेन यसो वड्ढति	१३७	नदीसोतो	२७३
धवली करोति	२२०	नन्दको	१६२
धवली भवति	२२०	नमस्सति	२३६
धवली सिया	२२०	नयनेन काणो	१३७
धवास्सकण्णं	२७६	नयिसु	८६
धवास्सकण्णा	२७६	नवन्नं	१६६

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
नवाधिकं सतं ..	१७३	निधि ..	२०१, २७८
नद्युतं सतं ..	१७३	निधेहि ..	२६८
नद्युतं सहस्रं ..	१७३	निपज्जनं ..	१५२
न समत्यो दारभरणाय	३१	निपज्जितव्वं ..	१५१, १५२
न सिज्झति घम्मो विरियं विना	३०	निपज्जितुं ..	१५२
न हि नाम भिक्खवे ! तस्स		निप्पावकुलत्थं ..	२८०
मोघपुरिसस्स पाणेषु अन्तु-		निप्पावकुलत्था ..	२८०
द्वा भविस्सति ..	६३	निमुग्गवा ..	१४७
नागलो ..	२५२	निमुग्गो ..	१४७
नागसुपण्णं ..	२७८	निम्मक्खिकं ..	२६८
नागिनी ..	२४१	निरड्ढुलं ..	२८४
नागियो ..	२५२	निरोजं ..	२२५
नागी ..	२४१	निसज्ज ..	११७
नाथपुत्तिको ..	२५७	निसीदति ..	११७, १५२
नामरूपं ..	२७८	निसीदनं ..	११७, ५२
नायको ..	१६१	निसीदनीयं ..	१५०
नायति ..	१२२	निसीदितव्वं ..	११७, १५०, १५१
नाययति ..	२१०	निसीदितुं ..	११७, ५२
नाळिकेरो ..	२५५	निहितं ..	१४५
निक्कोसम्भ्रि ..	२७०, २७५	निहितवा ..	१४५
निक्रमति ..	११८	नीलता ..	२०३
निगूहनं ..	२०२	नीलत्तं ..	२०३
निग्गहो ..	२००	ने ..	२४
निग्घोसो ..	२२६	नेतव्वं ..	११५
निच्छयो ..	२००	नेत्तु ..	१६१
निट्ठानं ..	२२६	नेदिट्ठो ..	२४८, २४९
नित्तिणं ..	२६८	नेदियो ..	२४८, २४९
निट्ठालू ..	१६६	नेन ..	२४

पृष्ठ संख्या

नेपुञ्जं	..	२०४	पचामि	..
नेसुं	..	८६	पचाहि	..
नेहि	..	२४	पचिस्सति	..
नो	..	५४	पचिस्सन्ति	..
नोदयति	..	२११	पचिस्सा (हेतु०)	..
नोदापयति	..	२११	पचो (परि० भूत)	..
नोदापेति	..	२११	पचीयति	..
नोदेति	..	२११	पचुं	..
नोहेतं	..	२११	पचे	..
			पचेमु	..
	—०—		पचेय्य	..
			पचेय्यं	..
	प		पचेप्याथ	..
पकतं	..	२७५	पचेय्याथो	..
पकतो भवं कटं (कर्त्तुं)	..	१४३	पचेय्यामु	..
पकतो भोता कटो	..	१४३	पचेय्यासि	..
पकरित्वा	..	२७५	पचेय्युं	..
पक्कवा	..	१४७	पच्छतो	..
पक्को	..	१४७	पच्छाभत्तं, पच्छाभत्ता	..
पक्खिको	..	२५०	पञ्च	..
पग्गहो	..	२००, २२५	पञ्चकं	..
पचत्त	..	८५	पञ्चकेन पसवो किणाति	..
पचति	..	११५, २०३	पञ्चगवघनो	..
पचतु	..	१३०	पञ्चङ्गुलं	..
पचथव्हो	..	८५	पञ्चदत्त	..
पचन्तु	..	१३०	पञ्चदत्तं	..
पचा (अनद्यतन)	..	८४, १८४	पञ्चघा	..
पचाम	..	४७	पञ्चनदं	..

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
पञ्चमं ..	१६६, १६६	पठमानो बालको ..	१६०
पञ्च बालका ..	१५६	पठमा बालिका ..	१५६
पञ्चमो ..	१७५	पठमो बालको ..	१५६
पञ्चवीसति ..	१६६	पठवी ..	२४०
पञ्चमु ..	१६६	पण्डितियं ..	२०५
पञ्चहि ..	१६६	पण्णु वीसति ..	१६६
पञ्चालियो ..	२६२	पतन्तं फलं ..	१६०
पञ्चालो ..	२५७	पतमानं फलं ..	१६०
पञ्चवा (पञ्चवन्तु) ..	१६४, १६६	पतितवतियो धारायो ..	१६०
पञ्चासयोजनिको ..	२५०	पतितवती धारा ..	१६०
पञ्चासं सतं ..	१७३	पतितवन्तानि फलानि ..	१६०
पञ्चासा इत्यो ..	१५६	पतितवन्तियो ..	१६०
पञ्चासा फलानि ..	१५६	पतितवन्ती ..	१६०
पञ्चासा (पचास) मनुस्सा ..	१५६	पतितवं फलं ..	१६०
पञ्चासो ..	१७५	पतितावि फलं ..	१६०
पञ्चो ..	१६६	पतिताविनियो धारायो ..	१६०
पटपटायति ..	२३६	पतिताविनी धारा ..	१६०
पटहालम्बर ..	२७८	पतितावीनि फलानि ..	१६०
पटिघो ..	२०१	पत्तेय्यो ..	२५६
पटिस्रोतं ..	२६६	पयवी ..	२४०
पटिहनिस्सामि ..	६५	पयावी ..	२६४
पटिहंखामि ..	६५	पदको ..	२४६
पटुजातियो ..	२६०	पदसां ..	१००
पठती बालिका ..	१६०	पदसि ..	१००
पठन्ती ..	१६०	पदस्मि ..	१००
पठन्तो बालको ..	१६०	पदुमं यथा पंसुनि आतपे कतं ..	१०२
पठमं फलं ..	१५६	पदेन ..	१००
पठमाना बालिका ..	१६२	पनायको ..	२७५

पृष्ठ संख्या

पृष्ठ संख्या

पस्सितव्वो रक्खो ..	१६१	पापिट्ठो ..	२४८
पस्सित्वा ..	१५५	पापिस्सिको ..	२४८
पहरणवरणं ..	२७८	पापुणोति ..	१२३
पहरतो पिट्ठि ददाति ..	३१	पारगू ..	१६३
पंनुकूलिको ..	२४५	पारदारिको ..	२५०
पाकिमं ..	२५३	पारिस्सज्जो ..	२०६, २६३
पाको ..	२००	पारेयमुनं ..	२६६
पाचको ..	२१०	पाविसि ..	६५
पाचयति ..	२१०	पाविसिस्सा ..	६५
पाचयति धोदनं देवदत्तेन		पाविसिस्सा ..	१८८
यञ्जदत्तो ..	२१२	पावेक्खा ..	६५, १८८
पाचरियो ..	२७५	पासादच्छायां ..	२७३
पाचापयति ..	२१०	पासादीयति कुट्टियं ..	२३६
पाचापेति ..	२१०	पासिको ..	२५२
पाचंति ..	२११, २१०	पिच्छवा ..	१६६
पाटवं ..	२०५	पिच्छिलो ..	१६६
पातकालं ..	२६६	पिट्ठं ..	१४५
पातमग्गं ..	२६६	पिट्ठित्तो ..	२१६
पातमेघं ..	२६६	पित ..	६६
पायेच्चं ..	२६३	पितरं ..	६५, ६७
पादपो ..	२७२	पितरा ..	६५
पादेन खञ्जो ..	१३७	पितरा अहं (भत्तुनो) दीयामि	१७६
पानं ..	२०२	पितरा तुम्हे (भत्तुनो) दीयव्हे	१७६
पापतमो ..	२४८	पितरा त्वं (भत्तुनो) दीयसि	१७६
पापतरो ..	२४८	पितरानं ..	६६
पापभूमं ..	२८४	पितरा मयं पतिनो दीयाम	१७६
पापिट्ठस्स (पापिट्ठाय) धम्मेन		पितरि ..	६५
किं ..	३१	पितरेसु ..	६६

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
पितरेहि ..	६६	पुट्ठं ..	१४५
पितरो ..	६५, ६७	पुट्ठो ..	१४४
पिता ..	६५, ६६	पुण्णवा ..	१४६
पितानं ..	६६	पुण्णो ..	१४६
पितापुत्ता ..	२८०	पुत्तको ..	२४६
पितामही ..	२५६	पुत्ता मत्थि ..	२२२
पितामहो ..	२५६	पुत्तिमो ..	१६८
पितु ..	६५	पुत्तियति सिस्सं ..	२३६
पितुच्छ्रा ..	२५८	पुत्तियो ..	१६८
पितुञ्चं ..	६६	पुत्तीयति ..	२३५
पितुसदिसो ..	२७२	पुत्तीयियिसति ..	२३३
पितुसमो ..	२७२	पुथगेव ..	२२५
पितुसु ..	६६	पुथगेव गामेन सो अरञ्जं अधि-	
पितुहि ..	६६	वसति ..	१३७
पिपासति ..	२३३	पुथगेव गामस्मा सो अरञ्जं	
पिलक्खको ..	२४६	अधिवसति ..	१३८
पिलक्खनिग्रोधं ..	२७६	पुथवी ..	२४०
पिलक्खनिग्रोधा ..	२७६	पुथुज्जनो ..	२७५
पिवति ..	११७	पुथुसो ..	२२०
पिवन्ती ..	११७	पुनपि ..	८४
पिवमानो ..	११७	पुपुत्तीयिसति ..	२३३
पीतं ..	१४५	पुप्फंसा ..	२२६
पीनवा ..	१४६	पुप्फितो रुक्खो ..	२४७
पीनो ..	१४६	पुव्वन्हो ..	२७५
पीयते ..	१८१	पुव्वन्हो ..	२७६
पुक्कुसच्छवडाहकं ..	२७६	पुव्वदक्खिणं ..	२७६
पुञ्जं करोतु भवं ..	१३१	पुव्वरत्तं ..	२८५
पुट्टपादो ..	२४५	पुव्वानि ..	२१

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
१. मुद्वा परं ..	२७६	पोक्खरञ्जो ..	२२४
पुब्बुत्तरं ..	२७६	पेत्तिकं ..	२५३
पुम ..	७८	पेत्तियो ..	२५३
पुमं ..	७८	पेत्तेयो ..	२५८
पुमलिङ्गं ..	२७३	पोतको ..	२६४
पुमाना ..	७८	पोनोभविका ..	२५३
पुमाने ..	७८	पोनोभविको ..	२५३
पुमानेसु ..	७८	पोरिसं ..	२४८
पुमासु ..	७८	पोरोहितियं ..	२०५
पुमुना ..	७८		—
पुमुनो ..	७८		
पुमे ..	७८		फ
पुमेन ..	७८	फलरसो ..	२७३
पुमेसु ..	७८	फलं (० + सि) ..	४
पुरक्खत्वा ..	१२४	फलं पतति अम्भुनि ..	१०२
पुराणो ..	२६१	फग्गुनो मासो ..	२४४
पुरातनो ..	२६१	फला (नपुं:० + यो)	४
पुरिमं जातिं ..	२२७	फलानि (० + यो)	४
पुरिससतग्घं ..	२४८	फलानि ..	२६
पुरिससत्तं ..	२४८	फले (नपुं:० + यो)	४
पुरिसेन गम्मति ..	३०	फल्लते ..	२२४
पुरेक्खति ..	१२४	फुस्सितग्गे (० + सि)	२
पुरेक्खारो ..	१२४	फुस्तो मासो ..	२४४
पुरेभत्तं, पुरेभत्ता ..	२६८	फुस्ती रत्ति ..	२५१
पुरोभूय ..	२७६	फुस्तो अहो ..	२५१
पुंलिङ्गं ..	२७३	फेणवा ..	१६६
पोक्खरञ्जो ..	२२४	फेणिलो ..	१६६
पोक्खरणी ..	२४१		—

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
व		बहुमालो ..	२७०, २९६
		बह्वावाधो ..	२२३
वकवलाका ..	२७६	वारस ..	१६८
वकसोतं ..	२७३	वारसन्नं ..	१६६
वड्ढं ..	१४४	वालका हसन्ति ..	१७८
वधुयं (० + स्मि) ..	१४	वालकेन अत्र भूयते ..	१७८
वधुया (० + ना) ..	१३	वालकेन चन्दो दिस्सति	३०
वधुया (० + स्मि) ..	१४	वालकेहि अत्र भूयते ..	१७८
वधुयो ..	१३	वालकेन हसितं ..	१४३
वधू (० + सि); (० + यो)	१३	वालको कुक्कुरं पस्सति	१७८
वन्धिको ..	२५२	वालको कुक्कुरे पस्सति	१७८
वन्धुता ..	२६०	वाळ्हो ..	१४६
वव्वजो ..	२४५	वाळिसिको ..	२५२
वभूव ..	१८७	वाहुसच्चं ..	२०६
वराहरो ..	२७२	विसालक्खो ..	२८५
वलिबद्दको ..	२४६	वीभच्छति ..	१८७
वन्हावाधो ..	२२३, २२४	वीभच्छा ..	२०२
वस्सारत्तं ..	२८५	वुड्ढं ..	१४४
वहवो ..	१३५	वुद्ध ! ..	३
वहिगामं, वहिगामा ..	२६८	वुद्धं ..	१४५
वहुस्सुतियं ..	२०५	वुद्धत्तं ..	२०३
वहुकत्तुको ..	२८६	वुद्धता ..	२०३
वहुकुमारिको गामो ..	२८६	वुद्धदेय्यं ..	२७२
वहुक्खत्तुं ..	२१६	वुद्धम्हा (० + स्मा)	३
वहुत्तं ..	२०३	वुद्धम्हि (० + स्मि)	३
वहुधा ..	२१८, २१९	वुद्धस्मा ..	३
वहुत्तं ..	१७५	वुद्धस्मा पति सारिपुत्तो	१३८
वहुमालको ..	२८६	वुद्धस्मि . . .	३

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
बुद्धस्त (० + स)	३	ब्रह्मुना	७६
बुद्धा (० + ग)	३	ब्रह्मनो	७६
बुद्धान सासनं	२२७	ब्रह्मनं	७६
बुद्धानं	३	ब्राह्मणा गुणवन्तो ! तुम्हाकं	
बुद्धाय (० + स)	३	परिगृहो—वो परिगृहो	५६
बुद्धा (० + यो)	३	ब्राह्मणानं भोजनं ददाति	३०
बुद्धे (० + यो)	३	ब्रुवन्ति	४६
बुद्धा (० + स्मा)	३	ब्रूति	४८
बुद्धेन (० + ना)	३	ब्रूमि	१५१
बुद्धेभि (० + हि)	३	व्यत्तमा	२४६
बुद्धे स्तनं पणीतं	२०५	व्यत्तरा	२४८
बुद्धेसु	३		
बुद्धे (० + स्मि)	३	—	
बुद्धेहि	३	भ	
बुद्धो (+ ति)	२		
बुभुक्षति	२३२, २३३	भक्षयति बलिवहे सस्तं	२१३
बुभुक्षतु	२३१	भक्षयति मोदके देवदत्तेन	२१३
बुभुक्षि	२३२	भगन्दरो	२३६
बुभुक्षिस्सति	२३२	भगवम्मूलका नो धम्मा	२७०
बुभुक्षेव्य	२३२	भग्गवा	१४७
बोधपक्खियो	२६२	भग्गो	१४७
बोधयति भाणवकं धम्मं	२१२	भङ्गुर	१६३
ब्रवीति	४८	भच्चो	१५२
ब्रह्मञ्जं	२०४	भच्चो अमच्चस्स सतं धारेति	३१
ब्रह्मलो	२५२	भट्ठं	१४५
ब्रह्मियो	२५२	भतिको	२५२
ब्रह्म ! ब्रह्मे !	१४	भत्तगं	२०१
ब्रह्मसभं	२७३	भत्ति	२०२

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
भव्वो ..	१५२	भावेति ..	२१०
भयदस्सावी ..	१६२	भासुर ..	१६३
भरणं ..	२०२	भिक्षं ..	२६०
भवं ..	६४	भिक्षा ..	२०२
भवता ..	६४	भिक्षवे ! ..	७
भवति ..	११५, ११६	भिक्षवो ! ..	७
भवतो ..	६४	भिक्षवो (०+यो) ..	७
भवन्तो ..	६४	भिक्षु ..	३
भवन्ती ..	२४०	भिक्षुना (०+स्मा) ..	६
भवं खलु रज्जं करेय्य	१२६	भिक्षुनी ..	२४१
भवंपतिट्ठा अम्हं ..	२७०	भिक्षुनो (०+यो) ..	५
भवम्पतिट्ठा ..	२७०	भिक्षुनोवादो ..	२२२
भवम्पतिट्ठा मयं ..	२७०	भिक्षू (०+यो) ..	७
भवं पुञ्जं करेय्य ..	१२६	भिक्षू ! ..	३
भवादिक्वो ..	२७७	भिक्षू (०+यो) ..	६
भवादिसो ..	२७७	भित्ति ..	२०२
भवादी ..	२७७	भिदुर ..	१६३
भवित्त्वं ..	१५१, १५२	भिन्नवा ..	१४६
भविस्सति (भविष्यत्काल)	६६	भिन्दिस्सति ..	६४
भत्सर ..	१६३	भिन्नो ..	१४६
भा ..	८४	भुञ्जिस्सति ..	६५
भागिनेय्यो ..	२५५	भुवि ..	१००
भागो ..	२००	भुसायति ..	२३६
भाग्यं ..	१५०	भूति ..	२०२
भातव्वो ..	२५६	भूपं अन्तरेण पासादो न सोभति	१३५
भातव्वो ..	२५६	भेच्छति ..	६४
भारो ..	२००	भेत्तव्वं ..	१५२
भावयति ..	२१०, २११	भोक्खति ..	६५

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
भो गच्छ ! ..	८१	मग्निको ..	२५०
भो गच्छं ! ..	८१	“मच्चु गच्छति ग्रादाय पेक्ख-	
भो गच्छा ! ..	८१	माने महाजने” ..	३२
भो गुणव ! ..	८१	मच्चो ..	२५३
भो गुणवा ! ..	८१	मच्छसूरसेनं ..	२८०
भोजयति ..	२११	मच्छसूरसेना ..	२८०
भोजयति माणवकं ओदनं	२१२	मच्छिको ..	२५०
भोजापयति ..	२११	मज्जं ..	१५१
भोजापेति ..	२११	मज्जतो ..	२१६
भोजेति ..	२११	मज्जन्तो ..	२७६
भोता ..	६४	मज्झिमो ..	१६१, २६२
भोति अन्ना ..	१०१	मज्झेकरिय ..	२७६
भोति अम्म ..	१०१	मज्झेगङ्गं ..	२६६
भोति अम्मा ..	१०१	मणिसंखमुत्तावेळुरियं	२७६
भोति अम्वा ..	१०१	मणिसंखमुत्तावेळुरिया	२७६
भोती ..	२४०	मण्डनं ..	२०२
भोतो ..	६४	मतं ..	१४४
भोत्तुं ..	१५३	मत्तवहुमातङ्गं वनं ..	२६६
भोत्तुमनो ..	१५३	मत्तिकं ..	२५३
भोन्त ..	६४	मत्तिकामयं ..	२५६
भोन्तो ..	६४	मत्तियो ..	२५३
भो सान ..	७६	मत्तेय्यो ..	२५६
		मत्तोन्वहं विललाप ..	१८६
		मद्दवं ..	२०५, २०६
		मद्दविकपाणविकं ..	२७८
		मधुरो ..	१६५
मक्खिन्नककिपिल्लिकं	२७६	मनं ..	१००
मगघो ..	२५७	मनसा ..	१००

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
मनसि करिय ..	२७६	मरति ..	११७
मनसो ..	१००	मरन्तो ..	११७
मनस्मा ..	१००	मरमानो ..	११७
मनस्मि ..	१००	महं ..	६४
मनस्स ..	१००	महां ..	६४
मनस्सी ..	१६५	महिमा ..	२०६
मनुस्सता ..	२०३	महीसरभू ..	२७६
मनुस्सा ..	१३५, २५६	मं ..	५६
मनुस्सानं, मनुस्सेसु वा खत्तियो		मंसरणा ..	२७८
सेट्ठी ..	३१	माकन्दी ..	२५१
मनुस्सी ..	१३५	मागघको ..	२६२
मनेन ..	१००	मागघो ..	२६१
मनो ..	१००	मागविको ..	२५०
मनोमया ..	२७०	माघो मासो ..	२४४
मनोसेट्ठा ..	२७०	माणवकं भवं अज्जापेय्य	१२६
मन्तज्जायो ..	१६३	मातरपितरो	२७३
मन्दीपा ..	२०५, २७२	मातापितरो ..	२७४, २८०
ममं ..	५६	मातापुत्ता ..	२८०
ममत्तं ..	२३६	मातामही ..	२५६
मयं ..	५४	मातामहो ..	२५६
मयं हसाम ..	१७८	मातियो ..	२५३
मया ..	५६	मातुच्छा ..	२५८
मया अत्र भूयते ..	१७८	मातुलानी ..	२४२
मया अत्र भूयिस्सते ..	१७६	मादिकखो ..	२७७
मया इदं न वाक्यं ..	१५०	मादिसो ..	२७७
मया हसितं ..	१८०, १८३	मादी ..	२७७
मयि ..	५६	मानसं ..	२६१
मय्योगो ..	२७२	मानसिको सारीरिको रोगो	१६१

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
मानसो ..	२६१	मुखनासिकं ..	२७२
मानुसको ..	२४६	मुखरो ..	१६५
मानुसी ..	२५६	मुग्गरिको ..	२४५
मानुसीनीं ..	२४१	मुञ्चिस्तति ..	६५
मानुस्सकं ..	२६०	मुञ्जवच्चजं ..	२७६
मानुस्तो ..	२५६	मुड्ढो ..	१४६
मा भवं अगमा वरं ..	१८४	मुण्डको ..	२४६
मामको ..	२३६	मुत्तवा ..	१४७
मायावी ..	१६७	मुत्तो ..	१४७
मायूरिको ..	२५०	मुदवो बालका (वि०)	१०
मारीचिकं ..	२५२	मुदा ..	२०२
मालभारो ..	२२५	मुदितो ..	१४४
मासपुव्वानं ..	२०	मुदु फलं ..	१५२
मासस्स बहुवखतुं भुञ्जति ..	२१६	मुदु बालिका ..	१५६
मासं गुळधाना ..	२६	मुदुबालको ..	१५०
मास्सु ..	८४	मुदु बालिका (वि०) ..	१०
मास्सु पुनपि एवरूपमकसि ..	१८४	मुदुजातियो ..	२६०
माहिन्दो ..	२४४	मुदु फलं (वि०) ..	१०
माहितं ..	२५८	मुदुयो बालिकायो ..	१५६
मिगमायूरं ..	२८०	मुदुनिफलानि ..	१०, १५८
मिगमायूरा ..	२८०	मुनयो (० + यो) ..	५
मिगी ..	२४०	मुनि ! ..	३
मीयति ..	११७	मुनिना (० + स्मा) ..	६
मीयन्तो ..	११७	मुनिनो (० + स) ..	५
मीयमानो ..	११७	मुनि (० + सि) ..	१३
मुक्कवा ..	१४७	मुनिसीहो ..	२७४
मुक्को ..	१४७	मुनी ! ..	३
मुखतो ..	२१६	मुनी चरे ..	२२५

पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या	
३, ६	यज्जेवं ..	२२४	यानि
५	यञ्जं ..	२२४, २५३	यानो
३, ६	यञ्जदेव ..	२२८	यावन्ति
६	यतो ..	२१५	यावन्ति
२७८	यतोदकं ..	२२२	यावन्ति
३२	यत्तकं ..	२४६	यावन्ति
२७२	यत्थ ..	२१६	यिद्धं
१४६	यत्र ..	२१६, २१७	युत्तं
२७२	यथयिदं ..	२२५	युत्तं
२७२	यथरिव ..	२२४	युत्तं
२४६	यथा ..	२१८	युत्तं
२४६	यथा देवदत्तो तथा यञ्जदत्तो	२६८	युत्तं
२५०, २५५	यथापत्तिया ..	२६७	युत्तं
६५	यथापरिसं ..	२६४	युत्तं
२५४	यथापरिसाय ..	२६७, २६८	युत्तं
२५४	यथासत्ति ..	२६८	युत्तं
११६	यदा ..	२१७	युत्तं
१४४	यदि ..	२७७	युत्तं
१६७	यं यं हि राज भजति सत्तं वा		युत्तं
२४६	यदि वा असं ..	८२	युत्तं
२२४	यसत्थेरो ..	२२६	युत्तं
	यसस्सी ..	१६५	युत्तं
	यस्मि ..	२१७	युत्तं
	यहिं ..	२१७	युत्तं
	याचकमागते ..	२२६	युत्तं
२७३	याचकस्स भिक्खं ददाति	३०	
२४१	यादिक्खो ..	२७७	
२४१	यादिसो ..	२७७	

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
यादी ..	२७७	रञ्जोजल्लं ..	२७०
यामो ..	२४४	रजोमयं ..	२७०
यावजीव ..	२६८	रज्जानि विजितानि रञ्जा	१४३
यावञ्चिघ ..	२२७	रज्जं विजितं रञ्जा ..	१४२
यावन्तं ..	२४७	रञ्जस्त ..	७७
यावामत्तं ..	२६८	रञ्जं ..	७७
यिट्ठं ..	१४४	रञ्जा ..	७७
युगनञ्जलं ..	२७८	रञ्जा घनं दीयते ..	१७६
युज्भक्ति ..	१२०	रञ्जा घनानि दीयन्ति	१७६
युज्भक्तुं धनु ..	१५३	रञ्जा रज्जं विजितं ..	१८०
युधि ..	२०३	रञ्जा रज्जानि विजितानि	१८०
युवजायो ..	२७१	रञ्जा विजिते नगरे महाघनं	
युवति ..	२४२	अत्वि ..	१४४
युवस्त ..	७६	रञ्जे ..	७७
युवा ..	७६	रञ्जो ..	७७
युवानं ..	७७	रतं ..	१४४
युवाना ..	८०	रत्तिन्दिवं ..	२८५
युवाने ..	७६, ८०	रत्तियं ..	१४, १५
युवानेसु ..	८०	रत्तिया ..	१३, १४
युवानेहि ..	८०	रत्तियो ..	१३
युवानो ..	७६, ७६, ८०	रत्ती ..	१३
युविनो ..	७६	रत्तो ..	१५
यूपदारु ..	२७२	रत्वं ..	१५
योच्चनं ..	२०६	रत्या ..	१५
-०-		रत्यो ..	१५
र		रधिको ..	२५२
		रवो ..	२००
रजनदोणि ..	२७२	राघवो ..	२५४, २५५

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
राजकं ..	२५८, २६०	रक्खको ..	२४६
राजगवो ..	२८५	रक्खमूलिको ..	२६२
राजञ्जकं ..	२६०	रक्खा फलानि पतितानी	१८०
राजञ्जो ..	२५६	रुच्चति ..	६४
राजपुरिसो ..	२३५, २७३	रुजा ..	२०२
राजपुत्तकं ..	२६०	रुज्झित्तुं ..	१५४
राजसभा ..	२७२	रुदितं ..	१४४
राजहतो ..	२७२	रुन्धित्तुं ..	१५४
राजा ..	७६	रुपवा ..	१६४
राजानं ..	७७	रूपिको ..	१६४
राजानो ..	७६	रुपी ..	१६४
राजानो रञ्जं विजितवन्तो	१६०	रे धुत्ता ! ..	२६
राजानो रञ्जं विजिताविनो	१६०	रोचति ..	११६
राजानो रञ्जं विजितवन्तो-		रोदति ..	११६
विजिताविनो ..	१८०	रोदितं ..	१४४
राजा रंजं विजितवा-विजितावी	१८०	रोदिस्सति ..	६४
राजा रञ्जं विजितवा	१६०		
राजा रञ्जं विजितावी	१६०		
राजिना ..	७७		
राजिनी ..	७७, २४१		
राजिनो ..	७७	लक्खणो ..	१६७
राजूनं ..	७७	लक्खणोरु ..	२४२
राजूसु ..	७७	लग्गवा ..	१४७
राजूहि ..	७७	लग्गो ..	१४७
रुक्खं रुक्खं अनुत्तिट्ठति	१३६	लघिमा ..	२०६
रुक्खं रुक्खं अभित्तिट्ठति	१३६	लघुता ..	२०६
रुक्खं रुक्खं पति-परि तिट्ठति	१३६	लच्चति ..	६४
रुक्खं रुक्खं सिञ्चति	२७१	लता (०+यो) ..	१३

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
लता (० + सि) ..	१३	लोकहिताय बुद्धो धम्मं देसेति	३१
लता (० + ग) ..	१४	लोका पसन्ना बुद्धं पति	३०
लता इव ..	२२३	लोकियो ..	२६२
लताय (० + ना) ..	१३	लोकिको ..	२५३, २६३
लताय (० + स्मि)	१४	लोमसा ..	१६८
लतायं (० + स्मि)	१४	लोमसो ..	१६८
लतायो ..	१३	लोहितसालि ..	२७४
लते ..	१४	लोहितायति ..	२३६
लद्धं ..	१४५		
लभिस्सति ..	६४		
लभेय्याहम्भन्ते ! भगवतो			
सन्तिके पट्वज्जं, लभेय्यं			
उपसम्पदं ..	१२८	वकवलाकं ..	२७६
लम्बकण्णो ..	२६६	वक्खति ..	६५
लाभो ..	२००	वग्गुमुदा तीरिया पन भिक्खू	
लीनघा ..	१४६	वण्णवा होन्ति ..	८२
लीनो ..	१४६	वच्चि ..	२०३
लुच्चति ..	१२०	वच्चिस्सति ..	६५
लूनयवं ..	२६६	वच्छको ..	२४६
लूनवा ..	१४६	वच्छत्तरो ..	२५६
लूनी ..	१४६	वच्छति ..	६४
लूयमानयवं ..	२६६	वच्छानो ..	२५४
लेखयति ..	२११	वच्छायनो ..	२५४
लेखापयति ..	२११	वजिरपाणि ..	२६६
लेखापेति ..	२११	वज्जं ..	१५१
लेखेति ..	२११	वज्जति ..	११६
लेय्यं ..	१५२	वज्जन्ती ..	११६
लोकविद् ..	१६२	वज्जि मल्लं ..	२८०

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
वज्जिमल्ला ..	२८०	वाचको ..	१६१
वड्ढि ..	२०२	वाचसिकं ..	२५१
वण्णवा ..	१६५	वाणिज्जं ..	२०४
वण्णी ..	१६५	वातिको अवाधो ..	१६१
वत्तहानानं ..	६६	वातूनं ..	६६
वत्तहानो ..	६६	वातेरितं ..	२२३
वत्तु ..	१६१	वानेय्यो ..	२६२
वत्तुं जळो ..	१५३	वामोरू ..	२२३, २४२
वदन्ती ..	११६	वाराणसी ..	२६८
वद्धव्यं ..	२०६	वाराणसेय्यको ..	२६२
वधु ..	७२	वारुणी ..	२४०
वधुं ..	१६	वारुणो ..	२४४
वधुया ..	१६	वालधि ..	२७८
वधुयो ..	१६	वालिका ..	२३६
वधू ..	७०, ७२	वाळ्हो ..	१४६
वनप्पगुम्बे (० + सि)	२	वासातो ..	२५७
वनं ..	८४	वासिट्ठी ..	२५४
वन्दना ..	२०२	वासिट्ठो ..	२३५, २५४, २५५
वन्धकेरो ..	२५५	वाहयति भारं देवदत्तेन	२१३
वमथु ..	२०१	वाहयति भारं वलिवहेन	२१३
वरुणानी ..	२४२	विचिकिच्छा ..	२०२
वलाहको ..	२२८	विचारो ..	२००
वसनं ..	२०२	विचिकिच्छति ..	१८६
वसलोति ..	२२३	विजितं ..	१४२, १४४
वसिस्सति ..	६४	विजितवती ..	१४२
वहग्गु कालो ..	२६६	विजितवन्तं ..	१४२
वहुधनो ..	२६६	विजितवन्ती ..	१४२
वाक्यं ..	१५०	विजितवन्तु ..	१४२

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
विजितवन्तो ..	१४२	वुत्तं ..	१४४
विजितवा ..	१४२	वुत्थं ..	१४४
विजिताविनी वा इत्थी	१४२	वूळ्हो ..	१४६
विजिताविनो वा खत्तिया	१४२	वेणिको ..	२४५
विजिताविनं वा खत्तियं	१४२	वेतनिको ..	२५२
विजितावी ..	१४२	वेदगू ..	१६३
विजितावी वा खत्तियो	१४२	वेदञ्जू ..	१६२
विज्जा ..	२०२	वेदना ..	२०२
विज्जाचरणं ..	२७६	वेदल्लं ..	२५०
विञ्जू ..	१६२	वेदियति ..	४६
विदुनो ..	७२	वेदिसं ..	२५७
विदू ..	७२, १६८	वेघवेरो ..	२५५
विमातरो ..	२६३	वेनतेय्यो ..	२५५
विनुद्वयति ..	२३६, २३७	वेनयिको ..	२४६
विलार मूसिकं ..	२७८	वेनरयकारं ..	२७६
विसमेन धावति ..	३०	वेपयु ..	२०१
विसति इत्थी ..	१५६	वेमातिका ..	२६३
विसति फलानि ..	१५६	वेय्याकरणो ..	२४६
विसति मनुस्ता ..	१५६	वेरायति ..	२३६
विसति मनुस्ते ..	१५६	वेरिनेसु ..	७५
वीजंघ ..	२२७	वेसाखो ..	२४५
वीजमिव ..	२२७	वो ..	५४
वीमंसति ..	१८६	वोदकं ..	२२३
वीसतिमो ..	१७५	व्याकतो ..	२२३
वीसं सतं ..	१७३		
वीसो ..	१७५		
वुड्ढो ..	१४५	सकटानो ..	२५४

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
सकटायनो ..	२५४	सखारेसु ..	६६
सकदागामी ..	२२८	सखारेहि ..	६६
सकलं जोतिमधीते ..	२७१	सखारो ..	६५, ६६
सकियो ..	२५८	सखिनो ..	६८
सकिं भुञ्जति ..	२१६	सखिस्मा ..	६८
सकुन्तच्छ्रायं ..	२७३	सखिस्स ..	६८
सको ..	२५८	सखीनं ..	६८
सक्कच्च ..	१५५, २७६	सखे ..	१४, ६६
सक्करित्वा ..	१५५	सखेसु ..	६६
सक्कुणिस्सति ..	६५	सखेहि ..	६६
सक्कुणिस्सा ..	१८८	संघे देति ..	१३६
सक्कुणोति ..	१२३	सङ्खरियति ..	१२४
सक्खति ..	६६	सङ्खारनिरोधा विञ्जाणनि-	
सक्खिस्सति ..	६५, ६६	रोधो ..	१३८
सक्खिस्सा ..	६५, १८८	सङ्खारो ..	१२४
सक्यपुत्तिको ..	२५७, २५८	सङ्गामिको ..	२६३
सक्यपुत्तियो ..	२५८	सङ्घो ..	२०१
सख ! ..	१४	सचक्कं ..	२६८
सखस्मा ..	६८	सचे पठमवये पव्वज्जं अल-	
सखं ..	६६	भिस्सा अरहा अभविस्सा ..	१८८
सखा ..	६८	सचे संखारा निच्चा भवेय्युं,	
सखानं ..	६८, ६६	न निरुज्जेय्युं ..	१२८
सखानो ..	६८	सच्चापयति ..	२३६, २३७
सखायो ..	६८, ६६	सच्चापेति ..	२३६, २३७
सखारस्मा ..	६६	सजोति ..	२७६
सखारं ..	६६	सज्जु ..	२१८
सखारा ..	६६	सञ्जत ..	१४४
सखारानं ..	६६	सञ्जतोरु ..	२४२

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
सञ्जमो ..	२२८	सदितो ..	२७७
सण्ठहति ..	११८	सदी ..	२७७
सतन्दायी ..	१६३	सदाणा ..	२७१
सतमत्तं ..	२४७	सदापयति देवदत्तेन ..	२१३
सतस्मा वद्धो ..	१३७	सदाणाखारी ..	२७१
सतं इत्यी ..	१५६	सदापयति ..	२३६
सतं फलानि ..	१५६	सद्धम्मस्मा रिते अञ्जो को	
सतं मनुस्ता ..	१५६	जने रक्खति ..	१३८
सति ..	२०२	सद्धम्मं रिते अञ्जो को जने	
सतिट्ठो ..	२४६	रक्खति ..	१३७
सतिणं अञ्जोहरति	२६८	सद्धिन्द्रियं ..	२२२
सतिमा (सतिमन्तु)	१६४	सद्धो ..	१६६
सतिमो ..	१७६	सधुरं ..	२६८
सतियो ..	२४६	सन्तवा ..	१४६
सतेन वद्धो ..	१३७	सन्ति ..	४७, ११६
सतेन मनुस्सेहि ..	१५६	सन्तिट्ठति ..	११८
सत्तगोदावरं ..	२८४	सन्तु ..	४७, ११६, १३१
सत्तदस ..	१६८	सन्तो ..	४७, ११६, १४६
सत्तदसन्नं ..	१६६	सन्दिट्ठिकं ..	२५०
सत्तन्नं ..	१६६	सपक्खो ..	२७५, २७६
सत्तमो ..	१७५	सपलासं ..	२७१
सत्तरस ..	१६८	सपाकचण्डालं ..	२७६
सत्य ..	१४४, १४५	सपुत्तो ..	२६६, २७०, २७१
सत्थारदस्सनं ..	२७३	सप्पो जने दंसति ..	२६
सत्थुदस्सनं ..	२७४	सत्रलां ..	२३६
सदा ..	२१८	सत्रञ्जुनो ..	७२
सदापयतपाणिनी ..	२४१	सव्वञ्जू ..	७२, १६२
सदिकवो ..	२७७	सव्वत्य ..	२१६, २१७

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
सव्वत्र ..	२१६, २१७	समान जोति :	२७६
सव्वथा ..	२१८	समादियति ..	११८
सव्वदा ..	२१७	समानपक्खो ..	२७६
सव्वधि ..	२१७	समानो ..	४७, ११६
सव्वसो ..	२२०	समानोदरियो ..	२७१
सव्वस्मि ..	२१७	समुहुत्तं ..	२७१
सव्वस्सं ..	२२	समेच्च ..	१५५
सव्वस्सा ..	२२	समेतायस्मा ..	२२१
सव्वानि ..	२१	समेत्वा ..	१५५
सव्वाय (० + स्मि)	१४	समेन धावति ..	३०
सव्वायं ..	१४, २२	सम्पदानं ..	२०२
सव्वावन्त ..	२४७	सम्मतालं ..	२७८
सव्वे तिट्ठन्ति ..	२०	सम्मदेव ..	२२५
सव्वे पस्स ..	२०	सम्मा घम्मो ..	२२५
सव्वेसं ..	२१	सयम्भुवो ..	१६
सव्वेसानं ..	२१	सयम्भुं ..	१६
सव्वेहि अत्र भूयेय्य ..	१७६	सयम्भुना ..	१६
सव्विभ ..	६४	सयम्भुनो (० + यो)	५
सव्वभो ..	२६३	सयम्भुस्मा ..	६
सन्नहं ..	२६८	सयम्भु ..	७०, ७२
सभति ..	२५, १०१	सयम्भू ..	७, ७०, ७२, २०१
सभा ..	२०१	सयम्भूवो (० + यो)	७
सभाय ..	१०१	सरणं ..	२०२
समणको ..	२४६	सरभसभं ..	२७३
समणब्राह्मणा ..	२८०, १०१	सरलावो ..	१६३
समणे ब्राह्मणे वन्दे सम्पन्नचरणे		सरिक्खो ..	२७७
इसे समणो भायति	२६	सरिसो ..	२७७
समथविपस्सनं ..	२७६	सरी ..	२७७

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
सलभच्छायं ..	२७३	साकुणिको ..	२५०
सलभच्छायेन .	२७३	साकुन्तिकमागविकं	२७६
सला .	२७५	साह्यं ..	२०४
सलाकगं .	२०१	साग्नि .	२७१
सलोमको .	२६६	सातिकं ..	२४६, २५०
सवनीयं ..	१५१	साधिदृठी ..	२४६
सवनीयानि वा तानी वचनानि	१५०	साधियो ..	२४६
मवरभयं ..	२७२	साधुसम्मतो बहुजनस्त	३१
स सीलवा ..	२२६	सानस्त ..	७६
सस्तत्यं ..	२७१	सानं ..	७६
सहपुत्तो .	२७१	सापतेव्यं ..	२६३
सहस्तिमो .	१७६	सामणोरो ..	२५५
सहायता .	२०३	सामणोरो भासं विनयं पठति	२६
सहितोरु ..	२४२	सामाकिको ..	२५०
सहोरु ..	२४२	सामी ..	१६७
संकुलिकं ..	२६०	सायकालं ..	२६६
संधिकं ..	२५७	सायन्हो ..	२७६
संधिग्गवा ..	१४७	सायमग्गं ..	२६६
संधिग्गो ..	१४७	सायमेधं ..	२६६
संविदावहारो ..	२२८	सारत्तो ..	२२७
संहितोरु ..	२४२	सारदिका रत्ति ..	२६२
सा अहं अहिसारतिनी	२४१	सारदिको ..	२६२
सा इत्थी ..	२४	सारम्भो ..	२२७
साकटिको ..	२५२	सारानो ..	२२७
साकसालं .	२७६	सालिभो ..	१६६
साकसाला ..	२७६	सालियवकं ..	२८०
साकमुयं ..	२८०	सालियवका ..	२८०
साकमुवा ..	२८०	साव ..	२११

पृष्ठ संख्या

पृष्ठ संख्या

सावको ..	१९१	सीहिनी ..	२४१
सावज्जानवज्जं ..	२७९	सीही ..	२४१
सावणो ..	२४५	सुकतं ..	२७५
सासयति देवदत्तं ..	२१२	सुखकारि ..	७०
सासियो ..	१४५	सुखसहगतं ..	२७२
सास्सत्थं ..	२७१	सुक्खवा ..	१४७
साहस्सिकं ..	२५१	सुक्खो ..	१४७
साहस्सी ..	२५१	सुखापयति ..	२३६; २३७
साहं ..	२७५	सुखापेत्ति ..	२३६, २३७
साहं उपट्ठितसतिनी	२४१	सुचयो कूपा ..	१०, १५८
सिट्ठं ..	१४५	सुचि कूपो ..	१०, १५८
सिनानीयं चुण्णं ..	१५१	सुचि जलं ..	१०, १५८
सिन्नवा ..	१४६	सुचियो वापी ..	१५९
सिन्नो ..	१४६	सुचि वापी ..	१५९
सिया .. ४७, ११६, १२९		सुचीनि जलानि ..	१०, १५८
सियुं .. ४७, ११६, १२९		सुजातिमन्तो पि अजातिमस्स	८२
सिस्सेन पुप्फानि चैय्यानि	१५०	सुज्झति ..	१२०
सिस्सेहि सह=सद्धि=समं		सुणिस्सति ..	६५, ८७
आगच्छति आचरियो	३०	सुतो ..	१४४
सिस्सो ..	१४५, १५२	सुत्तन्तिको ..	२४९
सीतालू ..	१९६	सुत्तोन्वहं विललाप ..	१८६
सीलघनं ..	२७४	सुपुरिसो ..	२७५
सीलपञ्जाणं ..	२७९	सुभिक्खं ..	२६८
सीलवा (सीलवन्तु)	१९४	सुरियत्तं ..	२०३
सीलवो ..	१९७	सुरियं ..	२०५
सीवलो ..	२५२	सुवण्णालङ्कारो ..	२७०
सीवियो ..	२५२	सुवामी ..	१९७
सीसिको ..	२५२	सुसानं ..	२२८

	पृष्ठ संख्या		पृष्ठ संख्या
सुसिरो ..	१९५	सोतव्वं ..	१५१
सुसीला ..	२३९	सोतु ..	१९१
सुहज्जो ..	२०६	सोतुं सोतो ..	१५३
सूकरिको ..	२५०	सोदरियो ..	२७१
सूदो ओदनं पचति ..	२९	सोपि ..	२२२
सूदो पाकाय भोजनघरं गच्छति	३१	सो पुरिसो ..	२४
सूनवा ..	१४६	सोभति ..	११६
सूनो ..	१४६	सो-भागो मं अनु भवति	१३६
सूयते ..	१८०, १८१	सो भागो मं पति परि भवति	१३६
सूयन्ते ..	१८०	सोमनस्सं ..	२६१
सूयमानं ..	१८०	सोरभ्यं ..	२५३
सूयिस्सति ..	१८०	सोरस ..	१६८
सेकिमं ..	२५३	सोळलसन्नं ..	१६६
सेट्ठो ..	२८९	सोळस ..	१६८, १६९
सेतच्छत्तं ..	२२६	सोवग्गिको ..	२५३
सेनियो ..	१९८	सो वग्गिको घम्मो ..	१६२
सेव्यो ..	२५७	सोसानिको ..	२६२
सेव्यो ..	२४९	सो सुत्वान याति ..	१५४
सो इध अग्नेन वसति ..	१३७	सो सुत्वा याति ..	१५४
सोगतधम्मस्सा नाना तित्थिय- धम्मो ..	१३८	सो सोतून याति ..	१५४
सोगतधम्मेन नाना तित्थिय- धम्मो ..	१३७	सोस्सति ..	६५, ८७
सोगतं सारानं ..	२५८	सोहज्जं ..	२०६
सोगतो ..	२४८	स्याइत्थी ..	२४
सोचति ..	११६	स्यो पुरिसो ..	२४
सोचेव्य ..	२०५	स्वागतं ..	२२३
सोतव्व ..	११५	स्वातनो ..	२६१
		स्वाहं ..	२२४

	पृष्ठ संख्या	पृष्ठ संख्या
हृञ्छ्रेम ..	६५	२५०
हृञ्जति ..	१२०	२१२
हृतं ..	१४४	२००
हृत्थवा ..	१६५	२५१
हृत्थमत्तं ..	२४७	६४, ६६
हृत्थिकं ..	२६०	८२
हृत्थिको ..	२४६	८२
हृत्थिगवास्सवळवं ..	२७६	८२
हृत्थिगवास्सवळवा ..	२७६	१६२
हृत्थिस्ताम ..	६५	२६१
हृत्थिगवां ..	२७८	२७६
हृत्थिगवां ..	१५१	२७६
हरणं ..	२०२	२६४
हृत्थिगवां ..	१५०	२७६
हंसवळाकं ..	२७६	२६
हंसवळाका ..	२७६	२१६
हंसितव्वं ..	१५०	२६६
हंसितं ..	१४३	१३
हंसित्तन्तो ..	६२	१०२
हंसित्तमानो ..	६२	१३
हानि ..	२०३	६५
हा पुत्तं ..	१३५	६६
हायना ..	१६८	६५, ६६
हायनो ..	१६८	२८०
हायिस्सति ..	६४	६६
हाय ..	२०२	६५, ६६

अभ्यासों के लिए संकेत

अभ्यासों के लिए संकेत

दूसरा अभ्यास

१—गाया=श्लोक । मेत्ताय=मेत्ता=मंत्री ।

३—प्रज्ञा=पञ्जा । मंत्री=मेत्ता ।

तीसरा अभ्यास

१—सङ्खारा=संस्कार । अनत्ता=अनात्म । “दण्डस्त तसन्ति”=दण्ड से डरते हैं (यहाँ, ‘दण्डस्त’ पद में पञ्चमी विभक्ति के स्थान पर पष्ठी का प्रयोग किया गया है । पालि में ऐसे विभक्ति-व्यत्यय बहुत देखे जाते हैं) । पत्तिया—पत्ति=योग । तन्वोधिया—तन्वोधि=परम ज्ञान ।

चौथा अभ्यास

१—तावतिसेहि=त्रयस्त्रिंश नामक देवना । पञ्च सिखो=गन्धर्व का नाम । वेद-पटिलाभं सोमनस्स-पटिलाभं=उत्साह—उमङ्ग । निद्विदाय=निवेद के लिए=वैराग्य के लिए । संबोधाय=ज्ञान-लाभ के लिए । सक्को=शक्र । वेय्याकरणास्मि=धार्मिक व्याख्या ।

२—चङ्कमेन=चंद्रमण करते हुए, चहल कदमी करते हुए । आवरणेहि धम्मेहि=अज्ञान-मूलक धर्मों से । नारो=यम=पाप-राज । बोधिमण्डं=वह आसन जिस पर भगवान ने बुद्धत्व प्राप्त किया था । जातिया खो सति=जन्म ग्रहण करने पर । विञ्जाणे=विज्ञान । नाम-रूपं=चित्त और शरीर । आसवेहि=आश्रव ।

पाँचवाँ अभ्यास

१—जिनो=बुद्ध । निच्चं पज्जलिते सति=(संसार के) नित्य प्रज्वलित होते रहने पर । अद्भा=बादल से । पापो=पापी । समनीयं, यापनीयं=कुशल

मंगल । यस्स दानि कालं मञ्जसि=अब आप जैसा उचित समझें । उद्यान-भूमि=उद्यान । जिणो=बूढ़ा । ओरको=बुरा । कारुञ्जतं परिच्च=करुणा करके । उप्पलिनियं वा पटुमिनियं वा पुण्डरीकिनियं=उत्पल-पद्म-पुण्डरीक वाले जलाशय में । अन्तो निमुग्गपोसीनि=जो पानी के भीतर ही भीतर बढ़ रहे हों । समोदकं=पानी के बराबर । अप्परजक्खे=अल्प 'रज' वाले ।

छठा अभ्यास

१—पसहति=गिरा देता है । तप्पति=अनुताप करता है । मग्गं न विन्दति=पीछा नहीं करता है । परिळाहो=चित्त-संताप ।

२—सङ्घ के शरण=सङ्घं सरणं ।

सातवाँ अभ्यास

१—कल्याणे मित्ते=सन्मार्ग पर ले जाने वाले मित्रों को । चारित्तं न आपज्जितव्वं=बहुत हेल-मेल नहीं करना चाहिए । समन्नागतो=युक्त । सयनासनो=वास-स्थान । विपाको=फल । गहपतानी=गृहस्थ स्त्री । पतिट्ठा-पेतुं वट्टति=स्थापित करना चाहिए ।

२—निदान=अवसर, आधार ।

आठवाँ अभ्यास

१—संवोधि=बुद्धत्व । गहकारक=घर बनाने वाला=तृष्णा ।

नवाँ अभ्यास

१—उट्टानवतो=उत्साह-शील । सतिमतो=स्मृति-युक्त । मेत्ताविहारी=मैत्री का अभ्यास करने वाला । पसन्नो=श्रद्धायुक्त । अत्तना अत्तानं जोद-यति-पटिवासेति=जो अपने आप को (योगाभ्यास में) प्रेरित करता है, लगाता है । काये कायानुपस्सी=काया में कायानुपश्यी (योगाभ्यास की एक क्रिया—देखिए—'दीघनिकाय'—महासतिपट्टान सूत्र) । आतापी=अपने क्लेशों को (=चित्त-मलों को) तपाने वाला । सम्पजानो=सम्प्रज्ञ । सन्थव=साथ ।

दसवाँ अभ्यास

१—सम्पदिच्छु = मान लिया। साणिं परिवर्त्तिपसु = पर्दा डाल दिया। सम्पदिच्छुसु = ले लिया। अत्तमना = प्रसन्न। आसनि = गौरव-पूर्ण।

३—कापाय = कासावं। घर में वेधर हो प्रव्रजित हुआ = अगारस्मा अन्-गारियं पव्वजि।

ग्यारहवाँ अभ्यास

१—अयोनिस्तो = बेंठीक से। उभट्टानं = मेवा टहल। पटिजगितव्वा = उनका भरण-पोषण करना चाहिए।

बारहवाँ अभ्यास

१—साराणीयं चीत्तिसारेत्वा = कुगल-शेम पूछ कर। सन्निपतितानं = एकत्रित हुए। पुच्चे-निवास-पटिसंयुक्ता कथा = पूर्व-जन्म के विषय में बातचीत। पञ्जत्ते आसने = विद्ये आसन पर। अनुलोमं = सल्टा। पटिलोमं = उल्टा। अनेकचित्तं विमानं = 'अनेक चित्त' नामक देवताओं के आवास। तमोक्खन्वं पदा-लयि = (अज्ञान) अंधकार को दूर कर दिया। कता ते अनुसात्तनी = बुद्ध के निर्दिष्ट मार्ग को तै कर लिया। तथागत = बुद्ध। पटिपन्ना = मार्ग पर आरुढ़।

तेरहवाँ अभ्यास

१—अभिसमयो = धर्म-ज्ञान। चतु-सच्चं = चार आयं सत्य—दुःख, दुःख का कारण, दुःख का निरोध, दुःख-निरोध का उपाय। बाळ्हगिलानो = ब्रह्म वीमार। समादियिसु = ग्रहण किया। पधानं = योगाभ्यास। कम्मट्टानं = कर्म-स्थान (योगाभ्यास का आलम्बन)।

चौदहवाँ अभ्यास

१—पटिरुपे = उचित मार्ग पर। लोफ-वड्डनो = संसार को बढ़ाने वाला = आवा-नामन के फेर में पड़ा रहने वाला। मिच्छा दिट्ठि = मिथ्या-दृष्टि, गलत धारणा।

धारणा । पधानं पदहेय्य = योगाभ्यास में लग जाना चाहिए । पदिभातु आयु-
स्मन्तं एतस्स भासितस्स अत्थोति = आयुस्मान् इस कहे गए का अर्थ बतावें ।

पन्दरहवाँ अभ्यास

१—सज्जायति = पाठ करता है । फासु = आराम । सप्पिस्स = सपिना
(विभक्ति-व्यत्यय) । पुत्तस्स = पुत्तं (विभक्ति-व्यत्यय) । पसन्नो = श्रद्धायुक्त ।
वज्जेसु = निन्द्य कर्मों में ।

सोलहवाँ अभ्यास

१—अस्सुतवा = अश्रुतवान् = अपण्डित । पुथुज्जनो = पृथक्जन = तृष्णा के
बन्धन में पड़ा । सप्पुरिस-धम्मो = सत्पुरुष के धर्म में = बुद्ध के धर्म में । अविनीतो =
अशिक्षित । सब्बं अभिनन्दति = सभी में आनन्द = मौज करता है । दुसितवन्तानं
= ब्रह्मचर्यवास जिनका पूरा हो गया है = अर्हत् । भव-संयोजन = संसार का
बन्ध । मुत्तं = सूँघा, चखा, और स्पर्श किया गया । सब्बं अनिच्चतो पच्चवेखित-
तब्बं = सभी को अनित्य के ऐसा प्रत्यवेक्षण करना चाहिए ।

गतद्धिनो = जिसने अध्व = मार्ग को तै कर लिया है । परिलाहो = संताप ।
सम्मदञ्जविमुत्तस्स = सम्यक् प्रज्ञा से विमुक्त हो गया ।

सत्तरहवाँ अभ्यास

१—कुशलं = पुण्य । अकुशलं = पाप । कल्याण-मित्तो = धर्म के मार्ग पर
लाने वाला मित्र । भोग-क्खन्धं विस्सज्जेत्वा = सारी भोग-विलास की चीजों
को हटा कर । चङ्कमं च मापेत्वा = चहल कदमी करने के लिए स्थान बनवा ।

अट्ठारहवाँ अभ्यास

१—ध्यापादो पट्ठीयति = द्वेष-भाव शान्त हो जाता है । आरञ्जिको =
जंगल में वास करने वाला । भत्त-संमोदनं = भोजन कर लेने के बाद, दाता के
दान का सम्मोदन करना । अञ्जातावी = जिसने प्रज्ञा का लाभ कर लिया है ।

उन्नीसवाँ अभ्यास

१—सञ्जो जन = बन्धन । सम्बोज्झङ्ग = सम्बोध्यङ्ग = सम्बोधि लाभ

करने के अङ्ग । अनुपस्सना = योग की एक क्रिया । सम्पपधान = सच्चा उत्साह ।
बहुली करणीया = गूब अभ्यास करना चाहिए ।

वीसवाँ अभ्यास

१—उदानं उदानेति = प्रीति-वाक्य निकालते हैं । फस-पच्चया = स्पर्श के प्रत्यय (=हेतु) से । सति अधिष्ठातृत्वा = स्मृति उपस्थित करनी चाहिए । ब्रह्म-विहार = योग का एक अभ्यास । बुद्ध-धातु = बुद्ध के फूल ।

इक्कीसवाँ अभ्यास

१—पादिहीर = ऋद्धि-निद्धि के कार्य । सन्धाधिस्तं = भटकता रहा (काल-व्यत्यय) ।

२—बुद्ध-मन्दिर = विहार ।

बाइसवाँ अभ्यास

१—वेद्यसंज्ञातं = चोरी करने की नियत से । सम्पजान-मुत्ता = जान-बूझ कर भूठ । कतञ्जू = कृतज्ञ । अकयंकयी = नंदाय-रहित ।

तेइसवाँ अभ्यास

१—वज्जं = दोष । जानि = हानि । इन्द्रिय-गुत्ति = इन्द्रिय-संयम । संवरो = संयम । पटित्तन्वार-वृत्ति = नीठा आचरण वाला । समय, दमय इत्यादि = योग के अभ्यास । विपस्सना = विदर्शना ।

२—सव दिशाओं में व्याप्त करना = सव्वासु दिसासु फरणं ।

पच्चीसवाँ अभ्यास

२—दिन दोपहर को = दिवादिवं ।

इकतीसवाँ अभ्यास

१—कायगता-सत्ति = शरीर की गन्दगियों पर मनन करना । तिरो-कुड्डं = दीवाल के आर पार । अनुलोमं पटिलोमं = सलटा-पलटा ।

वेत्तिताग्गा = जिसका अग्र भाग धुंधरदार । साणवास-सदिसा = सन की तरह ।